महादेवभाअीकी डायरी

पहला भाग

[१०-३-'३२ से ४-९-'३२ तक : गांधीजीके साथ यरवदा जेलमें]

संपादक

नरहरि द्वा० परीख

अनुवादक

रामनारायण चौधरी

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर

अहमदाबाद

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

पहली बार : प्रति ५,०००

पाँच रुपये

दिसम्बर, १९४८

निवेदन

महादेवभाअी सन् १९१७ के आखिरी हिस्सेमें गांधीजीके साथ हुअे। तबसे सन् १९४२में अुनका देहान्त होने तक अुन्होंने अपनी डायरी लिखी है। पच्चीस वर्षके गांधीजीके साथके सेवाकालमें जेलमें होनेके कारण या किसी दूसरे कारणसे जब जब वे अुनके साथ न रह सके — कुल मिलाकर यह समय बहुत थोड़ा है — अुस वक्तके सिवा और सारे वक्तकी बातें अुन्होंने अपनी डायरीमें दर्ज की हैं। गांधीजीके पत्रव्यवहारको, अुनके भाषणोंको, व्यक्तियोंके साथ हुअी महत्वकी मुलाकातों और बातचीतोंको तथा अिसी तरह चालू घटनाओं पर और विविध विषयों पर अुनके विचारों और अुद्गारोंको वे नोट कर लेते थे। मशहूर अंग्रेज विद्वान और विचारक जॉन्सनका जो जीवनचरित्र अुनके अन्तेवासी बोसवेलने लिखा है, वह अंग्रेजी साहित्यमें बहुत मशहूर है। जॉन्सनके जीवनके छोटेसे छोटे प्रसंग, और छोटी बड़ी विविध बातों पर जॉन्सनके विचार अिस जीवनचरित्रमें बोसवेलने दर्ज किये हैं। गांधीजीके जीवनचरित्रके बारेमें महादेवभाअीकी अिच्छा सवाया बोसवेल बननेकी थी। अुनकी यह अिच्छा पूरी करना तो भगवानको मंजूर नहीं था, लेकिन अुन्होंने जो सामग्री जमा की थी अुस परसे पाठक देख सकेंगे कि अपनी अिच्छा पूरी करनेके लिअे अुन्होंने तैयारी करनेमें किसी तरहकी कसर नहीं रखी थी।

'**नवजीवन**' और '**यंगअिण्डिया**'में और बादमें '**हरिजन**' पत्रोंमें महादेवभाअी अपनी डायरियोंमेंसे समय समय पर प्रकाशित करने लायक सामग्री प्रकाशित करते रहे थे। और अिस तरह गांधीजीके जीवनचरित्रके लिअे अुन्होंने काफी मसाला तो प्रकाशित कर ही दिया है। फिर भी कितनी ही मूल्यवान सामग्री अप्रकाशित रह गयी है। अब गांधीजी हमारे बीचमें नहीं रहे, अिसलिअे नवजीवन ट्रस्टने जितनी भी जल्दी हो सके यह सामग्री जनताके सामने रख देनेका फैसला किया है। अिस सारी सामग्री परसे गांधीजीका विस्तृत और अधिकृत जीवनचरित्र तैयार करनेका काम नवजीवन ट्रस्टने महादेवभाअीके दो साल बाद ही गांधीजीके साथ हो जानेवाले और अुनकी तरह ही गांधीजीके निकट सहवासमें रहनेवाले भाअी प्यारेलालको सौंपा है, या यह भी कहा जा सकता है कि भाअी प्यारेलालने अपने अति प्रिय कर्तव्यके रूपमें अुसे अपने हाथमें ले लिया है।

महादेवभाओीकी डायरियाँ गांधीजीके जीवनचरित्रके लिअे कच्चा किन्तु बहुत ही महत्वका मसाला है। मगर कच्चे मसालेके अलावा मानवजातिको प्रेरणा देनेवाले और मनुष्यजीवनको बनानेवाले बहुत अुपयोगी और चिरजीवी साहित्यके रुपमें अिन डायरियोंका स्वतंत्र महत्व भी है। गांधीजीकी जीवन कलाके सिवा अिन डायरियोंमें महादेवभाओीका स्वभाव, अुनकी कर्तव्यनिष्ठा, अुनका भक्तिभावसे भरा हुआ हृदय, और कओी विषयोंमें अुनकी दिलचस्पी — ये सब भी प्रकट होते हैं। सार यह है कि महादेवभाओीकी आत्मा यहाँ अक्षर-देह धारण करती है और हमें कओी तरफसे बहुत नजदीकसे देखनेको मिलती है। अैसे तो अेक अनन्य मित्रके नाते स्वाभाविक ही महादेवभाओीका प्रिय और पावक स्मरण मुझे हमेशा रहता है, मगर अिन डायरियोंके सम्पादनका काम करते वक्त तो अैसा अनुभव हुआ है जैसे मैं गंभीर और हलके अनेक विषयों पर अुनके साथ चर्चा तथा वार्ता-विनोद करता होअूँ। और कभी कभी तो यह महसूस हुआ है जैसे मैं अुनके साथ हँसी मजाक कर रहा होअूँ। मुझे यकीन है कि यह पुस्तक पढ़ते समय दूसरे मित्रोंको भी यही महसूस होगा।

मेरा खयाल है कि गुजराती भाषामें अिस तरहका साहित्य यह पहली बार प्रकाशित हो रहा है। अंग्रेजी भाषामें और युरोपकी दूसरी भाषाओंमें अैसा डायरी-साहित्य बहुत है। दुनियाके अिस किस्मके सारे साहित्यमें, चीजके अुदात्तपनके कारण और रखनेकी शैलीके सरसपन और मनोहरताके खयालसे, महादेवभाओीकी डायरियोंका स्थान बहुत अूँचा रहेगा, यह सुज्ञ पाठक स्वीकार करेंगे।

पच्चीस वर्षोंकी महादेवभाओीकी डायरियोंमें से मैंने १९३२की डायरीसे ही क्यों शुरूआत की? अिसका अेक कारण तो यह है कि जेलमें लिखी होनेके कारण वह औरोंसे ज्यादा फुरसतसे लिखी गयी है। महादेवभाओीको संकेत लिपि (शॉर्ट हेण्ड) नहीं आती थी। गांधीजीके व्याख्यान, बातचीत और मुलाकातें भी वे अुसी समय दीर्घ लिपिमें नोट कर लेते थे। वे अितनी तेजीसे नोट कर सकते थे कि अुसी परसे शब्दशः विवरण दे सकते थे। मगर यह स्वाभाविक है कि गड़बड़ या जल्दीमें लिये हुअे नोट पूरी तरह स्पष्ट न हों। जेलमें बाहरकी तरह कोओी गड़बड़ न होनेसे यह डायरी कुछ ज्यादा विस्तारके साथ लिखी गयी है। दूसरा कारण यह है कि बाहर रहते हुअे लिखी हुओी दूसरी डायरियोंमें से कुछ कुछ तो **नवजीवन** वगैरा अखबारोंके जरिये लोगोंको मिल चुका है, जब कि यह जेलके समयकी होनेके कारण अिसमेंसे बहुत ही कम प्रकाशित हुआ है। फिर जैसे महादेवभाओी अिसमें विस्तारसे लिख सके हैं, वैसे ही गांधीजीने भी जेलमें होनेके कारण बातचीत और पत्र-व्यवहार लम्बाओीके

साथ किया है । अिस प्रकार यह डायरी कअी तरहसे ज्यादा महत्वकी होनेके कारण सम्पादन और प्रकाशनके लिअे अिसे पहले चुना गया है ।

यह डायरी १०-३-१९३२से ४-९-१९३२ तक की है । अिसके बाद महादेवभाअी जब तक गांधीजीके साथ यरवदा जेलमें रहे, अुस वक्तकी डायरी दूसरी पुस्तकमें दी जायगी । अछूत माने जानेवाले वर्गको दूसरे हिन्दुओंसे अलग मताधिकार देनेके मैक्डोनल्डके निर्णयके विरुद्ध गांधीजीके अैतिहासिक अुपवासवाला प्रकरण दूसरी पुस्तकमें आयेगा । अैसे, अिस पुस्तकमें अुसके संकल्पका हाल तो आ ही जाता है । बादकी पुस्तकोंमें शुरूसे आगे चलें या सन् '४२ से शुरू करके पीछे जायँ, यह अभी तय नहीं किया गया है ।

कितने ही व्यक्तियोंके सम्बन्धके अैसे निजी और खानगी हालात छोड़ दिये गये हैं, जिनका जाहिर होना अुन व्यक्तियोंको अच्छा न लगे । मगर जो हालात अैसे हैं जिनसे लोगोंको कुछ भी मार्गदर्शन या प्रेरणा मिल सकती है, वहाँ अुनको रखकर व्यक्तियोंका नाम छोड़ दिया गया है । जहाँ व्यक्तिका नाम छोड़ दिया गया है, वहाँ . . . अिस तरहके तीन बिन्दु लगाये गये हैं । जहाँ ज्यादा हालात छोड़ दिये गये हैं, वहाँ फूलके निशान लगाये गये हैं । गांधीजीके अंग्रेजीमें लिखे गये पत्र और अुनके नाम अंग्रेजीमें आये हुअे पत्र मूल अंग्रेजीमें दिये गये हैं और अुनके नीचे अुनका गुजराती तर्जुमा दिया गया है । महादेवभाअीने अंग्रेजी किताबोंमेंसे जो अुद्धरण दिये हैं, अुनका अनुवाद भी दिया है । सिर्फ 'फोर्थ सील' ग्रन्थके अंग्रेजी अुद्धरण नहीं दिये हैं, गुजराती तर्जुमा ही दिया है । अिस सारे गुजराती अनुवादकी जिम्मेदारी मेरी है ।

अिस डायरीमें मुख्य पात्र तीन हैं — गांधीजी, सरदार पटेल और महादेवभाअी । जेलके कर्मचारियों, डाक्टरों और खिदमतगारोंका भी जिक्र बीच बीचमें आता है, मगर वे गौण पात्र हैं । यों तो गांधीजीका सारा जीवन ही बिलकुल खुला था । निजी और खानगी मानी जानेवाली बातें दुनिया जितनी अुनकी जानती होगी, अुतनी शायद ही और किसी नेताकी जानती हो । फिर भी गांधीजीकी बहुतसी जानने लायक बातें अभी तक जनताके सामने नहीं आअी होंगी । अिस डायरीमें अुनकी बाहर न आयी हुअी खासियतें, जीवन-प्रसंग तथा व्यक्तिगत और सामाजिक जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाले बहुतसे महत्वके विषयों पर गांधीजीके विचार अुनकी बातचीतों और पत्रोंके जरिये पाठकोंको जाननेको मिलते हैं ।

चूँकि मुख्यतः गांधीजीके नेतृत्वमें ही हमारे देशने ब्रिटिश सरकारकी नागफाँससे छूटनेका सफल प्रयत्न किया, अिसलिअे गांधीजीका राजनीतिक महत्व

बहुत है, और बहुत लोग तो अुन्हें बड़े राजनीतिक नेताके रूपमें ही मानते हैं। मगर राजनीति गांधीजीका मुख्य या महत्वका विषय नहीं था। अुनके जीवनमें और अुनकी सारी प्रवृत्तिमें वह तो अेक छोटासा कोना ही घेरती है। सत्यकी अुपासना और सत्यका साक्षात्कार ही अुनके जीवनका प्रधान या अेकमात्र अुद्देश्य था। सामाजिक और राजनीतिक वगैरा अुनके तमाम काम सत्यकी खोजके सिलसिलेमें साधन थे। अुनकी अहिंसा भी सत्यके साक्षात्कारके लिअे थी। सत्यको ही वे अीश्वर मानते थे। परमात्माके सूचकके रूपमें 'अीश्वर'से 'सत्य' शब्द ज्यादा अच्छा है, ज्यादा समझमें और ज्यादा अमलमें आने लायक है, यह बात अुन्होंने बहुतसे पत्रोंमें विस्तारसे समझाअी है। कितनी ही विद्वत्ता हो, कितनी होशियारी हो और कितनी ही बुद्धिमत्ता हो, तो भी सत्यमय जीवनके बिना सब फजूल है, यह अुन्होंने ठोक ठोक कर कहा है। अुनके अपने जीवनमें बुद्धिसे — अुन्होंने अक्सर कहा है कि मैं मंदबुद्धि हूँ — चरित्रकी निर्मलताका कहीं ज्यादा हाथ रहा है। शुद्ध चरित्रवाले सत्यके पुजारीको मौका पड़ने पर आवश्यक बुद्धि भगवान दे ही देते हैं, यह श्रद्धा अुन्होंने कअी बार प्रकट की है।

हरअेक मनुष्यको होनेवाला सत्यका दर्शन पूर्ण सत्यके मुकाबिलेमें तो अपनी अपनी साधनाकी शुद्धि और अुत्कटताके हिसाबसे — फिर वह कम हो या ज्यादा-अधूरा ही होता है। जिस समय जितनी सचाअी हमारी समझमें आअी हो, अुसे हम अपने लिअे अुस समयके लिअे पूर्ण मानकर चलें और अुसमें जैसे जैसे हमें कमी नजर आती जाय वैसे वैसे अुसे नम्रताके साथ मानकर सुधारते चलें, तो हमें सत्यका दर्शन दिन दिन अधिक होता जायगा। अेक आदमीको सत्यका जो दर्शन हुआ होगा, अुससे दूसरे आदमीको, अुसके विकासकी भूमिकाके अनुसार, कम या ज्यादा मात्रामें दर्शन हुआ होगा। यानी यह हो सकता है कि अेक मनुष्यको जो सत्य प्रतीत हो, दूसरेको वह अुतना ही सत्य न भी लगे। दोनों आदमी सत्यके पुजारी हों, तो अपने अपने लिअे या अपनी अपनी दृष्टिसे दोनोंकी बात सच होगी। अब अगर दोनों आदमियोंको अपनी साधना या अुपासना आगे बढ़ानी है और अेक दूसरेकी साधनामें दखल नहीं देना है — और दखल न दिया जायगा, तभी सत्यकी अुपासना हो सकती है — तो दोनोंको अेक दूसरेके प्रति सहिष्णु यानी पूरी तरह अहिंसक रहना चाहिये। अिस तरह सत्यकी अुपासनाके लिअे और पूर्ण सत्यके दर्शनके प्रयत्नके लिअे गांधीजीने अहिंसाके साधनको अपनाया था। अहिंसाका साधन अपनाकर सत्यकी अुपासना करनेके लिअे और पूर्ण सत्यकी प्राप्तिके लिअे ही अुनके सब काम होते थे। निजी और सामाजिक जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाले तमाम प्रश्नोंमें गांधीजी सत्यकी खोजके लिअे कोशिश करते थे और अिसीलिअे ये तमाम प्रश्न अुनकी प्रवृत्तिके विषय बनते थे। अिन सब सवालों पर सत्य और

अहिंसाकी दृष्टिसे जब जब मौका मिलता या जरूरत होती, गांधीजी अपने विचार प्रकट करते थे। अुनके भाषणों और लेखोंमें प्रकट हुअे ये विचार जनताके सामने हैं ही। अिस डायरीमें हमें ये विचार बातचीत और पत्रव्यवहारके जरिये जाननेको मिलते हैं। अुसमें दिलकी दिलसे बातें हुअी हैं, अिस कारण ये विचार और उद्गार हमें ज्यादा सीधे और घनिष्ठ रूपमें मिले हैं। आजकल साम्प्रदायिक सवाल और अछूतपन व जातपाँतके भेदोंके सवालका सबसे प्रमुख स्थान है, अिसलिअे अिन पर अिस पुस्तकमें मिलनेवाले गांधीजीके अुद्गार खास ध्यान खींचते हैं।

सरदारको अेक होशियार नेता और विचक्षण राजनीतिज्ञके रूपमें सारा देश जानता है; और अब तो हमारे देशसे बाहरकी दुनिया भी अुन्हें जानने लगी है। किसी तंत्र या संगठनको खड़ा करनेकी और अुसे अच्छी तरह चलानेकी अपनी कला और चतुराअीका परिचय भी अुन्होंने देशको दे दिया है। अिन्सानको अुसकी नजरसे या चालसे पहचान लेनेकी और नाप लेनेकी अुनकी असाधारण शक्तिके कारण बुरे आदमी अुनके साथ निभ नहीं सकते, और अिस कारण कितने ही लोग अुनके विरोधी भी हो जाते हैं। विरोधीका भण्डाफोड़ करना हो तब साफ साफ भाषा बहुत कारगर ढंगसे अिस्तेमाल करना अुन्हें आता है। अिसलिअे अुन्हें अूपर अूपरसे ही देखनेवाले पर अुनकी अेक तरहकी सख्तीका असर पड़ता है। मगर अिस बाहरी दिखावेके पीछे साथियोंके प्रति कितना प्रेमपूर्ण और निष्ठावान हृदय छुपा हुआ है, वह यहाँ देखनेको मिलता है। गांधीजीके प्रति अुनकी भक्ति और वफादारी तो अद्भुत ही है। जो वफादार साथी और अुत्तम सेवक बनना जानता है, वही होशियार सरदार बन सकता है, अिसकी भी हमें यहाँ प्रतीति होती है। अुनकी कार्य-कुशलताके बारेमें गांधीजीका प्रमाणपत्र यहाँ देनेकी लालच छोड़ी नहीं जा सकती — "वल्लभभाअी अरबी घोड़ेकी तेजीसे दौड़ रहे हैं। संस्कृतकी पुस्तक हाथसे छूटती ही नहीं। अिसकी मैंने आशा नहीं रखी थी। वे लिफाफे बिना नापे बनाते हैं और अन्दाजसे ही काटते हैं, फिर भी बराबरके निकलते हैं। और वक्त भी बहुत लगता नहीं मालूम होता। अुनकी व्यवस्था आश्चर्यमें डालनेवाली है। जो करना है अुसे याद रखनेके लिअे छोड़ते ही नहीं। काम आया कि कर डाला। जबसे कातना शुरू किया है तबसे कातनेके समयके पाबन्द रहते हैं। अिस तरह रोज सूत और गतिमें सुधार हो रहा है। हाथमें लिया हुआ काम भूलते तो शायद ही होंगे। और जहाँ अितनी व्यवस्था हो, वहाँ धाँधलीका तो काम ही क्या!"

अिसके अलावा अुनका सीधी चोट करनेवाला विनोद गांधीजीको भी पेट पकड़कर हँसाता है, और तीनों साथियोंके अेकधारावाले जीवनमें अेक तरहका रस भर देता है ।

महादेवभाअीके बारेमें तो क्या कहूँ ! अुन्होंने अपनी कुशलतासे कार्यके विविध क्षेत्रोंको चमकाया है । अुनके विपुल और अूँचे दर्जेके लेखन कार्यसे बहुतोंको अैसा लगता है कि वे साहित्यके जीव थे । बेशक, अुनमें अूँचे दर्जेकी साहित्य शक्ति थी । परन्तु अुनके जीवनका मुख्य ध्येय गांधीजीके जीवनमें और गांधीजीके कामोंमें विलीन हो जाना था । अुनमें अद्‌भुत नम्रता थी । अपने दोष और अपनी कमियाँ अुन्हें पहाड़के बराबर दीखती थीं और दूसरोंके दोष अुनके मनको राअीके बराबर भी नहीं लगते थे । दूसरेके सिर्फ गुण ही देखनेका अुनका स्वभाव हो गया था । अुनकी नम्रता और अपने आपको मिटा देनेकी, शून्य बनकर रहनेकी, अुनकी वृत्ति ही अुनके जीवनकी सफलता या सार्थकताकी खास कुंजी थी । अिस चीजके दर्शन अुनकी लिखी हुअी अिन डायरियोंमें भी होते हैं ।

अिस डायरीमें अुन्होंने अपनी पढ़ी हुअी पुस्तकोंका मर्मग्राही विवेचन और कितनी ही पुस्तकोंमें से आकर्षक और शिक्षाप्रद अुद्धरण दिये हैं । अिसके सिवा साधु टॉमस-अे-केम्पिसका अुन्होंने स्वाध्याय किया है । अिस डायरीका समय पूरे छह महीनेका भी नहीं है । अिस बीच अुन्होंने कअी पुस्तकें पढ़ी दीखती हैं और अिस अध्ययनका अुन्होंने हमें सुन्दर लाभ दिया है । अिसके सिवा दो खिदमतगारोंके जो रेखाचित्र दिये हैं, अुनसे खयाल होता है कि छोटे माने जानेवाले मनुष्योंके साथ वे कितनी आत्मीयता पैदा कर सकते थे । मगर यहाँ मुझे रुक जाना चाहिये । महादेवभाअीको हमारा सारा देश जानता है । अिस डायरीसे और अिसके बाद प्रकाशित होनेवाली डायरियोंसे पाठकोंको महादेवभाअीका ज्यादा निकट परिचय मिलेगा ।

पूना, २५-७-१९४८

नरहरि परीख

महादेवभाईकी डायरी

पहली पुस्तक

[१०-३-१९३२ से ४-९-१९३२ : गांधीजीके साथ यरवदा जेलमें]

एकमेवाद्धितीयं तद् यद्राजन्नावबुध्यसे ।
सत्यं स्वर्गस्य सोपानं पारावारस्य नौरिव ॥

उद्योगपर्व, महाभारत

" Would that even for a day we had behaved
ourselves well in this world ! "
" Be therefore always in readiness, and so live,
That death may never find thee unprepared."

Tho. A. Kempis

" They are slaves who fear to speak
For the fallen and the weak;
They are slaves who will not choose
Hatred, scoffing and abuse,
Rather than in silence shrink
From the truth they needs must think.
They are slaves who dare not be
In the right with two or three."

" And Sin, that which separates from God, which disobeys God, which *can* not in that state correspond with God — this is Hell. Sin is simply apostasy from God, unbelief in God."

Drummond

" The Hindus' very word for truth is full of meaning. . . . Truth was with them that which is."

MaxMuller, India, lec.ii. p. 82.

हरिः ॐ श्री सद्गुरवे नमः ।

स्वप्नमें भी यह खयाल न था कि यह दिन मेरे भाग्यमें होगा । हाँ, अेक दिन नासिकमें अैसा सपना जरूर आया था कि मैं यरवदामें हूँ । अेकाअेक मुझे बापूके पास ले जाया गया और मैं बापूके पैरों पड़कर रोने लगा, और पता नहीं क्या हो गया कि आँसू रोकनेसे भी नहीं रुके । रोचने सुबह आकर कहा कि — "चलो, तुम्हारी बदली हुअी है । अेक घंटेमें तैयार हो जाओ ।" मैंने पूछा — "कहाँ ?" तो वह बोला — "तुम जानकर खुश होगे और मुझे धन्यवाद दोगे । मगर मुझसे बताया नहीं जा सकता ।" मैंने डॉक्टर चन्दूलालसे मिलनेकी माँग की, मगर अिजाज़त नहीं मिली । नौ बजे नासिकसे बैठे । मेरे साथ जो पुलिसवाले थे, वे ही कुछ दिन पहले विट्ठलभाअीको यहाँ छोड़ गये थे । अिनमेंसे अेकसे पुरानी जान पहचान थी । बापू जब लॉर्ड रेडिंगसे मिलने गये तब — तारीख भी अिस आदमीको याद थी: १७ जून १९२० — वह सर चार्ल्स अिन्सका खानसामा था । फिर वह यूबेंक, रा. सा. गुणवंतराय देसाअी वग़ैराके साथ रहकर पुलिसमें भरती हो गया । अुसने मुझे शिमलामें देखा था, विट्ठलभाअीके यहाँ भी देखा था । अुसकी स्मरण शक्ति भी खूब थी ।

१०–३–'३२

जब अकबरअली साबरमतीमें मिला, तो अुसकी आँखें भर आयीं और अुसने अपनी कोठरीमें बन्द होकर कहा — "मेरी दुआ है कि आपको गांधीजीके साथ रखा जायगा ।" तब मुझे लगा था — "तेरी दुआ तो हो सकती है, मगर मैं वह नसीब कहाँसे लाअूँ ?" अुसने कहा था — "लेकिन फिर भी मेरी दुआ है ।" अकबरअलीके बारेमें क्या क्या नहीं सुना था ? लेकिन अुसने मुहब्बत दिखानेमें कसर नहीं रखी और अुसकी दुआ ही फली !

प्यारेलालने तो नासिकमें ही सबसे कह दिया था कि हम मार्टिनके साथ अिन्तजाम कर आये हैं । यह मुझे तो गप्प मालूम हुअी थी । लेकिन यह भी सच्ची बात थी ।

दरवाजे पर जरा कड़वा स्वागत जो हुआ, तो अैसा सोच लिया था कि नासिकसे अुसने पिण्ड छुड़ानेके लिअे मेरी बदली की है, और बापूके दर्शन होंगे ही नहीं । अुसके बजाय वहाँ तो कटेली हँसते हँसते आये और कहने लगे कि मेरे साथ चलिये । हमें आज ही चार बजे खबर मिली है कि आपको महात्माजीके

साथ रखना है! बापूके चरणोंपर सिर रखा तो अुन्हें भी आश्चर्य हुआ। पीठ पर, सिरमें और गालोंपर खूब थप्पड़ें लगाअीं। अितना लाड़ बापूने कभी नहीं किया था। मैं कृतज्ञतामें और अपनी अयोग्यताके भानमें डूब गया। बापू और सरदारसे जाना कि मुझे यहाँ लानेमें सर पुरुषोत्तमदासका भी हाथ है। डाह्याभाअी तो पिछली बार ही कह गये थे कि . . . ने जो करना था कर दिया है।

फुटकर बातें और खबरें पूछनेके बाद बापू बोले — "तुम अैन मौक़े पर ही आये हो। वल्लभभाअीकी बुद्धि बिलकुल मारी गयी है। अिन्हें सूझ ही नहीं पड़ती। अुन्होंने तुमसे कहा या नहीं?" वल्लभभाअी बोले — "अिसे खाने तो दीजिये। फिर बातें करेंगे।" वल्लभभाअीने मेरे लिअे खाना रखा। बापू और वे तो खाकर बैठे थे। रोटी, मक्खन, दही और अुबाले हुअे शकरकंद थे। खा चुका तो बापूने बात शुरू की। शुरू करनेके बजाय सेम्युअल होरको लिखा हुआ पत्र मुझे पढ़नेको दिया। मैं पढ़ गया। मुझे पूछा — "कैसा लगता है?" मैंने कहा — "मुझे सारा तर्क शुद्ध लगता है। दमननीतिके बारेमें तो मुझे पहले भी कअी बार लगा है कि किसी न किसी दिन बापूका प्रकोप अैसा रूप ले तो आश्चर्य नहीं। अिसमें वल्लभभाअीको क्या अेतराज़ है? अिन्हें तो यह खयाल होगा कि आप अैसा क़दम अुठायें, तो कांग्रेसके अध्यक्षकी हैसियतसे ये कैसे सम्मति दे सकते हैं?" बापू कहने लगे — "नहीं। यह सवाल तो अिनके मनमें नहीं अुठा। सवाल यह है कि साथीके नाते सम्मति कैसे दें? मगर मैंने यह कल्पना नहीं की कि वल्लभभाअीने धार्मिक तौर पर विचार किया है। अिन्होंने तो राजनीतिक तौर पर ही विचार किया, और यह ठीक है। मेरा और वल्लभभाअीका सम्बन्ध भी धार्मिक नहीं कहा जा सकता। हाँ, तुम्हारे साथका सम्बन्ध धार्मिक कहा जायगा। वल्लभभाअीकी मुश्किल यह है कि 'अिसका अनर्थ होगा। वे कहेंगे कि यह गांधी तो अैसा ही आदमी है, पागल हो गया है, अुसे पागलपन करने दो। जनताको भी चोट पहुँचेगी और अिस तरहके अनशनकी गलत नक़ल होनेका भी बहुत बड़ा डर है।' मगर यह तो भले ही हो। मैं पागल माना जाअूँ और मर जाअूँ, तो अिसमें क्या बुरा है? मुझे बनावटी तौर पर महात्मापन मिला होगा, तो वह खतम हो जायगा। यह अच्छा ही है। मगर मुझे तो यह भी डर नहीं कि अैसा होगा। रोमाँ रोलाँ-जैसे आदमी तो मेरे अिस क़दमको समझेंगे। और वे भी न समझें तो क्या? मुझे तो धर्मका विचार करना है न?" मैंने कहा — "दमनके विषयमें अनशन हो तो दुनिया समझ सकती है, मगर अिस अछूतोंसे सम्बन्ध रखनेवाले अनशनको शायद न समझ सके। अंग्रेज संसारको यह समझानेकी कोशिश करेंगे कि सब अछूतोंकी

या ज्यादातर अछूतोंकी माँग अलग मताधिकारके लिअे थी । और मैं चाहूँगा कि आप अिसमें यह ज्यादा स्पष्ट करें कि अछूतोंको अलग मताधिकार देकर जनताके शरीर पर भयंकर आघात किया जा रहा है । वैसे बहुतसे अीमानदार अंग्रेज भी अिसे समझ नहीं सकेंगे ।" बापू बोले — "अिससे ज्यादा सफाअी देने बैठेंगे, तो यह बयान करना चाहिये कि मुसलमानोंका अिस काममें क्या हिस्सा रहा । अिससे मुसलमानोंके साथ बैर बढ़ेगा । यह तो अैसा ही हुआ जैसा अुस २१ दिनवाले अुपवासके समय हुआ था और मुहम्मदअलीने कितने ही वाक्य निकलवा दिये थे ।" मैंने कहा — "कुछ लोग कहेंगे कि हिन्दू समाजने जो पाप किया है अुससे भी यह पाप भयंकर कहलायेगा कि अुनके खिलाफ आपको अनशन करना पड़ा ?" बापू बोले — "हम तो हिन्दू समाजसे अुसका पाप धुलवा रहे थे । यह कृत्य तो अुस पापको स्थायी बनाने जैसा है या अुसे न धोने देनेके बराबर है । देशमें गृहयुद्ध करानेके सिवा अिसका और कोअी नतीजा हो ही नहीं सकता, — युद्ध सवर्ण हिन्दू और अछूतों तथा हिन्दू और मुसलमानोंके बीच होगा ।"

वल्लभभाअीने कहा — "मेरी तरफसे तो अब भी अिनकार है, मगर अब आपको जैसा ठीक लगे वैसा कीजिये ।"

बापू पत्रको सुधारने बैठ गये, और सुधारकर सो गये ।

रातको बारह अेक बजे तक मुझे नींद ही नहीं आयी । पौनेचार बजे प्रार्थनाके लिअे जागे । मुँह हाथ धोकर प्रार्थनाके लिअे बैठे, तो बापूने प्रार्थनाका क्रम सुनाया — "वल्लभभाअीसे श्लोक बुलवाते हैं । अिन्हें संस्कृतका ज्ञान जरा भी न होनेके कारण अुच्चारण बहुत अशुद्ध होते थे । अिसलिअे मैंने विचार किया कि अिन अुच्चारणोंको सुधारनेका अिसके सिवा दूसरा रास्ता नहीं । तुम देखोगे कि बहुत फर्क पड़ गया है । भजन मैं बोलता था । जबानी तो कुछ था ही नहीं, अिसलिअे हम तो अेकके बाद अेक भजन लेकर पढ़ने लगे । आज मराठी शुरू करनेवाले थे । अब तुम रामधुन और भजन चलाओ ।" मैंने बापूसे ही रामधुन चलानेको कहा । यह बात रातको हुअी थी । मैंने पहला भजन "प्रभु मोरे अवगुण चित न धरो" गाया । अिसके सिवा मैं और क्या गा सकता था ?

११–३–'३२

सुबह प्रार्थनाके बाद सोनेकी कोशिश की, मगर न सो सका । सुबह चाय पीनेका मैंने तो हाँ कहा था । वल्लभभाअीसे पूछा कि क्यों, आपने चाय पीना बन्द कर दिया है ? तो वे बोले — "यहाँ बापूके साथ अब क्या चाय पियें ? मैंने तो तय कर लिया है कि वे जो खायें सो खाना । चावल छोड़ दिया, और साग अुबालनेका निश्चय किया और दो बार दूध रोटी खानेका । बापू भी रोटी खाते हैं ।" चायके बिना न

रहनेवाले वल्लभभाअीके अिस निश्चयसे मुझे प्रोत्साहन मिला । मैंने भी चाय पीनेसे अिनकार कर दिया और रोजके क्रममें मिल गया । बापूके लिअे सोडा बनाना, खजूर साफ करना, दातुन तैयार करना, ये सब वल्लभभाअीने खुद ही अपने जिम्मे ले लिया था । हँसते हँसते कहने लगे — "मुझे क्या पता था कि यहाँ साथ रखनेवाले हैं । पता होता तो काकासे पूछ लेता कि बापूका क्या क्या काम करना होता है । बापू तो कुछ कहते नहीं, अिसलिअे मालूम नहीं पड़ता । कपड़े धोनेका काम तो बापूने रखा ही नहीं । अन्दरसे धोकर ही निकलते हैं, तब क्या किया जाय ?" अिसपर बापूने सुनाया कि कपड़े धोनेका काम कितना आसान कर दिया है । सुनाते सुनाते खूब हँसे । बोले — "अेक दिन सिर्फ़ बालिश्त भरका रूमाल लेकर ही नहानेके कमरेमें चला गया । नहा लेनेके बाद देखा कि अँगोछा भूल गया हूँ । अिसलिअे अुस रूमालको निचोकर शरीर पोंछा । रोज कपड़े बदलनेका काम ही नहीं रखा और अब तो देखता हूँ कि अिस अँगोछेके बिना भी काम चल सकता है । मीराके समयमें तीन रूमाल धुलते थे । अुसके बजाय अब रहा अेक, और वह भी अेक दिनके अन्तरसे धुलता है । तब धोनेको क्या रहा ?" और आदमी भी सच्चे काम करनेवाले थे । मारुतिराय बलभीमा तो सुबह शाम चरणोंमें सिर रखकर सोने जाता था । मुझे भी अुसने त्रिमूर्तिमें गिन लिया और मेरे आगे भी प्रणाम किया । मैंने कहा — "भले मानुस, मैं तो तेरे जैसा ही हूँ ।"

सुबह बापूने मुझसे पत्र लिखाया और लिखाते लिखाते भीतर सुधार करते गये । मेजर १० बजे आये । अुनके साथ पैरके बारेमें बातें हुअीं । मालूम हुआ अुन्हें कुछ पता नहीं लगा । अुन्होंने अेण्टीफ्लाजिस्टीन लगानेको कहा । बापूने कहा कि अिन्हें अेण्टीफ्लाजिस्टीनका मजेदार अितिहास सुनाओ । अुन्होंने कहा — "मैं तो यहाँ कितने ही डब्बे खरीद कर मँगाता हूँ ।" मेरे कपड़ों वगैराके बारेमें बोले — "आप 'बी' हैं, अिसलिअे मुझे आपको 'बी' मानना पड़ेगा, क्योंकि मेरे पास आपके लिअे खास हुक्म नहीं है ।" मैंने कहा — "आप कहेंगे वैसा ही करूँगा ।" अिसलिअे कपड़े आ गये । मगर सारा सामान तलाशीके लिअे बाहर रह गया ।

चरखा कातते कातते बापूने अुसमें जो फेरबदल किये हैं अुनकी बातें कीं । बताया कि आजकल तो २५० वार सूत रोज कातते हैं । यह शिकायत थी कि अभी तक शरीरसे थकावट नहीं गयी ।

सेम्युअल होरको पत्र और अुसके लिअे covering letter (साथका पत्र) साअिम्स साहबको लिखकर दोपहरको भेजा । भेजनेके बाद बापू बोले — "अब तो collapse होने (थककर पड़ जाने) जैसा लगता है । जैसे

दिल्लीमें अस्थायी संधि होनेके बाद हुआ था, अुसी तरह। रातको — आधी रातके बाद सब निश्चय हुआ, अर्विनने अिमर्सनसे बेनको तार देनेको कहा और फिर आकर बैठे। वे भी अुदास और मैं भी अुदास। मैंने मौन तोड़ा और कहा — 'देखिये, मैं तो बिलकुल ठंढा हो गया हूँ। और देखता हूँ कि आपकी भी अैसी ही भावना हो रही है। अिसलिअे आपसे फिर प्रार्थना करता हूँ, फिर कहता हूँ कि मैं तो लड़ाका हूँ, मुझे तो फिर भी लड़ना पड़ सकता है। आपको भी लगता हो कि कहाँ अिस समझौतेमें फँस गये, कर्मचारी कोअी समझौता चाहते नहीं, वातावरण प्रतिकूल है तो समझौता कैसा? तो अब भी आप तार वापस ले लीजिये। अितना ही तो होगा कि बेन मुझे मूर्ख कहेंगे।' तब अुन्होंने कहा — 'नहीं, अैसी कोअी बात नहीं। आपको लड़ना हो तो लड़ लेना। मगर लड़ेंगे तो वाजिब तौर पर ही न? नहीं, नहीं, यह तो जो समझौता हो गया सो हो गया।' आज पत्र नहीं भेजा था तब तक लगता था कि पत्र चला जाय तो अच्छा। मगर अब पत्र चला गया, तो अैसा लगता है कि यह क्या जिम्मेदारी सिर पर ले ली है? . . . सम्भव है कि अछूतोंके लिअे अलग मताधिकार तो अब नहीं रहेगा। नहीं तो यह भी हो सकता है कि मुझे छोड़ दें और फिर मरने दें!" मैंने कहा — "छोड़ देने पर तो अिस अनशनसे अितनी भारी खलबली मच सकती है, जिसकी अिन लोगोंको कल्पना भी न होगी।" बापूने कहा — "हाँ।"

१२–३–'३२

वल्लभभाअी सुबह कहने लगे — "अिस समय तो दो वर्ष पहले आजके दिन चण्डोला तालाब पार कर गये थे।" लड़ाअीको दो साल हो गये। बीचमें अेक छोटासा विष्कंभक — खाली समय — आ गया।

वल्लभभाअी बापूको हँसानेमें कसर नहीं रखते। आज पूछने लगे — "कितने खजूर धोअूँ?" बापूने कहा — "पन्द्रह"। तो वल्लभभाअी बोले — "पन्द्रह और बीसमें क्या फर्क?" बापूने कहा — "तो 'दस', क्योंकि दस और पन्द्रहमें क्या फर्क?" मुझे कहने लगे — "क्यों महादेव, कैसी जेल है? घर कोअी बिस्तर करके सुलाता था? कमोड धोकर रोज तड़के ही कोअी रखता था? और टोस्टकी हुअी रोटी, मक्खन, दूध और तरह तरहकी तरकारियाँ!" मैं तो किस तरह भूल सकता था? मेरे सामने तो नासिकके जेलरोंके चित्र अब भी ताज़ा थे, और यह बात क्षणभर भी भूलने-जैसी नहीं थी कि यहाँ जो कुछ है, सब बापूके कारण है?

अेक बात पहले दिनके संवादकी रह गयी। बापूने कहा — "यहाँ तो मुझे मशरूकी गादी पर सुलाते हैं। तुम्हें यहाँ लायेंगे, यह मुझे आशा न थी।

मगर तुम्हें भी ले आये। अिस तरह कअी सुविधायें देनेकी कोशिश करते हैं, मगर अिससे मैं कैसे भ्रममें पड़ सकता हूँ? अिससे क्या जो धर्म आ पड़े, अुससे विचलित हो सकता हूँ? तुम्हारी राय भी जो पूछता हूँ, तो अुपवास करनेके बारेमें नहीं पूछता। दिल्ली जैसे हालात होते तो तुमसे किसीसे न पूछता। आम तौर पर मैं निर्णय करनेके बाद ही जाहिर करता हूँ। मगर अिस बार तो यह ultimatum (अंतिम चेतावनी) देनेकी बात है। और जिस चीजकी सूचना देनी है, अुसके बारेमें चर्चा ज़रूर की जा सकती है।"

दोपहरको पुस्तकालयकी सूची आयी और अपनी पसन्दकी किताबोंकी माँग करने लगे। निकालो, अिसमें स्कॉट है? मॅकॉले है? किंग्सली Westward Ho (वेस्टवर्ड हो) है? ज्युल्स वर्न है? Faust (फॉस्ट) है? ह्यूगो है? अेडवर्ड कार्पेण्टरका नाम सुनते ही तुरन्त बोले Adam's Peak to Eelephanta (अेडम्स पीक टु अेलीफ़ैण्टा) मँगाओ। और निवेदिताकी Cradle Tales (क्रेडल टेल्स) भी मँगाओ। जेलकी पुस्तकोंकी बात करते हुअे बापूने कहा — "दक्षिण अफ्रीकाकी जेलके पुस्तकालयमें ही मैंने पहली बार Dr. Jekyll & Mr. Hyde (डॉ॰ जेकील और मि॰ हाअिड) पढ़ा। मुझे मालूम नहीं था कि यह क्या चीज़ है।" मैंने कहा कि अिस पुस्तकालयमें भी स्टीवन्सन है। Virginitris Purisque (वर्जिनाअिट्रिस प्युरिस्क) यानी To the pure virgin (टु दि प्योर वर्जिन) बापूने खुद ही बताया और कहने लगे — "ये निबन्ध अच्छे ही होंगे।"

खगोलकी बातें करते हुअे कहने लगे — "अब मैं बहुत होशियार हो गया हूँ। तुम काकाके साथ कुछ आकाशदर्शन करते थे क्या? मैं तो यहाँ 'टाअिम्स' मेंसे नक़्शा निकाल कर बैठता हूँ और रोहिणी, कृत्तिका, मृगा और अनुराधा, ज्येष्ठासे बहुत आगे निकल गया हूँ। अफ्रीकामें किचनके साथ था, तब किचनको अिस मामलेमें बड़ी दिलचस्पी थी। वह मुझे अेक वेधशालामें भी ले गया था। लेकिन मुझे कुछ मजा नहीं आया। अुन दिनों कुछ और ही चीजोंमें मजा आता था, लेकिन आज तो अिन बातोंमें बहुत मजा आता है। अिससे दृष्टि कितनी विशाल होती है? नावपर अुस पुस्तकके आखिरी प्रकरण तुमने पढ़े थे न?" पुस्तकोंकी बात करते हुअे मैंने कहा था — "बापू, आपको मार्क्सके बारेमें पढ़ना चाहिये, और हमारे युवकोंके लिअे मार्क्सके जवाबमें कुछ न कुछ permanent contribution (स्थायी साहित्य) दे जाना चाहिये।" अिसपर बापूने कहा — "ठीक बात है। मुझे भी अैसा लगा करता है। रूसके बारेमें काफी जान लेनेकी अिच्छा होती रहती है।" मैंने Mind & Face of Bolshevism (माअिण्ड अॅण्ड फ़ेस ऑफ बोल्शेविज़्म) की और शेरवुड अेडीकी पुस्तकोंकी बात कही। बापू बोले — "मँगाना। मगर महीनेभर

तक नहीं।" आजकल तो The Wet Parade (दि वेट परेड) पढ़ रहे हैं और बड़ी दिलचस्पीके साथ। सिंक्लेरके बारेमें कहा — "यह आदमी तो अद्भुत सेवा कर रहा दीखता है। समाजकी अेक अेक गन्दगीको लेकर बैठा है और अुसका खुले आम भंडाफोड़ करता है।" मैंने कहा — "और फिर भी अेडगर वॉलेसकी तरह ही prolific (बहुत पुस्तकोंको जन्म देनेवाला) भी कहा जा सकता है। फिर भी अैसा खयाल होता है कि वॉलेस जैसे भी — भले ही जासूसी कहानियोंकी — बाढ़ कैसे ला सके होंगे? यह आदमी तो अपने अुपन्यास जबानी लिखवाता था।" अिस पर बापू बोले — "महादेव, लिखा जा सकता है, लिखा जा सकता है। टॉल्स्टॉय कहते थे न कि सिगार मुँहमें रखा हो, धुअेंके गोले निकल रहे हों और अच्छी तरह चुस्कियाँ लेकर बैठे हों, तो फिर अिस तरहकी तरंगें निकलती ही रहती हैं? और गप्पें लगानेके लिअे किसीसे कुछ पूछने जाना पड़ता है क्या?"

आज 'क' और 'ख' की बहुत बातें हुअीं। 'क' के बारेमें अन्त तक माननेसे अिनकार किया। फिर अुन्हें खत लिखा और अुसका जवाब आया तो समझमें आया कि अुन्होंने कमजोरी दिखाअी। अुन्होंने राय माँगी। अुन्हें लिखा कि "राय तो नहीं दी जा सकती। मगर मुझे तुम पर विश्वास है। और भगवान तुम्हारा भला ही करेंगे।" फिर बापूने कहा — "अभी मुझे आशा बनी हुअी है कि वे अपनी भूल सुधारेंगे। 'ख' के बारेमें भी अैसी ही आशा रखी जा सकती है। यह तो मैं मानता ही नहीं कि वे यह नहीं समझते कि अुन्होंने भूल की है। वे बहादुर आदमी हैं, अिसलिअे नहीं माना जा सकता कि वे डरते हैं। फिर भी कौन जाने? अिसलिअे आज तो अुनके कृत्यका अैसा अुदार अर्थ लगानेकी ज़रूरत है कि अुन्हें कोअी अनिवार्य काम होगा और अुसे पूरा करनेके बाद आन्दोलनमें शामिल होनेका विचार किया होगा। अैसे मामलोंमें सम्बन्धित मनुष्यसे पूछे बिना मालूम नहीं होता। देखो तो वे लड़कियाँ . . . 'बारडोली नहीं आयेंगी' यह लिखने पर भी आयी थीं न?" मुझे मालूम नहीं था, अिसलिअे बापूने हाल सुनाया। फिर कहने लगे — "वे तो बेचारी नादान लड़कियाँ हैं। वे सीतारामसे डरकर अैसा लिखकर दे सकती हैं। अितने बड़े आदमीसे अिनका मुक़ाबला नहीं हो सकता। मगर भगवान जाने। यह लड़ाअी सबकी परीक्षा कर रही है।"

सोने जाते वक्त वल्लभभाअी हँसते हँसते कहने लगे — "महादेव, हमारे तीन ध्रुव तारे नहीं टूटेंगे।" बापू बोले — "पहलेके बारेमें मुझे शक है। बाकी दोकी बात यह है कि अिन लोगोंका तो अिसमें पड़े बिना काम ही नहीं चल सकता।"

कलके गिनाये हुअे तीन तारोंमेंसे आज अेकके गिरनेकी बात अुठी, तो बापूने वल्लभभाअीसे कहा — "आज अब तुम सुखसे खाना। रोज कहा करते थे : 'जेलमें नहीं जाते।' अब बेचारे चले गये, अब तो तुम्हें चैन हुआ न?" 'टाअिम्स' के 'अिलस्ट्रेटेड वीकली' में से तारामण्डलका नक़शा निकाला और अुससे आकाश-दर्शन करनेके लिअे अेक पुट्ठे पर चिपकानेको अुसे वल्लभभाअीको दिया। हर रविवारको आश्रमकी डाक भेजनेके लिअे जो ब्राअुन पेपर जमा किये हुअे हों, अुनसे अेक मजबूत लिफाफा बनानेका काम भी वल्लभभाअीके सुपुर्द है। अुसके अनुसार अुन्होंने सुन्दर लिफाफा बनाया।

१३-३-'३२

बापूने कहा कि 'हिन्दू' अखबार 'लण्डन टाअिम्स' की नकल है और 'हिन्दू' का साप्ताहिक संस्करण यहांके 'अिलस्ट्रेटेड वीकली' की नकल है। मैंने कहा — "लेकिन 'अिलस्ट्रेटेड वीकली' जहाँ छिछले लोगोंके लिअे है, वहाँ यह बिलकुल वैसा नहीं है।" बापू बोले — "'बिलकुल' शब्द जोड़कर तुमने अच्छा किया। नहीं तो अिसमें भी छिछली चीजें बेशुमार आती हैं।"

दोपहरको आश्रमकी डाक लिखते रहे। बीचमें वल्लभभाअीने कहा — "हमें आपको 'सत्य संहिता' बतानी चाहिये। 'गुजरात' में मुनशीने छापी है और हमें भेजी है।" वह निकाली गयी। मैं पढ़ गया। बापूने कहा — "बहुतसे झूठे दावे किये जाते हैं। यह भी अैसा ही हो सकता है। यह तीन सौ वर्ष पुरानी नहीं हो सकती। अभी लिखी गयी होगी।" फिर वल्लभभाअीने कहा — "यह ताड़पत्र पर है। अेक सौ पच्चीस पुस्तकें हैं। अिन्हें लिखने बैठे तो भी मनुष्य अितना कितने दिनमें लिख सकता है?" बापूने कहा — "मेरे जन्मकी, माँ बाप वगैरा की पूर्व अितिहासकी बातें तो आश्चर्यमें डालनेवाली हैं।" मैं अिधर अुधरसे श्लोक पढ़ने लगा। बाके बारेमें श्लोक आये, तो बापूने कहा — "ये अक्षरशः सच हैं।"

भार्यैका भविता साध्वी रूपशीलगुणान्विता।
पतिव्रता महाभागा छायेवानुगता सदा।
जातकष्टे कष्टभाक् च जातसौख्ये सुखान्विता
ब्राह्मे विवाह सिद्धिश्च त्रयोदशक वत्सरे।

मगर अिससे भी ज्यादा सच अिनके खुदके बारेमें यह कैसा है!

मातृतुल्य परस्त्रीकः एकपत्नीव्रतं चरेत्।

अैसा मालूम हुआ कि वल्लभभाअीको तो अिसमें विश्वास है। बापूने कहा — "यह चीज़ सच्ची प्रमाणपात्र हो तो आश्चर्यजनक है।"

एकषष्ठो तदा वर्षे विरोधश्च महान् भवेत्

द्विषष्ठौ वत्सरे काले किंचित् शमनमादिशेत्
किंचित् स्वातंत्र्यमादेश्यमस्वास्थ्यं च भवेन्नर:
विदेशगमने चैव पंचषष्टिक पूर्वके
श्वेत:प्रभु सार्वभौमस्तस्य दर्शनमादिशेत्
तन्मूलात्कार्यसिद्धिर्जातकस्य भविष्यति
पश्चात्स्वदेशवासी च आश्रमे वासवान् भवेत्
ज्ञानमार्गप्रवृत्तिश्च जातकस्य भविष्यति
सप्तति वत्सरे पूर्वे योगसिद्धिश्च जायते ।

वल्लभभाओीको अैसा लगा कि ये श्लोक भावी पर खूब प्रकाश डालनेवाले हैं । मैंने कहा — “अिसमें सम्राट्के साथकी जिस मुलाकातकी बात है, वह पिछले साल हुओी मुलाकातकी बात नहीं, पर भावी मुलाकातकी बात होनी चाहिये ।”

कुछ भी हो, अिसमें मनोरंजन तो काफ़ी रहा ।

* * *

बापू ‘वेट पॅरेड’ पढ़ रहे थे । मौन तीन बजे लिया । मगर पढ़ते पढ़ते यह वाक्य आया सो मुझे बताया और पढ़नेको कहा: ‘every body had to choose between self–indulgence and self-control’ (हरेक मनुष्यको स्वच्छन्दता और संयमके बीच चुनाव करना था) । मैंने बापूकी ‘नीतिनाशके मार्ग पर’ (Self–restraint v. Self-indulgence) पुस्तककी याद दिलायी । अैसा लगा मानो बापू यह कह रहे हों कि यह सारी पुस्तकका सार है ।

* * *

खा चुकनेके बाद वल्लभभाओी सदाकी भाँति दातुन कूट कर तैयार करने बैठे । बादमें बोले — “गिनतीके दाँत रह गये हैं, तो भी बापू घिस घिस करते हैं । पोला हो तो ठीक, मगर वे तो मूसल बजानेकी कोशिश करते* हैं ।” मैंने विनोदको फेरकर कहा — “सन् ’३०में हमारा तो मूसल भी खूब बजा था अर्थात् असम्भव-सा दिखाओी देनेवाला आन्दोलन भी काफी सफल हुआ था ।” बापूने ‘हाँ’के अर्थमें मुसकरा दिया । वल्लभभाओीने कहा — “अिस बार भी अैसा ही है । मगर क्या करें, Caravan passes! (कारवाँ—संघ आगे चला जा रहा है!)”

* * *

---

* गुजरातीमें अेक कहावत है ‘मूसल बजाना’, जिसका मतलब है असम्भव काम करनेकी बेकार कोशिश करना ।

वल्लभभाअीकी दिल्लगी दिनभर चलती ही रहती है। बापू सब चीजोंमें 'सोडा' डालनेको कहते हैं, अिसलिअे वल्लभभाअीको अेक बड़ा मजाकका विषय मिल गया है। कुछ भी अड़चन आये तो कह अुठते हैं — "सोडा डालो न!" और अुसकी हास्यजनकता बतानेके लिअे . . . वैद्यके जमालगोटेकी बात कहकर खूब हँसाया।

आज बापूने अिमर्सनके खतका जवाब दिया। अिसमें साथियोंके प्रति वफ़ादारी (loyalty to colleagues) और सत्यके प्रति वफ़ादारी (loyalty to truth) अिन दो चीज़ोंके बारेमें बापूने महत्वपूर्ण अुद्‌गार प्रगट किये और अुनकी आँखें खोलनेका प्रयत्न किया।

बापूने सरकारको जो पत्र (मुलाकातके बारेमें) लिखा था, अुसका अुत्तर आज आ गया। बापूने 'पोलिटिकल'की व्याख्या माँगी थी, और खुद जो अर्थ करते हैं अुसका विस्तार किया था। सरकारने सिर्फ़ यह लिखा कि जो 'पोलिटिक्स'में कतअी हिस्सा न लेते हों, वे मिल सकते हैं। बापूने कहा — "फिर भी यह नहीं लिखा है कि जो जेलमें जाते हों या सविनय भंगकी लड़ाअीमें भाग लेते हों वे। अिसलिअे अन्तमें पोलिटिक्सका अर्थ मुझ पर ही छोड़ा दीखता है।" मुझे भी विचार करने पर अैसा ही लगा।

१४–३–'३२

*　　　*　　　*

आज बापूका आश्रमकी डाकका दिन था। वल्लभभाअीके शब्दोंमें 'होमवर्ड मेल डे' था। अिसलिअे लगभग ४२ खत आश्रमको और पाँच सात दूसरे लिखे। नारणदासभाअीके पत्रमें अवयवोंके सदुपयोगके बारेमें — जरा-मरणके बारेमें — कुछ सहज किन्तु बहुत महत्वके विचार अनायास ही लिखे गये हैं, वे देखने लायक हैं। परसरामको प्रारब्ध-पुरुषार्थके बारेमें जो पत्र लिखा है, वह अुल्लेखनीय है। तिलकन्‌को '**विषया विनिवर्तन्ते**'के विषयमें जो विस्तार किया है, वह सारा यहाँ देता हूँ:

"In working out plans of self-restraint, attention must not for a moment be withdrawn from the fact that we are all sparks of the divine and therefore partake of its nature and since there can be no such thing as self-indulgence with divine, it must of necessity be foreign to human nature. If we get a heart-grasp of that elementary fact, we should have no difficulty in attaining self-control and that is exactly what is implied in the Gita verses we sing

every evening. You will recall that one of the verses says that the craving for self-indulgence abates only when one sees God face to face."

"जीवनको संयमी बनानेकी योजना तैयार करते वक्त अेक क्षण भी यह बात न भूलनी चाहिये कि हम सब परमात्माके अंश हैं और अिसलिअे अुसका स्वभाव हममें मौजूद है। और परमात्माके बारेमें स्वच्छन्दता जैसी चीज हो ही नहीं सकती, अिसलिअे साबित होता है कि स्वच्छन्दता मानव-स्वभावके भी विरुद्ध है। यह मूल चीज हमारे दिलमें बैठ जाय, तो संयम साधनेमें कोअी मुश्किल न पड़े। हम रोज गीतापाठ करते हैं, अुसमें बिलकुल यही ध्वनि है। वह श्लोक तुम्हें याद होगा, जिसमें कहा है कि विषयोंमेंसे रस तभी जाता है, जब परमात्माका दर्शन होता है।"

बच्चोंके खतमें अेक बात महत्वकी बताअी — "आजका समय लम्बे अरसे तक चलता रहे, तो हमें थकावट मालूम न होनी चाहिये और अगर अिसे शोकका कारण मान लें तो थकावट मालूम हुअे बिना रह ही नहीं सकती।"

. . . जैसे यहाँ भी बापूको अपनी लड़कीकी शिक्षाके बारेमें पत्र लिख कर राय पूछते हैं! अुन्हें लिखे हुअे अेक पत्रमेंसे जान पड़ता है कि अन्तर्जातीय विवाहके बारेमें बापूके विचार और भी आगे बढ़ गये हैं। अुन्हें यह लिखा — "मेरा यह भी विश्वास है कि शादी जातिके बाहर होनी चाहिये। मर्यादा वैश्य तक ही बढ़ाअी जाय तो भले, परन्तु योग्य पति वैश्यके बाहर भी मिले और लड़की अुसे पसन्द करे, तो अुसे रोकना नहीं चाहिये।"

अेक नवविवाहित युगलने अजब कुंकुमपत्री भेजी। अुसमें अपनी शादीका जिक्र करके आशीर्वाद माँगा। अुन्हें बापूने अेक परचा लिखा — "चि० . . . तुम दोनोंने नया रास्ता निकाला है। मेरे आशीर्वाद तुम दोनोंको हैं। अुसमें सरदार बिन माँगे शरीक हैं। हम चाहते हैं तुम दोनों शुद्ध सेवा करो। आशीर्वादकी माँग छपे हुअे कार्डमें की है, अिससे वह सिर्फ शोभारूप हो जाती है और अुस हद तक अुसकी कीमत कम हो जाती है। अगर आशीर्वाद माँगने लायक हों तो वे हाथसे लिखकर मँगाने चाहियें और अुसमें दम्पत्तिके कुछ शुभ संकल्प भी हों।"

. . . बहनने सौन्दर्यकी तारीफ़ करनेके बारेमें सवाल किया था। अुसने कॉलेजमें किसी युवकको देखकर अुसके रूपकी प्रशंसा की और बताया था कि वह जवाहरलालजीकी खूबसूरती पर मोहित है। बापूने तीन वाक्योंमें सौन्दर्य-सूत्र कह दिये — "सौन्दर्यकी तारीफ़ होनी ही चाहिये। मगर वह मूक अच्छी। और 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः।' यह कहा जा सकता है कि जिसे आकाशका सौन्दर्य

हर्ष नहीं पहुँचा सकता, अुसे कोअी चीज अच्छी नहीं लगेगी । मगर जो खुशीसे पागल होकर नक्षत्रमंडल तक पहुँचनेकी सीढ़ी तैयार करनेका प्रयत्न करें, वे बेभान हैं ।"

* * *

किसीने नीलगिरिसे युकेलिप्टसकी अेक बोतल भेजी । अुसे खुलवाकर सरदारसे कहा — "मेरी अँगुली और आपकी नाक दोनोंमें दर्द है, अिसलिअे किसीने जानबूझ कर ही भेजी दीखती है।" फिर अिसलिअे कि अिसे बिल्ली न गिरा दे सरदारसे बापूने कहा कि अुसे दूसरी शीशियोंकी जगह न रखकर और किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें । चिट्ठियाँ लिखाते जाते थे । बीचमें मुझसे कहा — "तुमने किचनका नाम सुना था न ? वह कहता था कि तू अेक भी बात अैसी नहीं करता, जिसका कारण न हो ।" मैंने कहा — "मैंने यही बात आपके बारेमें कअी बार कही है। 'जिसकी अेक भी प्रवृत्ति व्यर्थ नहीं हो, वह कारणके बिना कुछ भी नहीं करता ।'" फिर बापू बोले — "बात सही है। मुझे कोअी पूछे कि नाक फलाँ ढंगसे और अमुक जगह क्यों साफ किया, तो अुसका कारण बता सकता हूँ ।"

* * *

श्रीमती नायडूका पत्र आया । मिलने आयी थीं, पर मिलने नहीं दिया अिसलिअे पत्र सुपरिण्टेण्डेण्टको दे गयीं । दक्षिण अफ्रीकाके बारेमें अुन्होंने लिखा था: A good deal has been achieved there. It was something like striking living water out of obdurate rock. (वहाँ अच्छा काम हुआ है । दुर्भेद्य चट्टानमेंसे पानी निकालने जैसा वह काम था।) और फज़लीके कामकी बहुत बड़ाअी की थी । बापूको The most unseeable being — अति दुर्लभ-दर्शन प्राणी कहकर पुकारा था।

. . . को नोटिस मिलनेकी बात 'लीडर'में देखनेको मिली । मैंने कहा — "बिन सोचा तारा टूट गया ।" बापूने कहा — "सरकारने तोड़ दिया ।"

आज सबेरे पौने चार बजे अुठनेके बजाय बापू तीन बजे ही अुठ गये । मैंने कहा — "टंकार तो तीन ही सुनीं ।" बापूको घड़ी देखने पर मालूम हुआ कि तीन ही बजे हैं, अिसलिअे कहने लगे — "अुठे हैं तो प्रार्थना कर लेना ही ठीक है ।" दातुनपानी और प्रार्थना कर लेनेके बाद चार बजे । नीबूका पानी और शहद पिया । हररोज चार साढ़ेचारसे साढ़ेपाँच बजे तक बापू और सरदार घूमते हैं। बापूने आज सरदारको चिट्ठी पर लिखा — "आप बाकीकी नींद पूरी कर लें ।" सरदार बोले — "नहीं, हम तो आपके पीछे पीछे चलेंगे !"

१५–३–'३२ आज बापूने मेजरसे हरिदासका हालचाल पूछा। पूछने पर संतोषजनक अुत्तर नहीं मिला। अिसलिअे बापूने कहा — "अुन्हें मुझे दो शब्द लिखने दीजिये। वे मेरे अक्षर पढ़ेंगे, तो भी अुनके जीमें जी आ जायगा।" मेजरने कहा — "यह तो नहीं हो सकता।" बापूने कहा — "मेजर मार्टिनने अिस तरहकी अिजाज़त दी थी।" मेजर बोले — "यह ज्यादा ठीक होगा कि आपका सन्देश मैं दे दूँ।" बापूने कहा — "अिससे काम तो चल जायगा, मगर मैं लिखूँ तो ज्यादा ठीक रहेगा।" मेजरने कहा — "आपकी अिस डाकमेंसे आपके अक्षर बताअूँ तो!" बापूने हरिदाससे मिलनेकी अिजाज़त शुक्रवार तक देनेके लिअे मार्टिनको पत्र लिखा।

* * *

मगर अिस वक्त हरिदासकी ही बात संतापजनक हो सो बात नहीं। अैसी और भी बहुत खबरें मिलीं। काका साहब, नरहरि और प्रभुदासको बेलगाँव जेलमें ले गये हैं। वहाँ काकाको चरखेके लिअे सात दिन अुपवास करना पड़ा। प्रभुदासको अस्पतालमें, नरहरिको दूसरेके साथ और काकाको अलग रखा है। प्रभुदासको दो आदमी बाहोंमें अुठाकर लाये और जंगलेमेंसे बात करनी पड़ी। मैं तो भीतर ही भीतर अुबलने लगा। कहाँ अिन सबकी योग्यता और कहाँ मेरी! अिनमेंसे किसीको बापूके पास रखा गया होता, तो कितना अच्छा होता! लेकिन कौन जाने अिन लोगोंको ज्यादा तपाकर अिनकी योग्यता और भी ज्यादा बढ़ानी होगी, और मुझसे भगवानको ज्यादा आत्मनिरीक्षण कराना होगा और मुझे ज्यादा शर्माना होगा! जेलमें आया तब मन ही मन यह चाहता था कि बापूके पास जा सकूँ तो अच्छा हो। योग्यताका भान कहता था कि नहीं जा सकता, और अब आत्मा यह गवाही देती है कि मेरे बजाय ज्यादा योग्य अिन सबमेंसे कोअी होता तो अच्छा होता। 'अकल कला खेलत नर ज्ञानी'!

* * *

बापूने जब देखा कि अिन लोगोंका हाल सुनकर मुझे दुःख होता है तो कहने लगे — "नहीं, जो होता है सो ठीक होता है। हम क्या जेल भोगते हैं? यह अच्छी बात है कि जेलका सच्चा अनुभव अिन लोगोंको होगा।" मैंने कहा — "अेक दृष्टिसे तो यह अच्छा ही है। आज जमनालालजीको वीसापुरमें देखकर सबका सेर सेर खून बढ़ा होगा। अिसी तरह काका और नरहरिके साथका कअियोंको अभिमान हुआ होगा।" बापूने फिर कहा — "अिसलिअे जो होता है सो अच्छा है। यह कहा जा सकता है कि मैंने तो यहाँ जेल काटी ही नहीं।" मैंने कहा — "यह कहा जा सकता है कि सन् '२२में कुछ कुछ

काटी थी ।" बापूने कहा — "नहीं, नहीं। अैसी कोअी बात नहीं थी ।" मैंने कहा — "दूध भी तो दो बार गरम नहीं करने देते थे न?" बापूने कहा — "झूठी बात है! यह सब तुमने अतिशयोक्ति सुनी है । मैं जो माँगता था वही मिलता था । अँगीठी माँगूँ तो अँगीठी, रोटी माँगूँ तो रोटी और घी माँगूँ तो घी । यह बात सच है कि कागज पत्र बिलकुल नहीं लिखे और मुलाकात नहीं ली थी । मगर मेरा तो आज भी यही हाल है न!" फिर कहने लगे —"असली जेल तो दक्षिण अफ्रीकामें काटी । गालियाँ खाअीं, मार खाअी और सख्त मज़दूरी की ।" "मार खाअी?" "हाँ । कर्मचारियोंकी नहीं मगर कैदियोंकी । हमको जूलुओंके साथ रखा गया था । पाखानेकी अैसी व्यवस्था थी कि नीचे डब्बा और अूपर अेक आड़ा लकड़ा। अुस पर अुकडूँ बैठना, न कोअी पकड़नेका साधन, न कोअी अेकान्त । मैं जैसे तैसे दोनों हाथोंसे अुस लकड़ेको पकड़कर बैठा ही था कि अेक जूलू कैदी आया और मुझे थप्पड़ मारकर धकेल दिया । मैं दीवारके साथ टकराया, सिरमें लगी होती तो खूब खून निकलता । अुस आदमीको अैसा लगा कि अुसके बैठनेकी जगह पर पैर रखकर मैं अुसे बिगाड़ता हूँ । अुस दिन पाखाना जानेकी तो बात ही कहाँ रही! दूसरे दिन सुपरिण्टेण्डेण्टसे सारा किस्सा बयान किया और कहा — 'हमें आप अैसी ही सुविधा देंगे, तो अिस तरहके किस्से होते ही रहेंगे । अिसमें मैं अुस बेचारेको दोष नहीं देता, मगर हमारे लिअे हिन्दुस्तानी ढंगकी दूसरी व्यवस्था होनी चाहिये। हमें पानी काममें लेना चाहिये और खास तरहसे बैठना चाहिये ।' बस दूसरे दिनसे अलग व्यवस्था हो गयी । यह तो मैं था अिसलिअे । नहीं तो कितने ही दिन मुसीबत अुठानी पड़ती । और हमें खाना कैसा मिलता था? मीली पेप यानी मक्कीकी कांजी — यह तीन दिन तक रोज तीन बार; दो दिन भात और वह अकेला ही — साग दालके बिना — अुसमें सिर्फ नमक और घी; वह घी भी प्रिटोरियामें तो नहीं मिला; और दो दिन सेम और वह भी सिर्फ अुबले हुअे! अिसके बारेमें झगड़ा किया तब हमें खुद अपनी रसोअी बना लेनेकी अिजाज़त मिली । अिजाजत मिली तो सिर्फ पकानेकी । चीज़ें तो वही रहीं । थंबी नायडू पकाता था और सुन्दर भात बनाकर देता था । वे सब नाचनाच कर खाते थे । मुझे जिस कोठरीमें रहना था, वह मुश्किलसे तीनचार फुट चौड़ी और छह फुट लंबी होगी, और तिजोरी जैसी बंद । अिसमें अुजालेका नाम नहीं था और हवाके लिअे सिर्फ अूपर खिड़की थी । ये अेकान्त कोठरियाँ — अँधेरी कोठरियाँ कहलाती थीं । मेरे आसपास दुनियाभरके निकम्मे कैदी थे । अेक ३० बार सज़ा पाया हुआ था, अेक बलात्कारका गुनहगार था और सब जूलू थे । मुझे कैदियोंके कुर्तोंकी जेबें काटकर देनी होती थीं और वे लोग

अुन्हें सीते थे । अुन्हें कैंची नहीं दी जा सकती थी, अिसलिअे यह काम मुझे सौंपा गया था । बादमें कम्बल गूँथनेका काम मिला था; यानी फटे हुअे कम्बलोंको अेक दूसरेपर सीकर अुनकी रजाअी बना देनी होती थी । अैसे सैकड़ों कम्बल मैंने सीये होंगे । हमें ६ से ११ और १२ से ५ बजे तक कुल नौ घंटे काम करना पड़ता था । मगर मैं कभी नहीं थका । मैं तो अुनसे कम्बल माँगता ही रहता था । प्रिटोरियामें घी भी नहीं मिलता था, अिसलिअे मैंने चावल खाना छोड़ दिया । अेक बार मीली पेप लेता था । डॉक्टर रोटी रखता था । मगर मैं अिनकार कर देता था । आखिर डॉक्टर हारा और घी दिया और रोटी भी रहने दी । थोड़े दिन हमें बाहर काम करनेको मिला था । बड़ी बड़ी कुदालियाँ दी गयीं और अुनसे यहाँसे भी ज़्यादा सख्त जमीन खोदनी होती थी । बादमें म्युनिसिपल वॉटर टैंकका काम करना था, वहाँ भी हमको भेजा गया था । अेक झीणाभाअी देसाअी नामके आदमी थे । वे बेचारे खोदते खोदते मूर्छा खाकर गिर पड़े। लेकिन ग्रिफिथ नामका वॉर्डर तो आवाज़ देता ही जा रहा था — खोदो, खोदो । बादमें मैंने अुसको नोटिस दे दिया कि तुम अिस तरह करोगे, तो हम कोअी काम नहीं करेंगे । तब कहीं वह चेता । मेरा वजन तो अुन दिनोंमें बहुत ही घट गया था । लेकिन अुस वक्त वजनका कौन विचार करता था ! तीसरी बार जेलमें गया, तब मेरे खानेका सवाल हल हो गया था । मैंने खजूर, मूँगफली और नीबू माँग लिये और मुझे मिल गये थे । हरिलालने भी अुन दिनों बहुत बहादुरी दिखाअी थी । अुसे दूर कहीं कोनेकी जेलमें भेज दिया था । वहाँसे बदलवानेके लिअे अुसने सात अुपवास किये और अन्तमें जीत गया । मैं अुस समय बाहर था । लेकिन मैंने अिस मामलेमें जरा भी ध्यान नहीं दिया था। वे सब सच्चे जेलके दिन थे । यह क्या वह जेल है! यहाँ तो मामूली कैदियोंको भी अुतना कष्ट नहीं, जितना वहाँ था । बादमें कष्ट हलका हो गया था, खाने पीने वगैराकी हालत सुधर गयी थी । अिस सुधरी हुअी हालतमें अिमाम साहब आये थे ।”

यह तो दक्षिण अफ्रीकाके अितिहासका अेक अमूल्य पन्ना मिल गया ।

*　　　*　　　*

आज बापूने ‘वेट परेड’ पूरा किया और वल्लभभाअीसे कहने लगे कि आपको ज़रूर पढ़ना चाहिये । शराबबन्दीका सारा अितिहास अिसमें मिल जाता है और कुछ प्रकरण तो बहुत ही अच्छे हैं। अिससे पहले बापू कअी पुस्तकें पढ़ चुके हैं। आज Adam's Peak to Elephanta (अैडम्स पीक टू अैलीफेण्टा) शुरू किया ।

आज . . . की अनेक पुस्तिकायें आयीं। अुनमें हँसनेको खूब मिला। 'ज्ञानकिरण' नामकी अनेक पत्रिकायें अेक बड़े कागज पर छपी हुअी थीं। अुसे काट और सीकर वल्लभभाअीने अेक किताब बनाअी और बापूसे कहने लगे — "पढ़ने लायक है, मगर ज्ञान बढ़ जायगा तो!" फिर बापूने पढ़नेको ली और अेक अेक लकीर पढ़कर खूब हँसे। खास कर 'दिया न जलाओ' पत्रिका पढ़कर। वल्लभभाअी बोले — "यह पत्रिका लेम्पकी रोशनीमें बैठकर लिखी होगी!" हँसानेवाले तो और भी बहुतसे भाग थे। बापूने कहा — "बेचारे सब अपनी अपनी मतिके अनुसार जितना हो सकता है कर रहे हैं।" थोड़ी देर ठहरकर फिर बोले — "मगर कहीं कांग्रेसका नामनिशान भी है? अिसके पीछे कैसी डरकी मनोदशा छिपी हुअी है! जहाँ साफ़ अुल्लेख करना चाहिये वहाँ भी ज़बरदस्ती चुप रहना पड़े! और सरकार भी मानती है कि यह ठीक है, जब कि प्रवृत्ति तो सारी कांग्रेसकी ही चल रही है। दयाजनक स्थिति है!"

* * *

बापूने जीवणजीका मेरे जातिभाअीके तौर पर परिचय कराया और दुर्गाके साथ मुझसे मिलने दिया। सम्बन्धियों और मित्रोंके बारेमें क़ानूनकी हास्यजनकता बतानेके लिअे मैंने मलकानी और अुसकी शकुन्तलाका किस्सा सुनाया। बापूसे कहा — "विष्णुके पत्रमें यह था।" बापू बोले — "अैसी बातें अखबारोंमें क्या नहीं आती होंगी?"

१६-३-'३२

कल अैसी खबर आयी थी कि बा बारडोली तालुकेमें घूमने गयी हैं, अिस पर मैंने कहा था — "अिस बार बाको छह महीने मिलेंगे।" बापूने कहा — "'सी' क्लास मिले और मशक्कत मिले तो आश्चर्य नहीं। बाको 'सी' मिले, तो अच्छा रहे।" आज शामको अखबारमें यही खबर आ भी गयी! यह खबर सुनकर बापूके आनन्दका पार नहीं रहा। खिलखिलाकर हँसे, फिर सिर्फ़ अितना बोले — "साठ सालकी बुढ़ियाको सख्त काम देते अिन्हें शर्म नहीं आयी होगी!" वल्लभभाअीसे हँसते हँसते कहने लगे — "आपको 'सी' मिलना चाहिये था।" वल्लभभाअीने कहा — "मुझे कैम्प जेलमें भेज दें, तो बहुत खुश होअूँ।"

* * *

अेक आदमीके पूछे हुअे सवालके जवाबमें बापूने लिखाया:

"It is possible and necessary to treat human beings on terms of equality, but this can never apply to their

manner. One would be affectionate and attentive to a rascal and a saint, but one cannot and must not put saintliness and rascality on the same footing."

"मनुष्य मात्रके साथ समानभावसे बरतना सम्भव और आवश्यक है। मगर अुनके गुण-अवगुण पर यह तरीका कभी लागू नहीं करना चाहिये। अेक बदमाश और अेक संत दोनोंके प्रति प्रेम रखा जा सकता है और अुनकी सेवा भी की जा सकती है। मगर बदमाशी और सन्तपनको कभी अेक कक्षामें नहीं रखा जा सकता, नहीं रखना चाहिये।"

मैंने कहा — "भिड़े शास्त्री गीताकी समताका यह अर्थ करते हैं कि हम दुष्टको मारें और सदाचारीको पूजें यह समत्व है, क्योंकि दुष्टको मारनेमें दया और न्यायबुद्धि है। यह बात हमारी वृत्ति पर निर्भर है।" बापू बोले — "स्टोक्स भी अैसा ही मानता है, यह तुम जानते हो न? मैं कहता हूँ कि अिस तरह दयासे मार ही नहीं सकते।" वल्लभभाअी हँसते हँसते बोले — "बछड़ेको दयासे मारा जा सकता है, तो दुष्टको क्यों नहीं?" बापूने यह बात तो हँसीमें अुड़ा दी, मगर वल्लभभाअीने जब यह सवाल अुठाया कि "किसीकी मरनेकी अिच्छा भी होती होगी?" तब बापूने कहा — "ज़रूर हो सकती है। आत्महत्या करनेवाले अिच्छाके बिना आत्महत्या करते होंगे?"

* * *

टॉमसनकी दी हुअी लाठीकी व्याख्या सुनकर बापू बोले — "ये अब खुद ही अपना असली स्वरूप दिखा रहे हैं। कुछ अैसे आदमी हैं, जो कहते हैं कि जल्दी निबटारा क्यों नहीं करते?" कुछ मैकडोनल्डकी बात निकली और होरकी भी। वल्लभभाअी कहने लगे — "सब चोर हैं, नहीं तो होर पार्लियामेण्टमें अिस तरह बोल सकता है?" बापूने कहा — "चोर नहीं। विलायतमें मैंने देखा कि चोर होनेकी जरूरत नहीं। मरे और लॉर्ड डिकिन्सन जैसे अीमानदारीसे तर्क करते थे कि तुम्हारे जैसे लोगोंसे राज किस तरह चल सकता है? अिसी तरह और लोग भी प्रामाणिक तौरपर मान सकते हैं। हमारे पास सत्ता हो तो हम किस तरहका बरताव करेंगे?" वल्लभभाअीने कहा — "हम भी अैसा ही करेंगे, मगर अिससे हम दुष्ट कहलानेसे बच जायँगे?" बापूने कहा — "नहीं, मगर हमें अुस वक्त कोअी दुष्ट कहेगा तो अिसमें कोअी शक नहीं कि हमें बुरा लगेगा। अिसलिअे अिन लोगोंको दुष्ट माननेकी जरूरत नहीं।"

* * *

मेजर मार्टिनका पत्र आया। अुसमें लिखा था कि — 'सरकारको पत्र भेजा है और अुसका लौटती डाकसे जवाब माँगा है; अिसी तरह भंडारीसे भी हरिदासके हाल पूछे हैं।'

मैक्सवेलका मेजर भंडारीके नाम असा पत्र आया कि सारजण्ट विन्स और रोजर्सको घड़ियाँ भेजीं, अुसके लिअे अुनकी तरफसे कदरदानी (appreciation) जाहिर करनेको अिण्डिया आफिसने बम्बअी सरकारको लिखा है, यह गांधीजीको बता देना। यह पत्र बापूको दिखाया गया।

रंगूनवाले मदनजीत ७२ सालकी अुम्रमें अिनसीन जेलमें गुजर गये। अिस आदमीमें अनेक खामियाँ होने पर भी अिसमें शक नहीं कि अुसने ब्रह्मदेशके लिअे फकीरी ली थी। जेलमें स्वर्गवासी होकर अुसने अुस सेवाको चार चाँद लगा दिये हैं। बापूको यह खबर सुनकर अभिमान हुआ।

१७-३-'३२

'टाअिम्स' बताता है कि बा की कैद सादी है।

आजके 'क्रॉनिकल'में 'अेडवांस' पत्रमेंसे अुद्धृत किया हुआ बेन्थमका गोलमेज परिषदके कामका निजी बयान था। अिससे अिन लोगोंका पूरी तरह पर्दाफाश होता है। श्रीमती नायडूको 'सी' मिले तो कैसा रहे? अिस तरहकी बात सवेरे हो रही थी, तब बापू बोले — "अिनके मामलेमें अैसा नहीं करेंगे। अितने जहरीले ये लोग नहीं बनेंगे।" वल्लभभाअीने कहा — "देखिये, जिन्होंने बाको 'सी' दिया, अुनके बारेमें भी आप कहते हैं कि अितने जहरीले नहीं बनेंगे। आप तो 'न्यायदर्शी' जो ठहरे?" सेम्युअल होरके बारेमें वल्लभभाअीने पूछा — "यह आदमी अिस तरह कैसे आँखें अन्धी रख सकता होगा?" बापू बोले — "यह कंजर्वेटिव लोगोंके स्वभावमें है। देखो न, पिछली लड़ाअीमें जर्मन लोग फ्रान्स तक पहुँच गये, तब तक भी ये तो यही कहते थे न कि हम जीत रहे हैं, हम जीत रहे हैं!"

* * *

बापूको कोहनीके अूपरकी हड्डीमें और दाहिने हाथके अँगूठेमें बहुत दर्द रहता है। बापूने कहा — "ये बुढ़ापेकी निशानियाँ हैं। अिस दुःखका विचार ही छोड़ देना चाहिये। अिसे अनिवार्य समझकर अिसकी व्यर्थकी चिन्ता छोड़नी चाहिये।" वल्लभभाअी — "अुस हठयोगीकी तरह!" फिर बापूने कहा — "मैं बाहर होता तो साफ दीखता है कि शायद ब्लडप्रेशर (खूनका दबाव) बढ़ जाता, क्योंकि नींदकी भूख अभी भी मिटती नहीं।" अिस पर मैंने कहा — "तब तो यहाँ आये यह अीश्वर कृपा ही कहना चाहिये!" बापू बोले — "जरूर। अिसके सिवा दूसरे कारणोंसे भी मैं बाहर रहकर क्या कर सकता था? हिन्दू-मुसलमानोंका सवाल, सरहद प्रान्तका सवाल, ये सब विकट सवाल थे। लालकुर्तीवाले करकरका क्या करता? अब जो सच्चे कांग्रेसवादी हैं, वे अलग निकल आयेंगे

और दूसरे होंगे वे अलग छूट जायँगे। यह संभव है कि हम छूटेंगे तब तक भगवान सारी स्थितिको बहुत अनुकूल बना रखेंगे।"

. . . की मताधिकार समितिके सामने गवाही पढ़कर आज बापूने कहा — "यह तो अिसी तरह बोलता है जैसे बिलकुल बिक गया हो। जो प्रौढ़ मताधिकारके विरुद्ध बोलता है, अुसे अब क्या कहा जाय?"

१८-३-'३२

आज मार्टिनको दिये गये अल्टीमेटमका जवाब देने सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब आये — लगभग बारह बजे। अिधर बापू आज शामका भोजन छोड़नेका नोटिस देनेके लिअे पत्र लिखनेका विचार कर रहे थे! मेजरने खबर दी कि आपको हर पखवाड़े तीन कैदियोंसे मिलनेकी अिजाजत आज आ गयी है। जेलके अनुशासनकी चर्चा न की जाय, राजनीतिकी चर्चा न की जाय, दूसरे कैदियोंके हालचालकी चर्चा न की जाय, २० मिनटकी ही मुलाकात हो, वगैरा शर्तें भी साथ हैं! साथ ही यह शर्त भी थी कि अिन लोगोंसे मिलनेके लिअे बापूको दफ्तरमें जाना होगा, जिससे सरदार और महादेव अिन लोगोंसे बात न कर सकें! यह सब सन्तोषजनक नहीं था। मगर बापूने कहा कि अिसके खिलाफ लड़ना नहीं है। अुन्होंने हरिदास, नरसिंहभाअी और छगनलाल जोशीसे मिलनेकी माँग की। बादमें याद आया कि स्त्रियोंको मिलने बुलाना चाहिये। बस, गंगाबहनकी माँग की। गंगाबहनकी माँगसे मेजर भड़के। वापस आये। स्त्रियोंको अुनकी जेलसे निकालनेका हुक्म नहीं, और आपको मिलनेके लिअे कैसे ले जाया जा सकेगा, वगैरा बातें कीं और अन्तमें अिन्स्पेक्टर जनरलको फिर लिखनेको कहकर चले गये।

अिस बारेमें बापू स्पष्ट विचार रखते हैं कि बाहरके आदमियोंसे मिलनेका आग्रह नहीं किया जा सकता। जेलमें आना और बाहरवालोंसे मिलनेकी लालसा रखना, अिसका कोअी अर्थ नहीं। मगर जेली भाअियोंकी जानकारी रखनेका जितना अधिकार है, अुतना ही कर्तव्य भी है। और अिसका आग्रह हरगिज नहीं छोड़ा जा सकता। अिस सिद्धान्तके अनुसार ही आज तकके कदम अुठाये गये हैं।

* * *

आज बापूने नारणदासभाअीको अ-ब के बारेमें अेक बड़ा गंभीर प्रश्न खड़ा करनेवाला पत्र लिखा। अ की पशुताके विरुद्ध आखिरी अुपायके रूपमें अ का sterilization (वंध्यकरण) किया जाय या ब को birth-control (गर्भनिरोध) के अुपाय सिखाये जायँ। अैसी सूचना देकर भी सब कुछ

नारणदासभाअी पर छोड़ दिया: तुम्हारी बुद्धि स्वीकार न करे तो छोड़ देना, तुम पर जरूरतसे ज्यादा बोझा मालूम हो तो भी छोड़ देना वगैरा। मगर बापूने यह भी बता दिया कि अैसे हालातमें sterilization (वंध्यकरण) हितकर है, और स्त्रीकी रक्षाके लिअे अुसे birth-control (गर्भनिरोध) भी सिखाया जा सकता है। बापूने बता दिया कि अिस हद तक मेरे पहलेके विचारोंमें अपवाद रूपसे अैसे किस्से आ सकते हैं।

आज सेम्युअल होरका The Fourth Seal (दि फ़ोर्थ सील) पूरा किया। किताब बढ़िया है। अिसमें ग्रांड डचेसका चित्र अद्भुत खींचा है। लेखककी रूसी भाषा सीखनेकी अत्यंत लगनभरी और सफल कोशिश, साम्राज्यकी सेवा करनेकी तीव्र अिच्छा, वगैरा सब बातें साफ नजर आती हैं। बापूकी आलोचना यह थी कि आखिरी प्रकरणमें जारका बचाव जरूरतसे ज्यादा राजनिष्ठा बताती है। मैंने कहा — "वह मानता है कि जारने गद्दी न छोड़ी होती, तो लड़ाअीका कोअी दूसरा ही नतीजा निकलता। अिस बातको वह मानता ही नहीं दीखता कि अिस लड़ाअीका फल विप्लव हुआ और अुसमें किसी भी तरह प्रजा खड़ी हो गयी। अुसे तो pale horse दिखाअी दिया और अुसके पीछे मौत, सत्यानाश, अकाल वगैराके ही दृश्य दिखाअी दिये हैं।" बापूने कहा — "यह सच है, मगर राजाके बारेमें अुसका यह कहना भी सच है कि अुसने गद्दी न छोड़ी होती और राज करके दिखाया होता, तो बिना मौत न मारा जाता और बुरा हाल न होता।" "अुसने गद्दी न छोड़ी होती, तो क्या अुसे प्रजा न मारती?" बापूने कहा — "यह नहीं कहा जा सकता। मगर अुसे हिम्मतके साथ प्रजाके विरुद्ध खड़ा रहना था!"

१९-३-'३२

मदनजीत कब और किस तरह बापूके साथ जुड़े, बादमें कैसे अलग हुअे, अिस बारेमें बापूसे पूछा; और बहुतसी जानने लायक हकीकतें बापूसे मिलीं। वे जूनागढ़के नागरिक थे। जंजीबारसे अफ्रीका गये थे, वहाँ बापूने अुन्हें आश्रय दिया था। घर बिगड़ जानेके बाद भले-बुरे अनुभव लेते, गिरते-पड़ते बापूके पास आये थे। बापूकी तिजोरीमेंसे रुपया चला गया। अुसकी कुंजीके बारेमें मदनजीतसे पूछताछ करनेपर वे चिढ़कर घर छोड़कर चल दिये। फिर खूब जगलोंमें भटकते रहे। यह मालूम होते ही कि तिजोरीकी कुंजीका चोर और ही कोअी था, बापूने अुन्हें बुलाया और अुनसे मिन्नत की। ये वापस आये, मगर बापूके साथ नहीं रहे। बापूने अुनसे प्रेस खुलवाया और अुसमें अच्छी रकम लगायी। अुन्हें 'अिण्डियन ओपीनियन' निकालनेकी सूझी। अिसमें लिखते नाजर, अुसकी जाँच बापू करते और फिर

छपता था । यह सारा घाटेका धन्धा था । हर महीने ५०-६० पौण्ड बापूको डाल देने पड़ते थे और मुश्किलसे चार सौ प्रतियाँ खपती थीं । बापूने छगनलालको जाँचके लिअे भेजा । पर मदनजीतने अुन्हें हाथ न धरने दिया । बादमें वे वेस्ट गये । अुन्होंने रिपोर्ट दी कि यह तो दिवाला निकालनेका धन्धा है, अिसे समेट लीजिये । बापूके अुसे फिनिक्स ले जानेका निश्चय करनेके साथ ही ये भाअी हिन्दुस्तान चल दिये । गोखलेके नाम पत्र ले गये थे । बापूकी निन्दा बर्मामें भी खूब की । मगर अुनका तारीफके लायक गुण यह था कि अुन्होंने अपने लिअे कौड़ी भी जमा नहीं की; अनेक खटपटोंमें भाग लेते हुअे भी अुनमें अपना स्वार्थ नहीं चाहा । खटपट, दूसरोंके बारेमें वहम कर लेना, दूसरोंके दोष ही पहले देखना, अिस तरहके दुर्गुण अुनमें थे । मगर समाजके लिअे अुन्होंने जो फकीरी ली थी वह सच्ची थी । रंगूनमें भी अुन्होंने स्वार्थके लिअे कुछ नहीं किया । और अिसमें शक नहीं कि अुन्होंने राष्ट्रकी सेवाके लिअे ही जीवन बिताया । अुनके जीवनका जेलमें अन्त करके अीश्वरने अुनकी बड़ी कदर की ।

आज डाह्याभाअी मिलने आये थे । सुबह बापू जोशी, नरसिंहभाअी और हरिदाससे मिले । डाह्याभाअी कहते थे कि सरोजिनी देवीसे वाअिसराय मिले थे । सरोजिनीने कहा कि 'अच्छा हुआ कि यह सच्ची बात प्रगट हो गयी । वहाँ जाकर क्या स्वराज्य मिलना था ?' यह सुनकर भारी आश्चर्य हुआ कि कटेलीने जमनालालजीको दबानेकी खूब कोशिश की ।

* * *

हर सप्ताह आश्रमकी डाक जिस मोटे लिफाफेमें आती है, अुसपर यहाँ पार्सलों वगैरापर आये हुअे ब्राअुन पेपर चिपका कर नये लिफाफे बनाये जाते हैं । मैं कहता था कि यह लिफाफा हमें ब्राअुन पेपरके भाव पड़ जाता है । बापूने कहा — "हाँ, मगर वह गोंदकी बोतल खटकती है । पहले लेही बनाकर बादमें अुसमें कुछ मिलानेके लिअे खोज करनेका विचार किया । मगर बादमें अुससे दिल हटा लिया और बीचका रास्ता पसन्द किया ।" अिसपर वल्लभभाअी कहने लगे — "मध्यम मार्गवाले तो लखतरमें जाकर बैठ गये हैं ।"

* * *

. . . के खिलाफ भी हाजिरीका नोटिस वापस ले लिया गया है, यह पढ़कर मैंने कहा — ". . . ये सब अेक ही तरहकी दलीलके वश हो गये हैं ।" बापूने कहा — "हाँ, कमजोरीकी दलीलके वश हो गये हैं ।"

सरोजिनी देवीको शिमलेका निमंत्रण था । वहाँ जायँ या न जायँ, अिसपर बापूकी राय माँगी थी । बापूने राय देनेसे अिनकार किया । सरदारने दी । डाह्याभाअीसे कहा — "कहना कि न जायँ ।"

नोट करने जैसी कोअी खास बात नहीं। छगनलाल जोशीको भेजनेकी पुस्तकोंकी फेहरिस्त तैयार करनेको कहा। अुसमें ब्रेल्सफोर्ड, क्रोजियर और डयूरण्टकी पुस्तकें दर्ज करनेसे अिनकार कर दिया; क्योंकि ये राजनीतिक मानी जाती हैं, और 'क' वर्ग वालोंको नहीं मिलतीं। अिन्हें दर्ज करते करते हर पुस्तकके बारेमें बातें होती जाती थीं। बापूने कहा — "'साकेत' पढ़ जाओ, दो दिनका काम है।" ४५० पन्नेका काव्य दो दिनमें पूरा करना मुश्किल तो लगा। मगर यह समझ कर कि बापू बिना विचारे नहीं कहेंगे, शुरू कर दिया और रातको सोने तक ३०० पन्ने पढ़ डाले। वह इतना आकर्षक था। सुबह पौने चार बजे अुठना न होता, तो पूरा करके ही सोता।

२०-३-'३२

'साकेत' आज चार बजे पूरा किया। अपूर्व मनोहर रचना है। रामायणकी कथाकी बुनियाद लेकर अुस पर कविने अपनी सुन्दर कल्पनासृष्टि रची है। भाषा सरल और सुबोध; काव्यप्रवाह अकृत्रिम और प्रसादमय, स्वच्छ बहते हुअे झरनेकी तरह शुरूसे अखीर तक बहता जाता है। यह कथा कितनी ही बार पढ़िये तो भी आंसू आये बिना कितने प्रसंग पढ़े ही नहीं जा सकते। यही हाल अिस बार भी हुआ। अुर्मिलाका चित्र स्वतंत्र ही है। अिसमें खूब नवीनता और शोभा है। सिर्फ नवाँ सर्ग जरा संस्कृत कवियोंकी जरूरतसे ज्यादा नकल मालूम होता है। फिर भी सारा काव्य मैथिलीशरण गुप्तकी अेक चिर-स्थायी कृति बन कर रहेगा। अिसका पढ़ना मनोहर नहीं, बल्कि पावक है, अुन्नतिप्रद है। शुरूसे आखिर तक अितने अुन्नत वातावरणमें रखनेवाली यह अुन पुस्तकोंमेंसे अेक है, जो क्वचित् ही पढ़नेमें आती हैं।

२१-३-'३२

आज और कल मिलकर बापूने आश्रमके लिअे चालीस खत लिखे (अिमाम साहबके संस्मरणोंके सिवाय)। अेक दो पत्र जो अुल्लेखनीय हैं, अुनका जिक्र यहाँ करता हूँ। जुगतरामने बाहरकी स्थितिका हवाला देते हुअे लिखा था कि कुछ लोग खड़े हैं, कुछ लोग गिर गये हैं। अुसके जवाबमें बापूने लिखा :

"तुम्हारे पत्रकी हमने आशा रखी ही थी। जन्म लेनेवाले सभी जीते नहीं रहते। और जब हवा बिगड़ती है, तब मृत्यु संख्या बढ़ जाती है। अिस-लिअे तुम जो लिखते हो, अुसपर मुझे आश्चर्य नहीं है। आश्चर्य और आनन्द यह है कि मृत्यु संख्या बढ़ी नहीं। और मौतका अफसोस किस लिअे? मरने लायककी मौत स्वागतके योग्य है। और जो मरते हैं, वे तो फिर जन्म लेनेके

लिअे ही न ? अिसलिअे खेदका कोअी कारण नहीं है । अकेले रहनेकी कला जिसने नहीं सीखी, वह बाहरके फेर-बदलसे अशान्त होता है। मगर सत्यनारायणको तो वही पाते हैं, जो अकेले खड़े रहने लायक होते हैं।"

अेक ब्रह्मचर्य पालनेकी अिच्छा रखनेवाली लड़कीको बापू लिखते हैं :

"ब्रह्मचर्यपालनमें सबसे बड़ी चीज भातृ-भावनाका साक्षात्कार करना है। हम सब अेक पिताके लड़के-लड़कियाँ हैं। अुनमें विवाह कैसे ? खाना केवल औषधरूप, स्वादके लिअे नहीं। मनको और शरीरको सेवाकार्यमें रोके रखना। सत्यनारायणका मनन करना। बाल कटानेका धर्म स्पष्ट हो जाय, तो लोक-लज्जा छोड़कर कटवाना। अीश्वर-भक्तिके लिअे नित्य सेवामें लीन रहना।

"मनोविकार हमारे सच्चे शत्रु हैं, यह समझकर नित्य युद्ध करना। इसी युद्धका महाभारतमें वर्णन है।"

लोज़ानमें God is Truth (अीश्वर सत्य है) और Truth is God (सत्य अीश्वर है) पर जो प्रवचन किया था, अुसी चीजका बच्चोंको लिखे पत्रमें बढ़िया ढंगसे जिक्र है :

"अीश्वरकी मेरी व्याख्या याद है ? अीश्वर सत्य है यह कहनेके बजाय मैं यह कहता हूँ कि सत्य अीश्वर है। मुझे हमेशा अैसा नहीं सूझा था। सूझ तो चार-अेक वर्ष पहिले ही पड़ी। मगर अनजानमें ही मेरा बर्ताव अिसी किस्मका रहा है। अीश्वरको मैंने सत्यके ही रूपमें जाना है। अेक समय अैसा था, जब अीश्वरकी हस्तीके विषयमें शंका थी। मगर सत्यकी हस्तीके बारेमें कभी नहीं थी। यह सत्य केवल जड़ गुण नहीं बल्कि शुद्ध चैतन्यमय गुण है। वही राज्य करता है, अिसलिअे अीश्वर है। यह विचार दिलमें पैठ गया हो, तो तुम्हारे दूसरे सवालोंका जवाब अिसीमें आ जाता है। मगर परेशानी हो तो पूछ लेना। मेरे लिअे तो यह अनुभवगम्य जैसा है! 'जैसा' अिसलिअे कहता हूँ कि मैंने सत्यदेवका साक्षात्कार नहीं किया है। सिर्फ झाँकी हुअी है। श्रद्धा अटल है।"

* * *

आजकी खबरों परसे बापूको अैसा लगा कि आस्ट्रेलियाके प्रधान मन्त्रीको डुबानेका षडयन्त्र अेक Imperialist Conspiracy (साम्राज्यवादी साजिश) है। आस्ट्रेलियामें मज़दूर दलका प्रभाव है, यानी समाजवादका प्रभाव है; और समाजवाद या साम्यवादका मुकाबला करनेके लिअे आजकल Imperialism (साम्राज्यवाद) या Facism (फासिज़्म) है। मालूम होता है आजकल अिसका प्रचार हो रहा है। दक्षिण अफ्रीकामें यही हुआ है न ? Jameson Raid (जेमीसन रेड) के पीछे अिसके सिवा और क्या था ? वह तो क्रूगरका मन्त्री महाअष्टावधानी और चाणक्य-जैसा था। अिसलिअे विरोधीके सारे दाव

बेकार गये। सब पकड़े गये, खास न्यायालयमें मामला चलवाया गया और सबको फाँसीकी सजा दिलवाओ गयी।

२२-३-'३२ आजके छोटे-छोटे अनुभव भी सब लिखने लायक हैं। सुबह चार बजे प्रार्थनाके बाद नीबू और शहदका पानी पीते हैं। अुबलता हुआ पानी शहद और नीबूके रस पर अुँड़ेला जाता है। फिर जब तक पानी पीने लायक न हो जाये तब तक राह देखते हुये हम लोग कुछ मिनट तक बैठे रहते हैं, या बैठे-बैठे पढ़ते रहते हैं। कलसे बापूने अपने पानी पर कपड़ेका टुकड़ा ढाँकना शुरू किया। आज सवेरे पूछने लगे — "महादेव, तुम्हें मालूम है यह कपड़ा क्यों ढाँकता हूँ? छोटे छोटे जन्तु हवामें अितने होते हैं कि पानीकी भापके मारे अन्दर पड़ सकते हैं, अुनसे बचाव हो जाता है।" वल्लभभाओ सदाकी तरह बोले — "अिस हद तक हमसे अहिंसा नहीं पाली जा सकती।" बापू हँसकर कहने लगे — "अहिंसा तो नहीं पाली जा सकती, मगर स्वच्छता तो पाली जा सकती है न!"

* * *

दूसरे अखबारोंने अपने ग्राहक बढ़ानेके लिअे कओ तरकीबें की हैं। अिसी तरह 'क्रानिकल' में अनेक प्रकारकी प्रतियोगितायें आती हैं। आज कुछ चित्रोंसे बताये गये धन्धोंके नामोंकी प्रतियोगिता थी। बापू कहने लगे — "चलो वल्लभभाओ, नाम सुझाने लगिये, अिनाम लेना है न?" और सचमुच चिट्ठी लिखानेका जो काम कर रहे थे, अुसे छोड़कर बापू अिस विनोदमें पड़ गये। सारे नाम लिखे और फिर मुझसे कहने लगे — "महादेव तुम अेक्स, वाय, ज़ेडके नामसे अिन्हें भेज दो।" शामको मैंने पूछा — "बापू, सचमुच आप चाहते है कि मैं भेज दूँ?" बापू कहने लगे — "अिसमें क्या है? अिसमें थोड़ासा बुद्धिका अुपयोग है और निर्दोष मनोरञ्जन है।" हमने तय किया कि अिसके जवाब डाह्याभाओके मारफ़त भेजे जायँ।

* * *

सुपरिण्टेण्डेण्टसे मुश्किलसे ही बापू कोओ रियायत माँगते थे। लेकिन खगोलका और आकाश-दर्शनका अुन्हें अभी अभी अितना शौक बढ़ गया है कि ग्रहण आनेके कओ दिन पहिलेसे ही वे अैसी बातें करने लगे थे: ग्रहण कब दिखाओ देगा, कहाँसे दिखाओ देगा? आज सवेरे सुपरिण्टेण्डेण्टसे पूछा — "सामनेका दरवाजा और दीवार ग्रहण देखनेमें आड़े आयेंगे, क्योंकि ग्रहण सवाछह बजे शुरू होता है और अुस वक्त चाँद दीवारके नीचे होनेके कारण देखा नहीं जा सकता। परन्तु आप दरवाजा खुलवा दें, तो हम ग्रहण देख सकते

हैं।" सुपरिण्टेण्डेण्टने 'हाँ' कहा। जेलर साहिब बेचारे छह बजेसे आकर बैठे, सवाछह-साढ़ेछह बजे हम देखने निकले। मगर चन्द्रमाने सत्याग्रह कर दिया। सामने क्षितिज पर बादलोंमें वह जो छिपा तो छिपा ही रहा, मानो वह यह अुपालम्भ दे रहा था कि 'तुम अपना ग्रहण होते हुअे दुनियामें किसीको देखने नहीं देते, तो मेरा ग्रहण किस लिअे देखना चाहते हो!' सात बजे तक अिन्तज़ार किया। प्रार्थनाका समय हो गया। बापू थक गये। करुण स्वरमें वल्लभभाअीसे कहा — "वल्लभभाअी, ग्रहण तो दिखाअी देता ही नहीं।" जेलरसे कहा — "तो आप जाअिये, आपको तकलीफ दी सो माफ कीजिये।" जेलरने कहा — "नहीं जी अभी दस-पाँच मिनट ठहरिये। अितना ठहरे हैं तो थोड़ा और सही। शायद बादल बिखर जायँ और चन्द्र दिखाअी दे।" ठहरे, सवासात हो गये। बापू अन्तमें निराश हो गये और कहने लगे — "बस, अब तो आप जाअिये। अब हम प्रार्थना करेंगे।" बापूसे मैंने पूछा — "बापू, क्या आप अितनी अुत्सुकतासे ग्रहण देखनेके लिअे पहिले भी कभी खड़े रहे थे?" बापू बोले — "नहीं, कभी नहीं। यह तो अिस आकाश दर्शनके नये शौकका ही परिणाम है।" मैंने पूछा — "बचपनमें?" बापू — "बचपनमें? अरे, अुस समय तो माँ ग्रहण देखने ही कहाँ देती थी? वह कहती थी — 'नहीं बेटा, अपने ग्रहण नहीं देखना। देख लें तो कुछ न कुछ बुरा हो जाय।' यह सुनकर हम चुप रह जाते थे।"

रातको पत्र लिखाने बैठे। अेक सरकारी पेन्शनरका खत था। ७० वर्षकी अुमर हो गयी है, परन्तु दमेका रोग बहुत दुःख देता है। अुसने पूछा था: 'आपने अनेक प्रयोग किये हैं और कुदरती अुपायोंसे रोग अच्छे किये हैं। तो क्या मुझे कुछ न बतायेंगे?' बापूसे मैंने कहा — "अैसे पत्रोंका कहाँ जवाब देते फिरेंगे?" बापू बोले — "अच्छा।" अैसा कहकर पत्र फाड़ दिया। तब सरदार बोले — "अरे लिखो न कि अुपवास कर, भाजी खा, काशीफल खा, सोडा पी।" बापू खिल-खिलाकर हँसे और मुझसे कहने लगे — "महादेव, यह कागज अुठा लो। हमें अुसे लिखना है।" सचमुच पत्र लिखाया। अुसका सार यह था कि 'आपको डॉ० मुथुको लिखना चाहिये। परन्तु हमारा अशास्त्रीय किन्तु अनुभवका ज्ञान यह बताता है कि आपको तीन अुपवास करने चाहियें और फिर दूध और नारंगीके रसके साथ अुपवास छोड़ना चाहिये। अितना करके देखिये तो फर्क पड़ेगा।' यह लिखा कर बोले — "यह प्रयोग तो अच्छी तरह किया हुआ है। अेक बहादुरसिंह नामके आदमीका कुदरती अिलाज किया था। वह अच्छा हो गया, अिसलिअे अपने मित्र लुभावनसिंहको मेरे पास ले आया। यह मेरा मुवक्किल भी था। अुस समय मुवक्किल लोग अिन बीमारियोंकी बात करते

थे और अुनके अुपाय भी मुझसे पूछते थे। बस, लुटावनसिंहको मैंने अुपवास कराये और फिर चावल, दूध और नारंगीके छिल्केके मुरब्बे पर अुसको रखा। अेक महीनेमें अुसका दमा जाता रहा। अुससे बीड़ी भी छुड़वा दी थी। वहाँ तो हमारा सोनेका बड़ा कमरा था। अुसमें पचासेक लोग सोते थे। अेक दिन अैसा हुआ कि मैं बाहर सोया हुआ था और लुटावनसिंह अन्दर। मेरे पास टार्च तो रहती ही थी। बीड़ी सुलगती देखी और मैंने तुरन्त टार्च जलाअी। लुटावनसिंह शरमाया, मेरे पैर पकड़ लिये। बोला — 'अब कभी नहीं पीअूँगा। यह हरामखोर मन बसमें नहीं रहता। क्या किया जाय?' अिसके बाद मुझे खयाल है कि अुसने बीड़ी नहीं पी और दमा तो चला ही गया।"

* * *

आज बापूकी सूचनासे कुकर, दाल-चावल वगैरा मँगवाये। वल्लभभाअी बोले — "तीन महीनेसे परहेजी खाना मिलता था। अब देखेंगे तू कैसा भोजन देता है।" बापूने यह फेर-बदल बड़े प्रेमसे सुझाया। मगर अैसा नहीं लगा कि अभी रोटी और अुबले हुअे साग और दूधके जो प्रयोग हो रहे हैं, अुनमें फेर-बदल करना अुनको पसन्द है। '**जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः**' जैसा प्रसंग आ पड़ा। घड़ी भरके लिअे अैसा लगा कि कहीं बापूके पिताने बचपनमें अुन्हें नाटक देखनेकी जैसी अिजाजत दी थी, वैसी ही तो यह बात नहीं है!

बापूने From Adam's Peak to Elephanta (फ्रॉम अेडम्स पीक टु अेलीफ़ेण्टा) पूरी करके स्टोक्सकी पुस्तक ली। भूल गया, बीचमें 'अनघ' नामकी मघके* बारेमें अेक छोटीसी मैथिलीशरण बाबूकी सुन्दर पुस्तक बापूने अेक दिनमें पूरी कर दी। और मुझसे भी पढ़ जानेका आग्रह किया।

हेमप्रभादेवीकी साधुता, कुशलता, धीरज, हिम्मत और अुद्यमके बारेमें कल ही बापूने नारणदासभाअीके खतमें जिक्र किया था। अिन बहनका अेक दर्दभरा पत्र आया था। अुसमें अुन्होंने पूछा था — 'अिस मानव-देहमें प्रभुके दर्शन हो सकते हैं?' अुसे बापूने जवाब दिया — "मनुष्य-देहमें अीश्वरदर्शन होगा या नहीं, यह प्रश्न गीताभक्तके मनमें पैदा ही नहीं होता; क्योंकि वह कर्मका अधिकारी है, फलका कभी नहीं। और जिस बातका अधिकार नहीं है, अुसका विचार क्यों किया जाय? फिर भी मेरी राय है कि देह रहते पूर्ण साक्षात्कार असंभव है। हम ठेठ अुसके पास तक जरूर पहुँच सकते हैं, मगर शरीरकी हस्ती होनेसे द्वारप्रवेश असंभव मालूम होता है। अीश्वरके विरहका दुःख तो हमें सदा ही रहना चाहिये। वह न रहेगा तो प्रयत्न बन्द हो जायगा या शिथिल पड़ जायगा। विरह-दुःखका नतीजा निराशा नहीं, आशा होना चाहिये; मन्दता

* महात्मा बुद्धका अेक शिष्य।

नहीं, अधिकाधिक अुद्यम होना चाहिये। कोशिश थोड़ी भले ही हो, परन्तु वह बेकार कभी नहीं जाती। यह भगवानकी प्रतिज्ञा है। अिसलिअे हमारा विरह-दुःख भी आनन्ददायक हो जाना चाहिये। क्योंकि हमें विश्वास होना चाहिये कि किसी न किसी दिन साक्षात्कार हुअे बिना नहीं रहेगा।"

२३-३-'३२

पिछले सोमवारको लिखे पत्रोंमेंसे अेकका जिक्र करना रह गया था। अिस खतमें बापूने अेक नया विचार रखा था। हिन्दुस्तान सबसे प्यारा देश क्यों है? अिसका कारण यह नहीं कि यह मेरा है, बल्कि यह है कि अिसमें सबसे ज्यादा अच्छापन मालूम हुआ है। यह सच है कि गौरवशाली होने पर भी वह गुलाम रहा है, मगर यह भी अुसकी अच्छाअी है। दूसरे किसी देशको गुलाम बनानेके बजाय वह खुद गुलाम रहा है। और जालिम और गुलामके बीच चुनाव करना हो, तो गुलामकी हालत ज्यादा पसन्द करने लायक है। स्पष्ट है कि यह सारा विचार अहिंसासे फलित होता है।

अहिंसाका अेक और नमूना लीजिये। जब वल्लभभाअी सुपरिण्टेण्डेण्टकी हँसी अुड़ाते हैं, तब बापू कहते हैं — "नहीं वल्लभभाअी, आप अन्याय करते हैं। अुनका दोष नहीं। अुनसे जो कुछ बन पड़ता है, सब करते हैं।" मगर आजका किस्सा बहुत परीक्षाका बन गया। बापूको जिस दिन कैदियोंसे मिलनेकी अिजाजत मिली, अुसी दिन स्त्रियोंसे मिलनेकी माँग की गयी थी। सुपरिण्टेण्डेण्ट भड़क गये थे। आखिर पत्र लिखनेकी मंजूरी वे अपने अफसरसे ले आये थे। यह पत्र बापूने लिखा था, फिर भी अुन्होंने कहा कि मैं देना भूल गया। असलमें वे भूले नहीं थे, मगर वहाँ अनशन हो गया था, अिसलिअे वहाँ गये ही नहीं थे। अितनेमें ही अचानक गंगाबहन झवेरी मुलाकातके लिअे आ पहुँचीं। वे नानीबहनसे मिलकर आयी थीं। अुनसे अनशनका ज्यादा हाल मालूम हुआ। सुपरिण्टेण्डेण्ट वहाँ जानेसे अिनकार करते हैं, क्योंकि वे कहते हैं कि ये लोग अनशन छोड़ें तभी जा सकता हूँ। यह बात बापूको बेहूदी लगी और आज अुन्हें मिठाससे ही सही, बहुत कड़ी बात कहनी पड़ी। अुन्होंने सुपरिण्टेण्डेण्ट कहा कि मैं आपका अफसर होअूँ, तो आपको अिसी बात पर मुअत्तिल कर दूँ। वह सुनता रहा। अुसने जानेका तो मन या बेमनसे अिरादा जाहिर किया, मगर शाम तक, रात तक जवाब नहीं आया। मुझे अिस आदमीकी जड़ता पर आश्चर्य हुआ। बापूने कहा — "देशी सुपरिण्टेण्डेण्टके साथ लड़नेका प्रसंग भी मेरे नसीबमें लिखा होगा? खैर, लिखा होगा तो देख लूँगा।" आज तक अुसके बारेकी रायमें जो सहिष्णुता थी, वह अहिंसाका नमूना था। आजकी कड़ाअी सत्याग्रहका और सामनेवालेमें धर्मजाग्रति पैदा करनेकी अुत्कंठाका नमूना था।

*　　*　　*

आज. . . का खत आया। अिससे बापूको संतोष हुआ। कलेक्टरने स्वतंत्र रूपमें अुन्हें बुलाया था। अुन्होंने अपना कांग्रेसी होना जाहिर किया और फिर भी यह बताया कि संघकी नीति अभी तक सविनय भंग न करनेकी है। अुसने 'हाजिरी'की शर्तके बारेमें अफसोस जाहिर किया और कहा कि 'संघकी नीतिके बारेमें आप पत्र क्यों नहीं लिख देते?' . . . ने कहा — 'कहा जायगा कि सजासे बचनेके लिअे पत्र लिखा है, अिसलिअे मैं पत्र नहीं लिखना चाहता।' बापूने कहा कि यह बिलकुल सन्तोषजनक बात है।

* * *

आज खिचड़ी और साग पकाकर यहीं रसोअीका प्रयोग शुरू किया। वल्लभभाअीको तो खूब सन्तोष हुआ ही। निर्लेप रहकर अिनकी अितनी सेवा की जा सके तो बहुत अच्छी बात है।

* * *

'अनघ' आज पूरा किया। बहुत बढ़िया चीज है। मघकी कथा जातक कथाओंमें है। 'बुद्धलीलासंग्रह' में धर्मानन्द कोसम्बीने अिस कहानीको मनोरंजक ढंगसे बयान किया है। मगर अुसे आदर्श सत्याग्रही, कारागृहवासी और सविनय-भंगी बयान करनेका कलामय काम तो मैथिलीशरण बाबूके लिअे ही था। पुरानी कथाको अुन्होंने बहुत सुन्दर स्वरूप दिया है। आज स्टोक्सकी पुस्तक पढ़ते पढ़ते बापू कहने लगे — "ग्रेग और अेण्ड्रूज़ने अुसे यह किताब छपवानेकी सलाह क्या समझकर दी होगी? जिसके पास कोअी ठोस और बुनियादी चीज देनेको नहीं है, जिसका मन ही अनिश्चित है और जो स्पष्ट विचार बता नहीं सकता, वह भले ही अपनी परेशानियाँ साफ करनेको कागज पर लिखे, मगर अुन्हें पुस्तक रूपमें किस लिअे छपवाये?"

२४-३-'३२ आज अेवलीन रेन्चकी तरफसे Fors clavigera (फोर्स क्लेविजेरा)की चार पुस्तकें आयीं। बापू अिन्हें देखनेमें लीन हो गये। अुनके पीछेकी विषय-सूचीसे आश्चर्यचकित हुअे और अुसे देखनेमें आधे घण्टेके लगभग लगा दिया। विषय-सूची देखते देखते कहने लगे — "'ब्रिटिश बाअिबल' क्या होगी?" वल्लभभाअीने पूछा — "ब्रिटिश बाअिबल यानी?" बापूने कहा — "यानी ब्रिटिश लोगोंके लिअे बाअिबल क्या है?" तो वल्लभभाअीने तुरन्त जवाब दिया — "पौण्ड, शिलिंग और पेन्स।" पुस्तकमें सचमुच लिखा था कि पौण्ड, शिलिंग और पेन्स ही ब्रिटिश बाअिबल है। वल्लभभाअी बोले — "देख लीजिये, अैसी अैसी बातें मुझे आती है न!"

यहाँ अखबार पढ़नेका ठेका वल्लभभाअीका है। पढ़ते समय अुनके अुच्चारणमें बहुत-सी भूलें होती हैं, जिनकी अुन्हें जरा भी परवाह नहीं है। खास तौर पर मद्रासकी तरफके नामोंका अुच्चारण तो किसी भी तरह अुनकी जबान पर नहीं चढ़ता। आरोग्य स्वामी मुदालियरको अंग्रेजीमें Arokia Swami लिखा था। वे 'आरोकिया' बोलते थे और मुझे हँसी आती थी। अिस पर चिढ़कर कहने लगे — "तुम्हें हँसी आती है, मगर अिसमें जो लिखा है वही तो पढ़ूँ न!" बापूने कहा — "मगर वल्लभभाअी, तामिलमें 'क' और 'ग' में फर्क नहीं है।" वल्लभभाअीने कहा — "लेकिन अंग्रेजीमें तो 'जी' है न? वह क्यों नहीं लिखते?"

कलकत्तेके Royalists (रॉयलिस्ट्स) के लिअे तैयार किया हुआ बेन्थलका खानगी विवरण अखबारमें आया। अुस पर अखबारोंकी आलोचना पढ़ी जा रही थी। अुसमें Gandhi's constructive vacuities (गांधीकी रचनात्मक गफलतें) ये शब्द आये थे। मैंने बापूसे पूछा — "रचनात्मक गफलत कैसी होती होगी?" वल्लभभाअी कहने लगे — "आज तुम्हारी दाल जल गयी थी, वैसी।" बापू खिलखिला पड़े। नया कुकर आया था। वल्लभभाअीको तीन महीनेसे अच्छी दाल नहीं मिली थी। और आज अच्छी दालकी आशा रखते थे। पर यहाँ तो पहले ही दिन पानी कम और आँच ज्यादा होनेके कारण दाल जल गयी थी।

* * *

अखबार पढ़कर बापू बोले — "सब ठीक ही हो रहा है और हम खूब बच गये हैं। बेन्थलके पत्रसे जो कुछ जाहिर हो रहा है — मुसलमानोंकी परिषदके सब हालचाल — अुन सबका क्या मतलब है? हम अन्दर पड़े हैं, यह बिलकुल ठीक ही है।"

वल्लभभाअी रोज मजेसे अखबार पढ़ते हैं, बापू दिलचस्पीके साथ सुनते हैं, कुछ नहीं तो यह बताते हैं कि दिलचस्पीसे सुन रहे हैं। कभी कभी बापू कुछ लिखते हों या पढ़ते हों तो वल्लभभाअी रुक जाते हैं। बार बार देखते हैं कि बापू अपना काम पूरा कर चुके या नहीं? अिस पर बापू कहते हैं — "क्यों वल्लभभाअी 'हरे' कहूँ क्या? तब आपकी कथा शुरू होगी? तो अच्छा 'हरे'।" अिस तरह चल रहा है, फिर भी अखबार पढ़ना बापूको बहुत पसन्द नहीं है। मामूली कैदी बाहरकी खबरें पानेके लिअे तड़पते हैं, चोरीसे अखबार मँगा सकते हों तो मँगाते हैं। मगर बापूकी भावना अिस मामलेमें बिलकुल दूसरी ही है। अखबार न मिलें तो खुशीसे वह समय दूसरे ज्यादा अच्छे काममें लगायें, बल्कि अुनके मिलनेसे बहुत बार अरुचि होती

हो तो आश्चर्य नहीं । . . . के बारेमें खबर पढ़कर चिन्ता हो रही थी । अुसके पत्रकी बाट देखी । पत्र आया तब सन्तोष हुआ और अुसे लिखा — "तुम्हारे पत्रके बाद कहनेकी कोअी बात ही नहीं रह जाती । सच तो यह है कि बाहर जो कुछ होता है, अुसका खयाल तक न करना चाहिये । मगर जब तक अखबार पढ़ना बन्द न करूँ या बन्द न हो जाय, तब तक खयाल न करना या न होना असंभव है । अिसीलिअे तुम्हें पूछकर मनको शान्त किया । मेरा पिछला अनुभव बताता है कि जो बात कही अुसका सार अुसी वक्त अुसे भेज देता तो अच्छा होता । परन्तु अब वह करनेकी जरूरत नहीं । भविष्यके लिअे शायद यह सूचना अुपयोगी हो ।"

जुगतरामको लिखा — "तुमने कागज अच्छा लिखा है । हमारी गाड़ीको चलानेवाला मनुष्य नहीं, अीश्वर है । अुसमें बैठे हुअे हम लोग जब तक अुस पर श्रद्धा रखेंगे, तब तक गाड़ी जरूर चलती रहेगी । श्रद्धा छोड़ी कि गाड़ी अटकी ही समझो ।"

* * *

आश्रमके बालक कभी कभी सुन्दर सवाल पूछते हैं । अिन्दु पारेखने पूछा है — "क्या कृष्ण भगवानने यह ठीक किया कि शिखंडीको आगे करके भीष्मको मारा और जयद्रथके लिअे सूर्यको सुदर्शन चक्रसे ढँक दिया ? अगर ठीक नहीं किया, तो क्या हम अैसे नाटक खेल सकते हैं ?" अिस बालकको हमेशा दो अिंच चौड़ी और चार अिंच लम्बी जो कतरन लिखी जाती थी, अुसमें लिखा — "तेरा सवाल बढ़िया है । महाभारत काव्य है, अितिहास नहीं । कवि का अुद्देश्य यह बताना है कि मनुष्य अगर हिंसाका रास्ता पकड़ेगा, तो अुसमें सच झूठ आयेगा ही । फिर तो अुससे कृष्ण-जैसे भी नहीं बच सकते । वैसे, बुरा तो बुरा ही है । और शिखंडीको आगे करने और सूर्यको ढँकनेमें दोष तो था ही । मेरी यादके अनुसार व्यासजीने भी अिन प्रसंगोंका दोषके रूपमें ही वर्णन किया है । अैसे अुदाहरणोंवाले नाटकोंमें यह बता दिया जाय कि ये अुदाहरण नकल करने लायक नहीं हैं, तो अुनके खेलनेमें शायद दोष नहीं होगा । फिर भी तूने जो पूछा है वह बहुत विचार करने योग्य तो है ही ।" नारणदासभाअीको विस्तारसे लिखा — "मुझे यह प्रश्न बहुत अच्छा लगा है । नाटकका रुख अिस दोषको बुराअीके रूपमें दिखानेका हो, तो अुसके खेलनेमें मैं कोअी आपत्ति नहीं मानता । अितने पर भी अिस तरहके नाटक खेलनेकी योग्यताके बारेमें मेरे मनमें शंका तो है ही । जो बुरे काम महापुरुषोंने किये हों — फिर भले ही अुस बुराअीको बुराअीके तौरपर ही बयान क्यों न किया गया हो तो भी — अुनको वर्णन करनेकी आवश्यकताके बिना अैसे कामोंको

बार बार बच्चोंके सामने रखनेमें मुझे श्रेय नहीं दिखता। यह सम्भव है कि अुस कामकी बुराअीको तो वे भूल जायँ और यह असर अुनके दिलों पर रह जाय कि बड़े आदमियोंने किया था अिसलिअे हम भी कर सकते हैं। अिसलिअे यह भी ठीक नहीं लगता कि अिस तरहके प्रसंगोंको चुन चुनकर निकाल दिया जाय और फिर अुनके नाटकोंको बच्चोंसे खेलाया जाय। मुझे अैसा लगता है कि हमारे सारे नाटक दूसरी ही तरहके होने चाहियें, जैसे रवीन्द्रनाथका 'मुक्तधारा'; और अभी मैंने मैथिलीशरण गुप्तका 'अनघ' पढ़ा। वह बहुत अच्छा है और बच्चोंके सामने रखने लायक है। अुसकी हिन्दी सरल और बड़ी मीठी है, तथा भाव अुत्तम हैं।

* * *

अमरीकी लोगोंको गुण वर्णन करनेके लिअे भी नमक मिर्च लगाये बिना सन्तोष नहीं होता, अिसका प्रमाण मिल्स-जैसे सहृदय सम्वाददाताके विवरणसे मिलता था। अेक और अुदाहरण आज पढ़े गये अेक लेखमें मिलता है:

"When a customs official at Marseilles, France, asked him whether he had any cigarettes, cigars, firearms, alcohol or narcotics in his luggage, he replied in the negative. Nevertheless the travelling equipment was examined. It proved to consist of: 3 spg. wheels, 3 looms, 1 can goats' milk, 1 package dried raisins, 1 copy Thoreau's Civil Disobedience, 1 set false teeth, 6 dicepers."

"मार्सेल (फ्रांस)के जकाती कर्मचारीने अुनसे पूछा कि आपके सामानमें सिगरेट, सिगार, गोलाबारूद, पीनेकी शराब या और कोअी नशेकी चीज तो नहीं है? अिस पर गांधीजीने नकारमें जवाब दिया। फिर भी अुनके सामानकी जाँच की गयी। अुसमेंसे निकला क्या? ३ चरखे, ३ करघे, १ बकरीके दूधका कनस्तर, १ सूखे अंगूरकी पुड़िया, १ थोरोकी 'कानूनका विरोध करनेका फर्ज' नामकी पुस्तक, १ बनावटी दाँतोंकी जोड़ और ६ खादीके थान।" कितना सच्चा चित्र है! — जिससे पाठक भुलावेमें पड़ जायँ और मान लें कि बिलकुल ही सच होगा! लेकिन अिसमें शुरूसे अखीर तक अेक भी बात सच्ची नहीं!

आज बापूकी अेक बातसे हम चौंके — वल्लभभाअी और मैं दोनों। बापू कहते थे कि थकावट अभी मिटती नहीं, शरीरमें जिस स्फूर्तिकी आशा रखता हूँ, वह मालूम नहीं होती। अिस पर वल्लभभाअी बोले — "खजूर खाना छोड़ा अिसलिअे। आप अच्छी तरह खाते नहीं। खजूर मँगाअिये, फल मँगाअिये। खाये बिना कैसे स्फूर्ति आये?" बापू बोले — "तुम्हें सच कहूँ!

मुझे तो अैसा लगता रहता है कि दस-बीस अुपवास कर डालूँ तो कैसा अच्छा ? और जब यह स्त्रियोंवाला किस्सा हुआ, तब तो मुझे लगा कि यह अच्छा मौका हाथ आया है। मगर वह प्रकरण तो खतम हो गया। फिर भी मुझे यह जरूर लगता है कि अितने अुपवास करूँ, तो शरीरमें फिर स्फूर्ति आ जाय।" अिस तरह अुपवास करनेका अवसर आये, तो बापू अुसका स्वागत कर लें। यानी कभी अुपवास करनेकी तीव्र अिच्छाके कारण अुपवासके संयोग न होने पर भी अैसा होना सम्भव है कि बापू अुपवास कर डालें। मैं तो सचमुच काँप ही अुठा। मैंने अपना डर बापूके सामने नहीं रखा।

२५-३-'३२

काका, प्रभुदास और जमनालालजीकी तन्दुरुस्तीके बारेमें हालचाल जाननेके लिअे आअी० जी० पी० को लिखा और कैदियोंके साथ पत्र-व्यवहार करनेकी अिजाजत माँगनेका पत्र भी लिखा। हमारे कुकरकी दाल जल गयी, अिस पर बापूने कहा कि अुसके कारणोंकी जाँच करो। यह तो स्पष्ट ही है कि पानी थोड़ा था। मगर बादमें बापूने अपने स्वभावके अनुसार अुसकी बनावटके बारेमें सवाल किये। अुन्होंने कहा कि अुन्होंने खुद यहाँ १९३० में अेक कुकर बनवाया था — मगर वह तो कोअी अुठा ले गया। फिर मेरे कुकरकी रचना देखकर कहने लगे — "नीचेवाले दालके बर्तनमें दाल डालनेके बजाय सिर्फ पानी ही रखो और दाल अूपरके बर्तनसे शुरू करो, यानी तीन बर्तनोंको काममें लेनेके बजाय चारका अुपयोग करो और सबसे नीचेवाले बर्तनकी भापसे सब कुछ पकाओ।" वल्लभभाअी बोले — "यानी मुझे अच्छी दाल मिलते मिलते चार पाँच दिन तो अिन प्रयोगोंमें ही बीत जायँगे।" मुझे बापूका सुझाव अच्छा लगता है और मैं प्रयोग करनेका अिरादा रखता हूँ।

× × ×

आज आक्सफर्ड युनिवर्सिटी प्रेससे मेरे पास 'आत्मकथा' के बालोपयोगी संस्करणके प्रूफ आये। बापू अुन्हें पढ़ने लगे और अुनमें बहुतसे सुधार करने लगे।

बापूने Fors Clavigera (फॉर्स क्लेविजेरा) भी पढ़ना शुरू किया। अितनी दिलचस्पीसे पढ़ते हैं कि अुन्हें आशा है कि आश्रमको हर हफ्ते भेजी जानेवाली बानगी अिसमेंसे निकलेगी।

आज शामको घूमते समय अखबार नहीं था, अिसलिअे बातें होने लगीं। . . . का जिक्र हो रहा था। अेक समय अैसा था जब बापू अुन्हें टोकते और कहते — "आप हर रोज हर जगह यह किस लिअे कहते रहते हैं कि

'मैं बागी हूँ, मैं बागी हूँ।' प्रसंग आये और आप कहें तब तो ठीक है। मगर हमेशा अिसकी जरूरत नहीं है।" . . . ने जवाब दिया था — "कौन जाने, कभी हम अपने सिद्धान्तोंसे डिग जायँ तो हमें याद दिलानेके लिअे काम आयें। अिसलिअे अुनका रटन करते रहना अच्छा है।" यह बात कहकर बापूने कहा — "यह तो वही बात हुअी जैसे वह कुमुद गाती थी — 'प्रमादधन मुज साचा स्वामी, ये विण अप्रिय सर्व बीजुं।' प्रमादधनके लिअे जरा भी भावना नहीं थी, अिसलिअे रटन करके भावना पैदा करने लगी!"

अिस परसे गोवर्धनराम पर बातें चलीं। बापू कहने लगे — "पहले भागमें अुन्होंने अपनी शक्ति अुँडेली। अुपन्यासका रस पहलेमें भरा है। चरित्र चित्रण अुसके जैसा और कहीं नहीं। दूसरेमें हिन्दू संसारका बढ़िया चित्र है। तीसरेमें अुनकी कला जाती रही और चौथेमें अुन्हें यह खयाल हुआ कि अब मुझे दुनियाको जो कुछ देना है, वह अिस पुस्तक द्वारा ही दे दूँ तो कैसा अच्छा।"

मैंने कहा — "अुनमें छोटी कहानियाँ लिखनेकी कला नहीं थी। अुन्होंने लिखी ही नहीं। मगर लिखना चाहते तो भी न लिख पाते। यह कला और साथ ही साथ अुपन्यासकी कला टैगोरने साधी थी।"

बापू बोले — "टैगोरकी क्या बात! अुन्होंने क्या नहीं साधा? साहित्यका अेक भी क्षेत्र अुन्होंने छोड़ा है! और सबमें कमाल — अैसी अलौकिक शक्तिवाला आदमी हमारे यहाँ तो है ही नहीं, लेकिन दुनियामें भी होगा या नहीं, अिसमें मुझे शक है।" . . . फिर वल्लभभाअी बोले — "मगर अुनका शान्तिनिकेतन चलेगा? वे तो बूढ़े हो गये और अुनकी जगह लेनेवाला कोअी रहा नहीं।" बापूने कहा — "बात तो जरूर मुश्किल है। मगर यह तो कैसे कहा जा सकता है! भगवानने अितनी असाधारण प्रतिभावाला आदमी पैदा किया, तो अुसे यह तो मंजूर नहीं होगा कि अुसका काम यों ही बन्द हो जाय।" वल्लभभाअी कहने लगे — "यह तो ठीक है। मगर अुनकी जो असाधारणतायें हैं, अुन सबको कौन किस क्षेत्रमें ला सकेगा?" मैंने कहा — "नन्दलाल बोस, असित हलधर-जैसे अुत्तम चित्रकार वहाँ मौजूद हैं। विधुशेखर शास्त्री भी हैं।" वल्लभभाअी बोले — "चित्रकला तो ठीक है। मगर अुसकी पाठशालायें कितनी चल सकती हैं? हमारा तो खादी और चरखा है। अुसके लिअे बापू थोड़े ही चाहियें? ये तो बापू न होंगे तो दूधाभाअी भी आकर चलाते रहेंगे। अुन्होंने कोअी अैसी चीज नहीं दी, जिसे लोग अपने हाथोंमें ले सकें और जो अखंड रूपमें चलती ही रहे।"

मैंने कहा — "अेक महात्मा कहते थे कि गांधीजीकी सब बातें लोग भूल जायँगे, तब भी खादी और मद्यनिषेध हमेशा रहेंगे।"

बापू — "अिसका कारण यह है कि यह साधारण लोगोंको पसन्द है और अिसे मामूलीसे मामूली आदमी भी चलाता रह सकता है।"

अिस मौके पर मेरे मनमें अनेक विचार आये और चले गये। 'बापूके बाद आश्रमको चलानेवाला कौन है? आश्रमके असिधारा व्रतोंके पालनके लिअे हमेशा पीछे पड़नेवाले और दिनरात अुनके बारेमें जाग्रत रहनेको कहनेवाले कौन हैं? अनेक प्रकृतियोंवाले, अनेक प्रदेशोंके, अनेक रुचियों और शक्तियोंवाले स्त्री-पुरुषों और बच्चोंवाले हमारे आश्रमके परिवारको बापूके बाद कौन चलावेगा? अीश्वर। अहिंसा और सत्यमें श्रद्धा रखनेवाले और अुनके लिअे मरनेवाले अज्ञात मनुष्य अितने ज्यादा मौजूद हैं कि हमारी अपनी कमीके बावजूद अविश्वासके लिअे स्थान नहीं रहता।'

मैंने तुरन्त कहा — "टैगोरके बारेमें यह कहा जा सकता है कि आज तक अुनके यहाँ असाधारण प्रतिभावाले लोग खिंचकर न आये हों, तो शायद अब अुनके कामको जारी रखनेके लिअे वे आ जायं। शान्तिनिकेतनको अुनके आदर्शके अनुसार ही जारी रखनेके लिअे नये आदमी क्यों न शरीक होंगे?"

बापूने कहा — "ठीक है। आज अुनकी प्रचण्ड शक्तिसे ज्यादा लोग आकर्षित न हों, तो भविष्यमें आकर्षित हो सकते हैं। आज भी रामानन्द चटर्जी-जैसे लोग तो हैं ही, और अीश्वरकृपा हो तो और लोग भी आ सकते हैं। और अुनका श्रीनिकेतनका काम तो जारी ही रहेगा। अेमहर्स्ट-जैसा आदमी विलायत छोड़कर अिसे चलानेके लिअे चला आये, तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा।"

वल्लभभाअी — "मगर मुझे यह तो पक्का भरोसा है कि हमारा काम चलता रहेगा। अिसमें ज्यादा सोचने समझनेकी बात जो नहीं है!"

बापूने कहा — "देवदासने 'लीडर'में कातनेके बारेमें जो मार्मिक वाक्य लिखा था, वह मुझे याद आता है — It is too simple to command attention and belief. चरखेकी बात अितनी ज्यादा सादी है कि लोगोंका ध्यान और श्रद्धा खींच नहीं सकती।

पता नहीं कैसे, महेरबाबाकी बात चली। बापू कहने लगे — "वह जबरदस्त आदमी हैं। वह किसीको ढूँढ़ने नहीं जाते, मगर लोग अुनके पास चले आते हैं, रुपया चला आता है। विलायतसे किसी स्टारने बुलाया तो चले गये। अमरीकासे धनवानोंने अुन्हें बुलाया तो चले गये। और अुनका असर क्यों न पड़े? सात वर्षसे मौन, और फिर भी कोअी पागल नहीं, अितनी सी बात भी लोगोंको आकर्षित करनेके लिअे काफी है।"

मैंने कहा — “ अुन्होंने अपनी पुस्तक पढ़नेको दी थी, वह आपको कैसी लगी ? ” बापू — “ अुसमें असाधारण तो कोअी बात थी नहीं। और अंग्रेजीमें लिखी थी। अुनके शिष्यने अुनके विचार दर्ज किये थे, अिसलिअे गड़बड़ घोटाला-सा हो गया था। मैंने अुन्हें सुझाया कि आपको लिखना हो, तो गुजरातीमें लिखिये या अपनी मादरी जबान फारसीमें लिखिये। हम पराअी भाषामें क्यों लिखें ? अुन्हें यह सूचना पसन्द आयी। ”

मैंने कहा — “ अुनकी मुखमुद्रा पर अेक तरहकी प्रसन्नता है। ”

बापू बोले — “ हाँ, जरूर है। और अुनका दावा भी है कि अुन्हें सदा आनंद ही आनंद है। वे मानते हैं कि अुन्हें साक्षात्कार हुआ है। वे बाल-ब्रह्मचारी हैं और अुनका कहना है कि अुन्हें विकार नहीं होते। और मुझे वे सच्चे आदमी मालूम होते हैं। अुनमें आडम्बर तो है ही नहीं। ”

आज सुबह स्टोक्सकी पुस्तक पढ़ते पढ़ते अेकाअेक कहते हैं — “ तुम्हारे पास अीशोपनिषद् है। अुसके १८ मंत्रोंमें सब कुछ भर दिया गया है, या सिर्फ पहले ही मंत्रमें। अुसे बार बार पढ़नेको जी चाहता है। सारे श्लोक रट लेनेको तबीयत होती है। ”

मैं — “ मेरे पिताने मुझे बचपनमें ये रटाये थे। वे नाथूराम शर्माकी किताबमेंसे पढ़ते थे। मेरे काका अुनके शिष्य थे। ”

बापू — “ नाथूराम शर्माकी यह पुस्तक अच्छी है। अुसका अनुवाद पढ़नेमें अच्छा लगता है। नाथूरामका असर कोअी अैसा वैसा नहीं था। ”

मैं — “ अेक समय सुबह शाम संध्या किये बिना हमें खानेको नहीं मिलता था। मेरे काकाका अैसा कड़ा नियम था। ”

बापू — “ हाँ, अुनमें बहुत अच्छाअियाँ थीं। बादमें आडम्बर बढ़ गया और काम बिगड़ गया। मैंने सारे अुपनिषदोंका अनुवाद अुन्हींका पढ़ा था और वह अच्छा लगा। ”

२६–३–’३२

आज केडल कमिश्नर आया था। ‘ महादेवराव ’ देसाअीका हाल पूछा था। मगर मैं शौच गया था। वह बापूसे कहने लगा — “ अिस बार लड़ाअीमें सरकार और लोग दोनों तरफसे कड़वापन नहीं है। मुझे लोगोंको अितना credit (श्रेय) देना चाहिये। बापूने कहा था — “ You may keep the credit and let us have the cash — यह ‘श्रेय’ आप रखिये और नकद हमें दे दीजिये। ” बादमें कहने लगा — “ यहाँ मेरे हल्केमें तो महात्माको ९५फी सदी लोग नहीं जानते, मगर मुझे जानते हैं। ” यह आदमी बापूको गोधराके

दिनोंसे जानता है, बम्बअीमें भी मिला था। यह राय देते समय क्या अुसे अपने अविवेकका भी खयाल न हुआ होगा! अितनेमें मैं आ गया। मुझे कहने लगा — "सरकारने आपको गांधीजीकी सार सँभालके लिअे रखा है।" मैंने कहा — "यह कहना मुश्किल है कि मैं अिनकी सार सँभाल रखता हूँ या ये मेरी रखते हैं।" फिर बोला — "आप जैसे तीन अुत्तम मस्तिष्क-वालोंको सरकारने अेक साथ रखा है, यह बताता है कि सरकारको आपके बारेमें कितना विश्वास होगा!"

आज मीराबहनके दो सप्ताहके पत्र आये। सुपरिण्टेण्डेण्टके पास वे जमा तो हुअे ही होंगे। मगर अुसने बताया नहीं था कि ये पत्र आये हैं। बापूको यह बहुत बुरा लगा। अिसलिअे डाह्याभाअीकी मुलाकात हो चुकने पर बापूने कहा — "मैं सब कुछ सहन करूँगा, मगर आप मुझे धोखा देंगे तो बर्दाश्त नहीं होगा। आप अीमानदारीसे चलेंगे, तो मैं आपके सामने बकरी बनकर रहूँगा। आप यह कहेंगे कि अमुक खबर नहीं दी जा सकती, तो यह बात चल जायगी। मगर झूठ और धोखाबाजी मुझसे बर्दाश्त नहीं होगी।" वह क्षुब्ध हो गया और बापूको भरोसा दिलाया कि अैसा नहीं है और कभी होगा नहीं।

The Living Church (दि लिविंग चर्च) नामके अेक अमरीकी साप्ताहिकमें What is Gandhi's religion? (गांधीका धर्म क्या है?) नामका अेक बहुत महत्त्वका लेख आया। यह अमरीकासे ही किसीने भेजा है। यह लेख बताता है कि बापूका असर अीसाअी समाजमें अितना ज्यादा बढ़ रहा है कि अीसाअी प्रचारक घबरा रहे हैं। अिसका लेखक रेवरेण्ड मूडी बहुत शक्तिवाला दिखता है। आठ वर्षसे बापूके विषयका सारा साहित्य पढ़ता रहा है। सारा लेख अुन अीसाअियोंकी सख्त टीकाके रूपमें है, जो बापूको अीसाअी कहते हैं, अीसा मसीह जैसे मानते हैं और मौजूदा जमानेके अीसा बताते हैं। अिसमें कुछ टीका तो बड़ी मार्मिक है।

" The Americans look at him without understanding him. Gandhi is not a Christian, makes no pretence of being so, and owes very little of anything to the teaching of Christ. . . . I can have little in common with those among us who are trying to persuade America that Gandhi, a Hindu to the core, is really 'unconsciously Christian' . . . . Gandhi believed in 'non-violence' to any creature long before he ever heard of Christianity. It was part of his childhood faith. His mother taught it to him. The principle of Ahimsa (non-violence) whereon he lays so much stress

today is distinctly and beyond controversy a part of his Hindu heritage."

"अमरीकी लोग अुन्हें समझे बिना अुनकी बातें करते हैं। गांधी अीसाअी हैं ही नहीं। वे खुद यह दावा नहीं करते। अुनमें जो कुछ भी है अुसके बहुत थोड़े हिस्सेके लिअे वे अीसाके अुपदेशोंके ऋणी हैं। हममेंसे कुछ लोग अमरीकाको यह समझानेकी कोशिश करते हैं कि गांधी खुद न जानते हों, मगर वे हैं सचमुच अीसाअी। मैं अैसा कुछ नहीं मानता। वे तो रोम रोममें हिन्दू हैं। अीसाअी धर्मके बारेमें गांधीने कुछ भी जाना या सुना होगा, अुससे पहले ही वे तो प्राणी मात्रके प्रति अहिंसाको मानते रहे हैं। वे बचपनसे अहिंसाको अपने धर्मका अेक अुसूल मानते हैं। यह अुन्हें अुनकी माताने सिखाया था। यह स्पष्ट और निर्विवाद है कि आज जिस अहिंसाके सिद्धान्त पर वे अितना ज्यादा जोर देते हैं, वह अुन्हें हिन्दू धर्मसे विरासतमें मिला है।"

यह कह कर — और यह सही बात है — मुहम्मदअलीने अेक बार जो बात कही थी वही बहुत सौम्य भाषामें यह पक्का अीसाअी बापूके बारेमें कहता है:

"Let us be done with the idea that Christianity is the only religion that can produce good men. The question is when other religions have done their best, can Christianity, at its best, surpass them? We believe so. Mr. Gandhi is quite certainly a better Hindu than I am a Christian — that is, he practises his religion in a much better fashion than I do mine. He is probably as high a type as his religion can produce, while I am a very poor advertisement for mine. But that is not the question. It is not at all fair to judge the relative worth of Christianity and Hinduism by comparing Christians like me with Mr. Gandhi. The real question is, *can* Christianity at its best produce a higher type of man than Hinduism? If not, then we ought all to become Hindus. And if Hinduism can produce a type worthy to be compared with Christ himself, then why strive to make the Hindus Christian?"

". . . I would by no means seek to deny Gandhi is a 'great soul'. I believe that he is so. But from what knowledge I can get from my reading, I most certainly say that I do not think him as great a soul as very many of the Christian saints have been. I also fully believe that we have many better men in the Christian church today, although their virtues have not been so highly publicized.

The battles they are fighting are not of such a spectacular character, but demand a courage and a devotion not inferior to that which Gandhi exhibits in his political contest with the British Empire."

"हमें यह बात भूल जानी चाहिये कि अेक ओसाओ धर्म ही अैसा है जो अच्छे आदमी पैदा कर सकता है। सवाल तो यह है कि किसी भी दूसरे धर्मके अुत्तमोत्तम व्यक्तियोंसे ओसाओ धर्मके अुत्तमोत्तम व्यक्ति बढ़कर हैं या नहीं? मैं मानता हूँ कि जरूर है। मैं जैसा ओसाओ हूँ अुससे गांधीजी ज्यादा अच्छे हिन्दू हैं, यह मैं जरूर कहूँगा। अिसका अर्थ अितना ही है कि मैं अपने धर्मका जिस तरहसे पालन करता हूँ, अुससे गांधीजी अपने धर्मका ज्यादा अच्छी तरह पालन करते हैं। सम्भव है कि हिन्दू धर्म जितना अूँचेसे अूँचा आदमी पैदा कर सकता है अुतने अूँचे वे हैं, जब कि मैं ओसाओ धर्मका बहुत कमजोर प्रतिनिधि माना जा सकता हूँ। मगर हमारे सामने सवाल यह नहीं है। मेरे जैसे ओसाओकी गांधी जैसे हिन्दूके साथ तुलना करके ओसाओ और हिन्दू धर्मका मुकाबला करना बिलकुल अुचित नहीं है। असली सवाल तो यह है कि ओसाओ धर्मका और हिन्दू धर्मका अच्छीसे अच्छी तरह पालन करनेवालोंमें किस धर्मवाला बढ़कर होगा? अगर हम यह कहते हैं कि ओसाओ धर्मवाला बढ़कर नहीं हो सकता तो हम सबको हिन्दू धर्म अंगीकार करना चाहिये। अगर हिन्दू धर्मका पालन करनेसे व्यक्ति अिस दर्जे तक पहुँच सकता है कि खुद ओसा मसीहके साथ अुसकी तुलना हो सके, तो फिर हम हिन्दुओंको ओसाओ बनानेकी कोशिश किस लिअे कर रहे हैं?"

". . . गांधी महात्मा हैं, अिस बातसे अिनकार करनेका मेरा आशय नहीं है। मैं मानता हूँ कि वे महात्मा हैं। परन्तु मैंने जो कुछ पढ़ा है अुस परसे मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि अैसे अनेक ओसाओ महात्मा हो गये हैं, जिन्हें गांधी नहीं पहुँच सकते। मैं तो अच्छी तरह मानता हूँ कि आज भी ओसाओ सम्प्रदायमें गांधीसे बढ़कर अनेक महात्मा मौजूद हैं; फर्क अितना ही है कि अुनके महात्मापनकी अितनी जाहिरात नहीं हो पायी। ये लोग जो लड़ाअियाँ लड़ रहे हैं वे अिस किस्मकी हैं ही नहीं कि लोगोंकी नजरमें आयें। वैसे ब्रिटिश साम्राज्यके साथ राजनीतिक लड़ाओ लड़नेमें गांधी जो हिम्मत और निष्ठा बता रहे हैं, अुससे अिन लोगोंकी हिम्मत और निष्ठा जरा भी नीचे दर्जेकी नहीं है।"

यह कह कर वह अेण्ड्रयूज और होम्स जैसे ओसाअियोंकी कड़ी आलोचना करता है कि अुन्होंने गांधीजीकी ओसाके साथ तुलना करके दुष्ट मूर्तिपूजाका दोष अपने सिर ले लिया है।

"Idolatry consists in giving to any person or to any thing the place which belongs to our Lord."

"जो स्थान या पद हमारे भगवान अीसाका है, वह स्थान किसी भी व्यक्ति या चीजको देनेका नाम मूर्तिपूजा है।

बात यह है कि यह अीसाअी Our Lord 'हमारे लार्ड'को भगवान मानता है, जब कि दूसरे अीसाअी नहीं मानते। अिसलिअे जैसे वे अीसाको अीश्वरीय अंश मानते हैं, वैसे ही बापूको भी मानते हैं। यह आदमी मानता है कि अीसाअी धर्मकी अहिंसा अुस अहिंसासे, जो गांधी सिखाते हैं — यानी गो-रक्षाकी अहिंसासे — बढ़कर है! अीसाने तो Resist not evil — 'बुराअीका प्रतिकार न करो' कहा था, जब कि यह आदमी Passive Resistance यानी निःशस्त्र प्रतिकार सिखाता है। अिसके Non-violent resistance — अहिंसक प्रतिकारके पीछे hatred यानी द्वेष छुपा हुआ है, जब कि Christian Non-violence — अीसाअी अहिंसामें Love यानी प्रेम भरा हुआ है। यह आदमी बापूसे मिला होता, तो अिस तरह न लिखता। यह मिला नहीं यही खामी है। अिसके सारे अध्ययनकी कमी बापूके निजी परिचयका अभाव और बापूके हिन्दू धर्म सम्बन्धी विचारोंका अज्ञान है। और अिसीके कारण वह ये विचार प्रकट करता है:

"Christ gave to the world a sublime moral religion: Gandhi gives to the world a new way to get your enemy down — and as his spiritual contribution recommends the especial veneration of the cow."

"अीसाने दुनियाको अेक भव्य नीति-धर्म दिया है। जब कि गांधी तो दुश्मनको मात करनेका अेक नया तरीका सिखाते हैं। और अध्यात्मके सम्बन्धमें अिनकी देन अितनी है कि गायकी खास तौर पर पूजा करनेकी सलाह देते हैं।

यह बेचारा समझता नहीं कि गांधीको अीसाकी तरह ही अिस दुनियाका राज नहीं चाहिये, और गांधीकी अहिंसा विश्वके अणु-परमाणु मात्रके प्रति अहिंसा है। गांधी शत्रुको गिरानेका नया रास्ता नहीं सिखाते, बल्कि शत्रुको मित्र बनानेका रास्ता सिखाते हैं। और गांधीके खयालसे बाहरी शत्रुओंसे आन्तरिक शत्रुओंके साथकी लड़ाअी ज्यादा महत्त्वकी और ज्यादा विकट है।

× × ×

फूलचन्दका अेक पत्र आया। अुसमें वे लिखते हैं कि — "मुझे याद किया अिसे सौभाग्य मानता हूं। प्रांगध्राका मामला अीश्वरने सुझाया वैसा

निबटा दिया और अुससे मुझे परम सन्तोष है। अब अीश्वर जैसा सुझाता है, वैसे काम करता जा रहा हूँ।"

बापू बोले — "अिन वाक्योंमें विवेकपूर्वक यह बता दिया है कि अब मेरा और आपका रास्ता अलग अलग है।"

मैंने कहा — "अिस प्रकरणके बारेमें होगा, लेकिन वे यह कहना चाहते हैं कि अुनका सत्याग्रहका तरीका ही दूसरा है।"

बापू कहने लगे — "यह साफ है। कोमलसे कोमल भाषा अध्याहारकी होती है और अुन्होंने अध्याहारकी भाषा काममें ली है।"

यह कह कर अुन्होंने अुस स्वागतका बड़ा मजेदार हाल सुनाया, जो किसी अहमदाबादीने किया था। वे मैट्रिककी परीक्षा देने अहमदाबाद गये थे, तब अपने बड़े भाअीकी सलाहसे अुस गृहस्थके यहाँ ठहरे थे। "यह भाअी लेने आये, गाड़ीमें अपने घर तक आये और फिर मुझे छोड़कर घरमें चले गये। भाड़ा कौन दे? मैंने तो अुस गाड़ीवालेसे पूछा और भाड़ा दे दिया। मेरे भाड़ा दे देनेके बाद वे भाअी वापस आये। अुन्होंने अध्याहारकी भाषा अिस्तेमाल की थी। अुनके घरमें कंजूसीकी और तरहसे भी हद न थी। लेकिन मुझे छुड़ानेके लिअे ही द्वारकादास पटवारी आये और अपने घर ले गये।" मैंने अपना अेक ताजा अनुभव बयान किया। बापू बोले — "तुम्हारा अनुभव मुझसे भी बढ़कर है।"

* * *

'ट्रिब्यून'में 'डेली टेलीग्राफ' के सम्वाददाताका पेशावरके विषयमें लेख है। अुसमें बेहयाअीके साथ पेशावरको किस तरह दबा दिया गया अिसका खुला वर्णन है। बापू कहने लगे — "अिसमें हमारा सारा मामला आ जाता है। वे कबूल करते हैं कि आतंक जमा देनेके सिवा अुन्होंने कोअी रास्ता अख्तियार ही नहीं किया।"

ब्रेल्सफोर्डका 'न्यू लीडर'में अच्छा लेख था। हिन्दुस्तानकी परिस्थितिका अुसने प्रत्यक्ष चित्र खींचा है। 'ट्रिब्यून'में बेन्थलके गश्ती पत्र पर और अिकबालके मुस्लिम परिषदके भाषणपर खूब लेख थे। ये लेख देखकर बापूने अेक दो बार कहा — "विचार प्रगट करनेवाला (views paper) सबसे अच्छा पत्र 'ट्रिब्यून' है। खबरें देनेवाला (news paper) सबसे अच्छा अखबार 'हिन्दू' है। 'ट्रिब्यून' वाला अपने अगाध अनुभवसे जिस तरीके पर सब चीजें समझता है और अुनका पृथक्करण करता है, वह दूसरे सबसे बढ़कर है।"

* * *

बापूने बताया — "अिकबालका राष्ट्रीयताका विरोध दूसरे मुसलमानोंमें भी भरा है, अितनी ही बात है कि कोअी बोलते नहीं। अपने 'हिन्दोस्तां हमारा' गीतसे अब वे अिनकार करते हैं।" मैंने कहा — "अिनका और शौकत मुहम्मदका Pan-Islamism — अिस्लामी साम्राज्य अेकसा है या नहीं?" बापू बोले — "अेकसा है, मगर अिस Anti-nationalism (राष्ट्रीयताका विरोध) से Pan-Islamism (अिस्लामी साम्राज्य भावना) के साथ कोअी सम्बन्ध नहीं। मैं मुसलमान पहले और हिन्दुस्तानी पीछे, अिस बातका मैं बचाव कर सकता हूँ; क्योंकि मैं तो यह कहनेवाला आदमी हूँ न कि मैं पहले हिन्दू हूँ, अिसीलिअे सच्चा हिन्दुस्तानी हूँ? मुहम्मदअली अिस बातको ठीक तौर पर बैठा सकते थे। अिन लोगोंके लिअे 'मैं मुसलमान पहले हूँ' अिसका वह पुराना अर्थ रहा ही नहीं। आज तो मैं मुसलमान हूँ यानी Nationalist (राष्ट्रीय) नहीं यह अर्थ हो रहा है।"

*　　　*　　　*

शंकरलालके भाअी धीरजलालके मरनेके समाचार आये। हम सबको बड़ी चोट पहुँची। धीरजलाल जैसे आज्ञाकारी और भ्रातृभक्त भाअीके कारण शंकरलाल घरकी कुछ भी चिन्ता किये बिना या घर छोड़कर सब कुछ देशको समर्पण कर सके थे। अिस खयालसे दिलको बड़ा अुद्वेग हुआ कि अुस भाअीके अुठ जानेसे शंकरलाल पर अकल्पित और बहुत ही दुःखदायक बोझ पड़ जायगा। बापूने अुन्हें और धीरजलालकी विधवाको आश्वासनके तार दिये।

२७–३–'३२

बापूको अपनी चिन्ता जरा भी नहीं, मगर दूसरोंके लिअे वे बहुत व्याकुल हो जाते हैं। यहाँ बन्द हुअे बैठे हैं, तो भी अिस बातके अनेक अुदाहरण यहाँ भी रोज मिलते ही रहते हैं। 'सरदारके लिअे तुम क्यों नहीं कुछ पकाते? तुम पर तो अुन्होंने बड़ी आशायें बाँध रखी थीं।' अैसे मीठे अुलाहने देकर मुझे पकानेकी प्रेरणा की। हरिदास गांधीके बारेमें तो मेजर मार्टिनको लगभग अल्टिमेटम ही दे डाला। मेजर मार्टिनको खत लिखा कि दूसरे कैदी भाअियोंको पत्र लिखनेकी छूट तो होनी ही चाहिये। और वह भेजा जाय अुससे पहले ही मेजर भंडारी यह अिजाजत भी दे गये। अिसलिअे तुरन्त ही मीराबहन, काका, प्रभुदास, मणि, जमनालालजी और देवदास सबको पत्र लिखे। मीराबहनको तो अिस खयालसे अेक पत्र लिखा ही था कि वह पत्र न मिलनेसे रोज व्याकुल रहती होगी। मगर अुनके दो पत्र आ गये, अिसलिअे पहुँचका अेक और लिख दिया और जेलरसे प्रार्थना की कि यह पत्र तुरन्त भेज दिया जाय। सरदारको रातमें मच्छरोंके मारे नींद नहीं आती,

अिसलिअे जेलरको अिस बारेमें खुद ही चिट्ठी लिखी कि अुन्हें तुरन्त मच्छरदानी मिलनी चाहिये और रविवार होने पर भी वार्डरको सूचना की कि पत्र अुनके घर पर पहुँचा दे। बापू जब रातको पेशाब करने अुठते हैं, तो अुनकी खड़ाअूकी खड़खड़ाहटसे अक्सर मैं जाग जाता हूँ। यह जब अुन्हें मालूम हुआ तो खड़ाअू छोड़कर चप्पल पहनने लगे, कमरेमें जाना बन्द किया और बरतन अपनी खाटके पास रख लिया; और जब बरतन कमरेमें था, तब मैं जहाँ सोता था अुससे दूरका रास्ता लेकर चोरके पैरों कमरेमें जाते थे। अपने लिअे बाजारसे फल नहीं मँगवाये जा सकते, मगर हरिदास गांधी अस्पतालमें हैं अुनके लिअे बाजारसे फल जरूर मँगाये जा सकते हैं! 'अैसो को अुदार जग मांही, बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर, राम सरिस कोअु नाहीं, अैसो को अुदार'।

* * *

आज सुबह घूमते घूमते चालू विषयों पर चर्चा चली। बापूने कहा — "मैं चाहता ही नहीं कि आज समझौता हो। अभी अुसका मौका नहीं है, हम अुसके लिअे तैयार नहीं हैं। अभी हममेंसे बहुतोंको बेज़बान बनकर जेलमें जाना है और वहीं पड़े रहना है। सरकार अकल्पित रूपमें मेरे साथ सीधी चल रही है। मैंने यह आशा नहीं रखी थी कि वह कैदियोंको खत लिखनेकी छूट देनेकी अुदारता दिखायेगी। मगर सम्भव है हमारी अहिंसाका अुसपर असर हुआ हो। वह जो केडल आया था कोअी बहुत समझदार आदमी नहीं है। मगर कभी कभी अुसके मुँहसे समझदारीकी बातें निकल आती हैं। अुसने जब यह कहा कि हमारी लड़ाअीमें अिस बार कड़वापन नहीं, तो यह समझना चाहिये कि खानेकी मेज पर होनेवाली अिन लोगोंकी गपशपकी प्रतिध्वनि अिस बातमें थी। अब भी हम ज्यादा अहिंसा साधें, तो अुसका ज्यादा असर होगा।"

* * *

वल्लभभाअी आज धार्मिक प्रश्नोंकी चर्चा कर रहे थे। महाभारत और रामायण अैतिहासिक ग्रंथ नहीं, जैसे शेक्सपियरका ज्यूलियस सीजर नहीं है। राम, कृष्ण पात्र थे, लेकिन संपूर्ण पुरुष नहीं थे। सब अपने अपने समयके महापुरुष थे। अुनके गुणोंको अुस जमानेके लोगोंने दस गुने और सौ गुने करके बयान किये हैं। अेक भी अच्छा काम कीजिये, तो लोग अुसे गुणाकार करके ही वर्णन करेंगे। यही बात हमारे अवतारी पुरुषोंके बारेमें भी हुअी है और यही अीसा और मुहम्मदके बारेमें भी। मैंने अुस अमरीकी पादरीके लेखकी बात चलाअी। बापू कहने लगे — "मैंने कभी कहा ही नहीं कि हिन्दू धर्मका अुत्तमसे अुत्तम व्यक्ति अीसाअी धर्मके अुत्तमसे अुत्तम व्यक्तिसे बढ़कर हो सकता है। अिसीलिअे हिन्दू धर्ममें किसीके धर्मको नीचा समझनेकी और किसीसे अपना धर्म छुड़वानेकी

बात नहीं है। अीसाअी अीसाको भगवान मानते हैं और किसी भी मनुष्यकी अीसाके साथ तुलना करना या किसी भी मनुष्यमें अीसाके गुण मानना वे मूर्तिपूजा समझते हैं। मुसलमान मुहम्मदको अीश्वर नहीं मानते और किसी चीज या व्यक्तिमें अीश्वरका आरोपण करना मूर्तिपूजा समझते हैं। यह बात सच होते हुअे भी वे लोग पैगम्बरकी मूर्तिपूजा ही करते हैं। और जहाँ सचराचर अुससे भरपूर है, वहाँ किसी वस्तु या व्यक्ति पर भगवानके आरोपणकी बात कहाँ रही? व्यक्तिमात्रमें अीश्वरीय अंश है, किसीमें कम, किसीमें ज्यादा। वह अमरीकी पादरी अहिंसाका अर्थ नहीं समझा और अीसाके Resist not evil 'बुराअीका प्रतिकार न करो' का भाव भी नहीं समझा। Love thy enemies (अपने दुश्मनोंसे प्यार कर) यह non-resistance (अप्रतिकार)का positive aspect (सक्रिय प्रकार) है। Resist evil by good (बुराअीका प्रतिकार भलाअीसे कर) अैसा वाक्य बाअिबलमें कहीं है, यह मुझे याद नहीं।" (मेरा कहना यह था कि बाअिबलका अैसा अेक वचन मुझे याद है।)

* * *

आज मुस्लिम परिषद पर अेक सुन्दर लेख 'ट्रिब्यून'में आया। वह पढ़ कर सुनाया गया, तो बापू कहने लगे — "Long live Kalinath Roy (चिरजीवी हों कालीनाथ रॉय)। कौमी सवाल और अछूतोंके लिअे संयुक्त मताधिकार जैसे सवालों पर आजकल अिस आदमीके लेख बहुत अनुभव और ज्ञानपूर्ण आते हैं।"

* * *

आज अिमर्सनको पत्र लिखा कि बम्बअी सरकारने घोषणा की है कि जमीनें बेच दी जायँगी और वापस नहीं दी जायँगी; मगर मैं आपको याद दिलाता हूँ कि पिछले साल जब हम सुलहकी बातचीत कर रहे थे, तब अर्विनने कहा था कि आयन्दा अैसा प्रसंग आये तो जमीनें बेचनी नहीं चाहियें। क्या आप अिस शुभेच्छाको धूलमें मिला देंगे? और कुछ नहीं तो जिनके लिअे भावी सन्तान हमें फटकारे या बादमें हमें खुद जिनके लिअे पछतावा हो फिर भी कोअी अिलाज नहीं किया जा सके, अैसी बातें तो न कीजिये! क्या दुश्मनीकी विरासत पीढ़ियों तक रखनी है? मैंने पूछा कि अिस खत पर 'खानगी' लिखना चाहिये या नहीं। बापूने 'हाँ' कहा। अिस पर सरदार कहने लगे — "न लिखा तो भी क्या हुआ? कोअी पढ़ लेगा तो क्या हो जायगा? जो पढ़ेगा वही कहेगा कि अिन लोगों-जैसे नंगे भी कोअी नहीं — जेलमें चले गये तो भी लड़नेसे बाज नहीं आते?"

* * *

‘किंग्स कॉलेज’में बाल्डविनका Secret of Happiness ‘सुखकी कुंजी’ पर भाषण हुआ। अुसका सार ‘मैन्चेस्टर गार्डियन’ने दिया था और ‘क्रॉनिकल’ने अुसे अुद्धृत किया है। सर ऑल्फ्रेड क्रिप जैसे शस्त्रवैद्य ‘सुख और जीवन साफल्य’ विषय पर हर साल भाषण देनेके लिअे दान करें, यह भी अेक अपूर्व बात है। भाषणमें बॉल्डविनकी चुने हुअे शब्दोंके चुने हुअे वाक्योंवाली शैली छलछला रही थी। सुख पर बोलनेके बजाय अुसने तो अीश्वरकी तरह ‘नेति नेति’ कह कर काम पूरा किया। अीश्वर सुख या आनंद रूप ही है, अिसलिअे अुसकी ‘नेति नेति’से व्याख्या हो तो अिसमें आश्चर्य ही क्या? फिर भी भाषणके अन्तमें प्रगट किये गये अुद्गार बहुत हृदयंगम करने योग्य हैं:

“Happiness may be the echo of virtue in the soul, it is certainly a harmony in the mind. It may radiate from beggars and Gypsies, lords of the universe who own no service to fame and fortune. It may be the beatific vision of the holiest saints or the insight of the greatest thinkers in the art of apprehending reality.”

“सुख हृदयमें रहनेवाले गुणोंकी प्रतिध्वनि है। यह चित्तकी सुसंवादिता तो जरूर ही है। भिखारियों और आवारागर्दोंमें भी वह पाया जाता है। वे दुनियाके मालिक हैं, क्योंकि यश और सम्पत्तिकी अुन्हें लालसा नहीं है। पवित्र संतोंको होनेवाले परम आनन्दके अनुभवको सुख माना जा सकता है या महाज्ञानी पुरुषोंमें तत्व आकलन करनेकी कलाकी जो अन्तर्दृष्टि होती है, ख कह सकते हैं।”

फिर भी सुखकी हमारी कल्पनाको कोअी पहुँच सकता है? ‘यद्यत्परवशं दुःखं यद्यदात्मवशं सुखम्’। गेटेकी जन्म-शताब्दी मनाअी जा रही है। अुनकी अनेक सूक्तियाँ अुद्धृत की जाती हैं। सुखकी हमारी व्याख्याके पर्यायरूपमें अुन्होंने यह व्याख्या दी है — Everything that frees our spirit without giving us self-mastery is pernicious. जो भी चीजें आत्मविजय दिलाये बिना चित्तको निरंकुश बनाती हैं, वे निहायत नुकासनकारक हैं। गीतामें तो वचनामृत भरे पड़े हैं: ‘**यस्त्वात्मरतिरेव स्यात्**॥ **सुखमात्यंतिकं यत्तद्**’॥ और ‘**यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः**’॥ छोटीसे छोटी और जड़से जड़ मनुष्य समझ जाय अैसी व्याख्या चाहिये तो यह है कि दूसरोंके सुखके लिअे जीना और दूसरोंको सुखी देखना, अिसके जैसा दूसरा कोअी सुख नहीं है।

*　　　*　　　*

रोमाँ रोलाँने बापूकी स्विट्जरलैण्डकी यानी रोलाँकी मुलाकातका अेक अतिशय सजीव वर्णन, विनोद और ताजगीसे भरा हुआ वर्णन, अेक अमरीकी मित्रको लिखे हुअे पत्रमें दिया है। अिसमें वे बापूकी और अपनी मुलाकातकी तुलना साधु डोमिनिक और संत फ्रांसिसकी भेंटसे करते हैं। डोमिनिक रोलाँ या गांधीजी? मुलाकात लेने तो डोमिनिक गया था। लेकिन शायद डोमिनिककी अपेक्षा फ्रांसिसके जीवनकी तुलना गांधीजीके जीवनके साथ ज्यादा हो सकती है। सारा खत अितने ज्यादा हल्के मजाकसे भरा है कि यह तुलना अूपरी ही हो सकती है, अिससे ज्यादा नहीं। फिर भी जरा सोचनेकी बात तो अवश्य है। और डोमिनिक या फ्रांसिस दोनोंमेंसे किसी अेकके साथ भी अपनी तुलना करना जबरदस्त आत्मविश्वास और आत्म-स्वच्छताका भान जाहिर करता है। मुझे जहाँ तक याद है सन्त फ्रांसिस अुग्र तपश्चर्याकी मूर्ति था, जब कि डोमिनिक 'युक्ताहार विहार', 'युक्त स्वप्नावबोध', 'कर्मसु युक्तचेष्ट' था। मगर कौन कहेगा कि फ्रांसिस योगी नहीं था?

* * *

गेटेके जीवनमें त्याग और भोग, विलास और वैराग्य दोनों अुमड़ते हैं; मगर भोग और विलाससे छुटकारा आखिर अुसे त्याग और वैराग्यमेंसे ही मिला है। और वह अैसा अनुभवका वाक्य छोड़ गया है कि प्रयत्नशील मनुष्यके लिअे सदा ही आशा है। प्रयत्नशीलताका लक्षण अुसकी अिन प्रसिद्ध पंक्तियोंमें दिखाअी देता है:

> Who has not cut his bread with sorrow
> Who hasn't spent the midnight hours
> Weeping and watching for tomorrow,
> He knows you not, Ye heavenly powers!

जिसने सतप्त हृदयके साथ अपनी रोटी खाअी नहीं, जिसने कलके लिअे रोकर और जागकर आजकी रात गुजारी नहीं, हे भगवान, वह तुझे नहीं जानता!

२८–३–'३२

श्रीमती नायडूके बनारस जानेके बारेमें बापूका अनुमान यह है कि अुन्हें मालवीयजीने बनारस बुलाया होगा और अुन्होंने पाँच घण्टे जो बातें कीं, सो कांग्रेसका अधिवेशन करनेके बारेमें हुअी होंगी। जब वे लोग कहते हैं कि कांग्रेस गैरकानूनी है, तो फिर अुसका जलसा करके और अुसका बड़ा सवाल खड़ा करके अुसपर जेल क्यों न जायँ? अिन लोगोंका अैसा विचार हो तो आश्चर्य नहीं।

भावी शासनविधानमें भाग लेनेके बारेमें बापूने कहा — "यह तो देखकर कहा जा सकता है। विलायतमें भी मैंने कहा था और यहाँ भी कहता हूँ कि अगर अुसमें कुछ भी सत्ता नहीं मिलती हो तो अुसका कड़ा विरोध करना, और सत्ता मिल जाती हो तो धारासभाओं पर कब्जा जमाना। मैं न होअूँ तो भी अितना तो कह ही जाअूँगा।" वल्लभभाअी बोले — "यहाँ तक साथ लायें, तो क्या अिस तरह अकेले चले जा सकेंगे?"

*　　　　*　　　　*

रस्किनका Fors Clavigera (फोर्स क्लेविजेरा) बापूने बहुत रसके साथ पढ़ना शुरू किया और आज कहने लगे — "यह पुस्तक तो बारबार पढ़ें तो भी थकान नहीं मालूम होती। अिसमेंसे तो नअी नअी बातें सूझती हैं।" शिक्षाकी बुनियादके बारेमें कुछ विचार बहुत सुन्दर लगनेके कारण अिस विषय पर अेक छोटासा लेख आश्रमको भेजा।* मैंने रस्किन और टॉल्स्टॉयके बीच

* जॉन रस्किन अेक अुत्तम प्रकारका लेखक, अध्यापक और धर्मज्ञ था। अुसका देहान्त १८८०के आसपास हुआ। अुसकी अेक पुस्तकका मुझ पर बहुत ही गहरा असर पड़ा और अुसीके सुझाये हुअे रास्ते पर मैंने अेक क्षणमें जिन्दगीमें महत्वपूर्ण परिवर्तन कर डाला। यह बात ज्यादातर आश्रमवासी तो जानते ही होंगे। अुसने सन् १८७१में सिर्फ मजदूर वर्गको ध्यानमें रखकर अेक मासिक पत्र लिखना शुरू किया था। अुन पत्रोंकी तारीफ मैंने टॉल्स्टॉयकी किसी रचनामें पढ़ी थी। मगर वे पत्र मैं आज तक जुटा नहीं सका। अुसकी प्रवृत्ति और रचनात्मक कार्यके विषयमें अेक पुस्तक मेरे साथ आयी थी, अुसे यहाँ पढ़ा। अुसमें भी अुन पत्रोंका अुल्लेख था। अिस परसे मैंने रस्किनकी अेक शिष्याको विलायतमें लिखा। वही अिस पुस्तककी लेखिका है। वह बेचारी गरीब, अिसलिअे ये पुस्तकें कहाँसे भेज सकती थी? मूर्खतासे या झूठे विनयसे मैंने अुसे आश्रमसे रुपया मँगा लेनेको नहीं लिखा। अिस भली स्त्रीने अपनेसे ज्यादा समर्थ मित्रको मेरा खत भेज दिया; वे 'स्पेक्टेटर'के मालिक हैं। अुनसे मैं विलायतमें मिला भी था। अुन्होंने ये पत्र पुस्तकाकार चार भागोंमें छपाये हैं, सो भेज दिये। अिनमेंसे पहला भाग मैं पढ़ रहा हूँ। अिनके विचार अुत्तम हैं और हमारे बहुतसे विचारोंसे मिलते जुलते हैं — यहाँ तक कि अनजान आदमी तो यही मान लेगा कि मैंने जो कुछ लिखा है और आश्रममें हम जो भी आचरण करते हैं, वह रस्किनकी अिन रचनाओंसे चुराया हुआ है। 'चुराया हुआ' शब्दका अर्थ तो समझमें आ ही गया होगा। जो विचार या आचार जिससे लिया हो अुसका नाम छिपाकर यह बताया जाय कि यह हमारी अपनी कृति है, तो वह चुराया हुआ माना जाता है।

रस्किनने बहुत लिखा है। अुसमेंसे अिस बार तो थोड़ा ही देना चाहता हूँ। वह कहता है कि अिस कथनमें गंभीर भूल है कि बिलकुल अक्षरज्ञान न होनेसे कुछ होना अच्छा ही है। रस्किनकी साफ राय यह है कि जो सच्ची है, आत्माका ज्ञान करानेवाली है, वही शिक्षा है और वही लेनी चाहिये। और बादमें वह कहता है कि अिस

अेक समानता सुझाअी : "टॉल्स्टॉयने अपना कलानिष्ठ जीवन छोड़कर सेवानिष्ठ जीवनकी शुरूआत की और कलाकी पुस्तकोंका लिखना बिलकुल त्याग कर अैसी घरेलू पुस्तकें और कहानियाँ लिखना शुरू किया, जिनसे आम लोगोंकी अुन्नति हो। रस्किनके जीवनका पहला हिस्सा भी कलानिष्ठाका था। अिस कलानिष्ठाके कालमें अुसने Modern Painters (मॉडर्न पेण्टर्स), Stones of Venice (स्टोन्स ऑफ वेनिस), आदि पुस्तकें लिखीं। बादमें अुसे लगा कि सौन्दर्यकी अुपासना चीज तो अच्छी है,। मगर आसपास दुःख, दारिद्र्य और फूट हो, तो सौन्दर्यका आनन्द कैसे लूटा जा सकता है! अिसलिअे अुसने अपनी कलम dipped in blood & tears खून और आँसुओंमें डुबोअी और Unto this Last (अण्टु दिस लास्ट) — 'सर्वोदय' लिखा। जो आलोचना टॉल्स्टॉयकी हुअी वह रस्किनकी भी हुअी।" बापूने कहा — "यह तुलना अेक खास हदके बाद नहीं रहती; क्योंकि टॉल्स्टॉयने तो कला-जीवनकी यानी अपने भूतकालकी निन्दा की, अुससे अिनकार किया, जब कि

दुनियामें मनुष्यमात्रको तीन चीजोंकी और तीन गुणोंकी आवश्यकता है। जो अिन्हें हासिल करना नहीं जानता, वह जीनेका मन्त्र ही नहीं जानता। और अिसलिअे ये छह चीजें शिक्षाका आधार होनी चाहियें। अिस तरह मनुष्य मात्रको बचपनसे — फिर भले वह लड़का हो या लड़की — जानना ही चाहिये कि साफ हवा, साफ पानी, और साफ मिट्टी किसे कहते हैं, अिन्हें किस तरह रखा जाय और अिनका अुपयोग क्या है। अिसी तरह तीन गुणोंमें अुसने गुणज्ञता, आशा और प्रेमको गिना है। जिनमें सत्यादि की कद्र नहीं, जो अच्छी चीजको पहचान नहीं सकते, वे अपने घमण्डमें फिरते हैं और आत्मानन्द नहीं पा सकते। अिसी तरह जिनमें आशावाद नहीं यानी जो अीश्वरके न्यायके बारेमें शंका रखते हैं, अुनका हृदय कभी प्रफुल्लित नहीं रह सकता। और जिनमें प्रेम नहीं यानी अहिंसा नहीं, जो जीवमात्रको अपने कुटुम्बी नहीं मान सकते, वे जीनेका मंत्र कभी नहीं साध सकते।

अिस बात पर रस्किनने अपनी चमत्कारी भाषामें बहुत विस्तारसे लिखा है। यह तो फिर किसी वक्त समाजके समझने लायक ढंगसे दे सकूँ तो ठीक ही है। आज तो अितनेसे ही सन्तोष कर लेता हूँ। साथ ही अितना और कह दूँ कि जो कुछ हम अपने देहाती शब्दोंमें विचारते रहे हैं और आचरणमें लानेका प्रयत्न कर रहे हैं, लगभग वही सब रस्किनने अपनी प्रौढ़ और विकसित भाषामें और अंग्रेज जनता समझ सके अिस ढंगसे पेश किया है। यहाँ मैंने तुलना दो अलग भाषाओंकी नहीं की है, बल्कि दो भाषा-शास्त्रियोंकी की है। रस्किनके भाषा-शास्त्रके ज्ञानके साथ मेरे जैसा आदमी मुकाबला नहीं कर सकता। मगर अैसा समय जरूर आयेगा जब भाषा मात्रका प्रेम व्यापक होगा; तब भाषाके पीछे धूनी रमानेवाले रस्किन-जैसे शास्त्री निकल आयेंगे; तब वे अुतनी ही प्रभावशाली गुजराती लिखेंगे, जितनी प्रभावशाली अंग्रेजी रस्किनने लिखी है।

ता. २८-३-'३२
यरवदा मन्दिर

रस्किनने Unto this Last (अण्टु दिस लास्ट) और Fors (फोर्स) लिखकर अपने कलाजीवन पर कलश चढ़ा दिया ।" मैंने कहा — "टॉल्स्टॉय तो क्रान्तिकारी था, अिसलिअे अुसने जीवनमें भी परिवर्तन किया । और रस्किन विचार देकर बैठा रहा ।" बापू बोले — "यह तो बहुत बड़ा फर्क है न? टॉल्स्टॉयका-सा जीवन-परिवर्तन रस्किनमें नहीं है ।" वल्लभभाअीने कहा — "लेकिन आज रस्किनका नाम तो विलायतमें सचमुच कोअी नहीं लेता न!" बापू बोले — "हाँ, नहीं लेता, मगर रस्किन भुलाया नहीं जा सकता । अुसका जमाना आ रहा है । अैसा समय आ रहा है कि जिसने रस्किनको नहीं सुना और अुसके बारेमें लापरवाही दिखाअी, वह रस्किनकी तरफ मुड़ेगा ।"

*　　　*　　　*

तिलकन् नामका जो विद्यार्थी आश्रममें आया हुआ है अुसे लिखा :

"Vanity is emptiness: Self-respect is substance. No one's self-respect is ever hurt except by self, vanity is always hurt from outside.

"In the phrase 'Seeing God face to face', 'face to face' is not to be taken literally. It is a matter of decided feeling. God is formless. He can, therefore, only be seen by spiritual sight-vision."

"घमण्ड थोथा होता है। स्वाभिमान ठोस चीज है। किसीके स्वाभिमानको दूसरेसे ठेस नहीं पहुँच सकती। स्वाभिमानको धक्का अपनेसे ही लगता है। चूँकि घमण्डको सदा बाहरसे ही आघात लगता है, अिससे दूसरे अुसको ठेस पहुँचा सकते हैं।

"अीश्वरको साक्षात् देखना, अिस प्रयोगमें 'साक्षात्'का अर्थ अक्षरशः नहीं लेना चाहिये। यह प्रयोग तो हमारी भावनाकी निश्चितता बतानेके लिअे है। वैसे अीश्वर तो निराकार है। वह तो आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टिसे ही दिख सकता है।"

अेक और पत्रमें बापूने लिखा :

"जैसे अेक पेड़के पत्ते साथ ही रहते हैं, अुसी तरह समान आचार-विचारवालोंकी बात है। यह स्वाभाविक आकर्षण है।

"साथी-सहयोगी करोड़ों हो सकते हैं। मित्र तो अेक अीश्वर ही है। दूसरी मित्रता अीश्वरकी मित्रतामें बाधक है, यह मेरा मत और अनुभव है।

"मैं यह जानता या मानता नहीं कि कृष्ण भगवान योगबलसे या दूसरे बलसे भौतिक साधनोंके बिना आया जाया करते थे। सच्चे योगी विभूति

मात्रका त्याग करते हैं, क्योंकि अुनका योग सिर्फ साक्षात्कार साधनेके लिअे होता है। अुसकी हल्की चीजके साथ कैसे अदलाबदली की जा सकती है?"

अिस पत्रमें 'विभूति' शब्दके बजाय मैंने 'सिद्धि' सुझाया। अुसे बापूने मंजूर नहीं किया। अच्छी तरह चर्चा करनेके बाद अुसी पर डटे रहे। बोले कि विभूतिमें सिद्धि आ जाती है। विभूतियोंका त्याग करनेके मानी हैं विभूतियोंके अुपयोगका त्याग करना; और त्याग करनेका अर्थ है अुसके विषयमें बिलकुल बेखबर रहना, जैसे पलक हिलती रहती है और अुसके बारेमें हम बिलकुल बेखबर रहते हैं।

२९-३-'३२

सेम्युअल होरकी पुस्तक 'फोर्थ सील' अुसके रूसी अनुभवोंके बारेमें है। लड़ाअीके दरमियान अेक सालमें रूसी भाषाका अध्ययन करके अुसने देशकी सेवाके लिअे रूस जानेकी माँग की। वह गुप्त सूचना विभागके अफसरके रूपमें गया और मूल्यवान सेवा की। पुस्तकमें अुस समयकी हालतका और पात्रोंका मजेदार वर्णन है। रूसमें देशकी युद्ध सामग्रीकी अव्यवस्था देखकर अुसने जो कुछ लिखा है, वह अिंग्लैण्ड और दूसरे किसी भी देशके बीचका भेद आज भी प्रगट करता है। रूसके सेनाविभागके भद्दे दफ्तरों, छुट्टियोंके बहुत दिनों और अनिश्चित समयका जिक्र करके वह लिखता है:

"कामके दिनोंमें भी बहुतसे कर्मचारी दफ्तरमें वक्त पर नहीं आते थे, अिसलिअे रूसी साथियोंसे मुलाकातका समय तय करनेमें मुझे बहुत मुश्किल पड़ती थी। अुदाहरणके लिअे, मैं रूस पहुँचा, तब मुझे याद है कि सारे स्टाफके मुख्य अफसर क्वार्टर मास्टर जनरलकी अैसी आदत थी कि वह रातको ग्यारह बजे दफ्तरमें आता और दूसरे दिन सवेरे सात आठ बजे तक काम करता रहता। हमारे जैसोंको, जिन्हें दिनमें काम करनेकी आदत हो, अैसे आदमियोंके साथ सहयोग करनेमें बड़ी कठिनाअी हो। मुझे यह खयाल आता कि अिन लोगोंके ये रंगढंग देखकर लंदनके मुख्य अधिकारी अिन सब बातोंके बारेमें क्या सोचेंगे। हमारे यहाँ जैसे तरीकेसे काम करनेवाले कर्मचारी, अच्छी तरह तालीम पाये हुअे टाअिपिस्ट, कार्डोंपरसे सूचियाँ तैयार करनेवाले विशेषज्ञ तथा दफ्तरके दूसरे सब कर्मचारी, जिनकी होशियारीसे लंदनका तंत्र नमूनेदार माना जाता है, अिन लोगोंके काम करनेकी बेढंगी आदतें देखकर क्या खयाल करेंगे? रूसमें जैसे जैसे ज्यादा दिन रहा, मेरा यह विचार, जो बहुत समयसे मेरे मनमें घुलता रहता था, स्पष्ट होता गया कि हम जितनी अुत्कटतासे यह लड़ाअी लड़ रहे हैं, अुतनी अुत्कटतासे और कोअी देश नहीं लड़ रहा है। दफ्तरका रोजमर्राका काम भी महकमोंकी बद-अिन्तजामीके कारण

समय समयपर बिलकुल बंद हो जाता था। जैसे, अेक बार यह हुआ कि जिस तारके सहारे हमारे तार जाया करते थे, वह दस दिन तक बिगड़ा रहा। अिन दसों दिन में तो रोज कअी तार भेजता और वे जाते ही नहीं थे। मगर किसीको यह न सूझा कि मुझे यह तो बता दे कि क्या हुआ। जब लन्दनसे तार न मिलने लगे, तो मुझे चिन्ता होने लगी। जाँच करने पर मालूम हुआ कि तार विभागके अधिकारियोंने मुझे यह खबर अिसीलिअे नहीं भेजी कि तार न जानेका पता लगेगा, तो मुझे फिक्र हो जायगी।"

रोजर केसमेण्टकी विचित्रताओंका वर्णन करते हुअे लेखक कहता है — "जब छायामें भी १०० डिगरी तक गरमी हो, तब भी वह आयरलैण्डकी हाथ कती मोटीसे मोटी खादी पहनता। मोजे या जूतेकी तो बात ही नहीं, और मनस्वी और झक्की अितना कि माननेमें न आये।" फिर लिखता है — "मगर अुसके अिस तमाम लहरीपनके बावजूद, हमारे हत्यारेपनको धिक्कारनेवाले और जुल्मके खिलाफ जूझनेवाले कितने ही विरले व्यक्तियोंकी पंक्तिमें अुसका स्थान है। वह बीचमें न पड़ा होता, तो कांगो और पुटुमायोमें रबरके लिअे होनेवाले अत्याचारोंका कलंक बना ही रहता और वहाँके गरीब निवासियोंका अुत्पीड़न और हनन जारी रहता। अुसमें करुण बात अितनी ही है कि १९वीं सदीके अिस डॉन क्विक्ज़ोटकी यह राय बन गयी थी कि जो जुल्म रबरके बेपारी कांगोके निवासियों पर कर रहे हैं, वही जुल्म अिंग्लैंड आयर्लैंड पर कर रहा है। अपने मनकी अिस लहरको अुसने धार्मिक सिद्धान्त बना रखा था और अिसलिअे वह अैसे रास्तेमें पड़ गया कि अुसे राजद्रोहीकी मौत मरना पड़ा।"

रूसके ज़ारके लिअे लेखक लिखता है — "अुसके साथकी बातचीतमें मुझे वह अेक अैसा विनीत और धर्मभीरु सज्जन लगा कि अैसोंको मार डालनेका किसीको खयाल भी नहीं आ सकता। मगर अुसकी सार्वजनिक कारगुजारीके जो सबूत मिलते हैं, अुन परसे मुझे लगता है कि अुसके खिलाफ काली करतूतें करनेवालेके नाते मुकदमा चलाया जा सकता था। अुसने अपने मित्रोंको कुर्बान कर दिया था, राजकाजमें मुश्किलसे कोअी अुदारवृत्ति दिखाअी होगी। अुसने राजकी बागडोर अच्छी तरह नहीं सँभाली और नावको चट्टान पर चढ़ा दिया। अितने पर भी, अुसके सारे दोष स्वीकार करते हुअे भी, मुझे तो विश्वास है कि वह अच्छा आदमी था और आजके अुतावले फैसलेके विरुद्ध अितिहास जरूर अपील दर्ज करायेगा। कारण अितिहास दिलकी अदालतसे न्याय कराता है और दिलकी अदालतमें सबूतके तौर पर हेतुको भी कार्यके बराबर ही महत्त्व दिया जायगा। अुसने अपने रूसी मित्रोंको जरूर होम दिया था, मगर अपने युद्ध-मित्रोंका कभी त्याग नहीं किया। राजनीतिक क्षेत्रमें अुसने कअी कुलाँटें

खाअीं और खूब बहानेबाजियाँ कीं, पर वह अपने पुराने धर्म पर दृढ़तासे डटा रहा और विचलित नहीं हुआ। वह प्रेमी पिता और वफादार पति था। राज्यके रोजमर्राके काम काजका ढचरा चलानेमें और अूबानेवाला काम करनेमें अुसे थकावट महसूस नहीं हुअी। अितिहास अुसे अुन अभागे राजाओंमेंसे अेकके रूपमें याद करेगा, जो शांतिके समय शांतिपूर्वक हुकूमत करनेके लिअे पैदा होते हैं और जिनके शुभ हेतु अदम्य ताकतोंके अुत्पातके सामने बेकार हो जाते हैं।"

रूसी प्रजा कितनी धार्मिक है, अिसके चित्र होरने काफी दिये हैं — "मन्दिरमें रोजकी तरह खूब भीड़ थी। देवपूजाके दिये जल रहे थे। अिसके सिवा सब जगह अंधेरा था। मगर प्रार्थना शुरू होते ही सबने अपनी अपनी मोमबत्तियाँ सुलगा लीं। जॅनी और मेरे सिवा दूसरे किसीके पास बाअिबल नहीं थी। अितनी भीड़में चारपाँच घण्टे तक लोग किस तरह खड़े रह सकते थे, अिसकी कल्पना करना मुश्किल है। अेक अरथीके आसपास खड़े खड़े सब प्रार्थना कर रहे थे।" फिर वह रूसके पुराने भावुक अीसाअियोंका जिक्र करते हुअे अेक किसानका वर्णन करता है — "पासकी दुकानसे अुसने अेक ही भजनावली खरीदी। वह तरह तरहकी भजनावलियों, सन्तोंके आशीर्वचन और शापवचनोंसे भरी हुअी थी। फरिश्तों और भूतोंके विचित्र चित्र भी खूब थे। पुस्तकें चमड़ेकी जिल्दवाली और अुठावदार थीं। रंग और छपाअीमें ऑक्सफोर्ड और केम्ब्रिजके छापेखानोंको मात करनेवाली थीं। और कीमतें भी भारी थीं। भेडके चमड़ेके कोटवाला अेक किसान दुकानमें घुसा और संतवाणीकी दो पुस्तकें खरीदनेके लिअे अुसने पचास रुबल निकाले। यह देखकर मैं तो हक्का बक्का रह गया। मैंने अुसे जरा बातोंमें लगाया, तो अुसने कहा कि दो सुन्दर सचित्र पुस्तकें खरीदनेके लिअे वह बहुत वर्षोंसे रुपया जमा करता रहा है। रूसके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक बिलकुल भोली श्रद्धावाले और कर्मठ धर्मका कड़ाअीसे पालन करनेवाले अैसे करोड़ों भावुक स्त्री-पुरुष मौजूद हैं।"

केप्टन कोनी और अेडमिरल कोलचेकके चित्र जीवनसे लबालब हैं। अुसकी जापानमें जीती हुअी तलवार जब बोल्शेविक अुससे लेने जाते हैं और वह अुसे समुद्रमें फेंक देता है, तबका वर्णन और अुसकी मौतका हाल बड़ा पढ़ने लायक है। नाटकका अंतिम अंक अिर्कुट्स्कमें खेला गया था। बोल्शेविकोंने वहाँ मुकदमा चलानेका तमाशा किया। जिन गवाहोंकी शहादत ली गयी है, अुसका हाल मैं अुन्हींके शब्दोंमें दूँगा :

"... अूपरकी अदालतकी जाँचमें जजको पूछा गया — 'आपके सामने गवाही देते समय अुसके चेहरेके भाव कैसे थे?'

अु० — युद्धमें हारे हुअे और कैदी बने हुअे सेनापतिकी तरह वह मेरे सामने खड़ा था। वह अपने खयालसे पूरी तरह गौरवपूर्ण व्यवहार कर रहा था। अुसने अपने किसी मित्रको नहीं फँसाया।"

जब अुसे मौतकी सजा सुनाअी गयी, तो अदालतसे अुसने सवाल पूछा — "यह न्यायकी अदालतका फैसला है या फौजी खयालसे दिया हुआ हुक्म है!" जब गोलाबारी करनेवाला दल आ पहुँचा, तब अुसने बरफ पर पैरके अंगूठेसे लिखा — "अंतिम नमस्कार।" बादमें अुसने सिगार सुलगाया और मौतसे मुलाकात करनेको तैयार हो गया।

जजने स्वीकार किया — "अिस सारे समय अुसने वीरकी तरह बर्ताव किया।"

"जल्लादके सामने भी?"

"अिसमें कोअी शक है?"

अुसकी मौतके समाचार मॉस्को पहुँचे, तो वहाँका अेक रास्ते चलनेवाला अुसके बारेमें कुछ अपमानजनक शब्द बोल दिया।

दूसरा राहगीर अुस पर तड़ककर बोला — "तुम्हें कोलचेकके लिअे भद्दी बात न कहनी चाहिये। वह हमारे साथ लड़ा और हमें अुसे मार डालना पड़ा। मगर वह अेक बढ़िया आदमी था।"

गृहयुद्धके दौरानमें किये गये जुल्मोंके बारेमें अुस पर निराधार आक्षेप किये गये, तब अुन्हें रद्दी करार देते हुअे लेनिनने कहा था — "कोलचेकको दोष देना मूर्खता है। यह प्रजातंत्रका बेहूदा बचाव कहा जायगा। जो साधन अुसे मिले, अुन्हींसे कोलचेकने काम लिया।"

अिसके बाद वह रूसके ग्रांड ड्यूक सर्जकी पत्नी और हेस डार्मस्टाट (जर्मनी) की राजकुमारी अेलिजाबेथका जो वर्णन करता है, वह अपूर्व सौन्दर्यसे भरा है। अुसका बाप, हेस डार्मस्टाटका चौथा ग्रांड ड्यूक, जर्मन था और माँ अंग्रेज — अिंग्लैण्डकी रानी विक्टोरियाकी लड़की राजकुमारी अेलिस थी। अुसके मातापिताका जीवन सुन्दर, सरल और निर्मल था। माँबापने अुसमें राजघरानेके बजाय अेक सुशील कुटुम्बके संस्कार डालनेकी कोशिश की थी। वे कुल चार बहनें थीं। अुनमेंसे अेलिजाबेथ सन् १८८४ में रूसके ग्रांड ड्यूक सर्जसे ब्याही गयी और छोटी बहन ज़ार निकोलससे ब्याही गयी। ग्रांड ड्यूक ज़ारका चचा होता था। अेलिजाबेथसे सेम्युअल होर दो बार मिला था: अेक बार जब ग्रांड ड्यूक सर्ज मॉस्कोका गवर्नर था तब मॉस्कोकी रानीके रूपमें और दूसरी बार भिक्षुणीकी हैसियतसे, अेक मठकी अध्यक्षा या कुलमाताके रूपमें। "ग्रांड डचेससे मिलकर बाहर आने पर मुझे लगा कि अुसमें मुझे केवल अेक संतके ही नहीं, बल्कि अीसाअी समाजकी बड़ी सेवा करनेवाली अेक

महाविभूतिके दर्शन हुअे थे। वहाँ अुस अुदात्त महिलाकी प्रेरणासे और अुसकी देखरेखमें अस्पताल, दवाखाने, अनाथालय, पाठशालायें, क्षयके रोगियोंके लिअे आरोग्यालय, नर्सोंको तालीम देनेके केन्द्र आदि अनेक संस्थायें चल रही थीं।

"मगर वह राजकुमारी न रहकर भिक्षुणी किस लिअे बनी? अुसका विवाहित जीवन सुखी था। ग्रांड ड्यूक सर्जके पिता ज़ार अलेक्ज़ेंडर दूसरेने किसान-गुलामों (Serfs) को मुक्ति दी थी और अुसका खून किसी अराज्यवादीके हाथों हुआ था। फिर निकोलस ज़ार बना, तब वह मॉस्कोका गवर्नर था। जापानकी लड़ाअीमें हारनेके बाद अुसने निकोलससे कहा था कि प्रजासे हारकर या प्रजाके जोरसे दबकर नहीं, बल्कि अुदारताके चिन्ह स्वरूप प्रजाको धारासभा दीजिये। राजाने यह सलाह न मानी, जिससे अुसने अिस्तीफा दे दिया। अिस्तीफा देकर वह मॉस्को छोड़नेकी तैयारीमें था, सारा सामान स्टेशन रवाना हो गया था। अितनेमें अेक आतंकवादीने आकर सर्जकी हत्या कर डाली। जब यह हत्या हुअी तब अेलिज़ाबेथ तो मंचूरियाकी फौजके लिअे मॉस्कोमें खोले गये अेक सेवाकेन्द्र पर जानेकी तैयारीमें थी। अितनेमें अुसे क्रेमलिनके राजमहलके अेक हिस्सेकी खिड़कियाँ बमके धड़ाकेसे अुड़ रही हों यों सुनाअी दिया। अपने पतिको अुसने मरा हुआ देखा। अुसकी गाड़ी चूरचूर हो गयी थी और कोचवान घायल हो गया था।"

सर्जका खून कैसे हुआ और अुसकी हत्याका षडयंत्र किसका था, अिस विषयकी हृदय-विदारक बातें होरने विस्तारसे दी हैं। अिनमेंसे अेक खूनी आअिजेव था। वह राज्यके विरुद्ध अपराध करनेके लिअे लोगोंको भड़कानेके खातिर पुलिस विभागकी तरफसे ही रखा हुआ आदमी था। अेक याद रखने लायक फिकरेमें होर लिखता है — "क्या जुर्म करनेकी अुत्तेजना दिलानेवाले अैसे नीच बदमाश सचमुच होते होंगे? अिस प्रकारकी अपराधी मनोवृत्ति खुद ही किसी अपराधी और बिगड़े हुअे दिमागकी खोज नहीं है? अुनके काम शैतानी दावपेचवाले होते हैं। अुन्हें हमेशा दहशतमें रहना पड़ता है। पुरस्कार मिलनेका कुछ भी भरोसा नहीं होता। अिसलिअे यह माननेको भी मेरा जी नहीं करता कि अैसे लोग हो सकते हैं। पुलिस विभागको किस लिअे अैसे आदमियोंको रखकर आतंकवादी अत्याचारोंको अुत्तेजना देनी चाहिये? यह स्पष्टीकरण मुझे अुचित नहीं लगता कि पुलिस विभागमें अपना असर बढ़ानेकी आकांक्षामेंसे अैसे दुधारी तलवार जैसे समाजद्रोही पैदा होते हैं। देर अबेर अैसे लोगोंका भण्डा फूटे बिना तो रहता नहीं। और मान लीजिये कि वे फाँसी पर चढ़नेसे या कतल होनेसे बच भी गये, तो भी अुन्हें अैसा कौन बड़ा और स्थायी अिनाम मिलनेवाला है, जिसके लिअे अेक या दूसरे पक्षके डरका जोखम अुठानेको ये लोग तैयार होते हैं? अिन सवालोंका सन्तोष-

जनक अुत्तर मुझे कभी नहीं मिलता। मगर विश्वस्त प्रमाणोंसे मुझे अितना तो यकीन हो गया है कि अैसे लोग मौजूद हैं; और अुनमें सबसे नामी आअिजेव था, जिसने कायरताकी अुत्तेजनासे ग्रांड ड्यूकका खून कर डाला।

"अिस खूनमें दो साथी और थे। अेकका नाम था कालीव। अुत्साही, लहरी, कवि, बड़ी बड़ी भयंकर आँखों और किसी ख्वाबी आदमीकी मुस्कानवाला — अैसा यह नौजवान आअिजेव जैसेकी भयंकर सोहबतमें कहाँसे पड़ गया? अुसने बम फेंका था। वह अेक गरीब और शांतिप्रिय खानदानमें पैदा हुआ था। अुसका बाप वॉर्सामें पुलिसमैन था। पुलिसके महकमेमें रिश्वत न खानेवाले बहुत कम होते हैं। अुनमेंसे यह अेक था। अुसके भाअी खुद मेहनत करके, पसीना बहाकर गुजारा करनेवाले थे। कालीव और अुसका भाअी विश्वविद्यालयमें भरती हुअे। वहाँके विश्वविद्यालयोंमें आम तौर पर कुछ खास घटनाओंकी परम्परा बनी हुअी थी। अुसमें यह भी फँसा। पहले शक पर बरखास्तगी, फिर पुलिसकी देखरेख और बादमें देशनिकाला, अन्तमें वहाँसे भाग निकलना और पश्चिमी युरोपकी छिपी यात्रा करना। अिस घटना-परम्परामें वह भी फँसा और अुसका विश्वविद्यालयका जीवन बर्बाद हुआ। अुसके हृदयमें वैरका काँटा चुभ गया। धीरे धीरे वह क्रांतिकारियोंकी तरफ खिंचता गया और अन्तमें अुनकी कार्यकारिणी समितिका सबसे प्रमुख कार्यकर्ता बन गया। वह धार्मिक वृत्तिका था। अपने साथियोंकी नास्तिकताके प्रति अुसकी अरुचि थी। हालाँकि दुनियाने अुसके साथ कुछ भी हमदर्दी नहीं दिखाअी, फिर भी अुसके दिलमें किसीके प्रति निजी रागद्वेष नहीं था। अिसके साथी निर्दय विनाशके कार्यक्रममें लगे रहते, मगर अिसे तो अराज्यवादी नामसे भी नफरत थी। अेक बार जब ग्रांड डचेस अपने पतिके साथ गाड़ीमें बैठी हुअी थी, तब अिसने बम नहीं फेंका। सर्जको वह द्वेषपात्र जालिम नहीं मानता था, मगर अपनी स्वप्नसृष्टिके मार्गमें अेक रुकावट समझता था। यह अपने मित्रोंसे कहा करता कि हम नअी भावनाके योद्धा हैं, नवरचनाके लिअे लड़ते हैं, भविष्यको बना रहे हैं। सर्ज भूतकालका प्रतिनिधि है, अिसलिअे अुसका नाश करना ही चाहिये।"

बादमें ग्रांड डचेस अेलिजाबेथ अिस आदमीसे कैदखानेमें मिलने जाती है। यह दृश्य तो किसी नाटकके अपूर्व दृश्यको भी फीका कर देनेवाला है। खूनके बाद ग्रांड डचेस अुससे जेलमें मिलने गयी। अुसका पति पुरानी धर्म-रूढ़ियोंका कट्टर माननेवाला था। अुसने अिसे यह सिखाया था कि मौतके समय रागद्वेषको खतम कर देना चाहिये और मारनेवालेको अीश्वरका चिन्तन करनेका मौका देनेमें मदद करनी चाहिये। अिसलिअे अेलिजाबेथ अपने पतिका

खून करनेवालेसे जेलमें मिलने गयी और अुसके साथ भावपूर्ण हृदयसे बातें कीं। क्या अिससे ज्यादा हृदयद्रावक मुलाकात कोअी हो सकती है? अेक तरफ अूँचे कुलकी अेक सुन्दर विधवा अपने पतिके खूनीसे पश्चाताप करनेकी प्रार्थना कर रही है, अुसके हाथमें बाअिबल रखती है और अुसे औसाअी दयाधर्मका अुपदेश करती है। दूसरी ओर अेक विप्लववादी स्वप्नशील नौजवान है। अुसका दृढ़ विश्वास है कि अुसने अेक विधि-निर्मित कार्य पूरा किया है। अुसको यकीन है कि अुसने जो खून बहाया है और जो आहुति देनेके लिअे वह तैयार बैठा है, अुसके परिणाम स्वरूप वह दुनियाको पहलेसे ज्यादा अच्छी बनाकर जा रहा है।

कैदखानेकी कोठरीका दरवाजा खुला और ग्रांड डचेस अकेली अन्दर दाखिल हुअी। आश्चर्यचकित चेहरेसे कालीवने अपने मुलाकातीसे पूछा — "आप कौन हैं? और किस लिअे आयी हैं?"

अेलिजाबेथ — "मैं ग्रांड ड्यूककी विधवा हूँ। भला, तुम्हारा अुन्होंने क्या कसूर किया था?"

कालीव — "मुझे आपका खून नहीं करना था। अपने हाथमें बम लिये मैंने आपको अपने पतिके साथ बहुत दफे देखा था, लेकिन अिसलिअे बम नहीं फेंका कि आप साथ हैं।"

अेलिजाबेथ — "मगर भला, तुम्हें यह खयाल नहीं आया कि अुनका खून करके तुम मुझे भी मार रहे हो? अुस निर्दोषको मारते समय तुम्हारे हृदयमें जरा भी दया नहीं आयी? मगर जो हुआ सो हुआ। अब तुम्हारी मौत नजदीक है। तुम पश्चाताप करो। प्रभुकी दयाकी याचना करो, तुम्हारे लिअे यह बाअिबल लायी हूँ।"

अेलिजाबेथने अुसके हाथमें बाअिबल रखी, तो अुसके पतिका खून करनेवालेने अेलिजाबेथके हाथमें अपनी डायरी रख दी और कहा — "मैं बाअिबल पढ़ूँगा। आप मेरी डायरी पढ़िये। अिस डायरीमें आप देखेंगी कि मुझे खून कैसे करना पड़ा, हमारे ध्येयमें रुकावट डालनेवालोंका नाश करनेकी प्रतिज्ञा मैंने किस तरह ली और पूरी की।"

दोनोंने अेक दूसरेसे विदा ली। वह युवक अचल साहसके साथ मृत्युसे मिला। दोनोंके बीच — खूनी और अुसके शिकारके बीच — बाहरी दृष्टिसे बड़ी खाअी पड़ी हुअी दीखती है। मगर शायद अिस हत्यारेके अन्तरमें — क्योंकि वह नास्तिक नहीं था — अुस औसाअी महिलाके साथ, जिसने अुसे प्रायश्चित्त करनेको कहा था, ज्यादा गहरा समभाव था।

अिस युवकने न्यायाधीशके सामने कहा — “ मुझे कुछ भी सफाअी नहीं देनी है । मैंने ग्रांड ड्यूककी विधवाके सामने दिल खोलकर बातें कह दी हैं । अिसकी गवाही वे खुद ही देंगी । ”

अब अेक तीसरे आतंकवादीका चित्र देखिये । जिस आदमीने अैसे चित्र खींचे हैं, वह क्या बंगालको नहीं समझ सकता होगा ?

“ अिस रहस्यमय व्यक्ति — बोरिस सावियाकोव — से ज्यादा गहरी छाप मेरे दिल पर और किसीकी नहीं पड़ी । वह प्रखर विचारक था । अुसकी दलीलोंके सामने रूढ़ रीतरिवाज, प्रचलित विचारपद्धतियाँ वगैरा चूर चूर हो जाती थीं । वह हृदयवेधक लेखक था । पाठकोंके दिलमें अलौकिक भावोंकी ज्वाला जगा सकता था । वह असाधारण साहसी था । कैसा भी भयंकर षड्यंत्र हो, वह अुसका नेता बन जाता था । अिस अक्लान्त योजकके जादूके सामने बहुत कम लोग टिक सकते थे । वह और अुसका भाअी साविनकोर सेंट पिटर्सबर्गके विश्व-विद्यालयमें पढ़ते थे । वहाँसे अिन दोनोंको दूसरे बहुतोंके साथ कजान चौकमें राज्यविरोधी प्रदर्शन करने पर पुलिसने पकड़ लिया । लन्दनके छात्र स्ट्रैण्डके सामनेसे नारे लगाते हुअे कअी बार निकलते हैं, अिससे ज्यादा अिन नौजवानोंने कुछ नहीं किया था । मगर सेंट पिटर्सबर्गमें तो अैसी मामूली-सी बातका भयंकर परिणाम हो गया । अिन युवकोंका बाप न्यायाधीश था । अुसे नौकरीसे अलग कर दिया गया और वह पागल होकर मर गया । बड़े भाअीको साअिबेरियामें देशनिकाला दे दिया गया, जहाँ अुसने आत्महत्या कर ली । बोरिस जेलसे भागकर फाँसीसे बच सका । जरा बड़ी भीड़ अिकट्ठी हुअी, थोड़ा शोर मचा और दो विश्वविद्यालयके विद्यार्थियोंने अुद्दण्डता दिखाअी, बस अितनेसे अेक सुखी कुटुम्ब दया-माया विहीन चक्करमें फँस गया ! अेक लड़का बचा । वह दिलमें जहर और हाथमें बम लेकर रास्तों पर भटकने लगा । . . . दस बरस तक कितने ही भयंकर षड्यंत्रोंमें अुसका नाम घसीटा जाता रहा । वर्षों तक षड्यंत्रोंके अपने साथियोंके रूढ़ शब्दोंकी रटन्तमें अुसका तेज और सूक्ष्म भावनाओंवाला चित्त अस्वस्थ हो गया । वह अपने मनसे पूछने लगा कि अिस खूनखराबीसे क्या होगा ? हिंसा करना अुचित है या नहीं ? अगर हिंसा अुचित है, तो फिर लड़ाअीमें सामनेवाले आदमीको मारनेमें और खून करनेमें कोअी फर्क भी है या नहीं ? अगर हिंसा अुचित न हो तो फिर युद्ध, मामूली हत्या और ग्रांड ड्यूक-जैसोंकी जान लेना, यह सब बराबर ही बुरा नहीं माना जायगा ? अपनी अिन शंकाओं और अपने हृदयमन्थनको अिसने खुद ही अपनी दो विलक्षण पुस्तकों ‘ दि पेल हॉर्स ’ (The Pale Horse) और ‘ दि टेल ऑफ वॉट वाज नॉट ’ (The Tale of What was

Not) में बिलकुल हूबहू बयान किया है । ग्रांड डयूककी हत्याके समय यह आदमी अिस मंथनमेंसे ही गुजर रहा था । बहुतसे रूसी क्रान्तिकारियोंकी तरह वह भी विनीत बनता जा रहा था। . . . . फिर तो अुसने अपनी सारी ताकत बोल्शेविक हलचलके खिलाफ लगा दी । यह आदमी अेक बार होरकी ट्रेनमें था । वही तिलमिलाहट, वही भावनाकी सूक्ष्मता, वही बुद्धिका चमत्कार और वही अेक विषयसे दूसरे विषयमें प्रवेश करनेका लगभग बिल्ली-जैसा चापल्य । बादमें किसी स्त्रीने अुसे धोखा दिया। वह रूस गया। वहाँ अुस पर मुकदमा चला । अुसने अपने पहलेके साथियोंको फँसाया और अपने सोवियट विरोधी होनेसे अिनकार किया । अन्तमें कैदखानेकी खिड़कीमेंसे कूदकर अुसने आत्महत्या कर ली । यह विचित्र कहानी अुसे खूब अच्छी तरह जाननेवालोंके भी माननेमें नहीं आती ।" अितनी बात कहकर होर फिर अेलिजाबेथकी बात पर आता है। "अुसने अपने सारे गहने — विवाहके मंगलसूत्र रूप अंगूठी तक — बेच डाले । अुसमेंसे तीसरा हिस्सा राज्यको दे दिया, तीसरा सगे-सम्बन्धियोंको दिया और तीसरा धर्म कार्यके लिअे — अस्पताल, दवाखाने, अनाथालय, पाठशालायें, क्षय रोगियोंके लिअे आरोग्यालय वगैराके लिअे — दिया। खुदने राजमहल छोड़ दिया । ब्रह्मचारिणियोंका अेक सेवाश्रम स्थापित किया और अुसमें रहने लगी । अुसकी संस्था असाधारण बनी । आम तौर पर अैसे आश्रमोंमें शामिल होनेवाले पाठपूजा, ध्यान, जप, तप, व्रत, अुपवास, वगैरामें ही मशगूल रहते हैं। अेलिजाबेथने अपने आश्रममें अिन बातोंके कड़े पालन पर जोर अवश्य दिया, मगर अुसके साथ समाजसेवाकी प्रवृत्तियों पर भी अुतना ही जोर दिया । आश्रममें सैकड़ों बहनें शरीक हुआीं । अुनमेंसे बीसेक बहनोंने तो आजीवन ब्रह्मचर्यकी दीक्षा ली । दूसरी आश्रमवास तककी दीक्षावाली बनीं । अिन आश्रमवासिनियोंमें राजकुमारियाँ थीं, पढ़े-लिखे परिवारोंकी स्त्रियाँ थीं और किसान वर्गमेंसे भी थीं । अेक जवान किसान स्त्री तो जापानकी लड़ाअीमें सिपाहीके भेषमें लड़ी थी और अुसे चाँद मिला था। अिस सेवाश्रमका काम खूब चला । अिसका काम अितना मशहूर हो गया था कि कअी जगहोंसे नर्सोंके लिअे अिस आश्रममें माँग आती थी । अिसके अस्पतालमें कठिनसे कठिन केस आते थे। अेलिजाबेथ श्रेष्ठ नर्स मानी जाती थी। अुसका अनाथालय विभाग सारे युरोपमें अुत्कृष्ट माना जाता था । अिसके खर्चेके लिअे दानकी बाढ़ आती रहती थी ।

जब यह बात जाहिर हुअी कि क्षयके असाध्य माने जानेवाले बिलकुल गरीब वर्गके रोगियोंके लिअे अेलिजाबेथने आश्रम कायम किया है और मरनेको पड़े हुअे बीमारोंको वह रोज देखने जाती है, तब अुसके अिस कामसे

मॉस्कोके समाजकी आत्मा भी जागी। अुसके अत्यन्त निकटके मित्रोंने मुझे कहा था कि अुसका सुन्दर चरित्र अुसके रात दिन चलनेवाले जप, तप और ध्यान-धारणा वगैरासे ज्यादा तेजस्वी बन गया था। दिनमें अनेक कामोंसे निपट कर रातका बड़ा भाग वह ध्यान और भजनमें व्यतीत करती थी। घड़ी दो घड़ी नींद लेती तो वह भी बिना गद्देके तख्ते पर। भोजनमें मांस वगैरा तो अुसने कितने ही समयसे छोड़ दिये थे। अुसने अपने जीवनमें भक्तियोग और कर्मयोगका अच्छा मेल साधा था।

लड़ाअीके दौरानमें अुसने अिस संस्थाकी प्रवृत्ति प्रसंगोचित सेवाकी तरफ मोड़ दी। जब यह मालूम हुआ कि घायलोंके लिअे मिलनेवाले दानमेंसे लोग रुपया खा जाते हैं, तो अुसने आग्रहपूर्वक हरेक दाताको रसीद भेजनेकी पद्धति डाल दी। यह तो अुसने अपने जापानकी लड़ाअीके समयके अनुभवका अुपयोग १९१४ में पूरी तरह किया। मगर अुसकी जिन्दगीकी कड़ी से कड़ी परीक्षा तो अभी होनी बाकी थी। हम देख चुके हैं कि वह जर्मन राजघरानेकी कुमारी थी। अिसलिअे १९१५में जर्मन विरोधी गुंडोंका ध्यान अुसकी संस्थाकी तरफ गया। वहाँ रूसके लिअे हर तरहका युद्धकार्य होता था। फिर भी उसकी संस्थाको शत्रु-प्रवृत्तियोंका केन्द्र मान लिया गया। अेक बार गुंडोंकी अेक भीड़ आश्रमको जलानेके लिअे चढ़ आयी। लेकिन मॉस्कोके मेयर वहाँ जा पहुँचे और गुँडोंको संस्था जलानेसे रोका। अुसकी बहन ज़ारकी रानी थी। अुसे यह हमेशा अच्छी सलाह देती थी। लेकिन वह रासपुटिनके पंजेमें फँसी हुअी थी। अिसकी सलाहका जितना चाहिये अुसने लाभ नहीं अुठाया। बादमें तो दोनों बहनोंका ज्यादा मिलना नहीं होता था।

१९१७ में जब विप्लव फूट पड़ा, तब मॉस्कोके गुंडोंको फिर नशा चढ़ आया। तोड़े हुअे जेलखानेसे छूटे हुअे कैदियों और दूसरे गुडोंने अिसे जर्मन जासूसके तौर पर पकड़नेके लिअे अिसकी संस्थाको घेर लिया। यह भली स्त्री बाहर आकर अुस भीड़के सामने खड़ी हो गयी और अुससे कहने लगी — "तुम्हें क्या चाहिये? जो चाहिये सो अन्दर आकर ले जाओ। यहाँ कोअी हथियार, गोलाबारूद या जासूस छिपाये हुअे नहीं हैं। हों तो ढूँढ़ लो और खुशीसे ले जाओ। मगर खबरदार, पाँच आदमियोंसे ज्यादा अन्दर न जायँ।"

भीड़ने जवाबमें नारा लगाया — "हमें कुछ नहीं सुनना है। हमें तो तुम्हें पकड़ना है। चलो हमारे साथ।"

अेलिजाबेथने शान्त चित्तसे अुत्तर दिया — "मैं आनेको तैयार हूँ। मगर अिस संस्थाकी मैं कुलमाता हूँ। अिसलिअे मुझे सारा कामकाज बाकायदा सुपूर्द कर देना चाहिये।"

अैसा कहकर अुसने सब बहनोंसे प्रार्थना-मन्दिरमें जमा होनेको कहा : अुस भीड़मेंसे पाँच आदमियोंको हथियार बाहर रखकर अन्दर आने दिया गया। अुन्हें वह अीसाके क्रॉसके पास ले गयी। वे मंत्रमुग्धकी तरह, जहाँ वह ले गयी, चले गये और अुसके साथ अुन्होंने क्रॉसके सामने पैर पड़े। फिर अिस महिलाने अुन्हें कहा — "अब जो चाहिये ढूँढ़ लो और ले जाओ।" अुन्होंने अिधर अुधर ढूँढ़-ढाँढ़ की और फिर बाहर निकलकर कहा — "अरे यह तो बेकारका अेक आश्रम है, आश्रम। यहाँ तो और कुछ भी नहीं।"

यह तूफ़ान तो आया और चला गया। रूसमें ज़ारके भाग जानेके बाद प्रजाने सत्ता हाथमें ले ली थी। मगर जिस पक्षके हाथमें सत्ता थी, अुससे प्रजाके दूसरे अुग्र दलको सन्तोष नहीं था। अिसलिअे पहले पक्षवाले, जिन्होंने कामचलाअू सरकार कायम की थी, अेलिज़ाबेथसे आकर कहने लगे — "प्रजा पागल बन गयी है और तुम्हें बचना हो तो आश्रम छोड़कर क्रेमलिनके राजमहलमें चलो। वहाँ तुम ज्यादा सुरक्षित रहोगी।"

मगर अेलिज़ाबेथने तो पक्के निश्चयके साथ अपना जीवन सेवामें अर्पण किया था। अिसलिअे अुसने आश्रमसे हिलनेसे अिनकार कर दिया। अुसने कहा — "मैंने राजमहल छोड़ा है, तो अैसे क्रांतिकारियोंके खिलाफ अुस महलका फिरसे आश्रय लेनेके लिअे नहीं। तुम मेरे आश्रमकी रक्षा नहीं कर सकते, तो अुसे अीश्वर पर छोड़ दो।"

अिस तरह दावानल सुलग चुका था, तो भी घायल सिपाहियोंकी सेवा करनेका, मरनेको पड़ी हुअी स्त्रियोंको आश्वासन देनेका, गरीबोंको राहत देनेका और बाकीके समयमें भजन-कीर्तनका अपना काम अुसने जारी ही रखा। दूसरी तरफ बोल्शेविक अुस कामचलाअू सरकारको भंग करनेकी कार्रवाअी कर रहे थे। अुस समय अिसने अेक मित्रको अेक पत्र लिखा। अुसमें बताया :

"अैसे समय ही अीश्वर-श्रद्धाकी सच्ची परीक्षा होती है। अैसी परीक्षामें भी शान्त और प्रसन्न रहनेवाला ही कह सकता है कि 'प्रभु, तेरी अिच्छा पूरी हो।' हमारे प्यारे रूसके आसपास विनाशके सिवा और कुछ दिखाअी नहीं देता। अितने पर भी मेरी श्रद्धा अचल है कि अैसी कसौटी पर कसनेवाला रुद्र अीश्वर और दयालु कृपानिधान अीश्वर अेक ही है। बड़े तूफानकी कल्पना कीजिये! क्या अुसमें भी भयंकरके साथ भव्य अंश नहीं होते? कुछ लोग रक्षाके लिअे भागदौड़ करते हैं, कुछ डरके मारे ही मर जाते हैं, जब कि कुछ लोग अिस बड़े तूफानमें भी अीश्वरकी महत्ताका दर्शन करते हैं। क्या आज हमारे आसपास अैसा ही तूफान नहीं मचा हुआ है? हम तो काम, सेवा और प्रार्थनामें डूबे रहते हैं। हमारी आशा अखंड है। रोजमर्रा होनेवाली अिन

तमाम घटनाओंमें हम तो भगवानकी दयाका ही दर्शन कर रहे हैं। क्या यही अेक चमत्कार नहीं है कि अैसे समयमें भी हम आशा रखकर जी रहे हैं?"

अन्तमें बोल्शेविकोंकी जीत हुअी, तो थोड़े ही दिन बाद लाल सेनाकी अिसके आश्रम पर चढ़ाअी हुअी। फौजके अफसरने हुक्म दिया कि शाही परिवारके साथ अिक्टेरिन्बर्गमें जमा होनेके लिअे चलो। अिसने आश्रमकी सब बहनोंसे मिल लेनेकी अिजाजत माँगी। मगर अिजाजत नहीं मिली। अेक और बहनके साथ अिसे ले जाकर ट्रेनमें बैठा दिया गया। रास्तेसे अिसने आश्रमकी बहनोंके नाम बिदाअीका पत्र लिखा। अिक्टेरिन्बर्गमें ज़ार और ज़ारीनाके साथ अिसे थोड़े दिन कैद रखा गया। वहाँसे वापस अुस बहनके साथ अिसे भी ले जाया गया। राजकुटुम्बके और सब लोगोंका अिसके यहाँ मिलाप हो गया। सब कैदी थे। खाने पीने और पहनने ओढ़नेकी तंगी थी। ये सब बेचारे मौतकी राह देख ही रहे थे। १७ जुलाअीको अिक्टेरिन्बर्गमें ज़ार ज़ारीनाकी हत्या हुअी। १८ जुलाअीको बोल्शेविक जल्लाद डचेस और राजकुमारोंके आसपास आ पहुँचे। सबकी आँखों पर पट्टियाँ बाँध दी गयीं। और पासमें लोहेकी कतरनका ढेर पड़ा था, अुसमें सबको डाल दिया गया। किसीने अुसमें सुरंग लगा दी और घड़ीभर में धड़ाका होते ही सब चूर चूर हो गये। अुस ढेर पर डाले जाते समय अेलिजाबेथने जो शब्द कहे थे, वे दूर खड़े अेक किसानको सुनाअी दे गये — 'भगवान अिन लोगोंको क्षमा करना। ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।'

आज सुबह घूमते घूमते अेक मुस्लिम नेताकी बात निकली। वल्लभभाअी बोले — "ये भी संकटके समय मुसलमान बन गये थे।

३०-३-'३२ मुसलमानोंके लिअे अलग सहायता कोश चाहते थे, अुसके लिअे अलग अपील कराना चाहते थे।" बापू कहने लगे — "अिसमें अिनका कसूर नहीं है। हम अैसे हालात पैदा करते हैं, तब ये क्या करें? हमने अिनके लिअे क्या रखा है? जैसे हम अछूतोंको समझते हैं, वैसे बहुत जगहों पर अिन्हें भी मानते हैं। अमतुलको मुझे देवलाली भेजना हो, तो अुसे . . . के पास भेज सकता हूँ? सच बात तो यह है कि हमें अिस भाटिया सेनेटोरियममें, जहाँ सब जाकर न रह सकते हों — जहाँ अमतुल न जा सके — जाना ही न चाहिये। यह बात तो तब मिटे, जब हिन्दू आगे बढ़कर कदम उठायें। आज तो दोनों कौमोंके बीच अन्तर बढ़ता जा रहा है। मगर वह अन्तर तभी घटेगा, जब हिन्दू जाग्रत हो जायँगे और अपने बाड़े तोड़ देंगे। अेक समय अैसा होगा जब अिन सब संकुचित बातोंकी जरूरत रही होगी। आज अिनकी जरूरत नहीं है।" वल्लभभाअी

बोले —“ मगर अिन लोगोंके रीत रिवाज दूसरे हैं। ये मांसाहारी, हम शाकाहारी, किस तरह मेल बैठे ? ” बापू — “ नहीं भाओ, गुजरातके सिवा और कहाँ हिन्दू शाकाहारी हैं ? पंजाब, युक्तप्रान्त और सिन्धमें तो सभी मांसाहारी कहे जा सकते हैं। . . . . आज तो सब कुछ आगमें तपाया जा रहा है। जो हो जाय सो ठीक। यह विश्वास रखना चाहिये कि अच्छा ही होगा।”

आज सिविल सर्जन बापूको देखने आया था। जैसे वह भी अुपकार करने आया हो, अिस ढंगसे बापूकी छाती पर नली रखकर बोला — “ मेरी छाती अितनी अच्छी हो, तो मैं फूला न समाअूँ।” बस, अितना कहकर आगे चल दिया। बापूने अपनी कलाओ और अँगुलीके दर्दकी बात ही न की। मेरा पैर देखा, मगर अुसके पास कोओ सुझाव नहीं था। अैसा लगा जैसे कोओ बेगार टालने आया हो। शायद ही कोओ सिविल सर्जन बापूके साथ बातचीत करनेका लालच छोड़कर अिस तरह चला जाता होगा। अिस आदमीका संयम कितना बड़ा है !

जॉन अेण्डर्सन सबके सर्टिफिकेट लेकर आया है। लास्कीके अिसके विषयके अुद्गार बापूको बताये। बापू कहने लगे — “ सच्चे होंगे। अगर यह आदमी अैसा होगा, तो बंगालको वशमें कर लेगा। सुभाष, सेनगुप्त वगैराको समझायेगा। और कांग्रेसकी अुपेक्षा करेगा। मुझे अैसा लगता है कि पंजाबमें भी अैसा ही होगा। मुझे अैसा नहीं दीखता कि सारे हिन्दुस्तानमें अेक ही साथ शान्ति स्थापित होगी। मेरी अैसी कल्पना है कि ये लोग अेक अेक प्रान्त ही शान्त करते जायेंगे।”

* * *

बरामदेमें सोनेके बजाय मुझे बापूने आजसे बाहर सोनेको मजबूर किया और मेरे लिअे मेजरसे खाट माँगी।

मेजर आज बहनोंके सम्बन्धमें कहता था — “ तीस चालीस बहनें आपको लिखना चाहती हैं, अुनका अब क्या हो ? अपना नाम लिख भेजें तो काम नहीं चलेगा ? ” बापू बोले — “ कहती हों तो मैं अुनसे कहूँगा कि दो चार लकीरोंसे सन्तोष करना, लम्बा न लिखना। तो कैसा हो ? वे दो चार लकीरें लिखकर जो सन्तोष मान लें, तो अुनसे अुन्हें क्यों वंचित रखते हैं ? वे तो बेचारी सब गरीब हैं।”

२१–३–’३२

आज ‘ लीडर ’ की ‘ लंदनकी चिट्ठी ’ अच्छी थी। आम तौर पर पोलक नरम शब्दोंमें ही लिखते हैं, मगर अिस बार हिन्दुस्तानकी घटनाओं पर अुन्होंने काफी गरम होकर लिखा है। बाको ‘ सी ’ क्लास मिला, बादमें ‘ अे ’ मिला और कराचीकी अेक ८० वर्षकी महिलाको पकड़ा गया, अिन बातों पर अुन्होंने

अच्छा लिखा है। 'बा' तो गांधीकी पत्नी थीं अिसलिअे अुन्हें 'सी'से बदलकर 'अे'में रख दिया, नहीं तो ६० वर्षकी दूसरी कोअी औरत होती तो 'सी' में ही रहती न? यह अुनकी दलील अच्छी है। मगर सबसे बढ़िया तो यह है। सेम्युअल होरके लिअे वे लिखते हैं कि हिन्दुस्तानमें जब यह सब कुछ हो रहा है, तब सेम्युअल 'स्केट' करता है! कारवाँ और अुस पर भोंकनेवाले कुत्तोंका अिसका रूपक अुलटा अिसी पर चाहे लागू न हो, मगर यह देखना कि कहीं यहाँका कारवाँ अितना आगे न बढ़ जाय कि फिर कुछ सुधारनेकी गुंजायश ही न रहे और सिर्फ कुत्ते ही भोंकते रह जायँ — यह कह कर अुन्होंने होरको 'सावधान' कहा है।

बापू बोले — "बस, यह तो फिरोजशाह मेहता जैसी बात हुअी। अुन्हें दक्षिण अफ्रीकाकी लड़ाअीकी कोअी परवाह नहीं थी, मगर जब बाको पकड़नेकी खबर सुनी, तो अुन्हें आग लग गयी और अुन्होंने टाअुन हालका प्रसिद्ध भाषण दिया। पोलकसे बा वाली बात बर्दाश्त नहीं हुअी, अिसलिअे यह लिखा है।"

वल्लभभाअी — "बा की बात अैसी है, जो किसीको भी चुभेगी। बा तो अहिंसाकी मूर्ति है। अैसी अहिंसाकी छाप मैंने और किसी स्त्रीके चेहरे पर नहीं देखी। अुनकी अपार नम्रता, अुनकी सरलता किसीको भी हैरतमें डालनेवाली है।"

बापू — "सही बात है, वल्लभभाअी। मगर मुझे बाका सबसे बड़ा गुण अुसकी हिम्मत और बहादुरी मालूम होती है। वह जिद करे, क्रोध करे, अीर्ष्या करे, मगर यह सब जाननेके बाद आखिर दक्षिण अफ्रीकासे आजतककी अुसकी कारगुजारी देखें, तो अुसकी बहादुरी बाकी रहती है।"

सुबह 'आत्मकथा' के संक्षिप्त संस्करणके प्रूफ देखते हुअे मैंने बापूसे पूछा — "आपने अपनी माताके अेकादशी, चातुर्मास, चान्द्रायण वगैरा कठिन व्रतोंका जिक्र किया, मगर आपने शब्द तो saintliness (पवित्रता) अिस्तेमाल किया है। यहाँ आप पवित्रताके बजाय तपश्चर्या नहीं कहना चाहते? अुस हालतमें austerity शब्द नहीं लिखा जायगा?"

बापू कहने लगे — "नहीं, मैंने पवित्रता जानबूझकर अिस्तेमाल किया है। तपश्चर्यामें तो बाहरी त्याग, सहनशीलता और आडम्बर भी हो सकता है। मगर पवित्रता तो भीतरी गुण है। मेरी माताके आन्तरिक जीवनकी परछाअीं अुसकी तपश्चर्यामें पड़ती थी। मुझमें जो कुछ भी पवित्रता देखते हो, वह मेरे पिताकी नहीं, किन्तु मेरी माँकी है। मेरी माँ चालीस वर्षकी अुम्रमें गुजर गयी थी, अिसलिअे मैंने अुसकी भरी जवानी देखी है। लेकिन मैंने अुसे कभी अुच्छृंखलता या टीपटाप या कुछ भी शौक या आडम्बर करनेवाली नहीं देखी। मुझ पर अुसकी पवित्रताकी ही छाप सदाके लिअे रह गयी है।"

बेकरीवालेने अेक बिल्ली पाली है। अिस बिल्लीको दो बच्चे हुअे हैं। वे अब बाहर निकलने लगे हैं। बापूके खुले और चिकने पैरोंके पास वह बिल्ली आकर बहुत बार चक्कर काटती थी। कल सवेरे बच्चेको लेकर आयी और बच्चा खेल करने लगा।

१-४-'३२

बिल्लीकी पूँछको चूहा मानकर दूरसे दौड़ता दौड़ता आवे, अुस पूँछको मुँहमें ले, काटे; बिल्ली पूँछको खींच ले, फिर छोड़ दे तो फिर वह बच्चा अिस पूँछको मुँहमें ले, नोचे, काटे और खेल करे। बापू रस्किन पढ़ रहे थे। अुसे छोड़कर कअी मिनट तक अिस खेलको देखते रहे।

आज कुरेशी और दो महाराष्ट्री भाअी केम्पसे मिलने आये थे। अिन लोगोंसे बातें करनेके कारण बापूके कातनेमें आज देर हो गयी और दोपहरका सोना रह गया। बहनोंका पत्र भी आज आया। सब आनन्दमें हैं और अुद्योगमें दिन बिताती हैं।

आज शामको घूमते समय किसी प्रसंगको लेकर आम्बेडकरकी बात निकली। बापू बोले — "मुझे तो विलायत गया तब तक पता नहीं था कि यह आम्बेडकर अछूत है। मैं तो मानता था कि यह कोअी ब्राह्मण होगा। अिसे अछूतोंके लिअे खूब लगी हुअी है और वह अतिशयोक्ति भरी बातें जोशमें आकर करता है।" वल्लभभाअीने कहा — "मुझे अितना तो मालूम था, क्योंकि वे ठक्करके साथ गुजरातमें घूमे थे, तब मेरे साथ जान पहचान हुअी थी।" बादमें ठक्करबापा और सर्वेंट्स आफ अिंडियाकी अछूतों सम्बन्धी वृत्तिकी बात निकली। बापू बोले — "आज इस प्रश्नने जो स्वरूप ग्रहण किया है, अुसके लिअे शुरूसे ही अिन लोगोंकी अिस विषयकी वृत्ति जिम्मेदार है। जब १९१५ में गोखले गुजर गये और मैं पूना सर्वेंट्स आफ अिंडिया सोसायटीके हॉलमें रहा था, तभी मैंने यह देख लिया था। वह प्रसंग मुझे अच्छी तरह याद है। मैंने देवधरसे अुनकी प्रवृत्तियोंका संक्षिप्त विवरण माँगा, जिससे मुझे पता चले कि मुझे क्या काम हाथमें लेना है। अिस विवरणमें अछूतोंके बारेमें यह था कि अुनके पास जाकर भाषण देना, अुन पर कैसे अन्याय होते हैं अिस बारेमें अुनमें जाग्रति करना वग़ैरा। मैंने देवधरसे कह दिया था कि 'मैंने माँगी रोटी और अुसके बदले पत्थर मिलता है। अिस ढंगसे अस्पृश्योंका काम कैसे हो सकता है? यह सेवा नहीं है। यह तो हमारा मुरब्बीपन है। अछूतोंका अुद्धार करनेवाले हम कौन? हमें तो अिन लोगोंके प्रति किये पापका प्रायश्चित्त करना है, कर्ज लौटाना है? यह काम अिन लोगोंको अपनानेसे होगा, अिनके सामने भाषण करनेसे नहीं होगा।' शास्त्री घबराये और बोले — 'मुझे यह अुम्मीद नहीं थी कि आप अिस तरह न्यायासन पर बैठ कर बात करेंगे।' हरिनारायण आपटे भी बहुत

चिढ़े । हरिनारायणको मैंने कहा — 'मालूम होता है आप लोग तो समाजमें विद्रोह करायेंगे।' वे बोले — 'हाँ, भले ही विद्रोह हो, मैं तो यही करूँगा।' अिस तरह बड़ी बहस हुअी थी । मैंने दूसरे दिन शास्त्री, देवधर, आपटे सबसे कह दिया — 'मुझे कल्पना नहीं थी कि मैं आपको दुःख दूँगा ।' मैंने माफ़ी माँगी और अिन लोगों पर अच्छा असर पड़ा । बादमें तो हम लोगोंकी बन गयी ।" वल्लभभाअी — "आपकी तो सभीके साथ बन जाती है । आपको क्या है ? बनियेकी मूँछ नीची !" बापू बोले — "देखो, अिसीलिअे मैं कटा डालता हूँ न ?"

२-४-'३२

मुझे रोटी बेलनेके लिअे बेलन चाहिये था । तीन चार बार आदमीने अिसके लिअे ढाबेसे माँग की । मगर नहीं आया तो वार्डर कहने लगा — "आज तो बोतलसे रोटी बेल लीजिये, कल तक बेलन आ जायगा ।" वल्लभभाअी बोले — "यहाँ अैसे लोग भी मौजूद हैं, जो बोतलसे रोटी बेलाते हैं ।" बापूने कहा — "मगर सचमुच, वल्लभभाअी, बोतलसे रोटी अच्छी बेली जा सकती है ।" बापू यह प्रयोग भी कर चुके थे। मैंने पूछा — "फिनिक्स आश्रममें आप गये, तबतक रसोअिया तो था न ?" बापूने कहा — "नहीं, अुससे पहले ही छुड़ा दिया था । अेक रसोअिया बहुत अच्छा था । वह ब्राह्मण था । अुसके जानेके बाद अेक जिद्दी आया । वह कहने लगा — 'भाअी साहब, आप मिर्च वगैरा अिस्तेमाल नहीं करने देंगे, तो काम नहीं चलेगा ।' अिस पर मैंने कह दिया — 'तो भले ही चले जाओ ।' तबसे रसोअियेके बिना काम चलाने लगा । खाना बनाना, कपड़े धोना, पाखाने साफ करना और पीसना, ये सब काम घरमें हाथसे ही कर लेते थे । पीसनेके लिअे ६ पौण्डकी कीमतवाली लोहेकी चक्की ली थी । अेक आदमीसे नहीं चल सकती थी, मगर दो मजेसे पीस सकते थे । सुबह सुबह अुठकर मेरा यही पहला काम था । जिसे चाहता अपने साथ पीसने बिठा लेता । यह चक्की खड़े खड़े पीसनेकी थी । हत्था घुमानेके लिअे भी दो आदमी लगते । पाव घण्टेमें हमारे सारे घरका आटा पिस जाता था । और जैसा चाहिये वैसा — मोटा या महीन ।"

बारडोलीमें लोगोंने सब रुपया जमा करा दिया, न जमा करानेके लिअे खेद प्रगट किया । कमिश्नरको फूल मालायें पहनाअीं और 'सरकारकी जय' बोली ! ! वल्लभभाअी कहने लगे — "अब हम सरकारको लिखें कि सरकारकी जय तो हो ही गयी है, अब हमें किस लिअे बंद करके रख छोड़ा है ।" बापू — "ठीक है । हमें मंजूर है !"

म्युरियल लिस्टरके पत्र विलायतकी पुरानी यादको हमेशा ताजा करते हैं। अुनके लिखनेमें अत्युक्ति न हो — और मालूम तो नहीं होती — तो यह कहा जा सकता है कि बापूके वहाँके निवासका असर साधारण लोगोंपर अच्छा रह गया है।

३–४–'३२

चीन-जापानकी लड़ाअी रोकनेके लिअे मिस मॉड रॉयडन और कोजियर सत्याग्रह-सेना तैयार कर रहे थे। म्युरियल खबर देती है कि अुसमें ६०० स्त्री-पुरुषोंने नाम लिखाये हैं। यह खबर महत्वपूर्ण कही जा सकती है। अिसे भी मैं तो बापूके अहिंसा-प्रचारका परिणाम मानता हूँ। अिस समाचारका स्वागत करते हुअे बापूने यह आलोचना की — "यहाँ भी हम शस्त्रोंसे लड़ने लगें, तो ये छह सौ आदमी अुस लड़ाअीको बन्द कराने आ जायँगे! अिन लोगोंको बलके सिवा और कोअी चीज अपील नहीं करती।"

बापूने अिस बार बहुत पत्र लिखे और लिखवाये। सुबह सुरेन्द्रके नाम अेक पत्र लिखा। और अुसे सुपरिण्टेण्डेण्टके जरिये भिजवाया। "ब्रह्मचर्यके बारेमें तुमने लिखा था, सो मुझे मिल गया था। मिलेंगे तब जरूर चर्चा करेंगे। जो विचार मैंने अिमाम साहबके यहाँ बताये थे, वे दृढ़ हुअे हैं और होते जा रहे हैं। यानी अनुभव अुनकी सचाअी साबित कर रहा है। तीनों कालमें और सब हालतोंमें टिका रहे वही ब्रह्मचर्य है। यह स्थिति बहुत मुश्किल है, मगर अिसमें आश्चर्यकी बात कोअी नहीं। हमारा जन्म विषयसे हुआ है। जो विषयसे पैदा हुआ है, वह शरीर हमें बहुत अच्छा लगता है। वंशपरंपरासे मिले हुअे अिस विषयी अुत्तराधिकारको निर्विषयी बनाना कठिन ही है। फिर भी वह अमूल्य आत्माका निवासस्थान है। आत्माका प्रत्यक्ष हो तब ब्रह्मचर्य स्वाभाविक हो सकता है। और वह ब्रह्मचर्य साक्षात् रंभा स्वर्गसे अुतर आये और स्पर्श करे, तो भी अखंडित रहता है। सबकी माता रंभाके समान हो सकती है। रंभा माताका खयाल करनेसे भी विकार शान्त होते हैं। अिसी तरह स्त्री मात्रका खयाल करनेसे विकार शान्त होने चाहियें। मगर कितना विस्तार करूँ? अिसी पर बार बार विचार करके फलितार्थ निकालना।

४–४–'३२

"कुर्सी लगानेसे कोअी पिघल जाय, तो तुम अुसे अहिंसाका परिणाम समझो यह ठीक नहीं। मगर यह विषय महत्वका नहीं है। जैसे जैसे श्रद्धा बढ़ेगी, वैसे वैसे बुद्धि भी बढ़ेगी। गीता तो यह सिखाती जान पड़ती है कि बुद्धियोग अीश्वर कराता है। श्रद्धा बढ़ाना हमारा कर्तव्य है। यहाँ यह समझनेकी बात जरूर है कि श्रद्धा और बुद्धिका अर्थ क्या है। यह समझ भी व्याख्यासे नहीं आती, सच्ची नम्रता सीखनेसे आती है। जो यह मानता है कि वह

जानता है, वह कुछ नहीं जानता। जो यह मानता है कि वह कुछ नहीं जानता, अुसे यथासमय ज्ञान हो जाता है। भरे हुअे घड़ेमें गंगाजल डालनेकी सामर्थ्य अीश्वरमें भी नहीं है। अिसलिअे हमें अीश्वरके पास रोज खाली हाथ ही खड़े होना है। हमारा अपरिग्रह भी यही बताता है। अब बस! मुझे लिखना हो तब लिखो। कागज दे देंगे।"

आज बावन पत्र आश्रमको और अुनके सिवा सात-आठ और लिखे। सेम्युअल होरकी पुस्तक 'दि फोर्थ मील'मेंसे ग्रांड डचेस अेलिजाबेथका चित्र मैंने आश्रमके लिअे भेजा। फुटकर खतोंमें कुछ मजेदार खत थे। अेक आदमीने पूछा — "सच बोलनेसे किसीके प्राण जाते हों और झूठ बोलनेसे न जाते हों, तो सच बोलना चाहिये या झूठ?" बापूने अुसे लिखा — "सत्य जहाँ प्रस्तुत हो, वहाँ कोअी भी कुर्बानी करके अुसे कहना चाहिये।" अेक अमरीकीने लिखा कि अगर आप अिस शर्त पर छूटना चाहते हों कि आप अीसाके सिद्धान्तोंका ही प्रचार करनेमें समय लगायेंगे, तो आपको ब्रिटिश सरकारसे तुरत छुड़ा दूँ। अिसे भी बापूने अुत्तर देनेका कष्ट अुठाया :

"I thank you for your letter. My answer to your first question is that I would not like anybody to get me out, and certainly not on any condition. I cannot give up, for any consideration whatsoever, what I regard as my life's mission."

"आपके पत्रके लिअे आभारी हूँ। आपके पहले सवालके जवाबमें मेरा कहना है कि मुझे यह पसन्द नहीं है कि कोअी मुझे छुड़वाये। फिर कोअी शर्त मानकर तो मैं छूटना चाहता ही नहीं। जिसे मैंने अपने जीवनका अेक धर्म कार्य माना है, अुसे किसी भी पुरस्कारके लोभसे नहीं छोड़ सकता।"

अेक अमरीकीका अच्छा खत आया था। वह पहले नास्तिक था, बादमें तीन वर्ष जेलमें रहा — धर्मको खातिर विरोध करनेवालेके रूपमें — और आस्तिक बन गया। फिर अुसने क्रिश्चियन सायन्सके बारेमें पढ़ा। अुससे अुसकी श्रद्धा जागी। वैसे अिस पंथवाले गांधीजीकी हलचलके बारेमें चुप रहते हैं। अपने अखबारमें ब्रिटिश साम्राज्यवादका ही समर्थन करते हैं। क्रिश्चियन सायन्सके बारेमें अुसने बापूकी राय पूछी। बापूने अुसे लिखा :

"I have met many Christian Science friends. Some of these have sent me Mrs. Eddy's works. I was never able to read them through. I did however glance through them. They did not produce the impression the friends who sent them to me had expected. I have learnt from childhood and experience has confirmed the soundness of the teaching

that spiritual gifts should not be used for the purpose of healing bodily ailments. I do however believe in abstention from use of drugs and the like. But this is purely on physical, hygienic grounds. I do also believe in utter reliance upon God, but then not in the hope that He will heal me, but in order to submit entirely to His will, and to share the fate of millions who even though they wished to, can have no scientific medical help. I am sorry to say, however, that I am not always able to carry out my belief into practice. It is my constant endeavour to do so. But I find it very difficult, being in the midst of temptation, to enforce my belief in full."

"मुझे कअी अीसाअी सायंसवाले मित्र मिले हैं। अुनमेंसे कुछने श्रीमती अेडीकी पुस्तकें मेरे पढ़नेके लिअे भेजी हैं। अिन सबको मैं पढ़ तो नहीं सका, मगर अूपर अूपरसे नज़र डाल गया हूँ। अिन मित्रोंने जैसी आशा रखी होगी, वह असर तो अिन पुस्तकोंने मुझ पर नहीं डाला। मैं बचपनसे ही यह सीखा हूँ और अनुभवसे अिस शिक्षाकी सचाअीका मुझे विश्वास हुआ है कि आध्यात्मिक शक्तियोंका या सिद्धियोंका अुपयोग शारीरिक रोग मिटानेके लिअे नहीं करना चाहिये। वैसे मैं यह भी मानता हूँ कि दवाओं वगैरासे भी अिन्सानको परहेज रखना चाहिये। मगर यह बात सिर्फ आरोग्य रक्षाकी शारीरिक दृष्टिसे ही है। और फिर मैं भगवान पर पूरी तरह निर्भर रहनेमें विश्वास करता हूँ। अिस आशासे नहीं कि वह मुझे अच्छा करे, बल्कि अुसकी अिच्छाके अधीन होने और गरीबोंके दुःखमें भागीदार बननेके लिअे ही — अुन गरीबोंके दुःखमें जिन्हें खूब अिच्छा होने पर भी शास्त्रीय डॉक्टरी मदद नहीं मिल सकती। मगर मुझे अफसोसके साथ कहना चाहिये कि मैं अपने अिस विश्वास पर सदा अमल नहीं कर पाता। बेशक मेरा प्रयत्न हमेशा अिसी तरफ रहता है, मगर अनेक लालचोंके मारे मैं पूरी तरह अुस पर अमल नहीं कर सकता।"

अिस बारके पत्रोंमें बहनोंको सम्बोधन करके जो पत्र लिखा था, वह बड़े महत्वका था। वह तो सारा ही अुद्धृत करने लायक है। अुसमें भी सबसे बढ़िया हिस्सा यह है: "अेक बहुत ही बड़ा दोष मैंने बहनोंमें यह देखा है कि वे अपने विचार सारी दुनियासे छिपाती हैं। अिससे अुनमें दंभ आ जाता है। और दंभ अुन्हींमें आ सकता है, जिनमें असत्य घर कर बैठता है। दंभ-जैसी ज़हरीली चीज अिस जगतमें मैं दूसरी कोअी नहीं जानता। और जब हिन्दुस्तानकी मध्यम वर्गकी स्त्रीमें, जो सदा ही दबी हुअी रहती है, दंभ

आ जाता है, तब तो वह कनखजूरेकी तरह अुसे कुतर कुतर कर खा जाता है। वह पग पग पर वही करती है जो अुसे नापसन्द है, और अैसा मानती है कि अुसे करना पड़ता है। वह जरा समझ ले तो मालूम हो जाय कि अिस संसारमें किसीसे दबनेका अुसके लिअे कारण नहीं है। वह जैसी है वैसी सारी दुनियाके सामने हिम्मतके साथ खड़ी रहनेको तैयार हो जाय और यह पहला सबक सीख ले, तो दूसरे कारण जो मैंने बताये हैं अुनसे भी निबट सकती है।"

प्रेमा बहनने लिखा था — "आज कल तो आश्रममें सब कसरतके पीछे पड़े हुअे हैं। यह तो आपका वारसा है न कि जो शुरू किया अुसके पीछे पड़ जायँ?" अिसका जवाब बापूने विस्तारसे दिया — "तुम आश्रमको जो प्रमाणपत्र देती हो वह मैं नहीं दूँगा। सही हो तो यह प्रमाणपत्र जरूर अच्छा लगेगा। यह छाप तुम पर भले ही पड़ी हो कि आश्रम जिस कामको हाथमें ले लेता है, अुसके पीछे पागल हो जाता है। मगर वह सही नहीं है। हम अभी तक आश्रमके व्रतों पर ही कहाँ पूरी तरह चल पाते हैं? आश्रममें हमें हिन्दी, अुर्दू, तामिल, तेलगू और संस्कृत सीखनी थी। अिसका बहुत ही शिथिल प्रयत्न हुआ है। चमड़ेकी कलाको हमने कहाँ सीखा है? बारीकसे बारीक सूत हम कहाँ निकालते हैं? अैसी बहुतसी बातें बता सकता हूँ। मेरी शंकाकी पुष्टिके लिअे अितना काफी है। लाठी वगैराके पीछे सब पड़ सकते हैं। यह कहना तो अैसा हुआ जैसे मिठाअीके पीछे सब पड़ते हैं। दुनियामें अैसी चीजें जरूर हैं, जिनके पीछे पड़नेमें परिश्रम नहीं है। हम पशु परिवारके भी तो हैं, अिसलिअे हममें यह गुण स्वाभाविक है। वह सीखना नहीं पड़ता। प्रश्न यह है कि वह सीखना चाहिये या नहीं। पशु जातिके सब गुण त्याज्य हों, सो बात भी नहीं।"

अिस सुझाव पर कि आपने जैसी टीका गीता पर लिखी वैसी अुपनिषदों पर भी लिखिये, अिसी पत्रमें लिखा — "अुपनिषद् मुझे पसन्द हैं। अुनका अर्थ लिखने जितनी मैं अपनी योग्यता नहीं मानता।"

और कुछ मामूली बातें भी थीं — "जो प्रेमीजनोंसे अपने दोष पूछे, परिणाममें अुसे तारीफ़ सुननी पड़ती है, क्योंकि प्रेम दोष पर पर्दा डाल देता है या दोषको गुणके रूपमें देखता है। प्रसंगोपात्त दोष बताये, यह प्रेमका स्वभाव है, और वह संपूर्णता देखनेकी खातिर होता है। तुम्हें . . . के सामने 'हिस्टेरिकल' बताया था। क्या किसनने बताया कि अुसमें भी तुम्हारी प्रशंसा ही थी? कारण यह सम्बन्ध अैसा था कि अगर हिस्टेरिकल न मानूँ, तो तुम ज्यादा दोषी ठहरो। तुम हिस्टेरिकल तो जरूर हो। तुम जो पागल-सी हो जाती हो, अुसका अर्थ क्या है? जो अुमड़ पड़े वह हिस्टेरिकल है।"

हरिलालभाओीने शराब पीकर किस तरह फसाद किया, अिसका वर्णन करनेवाला मनुका हृदयभेदक पत्र आया था। साथ ही अुसकी मौसीके पत्रमें यह समाचार लिखा था कि मनुका रोना बन्द ही नहीं होता। अिसलिअे बापू और मैं अिस बेचारी लड़कीकी करुण दशाकी कल्पना कर सके। बापूने उसे वात्सल्य प्रेमसे छलकता हुआ पत्र लिखा — "चि० मनुड़ी, तेरा पत्र मिला। अुसे मैं दो बार पूरा पढ़ गया। तुझे घबरानेकी जरूरत नहीं है। हरिलालकी दुर्दशा तूने आँखों देख ली, यह बहुत अच्छा हुआ। मुझे तो सब हाल मालूम ही था। अितने पर भी हमें किसीके बारेमें आशा नहीं छोड़नी चाहिये। ओीश्वर क्या नहीं कर सकता? हरिलालमें कुछ भी पुण्य बाकी होगा, तो वह अुग आयेगा। हम अुसकी लल्लो-चप्पो न करें। हम झूठी दया न करें और अधिकाधिक पवित्र होते चले जायँ, तो अुसका असर हरिलाल पर भी जरूर होगा। तुझे कठोर हृदय बनाना है। हरिलालको लिख देना चाहिये कि जब तक शराब न छोड़े, तब तक यह समझ ले कि तू है ही नहीं। हम सब यह रास्ता अख्तियार कर लें, तो हरिलाल सँभल जाय। शराबीको जब बहुत आघात पहुँचता है, तब वह अक्सर अपनी कुटेव छोड़ देता है।

"शादीके बारेमें तूने जो जवाब दिया है, वह मुझे पसंद आया। अिस निश्चय पर कायम रहेगी तो तेरा भला ही होगा। तू ठेठ बचपनमें तो अितनी बीमार थी कि तेरे बचनेकी आशा ही नहीं थी। अुस समयकी बा की भारी सेवा और डॉक्टरके अिलाजसे तू बच गयी। लेकिन यह कहा जा सकता है कि अिस बीमारीके कारण तू पाँच साल तक तो बिलकुल बढ़ी ही नहीं। अब भी कमजोर तो है ही। बलिने तेरी सँभाल रखी है। वह न रखे तो तू जरूर बीमार पड़े। अिसलिअे मैं तो तेरी अुम्रमेंसे कमसे कम पाँच साल हमेशा घटा देता हूँ। हमने तो स्त्रियोंके विवाहका समय जल्दीसे जल्दी २१ वर्षका माना है। अिसलिअे तूने जो अुम्र गिनी है, वह ठीक है। २५वाँ वर्ष मैं मुश्किलसे शादीके लायक मानता हूँ। मगर मुझे तुझे बाँध नहीं लेना है। यह अितना ही बतानेको लिखा है कि आज जो तेरे विचार हैं वे ठीक हैं। रामीने पहले शादी करनेका आग्रह किया, तो मैंने अुसमें रुकावट नहीं डाली। हाँ, अितनीसी अुम्रमें अुसका विवाह करना मुझे जरा भी पसन्द नहीं आया। तेरे लिअे तो जल्दी शादी न करनेके बहुतसे कारण हैं। ओीश्वर तेरा निश्चय कायम रखे। अभी तो खूब पढ़। शरीर मजबूत बना और गीताजी जो धर्म सिखाती हैं, अुसे समझ और अुसीके अनुसार आचरण कर।"

मैं पास नहीं था अिसलिअे आजके पत्रोंकी सूची वल्लभभाओीसे बनवाओी। कागजके टुकड़ेमेंसे आधा खाली रह गया, अुसे वल्लभभाओीने काट लिया और

बापूकी तरफ देखकर कहा — "अिसे क्यों न बचाया जाय ?" बापू कहने लगे — मेरा लोभ सीख लो तो अच्छा ही है !"

अिस वाक्यमें मीठा कटाक्ष था, यह वल्लभभाअी क्यों जानने लगे ? अिसका सम्बन्ध आज शामको अेक वाक्यमें मुझे जो कुछ कह दिया था, अुससे था — "महादेव, यह वल्लभभाअीके लिअे नहीं है। तुमको ही सूचना कर देता हूँ कि यहाँ बाहरसे जो चीजें आ रही हैं, अुन पर अंकुश रखना। मैं देख रहा हूँ कि धीरे धीरे मामला बढ़ता ही जा रहा है। मेरे मनसे यह खयाल नहीं हटता कि यह रुपया हमारा जा रहा है। जो कुछ वल्लभभाअीकी तन्दुरुस्तीके लिअे जरूरी हो, वह अवश्य मँगाया जाय। परन्तु मर्यादा समझ लेनी चाहिये।"

५–४–'३२

कल सत्याग्रह सप्ताह शुरू होता है। अिसलिअे पिंजाअी शुरू करना है। बापूसे पूछ रहा था कि "पींजनकी ताँत कैसी है ? आपसे कितनी बार टूटी थी ?" बापू बोले — "जतन करना आता हो तो कुछ भी न टूटे। शकरलालने मेरे पाससे ली कि टूटी। काकाने मुझसे ली कि टूटी। लेकिन मेरी तो कअी दिन चलती रहती। यह तो जतनका काम है। देखो तो यह लंगोट पहनता हूँ। अुसे सँभाल सँभालकर पहना करता हूँ। और किसीके पास होती तो कभी की फट जाती।" वल्लभभाअी बोले — "यह तो अैसा लगता है जैसे पहनते ही न हों और खूंटी पर ही सँभालकर रख छोड़ी हो।" बापू कहने लगे — अैसा ही है।"

यह कहा जा सकता है कि "जतन करना आता हो तो" अिन शब्दोंमें बापूका सारा जीवन आ जाता है। "दास कबीर जतन कर ओढ़ी, ज्योंकी त्यों धर दीन्हीं चदरिया", बापूको देखकर ये शब्द अक्सर याद आते हैं। ३०–३५ वर्षसे शरीरकी और मनकी शुद्धिका जैसे अिन्होंने जाग्रत जतन किया है, वैसा किसने किया होगा ?

६–४–'३२

आज सरदारका वजन १३६॥ पौंड — यानी जितना था अुतना ही रहा। मेरा अेक पौंड कम यानी १४८ और बापूका २॥ पौंड कम हुआ यानी १०३॥ रह गया। बापूका वजन अितना घट जानेका कारण बापूने यह दिया कि आज अुपवास होनेके कारण पानी, शहद, रोटी, और बादाम नहीं लिये और अिनका अुतना वजन बाकी निकालना चाहिये। मेजरने भी हाँ भरी।

आश्रमकी डाक अिस बार काफी बड़ी थी। बच्चोंके पत्रोंमें अुनके अुगते-खिलते मनोंके सुन्दर चित्रण आते हैं।

दिल्लीमें कांग्रेसका अधिवेशन करनेके बारेमें सरदार चिन्तित हैं। सरदारने कहा — "नाहक लोगोंके मन डोलेंगे। अधिवेशन होगा तब लोग बहुतसे करनेके काम छोड़ बैठेंगे। ढीले आदमी कुछ न कुछ तर्कवितर्क करने लग जायँगे और यह प्रचार करेंगे कि मालवीयजी कांग्रेसका अधिवेशन कर रहे हैं, अिसलिअे अुसमें कुछ न कुछ होगा। कुछ लोग व्यर्थ दिल्ली जाने तक सब बातें मुलतवी रखेंगे। अिसमें मुझे लाभ नहीं, हानि दिखाअी देती है।" बापूने कहा — "नुकसान तो हरगिज नहीं है। यह विचार सुन्दर है कि जो कांग्रेस ४७ वर्षसे कभी नहीं रुकी, अुसे बन्द नहीं होने देना चाहिये, कांग्रेस होनी ही चाहिये। अिस कल्पनामें ही कुछ न कुछ है। वैसे अुसमें कुछ होना जाना नहीं है। अुसे करनेमें कुछ लोग पकड़े जायँगे। मालवीयजीका पकड़ा जाना अच्छी बात है।" वल्लभभाअी — "मगर मालवीयजी हैं, वे २४ अप्रेलको बदलकर अेक महीना आगे भी बढ़ा दें। वैसे वे पकड़े जायँ, तो बेशक अच्छा है।"

खेड़ा तरफ़के पत्रोंसे मालूम होता है कि देहात अिस बार भी काफी कष्ट अुठा रहे हैं, खूब सहन कर रहे हैं। बारडोलीको हमेशा गरमी चाहिये। बोरसदने यह बता दिया है कि वह किसीकी गरमीके बिना भी जूझ सकता है।

७-४-'३२

बापूको दूध छोड़े दो महीने हो गये। अैसा कहते हैं कि तबीयत अच्छी है। मगर यह भी बताते हैं कि थकावट मालूम होती है। हाँ, दूधके बजाय बादाम माफिक आये यह जरूर कहा जा सकता है। आज तीन सेर बादाम यहाँकी बेकरीकी भट्टीमें भूंज डाले। छिलके तो नहीं अुतरे। बापूकी धारणाके अनुसार अफ्रीकामें मूंगफली अिसी तरह भट्टीमें अच्छी भुनती थी और छिलके अुतर जाते थे। खैर, छिलके न निकले और पीसनेमें कुछ ज्यादा समय लग गया। फिर भी मक्खन जैसे चिकने तो नहीं हुअे। हाँ, सिके बहुत अच्छे। आज बापूने आश्रमके बारेमें लिखाया अुसमें बताया है कि — "खुराकके प्रयोग करना मैंने पश्चिममें सीखा।" कल वल्लभभाअी हँसते हँसते कहने लगे — "मगर प्रयोग क्या मरते दम तक करते रहें?" बापू बोले — "हाँ, मेरे प्रयोग तो जारी ही रहेंगे।"

आज कैम्प जेलसे बहनोंका पत्र आया। अुसमें गंगाबहन, ताराबहन, तारादेवी, ज्योत्स्ना शुक्ल, अमीना, चंचलबहन, वसुमति और तीन महाराष्ट्री

बहनोंके पत्र थे। सारे पत्र बहनोंके अुमड़ते हुअे प्रेमके नमूने थे। कर्णाटककी मनोरमा बहनका पत्र तो हृदयविदारक ही था — "हमारी कर्णाटकी बहनोंमेंसे कुछने तो आपके दर्शन कभी किये ही नहीं। अिनकी श्रद्धा अपार है। यह नहीं कहा जा सकता कि ये छूट कर भी कभी दर्शन कर सकेंगी या नहीं, क्योंकि ये लोग दूर गाँवोंमें रहनेवाली हैं। अिसलिअे आप हमें यहीं आकर दर्शन दे जायँ तो कैसा अच्छा हो?' अेक बहन लिखती हैं — 'कभी आपके साथ पत्रव्यवहार नहीं हुआ। और वह पत्रव्यवहार जेलमें करनेका अवसर आये तो यह सौभाग्य ही है न!' प्यारेलालकी बूढ़ी माँ तारादेवी भी लिखती हैं कि आनन्दमें हूँ। और कहती हैं कि तुलसीकृत रामायण भिजवा दें। और अमीना कहती है कि मुझे कुछ भी चिन्ता नहीं है। बच्चोंको भगवान सँभालेंगे। बहनोंके खत पढ़कर अैसा लगा मानो सेर भर खून बढ़ गया हो। अिस बारेमें मुझे शक नहीं मालूम होता कि भविष्यमें ये बहनें देशके तंत्रकी लगाम हाथमें लेंगी। निर्भयताकी तालीम पाअी हुअी बहनोंकी सन्तानें अिस देशकी अेक कीमती तरुण सेना बन जायगी।

आज सीरियासे अूनकी बनी हुअी अेक सुन्दर शतरंजी आयी। अिसमें गहरे लाल, केसरिया और खाखी भूरे रंगके पट्टे हैं और सुन्दर काली अूनके बेलबूटे हैं। अिस के साथ आया हुआ पत्र सारा ही अुद्धृत करने लायक है:

British consulate,
Aleppo Syria,
Sunday Jan. 17. After Eng. service.

Dear Mr. Gandhi,

The day has come, when being in prison, I feel that you will be free to accept one of our Armenian National Coloured "Killims", spun and woven by the refugees. I am come to live and work amongst them in view of my country's debt towards these war victims who have passed through such horrors of death, and also because I find that they are the "child" - nation "set in the midst of those at strife." The colours are red — sacrifice; sky-blue — hope; gold — the light.

Yours with deepest gratitude for the message you are bringing to our world,

Moto Edith Roberto

ब्रिटिश दूतावास, अलेप्पो, सीरिया
रविवार ता. १७ जनवरी

प्रिय गांधीजी,

अभी आप जेलमें हैं। मैं मानती हूँ कि वहाँ आपको अेक शतरंजी स्वीकार करनेकी छूट होगी। यह यहाँके निराधार शरणार्थियों द्वारा खुद कात-बुन कर तैयार की हुअी और आर्मिनियाके राष्ट्रीय रंगोंकी है। युद्धके शिकार हुअे और मृत्युकी यातनाओंमेंसे गुजरे हुअे लोगोंके प्रति अपने देशका ऋण चुकानेके लिअे मैं यहाँ आयी हुअी हूँ और अिन शरणार्थियोंके बीचमें रहती हूँ। यह जाति अभी बाल्यावस्थामें है और अेक दूसरेसे लड़नेवाले बड़े राष्ट्रोंकी भिच्चीमें आ गयी है। यह भी अिनकी मदद करनेका अेक कारण है। रंग अिस प्रकार हैं: लाल — त्यागकी निशानीके तौर पर, बादली — आशाके प्रतीकके रूपमें और सुनहरी — प्रकाशके चिह्नस्वरूप।

दुनियाको आप जो सन्देश दे रहे हैं अुसके लिअे बहुत आभारकी भावना रखनेवाली,

आपकी
मोटो अेडिथ रॉबरटो

नानाभाअीका पत्र आया। अुसमें दक्षिणामूर्तिकी आर्थिक स्थितिके बारेमें चिन्ता दिखाई गयी थी। और गिजुभाअीके बच्चेको क्षयके कारण पंचगनी रखनेकी बात थी।

क्षयके बारेमें बताते हुअे लिखा — "क्षयसे क्षयका डर ज्यादा दुःख देता है। जिसके बारेमें क्षयकी बात होती है वह खुद अपनी बीमारीका ही खयाल करता रहता है और जहाँ तहाँ क्षयसे होनेवाला दर्द देखा करता है। मनसे यह भूत निकाल भगाया जा सके, तो बीमार झट अच्छा हो जाता है।"

दक्षिणामूर्तिकी माली परेशानीके बारेमें लिखा :

"धनका सवाल तुम्हें क्यों बाधा देता है? यह चीज तो तुम मुझसे सीख ही लो, क्योंकि अिस मामलेमें मैं विशेषज्ञ माना जा सकता हूँ। 'महात्मा' बननेसे पहले ही मैं जो बात सीख चुका था वह यह है — अुधार रुपया लेकर व्यापार करना जैसे गलत अर्थशास्त्र है, वैसे ही अुधार रुपयेसे सार्वजनिक संस्था चलाना गलत धर्मशास्त्र है। और जिस संस्थामें अच्छेसे अच्छे आदमियोंको भीख माँगने के लिअे भटकना पड़े, अुसका नाम अुधार व्यापार ही है। तुमने संख्याका हिसाब रखा है, अुसके बजाय यह हिसाब क्यों नहीं रखते कि जितना रुपया आये अुसीके अनुसार विद्यार्थी लिये जायँ? मैं जो कुछ लिख रहा हूँ अुस पर अमल करना बहुत ही आसान है। सिर्फ संकल्पकी आवश्यकता है।

हर सालका आँकड़ा तय कर लिया जाय। अुसके मुताबिक घर बैठे रुपया आये तो संस्था चलाअी जाय। न आये तो बन्द कर दी जाय। तुम्हारी संस्था तो बहुत पुरानी कही जायगी। अुसका पिछला अितिहास अुज्ज्वल है। अच्छे शिक्षक हैं। अितना होने पर भी लोगोंमें श्रद्धा पैदा क्यों न हो? अपना सारा साहस अीश्वरके अर्पण करके अुसके नाम पर संकल्प करो। अुसकी मरजी होगी तो वह संस्था चलायेगा। 'हरिने भजतां हजी कोअीनी लाज जतां नथी जाणी रे।' यह भजन आज शामकी प्रार्थनामें गाया था। अेक लड़कीको लिखे हुअे मेरे पत्रसे अुसकी याद आयी। तुम लिखते हो कि वल्लभभाअी होते या मैं होता तो यह परेशानी तुम्हे न सताती। परेशानी है कहाँ? और है तो अुसे मिटानेवाले हम कौन? अंधा अंधेको क्या रास्ता बताये? लेकिन परेशानी मानते हो तो वह भी अुसीकी गोदमें डाल दो। अिन सब बातोंको पाण्डित्य समझ कर फेंक न देना। परन्तु अिन पर अमल करना।"

अेक ओवरसियर पूछते हैं कि क्या आप परमधाम पहुँच गये हैं और अीश्वरके दर्शन कर चुके हैं? अुसे भी बापूने जवाब दिया :

"I have your letter. I am unable to say that I have reached my destination. I fear I have much distance to cover . . ."

"आपका पत्र मिला। मैं यह नहीं कह सकता कि अपने लक्ष्य तक पहुँच गया हूँ। अभी मुझे बहुत फासला तय करना है. . . .।"

'अुषा' मासिकमें . . . .वैद्यका चावल पर अेक लेख था। वल्लभभाअीने ध्यानसे पढ़ लिया और बापूसे कहने लगे — "देखिये आप हमारे चावल खानेके बारेमें नुकताचीनी करते हैं, मगर चावलमें तो अितने तत्व हैं। अितने ज्यादा गुण हैं।" बापू हँसे और बोले — "हाँ, भाअी हाँ।" फिर मैंने अेकके बाद अेक अुसके गुण पढ़कर सुनाने शुरू किये। बापू हर अेकका खण्डन करते जाते थे। "चावलका प्रोटीन और किसी भी प्रोटीनसे बढ़िया है।" बापूने कहा — "मगर अुसमें प्रोटीन है ही कितना? बहुत ही कम है, क्या अिसलिअे अुत्कृष्ट हो गया?" Herald of Health (आरोग्यका छड़ीदार)मेंसे वैद्यने यह मुद्दा लिया है, अिसलिअे बापूको हँसी आ गयी : "बेचारा ठिंगने कदका भातखाअू जापानी प्रशान्त महासागरमें नाव चलाता हो, पनामाके जलडमरुमध्यकी नहर खोदता हो, मंचूरियाकी बर्फमें रूसके साथ लड़ता हो या अपनी जमीनमें हल चलाता हो, तो वह आलू और मांस खानेवाले अंग्रेज या अमरीकीसे किसी भी तरह घटिया साबित होनेवाला नहीं है।" बापूने कहा : "वैद्य अैसी झूठी बातें करें, तो कैसे काम चल सकता है! यह कितना

गलत है ? कौन जापानी सिर्फ चावल पर रहता है ? चावल तो अुनका गौण भोजन है। वे मांस-मच्छी अच्छी तरह खाते हैं। जैसे हममें बंगाली, मलबारी और त्रावणकोरी चावल और मछली खाते हैं वैसे ही। ये लोग चावल पर जीनेवाले थोड़े ही कहे जा सकते हैं ? चावल पर जीनेवाले बिहारी जरूर हैं। वे सब कितने कमजोर और रोगी होते हैं ! चावल पर शरीर बन ही नहीं सकता।"

आर्मिनियन पत्रमें यह लिखा हुआ है कि बादली रंग आशाका चिह्न है। शतरंजीमें खाकी रंग है। बापूने कहा — "यह आकाशका रंग कैसे कहलाया होगा ?" शामको घूमते वक्त कहने लगे — "वह तो खाकी रंगका आकाशका टुकड़ा दिखाअी देता है वैसा ही यह रंग है। वैसा रंग शायद सीरियाके आकाशका रंग होगा। डीन फेरारका अीसाका जीवन चरित्र पढ़ा था। अुसमें याद है कि नेज़रेथके आगेके पहाड़ोंके कारण वहाँके आकाशको अैसे ही रंगका वर्णन किया गया है !"

कल नरसिंहभाअी पटेलके अफ्रीकाके पत्र पढ़ लिये। अिनमेंसे जिस पत्रमें नरसिंहभाअीके विचार कैसे बदले यह बताया गया था, वह मुझे जोर देकर पढ़ सुनाया क्योंकि मैं कात रहा था। किस तरह अुन्होंने हिन्दुस्तान छोड़ देने पर भी सरकारके प्रति क्रोध और वैरभाव जमा कर रखे थे, किस तरह अुन्होंने अंग्रेज मुसाफिरोंके साथ अुपन्यास अदलबदल करते हुअे टॉल्स्टॉयकी A Murderer's Remorse (खूनीका पछतावा) पुस्तक पढ़ी और अुनकी आँखें खुल गयीं। अुन्होंने अुस पुस्तकको अनेक बार पढ़ा और उसका अनुवाद मित्रोंमें घुमाया और अहिंसाके अुपासक बन गये। बापू कहने लगे — "अिनकी सचाअी बहुत प्रशंसनीय है।"

८-४-'३२

अेक पत्र — अंबालाल मोदीका — जोलिया खड़की* नडियादसे आया था। अुसका जवाब दिये बाद जोलियाका अर्थ पूछा और अुस परसे पोलोंके नामके बारेमें बाते चलीं। वल्लभभाअी कहने लगे: "नागरवाड़ा यानी ढेढवाड़ा।" बापूको भी हँसी आ गयी। मगर अिस हँसीको टालनेके लिअे कहो या अनायास, अुन्हें राजकोटका नागरवाड़ा याद करते करते कुछ स्मरण ताजे हो आये। १८९६-९७ में राजकोटमें पहली प्लेग आयी थी। अुस वक्त बापू ताजा ताजा दक्षिण अफ्रीकासे आये थे। अुन्हें सुधार करनेकी लगन तो थी ही। अिसलिअे प्लेग-निवारणके अुपाय करनेमें मदद दी। मुख्य कार्यक्रम यह था कि अुस वक्तके पाखानोंको नष्ट करके दूसरे पाखाने बनाये जायँ, जिनमें सूर्यका

* मोहल्लेका नाम

प्रकाश आता हो और जिनमें भंगीको आगेसे घुसकर अगला भाग साफ करनेमें सुभीता हो। ये फेरबदल करनेमें गरीब लोग तो बहुत अनुकूल हुअे, मगर अधिकसे अधिक विरोध नागरवाड़ेमें हुआ। वे तो कहते — "देखो न, आये हैं बड़े पाखानोंमें सुधार करनेवाले!" मेघजीभाअी पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट, जो मेरे सम्बन्धी थे अुनकी और दूसरोंकी मुझे मदद थी। मगर नागरवाड़ेने किसीकी न सुनी और गालियोंकी वर्षाकी सो अलग! मैं ढेड़वाड़ेमें भी गया था — मगर कहाँ ढेड़वाड़ा और कहाँ नागरवाड़ा! ढेड़वाड़ेकी सफाअीकी हद नहीं थी! वहाँके स्वच्छ मुहल्लेमें कुछ भी बिछाये बिना बैठ सकते थे, जब कि नागरवाड़ा गंदगीका घर था।

अुस वक्त अकाल भी था। अकाल पीड़ितोंके लिअे अफ्रीकासे भी रुपया आया था। मुझे कुछ अनुभव था अिसलिअे अेक बीचकी जगह पर जाकर अनाज बाँटने लगा। वहाँ अितनी धक्कापेल मची कि दंगा होनेका अन्देशा हो गया।

तीसरा काम अेक हिन्दू मुस्लिम झगड़ेका था। अिस झगड़ेमें अेक दो मुसलमान जान-पहचानवाले थे, अिसलिअे याद है कि अुनके कारण झगड़ा निबटानेमें मैं सफल हुआ था।

और अुसी वक्त विक्टोरियाकी हीरक जयन्ती थी। मैंने अच्छी तरह भाग लिया था। मगनलाल और छगनलालको God save the King सिखाया था। और अिन लड़कोंसे छोटे छोटे बहुतसे काम लिये थे। और तभीसे कहा जा सकता है कि मैंने अिन लड़कोंको अपना बना लिया था। मुझे लगा कि ये लड़के भविष्यमें काम देंगे।

* * *

आज बापूने बहुत पत्र लिखे और लिखाये। प्रेमा बहन और मीरा बहनको अपने हाथसे लम्बे पत्र लिखे — बायें हाथसे। दाहिने हाथकी अँगुलीमें काफी दर्द होता है, अिसलिअे बायें हाथसे लिखना पड़ता है। इससे थोड़ा लिखा जाता है, अिसलिअे मामूली पत्र मेरे पास लिखवाते हैं। मगर अिस तरहके असाधारण सब खुद ही लिखते हैं। मुझसे लिखाये हुअे पत्रोंमेंसे अेक खत अम्बालाल मोदीका था, जिसका जिक्र मैं अूपर कर चुका हूँ। संतराम महाराजकी आज्ञासे सन्तराम मन्दिरमें देशकी शांतिके लिअे गीता, रामायण वगैराके पारायण शुरू हुअे हैं। अिस विषयमें महाराजने बापूकी राय माँगी थी। जवाबमें बापूने लिखाया: "आपका पत्र और गुजराती गीता-रामायण मिले। दोनोंके लिअे महाराजका आभार मानता हूँ। अिस बारेमें दो मत हो ही नहीं सकते कि ब्राह्मण पंडित सन्त पुरुष हों और लोगोंमें अुपनिषदादिका प्रचार

करें तो अच्छा है। विद्वत्ता और साधुताका मेल आजकल कम पाया जाता है। अिसलिअे अैसी प्रवृत्तियोंके बारेमें मनमें अुदासीनता तो जरूर रहती है।

"गीता-रामायणके पूरे पारायणके बारेमें अूपरके जैसी या अुससे जरा ज्यादा अुदासीनता रहती है। अर्थ समझे बिना या अर्थ समझते हुअे भी केवल अुच्चारणके लिअे — यह मानकर कि मानो अुच्चारणमें ही पुण्य हो — या आडम्बर या कीर्तिकी खातिर जो लोग पाठ करते हैं, अुनके पारायणका मेरी नजरमें कोअी मूल्य नहीं। अितना ही नहीं, बल्कि मैं यह मानता हूँ कि अिससे नुकसान होता है। अगर अूपरके दोषोंको दूर रखनेके अुपाय महाराज खोज सके हों और अुसके अनुसार पारायण करा रहे हों, तो अिसमें शक नहीं कि अुससे भला होगा।

"मैं कैदी हूँ, अिस बातको ध्यानमें रखकर मेरे अैसे पत्रोंका सार्वजनिक अुपयोग नहीं होना चाहिये। अिसलिअे अिस बारेमें सावधानी रखियेगा।"

दूसरा पत्र हनुमानप्रसाद पोद्दारको हिन्दीमें लिखाया। अिसमें अुनके पूछे हुअे कितने ही प्रश्नोंके अुत्तर थे:

१–२. अीश्वरको मानना चाहिये, क्योंकि हम अपनेको मानते हैं। जीवकी हस्ती है तो जीवमात्रका समुदाय अीश्वर है, और यही मेरी दृष्टिमें प्रबल प्रमाण है।

३. अीश्वरको नहीं माननेसे सबसे बड़ी हानि वही है, जो हानि अपनेको नहीं माननेसे हो सकती है। अर्थात अीश्वरको न मानना आत्महत्या-सा है। बात यह है कि अीश्वरको मानना अेक वस्तु है और अीश्वरको हृदयगत करना और अुसके अनुकूल आचार रखना यह दूसरी वस्तु है। सचमुच अिस जगतमें नास्तिक कोअी है ही नहीं। नास्तिकता आडम्बर मात्र है।

४. अीश्वरका साक्षात्कार रागद्वेषादिसे सर्वथा मुक्त होनेसे ही हो सकता है। अन्यथा कभी नहीं। जो मनुष्य अैसा कहता है कि मुझे साक्षात्कार हुआ है, अुसे साक्षात्कार नहीं हुआ अैसा मेरा मत है। यह वस्तु अनुभवगम्य है, परन्तु अनिर्वचनीय है। अिसमें मुझे कोअी सन्देह नहीं है।

५. अीश्वरमें विश्वास रखनेसे ही मैं जिन्दा रह सकता हूँ। अीश्वरकी मेरी व्याख्या याद रखना चाहिये। मेरे समक्ष सत्यसे भिन्न अैसा कोअी अीश्वर नहीं है। सत्य ही अीश्वर है।

"सत्य ही अीश्वर है" अिस चीजका और "सब कुछ अीश्वर श्रद्धासे करना चाहिये, सब अीश्वरके आधार पर और अुसकी प्रेरणासे करना चाहिये", अिन दोनोंका मेल कैसे बैठे, यह मैंने शामको घूमते वक्त पूछा। आज ही 'सत्याग्रह आश्रमके अितिहास'में ये वाक्य लिखाये थे — "अैसी श्रद्धा

रखनेवाला अीश्वरके भेजे हुअे पैसे से अीश्वरके भेजे हुअे काम करे। अीश्वर हमें यह नहीं देखने या जानने देता कि वह खुद कुछ करता है। वह मनुष्योंको प्रेरित करके अुनके जरिये अपना काम निकालता है।" अैसे वाक्योंमें 'अीश्वर' शब्दके बजाय पर्याय शब्द 'सत्य' लिखें तो काम चलेगा? सत्य अमुक बात करता है, मनुष्योंको प्रेरित करता है, प्रवृत्ति चलाता है, भेजता है, यह किस तरह कहा जा सकता है? बापू कहने लगे — "जरूर कहा जा सकता है। सत्यका संकुचित नहीं, विशाल अर्थ यह है — सत्य यानी होना, जो वस्तु शाश्वत है वह। अिस सत्ताके बल पर सब कुछ होता है, यही अीश्वर-श्रद्धा है। अीश्वर शब्द प्रचलित है, अिसलिअे हमने अुसे स्वीकार कर लिया है। नहीं तो अीश्वर शब्द 'अीश्' यानी 'राज चलाना' धातुसे बना है। अिसलिअे मेरी दृष्टिमें तो यह सत्यसे घटिया शब्द है। जो अचल सत्य है अुसके बल पर जरूर सारी प्रवृत्तियाँ चलती हैं और मनुष्योंको प्रेरणा मिलती है। मुन्शीको भी शंका थी। अुसने मुझे पूछा था: 'अीश्वरप्रणिधानात् वा' में अीश्वरके क्या मानी? मैंने अुसे लिखा: अीश्वर यानी सत्य। अिस सूत्र पर टीका लिखने-वालोंमेंसे कुछने कहा है कि ये शब्द सूत्रमें निरर्थक हैं और पतंजलिने सिर्फ़ प्रचलित विश्वासको आघात न पहुँचानेके लिअे ही लिखे हैं। पर मैं हरगिज अैसा नहीं मानता। पतंजलि जैसा समर्थ सूत्रकार अेक भी शब्द व्यर्थ अिस्तेमाल नहीं कर सकता। मैं नहीं कह सकता कि अुसने अीश्वरका वही अर्थ किया है या नहीं जो मैं करता हूँ। मगर मैं जो अर्थ करता हूँ वह लिया जाय, तो ये शब्द आवश्यक हैं।"

मीराबहनका खत आया, २४ पन्नेका। अिसकी अेक अेक लकीरमें निर्मल भक्ति भरी है। बापूके पास रह कर सेवा किये बिना अुन्हें चैन नहीं पड़ता और बापू कहते हैं कि तुझे मोह छोड़ना चाहिये। यह मोह न छोड़ेगी तो जिस दिन मैं नहीं रहूँगा, अुस दिन तू पंगु बन जायगी। यह झगड़ा वे आयीं तबसे बापूके और अुनके बीच चल रहा है। आज अपने पत्रमें अुन्होंने अपना दिल फिर अुँड़ेलकर रख दिया है। अुनकी निर्मलता अद्भुत है:

"Bapu, I am never without that thought in my mind, as to how best to serve you. I think and pray and reason with myself and it always ends the same way in my heart of hearts. When you are taken from us, as in jail, an instinct impels me to work with all my strength at outward service of your cause. I feel no doubt and no difficulty. When you are with us, an equally strong instinct impels me to retire into silent personal service — trying to do anything else,

I feel lost and futile. The capacity for the former depends on the fulfilment of the latter. The one is the counterpart of the other and something continually tells me that it was for fulfilment in that way that I was led to you. The instinct is so strong that I cannot get round it or through it or over it. It is difficult to ask you to have faith in it as the full proof of its correctness can only come after your death. But there it is, Bapu, and I can only leave it at that. This much I know full well that during this struggle my strength, capacity and inner peace and happiness are much greater than last time, because I had been able to serve according to my instinct (except for one short spell of anguish since your previous release). The fact that I was on the point of a breakdown when I came here, had nothing to do with this question. It was sheer over work, because when I saw that I was shortly going to be arrested, I simply spent my strength recklessly, knowing an enforced rest was coming. And there was more than enough work around me to be reckless over.

"Who knows if it is all delusion! But a woman has to go by instinct. It is strength with her than any amount of reason, and her full strength can only be harnessed and brought into service if her nature is able to express itself. I have no thought, no care, no longing in all the world except for you—*you the cause — you the ideal.* To serve that cause in this life and to reach that ideal in after life, God who has brought me from utter darkness to the light of your path will surely not answer my prayers by leaving me now to follow a wrong instinct? I have not written all this for the sake of argument, but simply to share with you the result of my ceaseless strivings to *understand* since I have been in jail."

"बापू, आपकी अुत्तम सेवा किस तरह कर सकती हूँ, यह विचार मेरे मनसे कभी निकलता ही नहीं है। मैं विचार करती हूँ, अपने मनको समझाती हूँ और भगवानसे प्रार्थना करती हूँ, मगर अन्तमें मेरे अन्तरकी गुफामेंसे अेक ही आवाज अुठती है। जब आपको हमारे बीचसे अुठा लिया जाता है, जैसे कि जेलमें, तब मैं आपके बाहरी कामोंमें पूरे जोशके साथ पड़ सकती हूँ। कुछ भी शंका या कुछ भी मुश्किल पैदा नहीं होती। मगर जब आप हमारे पास

होते हैं, तब अेक असाधारण प्रबल वृत्ति चुपचाप आपकी निजी सेवामें ही डूबे रहनेकी प्रेरणा मुझे करती रहती है। और कोअी काम करनेका प्रयत्न करना मुझे मिथ्या लगता है, रास्ता भूलने जैसा लगता है। अैसा लगता है कि आपकी निजी सेवा करनेमें सफलता मिले, तो ही अुन बाहरी कामोंको करनेकी शक्ति आये। अैसा लगता है कि अेक चीज दूसरीकी पूरक है। कोअी मुझे हमेशा भीतर ही भीतर कहा करता है कि मैं जो खिंच कर आपके पास चली आयी हूँ, सो आपकी सेवा करनेके लिअे ही आयी हूँ। यह वृत्ति अितनी ज्यादा प्रबल है कि मैं अुससे छूट नहीं सकती। यह बात माननेके लिअे आपसे कहना भी कठिन है, क्योंकि अिस बातकी सचाअीका पूरा सबूत तो आपके अवसानके बाद ही मिल सकता है। अिसलिअे मुझे अितना कहकर ही रुक जाना पड़ता है कि यह अेक वृत्ति है। अितनी बात मैं निश्चित जानती हूँ कि अिस बारकी लड़ाअीमें मेरा बल, मेरी शक्ति, मेरी भीतरी शान्ति और सुख पिछली बारसे कहीं ज्यादा रहे हैं। अिसका अेक यही कारण है कि अिस बार मैं अपनी वृत्तिके अनुसार काम कर सकी हूँ। सिर्फ़ आपके पहले छूटनेके बाद अेक बार थोड़े समयके लिअे मैं दुःखी हो गयी थी। अिस बार यहाँ (जेलमें) आनेसे पहले मेरा स्वास्थ्य नष्ट होनेको ही था, मगर अिस बातका अिस प्रश्नके साथ कोअी वास्ता नहीं है। अिसका कारण तो सिर्फ़ ताकतसे ज्यादा काम करना ही था। मैंने देखा कि मैं थोड़े दिनमें पकड़ी जाने वाली हूँ, अिसलिअे मैंने अपनी शक्ति अूँचनीच देखे बिना ही खर्च करना शुरू कर दिया। मैं जानती थी कि मुझे जबरदस्ती आराम मिलने ही वाला है। और मेरे पास कामका अितना ढेर पड़ा था कि ज्यादा सोच विचार करनेकी गुंजायश नहीं थी।

"कौन जाने, यह सब भ्रम ही तो न हो? मगर स्त्री तो अपनी मनोवृत्तिसे ही चलती है न? अुसका बल बुद्धिके बजाय वृत्तिके आधार पर चलनेमें ही है। वह अपने स्वभावको प्रगट कर सके, तो ही अुसकी सच्ची शक्ति काबूमें की जा सकती है और सेवामें लगाअी जा सकती है। अेक आप, आप ही मेरे काम और आप ही मेरे आदर्श हैं, जिसके सिवा सारी दुनियामें मेरा और कोअी विचार, और कोअी चिन्ता या और कोअी चाह नहीं है। अिस जीवनमें यह काम पूरा करनेके लिअे और अगले जीवनमें अिस आदर्श तक पहुँचनेके लिअे क्या भगवान मेरी प्रार्थना नहीं सुनेंगे? किस लिअे वे मेरी वृत्तियोंको गलत रास्ते पर जाने देंगे? क्या वे ही मुझे गहरे अँधेरेसे आपके प्रकाशमय मार्ग पर खींच नहीं लाये? यह सब मैं आपके सामने तर्क करनेके लिअे नहीं लिख रही हूँ। लेकिन जेलमें आनेके बाद

असली चीज समझनेके लिअे मैं जो निरंतर प्रयत्न कर रही हूँ, अुससे जो कुछ मुझे सूझा है वह आपके सामने रख देनेके लिअे ही लिख रही हूँ।"

अुसे बापूने जवाब दिया :

"I understand and appreciate all you say about yourself. Let me put you at rest. When I come out you shall certainly be with me and resume your original work of personal service. I quite clearly see that it is the only way for your self-expression. I shall no longer be guilty as I have been before of thwarting you in any way whatsoever. My only consolation in thinking over the past is that in all I did, I was guided by nothing else than the deepest love for you and regard for your well-being. I see once more that good government is no substitute for self-government. A Gujarati proverb says, what one sees for oneself may not be visible to the nearest friend though he may have ever so powerul a searchlight. Both these proverbs may not be universally applicable. They certainly are in your case. You need therefore fear no interference from me henceforth. And who can give me more loving service than you?"

"तूने अपने लिअे जो कुछ लिखा है वह मैं समझ सकता हूँ और अुसकी कदर करता हूँ। अेक मामलेमें मैं तुझे निश्चिन्त कर ही दूँ। मेरे जेलसे निकलनेके बाद जरूर तू मेरे साथ ही रहेगी और मेरी सेवाका अपना असल काम फिर शुरू कर देगी। मैं साफ़ देख सकता हूँ कि तेरी आत्माके आविर्भावके लिअे यही अेक मार्ग है। पहले मैंने अैसा किया है, मगर अब अपनी सेवाके काममें तुझे वंचित रखनेका अपराध मैं नहीं करूँगा। भूतकालमें जो कुछ हुआ है अुसका विचार करता हूँ, तब मुझे अेक बड़ा सन्तोष यह रहता है कि मैंने तेरे प्रति जो कुछ किया है वह तेरे लिअे गहरे प्रेम और तेरे भलेकी भावनासे प्रेरित होकर किया है। मगर मैं देख सकता हूँ कि 'स्वराज'का काम 'सुराज्य' नहीं दे सकता। अेक गुजराती कहावत है कि 'धणीने सूझे ढांकणीमां ने पड़ोसीने न सूझे आरसीमां'। ये दोनों कहावतें सब जगह लागू नहीं की जा सकतीं। हाँ, तेरे मामलेमें तो दोनों ही अच्छी तरह लागू होती हैं। अिसलिअे आयंदा मेरी तरफसे कोअी दखल नहीं दिया जायगा, यह पूरा भरोसा रखना। और मेरी सेवा तुझसे ज्यादा प्रेमके साथ कौन कर सकता है?"

बस अिस आखिरी वाक्यमें बापूकी हार — प्रेमके वश होकर खाअी हुअी हार — है। मीराबहनके जितनी प्रेमपूर्ण सेवा किसीकी नहीं है। यह अक्षरशः सही है। शंकरलाल जब बापूके साथ थे, तब अुनकी सेवा अपूर्व थी। कृष्णदासजीकी सेवामें जो सावधानी दीखती थी, वह अुनके निर्मल प्रेमका परिणाम था। मगर मीराबहनकी सेवामें कुछ और ही मिठास है, क्योंकि अिसमें अपने आपको मिटा डालनेकी बात है और दिनरात बापूकी ही निष्ठा — अव्यभिचारी भक्ति है। अुसका मुकाबला न शंकरलाल कर सकते हैं और न कृष्णदास। मेरा तो अिन तीनोंके नजदीक पहुँचनेका भी बूता नहीं है। अिसके कारण स्पष्ट हैं। मुझमें तो न वह अव्यभिचारी भक्ति है और न शरीर या चित्तकी वह शुद्धि और पवित्रता है। मैं तो छोटे छोटे सौंपे हुअे काम भी भूल जाता हूँ, जब कि मीराबहन सेवाके अनेक काम पैदा कर लेती है और बापूको अुन्हें स्वीकार करनेको मजबूर कर देती है। मुझे आज तकियेको खोली चढ़ानेके लिअे कहा। मैंने 'हाँ' कह दिया। तुरन्त कोअी दूसरा काम सौंपा तो अुसमें लग गया और खोली चढ़ाना रह गयी। और वह मुझे याद आये अुसके पहले वल्लभभाअीने खोली चढ़ा दी। अीश्वरने बापूके चरणोंमें ला पटका है तो किसी दिन वह शक्ति भी देगा, अिस श्रद्धासे यह ढचर गाड़ी चलाये जा रहा हूँ।

* * *

अपने पत्रमें अुद्धृत गुजराती कहावत 'घणीने सूझे ढांकणीमां ने पड़ोसीने न सूझे आरसीमां' के विषयमें बापूने मुझे पूछा — "अिसकी अंग्रेजी आती है?" अंग्रेजी तो नहीं सूझी। मगर बादमें अिसका पृथक्करण किया, तो मालूम हुआ कि मैं गुजराती अर्थ भी ठीक ठीक नहीं समझ पाया हूँ। बापू भी ठीक ठीक नहीं समझे थे।

९-४-'३२

सुबह अुठकर अिसी कहावतके बारेमें मैंने वल्लभभाअीसे पूछा। बापू कहने लगे: "क्यों, अिनकी परीक्षा लेते हो?" मैंने कहा — "वल्लभभाअीके पास अैसी कहावतोंका अच्छा भण्डार है। अिसलिअे शायद अिन्हें समझमें आ जाय।" बापूने कहा — "हाँ, यह तो जानता हूँ, मगर अिसके अर्थके विषयमें हमें कहाँ शिकायत है? हमारे सामने तो अिसकी रचनाका सवाल है। अिस कहावतका ठीक ठीक अुपयोग कैसे किया जाय? अर्थ तो साफ है कि घरवालेको जो अंधेरेमें दीखे, वह परायेको दिन दहाड़े भी न दीखे। मगर अिसका शब्दार्थ किस तरह बैठाया जाय?" अिस तरह बातें हो रही थीं कि बाजारसे कुछ मँगवानेकी बात चली। बापू तो अिन चीजोंमें कुदरती तौर पर काँट छाँट करते ही हैं। वल्लभभाअी बोले — "आप बचायेंगे तो जेलवाले खा जायँगे। ये लोग तो किसी न किसी

तरह सौका हिसाब पूरा कर देंगे। 'मियाँ लूटे मूठ मूठ और अल्ला लूटे ऊँट ऊँट।'" बापूने कहा — "लो, देख लो, तुम्हारे जाननेके लिअे नअी कहावत तैयार है।"

*　　　　*　　　　*

आज हीरालाल शाहके पत्रमें बड़ा मजा आया। बापूको खगोलका शौक लगा है, अिसलिअे शाहसे पूछा कि कोअी अुपयोगी साहित्य हो तो बताओ। दूरबीनके बारेमें भी कुछ जानकारी माँगी। अुन्होंने अपने स्वभावके अनुसार बापूको गहरे पानीमें अुतारा। ज्योतिषकी बढ़िया पुस्तकें और नकशे भेजे। अितना ही नहीं, कालिदासके नाटक पढ़नेकी भी सलाह दी। और सूचना दी कि दूरबीन भावनगरके पट्टणी साहबसे मँगाअिये या पूनामें प्रो० त्रिवेदीसे मिल सकती है। मैंने बापूसे हँसकर कहा — "बापू, यह तो बाबाजीकी लँगोटीवाली बात हो गयी।" बापूने कहा — "हाँ, किसी चीजकी जान अनजानमें अिच्छा करते हैं तो भोग मिल जाता है। अिन्हें लिखना पड़ेगा।"

*　　　　*　　　　*

बापू ज्यादातर अपने पत्रोंमें लिखते हैं कि कैदी हूँ। मेरा पत्र कहीं न छपे, यह ध्यान रखना। मगर जहाँ पत्र छापनेका डर न हो वहाँ अैसा क्यों लिखें? फिर भी आज मालूम हुआ कि डॉ० मुथुको अुनकी भेजी हुअी पुस्तकोंकी जो पहुँच भेजी गयी थी, अुस पत्रको अुन्होंने प्रकाशित कर दिया! कितनी दिशाओंमें सावधानी रखनेकी जरूरत पड़ती है?

*　　　　*　　　　*

बापूने 'आत्मकथा'में यह खयाल जाहिर किया है कि प्रारम्भिक जीवनमें अुनमें आत्मविश्वासकी कमी थी। मगर अिस कमीको दिखानेवाले सारे प्रसंग नहीं दिये। आजकल तुले हुअे वाक्योंमें जो अपूर्व तर्क करके बापू सामनेवालेको मुग्ध कर लेते हैं और बहुत बार अपने पर होनेवाले हमलोंका विलक्षण खंडन करते हैं, अुस परसे हमें अैसा लगता है कि वकीलके रूपमें चमकनेके बारेमें तो अुन्हें पहलेसे ही विश्वास होना चाहिये। लॉयड जार्जका जीवनचरित्र पढ़ने पर मालूम होता है कि १८ वर्षकी अुम्रमें लिखी गयी डायरीमें भी अुसकी महेच्छा, महत्वाकांक्षा, कीर्ति और कला सम्बन्धी आत्मविश्वास नजर आता है। बापूमें यह नहीं था। अिसके अुदाहरणके तौर पर अुन्होंने आज बात कही। अुन्हें भरोसा नहीं था कि बैरिस्टरीका धन्धा चलेगा। खर्च तो बना ही हुआ था। अिसलिअे बम्बअीमें किसी पाठशालामें ७५) रुपयेकी शिक्षककी नौकरीके लिअे अर्जी दी। अिस पाठशालाका शिक्षक भी कैसा होगा जिसने बापूको मिलने

बुलाया और बातचीत करके अुन्हें नौकरीके लिअे अयोग्य ठहराया! जिनमें आत्मविश्वास जरा भी न हो, अुनके लिअे यह किस्सा सोचने लायक है। और आशाका संचार करनेवाला है। मुझे बारबार विचारने पर साफ लगता है कि बापूको बापू बनानेवाली चीज अुनकी सत्यकी अखण्ड अुपासना है। अिसी सत्यसे निर्भयता आयी, जिससे अीश्वरमें श्रद्धा रख कर चलनेके लिअे सत्यके प्रयोगोंका मार्ग खुलता ही गया। सत्यकी अखण्ड अुपासना और सत्यका आचरण करनेकी पूरी तैयारी मनुष्यको किस चोटी पर नहीं पहुँचा देगी, यह कहना मुश्किल है। मैंने बापूसे पूछा — "लेकिन ७५) रुपयेकी नौकरी लेनेकी बात आपके जीमें कैसे आयी? कुछ माननेमें नहीं आता।" बापू बोले — "भाअी, मुझे कोअी महत्वाकांक्षा ही नहीं थी। अिसके सिवा और कुछ भी खयाल नहीं था कि किसी तरह गुजर हो जाय और जहाँ पड़े हों वहाँ कुछ न कुछ सेवा करते रहें।"

* * *

वल्लभभाअीने जब यह बात सुनी तो अपनी अेक मजेदार बात सुनाअी — "मेरे मामा म्युनिसिपेलिटीमें ओवरसियर थे। अुनके दिलमें यह खयाल था कि यह लड़का क्या पढ़ेगा? लाओ, ठिकाने लगा दें। अिसलिअे वे मुझे बहुत बार कहते — "अरे, तू आ जा। तुझे मुकद्दमकी जगह दिला दूँगा और तू कलसे ही कमाने लगेगा!"

मीराबहनको पत्र लिखते लिखते बापूने पूछा — "inexhaustible के हिज्जे क्या? अिसमें 'h' है या नहीं? मैंने 'h' लिखा है।" मुझे भी शंका हो गयी। डिक्शनरी देखी, अुसमें 'h' निकला। फिर बोले — "अिसका धातु देखो तो समझमें आ जायगा।" धातु शुरू ही 'h'से होता था: शब्द haus to draw. तब बापूने कहा — "मगर असे दूसरे कितने ही हैं, जिनमें 'h' नहीं आता। वे कौनसे हैं?" मैंने कहा — "exonerate." बापूने कहा — "नहीं, नहीं, अिसमें तो 'h' है ही।" मैंने कहा — "हरगिज नहीं; अिसमें मूल onus है।" बापूने कहा — "नहीं नहीं, अिसमें honour मूल होना चाहिये।" मैंने कहा — "अिसमें तो हम शर्त लगा सकते हैं। और मेरी जीत होगी।" डिक्शनरी निकाली और मैं जीता। फिर दूसरा शब्द inexorable निकला। अिस पर खुश होकर कहने लगे — "अिस तरह लेटिन धातु जाननेमें बड़ा अर्थ है। किसी भी धातुके जान लेने पर अनेक अपरिचित शब्दोंका अर्थ मालूम हो जाता है।" आज सवेरे 'धन्य' शब्दका धातु पूछते थे। जैसे 'मन्य', 'गण्य' मन् और गण् धातुसे हैं, वैसे ही 'धन्य' धन् धातुसे होगा? तो फिर धन्का क्या अर्थ होगा?

रविवारको बापू तीन बजे मौन लेते हैं। अिसलिअे किसी कर्मचारीको मिलना जुलना हो, तो रवि और सोम दोनों दिन अमुक समय तो दिनकी बातोंके लिअे रहता ही है। आज तीनमें दो चार मिनट बाकी थे। अिसलिअे वल्लभभाअी कहने लगे —

१०-४-'३२

"अब पाँच मिनट रहे हैं। आपको जो कुछ सौंपना या लिखना हो सो कर डालिये।" मैंने कहा — "आप अिस तरह बोल रहे हैं जैसे वसीयत करनेको कह रहे हों।" बापू कहने लगे — "लो तो कह ही दूँ, कोअी भूलचूक हुअी हो तो माफ करना।" यह कहकर खिल-खिलाकर हँस दिये। वे अपने किये हुअे विनोदपर नहीं हँसे थे, बल्कि अेक मधुर स्मरणने अुन्हें हँसाया था। वह खुद अुन्हींने कह सुनाया — "बा बेचारी कहने लगी — 'भूलचूक हुअी हो तो माफ कीजियेगा'।" वल्लभभाअीको पता न था, अिसलिअे पूछा — "कबकी बात है?" "अरे, मुझे पकड़नेके लिअे आये तभीका तो जिक्र है। आँखोंसे आँसू पड़ रहे हैं और कहती हैं — 'भूलचूक माफ कीजियेगा'। अुस बेचारीको तो यह लगा होगा कि अब अिस जन्ममें मिलना होगा या नहीं और माफी माँगे बिना मर गये तो फिर क्या होगा?" सब खिलखिला अुठे।

टॉमस हार्डीने Some Crusted Characters (सम क्रस्टेड केरेक्टर्स) के नामसे कुछ चरित्र चित्रण किये हैं। अैसा अेक पात्र नासिकमें मिला था। वह बगाली रसोअिया था। बरमी, मद्रासी और अंग्रेजी बोलता था। सातवीं बार सजा पाकर आया था। धोबी था। अब अिस मालामें यहाँका सोमा जुड़ता है। वह साबित कर देता है कि अमीर बननेके लिअे रुपया नहीं चाहिये। वह ठाकरड़ा है, घर पर मुश्किलसे दो बीघे जमीन होगी। मगर वह अमीर है। चलाळा नामके गाँवका है। कहता — 'रूअी तो बढ़िया चलाळेकी, तुअरकी दाल अुत्तमसे अुत्तम वहाँकी, अनार भी वहींका। धोलकाका नाम फजूल ही हो गया है। धोलकाके अनार! धोलकाके अनार! धोलकामें कौन अनार पकानेवाला बैठा है? यह तो छूटकर चलाळे पहुँचूँ, तब बताअूँ कि चलाळेमें कैसे अनार होते हैं।' चलाळेके बाद अभिमानकी जगहोंमें दूसरा नम्बर गुजरातका आता है। 'अिस महाराष्ट्रमें क्या है? पत्थर। कहाँ हमारा गुजरात और कहाँ महाराष्ट्र! देखिये तो अिस मारुतिको। वार्डर बन गया है, डफोरसंख जैसा है। कैरी छीलने तीन बार बैठा, मगर अभी तक यह नहीं समझता कि छुरी कैसे पकड़ते हैं। अिनकी बोली भी कैसी है? अिकड़े तिकड़े! रसोअी बनाना मुझसे सीखा, मगर वह अैसा नहीं मानता। आप ही बताअिये: कढ़ीमें कहीं शकर पड़ती होगी? गुड़ डाला जाता है। दाल न गले तो यह नहीं कहेगा कि मेरे हाथसे सोडा कम गिरा! कहेगा वल्लभबापाने सोडा कम दिया था!' रूअी साफ करने बैठा

तो कहने लगा — 'यह भी कोअी रूअी है! अैसी रूअीको भी पींजते होंगे! यह तो पालेसे जली हुअी कपास है। ४–५ रुपयेके भावकी। पींजनेकी अुम्दा रूअी तो तब ही चुन लेनी चाहिये, जब कपासके डोडे अच्छी तरह फट गये हों। अुसके कपड़े अच्छे होते हैं, अिसके नहीं होते। मैंने ६०–६० गज बुननेका हुक्म दिया है!' अिसके बाद अुसे रसोअीके काम पर रखा गया। बकरीके दूधका दहीं हम जमायें तो खुद देखता। खा भी लेता। मगर गायके दूधका दही जिस दिन हमने जमाया, अुस दिन हमने कहा — 'यह दही ज्यादा अच्छा जमा है!' तो कहने लगा — 'गधेकी लीदके पापड़ बनते होंगे? यह तो जिसके बनते हैं अुसीके बनते हैं।' अनारकी खेतीके बारेमें बहुत बातें करता है — 'आपके आश्रममें अनार होते हैं?' मैंने कहा — 'अच्छे नहीं होते।' तो कहने लगा — 'मेहनत अच्छी नहीं करते होंगे। पानी कितना देते हैं? अुसके लिअे मेहनत होनी चाहिये, आसपास क्यारियाँ बनानी चाहियें और कमर तकका पानी भरना चाहिये।' अित्यादि। अपना अपराध स्वीकार करता है। अुसके लिअे पछतावा भी अुसे होता है। और कहता है — 'अब अिस जन्ममें जेलखाने नहीं आअूँगा। भगवानने हाथ-पैर दिये हैं, कमाकर खाअूँगा। अैसे कोअी भूखों नहीं मरता। मैं पकड़ा गया — अेक मुसलमानने जुर्मका अिकबाल करके सबको पकड़वा दिया और खुद छूट गया — अुससे थोड़े दिन पहले ही अेक पाटीदारने १८ बीघे जमीन खेतीके लिअे देनेको कहा था। मगर तकदीरकी बात है। किसीका अेक पाअी कर्ज नहीं है। सौ दोसौ रुपया मैं औरों पर माँगता हूँ। हम बारैया कहलाते हैं। हम अैसे तो चलाळेके हैं, मगर मूल रहवासी चरोतरके हैं।"

११–४–'३२

आज मौनवार था, अिसलिअे वल्लभभाअी बापूसे कहने लगे — "आज चौदह सप्ताह तो हो गये। अब आपको यहाँ कब तक रहना है? विलायत न गये होते, तो ये तीन चार महीने भी अिसीमें गिन लिये जाते। ये तो यों ही बेकार गये।" बापू हँसनेके सिवा क्या जवाब दे सकते थे!

* * *

आस्ट्रेलिया और अमरीकाकी बात करते हुअे बापू कहने लगे — "अमरीकाको तो अपने धर्मकी रक्षा करनेके लिअे भागे हुअे आदमियोंने बसाया, मगर आस्ट्रेलिया तो सजा पाये हुअे अपराधियोंने बसाया है, अिसमें कोअी शक है? मगर आस्ट्रेलिया ही क्यों? जिन्हें ये लोग अपने देशकी रक्षा करनेवालों और देशकी सेवा करनेवालोंके रूपमें पूजते हैं, वे सब कौन थे?

ड्रेक तो पूरा दरियायी लुटेरा था । वह सर फ्रांसिस ड्रेक! क्लाअिव कौन था? हेस्टिंग्स कौन था? सेसिल रोड्स कौन था? बड़ा ही सटोरिया, ठग और अुठाअीगीरा आदमी । अुसने रोडेशिया बसाया । जैसे यहाँ औस्ट अिंडिया कंपनीका अितिहास आँखोंके सामने तैरता है, वैसा ही रोड्स कंपनीका भी तैरता है । हाँ, अेक बात है — अिन लोगोंमें अच्छे आदमी भी पैदा हुअे, अिसमें शक नहीं ।"

* * *

यह तो घड़ी घड़ी और पल पलमें देखा जाता है कि छोटी छोटी बातोंमें बापूका शास्त्रीय ज्ञान कितना है और कितना जाननेकी अुनकी अिच्छा है । आश्रमसे बीमारीके खत तो आते ही हैं और सवाल भी पूछे जाते हैं । "'वेट शीट पैक' क्या किसी भी बुखारमें दिया जा सकता है?" यह पूछा गया । बापूने लिखा — "जरूर दिया जा सकता है । सिर्फ कपड़ा अच्छी तरह निचो डाला हो और अुसमें पानी अेक बूँद भी न रह जाय, यह देख लेना चाहिये ।" मैंने कहा — "अब तो युरोपमें अिन्फ्लुअेंजावालोंको बर्फ पर सुला कर रोग मिटाया जाता है ।" बापू कहने लगे — "बिलकुल समझमें आने जैसी बात है । बर्फ पर आदमीको ठंड थोड़े ही लगती है । अुसे तो गरमी लगती है । जब कोअी क्रिया होती है, तो अुसकी प्रतिक्रिया पैदा होती है । हाँ, मगर वह आअिस नहीं हो, स्नो होना चाहिये । आअिसको कूट डालो और आअिसके ही टेम्परेचरमें रखो, तो वह स्नो बन जाती है ।" वेट शीट पैकका बापूने कअी मामलोंमें अनुभव करके देख लिया हैं । गंगा बहन जल गयी थीं और अुन्हें खूब जलन हो रही थी, तब वेट शीट पैक दिया था । वह याद है । अिसी तरह चेचकमें भी करते हैं ।

मनुने फिर दयाजनक पत्र लिखा था । अुसमें बताया था कि मौसीने भाअीको (हरिलालको) तीन चार तमाचे लगा दिये । बापूने लिखा — "अुसने तमाचे लगाये, यह अच्छा किया । अिसमें हिंसा नहीं थी, शुद्ध प्रेम था ।"

१२-४-'३२

आश्रमके अितिहासमें कल बापूने सत्यके व्रत पर विस्तारसे लिखवाया था । आजकल जान अनजानमें हमें सत्यका भंग करनेकी कैसी आदत पड़ गयी है, अिसका अुदाहरण आज सुबह ही सुबह देखनेको मिला । मर्न नामका स्कॉच कैदी हमारे पड़ोसमें है । अुसने अिन्स्पेक्टर जनरलके लिअे रँगनेको आयी हुअी अेक अटेची (पेटी) पर अुसका नाम अंग्रेजीमें सफेद अक्षरोंमें लिखा था । अिन्स्पेक्टर और जनरलके बीचमें जोड़नेवाला चिन्ह (-) लगाया था । जेलरने अुससे कहा

कि यह निशान नहीं चाहिये, अिसे निकाल डालो। वह बेचारा अुसे लेकर निकालने जा रहा था, मगर मुझे बरामदेमें बैठा देखा तो पूछने लगा — "यह जेलर कहता है सो सच है? यह 'हाअिफन' नहीं चाहिये?" मैं हँसा और अुससे बोला — "जेलर तुमसे ज्यादा अच्छी अंग्रेजी जानता होगा।" बापूने कहा — "यह बात ठीक है। हाअिफन निकाल डालो, वह नहीं चाहिये।" जब वह चला गया तो बापू कहने लगे — "तुम्हारे जवाबमें सत्यका कितना ज्यादा भग था? अुस बेचारेको पता ही न चले कि तुम क्या अुत्तर देना चाहते हो। अगर तुम यह कहना चाहते थे कि जेलर तुमसे अंग्रेजी कम जानता है, मगर अुसका अनुभव ज्यादा है अिसलिअे अुसकी बात माननी चाहिये, तो भाव विरुद्ध ही था। अगर यह कहना था कि अुसकी बात नहीं माननी चाहिये, तो साफ कह सकते थे। तुमने तो 'नरो वा कुंजरो वा' वाली बात कर दी।"

मैं चुपचाप सुनता रहा। सारी आलोचना ठीक ही थी।

आज अेक पत्र लिखवाना था। अुस वक्त मैं कात रहा था। अिसलिअे बापूने कहा — "अिसका कातना तो हरगिज नहीं छुड़वाया जा सकता।" वल्लभभाअी कहने लगे — "मुझे लिखवाअिये।" बापूने कहा — "भले ही लिखिये, आप पर मुझे दया आयेगी यह न समझिये।" लिखवाया। मगर शामको अिससे भी सख्त काम बापूने वल्लभभाअीको सौंप दिया। आकाशदर्शन पर जो अेक लम्बा भव्य लेख आश्रमके लिअे भेजा जानेवाला था, अुसकी अेक नकल कैम्प जेलमें और स्त्रियोंकी जेलमें रहनेवाले आश्रमवासियोंको भेजनेकी अिजाजत बापूने ले ली थी। अिसलिअे अब अिन लेखोंकी नकल करनेका काम बढ़ गया। अेक नकल तो कल मैंने की थी। लेकिन आज दूसरी नकल कैम्प जेलके लिअे करनी थी। मैं किसी काममें था। बापूको जरा परेशानी हुअी। मैंने रातको अुसकी दूसरी नकल करके सोनेका निश्चय कर लिया था। मैंने बापूसे कह भी दिया था — "मैं नकल कर डालूँगा।" मगर बापू कहने लगे — "वल्लभभाअी क्यों न करें? अिन्हें ही सौंपा जाय।" वल्लभभाअी तुरन्त बैठ गये। कोअी घण्टाभर अुन्हें हुआ होगा। मैंने बापूसे कहा — "जो अेक पत्र लिखनेमें भी अुकता जाते हैं, अुन्हें यह काम किस लिअे सौंप दिया?" बापू कहने लगे — "थक जायँगे तो छोड़ देंगे।"

वल्लभभाअीके लिअे सचमुच यह नया अनुभव था। अुनके लिअे 'अल्पोक्ति' 'अतन्द्रित' जैसे शब्द और वाक्य अपरिचित और कठिन अुच्चारणवाले थे। वे पूछते गये और आग्रहपूर्वक काम पूरा करके ही सोये! वल्लभभाअीकी भलमनसाहत पग पग पर देखनेको मिलती है। और जिस प्रेमसे

वे फल सँवारते हैं और दातुन कूटना भूल गये हों तो याद आते ही दातुन लेनेके लिअे दौड़ते हैं, वह सब अुनकी अपार भक्ति बताता है। और अिस भक्तिको सीखनेके लिअे अुनके पैरोंमें बैठनेकी प्रेरणा मिलती है।

हीरालाल शाहके पत्रका अुल्लेख अिस डायरीमें हो गया है। अुस पत्रमें अुन्होंने बताया था कि कुछ मामलोंमें खास अर्थ बिठानेका गुर अुनके हाथ लग गया है। और लिखा था कि आकाशदर्शनके बारेमें और कोअी चीज या किताब चाहिये तो भेज दी जायगी। बापूने अुन्हें अेक पत्र हाथसे ही — बायें हाथसे — लिखा :

"भाअीश्री हीरालाल,

"आपकी पुस्तकें और प्रेमपूर्ण पत्र मिले। अेक हफ्ते देरसे मिले क्योंकि डाह्याभाअी भूल गये थे। पुस्तकें अुपयोगी सिद्ध होंगी। आपके पत्र और टिप्पणियाँ अुपयोगमें वृद्धि करेंगी। आप मानते हैं अुतना लोभ मुझे नहीं है। अितना मामूली ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहता हूँ कि जिससे मैं आकाशमें अीश्वरको ज्यादा अच्छी तरह देख सकूँ। आपको ठीक लगे वही खगोल-विद्याकी छोटीसी पुस्तक भेज देना। आपकी पुस्तकोंकी सँभाल रखूँगा। अिस बारेमें आपकी सावधानी मैंने देख ली है। अैसी पुस्तकें मित्रोंसे अेकाअेक लिया नहीं करता हूँ। कहीं खो जायँ या बिगड़ें तो!

"आपकी मेहनत और सुघड़पनकी जितनी तारीफ की जाय अुतनी थोड़ी है। लेकिन मुख्य कुंजी मिल जानेका दावा बहुत ज्यादा तो नहीं है? यह कुंजी क्या है? अुसे कुंजी मानने और मुख्य कुंजी माननेके आपके पास सबल प्रमाण हैं? विशारदोंने अुन्हें स्वीकार किया है? अपनी खोजसे आप किस फलके निकलनेकी आशा दिलाते हैं? अिसमें चरखेवाली अुस मुख्य कुंजीके अभावका दोष तो नहीं है? मैं आपसे समझनेके लिअे तैयार हूँ। और तटस्थतासे आपकी दलीलोंको तोलूँगा। मगर शोधकको — साधकको शोभा दे, अैसी नम्रता अपनेमें पैदा कीजिये। मैं जानता हूँ कि वह पैदा करनेसे नहीं आती। सच्ची खोजोंमें वह छुपी ही रहती है। अपने पास हजारों प्रमाण हों तो भी शोधकको अपनी खोजके बारेमें शंका रहती ही है। नतीजा यह होता है कि जब वह अपनी खोज दुनियाके सामने रखता है, तब अुसे साक्षात्कार हो चुकता है। जगत विस्मित होता है और अुस पर विश्वास करता है। अुसके वचनमें सत्ता होती है, तेज होता है। संसार अुसकी बातको मान लेता है। अुसके प्रमाणोंसे जगत चकित हो जाता है। क्योंकि शोधक तो अपनी खोजकी दसों दिशाओंसे जाँच कर चुकता है। ये सब बातें आपकी खोजके बारेमें सच हों, तो मुझे कुछ कहना नहीं है। अैसा हो तो आपको सहस्र प्रणाम! परमात्मा करे अैसा ही हो।

"हम सब यानी तीनों आनन्दमें हैं। शंकरसे कहना कि तबीयत न बिगाड़े, खत लिखे।

बापूके आशीर्वाद"

बापूके बायें हाथकी कोहनीसे अूपरकी हड्डीमें दर्द होता है। और दायें हाथके अँगूठेमें दर्द है। तो भी मालूम होता है अुन्होंने

१३–४–'३२

पिछले तीन दिनसे ३७५ तार कातनेकी प्रतिज्ञा की है। डॉ० मेहता कहते हैं कि अिन दोनों हाथोंको आराम दीजिये। मगर बापू कहते हैं कि चरखेसे दर्द नहीं बढ़ता! मालूम होता है कि राष्ट्रीय सप्ताहके कारण कताअी पर ज्यादा जोर डाल रहे हैं। आज थक गये थे। आम तौर पर तीन बजे कताअी पूरी हो जाती है। आज तीन बजे पूरी नहीं हुअी। लेकिन यह कह कर जमे रहे कि आज सप्ताहका आखिरी दिन है और शाम तक ५०० तार न कतें तो ठीक नहीं। और चार बजे पूरा किया।

राष्ट्रीय सप्ताहमें विशेष आग्रहके साथ ज्यादा काम करनेकी कोशिश होती है। मुझे तो अैसा लगता है कि मेरा जो नित्यक्रम चलता है वही हमेशा चलता रहे तो भगवानकी कृपा हो। जिन्दगीका अेक भी दिन, अेक भी घड़ी आलस्यमें न जाय, तो कोअी वार-पर्व खास तौरपर पालनेकी जरूरत ही न रहे।

स्वरूपरानी नेहरूको जो मार पड़ी, अुसके बारेमें बापूने यह माननेसे अिनकार ही कर दिया कि यह पुलिसका काम हो सकता है। दो तीन अनुमान लगाये थे। आज स्वरूपरानीने खुद ही प्रकाशित किया है कि मार पुलिसकी ही थी। यह जानकर बापू अुबल अुठे हैं। "लालाजी पर जानबूझ कर मार नहीं पड़ी थी, तो भी अुस पर देशभरमें खलबली मच गयी थी। यह मार तो जवाहरलालकी माता पर जानबूझ कर ही पड़ी होगी न! फिर भी देशमें कोअी पुण्यप्रकोप नहीं दीख पड़ता। 'लीडर' ने भी कुछ नहीं लिखा!" बापूने ये अुद्गार प्रकट किये। वल्लभभाअी कहने लगे — "खलबली मचानेवाले हम सब तो अन्दर बैठे हैं। 'लीडर' ने जो लिखा अुसमें कोअी दम नहीं है।" बापू कहने लगे — "मगर लिखा भी है?" "लिखा है, पर अुसे पढ़ कर क्या करेंगे?" बापूने कहा — "नहीं, पढ़कर सुनाअिये।" सुनकर अुन्हें काफी असन्तोष हुआ। बोले — "अिसे तो समतोल मस्तिष्कवालेकी पदवी मिली है न! आज ही सुबह अुस पत्रकारने कहा सो हमने पढ़ा था न कि 'हिन्दू' और 'लीडर' अखबारोंके लेख पुख्ता कहला सकते हैं!"

अराजनीतिक साथियोंसे मुलाकातके बारेमें आज मार्टिनको पत्र लिखा।

सुपरिण्टेण्डेण्टके साथ बातचीत करते हुअे अिस्लामकी चर्चा चली। बापूने कहा — "अिस्लाममें जो अुदारता थी, जो सहिष्णुता थी, वह हनफीवालोंने धो डाली। कुरानकी और सब प्रतियाँ नष्ट करके अेक ही रखी। फिर भी अिन लोगोंको अभिमान है कि कुरान ही अेक अैसी पुस्तक है, जिसमें पाठभेद बिलकुल नहीं है। और सब प्रतियाँ नष्ट कर दी जायँ, तो पाठभेद रहे ही कहाँ? मगर अिस्लाममें जो अुदारता हजरत अुमरकी है, अुसकी मिसाल तो दुनियामें कहीं कहीं मिल सकती है। और अुससे बढ़कर मिसाल तो कहीं मिल ही नहीं सकती। और असहिष्णुता होने पर भी अीसाअी धर्मके नाम पर जो मारकाट हुअी है और जितना खून बहा है, अुतना अिस्लामके नाम पर हरगिज नहीं बहा।"

बस, अब तो बापूने रोज ५०० वार कातनेका निश्चय किया दीखता है। आज काफी जोर पड़ा। मुलाकातोंमें काफी समय गया।

१४-४-'३२ कैम्पसे मोहनलाल भट्ट, धुरंधर और मणिभाअी देसाअी आये थे और राजकोटसे बबीबहन, मनु, कुसुम देसाअी वगैरा आयी थीं। मगर ज्यादा वक्त . . . के साथ लगा। सुपरिण्टेण्डेण्टसे बातचीत करते समय अुन्होंने समाचार दिया कि . . . छह दिनसे अुपवास कर रहे हैं। क्या आप समझा सकेंगे? बापूने कहा: "जरूर, आप बुलवाअिये।" बुलवाया। लँगोट पहनकर दफ्तरमें आये। अुनसे पूछने पर अुन्होंने स्पष्टीकरण किया — "मेरा तो स्वावलम्बनका व्रत है, अिसलिअे हाथका कता कपड़ा ही पहनना चाहिये और मधुकरीका अन्न खानेका या वह न हो सके तो फलाहार और दूध पर ही रहनेका व्रत है।" सुपरिण्टेण्डेण्टने कहा — "ये व्रत नासिकमें नहीं थे?" वे कहने लगे — "संधिके बाद ये व्रत लिये हैं।" बापूने खूब समझाया और कहा — "स्वावलम्बनका यही अर्थ नहीं होता। तुम्हें पैसे देने पड़ते हों तो दूसरी बात है। यहाँ तो जेल जो दे वही पहनना अुचित है। और खानेको अमुक चीजें ही मिलें, यह आग्रह कैसे रखा जा सकता है? मधुकरी या फलाहारके व्रतका तो कोअी अर्थ मैं करता ही नहीं। क्या दूध खुराक नहीं है? फल खुराक नहीं है? मैं तो अिसे विलास मानता हूँ। और अिस तरह तो तुम्हारे-जैसे सभी व्रत लेकर आ सकते हैं और 'सी' क्लासकी खुराकसे बच सकते हैं। यह अुपवास मुझे निरर्थक मालूम होता है।" . . . ने दूसरा तर्क किया: "हिन्दू धर्ममें व्रत हैं। अुनके लिअे मरनेकी शक्ति हमने पैदा नहीं की। अिसलिअे जहाँ तहाँ हिन्दू धर्मकी निन्दा होती है। देखिये, मेरा सिर मुँडवा दिया, परन्तु मुसलमानकी दाढ़ी यहाँ

किसीने मूँडी है?" बापूने कहा — "तुम्हारी चोटी काटते हों, तो तुम जरूर असा कह सकते हो। वैसे तुम जो सत्याग्रह कर रहे हो, वह न तो हिन्दू धर्मको शोभा देता है और न तुम-जैसे कार्यकर्ताको। ये लोग तुम्हें मरने नहीं दे सकते। सम्भव है कि थोड़े दिन अुपवास कराकर तुम्हें दूध फल दे दें; मगर मैं नहीं मानूँगा कि अिसमें तुम्हारे सत्याग्रहकी जीत हुअी। ये लोग तो कहेंगे कि अिसके मुँहमें ठूँसो और अिससे कहो कि अब यह फालतू बात छोड़ दे। असे व्रत लेकर जेलमें नहीं आया जाता।" अुन्होंने नहीं माना। बापूने कहा — "भाअी, ये सब बातें तो मैंने ही चलाअी हैं। अिस मामलेमें मेरा कहना तो मानो।" तो भी न माने। बापूने कहा — "तुम कहते हो शरीर जाय तो भले ही जाय। यह कहनेमें और देहको जाने देनेमें भी अेक प्रकारका विलास है और अिस तरह मानकर लिये हुअे व्रतसे चिपटे रहनेमें मिथ्याभिमान है।" वे अेकसे दो न हुअे। तब बापूने कहा — "तो खैर, मैं जबरन् तुम्हें गिराना नहीं चाहता। पर तुम्हारी बुद्धि पर असर डाल सकूँ तो जरूर कहूँ कि यह छोड़ दो।" फिर भी बापूने सुपरिण्टेण्डेण्टसे कहा — "अिसे दूध दीजिये बीमार समझकर। जो आदमी अुपवास करता हो — किसी भी कारणसे सही — अुसे मरने न देना हो तो कुछ न कुछ देना चाहिये। अिसलिअे अिसे दूध या ग्लुकोज़ दीजिये।" सुपरिण्टेण्डेण्टने कहा — "नहीं, यह तो सिद्धान्तके विरुद्ध है।" बापूने कहा — "मैं आपसे आग्रह नहीं कर सकता, क्योंकि अिसकी बात मुझे सही नहीं लगती; और आप जो कहते हैं अुसमें सार है। मगर यह तो . . . जैसा आदमी है। अिसे सोचकर देना हो तो दीजिये, नहीं तो कोअी बात नहीं। मेरा आग्रह जरा भी नहीं है।"

*   *   *

अेक दो खत असे आये थे, जिनमें बाहरके आन्दोलनके बारेमें राय पूछी थी। बापूने कहा — "यह पत्र अिससे लिखा ही कैसे गया होगा? अिसे किसी भी तरहका जवाब न देना ही अिसका जवाब है।"

*   *   *

सुपरिण्टेण्डेण्टने सूचना की कि सत्याग्रही कैदियोंमेंसे कोअी वार्डर बननेको तैयार हों, तो मैं दूसरे वार्डरोंको हटा लेनेको तैयार हूँ। बापूको यह सूचना पसन्द आयी। मगर बापूसे कहा गया कि राजनैतिक कैदी तैयार नहीं हैं। 'हमारी मानेंगे नहीं, हमारा नाम काली किताबमें लिखा जायगा और आपसमें वैमनस्य फैलेगा। कुछ लोग तो असे हैं ही जो तंग करेंगे। अिन लोगोंके खिलाफ रिपोर्ट करेंगे तो नाहक अप्रिय बनेंगे।' बापूने कहा — "यह तो स्वराज्यमें भी

करना पड़ेगा। आपसमें भी बन्दोबस्त तो रखना ही होगा न? मैं होऊँ तो जरूर यह काम ले लूँ।"

* * *

बापूने आकाश दर्शन पर लेख लिखा। अुसकी नकल बहनों और भाअियोंको भेजनेकी छूट मिल गयी। जेलरकी अिच्छा हुआ कि लाओ, अिसे पढ़कर तो देख लें। अुस बेचारेने कभी आकाश दर्शन किया नहीं था। अुसका कुतूहल जाग्रत हुआ और जीवनमें पहली बार अुसने मृग नक्षत्रको आनंद भरे आश्चर्यसे देखा। और आज बापूसे यह बात कह भी दी। यह भी पूछा कि और तारोंके बारेमें भी अिसी तरह लिखनेवाले हैं क्या!!"

* * *

'बेगार' की अुत्पत्ति मुझे आज सोमाने समझाअी — "साहब, अेक पटेलसे कहा गया कि 'काँटेकी बागड़ ठीक करा दो।' पटेलने बेगारी ढेड़से कहा 'अरे, जा बागड़ कर आ।' वह गया और लकड़ियाँ जैसे तैसे खड़ी कर आया। पटेलने पूछा — 'अरे बेगारी, बागड़ कर आया?' वह कहने लगा — 'हवाका झोंका न आये, तो आपके भाग्यसे बागड़ खड़ी रहेगी। मगर हवा खूब चली तब तो अुड़ ही जायगी।' वह बोला — 'बेगारी, तूने अच्छी बागड़ लगाअी!!"

१५–४–'३२

आज सुबह बापूने . . . को हिन्दीमें पत्र लिखवाया। मुझे थोड़ी गलतफहमी थी। . . . तो कहते हैं कि "जेलकी खुराकको मैं मधुकरी माननेको तैयार हूँ, मगर मुझे तो मधुकरी माँगनेमें शर्म आती है, अिसलिअे मैंने अन्न छोड़ा है! और बाहर निकलनेके बाद शर्म आयेगी, अैसा लगता है। अिसलिअे यहाँ भी मुझे फलाहार करना चाहिये!" अिस 'बालकी खाल'की तो मैंने कल्पना ही नहीं की थी। सत्याग्रह कितना भीषण रूप धारण करेगा, अिसका यह अेक नमूना है। यह रहा . . . को हिन्दीमें लिखवाया हुआ पत्र :

"भाअी. . . ,

"तुम्हारे बारेमें बहुत सोचा, रातको भी विचार किया, हम तीनोंने मिल कर भी चर्चा की। परिणाम यही आया है कि हम निश्चयसे मानते हैं कि जिसको तुमने धर्म माना है, वह धर्म नहीं, परन्तु अधर्म है। सत्याग्रह चलते हुअे जिसका सम्बन्ध सत्याग्रहके साथ होनेका सम्भव रहता है, अुस बारेमें कोअी भी सत्याग्रही बगैर सभापतिकी सम्मतिके कुछ व्रत ले ही नहीं सकता। तुम्हारे व्रतका अर्थ जो तुमने किया है वह अनर्थ है। जेलमें मधुकरीका कुछ अर्थ रहता नहीं

है। जेल खत्म होनेके बाद मधुकरीके लिअे घूमनेमें शर्म होगी या नहीं होगी, अुसका निश्चय आज करनेका तुम्हें अधिकार नहीं है। बाहर निकलनेके वक्त दिल कैसा रहेगा, अुसका आज निश्चय करना अीश्वर जैसा होनेका दावा करने जैसी बात हुअी। हम तीनों मानते हैं कि जो कुछ भी 'क' वर्गका खाना मिलता है, वही अीश्वरार्पण बुद्धिसे खाना तुम्हारा कर्तव्य है। संन्यास धर्म भी यही बताता है।

"अब रही बात कपड़ोंकी। जेलमें खद्दर ही पहननेका आग्रह करना किसी तरह योग्य नहीं कहा जा सकता। अिस बारेमें हरअेक सत्याग्रही कैदीका धर्म है कि जब तक कांग्रेस अिस बारेमें निर्णय न करे, तब तक जेलमें खद्दर पहननेका आग्रह न रखा जाय। और अिस बारेमें भी स्वावलम्बनका तुम्हारा व्रत है अुसमें कोअी हानि नहीं आती। अिसलिअे मेरी प्रार्थना है कि अुपवास छोड़ दो और भूल स्वीकार करो। और खाना शुरू कर दो। अुपवासके कारण अेक दो दिन दूध ही लेकर या तो फल लेकर रहना अच्छा होगा। यह तो केवल वैद्यकीय दृष्टिसे लिखता हूँ। मेरी अुम्मीद है कि हम सबने तटस्थतासे जो राय दी है अुसके अनुकूल करोगे।

बापूके आशीर्वाद।"

साथमें कवरिंग लेटरके रूपमें भंडारीको लिखा:

"Dear Mr. Bhandari,

I would like the accompanying letter to be delivered to . . . at once, if you approve of the contents. They are nothing but re-exhortation to break his fast, and take ordinary diet.

Yours sincerely,
M. K. Gandhi

"P. S. If . . . accepts the advice tendered in my letter to him and breaks the fast, I hope you will issue him milk for one or two days, for it is my experience as a fasting expert that the breaking of fasts on solid food often results in great harm to the body.

M. K. Gandhi"

"भाअी श्री भण्डारी,

अिसके साथके पत्रकी अिबारत आपको पसन्द हो, तो आप . . . को तुरंत ही दे दीजियेगा। अुसमें अुपवास छोड़कर रोजमर्राकी खुराक लेना शुरू करनेके लिअे दुबारा आग्रह करनेके सिवा और कुछ नहीं है।

आपका
मो० क० गांधी

"पुनश्च: अगर श्री . . . अिस पत्रमें दी हुअी मेरी सलाह मान लें और अपना अुपवास छोड़ दें, तो मैं आशा रखता हूँ कि आप अुन्हें अेक-दो दिन दूध दे देंगे। अुपवासके विशेषज्ञ होनेके नाते मेरा यह अनुभव है कि ठोस खुराक लेकर अुपवास छोड़नेसे शरीरको बड़ा नुकसान पहुँचता है।

मो० क० गांधी"

सुपरिण्टेण्डेण्ट मिलने आये तब बापूने अुनसे कहा — "अिस पत्रसे . . . न मानें, तो आपको महादेवको अुनसे मिलने जाने देना पड़ेगा।" तीनेक बजे तक कोअी न आया, तो मुझे लगा कि शायद मान गया होगा। मगर ३॥ बजे कटेली आया और मुझे ले गया। मुझे अुसे दोअेक घण्टे समझाना पड़ा। "बापूको खादीके मामलेमें मुझे कहनेका अधिकार है, अिसलिअे वैसा ही मान लूँगा। परंतु अिस मामलेमें नहीं मानूँगा, क्योंकि मेरी यह स्थिति बापूसे स्वतंत्र है। संन्यासधर्म सब जगह पालनेकी छूट होनी चाहिये। और हमें पकड़े तो सरकारको संन्यास धर्म भी पालने देना चाहिये", वगैरा बातें अुसने कहीं। सारी बातचीत यहाँ आकर अटकी कि मधुकरी माँगनेकी मेरी हिम्मत नहीं होती, अिस लिअे मुझे फलाहार करना पड़ता है। मिष्टान्न छोड़नेके लिअे मधुकरीका व्रत लिया और मधुकरी माँगनेकी हिम्मत न हुअी, अिसलिअे अिसमें फलाहार रखा। मैंने कहा — "अिसलिअे तुमने समाधान कर लिया। अुसी तरह यहाँ भी हम देतें हैं वह मधुकरी लो — अिसे भले ही तुम समाधान कह लो। दुनियामें सत्याग्रहकी हँसी होगी और बापूको तुम्हारे दुराग्रहसे आघात पहुँचेगा। कुछ भी हो, बापू जैसे अनुभवी सत्याग्रहीकी निःस्वार्थ सलाह है कि तुम्हारी यह भूल है, तो तुम्हें अुनकी आज्ञा मान लेनी चाहिये।" आखिर अुसने मान लिया। मैं शहद, नीबू और पानी लेकर गया और पिला आया। लगोट ही पहन रखा था अुसके बदले कपड़े पहने। और बापूके शब्दोंमें — ". . .ने आखिर लाज रख ली। तुम गये और अुसने न माना होता, तो बहुत बुरा लगता। अिन लोगोंके सामने हमारी प्रतिष्ठा चली जाती। अब प्रतिष्ठा रह गयी।"

जिस 'व्यापारी प्रतीककी पहेली' पर बापू, वल्लभभाअी और मैंने बुद्धि और समय खर्च किया था, अुसमें हमारे नाम अेक भी अिनाम नहीं आया। वल्लभभाअी हँसते हँसते कहने लगे — "अभागे समझे गये और साथ ही बेवकूफ बने। पूँछोंकी अैसी ही पहेलीके लिअे जो मेहनत कर रहे थे, अुसके बारेमें बापू कहने लगे — "अिसमें अकेली बुद्धिका काम नहीं है। बहुत कुछ किस्मतका खेल है। अैसी किस्मत पर अपनेसे न रुपया खर्चा जा सकता है, न वक्त।"

* * *

. . . की बात परसे जो निर्मल महाराष्ट्री सेवक हमें मिले हैं, अुनकी बात निकली। बापूने कहा अिनमें देव और दास्ताने पहली श्रेणीके माने जायँगे। विनोबा और काकाको कौन महाराष्ट्री कहेगा? फिर काकाके बारेमें बापूने कुछ स्मरणीय अुद्‌गार प्रगट किये — “काकाका अनुभव जैसा मुझे पिछली बार जेलमें हुआ, वैसा पहले कभी नहीं हुआ था। काकामें महाराष्ट्रीयता रही ही नहीं। काकाकी अपार मृदुता तो मैं जेलके बाहर शायद ही देख पाता। तुम कभी काकाके रोनेकी कल्पना कर सकते हो? मैंने अुन्हें दड़ दड़ आँसू गिराते देखा। कअी मौकों पर हमारे बीच वादविवाद होता। काका मुझे कहते — ‘मुझमें कअी कुटेवें हैं। अिन सबको आप जैसे जैसे देखते जायँ, वैसे वैसे निर्दय बनकर आपको मुझे कहना है और सुधारना है।’ मैंने कहा था — ‘यह तुम मुझमें जो विश्वास रखते हो, अुसका मैं पूरा अुपयोग करूँगा।’ और अिस पर अमल करके जब कभी मेरी तरफसे कड़ी आलोचना होती, तो काका अपनी भूल मानकर आँसू गिराते। सत्याग्रहके सिद्धान्त तो काका घोल कर पी गये हैं। सिर्फ अुनके स्वभावमें कुछ अनिश्चिततायें अैसी हैं कि सामने-वाले पर जितना असर पड़ना चाहिये अुससे कम पड़ता है। देखो न जब यहाँ आये, तो कुछ बातोंमें अुन्हें पूर्ण आत्मश्रद्धा ही नहीं थी; कहते कि यह काम मुझसे नहीं होगा, वह काम करनेसे मेरी साँस चढ़ जायगी। ९६ पौण्ड वजन लेकर आये और बहुत कमजोरी महसूस करते थे। मैंने अुनसे काम करना शुरू कराया, चलना फिरना शुरू कराया, खानापीना शुरू कराया और ज्यादा नहीं तो बीसेक पौंड वजन बढ़ाया। मुझे लगता है कि अुनके साथियोंने भी अुन्हें अपंग कर डाला था। वह अपंगपन यहाँ जाता रहा।” अेक दिन काकाके लिअे डोअीलके पक्षपातके बारेमें कहने लगे — “यदि डोअीलको काकाके प्रति खूब पक्षपात हो, तो अिसमें आश्चर्य नहीं। डोअीलने काकाको मुसलमानोंके लिअे सत्याग्रह करते देखा। अिसी सत्याग्रहकी मीमांसा डोअीलने अिनसे सुनी होगी, अनेक चर्चायें हुअी होंगी, फिर तो डोअील जैसा आदमी अिनके गुणोंसे और शक्तिसे आकर्षित हो तो अुसमें आश्चर्य ही क्या?”

अिसमें आश्चर्य नहीं है तो यहाँ यह भी कहा जा सकता है कि काकाके सहवासको बापूने आकाश दर्शन सम्बन्धी अपने लेखमें ‘सत्संग’ बताया है, और मुझे भीतर ही भीतर महसूस हुआ है कि बापू अिस सत्संगके लिअे अक्सर अुत्सुक रहते हैं! यह सत्संग मेरे पास तो अिन्हें क्या मिले? मुझे डर है कि वह वल्लभभाअीके पास भी नहीं मिलता।

१६–४–'३२

सोमा रसोअियेका परिचय कराया जा चुका है। मारुति वॉडर, जो बापूकी सेवामें रखा गया है, आज तक मोटी बुद्धिका बेपढ़ा और अुसीकी भाषामें 'अनाड़ी गँवार' माना जाता था। अिस बेचारेको मोटे मोटे काम सूझ पड़ते हैं। बारीक काम सूझ नहीं पड़ते। और हमारा वह अमीर ठाकरड़ा अुसे बहुत बार कहा करता — "कैसा अनाड़ी है। किसनी अुलटी पकड़ता है, तो अभी तक सुलटी पकड़ना सीखता ही नहीं।" यह मोटी बुद्धिका अनाड़ी आज दोपहरको मेरे पास आया और अुसने जो संभाषण किया, अुससे मेरी आँखें खुल गयीं और आँसुओंसे भीग गयीं। मारुतिमें कितनी कोमलता है, यह मैने आज तक न जाना। अिस पर मुझे खेद हुआ। असहयोगियोंकी भीड़ होनेके कारण सरकारको पुराने अपराधियोंको छोड़ना शुरू करना पड़ रहा है। अिस तरह लगभग पौने चारसौ कैदियोंका छुटकारा होगा। मारुतिने मुझे बहुत दफ़े पूछा — "अिसमें तो बहुतसे बदमाशोंको भी सरकार छोड़ने लगी है। यह किस लिअे?" सरकारको अिनकी बदमाशी सहन हो जाती है, हम लोगोंकी बर्दाश्त नहीं होती। अुसे अितना कह कर मैं शान्त हो जाता। अिन भाग्यशाली लोगोंमें मारुतिकी भी बारी आअी और अुसे कल छूटना है, यह जान कर वह मेरे पास आया। मुझे खबर थी। मैंने कहा — "मारुति, हमें भूल तो नहीं जायगा न?" मारुति गद्‌गद हो गया और बोला — "जन्म जन्मके पुण्य किये होंगे, तब जेल-जैसी जगहमें महात्माके दर्शन हुअे। सो कौन भूल सकता है? मैं बाहर होता तो कभी यह दर्शन पा ही नहीं सकता था। अिसके बदलेमें मैं क्या करूं? अपना आभार किस तरह प्रगट करूँ? मैं तो गरीब आदमी हूँ, अेक खेत है, जैसे तैसे गुजर करूँगा। मगर मुझे महात्माके चरणोंमें कुछ भेंट करनेका लोभ है। अिन्हें किसी बातकी कमी नहीं। अिनकी अैसी स्थिति है कि ये जो माँगें सो सरकार और लोग अिनके सामने हाजिर कर सकते हैं। मगर मुझ गरीबको अितना लोभ है कि मैं अुनके लिअे कुछ न कुछ भेजूँ। आप मुझे बताअिये कि क्या भेजूँ?" मैंने कहा — "भले आदमी, तुझे कुछ भी नहीं भेजना है। तूने यहाँ जो प्रेम भरी सेवा की, वह क्या कम है?" मारुतिने फौरन जवाब दिया — "अरेरे! अिसे आप सेवा कहते हैं? महात्मा न होते तो यहाँ और कुछ मेहनत किये बिना रोटियाँ कौन देनेवाला था? सरकारने काम सौंपा और मैंने किया, अिसमें मुझे यश किस बातका? यश तो तब हो जब मैं स्वतंत्र होअूँ और स्वेच्छासे अुनकी सेवा कर पाअूँ। मैं सेवा करनेके लायक ही कहाँ हूँ? ये कौन हैं? करोड़ों आदमी जिन्हें देवता मानकर पूजते हैं, जिन्होंने खुद जेलमें आकर हमें छुड़वाया। कलियुगका यह कैसा कौतुक है! अिन्होंने कितने कष्ट अुठाये हैं! अिनके साथियोंने कितने कष्ट सहन किये हैं! प्यारेलाल थे वे बेचारे

११ दिनका अुपवास कर रहे थे। अुस परसे अुन्हें गालियाँ दी जाती थीं, टट्टी पेशाबके लिअे भी ये दुष्ट अुन्हें जाने नहीं देते थे। यह सब अुन्होंने किस लिअे किया था ? जिनके अैसे अैसे साथी मौजूद हैं, अुनकी सेवा हमसे किस तरह हो सकती है ? अब कभी अुन्हें देख सकूँगा या नहीं, यह भी भगवान ही जानता है!" यह कहकर लम्बा निश्वास डाला और फिर आग्रह करने लगा — "मुझे बताअिये, भाअी बताअिये, मैं अिनके लिअे क्या भेजूँ? कुछ खानेको भेजूँ जिससे यह मान कर मुझे तृप्ति हो कि अिन्होंने मेरे हाथका खाया?" अुसे जवाब देनेकी परेशानीमें समय जा रहा था कि बापू और वल्लभभाअी, जो मुलाकातके लिअे जेलके दरवाजे पर गये थे, आ पहुँचे और हमारी बातचीत बंद हो गयी।

* * *

बापूके लोभकी — सेवाके लोभकी — कौन बराबरी कर सकता है, अुसे कौन समझ सकता है ? हाथ दुखता है, डॉक्टर मना कर रहे हैं, फिर भी यह कहकर कि दर्दका चरखा चलानेसे कोअी वास्ता नहीं है, आज ४०५ तार तक पहुँचे हैं और कहते जा रहे हैं — "देखो, प्रगति होती जा रही है न?" अुसके साथ साथ अुर्दू ताजा करनेका, तेजीसे पढ़नेकी शक्ति प्राप्त करनेका लोभ तो रहता ही है। रैहाना बहनके पत्र अुर्दूमें आते हैं। अुन्हें अुर्दूमें लिखनेकी कोशिश करके अुनसे भूलें सुधरवाते हैं और मेरी 'अुस्तानी' कहकर अुन्हें सम्बोधन करते हैं और अपनेको अुनका शागिर्द लिखते हैं। यह सब हो रहा था, पर अिससे सन्तोष न करके अब अुर्दूकी सारी किताबें जेलके पुस्तकालयसे मँगावी ली हैं और सवेरे खाते खाते अुन्हें पढ़ना शुरू किया है। आकाश-दर्शनसे तो अीश्वरकी विभूतियोंके दर्शनकी घूँट पर घूँट मिलती हैं, अिसलिअे अिस विषयकी पुस्तकोंका भण्डार बढ़ता जा रहा है। पत्रव्यवहार भी बढ़ता जा रहा है। और रस्किनकी पुस्तकें पढ़नेमें वे अैसे डूब जाते हैं कि अुस वक्त अैसा लगता है कि अिसमेंसे सूझनेवाले विचारोंको बैठे बैठे लिख डालें।

. . .की तबीयतका हाल जाननेके लिअे सुपरिण्टेण्डेण्टकी अिजाजत लेकर मुझे भेजा। अुन्हें दस्त नहीं हुआ, यह सुनकर अुनके अिलाजके लिअे तुरन्त जेलरको पत्र लिखा।

१७-४-'३२

कल बापूके लोभका जिक्र किया था। आज डॉक्टरका कहना माननेकी गरजसे — यानी बायें हाथकी कोहनीकी हड्डीको आराम देनेकी अुसकी सलाह माननेके अुद्देश्यसे — बापूने नअी ही युक्ति निकाली! बारडोलीमें बना हुआ 'यरवदा चक्र' अैसा है कि अुसका तकुवा अुलटा और सुलटा दोनों तरहसे चढ़ाया जा सकता है। यह चरखा बायें हाथसे चलाया जा सके, अिस ढंगसे अुस पर अुलटा तकुवा चढ़ाकर अुस

चरखेको चलाने लगे। अिसमें आराम मिलना कितना सम्भव होगा, यह तो मैं नहीं समझ सका। कारण बायाँ हाथ तार निकालनेके बजाय चक्कर चलाता है और दायाँ तार निकालता है। सिर्फ दोनों पर पड़नेवाला जोर अदलबदल हो जाता है। मगर बापूने तो यह प्रयोग शुरू कर ही दिया। थोड़ी देर तो तार निकालना कठिन हो गया। नासिकमें मेरा दायाँ हाथ बहुत दुखता था, तब मैंने यह तरकीब करके देखी थी। मगर मैं अेक भी तार नहीं निकाल सका था, अिसलिअे अुसे छोड़ दिया था। परन्तु बापू तो चलाते ही रहे। कोअी डेढ़ घंटे अुस पर प्रयोग जारी रखा और सात पूनियाँ कातीं। सातवीं पूनीसे तो हमेशाकी तरह ही तार निकल रहे थे। अिसलिअे खुश होकर मुझे कहने लगे — "देखो, ९५ तार निकल आये हैं और मेरे रोजके ३७५ पूरे हो गये हैं, क्योंकि कलके २८२ बचे हुअे हैं। मैंने कहा — "बापू, अिसमें आराम तो थोड़ा ही मिलता है।" बापू कहने लगे — "आराम तो आदत पड़ जायगी तब मिलेगा। न मिले तो भी यह घाटेका व्यापार नहीं है, क्योंकि दायाँ हाथ कभी बिलकुल रुक जाय, तो यह आदत पड़ी हुअी अच्छी है!"

आज मेजर मेहताने बापूकी कोहनी पर बिजलीसे दबाव देनेका अिलाज किया।

मेजर मार्टिन छुट्टी पर गया तो अपने घरकी फालतू बोतलें यहाँके अस्पतालके लिअे भेज गया। बापूको यह बात मालूम हुअी तो बोले — "देखो तो अिसे जेलियोंका कितना खयाल है! ये लोग अैसे हैं कि जहाँ अिनका स्वार्थ न हो अुन सब मामलोंमें सीधे और अपना कर्तव्य समझनेवाले होते हैं।"

गरीबी — दारिद्र्यका हेनरी ज्यॉर्जका वर्णन कैसा गले अुतरनेवाला है? Poverty is the open-mouthed, relentless hell which yawns beneath civilized society. गरीबी सभ्य समाजके पेंदेमें मुँह फाड़े खड़ा हुआ निष्ठुर नरक है।

१८-४-'३२

आज बापूने यरवदा चक्रके मोढ़ियेमें फेरबदल किया। कल वाले चरखेकी गिर्रियाँ ठीक नहीं थीं, अिस कारण अपना ही चरखा ठीक किया, और बायें हाथका प्रयोग जारी रखा। परिणाम कलसे अच्छा रहा। कल ९५ तार पूरे करनेमें ३॥ घण्टे लगे थे, आज ८५ तार अढ़ाअी घण्टेमें निकले। वल्लभभाअीने कहा — "अिससे कुछ भी फायदा नहीं होगा। 'पाकी कोठीअे काना न चढे।' हमारा पुराना तरीका चलता था, अुसे चलने दीजिये न।" बापू कहने लगे — "कलसे आज अच्छी प्रगति हुअी है। अिससे कोअी अिनकार नहीं कर सकता।" वल्लभभाअी कहने लगे — "आश्रममें किसीको मालूम हो

जायगा, तो बायें हाथसे कातना शुरू कर देगा और यह पन्थ चल पड़ेगा।" बापू — "मालूम तो होगा ही, अबकी बार लिखूँगा।" वल्लभभाओी जरा गम्भीर होकर — "अिससे तो यही अच्छा था कि बच्चोंको ही दोनों हाथसे चरखा चलाना सिखाया होता।" बापू बोले — "ठीक बात है। जापानमें तो बच्चोंको दोनों हाथ काममें लेना सिखाया ही जाता है।"

नारणदासभाओीको पत्र लिखा। अुसमें नये प्रयोगकी अुत्पत्तिका वर्णन किया, और अुससे पैदा होनेवाले विचार बताये। और सलाह दी कि आश्रममें जिनसे हो सके, वे दायें बायें दोनों हाथ रोजकी अनेक क्रियाओंके लिअे अिस्तेमाल करें।

*　　　　*　　　　*

आसामसे ६१ वर्षके अेक बूढ़ेने अपने काते और अपने बुने हुअे बारीक कपड़ेका टुकड़ा बापूके पहननेके लिअे भेजा है। अिस तरहके कितने ही भक्त देशके कोने कोनेमें विद्यमान होंगे।

*　　　　*　　　　*

पुरुषोत्तमने राजकोटसे अेक लम्बा खत लिखकर तीन सवाल पूछे थे: (१) जैन दर्शनके निरीश्वरवाद और गीताके अीश्वरवादके भेदके विषयमें। (२) अीश्वरमें कर्तृत्व न हो तो कृपा करनेवाला कौन? भक्ति करनेवालेके लिअे अीश्वरकृपाके बिना श्रद्धाका आलम्बन और है ही क्या? मनुष्यकी प्रार्थना मनुष्यकी शुभेच्छा ही है या अुससे ज्यादा और कुछ? (३) सत्य ही अीश्वर है, बापूकी अिस व्याख्याका रहस्य।

अुसे बापूने विस्तारसे अुत्तर दिया:

१. जैन निरूपण और साधारण वैदिक निरूपणके बीच मैंने विरोध नहीं पाया, मगर केवल दृष्टिकोणका ही फर्क है। वेदका अीश्वर कर्ता-अकर्ता दोनों है। सारा जगत् अीश्वरमय है, अिसलिअे अीश्वर कर्ता है। मगर वह कर्ता नहीं है, क्योंकि वह अलिप्त है। अुसे कर्मका फल भोगना नहीं पड़ता। और जिस अर्थमें हम कर्म शब्द अिस्तेमाल करते हैं, अुस अर्थमें जगत अीश्वरका कर्म नहीं है। गीताके जो श्लोक तूने अुद्धृत किये हैं, अुनका अिस तरह सोचने पर मेल बैठ जाता है। अितना याद रखना: गीता अेक काव्य है। अीश्वर न कुछ बोलता है, न करता है। अीश्वरने अर्जुनसे कुछ कहा हो, सो बात नहीं है। अीश्वर और अर्जुनके बीचका संवाद काल्पनिक है। मैं तो अैसा नहीं मानता कि अैतिहासिक कृष्ण और अैतिहासिक अर्जुनके बीच अैसा संवाद हुआ था। गीताकी शैलीमें कुछ भी असत्य है या अयुक्त है, सो भी नहीं। अिस तरहसे धर्मग्रंथ लिखनेका रिवाज था। और आज भी कोअी संस्कारी व्यक्ति लिखे, तो अुसमें कोअी दोष नहीं माना जा सकता। जैनोंने केवल न्यायकी, काव्यरहित

यानी रूखी बात कह दी और बता दिया कि जगतकर्ता कोअी अीश्वर नहीं है। अैसा कहनेमें कोअी दोष नहीं, मगर जनसमाज रूखे न्यायसे नहीं चलता। अुसे काव्यकी जरूरत रहती ही है। अिसलिअे जैनोंके बुद्धिवादको भी मन्दिरोंकी, मूर्तियोंकी और अैसे अनेक साधनोंकी जरूरत मालूम हुअी है। वैसे केवल न्यायकी दृष्टिसे अिनमेंसे कुछ भी नहीं चाहिये।

२. असलमें पहले प्रश्नके अुत्तरके गर्भमें तेरे दूसरे सवालका जवाब आ जाता है, जैसे मैं यह मानता हूँ कि तेरा दूसरा प्रश्न भी पहलेके गर्भमें है ही। 'कृपा' शब्द काव्यकी भाषा है। भक्ति ही काव्य है। मगर काव्य कोअी अनुचित या घटिया चीज या अनावश्यक वस्तु हो सो बात नहीं है। यह निहायत जरूरी चीज है। पानी दो हिस्से हाअिड्रोजन और अेक हिस्सा ऑक्सिजनसे बना हुआ है, यह न्यायकी बात हुअी। मगर पानी अीश्वरकी देन है, यह कहना काव्यको बात हो गयी। अिस काव्यको समझना जीवनका आवश्यक अंग है। पानीका न्याय समझना आवश्यक अंग नहीं है। अिस तरह यह कहना कि जो कुछ होता है वह कर्मका फल है अत्यंत न्याययुक्त है। मगर कर्मकी गति गहन है। हम देहधारी अितने ज्यादा पामर हैं कि मामूलीसे मामूली परिणामके लिअे भी जितने कर्म जिम्मेदार होते हैं, अुन सबका ज्ञान हमें नहीं हो सकता। अिसलिअे यह कहना कि अीश्वरकी कृपाके बिना कुछ नहीं होता, ठीक है और यही शुद्ध सत्य है। और किसी देहमें रहनेवाली आत्मा अेक घड़ेमें रहनेवाली हवाकी तरह कैदी है और अुस घड़ेमेंकी हवा जब तक अपनेको अलग समझती है, तब तक वह अपनी शक्तिका अुपयोग नहीं कर सकती। अिसी तरह शरीरमें कैद आत्मा अगर यह माने कि वह खुद कुछ करती है, तो सर्वशक्तिमान परमात्माकी शक्तिसे वंचित रहती है। अिसलिअे भी यह कहना कि जो कुछ होता है वह अीश्वर ही करता है, वास्तविक है और सत्याग्रहीको शोभा देता है। सत्यनिष्ठ आत्माकी अिच्छा पुण्य होती है और अिसलिअे वह फलती ही है। अिस विचारसे जिस प्रार्थनाके श्लोक तूने अुद्धृत किये हैं, वह प्रार्थना हमारी निष्ठाके हिसाबसे सारी दुनियाके लिअे भी जरूर फलेगी। जगत हमसे भिन्न नहीं है, न हम जगतसे भिन्न हैं। सब अेक दूसरेमें ओतप्रोत हैं और अेकके कामका असर दूसरे पर हुआ करता है। यहाँ यह समझ लेना चाहिये कि विचार भी कार्य है, अिससे अेक भी विचार बेकार नहीं जाता। अिसी लिअे हमें हमेशा अच्छे विचार करनेकी आदत डालनी चाहिये।

३. अीश्वर निराकार है और सत्य भी निराकार है, अिसलिअे सत्य अीश्वर है, यह मैंने न तो देखा है और न घटाया है। मगर मैने यह देखा कि अीश्वरका संपूर्ण विशेषण तो सत्य ही है, बाकीके सब विशेषण अपूर्ण हैं।

अीश्वर शब्द भी विशेषण है और अनिर्वचनीय महान तत्त्वको बतानेवाला अेक विशेषण है। मगर अीश्वरका धातु-अर्थ लें, तो अीश्वर शब्द फीका लगता है।

अीश्वरको राजाके रूपमें देखनेसे बुद्धिकी तृप्ति नहीं होती। अुसे राजाके रूपमें देखनेसे हममें अेक प्रकारका भय भले ही पैदा हो जाय और अिससे पाप करते डरें और पुण्य करनेका प्रोत्साहन मिले। मगर अिस तरहका भयवश किया हुआ पुण्य भी लगभग पुण्य नहीं रहता। पुण्य करें तो पुण्यकी खातिर ही करें, अिनामके लिअे नहीं। अैसे अनेक विचार करते करते अेक दिन अैसा समझमें आ गया कि अीश्वर सत्य है, यह कहना भी अधूरा वाक्य है। सत्य ही अीश्वर है, यह जहाँ तक मनुष्यकी वाचा पहुँच सकती है वहाँ तकका पूर्ण वाक्य है। सत्य शब्दका धात्वर्थ विचारने पर भी यही परिणाम आता है। सत्य सत् धातुसे निकला हुआ शब्द है और सत्के मानी हैं तीनों कालमें होना। तीनों कालमें जो हो सकता है, वह तो सत्य ही है और अुसके सिवा दूसरा कुछ है नहीं। मगर सत्यको ही अीश्वरके रूपमें देखनेसे श्रद्धा जरा भी कम न होनी चाहिये। मेरे खयालसे तो अुलटे बढ़नी चाहिये। मुझे तो यही अनुभव हुआ है। सत्यको परमेश्वरके रूपमें जाननेसे अनेक प्रपंचोंसे छूट जाते हैं। चमत्कार देखने या सुननेकी अिच्छा नहीं रहती। अीश्वरदर्शनका अर्थ समझनेमें मुश्किल हो सकती है, सत्यदर्शनका अर्थ समझनेमें कठिनाअी है ही नहीं। सत्यदर्शन खुद भले ही मुश्किल हो, मुश्किल है ही; मगर जैसे जैसे सत्यके नजदीक पहुँचते जाते हैं, वैसे वैसे हम अिस सत्यरूपी अीश्वरकी झाँकी देखने लगते हैं। अिसलिअे पूर्ण दर्शनकी आशा बढ़ती है और श्रद्धा भी बढ़ती है।

१९-४-'३२

आज लक्ष्मीदासभाअीने बापूकी सूचनाओं और सुधारों वाला चरखा भेजा। अिसमें भी बापूने कहा — "अभी अमुक सुधार हो सकते हैं।" लक्ष्मीदास नारियलकी रस्सीके चमरखोंके पक्षपाती हैं, बापू सूतकी डोरीके चमरखोंके पक्षपाती हैं। नारियलकी रस्सीसे कठोर आवाज निकलती है। मैं नया चरखा चलाने बैठा और अुसकी आवाज निकलनी शुरू हुअी कि बापूकी अँतड़ियाँ कट रही हों अैसा मुँह बना कर कहने लगे — "मुझे अैसा दुःख हो रहा है जैसे किसी कलाकारको अपनी कृतिमेंसे बेहूदा स्वर निकलते सुनकर होता है।" अिसके मोढ़ियेमें खुद कुछ फेरबदल सुझाकर यहाँके बढ़अीसे नया मोढ़िया बनवाया और अुसका परिणाम बायें हाथसे भी अच्छा निकला। अक्सर अैसा देखा जा सकता है कि बापू मानो जन्मसे ही यंत्रशास्त्री भी हैं और वैद्य भी। वल्लभभाअीके लिअे गंधकका पाक आया, बापूने तुरन्त अुसका पृथक्करण कर दिया। वल्लभभाअी — "आपको यह

सब कैसे मालूम हो जाता है?" बापूने कहा — "मैं अेक साल कम्पाअुंडर भी तो था न?"

*　　　*　　　*

सुरेन्द्रजीने पहले ब्रह्मचर्यके बारेमें पत्र लिखा था, अुसका जवाब बापूने दिया था। सुरेन्द्रजीने फिर शंकायें भेजीं। अुनके अुत्तरमें बापूने यह महत्वका जवाब लिखवाया :

"तुम्हारे पत्रका अुत्तर देनेकी जल्दी नहीं थी। और यह सोच कर जवाब रोक रखा कि कदीके नाते मर्यादा रखें तो अच्छा है। पहलेके (विलायतवाले) पत्रमें तुमने मुझे जो लिखा था, वह मैं बिलकुल भूल गया हूँ। मेरे बारेमें जो मनमें आये अुसे लिखनेमें संकोच रखना ही न चाहिये; संकोच रखना असलमें दोष ही माना जायगा। सम्बन्धी और साथी मेरी कुछ भी आलोचना मनमें करते हों, तो अुसे मेरे सामने रखनेसे मुझे सीखनेको मिलेगा; क्योंकि अिस आलोचनामें वैर भाव तो होगा ही नहीं। और प्रियजनोंके बारेमें मनमें कुछ भी आ जाय, तो अुसे झट कह देना प्रेम और मित्रताकी निशानी है। जो प्रेम कहनेमें संकोच रखे वह अधूरा है।

"'सभी हालतोंमें कायम रह सके वही ब्रह्मचर्य है', अिसमें 'सभी हालतों'का पूरा अर्थ करना चाहिये। किसी भी लालचमें या किसी भी प्रलोभनमें आ पड़े, तो भी जो टिका रहे वह ब्रह्मचर्य है। किसीने पत्थरका पुरुष बनाया हो और अुसके पास कोअी रूपवती युवती जाय, तो पत्थर पर अुसका असर नहीं होगा। अिसी तरह जो पत्थरकी तरह रह सके वह ब्रह्मचारी है। मगर जैसे पत्थरकी मूर्ति न कानोंसे काम लेती है, न आँखोंसे, वैसे ही पुरुष भी लालच ढूँढ़ने न जाय। वह तो ब्रह्मचारी नहीं है। अिसलिअे अपनी तरफसे तो पुरुषका अेक भी कृत्य अैसा नहीं होना चाहिये, जिसे विकारके चिह्नके तौर पर माना जा सके। मगर बड़ा सवाल तुम्हारे मनमें यह है: स्त्री जातिका दर्शन और अुसका संग अनुभवसे संयमका विघातक पाया जाता है, अिसलिअे त्याज्य है। अिस विचारमें मुझे दोष दिखता है।

"जो संग स्वाभाविक है और जिसका मूल सेवा है, अुसे छोड़ कर ही जो संयम पाला जा सके, वह संयम नहीं, ब्रह्मचर्य नहीं। वह तो बगैर वैराग्यका त्याग है। अिसलिअे यह संग मौका पाकर बढ़ेगा ही। 'पर'के दर्शनोंके बिना विषयोंकी निवृत्ति हो ही नहीं सकती, यह वेद-वाक्य है। मगर अिससे अुलटा वाक्य भी अुतना ही सच है। विषयोंकी निवृत्तिके बिना 'पर'के दर्शन नहीं हो सकते। यानी दोनों चीजें साथ साथ चलती हैं। अन्तिम वचन जरा समझ लेनेकी जरूरत है। रस तो 'पर'के दर्शनके बाद मिट जाता है, यानी

विषयोंके शान्त हो जाने पर भी भीतर भीतर अगर रस रह जाता है, तो 'पर'के दर्शन हुअे बिना विषय वासनाके जाग्रत होनेकी संभावना रह जाती है। साक्षात्कार होनेके बाद वासनामात्र असंभव हो जाती है। यानी पुरुष नरजाति न रहकर नपुंसक हो जाता है। अिसका अर्थ यह हुआ कि वह अेक न रहकर शून्य बन जाता है। दूसरे शब्दोंमें कहें तो वह परमेश्वरमें समा जाता है। जहाँ वासना नहीं रही, वहाँ रस भी क्या और विषय भी क्या? अिस तरह बुद्धिको तो यह बिलकुल सीधा लगता है। यहाँ 'पर' और जहाँ जहाँ अीश्वर, ब्रह्म, परब्रह्म वगैरा शब्द आते हैं, वहाँ वहाँ 'सत्य' शब्द अिस्तेमाल करके अर्थ करने और समझनेसे वस्तुस्थिति स्पष्ट हो जायगी और साक्षात्कारका अर्थ भी आसानीसे समझमें आ जायगा। यह खेल आत्म-वंचनाका नहीं है। आश्रममें जो कुटुम्ब भावनाके नाम पर अन्तरमें विषयोंका सेवन करते होंगे, वे तो तीसरे अध्याय वाले मिथ्याचारी हैं। हम यहाँ सत्याचारीकी बात कर रहे हैं। और यह सोच रहे हैं कि सत्याचारीको क्या करना चाहिये। अिसलिअे आश्रममें अगर ९९ फीसदी लोग कुटुम्ब भावनाका ढोंग करके विषयोंका सेवन करते हों, तो भी अगर १ फीसदी भी बाहर और भीतरसे केवल कुटुम्ब भावनाका ही सेवन करते हों, तो अिससे आश्रम कृतार्थ हो जायगा। और अिससे आश्रमका सोचा हुआ आचरण अुचित माना जायगा। अिसलिअे हमें यह नहीं सोचना है कि दूसरा क्या करता है। हमें तो यही विचार करना है कि अपने लिअे क्या हो सकता है। अिसके साथ ही साथ अितना तो सही है ही कि किसीका महल देख कर हम अपनी झोंपड़ी न अुखाड़ें। कोअी कुटुम्बभावनासे रह सकनेका दावा करे, मगर हम अपनेमें यह शक्ति न पायें तो अुसके दावेको स्वीकार करते हुअे भी हम तो कुटुम्बकी छूतसे दूर ही रहें। आश्रममें हम अेक नया, और अिसलिअे भयंकर प्रयोग कर रहे हैं। अिस कोशिशमें सत्यकी रक्षा करते हुअे जो घुलमिल सकें, वे घुलमिल जायँ। जो न घुलमिल सकें, वे दूर रहें। हमने अैसे धर्मकी कल्पना नहीं की है कि आश्रममें सभी सब तरहसे स्त्री मात्रके साथ घुलेंमिलें। अिस तरह घुलने-मिलनेकी हमने सिर्फ छूट रखी है। धर्मका सेवन करते हुअे जो अिस छूटको ले सकता है, वह ले ले। मगर अिस छूटके लेनेमें जिसे धर्म खो बैठनेका डर है, वह — आश्रममें रहते हुअे भी — अुससे सौ कोस दूर भाग सकता है। अेक आश्रमवासी . . .को अपनी लड़की समझ सकता है और अुसी तरह अुसके साथ व्यवहार रखना चाहिये। मगर दूसरा आश्रमवासी अिच्छा होते हुअे भी अैसा व्यवहार मनमें पैदा न कर सके, तो अुसका धर्म है कि वह . . .का संग छोड़ दे। मैंने यहाँ मृत देहकी मिसाल दी है। अैसा दृष्टान्त लेनेमें भी शायद दोष हो तो अिन दोके बजाय 'अ' 'ब' समझ लिये जायें। 'क' का मन 'ब'के

प्रति 'अ'के जैसा न रह सके, तो 'क'के लिअे आश्रममें 'ब'को न छूना ही धर्म है। और अिस धर्मका पालन जहाँ जहाँ मुझे मालूम हुआ है, वहाँ वहाँ करानेकी मैंने कोशिश की है।

"कुर्सीकी बात भूल जाने लायक है। अिसे महत्व देनेकी जरूरत नहीं है। तुम 'कल्याणकृत्' हो, अिसलिअे आखिरकार सब ठीक ही होकर रहेगा। बुद्धिका अुपयोग तो होता ही रहेगा। बुद्धिको रूँध डालनेकी जरा भी जरूरत नहीं है। भूलें करते करते सच्चे प्रयोग भी होंगे। और अैसी तो कोअी बात है ही नहीं कि बुद्धिके जितने प्रयोग करते हो, वे सभी गलत निकलते हैं। सौमें पाँच प्रयोग गलत साबित हुअे हों, तो अुससे क्या हुआ? हमें भूलें करनेका अधिकार है। जहाँ भूल होगी, वहाँसे फिर गिनेंगे और आगे बढ़ेंगे।

"लन्दनमें किस मौके पर मैं बोला था, यह तो मुझे याद नहीं है। मगर जो व्रत पालन करता है, वह स्त्री समाजकी ज्यादा सेवा कर सकता है, यह वाक्य तो सच है ही। और जिस हद तक मै अुसमें सफल हुआ होअूँगा, अुस हद तक सेवा ज्यादा हुअी ही होगी, यह बात निःसन्देह माननी चाहिये।"

*　　　*　　　*

'क' वर्गवालोंको नोटबुकें वगैरा देनेके बारेमें बात करते हुअे बापूने कहा — "मैं तो सबको दूँ। फिर यह देखूँ कि कौन अुसका दुरुपयोग करता है। मगर पहले यह तय करनेका विचार करूँ कि सदुपयोग कौन करेगा। विलायतमें महादेव और देवदास वहाँकी जेल देख आये थे। ये कहते थे कि वहाँ कैदियोंको कितनी ही मामूली सुविधायें अैसी मिलती हैं, जो यहाँ नहीं मिलतीं। बात यह है कि हम यह भूल जाते हैं कि हम और ये कैदी अेकसे हैं। मेरे सामने क्वीन कहता था कि अिन लोगोंमें और हममें फ़र्क अितना ही है कि ये पकड़े गये हैं और हम नहीं पकड़े गये। खूनी खून कर डालता है और हम कितनों ही के खून मन ही मन करना चाहते होंगे, मगर डर या किसी भी भावनाके कारण खून नहीं करते, यही फ़र्क है।" सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब अिस बातका मर्म नहीं समझ सके। अुन्होंने कहा — "मेरे सामने क्वीनने अैसी बात कभी नहीं कही। आपके आगे कही होगी, तो भावावेशमें आकर कही होगी।" अिस आदमीको अैसा लगा कि अिस बातको कबूल करनेमें कुछ छोटापन आ जाता है! तीव्र बुद्धिकी जितनी कमी अिस आदमीमें देखी, अुतनी और किसीमें नहीं।

आखिर आज दुखनेवाला दाँत अुखड़वाना पड़ा। वल्लभभाअीकी आलोचना सच्ची थी। ४० वर्षकी अुम्रमें ही दाँत गिरने लगे, यह क्या? अिसमें शक नहीं कि दयाजनक स्थिति है। मुझे याद है मेरे पिता भी अिसी अुम्रमें दाँतके दर्दसे पीड़ित रहते और दाँत अुखड़वाते थे। मेजर मेहता खुद ही अुखाड़ गये। अिस आदमीके विवेक पर बापू मुग्ध हैं। दो खतोंमें बापूने मेजरकी तारीफ की है।

२०-४-'३२

* * *

आज शामको सैरसे आकर पैर पुँछाते पुँछाते बोले — "हमने रोममें वेटिकनमें अैसा मसीहका जो पुतला देखा था, वह नजरसे हटता ही नहीं। अुसके शरीर पर कपड़ेका सिर्फ़ अैसा ही अेक टुकड़ा था, जैसा हमारे अपढ़ देहाती कमरके आसपास लपेट कर रखते हैं। अिसके सिवा और कुछ नहीं था! और अुसकी करुणा तो बयान ही नहीं की जा सकती।

वल्लभभाअीने 'लीडर'से अेक अुद्धरण पढ़ सुनाया। यह अेडवर्ड टॉम्सनका विलायतके 'स्पेक्टेटर'को लिखा हुआ अेक पत्र था। अिस पत्रमें डायरकी नअी ही सफ़ाअी है। वह यह कि जब वे माअिल्स अर्विंगके साथ दिल्लीमें खाना खा रहे थे, तब अर्विंगने यह बात कही थी कि डायर जलियाँवालाके बाद बोला था — 'मुझे पता नहीं था कि बाहर निकलनेका दूसरा दरवाजा ही नहीं होगा। और लोग बैठे रहे अिसलिअे मैंने मान लिया कि ये लोग हमला करेंगे। अिस बातको छह महीने हो गये, मगर मेरे सामनेसे यह दृश्य हटता ही नहीं। मुझे अेक दिन भी नींद नहीं आयी। हण्टर कमेटीके सामने दी हुअी गवाही तो सिर्फ़ औरोंके चढ़ा देनेके कारण बताअी हुअी शेखी थी।"

यह टॉम्सन आजकल 'मेन्चेस्टर गार्डियन'का यहाँका सम्वाददाता है। कांग्रेस पर अिसने हलके हमले किये हैं और 'माडर्न रिव्यू'ने अिसको खूब आड़े हाथों लिया है। यह आदमी 'ढालका दूसरा पहलू' (Other side of the shield) और 'हिन्दका कल्याण' (Welfare to India)का लेखक है। अिसीके यहाँ आक्सफोर्डमें वहाँके पण्डितोंकी बापूसे मुलाकात हुअी थी। वल्लभभाअी बोले — "यह आदमी तो बिलकुल झूठा मालूम होता है। 'मॉडर्न रिव्यू'की भी यही राय होगी।" बापू बोले — "नहीं, मैं अिसे झूठा नहीं कहूँगा। अिसकी 'ढालका दूसरा पहलू' आपने पढ़ा नहीं। पढ़ें तो आप भी न कहें। अिस पुस्तकको प्रकाशित करनेमें अुसका स्वार्थ नहीं था।

किसीसे रुपया लेकर भी प्रकाशित नहीं की थी। अिसमें अुसने अंग्रेज अितिहासकारोंकी छिपाअी हुअी बातोंको प्रगट किया है। और यह लिखा है कि अंग्रेजोंके किये हुअे पापके प्रायश्चित्तके रूपमें हिन्दुस्तानको आज़ादी मिलनी चाहिये। अिस किताब परसे अंग्रेज अुसपर खूब बिगड़े हैं। यह आदमी अप्रामाणिक नहीं है, मगर रहस्यमय है, समतोल रहित है। आज मुझे गालियाँ देगा, कल मेरी बड़ाअी करेगा। आज जयकरको चढ़ायेगा, तो कल अुतार फेंकेगा। अिसके साथकी बातचीतमें भी मुझ पर यही छाप पड़ी थी।"

नानाभाअीको लिखा गया पत्र अिस डायरीमें पहले आ चुका है। अुसके अुत्तरमें अुन्होंने लम्बा पत्र लिखा — "आपकी राय माननेका मन होता है। मगर हिम्मत नहीं होती। थोड़ी देरके लिअे जी भी नहीं मानता। दक्षिणामूर्ति विद्यार्थी भवनके लिअे भिक्षा माँगू तो क्या हर्ज? मेरा यह भाग दान माना जायगा। आप भी तो दरिद्रनारायणके लिअे भीख माँगने निकले थे। मगर मेरी समझमें भूल हो सकती है। मुझे ज़रूर रास्ता बताअिये।" अिसके जवाबमें बापूने लिखाया — "मुझे जो डर था, वही परिणाम हुआ है। मैं दरिद्र-नारायणके लिअे भटका, अिसमें तुम्हें मेरी सलाहके साथ असंगति दिखाअी दी। तुम असंगति देखोगे मुझे यह अन्देशा था। मगर मुझे असंगति दिखाअी नहीं दी। जब दौरे पर निकला था, तब भी मुझे अैसी कोअी बात नहीं लगी थी। फर्क यह है: दक्षिणामूर्ति तुम्हारी संस्था कहलाती है, जैसे आश्रम मेरी संस्था है। दक्षिणामूर्तिमें तुम्हारा काम रुपया अिकट्ठा करना नहीं है बल्कि पढ़ाना, विद्यार्थियोंमें अपनी आत्माको अुंड़ेल देना है। आश्रममें मेरा कर्तव्य रुपया लाना नहीं, नियमोंका पालन करके आश्रमवासियोंसे पालन कराना और आश्रमकी विविध प्रवृत्तियोंको पुष्ट करना है। अैसा करनेसे आवश्यकतानुसार रुपया आ जायगा, यह श्रद्धा रखनी चाहिये। दरिद्रनारायणके कोषके लिअे अिससे अुलटा कानून है। अिसमें तो वृत्ति ही कोष जमा करनेकी है। दक्षिणामूर्तिके लिअे तुम नहीं जा सकते। मगर मित्र लोग शौक़से माँगें। माँगना अुनका धर्म है। अब भेद समझमें आया? यह भेद आजका नया नहीं है। दक्षिण अफ्रीकामें भी मैं अिसी भेदके अनुसार चलता था। यानी ज्ञान होने पर फ़िनिक्सके लिअे भिक्षा बन्द कर दी। मगर वहाँकी जो लोक-संस्थायें चल रही थीं, अुनके लिअे मैं घर घर भटका था। अिसलिअे मेरा तो अब भी यही कहना है कि तुम्हें आज नहीं तो कल निश्चय कर लेना चाहिये कि रुपया अुगाहनेके लिअे तुम नहीं जा सकते। मदद करनेवाले मित्रोंको जानते हो। अुन्हें पत्र लिखो और निश्चय बता दो, और फिर जो कुछ होना हो, होने दो। अैसी संस्थाओंकी अभी तक लोगोंमें कदर नहीं, लोग अपने आप अिन संस्थाओंको दान भेजनेका

धर्म नहीं समझे, यह सब अर्धसत्य है। अिन संस्थाओंके चलानेवाले हम लोग श्रद्धा रहित हैं, अिसलिअे दानके बारेमें लोगोंने सच्ची शिक्षा नहीं पाअी। यह अेक कुचक्र है। हमने लोगोंको तालीम नहीं दी, अिसलिअे अुन्हें नहीं मिली; लोग अपने आप दान देना नहीं सीखें, तब तक हम अुनके यहाँ भटकते रहें। अिस तरह काम कभी ठिकाने ही न लगेगा। लोग सीखेंगे नहीं और हममें श्रद्धा आयेगी नहीं। नतीजा यह होगा कि नौ दिन चले अढ़ाअी कोस। अिसलिअे हममेंसे कुछ लोगोंको बड़ीसे बड़ी जोखम अुठा कर भी श्रद्धाका मार्ग लेना जरूरी है। अिसके लिअे तुम बिलकुल योग्य हो। दूसरी संस्थाओंकी तुलनामें यह संस्था पुरानी है, प्रतिष्ठा पाअी हुअी है, शिक्षक सभी स्वार्थी नहीं हैं, जो शिक्षा दी जाती है वह प्रेमसे दी जाती है। अिसके साक्षीके रूपमें कितने ही विद्यार्थी तैयार भी हुअे हैं। कुछ नियमित रूपसे दान देनेवाले मिल गये हैं। अिसलिअे व्यवहार बुद्धिसे जाँच करने पर भी मेरा बताया हुआ कदम अयोग्य नहीं लगता। और मेरे खयालसे शुद्ध श्रद्धा ही शुद्ध व्यवहार है।

"यह क्यों मान लेते हो कि तुम फीस बढ़ा दोगे और स्वावलम्बी बन जाओगे, तो धनवानोंके लडके ही आयेंगे? कुछको तो तुम मुफ्त लेते ही होगे। अिनका बोझा तुम धनवानों पर डालो, तुम्हारी शिक्षाकी अुन्हें गरज होगी तो अितना कर वे देंगे; देना ही चाहिये। अपनी शिक्षाकी आवश्यकताके बारेमें शंका किस लिअे करते हो? मेरा तो दृढ़ विश्वास और अनुभव है कि हमारी अच्छीसे अच्छी संस्थायें भी अिसलिअे पूरा विकास नहीं कर पातीं कि अुनके आचार्योंको रुपया माँगनेमें अपना समय लगाना पड़ता है। संस्थाका भीतरी विकास ही आचार्यकी साधना होनी चाहिये। अुसके बजाय आचार्यको अपना अमूल्य समय रुपयेके लिअे खर्च करते देखा गया है। मुझे तो अैसा लगता है कि अैसा करनेमें आचार्य अपना धर्म भूल गये। अुन्होंने अपने धन्धेके बारेमें श्रद्धा नहीं रखी। नतीजा हम देख रहे हैं। अेक बार तुम सब शिक्षक मिलो और फिर जो मित्र आज तक धन देते आये हैं अुनके साथ मिलो, और बादमें संकल्प करो। मिलना सलाह लेनेके लिअे नहीं, बल्कि संकल्प करनेके लिअे और अुसे प्रगट करनेके लिअे हो। श्रद्धा किसीकी सलाहकी राह नहीं देखती, और सलाह लेने बैठोगे तो खोओगे।

"आज तो अितने पर ही खतम करता हूँ। फिर मेरे साथ झगड़ना हो तो शौकसे झगड़ना। तुम्हें पत्र लिखनेकी फुरसत होगी तो मुझे तो है ही। और बाहर होअूँ तो यह फुरसत मिल ही नहीं सकती। अिसलिअे मेरे विशेष ज्ञानका और विशेष अनुभवका पूरी तरह लाभ अुठा लेना। नहीं अुठाओगे, तो तुम घाटेमें रहोगे। यह कहनेमें कि अिस मामलेमें मैं कुशलता रखता हूँ,

न मुझे कोअी संकोच है, न शर्म है। मेरी कुशलता तुम मंजूर करो या न करो, यह तुम जानो। मगर साँपका जहर अुतारना जाननेवाला आदमी अपनी कलाके बारेमें शंकित रहे या अुसे छिपाये, तो जैसे वह मूर्खोंका सरदार माना जायगा, अिसी तरह मैं भी अपनी कलाको जानते हुअे छिपाअूँ तो मूर्खराज बनूँ। जानबूझ कर अैसा बननेकी मेरी अिच्छा नहीं है।"

* * *

बाहर सोनेकी आदतके बारेमें बातचीत करते हुअे मैंने बापूको याद दिलाया कि 'आत्मकथा' में लिखा है कि आप तो दक्षिण अफ्रीकामें भी बाहर खुलेमें सोते थे। बापू बोले — "सोता तो था। बाहर सोता यानी क्या? दक्षिण अफ्रीकाकी सख्त ठंढमें ही नहीं, बरसातमें भी। ठंढमें अच्छी तरह ओढ़नेको होता था। कॅलनबॅक ढेरों कम्बल जमा कर लेता और बरसातमें अूपर मोमजामेके कपड़े जैसा कुछ डाल देता, ताकि पानी नीचे चला जाय। मुँह ढँकनेके लिअे तरकीब सोच ली थी। हम तो पागल जैसे प्रयोग करनेवाले ठहरे; जिसे पकड़ लिया अुसका अन्त लाकर ही छोड़ते। प्याजमें शक्ति है, यह जानते ही लगे प्याज खाने। अेक बार मैं अिमली खूब खाता था। अिमली स्कर्वी नामक रोगको मिटानेवाली है और नीबू बहुत महँगे मिलते थे, अिसलिअे ढेरों अिमली खाते — मूँगफलीके साथ — अिमली और गुड़का पानी बना कर!"

२१–४–'३२

सुबह ही बापू काकाके बारेमें बातें करते हुअे अुठे। प्रार्थना शुरू करनेसे पहले ही बातें करने लगे — "काकाको दूध नहीं देते, यह बात ठीक नहीं मालूम होती। यह कहा होगा कि गायका दूध नहीं दे सकते। और जैतूनका तेल अिसलिअे होगा कि गायका मक्खन नहीं दे सकते। दुर्दशा यह है कि गायका दूध बहुत जगह नहीं मिलता। मद्रासमें बिलकुल नहीं मिलता, पंजाबमें नहीं मिलता और महाराष्ट्रमें भी नहीं मिलता होगा। मगर गायके दूधका व्रतवाला 'नेसल्स मिल्क' ले, तो काम चल सकता है, विदेशी डेरीका मक्खन ले तो चल सकता है — क्योंकि ये सब गायके दूधके होते हैं!" गायके दूधका व्रत कहाँ ले जाता है, यह अिससे समझा जा सकता है!

प्रार्थनाके बाद बोले — "आज ही अिन्स्पेक्टर जनरलको लिखना पड़ेगा। अिस पर यह सवाल खड़ा होगा कि ये सब समाचार गांधीको कहाँसे मिले; और सुपरिण्टेण्डेण्टको हमारी डाक सावधानीसे देखनेका हुक्म मिले, तो आश्चर्य नहीं!"

गिरधारी आज मिलने आनेवाला था, मगर नहीं आया। सुबह बापूने डोअीलको दो पत्र लिखे। अेक काका और नरहरिके बारेमें और दूसरा मुलाकातके लिअे आनेवाले राजनीतिमें भाग न लेनेवाले कैदियोंके बारेमें था।

गोकुलदास पटवारीको देखनेके लिअे मुझे अस्पताल भेजनेकी बापूने सुपरिण्टेण्डेण्टसे अिजाजत माँगी । मगर अुसने मंजूर नहीं किया ।

२२-४-'३२ काकाके बारेका और दूसरा जो पत्र अिन्स्पेक्टर जनरलको कल लिखा था, वे दोनों नहीं गये, आज सबेरे गये; और आज ही शामको बेलगामसे मणि और काकाके पत्र आये । दोनों ही खतोंसे बहुत कुछ जाननेको मिल गया । सब पूरी तरह तपश्चर्या कर रहे हैं । काकासाहबको दूध घी नहीं मिलता, पीठमें दर्द है, नरहरि वगैरासे मिल नहीं सकते और वाग्यज्ञ चला रहे हैं । अुनके वाग्यज्ञका अुपभोग लेनेवाले भी भाग्यवान ही ठहरे न! नरहरि अून पींजने और कातनेका काम करते हैं । अुनकी अिसके सिवा और कोअी भी खबर नहीं । मणि काफी सूख गयी है । अुसने गीता सारी कण्ठस्थ कर ली है और दुःख भी काफी अुठाया है ।

आज और भी बहुतसे पत्र आये हैं । फादर अेल्विन लिखते हैं कि वहाँका बिशप अुन्हें अीसाके द्रोहीकी पदवी देता है और गिरजोंमें प्रवचन नहीं करने देता! मैथिलीशरण गुप्तने अुर्मिलाके विषादकी अठारह पन्नेके अेक लम्बे पत्रमें सफाअी दी है । बापूने कहा कि सारा पत्र काव्य है । अिस पत्रकी नकल करनेवाला 'अजमेरी' अेक मुसलमान है और मैथिलीशरणका शिष्य है । हिन्दी काव्य-साहित्य वगैराका बड़ा प्रेमी है ।

२३-४-'३२ हमारे यहाँ अखबार पढ़नेका काम वल्लभभाअीका है । मैं पींजकर कातनेके लिअे बरामदेमें आता हूँ, तो वहाँ वल्लभभाअी अखबारोंको दुबारा पढ़ते मिलते हैं । मैं पूछता — "थोड़ेमें समाचार क्या हैं?" तो अुनके पास जवाब तैयार रहता — 'मुस्लिम परिषदमें खेड़ाके कलेक्टर', 'सेम्युअल होर टेनिस खेलते हैं,' तो दूसरे दिन खबर होती 'मि० अेसका विवाह'। सरोजिनीकी गिरफ्तारीकी खबर आयी । मालवीयजी मोटरसे दिल्ली जानेको रवाना हो गये हैं । ७० वर्षकी अुम्रमें अुन्होंने बड़ी तकलीफ अुठाअी, और सरकारके लिअे दौड़धूप करनेका काम भी अच्छा पैदा कर दिया ।

२४-४-'३२ कल कराची जेलके सत्याग्रही कैदियोंको राष्ट्रीय नारे लगाने पर कोड़े लगाये गये । अुसका बचाव करनेवाली विज्ञप्ति जिला मजिस्ट्रेटने प्रकाशित की है, यह पढ़कर बापू खूब दुःखी हुअे । आज अुठकर फिर अुतना भाग पढ़नेके लिअे अखबार माँगा और अुनका हृदय हिल गया । आज मालवीयजी और सरोजिनी दोनोंके पकड़े जानेके समाचार आये, अिससे वे खूब खुश हुअे । वल्लभभाअीसे कहने लगे

— "कहिये, अब कोअी बाकी रहा? जितनोंको जेलमें जाना चाहिये था, वे सब पहुँच गये न?"

अेल्विनके पत्रका अूपर जिक्र आया है। अुसने लिखा था कि बिशपने अुसे गिरजेमें प्रवचन करनेकी अिजाजत नहीं दी और अिस बात पर दुःख प्रगट किया था कि सनातनी अीसाअीके नाते अुसका गिरजेमें जाना नहीं होता। अिस बारेमें बापूने अुसे लिखा :

२५-४-'३२

"I wish you will not take to heart what the Bishop has been saying. Your church is in your heart. Your pulpit is the whole earth. The blue sky is the roof of your church. And what is this Catholicism? It is surely of the heart. The formula has its use. But it is made by man. If I have any right to interpret the message of Jesus as revealed in the Gospels, I have no manner of doubt in my mind that it is in the main denied in the churches, whether Roman or English, High or Low. Lazarus has no room in those places. This does not mean that the custodians know that the Son of Sorrows has been banished from the buildings called House of God. In my opinion, this excommunication is the surest sign that the truth is in you and with you. But my testimony is worth nothing, if when you are alone with your Maker, you do not hear the Voice saying, 'Thou art on the right path'. That is the unfailing test and no other."

"मैं चाहता हूँ कि बिशपकी बातोंसे तुम जरा भी न घबराओ। तुम्हारा गिरजा तुम्हारे दिलमें है। सारी दुनिया तुम्हारी व्यासपीठ है। यह नीला आकाश तुम्हारे गिरजेकी छत है। और यह सनातनीपन क्या है? सचमुच यह तो दिलकी चीज है। अिस नामका अुपयोग जरूर है। हालाँकि आखिरमें तो यह मनुष्यका रखा हुआ नाम ही है। अगर सुवार्ताओंमें दिया हुआ अीसाके सन्देशका अर्थ करनेका मुझे कुछ भी अधिकार हो, तो मेरे दिलमें जरा भी शक न रख कर मैं कहनेको तैयार हूँ कि आज गिरजोंमें अिस सन्देशको नहीं माना जा रहा है, फिर भले ही यह गिरजा रोमन हो या अंग्रेजी हो, बड़ा हो या छोटा हो। लाज़रसके लिअे तो अिन गिरजोंमें जगह ही नहीं है। अिसका अर्थ यह नहीं कि पुजारियोंको यह ज्ञान है कि देवस्थान कहलानेवाले अिन मकानोंमेंसे करुणासागर अीसाको देशनिकाला दे दिया गया है। मगर मेरा मत यह तो जरूर है कि

सत्य तुम्हारे अन्दर और तुम्हारे पक्षमें है। तुम्हारा यह बहिष्कार अुसकी अचूक निशानी है। मगर जब तुम अेकान्तमें भगवानके ध्यानमें मग्न हो, अुस वक्त अगर अैसी आवाज न सुनो कि 'तू सच्चे रास्ते पर है', तो मेरी रायकी कुछ भी कीमत न मानी जाय। सच्ची कसौटी अन्तरकी आवाज है, दूसरी कोअी नहीं।"

अेक बंगाली साधकको ब्रह्मचर्यके बारेमें लिखा :

"I have your letter. *Brahmacharya* is a mental state. It is undoubtedly helped by abstentiousness in all respects. But diet plays the least part in giving one the necessary mental state. Not that wrong diet will not hinder progress. What I want to say is that right diet, taken in moderation, is not the only thing in the observance of *brahmacharya* though it is undoubtedly one of the necessary things. Indulgence of the palate will be the surest sign of weak mental state which is repugnant to *brahmacharya*. The sovereign remedy for the observance of *brahmacharya* is realization that the soul is a part of the Divine and that the Divine resides within us. A heart grasp of the fact induces mental purity and strength. You should therefore read such books as would enable you to grasp the central fact, cultivate such companionship as would constantly make you think of the Divine presence and follow all the directions given about fresh air, hip baths, etc. in my book called 'Self-restraint vs. Self-indulgence'. And when you are doing all these things regularly and industriously, do not brood over all that happens, but have confidence that success is bound to attain your effort."

"तुम्हारा पत्र मिला। ब्रह्मचर्य मनकी स्थिति है। अलबत्ता, सब तरहके निग्रहसे अुसे मदद जरूर मिलती है। आवश्यक मनःस्थिति प्राप्त करनेमें आहार कमसे कम सहायक होता है, मगर गलत आहारसे प्रगति रुकती तो है ही। अिस परसे मैं यह कहना चाहता हूँ कि योग्य आहार परिमित मात्रामें लिया जाय। लेकिन यह अेक ही साधन ब्रह्मचर्यके पालनमें मदद देनेके लिअे काफ़ी नहीं। हाँ, बहुतसे जरूरी साधनोंमें से अेक माना जा सकता है। जीभका चटोरापन कमजोर मनःस्थितिका लक्षण है, और यह चीज़ ब्रह्मचर्यके लिअे बाधक है। ब्रह्मचर्यके पालनके लिअे रामबाण अुपाय तो अिस बातका अनुभव होना है कि यह जीव परमात्माका ही अंश है और परमात्माका हमारे हृदयमें वास है। हम यह चीज समझने लग जायँ, तो अुससे मनकी शुद्धि

और दृढ़ता प्राप्त होती है। तुम्हें अैसी पुस्तकें पढ़नी चाहियें, जो अिस मुख्य चीजके समझनेमें सहायक हों। तुम्हें अैसी संगतिमें रहना चाहिये, जिसमें तुम्हें सदा अीश्वरके हाजिर नाजिर होनेका खयाल रहे। 'नीतिनाशके मार्ग पर' नामकी मेरी किताबमें ताजी हवा और कटिस्नान वगैराके बारेमें जो सूचनायें दी गयी हैं, अुन पर अमल करो। ये सब बातें नियमितता और लगनसे करो। फिर स्खलन हो तो अुसकी चिन्ता न करो, मगर विश्वास रखो कि तुम्हारा प्रयत्न सफल होगा ही।"

अेक अेम. अे., बी. अेस-सीने लिखा — "बहुत विज्ञान पढ़नेके बाद अीश्वर पर श्रद्धा नहीं जमती, मगर अैसा लगता है कि होनी चाहिये। अिसका क्या अुपाय है?"

अुसे लिखा :

"I have your pathetic letter. Seeing that God is to be found within, no research in physical sciences can give one a living faith in the Divine. Some have undoubtedly been helped even by physical sciences, but these are to be counted on one's fingertips. My suggestion therefore to you is not to argue about the existence of Divinity, just as you do not argue about your existence, but simply assume like Euclid's axiom, that God is, if only because innumerable teachers have left their evidence and what is more their lives are an unimpeachable evidence. And then as evidence of your own faith, repeat रामनाम every morning and every evening at least for quarter of an hour each time and saturate yourself with Ramayana reading."

"तुम्हारा करुण पत्र मिला। अीश्वर तो अन्तरमें है। अिसलिअे भौतिक विज्ञानके कुछ भी संशोधन किये जायं, तो भी अुनसे अीश्वर पर जीवित श्रद्धा नहीं हो सकती। अलबत्ता, कुछ लोगोंको भौतिक विज्ञानसे जरूर मदद मिली है, मगर अुनकी गिनती अँगुलियों पर की जा सकती है। तुम्हे मेरा सुझाव तो यह है कि अीश्वरके अस्तित्वके बारेमें दलील न करो, जैसे हम अपनी हस्तीके बारेमें दलील नहीं करते। युक्लिडके स्वयंसिद्ध सूत्रकी तरह यह मान ही लो कि अीश्वर है, क्योंकि असंख्य धर्मात्मा अैसा कह गये हैं और अुनका जीवन अिस बातका असंदिग्ध प्रमाण है। तुम अपनी श्रद्धाके प्रमाण स्वरूप रोज सुबह शाम पाव पाव घण्टे रामनाम जपो और रामायणके पाठमें रमे रहो।"

अिस सप्ताह ४४ पत्र लिखे। आश्रमके सालाना हिसाबके बारेमें अेक हृदयमें पैठ जानेवाली टिप्पणी लिख भेजी। छोटे छोटे बच्चोंको लिखी छोटी छोटी चिट्ठियाँ कितनी अद्भुत हैं! अेक लड़कीने छोटेसे संवादमें भारतमाताका वेश लिया था। अुसे बापूने लिखा था — "तू अपनेमें भारतमाताके गुण पैदा करना।" अुसने पूछा — "भारतमाताके गुण कौनसे?" बापूने अुसे लिखा — "भारतमातामें धीरज, सहनशीलता, क्षमा, वीरता, अहिंसा, निर्भयता वगैरा गुण होने चाहियें। अुन्हें पैदा करनेके लिअे तो आश्रम है ही।" अुसने यह भी पूछा था — "हमें पिछले जन्मकी बातें याद क्यों नहीं रहतीं?" अुसे लिखा — "हमें अिस जन्मका भी सब कहाँ याद रहता है? और रहे तो हम पागल हो जायँ। किसी चीजको याद रखकर अुसमें से जो लेना हो, वह ले लें। फिर अुसे भूल जायँ तो अुसमें क्या हर्ज? अुल्टे लाभ ही है।"

अेक लड़कीने पूछा — "बापके राजमें न समाये और माँके चरखेमें समा जाय, अिसका अर्थ क्या? जनेअू किस लिअे पहनते हैं? गाय माता क्यों कहलाअी?" अुसे लिखा — "बापके राजमें लूट मची हो, तो वहाँ गरीब रह जाते हैं। माँका चरखा तो अुसकी गरीब प्रजाके लिअे ही चलता है। जनेअू या माला पवित्रता सीखनेमें कुछ न कुछ मदद करती है। आजकल अुसका बहुत अुपयोग नहीं माना जाता। गाय अिसलिअे माता मानी जाती है कि वह माँकी तरह दूध देती है। और फिर माता तो अपने ही बच्चेको अेक साल तक दूध देती है, मगर गाय सबको देती है। अिसलिअे वह सबकी माँ है। माता बच्चोंसे बहुत सेवा लेती है। गायका कौन करता है? अिसलिअे गाय तो बड़ी माँ है।"

अेक लड़केने पूछा था — "क्या राम-जैसे मनुष्यको भी सीताके हरे जाने पर पागलकी तरह शोक करना चाहिये था?" बापूने लिखा — "यह कौन जानता है कि रामने अितना शोक किया था? हम जो पढ़ते हैं वह काव्यका वर्णन है। यह बिलकुल सच है कि अैसा विलाप ज्ञानीको शोभा नहीं दे सकता। अिसलिअे हमें यह मानना चाहिये कि हमारी कल्पनाके रामने अैसा विलाप किया ही न होगा।" अेक बहनने लिखा — "मुझे अपना बेहद आलस्य स्वीकार करना चाहिये। मुझसे डायरी लिखी ही नहीं जाती।" जवाब: "अुसमें आलस्य ही कारण नहीं है। अुसमें सीधी बात लिखना कठिन है। लिखकर देख लो।" बाल रखने न रखनेके बारेमें आश्रमकी लड़कियोंने खासी चर्चा चलाअी। अुन्हें अुत्तर मिला — "बाल काटनेसे अुन्हें संवार कर रखनेका समय बचता है और तेल, कंघी वगैराका खर्च बचता है। बालोंमें शोभा है, यह वहम मिट जाय, बाल न रखनेसे सिर साफ़ रहे और स्त्रीके लिअे यह ब्रह्मचर्यकी निशानी है। लड़कियाँ और स्त्रियाँ बाल

कटवा दें, तो अिसका वैधव्यकी निशानी माना जाना बन्द हो जाय। दूसरे फायदे भी सोचे जा सकते हैं, मगर अभी तो अितने काफी हैं न!"

कवियोंने कोयलके बोलनेके समयके बारेमें कितनी चर्चा की है? यहाँ हररोज सुबह चार बजे हम अुसकी आवाज़ सुनते हैं, साबरमतीमें कितनी ही बार सुनते थे। आज रातको तो १०। बजे अुसका टुहूकार सुनाअी दे रहा है।

काका साहबके बारेमें डोअीलने अच्छा जवाब दिया। 'मैं तुरन्त लिख रहा हूँ और अिस सप्ताहमें जवाब आना ही चाहिये। और मैं कुछ समय बाद ही वहाँ जानेवाला हूँ, अिसलिअे वहाँसे आपको आँखों देखी हकीकत दूँगा।' अिस आदमीकी भलमनसाहत साफ दिखाअी देती है।

२६-४-'३२

कभी कभी बापूका मीठा व्यंग सरदार पर भी छूट जाता है। बापू सुबह नौ बजे सोडा और नीबू लेते हैं। यह पेय सरदारको तैयार करना पड़ता है। बापूकी स्वाभाविक सफाअीकी वृत्ति बारीक भूलें भी देख लेती है। और सरदारसे कहते हैं—"क्या आपको नर्सिंगका अेक कोर्स देनेकी जरूरत नहीं है? देखिये तो, आपने चम्मच अूपरसे पकड़नेके बजाय ठेठ मुँहके पास पकड़ा है। यह सारा चम्मच गिलासमें जायगा। अिसलिअे अुस जगह अुसको हाथसे छूना ही नहीं चाहिये। और जिस रूमालसे आपका मुँह पोंछा जाता है, अुसीसे आपने अिस चम्मचको साफ किया। यह भी न होना चाहिये। आपको मालूम है कि कोअी नर्स आपरेशनके कमरेमें किसी भी चीजको हाथ नहीं लगा सकती? सब कुछ संडासीसे ही लेना पड़ता है। हाथसे ले तो अुसे बरखास्त कर दिया जाय। अैसी ही सफाअी हमें रखनी चाहिये। पीकर गिलास यों ही औंधे नहीं रख देने चाहियें। अगर अिस आशासे औंधे रखते हों कि धुल जाते होंगे, तो मैं आपसे कहता हूँ कि ये अक्सर नहीं धोये जाते।"

*　　　*　　　*

मिस रोअिडनने अेरिक ड्रमण्ड और सर जॉन साअिमनको लिखे पत्र और अुनके आये हुअे जवाब भेजे हैं। अुसे बापूने पत्र लिखवाया। मिस रोअिडनने लिखा था:

"I hesitated (to send you the correspondence) because I feared you must think that our first concern should have been India, but I believe you will understand and sympathize with our sense of the extreme urgency of the hostilities between China and Japan in the far east. I therefore send these letters for your information."

"मैं आपको पत्रव्यवहार भेजती हुअी हिचकिचा रही थी, क्योंकि मुझे यह डर लगता था कि शायद आप यह सोचें कि हमें हिंदुस्तानका खयाल पहले रखना चाहिये था। मगर मैं मानती हूँ कि दूर पूर्वमें चीन और जापानके बीच जो लड़ाअी हो रही है, अुसके सिलसिलेमें कुछ न कुछ करना निहायत जरूरी है। हमारी यह भावना आप समझ सकेंगे और अुसके प्रति सहानुभूति रखेंगे। आपकी जानकारीके लिअे मैं सब पत्र भेज रही हूँ।"

मिस रोअिडन, हर्बर्ट ग्रे, और अेच० आर० अेल० शेपर्डके दस्तखतोंसे राष्ट्रसंघके प्रधान मंत्री सर अेरिक ड्रमण्डको लिखे गये पत्रके कितने ही वाक्य तो मानो बापूके वाक्यों जैसे ही हैं। सघको जापान और चीनके बीच लड़ाअी बन्द करानेका भगीरथ प्रयत्न करना चाहिये। मगर यह संभव नहीं है, अिसलिअे —

"We must come to the conclusion that the only way which would prove effective in that case is that men and women who believe it to be their duty should volunteer to place themselves unarmed between the combatants." . . .

"हम अिस फैसले पर पहुँचे हैं कि अैसे हालातमें कारगर साबित होनेवाला अेक ही मार्ग है; और वह यह है कि जिन स्त्री-पुरुषोंको अपना यह कर्तव्य दीखे, वे लड़नेवालोंके बीचमें स्वेच्छासे निहत्थे खड़े रहें।" . . .

सर जॉन साअिमनको लिखे गये पत्रमें ये शब्द हैं:

"Among the little band of six or seven hundred who have volunteered for service, in the Peace Army are quite a remarkable number of ex-servicemen who express their horror at the idea of a repetition of the experience of the last war, and their willingness to die rather than plunge the world into it again; and of parents of men who were killed in the war, or of children who (they fear) may grow up to be involved in another war. We are convinced that thousands in the country and elsewhere would volunteer if they believed that the League would take their offer seriously."

"शान्तिसेनामें सेवा देनेके लिअे जो छह-सातसौ आदमियोंकी छोटीसी टोली तैयार हुअी है, अुसमें बहुतसे तो पिछले युद्धमें लड़े हुअे सिपाही हैं। अुन्हें जो अनुभव हुअे हैं, अुनके दुहराये जानेके खयालसे भी अुन्हें डर लगता है। दुनियाको फिर अैसे युद्धमें फँसनेसे रोकनेके लिअे वे मरने तकको तैयार हैं। पिछली लड़ाअीमें मारे गये लोगोंके माँबाप भी हमारी टोलीमें हैं। और अपने बच्चोंको बड़े होकर युद्धमें फँसनेका प्रसग आ सकता है, अिस सम्भावनासे काँप अुठनेवाले

माँबाप भी हमारी टोलीमें हैं। हम मानते हैं कि हमारी दरखास्त पर राष्ट्रसंघ गंभीरतासे विचार करे, तो अिस देशसे और दूसरी जगहोंसे हजारों आदमी स्वयंसेवक बनकर अिस टोलीमें शरीक होनेको तैयार हो जायँगे।"

मिस रोअिडनको बापूने लिखवाया :

"I thank you for your letter enclosing the correspondence between yourself and Sir Erric Drummond and Sir John Simon. When I read about your movement, I did not think that you were in anyway showing preference to China over India. I then felt that you were quite right in concentrating your energy over a situation that threatened to involve bloodshed on a vast scale and that too by the adoption of the method of Satyagraha."

"आपके पत्रके लिअे आभारी हूँ। सर अेरिक ड्रमण्ड और सर जॉन साअिमनके साथ हुआ आपका जो पत्र व्यवहार आपने मुझे भेजा है, वह मिल गया। आपकी हलचलके बारेमें मैंने पढ़ा था। मुझे यह खयाल तक नहीं हुआ कि आप किसी भी तरह हिन्दुस्तानकी अपेक्षा चीनके साथ पक्षपात रखती हैं। जिस परिस्थितिसे बड़े पैमाने पर रक्तपात होनेकी संभावना है, अुस परिस्थितिको रोकनेके लिअे आपने अपनी तमाम ताकत अेक जगह लगानेका जो सोचा है, वह बिल्कुल ठीक है। और आप लोग तो यह बात सत्याग्रहके ढंगसे करना चाहते हैं, यह अिसकी विशेषता है।"

वल्लभभाअी कहने लगे — "बस, अितना ही लिखना है?"

बापू बोले — "तो क्या अिसे यह लिखा जाय कि अब हिन्दुस्तानके लिअे भी कोअी अैसी ही हलचल करो?"

वल्लभभाअी — "नहीं जी, हम तो अपने आप ही निबट लेंगे। मगर अिसे यह लिखिये न कि हम बाहर होते तो हम भी आपके साथ हो जाते।"

प्रो० राव नामके आदमीने गोकुलदास तेजपाल अस्पतालमें साँपका मुँह और कीलें वगैरा खानेके जो प्रयोग करके बताये, अुनसे भयभीत होकर बापूने नटराजनको पत्र लिखा :

Dear Mr. Natarajan,

I am sure you must have read the reports of an exhibition given by an Indian Yogi of his powers before an audience specially assembled at the Gokuldas Tejpal Hospital. The Yogi is reported to have eaten a live viper's head, nails, nitric acid, and the like, and that the Chief

justice and his wife were among the distinguished audience. The report states that one lady was so disgusted at the eating of the viper's head that she abruptly left the hall before the exhibition was finished. I do not know how you look at such exhibitions. In my opinion they are degrading both for the demonstrator, as also for the public. And if the demonstrator died, as he most likely would, if these demonstrations were continued, those who encouraged him by attending them, I should hold guilty of manslaughter. I do not think that either science or humanity is served by such revolting exhibitions. The text books on Hatha Yoga clearly lay down that the Hathayogis are expected not to exhibit their yogic powers or make use of them for purposes of gain. If you agree with me, will you not initiate an agitation in the daily press for preventing such cruel exhibition? One man, I suppose, you know, recently died in Rangoon precisely giving demonstrations such as the one reported in Bombay.

Yours sincerely,
M. K. Gandhi

प्रिय भाअी नटराजन,

गोकुलदास तेजपाल अस्पतालमें खास तौर पर बुलाअी गयी सभामें अेक हिन्दुस्तानी योगीने अपनी सिद्धियोंका जो प्रदर्शन किया, अुसका समाचार आपने जरूर पढ़ा होगा। समाचारमें यह है कि यह योगी जीते साँपका सिर, कीलें और नाअिट्रिक अेसिड वगैरा चीजें खा गया। सभामें हाअिकोर्टके प्रधान न्यायाधीश और अुनकी पत्नी विशेष दर्शक थे। कहते हैं कि जब वह योगी जिन्दा साँपका सिर खाने लगा, तो अेक बहनको तो अितनी ज्यादा घिन हुअी कि वह सभासे अचानक अुठकर चली गयीं। मुझे पता नहीं कि आपका अिन प्रयोगोंके बारेमें क्या खयाल है। मेरी राय तो यह है कि यह चीज करके दिखानेवाले और देखनेवाले दोनोंको गिरानेवाली है। अगर वह योगी अपने अैसे प्रयोग जारी रखेगा, तो वह जरूर मरेगा। और अगर वह अिस तरह मर जायगा, तो जिन दर्शकोंने वहाँ मौजूद रह कर अुसे अैसे प्रयोग करनेका प्रोत्साहन दिया, अुन्हें मैं नर-हत्याके अपराधी मानूँगा। अैसे घिनौने प्रयोगोंसे न तो विज्ञानकी सेवा होती है और न मानवताकी। हठयोगकी पुस्तकोंमें साफ लिखा है कि हठयोगियोंको अपनी प्राप्त सिद्धियाँ न तो करके दिखानी चाहियें और न अुनका अुपयोग रुपया कमानेके लिअे ही करना चाहिये। अगर आप मुझसे

सहमत हों, तो आपको अिन घातक प्रदर्शनोंको रोकनेके लिअे दैनिक पत्रोंमें हलचल शुरू करनी चाहिये। मैं समझता हूँ आप जानते होंगे कि अिस किस्मके प्रयोग करते हुअे अेक आदमीने हालमें ही रंगूनमें अपनी जान गँवा दी।

आपका

मो० क० गांधी

२७-४-'३२ आज ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालयके लिअे 'आत्मकथा' के संक्षिप्त संस्करणके नये प्रकरण पूरे किये। बापूने सब देख लिये। शामको वल्लभभाअी बोले — "पिछले साल यहाँ अच्छा मोची था, अब अच्छा मोची नहीं रहा। दो दो अिंच चौड़े पट्टे कर लाया। अिसलिअे मुझे जूते वापस कर देने पड़े।" बापू बोले — "मैं चमड़ा मँगवाकर सी दूँ? देखूँ तो सही कि मेरी सीखी हुअी कला अभी तक मुझे याद है या नहीं? यह तो आप जानते हैं न कि मुझे अच्छे जूते बनाना आता था? और मेरी कारीगरीका नमूना सोदपुरके खादी प्रतिष्ठानमें है। वहाँ सोराबजी अडाजनिया आये थे और अुन पर सत्यानन्द बोसने बहुत प्रेम बरसाया। सो अुन्होंने मुझे लिखा था कि अिस आदमीको अपने हाथके जूते भेजें तो अच्छा। मैंने अुसे भेज दिये थे, मगर वह तो बड़ा विनयी बंगाली ठहरा। अुसने कहा — 'ये जूते मेरे पैरोंके लिअे नहीं, मेरे सिरके लिअे हैं।' अुसने अेक दिन भी अुन्हें काममें नहीं लिया। रख छोड़े और खादी प्रतिष्ठानके संग्रहालयको दे दिये।"

यह किस्सा बयान करके कहने लगे — "महादेव, अिस संक्षिप्त संस्करणमें मेरे जूते बनानेका यह किस्सा कहीं पढ़नेमें आया? आना चाहिये। टॉल्स्टॉय फार्ममें यह धंधा अच्छा चलता था। मैंने तो बच्चोंके कितने ही जूते तैयार किये हैं। कॅलनबॅक अेक ट्रैपिस्ट मोनेस्टरीमें जाकर सीख आये और अुन्होंने हमें सिखा दिया।"

*　　　*　　　*

मिल्सका पत्र आया था। अुसने समाचार दिया कि चीन जा रहा हूँ, और लिखा:

"We have got marching orders and we won't come back until you have made peace with Government."

"हमें यहाँसे कूच कर देनेका हुक्म मिल गया है। आप सरकारके साथ सुलह नहीं करेंगे, तब तक हम वापस नहीं आयेंगे।"

बापूने कहा — "विदेशी संवाददाताओंको निकाल दिया लगता है। अिसका अर्थ मैं यही करता हूँ। सेम्युअल होर यह सब कर सकता है। अिस

आदमीने लड़ाअीमें काम किया है और हमारी लड़ाअीको वह बिलकुल लड़ाअी समझकर ही सब काम कर रहा है।" फिर थोड़ी देर ठहर कर बोले — "दो अेक साल अिनका यही हाल रहे, तो हमारा सारा मैल और सारी गंदगी दूर हो जाय और फिर हम अच्छी तरह अधिकार भोगनेके लायक बन जायँ।" मैंने कहा — "मगर बापू, क्या अैसा लगता है कि दो साल रहना पड़ेगा?" बापू कहने लगे — "कोअी अटकल काम नहीं देती। मगर रहना पड़े तो बड़ी बात नहीं। और यहाँ हमें तकलीफ ही क्या है? पड़े हैं, कामकाज करते हैं और शान्तिसे दिन निकाल रहे हैं।"

* * *

हरिलालका दुःखद पत्र आया है। अुसमें मनुको बलीबहनके पाससे छुड़वानेकी माँग की गयी है। बापूको कसूरवार माना है। बलीबहनके हमलेकी शिकायत की है। बापूने अुसे लम्बा पत्र लिखा है। मगर अुसका पिछला हिस्सा समुद्रको तरह क्षमासे अुमड़ते हुअे पिताके दिलसे टपकनेवाले खूनकी बूँदोंकी तरह है — "मैं अभी भी तेरे अच्छे बननेकी आशा नहीं छोड़ूँगा, क्योंकि मैं अपनी आशा नहीं छोड़ता। मैं मानता रहा हूँ कि तू जब बाके पेटमें था, अुस वक्त तो मैं नालायक था। मगर तेरे जन्मके बाद मैं धीरे धीरे प्रायश्चित्त करता आ रहा हूँ। अिसलिअे बिलकुल आशा तो कैसे छोड़ दूँ? अिसलिअे जब तक तू और मैं जीवित हैं, तब तक अन्तिम घड़ी तक आशा रखूँगा। और अिसलिअे अपने रिवाजके विरुद्ध तेरा यह पत्र रख छोड़ रहा हूँ, ताकि जब तुझे सुध आये तब तू अपने पत्रकी अुद्धतता देखकर रोये और अिस मूर्खता पर हँसे। तुझे ताना मारनेके लिअे यह पत्र नहीं रख छोड़ता हूँ। लेकिन ओीश्वरको अैसा मौका बताना हो तो खुद अपनेको हँसानेके लिअे यह पत्र रख छोड़ता हूँ। दोषसे तो हम सब भरे हैं। मगर दोषमुक्त होना हम सबका धर्म है। तू भी हो।"

२८-४-'३२ आज 'हिन्दू'में अेक अंग्रेजका बड़ा सुन्दर लेख आया है। अुसने देशकी हालतका हूबहू चित्र खींचा है। नाम दिया होता, तो लेखकी कीमत बढ़ जाती।

सरोजिनी देवीके यहाँ आनेकी खबर मिली है।

गुलजारीलालकी बीमारीकी बात करके कहने लगे — "ओीश्वर अुसे बचा ले तो अच्छा। गुजरातमें ओतप्रोत हो जानेवाला प्यारेलालकी तरह यह दूसरा पंजाबी है। प्यारेलालसे भी अेक तरहसे बढ़कर है, क्योंकि प्यारेलालके रास्तेमें

आनेवाला कोअी नहीं है। अिसके सामने स्त्री-बच्चे वगैरा बहुतोंका विरोध है। और यह आदमी बड़ी व्यवस्था-शक्तिवाला और सत्यका जबरदस्त पुजारी है।"

आज शामको 'अब हम अमर भये, न मरेंगे' गीत गाया। बापू कहने लगे — "यह भजन निकाल देने लायक है। अमर होनेकी क्या बात है, जो कहें कि अमर भये? यह आगे चलकर कारण बताता है कि मिथ्यात्व छोड़ दिया, तो अब देह क्या धारण करें? फिर मैं तो यह भी माननेवाला हूँ कि अिस देहमें रहते मोक्ष नहीं हो सकता। और यह बात कहनेकी नहीं हो सकती। हमारे लिअे गानेकी बात तो हो ही नहीं सकती। भक्तिके जो पद हों, वे हमारी भजनावलिमें काम आ सकते हैं। अिसमें तो जैनोंका तर्कवाद है, भक्तिरस नहीं है। और हमें समाजके लिअे भक्तिके भजन रखने चाहियें।" मैंने अुसके अच्छे भाव बताकर बचाव किया। तब बापू कहने लगे — "ये दूसरे भजनोंमें भी आते हैं।"

अिसी तरह बापूने कहा — 'तद्ब्रह्म निष्कलमहम्' गानेके बारेमें भी मेरा पुराना झगड़ा है ही। अेक बार अुन्होंने यह कहा था कि 'दिलमें दिया करो दिया करो' यह भजन भी मुझे पसन्द नहीं है। मैं: अगर यह पसन्द नहीं है तो 'हरिने भजतां हजी कोअीनी लाज जतां नथी जाणी रे' में तो भक्तोंके नामके सिवा और पहली लकीरके सिवा दूसरा कुछ भी नहीं है। तब बापू कहने लगे — "मगर यह सारी भक्तमाला मीठी लगती है।"

बहनोंको आज बहुत लम्बा पत्र लिखा। अुसका महत्वका भाग यह है — "पिण्ड ब्रह्माण्डका प्रश्न बहुत बड़ा पूछा गया है। मगर थोड़ेमें समझाता हूँ। अभी यह समझ लेना चाहिये कि पिण्डका मतलब यह देह है। और ब्रह्माण्डका अर्थ है यह पृथ्वी। अब जो कुछ हमारे शरीरमें है, वह सब पृथ्वीमें है; और जो शरीरमें नहीं, वह पृथ्वीमें भी नहीं। शरीर मिट्टीका बना है, तो पृथ्वी भी मिट्टीकी बनी है। पृथ्वीमें पाँच तत्व हैं, तो शरीरमें भी पाँच तत्व मौजूद हैं। पृथ्वीमें तरह तरहके जीव हैं, तो शरीरमें भी हैं। शरीर नष्ट होता है और पैदा होता है तो पृथ्वीका भी अिसी तरह रूपान्तर होता रहता है। अिस तरह अिस विचारका और भी विस्तार किया जा सकता है। मगर अितने परसे हम यह कह सकते हैं कि हमारे शरीरका हमें सच्चा ज्ञान हो जाय, तो पृथ्वीका भी सच्चा ज्ञान हो जाय। अिस दृष्टिसे हमें ज्ञान प्राप्त करनेके लिअे बहुतसी बेकार कोशिशें करनेकी जरूरत नहीं है। शरीर तो अपने पास है ही। अुसका ज्ञान प्राप्त कर लें, तो हमारा बेड़ा पार लग जाय। पृथ्वीका ज्ञान प्राप्त करनेका लोभ रखेंगे, तो वह हमेशा अधूरा ही होगा; और अिसीलिअे ज्ञानी हमें सिखा गये हैं कि जो पिंडमें है वही ब्रह्माण्डमें है। और अगर हम आत्मज्ञान प्राप्त

कर लेते हैं, तो अुसमें सारा ज्ञान आ जाता है। लेकिन यह आत्मज्ञान जुटाते जुटाते हमें कितना ही बाहरी ज्ञान भी मिल जाता है। अिसमें जो रस मिल सके अुसे चखनेका हमें अधिकार है। क्योंकि वह रस भी हमें आत्मज्ञानके निमित्तसे चखना है। . . . मुझे लगता है कि नरसिंहभाअी गीताका अर्थ करनेमें गहरे नहीं अुतरे। गीताके कृष्णका विचार करते समय हमें अैतिहासिक कृष्णको अुसके साथ मिला नहीं देना चाहिये। कृष्णके पास हिंसा या अहिंसाका सवाल नहीं था। अर्जुन हिंसासे कायर नहीं बना था, मगर स्वजनोंको मारनेमें अुसे अरुचि पैदा हो गयी थी; अिसलिअे कृष्णने अुसे समझाया कि कर्तव्यका पालन करनेमें स्वजन-परजनका भेद किया ही नहीं जा सकता। गीतायुगमें लड़ाअीमें होनेवाली हिंसा की जाय या न की जाय, यह सवाल कोअी प्रामाणिक आदमी छेड़ता ही न था। असलमें यह सवाल अिस जमानेमें ही अुठा मालूम होता है। अहिंसाधर्मको तो अुस वक्त सभी हिन्दू मानते थे। लेकिन कहाँ हिंसा है और कहाँ अहिंसा है, यह जैसा आज है वैसा ही अुस समय भी चर्चाका विषय तो था ही। आज हम अैसी बहुतसी बातें करते हैं, जिन्हें हम हिंसा नहीं मानते हैं। लेकिन शायद अुन्हें हमारे बादकी पीढ़ियाँ हिंसाके रूपमें समझें। जैसे हम दूध पीते हैं या अनाज पकाकर खाते हैं, अुसमें जीव हिंसा तो है ही। यह बिलकुल संभव है कि आनेवाली पीढ़ी अिस हिंसाको त्याज्य मान कर दूध पीना और अनाज पकाना बन्द कर दे। आज यह हिंसा करते हुअे भी हमें यह दावा करनेमें संकोच नहीं होता कि हम अहिंसा धर्मका पालन कर रहे हैं। ठीक अिसी तरह गीतायुगमें लड़ाअी अितनी स्वाभाविक मानी जाती थी कि अुस वक्त मनुष्यको यह नहीं लगता था कि लड़ाअी करनेसे अहिंसा धर्मको कुछ भी आँच आती है। अिसलिअे गीतामें लड़ाअीका दृष्टान्त लिया है, और वह मुझे बिलकुल निर्दोष लगता है। लेकिन हम सारी गीताका मनन करें और स्थितिप्रज्ञके, ब्रह्मभूतके, भक्तके या योगीके लक्षण गीतामें देख जायँ, तो हम अेक ही निर्णय पर पहुँच जाते हैं कि गीताके अुपदेशक या गायक श्रीकृष्ण साक्षात् अहिंसाके अवतार थे और अर्जुनको यह अुपदेश करनेमें अुनकी अहिंसाको ज़रा भी आँच नहीं आती कि तू लड़ाअी कर। अितना ही नहीं, वे दूसरा अुपदेश देते तो अुनका ज्ञान कच्चा कहलाता और मेरी पक्की राय है कि वे योगेश्वरके रूपमें या पूर्णावतारके रूपमें कभी न पूजे जाते। अिस विषय पर मैंने 'अनासक्तियोग' में जो लिखा है, वह विचार लेना चाहिये।"

सरदार . . . नामक सिक्खने लिखा — "साधु, महात्मा, पैगम्बर, महापुरुष, रवीन्द्र और योगी अरविन्द वगैरा सब बाल रखते हैं और सभीने बालोंका महत्त्व माना है। आप क्यों नहीं मानते? आप रखें तो दुनियाको

बहुत अच्छा लगे, आपको ज्यादा पूजे। मैं आपको सिक्ख नहीं बनाना चाहता, हालाँकि आप अुत्तमसे अुत्तम सिक्खके मुकाबले के मालूम होते हैं।"

"I am not writing this to convert you to Sikhism, though much I would like to do so. I see not much difference between a true saint like great guru Nanak Dev and your noble self. I am only suggesting that it will be in the fitness of things if the greatest living Indian and the greatest man of the present world keeps Keshas like all the great men of all times."

"यह मैं आपको सिक्ख बनानेके लिअे नहीं लिख रहा हूँ। हाँ, आप सिक्ख बन जायँ, तो मुझे जरूर बहुत अच्छा लगे। महान गुरु नानकदेव-जैसे सच्चे सन्तमें और आपमें मुझे कोअी बड़ा फर्क नहीं दीखता। आजके सबसे बड़े हिन्दुस्तानी और आजकी दुनियाके सबसे महान पुरुष पहलेके सभी महापुरुषोंकी तरह केश रखें तो ठीक ही है।"

अिसे बापूने लिखा :

"With reference to the growing of hair and beard I hold a totally different view from yours. Whatever value outward symbols had before, they do not and ought not to possess the superlative value that you seem to attach to the growing of hair and beard. For me I can see no reason whatever for departing from a long established practice which I have accepted for myself. I would far rather that people judged me by my deeds than by my outward appearance."

"केश और दाढ़ी रखनेके मामलेमें मैं आपसे बिलकुल दूसरे ही विचार रखता हूँ। बाहरी निशानियोंका महत्व पहले जमानेमें चाहे कुछ भी माना गया हो, लेकिन आप केश और दाढ़ी रखनेको जो महत्व देते दिखाअी देते हैं, वह स्थान और वह महत्व अुनका होना नहीं चाहिये। केशोंके मामलेमें मैं आज तक जो करता आया हूँ, अुसमें कुछ भी फेरबदल करनेकी मुझे जरूरत नहीं जान पड़ती। मेरे बाहरी दिखावेके बजाय मेरे आचरणसे लोग मेरी कीमत लगायें, यही मुझे ज्यादा पसन्द है।"

२९–४–'३२

आज बापू तारीख भूल गये, मैं भी भूल गया, और मैंने कहा — "आज २८ तारीख है।" वल्लभभाअी बोले — "तुम्हारे ग्रह कलसे बदल गये, यह भी भूल जाते हो? आज तो २९ वीं हो गयी।" अिस पर बापूने कहा — "हाँ, मैं कितना मूर्ख हूँ! और ग्रह बदलनेके प्रमाण स्वरूप ही मानो आज होरका पत्र आया है।"

'सब नंगे हैं', यह वल्लभभाअीका फैसला है। वल्लभभाअी कहने लगे — "धीरे धीरे मान लोगे। अुस कलकत्तेवाले बेन्थोलको भी आप तो अच्छा ही मानते थे, फिर कैसा निकला!" बापू — "मुझे अपनी राय बदलनेकी जरूरत मालूम नहीं हुअी है। बेन्थोलके बारेमें जो हकीकत मिली थी, वह गलत थी। होरके बारेमें मैंने जो राय दी थी, वह सच्ची ही निकलती जा रही है। सेंकीके विषयमें सबके विरुद्ध होकर मैंने जो राय दी है, वह भी सच ही साबित हो रही है।" मैंने कहा — "होरके बारेमें वल्लभभाअी भी मानते हैं कि यह आदमी जो विनय दिखा रहा है वह मैकडोनल्ड तो कभी नहीं दिखा सकता, और विलिंगडनने तो दिखाया ही नहीं।" बापू बोले — "शायद अर्विन भी न दिखाये। अिस आदमीने कांग्रेसको नाजायज नहीं ठहराया, अिसमें भी मुझे तो लगता है कि अिसके जीमें यह है कि कांग्रेसके साथ किसी न किसी दिन तो सुलह किये बिना काम नहीं चलेगा। अिसने अछूतोंके बारेमें जो जवाब दिया है, वह लगभग स्वीकृति जैसा कहा जा सकता है। दूसरे भागके बारेमें तो वह किस तरह कुछ लिख सकता है?"

मैंने कहा — "मगनलालभाअीके गुजरने पर अर्विनने जैसा पत्र लिखा था, वह हरगिज नहीं भुलाया जा सकता।" (बापू तो भूल गये थे)। वल्लभभाअीको याद था। वे बोले — "महादेव, बापू लड़ाअी छोड़ दें न, तो ये सब लोग अिसी तरहके खत लिखने लगें; और अगर केश रख लें, तो सिक्ख भी अिन्हें नानककी गद्दी पर बिठा दें, तो कोअी आश्चर्य नहीं!"

पर्सी बार्टलेटका पत्र रवीन्द्रनाथ टागोरके पत्रके साथ आया। टागोरकी अपील व्यर्थका विस्तार मालूम हुअी। अिसे लेकर वे वायसरायके पास गये। मगर अुसने पानी फेर दिया। बापूने कहा — "तुम क्या अर्थ करते हो?" मैंने कहा — "मुझे लगता है कि टागोर दोनों पक्षोंसे अपील करते हैं, यानी कांग्रेससे भी और सरकारसे भी।" बापू कहने लगे — "नहीं, कभी नहीं। वे तो 'we in India' (हिन्दुस्तानके हम लोग) कहते हैं। अिसमें हमें भी गिन लेते हैं। अुन्होंने अुसे मेरे पास यही सोच कर भेजा होगा कि मैं भी समझौतेके लिअे तैयार हूँ। वे यह चाहते हों कि अिस अपीलमें शामिल होनेके लिअे मैं भी कुछ छोड़ दूँ या कोअी कदम उठाअूँ, सो बात नहीं है।" मैंने कहा — "बार्टलेट तो ज़रूर यह सोचता होगा।" बापू कहने लगे — "अगर मुझसे अपील करनी होती, तो अुन्होंने कभीसे अपील अखबारोंमें दे दी होती।"

आज रामदास और अेक महाराष्ट्री विद्यार्थी बापूसे मिल गये। बापू कहते थे कि रामदासने हमसे मिलनेके लिअे सुपरिण्टेण्डेण्टके साथ खूब झिक झिक की। मगर अुसने नहीं माना।

बापू रोज अपनी कताअीका परिणाम जाहिर करते हैं। आज चार पूनियोंसे १०० और दूसरी पाँचसे १०२, कुल २०२ तार काते। कुकड़ी सुन्दर और सख्त थी। बापूको विश्वास है कि आगे चलकर बायें हाथ पर जोर पड़ना तो कम होगा ही।

३०-४-'३२ आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय वाले 'आत्मकथा' के संक्षिप्त संस्करणके लिअे लिखा हुआ अुपोद्घात बापूको देखनेके लिअे दिया। पहले ही वाक्य पर अटक गये। "अनुवाद भले मुश्किल हो, लेकिन अुससे संक्षेप क्यों मुश्किल हो? यह समझमें आ सकता है कि मूल ही संक्षेप हो, तो अुसे संक्षिप्त करना मुश्किल हो। मगर अनुवाद मुश्किल था, अिसलिअे संक्षेप भी मुश्किल हो, यह नहीं हो सकता। अिस हालतमें तो अुल्टे, अनुवादकको संक्षेप करना आसान पड़ना चाहिये। बाकीका भाग विद्यार्थियोंके संस्करणमें नहीं चल सकता। यह तो तब चले जब पुस्तकका अवलोकन करते हों या आलोचना करते हों। वैसे, अिसे तो सिर्फ संक्षेप करनेके ढंगके बारेमें दो शब्द लिखकर पूरा कर देना चाहिये। अुन्होंने ८०० शब्दोंका अुपोद्घात लिखनेको कहा है। अिसलिअे हमें अुसका अैसा अुपयोग नहीं करना चाहिये। हम तो जहाँ ६०० शब्द लिखने हों वहाँ २०० ही लिखकर दें, तभी हमारी मर्यादाकी कदर हो।" मैंने अुपोद्घात सुधारा और फिर पेश किया, तो बापूने पास कर दिया। मेजरने अैसा कहा कि यह अिन्सपेक्टर जनरलके पास भेज दिया जायगा और वह वहींसे बाला बाला आगे भेज देगा।

लॉर्ड अर्विनका टॉरण्टोका भाषण आया। वल्लभभाअी कहने लगे — "देखिये आपके मित्रको!" बापू बोले — "जरूर मैं अुसे मित्र मानता हूँ। अुसका सारा भाषण देखे बिना राय नहीं दूँगा।"

१-५-'३२ लॉर्ड सैंकीका 'न्यूज लेटर' अखबारमें छपा हुआ सारा लेख आज यहाँके अखबारमें देखा। अिससे बापू बहुत दुःखी हुअे। अुसमें बापूके बारेमें लिखा भाग पढ़कर बापू बोले — "विपर्यास भरा लेख है। अिसे खत लिखना चाहिये। मेरी अिसके बारेकी राय सच साबित हो रही है।" पत्र लिखवाया। वल्लभभाअी सुन रहे थे। पूरा होने पर बोले — "अितना लिख रहे हैं, अिसके बजाय यह लिखिये न, कि तू सरासर झूठा है।"

बापू खिलखिलाकर हँस पड़े। बापू बोले — "नहीं, अिससे ज्यादा सख्त मैंने कहा है। मैं तो कहता हूँ कि अुसका बर्ताव अैसा है, जो सज्जनोंको शोभा नहीं देता। अिससे आगे बढ़कर मैं कहता हूँ कि तू द्रोही है, तूने मित्र या

साथीको दगा दिया है। यह बात अैसी है जो अंग्रेजोंको बहुत कड़ी लगती है। लेकिन मैंने अिसलिअे लिखा है कि मुझे महसूस हो रहा है — क्योंकि शफी या आगाखां जैसे लोग जो अिससे रोज मिलते रहते थे, अुन्हींने ये सब झूठी बातें कही होंगी। अिसने अुन्हें मान लिया, अितना ही नहीं, बल्कि मुझसे कभी पूछा नहीं। और मुझे यहाँ बन्द करनेके बाद कहता है कि दोष मेरा था!"

बापूको कितना बुरा लगा, यह तो अिस परसे ही मालूम होता है कि पहला पत्र जो अुन्होंने लिखवाया अुसमें वाक्य अिस तरह था:

"You have given judgment against me on evidence of which I have been kept in ignorance and your judgment has been given at a time when I have been rendered incapable of defending myself."

"आपने जिन प्रमाणोंके आधार पर मेरे खिलाफ फैसला दिया है, अुन सब प्रमाणोंसे मुझे अज्ञानमें रखा गया है; और अब आप फैसला अैसे समय देते हैं, जब मैं अिस हालतमें नहीं हूँ कि अपना बचाव कर सकूँ।"

अिसलिअे दगेकी नीचता बढ़ जाती है। बापू कहने लगे — "मेरे दावेको बहुत ज्यादा बताता है, सो भी गलत है। किसी भी जातिका आज़ादीका दावा बहुत ज्यादा कैसे कहा जा सकता है? मैं अगर अिंग्लैण्डसे गुलामीका पट्टा लिखवाना चाहूँ, तो यह दावा जरूर बहुत ज्यादा कहा जायगा। और अपने भाषणमें मैंने कांग्रेसकी माँग बताअी, मगर चर्चामें तो और बहुतसे प्रस्तावोंका भी मैं जिक्र करता था।"

लॉर्ड अर्विनको भी अेक पत्र लिखवाया था। मगर बादमें यह कह कर अुसे रद कर दिया कि "अिस भाषणका पूरा विवरण देखना चाहिये। अेक विवरणमें जो कुछ आया है, वह कहनेका अिसे अधिकार है; दूसरे विवरणका विरोध किया जा सकता है। लेकिन हम कोअी बात मान क्यों लें? कुछ लिखनेकी जरूरत मालूम होगी, तो फिर देख लेंगे।"

सेम्युअल होरको भी अेक खत लिखा। अुसे 'मैं आपका बहुत आभारी हूँ' अैसा लिखवाया था। बादमें 'बहुत' शब्द निकलवा दिया।

२-५-'३२

आज सुबह डाह्याभाअीकी धर्मपत्नी यशोदाके मरनेका तार आया। छोटेसे जीवनमें बेचारीने कितना कष्ट सहन किया? कितना कष्ट सहन कराया? और चली गयी! डाह्याभाअी-जैसे निष्ठावान पति भाग्यसे ही मिलते हैं। अुन्होंने अपना ऋण पूरी तरह अदा किया। बापूने अिस मौतको तारमें 'Release from living death' — जीती मौतसे छुटकारा बताया।

यह तो जानते ही थे कि यशोदा जियेगी नहीं। फिर भी आज सारे दिन वह आँखोंके सामने नाचती रही और अुसकी मौतसे अनेक विचार आते रहे। यह तार आया अुससे पाँच दस मिनट पहले मिदनापुरके कलेक्टर डगलसके खूनका समाचार पढ़ा था। अिस बारेमें भी बहुत बुरा लगा। "अिसमें शक नहीं कि बंगालमें अंग्रेज लोग जिन्दगीका जोखम अुठाकर रहते होंगे। अुसके बालबच्चोंका क्या होगा? हम अपनेको दूसरेकी स्थितिमें रखें, तब हिंसाकी भीषणता खयालमें आ सकती है।" बापूने कहा — "सन् '५७में भी अंग्रेजोंकी यही हालत होगी।"

अिस बारकी बापूकी डाक कुछ हलकी कही जा सकती है। पत्र थोड़े और कुछ हलके भी हैं। परशरामने . . . की शादीके बारेमें सवाल पूछा था। अुसके बारेमें काफी डाँट पिलाअी। मगर अुस डाँटमें बापूका औरोंके दोष देखनेके बारेमें बहुत स्वस्थ रवैया देखनेको मिलता है — ". . . के बारेमें प्रश्न पूछे गये हैं, यह हमें शोभा नहीं देता। किसीके छिद्र देखना और किसीका न्याय करना हमारा काम नहीं है। हमें अपना न्याय करते करते थकावट लगनी चाहिये, और जब तक अपनेमें अेक भी दोष हमें दिखाअी देता हो और अिस दोषके होते हुअे भी हमारी अन्तरात्मा यह चाहती हो कि सगे-सम्बन्धी और मित्र वगैरा हमें न छोड़ें, तब तक हमें औरोंके दोष देखनेका हक नहीं है। जब हमें — चाहे अनिच्छासे — दूसरोंके अैसे दोष दिख जायँ, तब हममें शक्ति हो और अैसा करना अुचित हो, तो जिसके दोष हमने देखे हों, अुससे हम पूछें। मगर और किसीसे पूछनेका हमें अधिकार नहीं है। यह पूछनेमें कुछ भी लाभ नहीं है। फिर भी मुझे पूछनेका तुम्हारा मन हुआ और मुझसे पूछ लिया, यह ठीक ही किया। न पूछते तो अैसा व्याख्यान देनेका मुझे मौका न मिलता।

"अब जवाब देता हूँ। बाहरसे देखते हुअे और जितनी बातें जाहिर हुअी हैं अुतनी ही देखते हुअे तो . . . का काम हमें अच्छा नहीं लग सकता। मगर जब तक मैं अुसके मुँहसे अुसके कामके बारेमें सारी बातें न जान लूँ, तब तक मैं निश्चित निर्णय नहीं कर सकता। मेरे खयालसे यह कहना ठीक नहीं कि पैगम्बर साहबने जो जो काम किये, वे सब काम पैगम्बर साहबके अनुयायियोंको करने चाहियें या करने अुचित हैं। महान पुरुष जो कुछ करते हैं वह सभीको करनेका अधिकार हो, सो बात नहीं है। हमने यह भी देख लिया है कि अैसा करनेसे बुरा नतीजा होता है। मगर हिन्दू, मुसलमान और दूसरे धर्मोंवाले अिस सुनहरे कानून पर सदा अमल करते नहीं पाये जाते। अितना ही नहीं, वे यह मानकर व्यवहार करते हैं कि अवतारोंने अमुक बातें की हैं, अिसलिअे हमें भी अैसा करनेका अधिकार

मालवीयजी छूट गये। मेजरने अिसका स्पष्टीकरण अच्छा किया। कहने लगा कि जब तक हुक्म न तोड़े, तब तक कानून भंग नहीं कहा जाता। हुक्म तोड़नेसे पहले अुन्हें पकड़ लिया था, अब छोड़ दिया है। वल्लभभाअीने कल और आज कुल मिलाकर चार पाँच दफे मुझसे और बापूसे कहा होगा — "तो मालवीयजी छूट गये!" अैसी कोअी खबर आती है, तो अुस पर विचार करनेका वल्लभभाअीका यही ढंग है। आज सारे दिन अुन्होंने अिस पर विचार किया होगा। सोते वक्त भी बोले — "तो मालवीयजीको आठ दिनमें ही छोड़ दिया!"

आज आश्रमकी जो डाक आयी, अुसमें प्रेमा बहनके पत्रमें काफी विद्रोह और दुःख था। बापू बोले — "अिस लड़कीने बहुतसी बातें सोचने लायक पूछी हैं।"

आज सबेरे रामदासको अिस प्रकार पत्र लिखा :

"चि॰ रामदास, कल नारणदासका पत्र मिला। अुससे मालूम होता है कि निमु आश्रममें आ गयी है।

४-५-'३२ "मुझे डर है कि पिछली बार मुझे जो कहना था, वह मैं न समझा सका होअूँ। मेरी शुरूसे ही यह राय रही है कि सत्याग्रही भोजनके लिअे कहीं भी झगड़ेमें न पड़े और जो मिले अुसे अीश्वरकी देन मान कर खा ले।

"कैदीके शरीरका अफसर दारोगा है। अिसलिअे जब तक खुराक अिज्जतके साथ मिले, गन्दी न हो और अखाद्य न हो, तब तक अुसे ले लिया जाय; और पचनेवाली मालूम हो तो खा ले, नहीं तो फेंक दे। जूठी न की हो तो वापस दे दे। अिस जमानेमें कैदियोंकी खुराक चुननेमें थोड़े बहुत आरोग्यशास्त्रके नियम पाले जाते हैं। लेकिन सिर्फ पानी और रोटी ही दें तो क्या हो?

"कर्मचारियोंके साथ अैसे मामलोंमें विवेकपूर्ण चर्चा की जा सकती है, लड़ाअी नहीं की जा सकती।

"धींगामस्ती करके बहुतसी चीजें मिल सकती हैं, मिल सकी हैं; मगर यह अपने लिअे त्याज्य है।

"अिसलिअे मैं मानता हूँ कि भाजीके बारेमें बिलकुल झगड़ा नहीं होना चाहिये। जिसे अच्छी लगे वह खाय, न लगे वह छोड़ दे। रोटी दाल मिल जाय, तो भी अीश्वरकी कृपा माननी चाहिये।"

सुपरिण्टेण्डेण्ट साहबने आज कैम्प जेलमें बम्बअीके कितने ही सत्याग्रही कैदियों द्वारा की गयी धींगामस्तीका जिक्र किया। अेक आदमीने दूसरेके सिर

में तीन अिंचका घाव कर दिया है। सुपरिण्टेण्डेण्ट कहने लगे — “अिसकी सजा कोड़े हैं। मगर यह नहीं दी। मैंने सिर्फ चेतावनी दी है कि अब अगर अैसा हुआ, तो मजबूर होकर यह सजा देनी पड़ेगी।” वह बेचारे कहने लगे — “मैंने अपनी सारी नौकरीमें दो या तीन बार कोड़ेकी सजा दी है। मुझे यह फाँसीसे भी बुरी लगती है। जिन दो मामलोंमें दी थी, वे भयानक मामले थे। अेक कैदीने दूसरेकी आँख लगभग फोड़ ही डाली थी।”

अिस आदमीकी भलमनसाहत अिस किस्सेमें साफ दिखाअी देती है।

सरोजिनीने यशोदाकी मृत्यु पर सुन्दर पत्र लिखकर सरदारको दिया।

मणिबहन (परीख), शंकरलाल, वनु, मोहन और दीपक मिलने आये। मैंने मुलाकात की। अैसा लगा जैसे घरके ही आदमी आये हों। नरहरिका वजन २८ पौण्ड घट गया है, अिसकी परवाह नहीं है। मगर वहाँके दुष्ट वातावरणसे तकलीफ़ होती है। बातें करते करते मणिबहनकी आँखोंमें पानी आ गया।

आज मालवीयजीने सुन्दर बयान प्रकाशित कराया है। बापू कहने लगे — “बहुत शोभा दे, अैसा बयान है। अिसमें अेक भी कमजोर बात नहीं है। और पंडितजीके लिअे यह छोटेसे छोटा बयान कहा जायगा। सरकारको चुनौती देने जैसा ही कहा जा सकता है।” मालवीयजीको छोड़ देने के लिअे ‘लीडर’ सरकारको बधाअी देता है और सरकारके अिस कार्यको अुदार बताता है। बापू बोले — “मालवीयजीको फाँसीकी सजा दी होती और बादमें अुसे आजीवन देशनिकालेमें बदल दी होती, तो अुसे भी ‘लीडर’ अुदारता ही बताता न? अैसा है।”

मताधिकार समितिकी सिफारिशोंके बारेमें अखबारोंमें जो अटकलें लगाअी जा रही हैं, अुनपर बापूने अेक सूचक वाक्य कहा — “कितना भी विशाल मताधिकार हो, मगर सत्ता न हो तो वह निकम्मा है। कितना ही संकीर्ण मताधिकार हो, लेकिन सत्ता हो तो वह काम देता है।”

५–५–’३२

आज दोनों हाथोंसे चलानेका चरखा (मगनचरखा) आया। अिसे बापू कलसे चलाना शुरू करनेवाले हैं। मणिबहन (परीख), धीरू, कुसुम और गिरधारी बापूसे मिलने आये। बापूने कहा कि मणिबहन सारे समय रोती रहीं। मेरे सामने अुनका धीरज रहा, लेकिन बापूके सामने नहीं रहा। बापूके सामने कैसे रहता? जिसके पास ज्यादा तसल्ली मिलती है, अुसके पास मनुष्य ज्यादा गद्गद हो जाता है।

अेक अिब्राहीमजी राजकोटवाला नामके मुसलमानने लिखा कि बुद्धिसे अीश्वर साबित नहीं हो सकता! अुसे बापूने लम्बा पत्र लिखा, क्योंकि अुसने लिफाफा भेजकर जवाब माँगा था :

"तुम्हारा पत्र मिला। अीश्वरकी हस्तीके लिअे बुद्धिसे प्रमाण माँगो, तो कहाँसे मिले? कारण अीश्वर बुद्धिसे परे है। अगर अैसा कहें कि बुद्धिसे आगे कुछ नहीं है, तो जरूर मुश्किल पैदा होती है। बुद्धिको ही सर्वोत्तम पद दे दें, तो हम बड़ी मुश्किलमें पड़ जाते हैं। खुद हमारा जीव या आत्मा ही बुद्धिसे परे है। अुसका अस्तित्व सिद्ध करने लिअे बुद्धिके प्रयोग हुअे हैं। यही बात अीश्वरके बारेमें भी कही जा सकती है। मगर जिसने आत्मा और अीश्वरको बुद्धिसे ही जाना है, अुसने कुछ भी नहीं जाना। बुद्धि भले ही किसी समय ज्ञान प्राप्त करनेमें मददगार हुअी हो। मगर जो आदमी वहीं अटक जाता है, वह आत्मज्ञानका लाभ तो बिलकुल नहीं अुठा सकता। जिस तरह कोअी अनाज खानेके फायदे बुद्धिसे जानता हो, तो वह अनाज खानेसे होनेवाला फायदा नहीं अुठा सकता। आत्मा या अीश्वर जाननेकी चीज नहीं है। वह खुद जाननेवाला है। और अिसीलिअे वह बुद्धिसे परे है। अीश्वरको पहचाननेकी दो मंजिल हैं। पहली मंजिल श्रद्धा और दूसरी तथा आखिरी मंजिल अुससे होनेवाला अनुभव-ज्ञान। दुनियाके बड़ेसे बड़े शिक्षकोंने अपने अनुभवोंकी गवाही दी है। और जिन्हें दुनियामें मूर्ख समझ कर अलग निकाल दें, अुन्होंने भी अपनी श्रद्धाका सबूत दिया है। अिनकी श्रद्धा पर हम अपनी श्रद्धा निर्माण करेंगे, तो किसी दिन अनुभव भी मिल जायगा। अेक आदमी दूसरेको आँखोंसे देखे, मगर बहरा होनेके कारण अुसकी कुछ भी सुने नहीं और फिर कहे कि मैंने अुसे सुना नहीं, तो यह ठीक नहीं है। अिसी तरह बुद्धिसे अीश्वरको नहीं पहचाना जा सकता, यह वाक्य अज्ञानसूचक है। जैसे सुनना आँखका विषय नहीं है, वैसे ही अीश्वरको पहचानना अिन्द्रियोंका या बुद्धिका विषय नहीं है। अिसके लिअे दूसरी ही शक्ति चाहिये और वह है अचल श्रद्धा। हमने देख लिया कि बुद्धिको क्षण क्षणमें भरमाया जा सकता है। लेकिन सच्ची श्रद्धाको भरमा सके, अैसा माअीका लाल आज तक पृथ्वी पर देखनेमें नहीं आया।"

६-५-'३२

आज बापूने मगन चरखे पर दो अेक घण्टे मेहनत की और आखिरमें २४ तार निकाले तब अुन्हें शान्ति हुअी। वल्लभभाअी सारे समय हँसते रहे और कहते रहे — "जितना कातेंगे अुससे ज्यादा बिगाड़ेंगे।" बापू कहते — "मेरे बायें हाथसे कातनेके बारेमें भी हँसनेवाले आप ही थे न? देखिये, यह तार निकलने लगा। अब आप अिस तरफ नहीं देखेंगे, तब तक ये तार निकलते ही रहेंगे।"

आज गंगाबहनकी मृत्युके समाचार आये। अुन्हें पता चल गया कि मौत आ रही है, अिसलिअे होशियार हो गयी थीं और रामनाम जपते जपते विदा हुअीं। बापूने बड़ी गंगाबहनको पत्र भेजा अुसमें लिखा — "हम कह सकते हैं कि गंगाबहनने जीकर आश्रमको सुशोभित किया और मरकर भी आश्रमको सुशोभित किया।" आश्रमको तार दिया :

"We were all touched learn Gangaben's death. Am happy that she lived well and died well with faith everlasting. No wonder Totaramji is happy."

"गंगाबहनकी मृत्युके समाचार जानकर हम सबको दुःख हुआ। मुझे खुशी है कि अुन्होंने अमर श्रद्धाके साथ जीना जाना और मरना जाना। तोतारामजी आनन्दमें है, अिसमें आश्चर्य नहीं।"

खबर आयी तब बापूने कहा — "देखो, अिस निरक्षर स्त्रीको! अिसकी मौत कैसी है! दोनोंने आश्रमको सुशोभित किया। तोतारामजी गिरमिटिया थे। वहाँ फीजीके किसी गिरमिटियेकी लड़कीसे शादी की होगी, अिसलिअे दोनों गिरमिटिये ही कहलायँगे। मगर दोनोंने कैसी जिन्दगी गुजारी?"

गंगाबहन जैसी मौत सबको आये! अैसा जीमें आता है कि और कुछ भाग्यमें न हो तो भी अन्तकी घड़ीमें आश्रममें हों और गंगाबहनकी तरह रामनाम लेते लेते प्राण निकलें तो कितना अच्छा! लेकिन अन्त समय मुँहसे रामनाम निकलनेके लिअे और मरते वक्त खुश होनेके लिअे जीवन भी तो वैसा ही होना चाहिये न? यह कहाँसे लाया जाय?

* * *

बड़ी गंगाबहनका जेलमें कुछ न कुछ झगड़ा हुआ दीखता है। जैसा पत्र रामदासको लिखा था, वैसा ही कल अिन्हें लिखा था। आज सरोजिनीका पत्र आया। अुसमें अुन्होंने शिकायत की — "गंगाबहन साग नहीं लेने देतीं; कितनी ही बहनोंकी अिच्छा हो तो भी नहीं लेने देतीं। हम सत्याग्रही बनकर दुःख अुठाने आये हैं और जब तक अस्वच्छ न हो तब तक तो साग लेना ही चाहिये।" वगैरा। बापूने पत्र लिखकर गंगाबहनको धर्म समझाया — "हमारा धर्म समझा दूँ। जिन्हें सख्त मशक्कत दी गयी है, अुन्हें जो काम सौंपा जाय अुसे प्रसन्न चित्तसे करना चाहिये। वह काम न आता हो और किसीको सिखाने भेजें तो सीख लेना चाहिये। अपराध करके आनेवाली बहनोंसे हमारा शरीर ज्यादा काम देता हो, तो हम ज्यादा काम करें। अिसमें हमारी अच्छाअी है और सत्याग्रहीकी शोभा है। तुम्हें बुननेका काम आता है। मुझे तो लगता है कि दूसरी बहनोंको सिखाकर तुम्हें अच्छी तरह काम चला देना चाहिये।

हमें यह भी समझ लेना चाहिये कि जेलमें जो आमदनी होती है वह देशकी सम्पत्ति है, जो खर्च होता है देशका होता है, फिर भले ही वह किसीके भी हाथसे होता हो। अिसलिअे जो कुछ आमदनी हो सके, वह करनेमें हमें खुशी होनी चाहिये। और साग न खानेका अेका हुआ हो, तो अुसे सुधार लेना चाहिये।"

*   *   *

यहाँकी बिल्लीके बच्चे अब बिलकुल हिल गये हैं। प्रार्थनाके समय बापूकी गोदमें बैठ जाते हैं, हमारे साथ खेल करते हैं और खानेके वक्त तो कीकाकीक ही मचा डालते हैं। अक्सर बापूके पैरोंमें चक्कर लगाते हैं। वल्लभभाअी अुन्हें चिढ़ाते हैं और तारकी जालीके नीचे बन्दकर आनंद लेते हैं। आज अेक बच्चा बहुत घबराया। आखिर वह जालीको सिर पटकते पटकते बरामदेके सिरे तक ले गया और वहाँसे बाहर निकला। यह अुसने अपनी बुद्धिसे काम लिया। बेचारा घबराया हुआ था, धीरे धीरे चलता था। बापूको दया आ गयी। फिर दूर जाकर अुसने शौचकी तैयारी की। जमीन खोदी, शौच करके अुसे ढँका। वहाँ मिट्टी बहुत नहीं थी, अिसलिअे दूसरी जगह गया और वहाँ यह क्रिया सन्तोषपूर्वक की और दूसरे बच्चोंने ढँकनेमें अुसे मदद दी! बापू कहने लगे — "अिन बच्चों पर आकाशसे फूल बरसने चाहियें।" मीराबहनको पत्र लिखा अुसमें भी अिसका निर्देश करनेका मौका ले लिया:

"What I said about my being a hindrance is perfectly true. I may help to start the thing but not being able to live up to it must hinder further progress. The ideal of voluntary poverty is most attractive. We have made some progress but my utter inablity to realize it fully in my own life has made it difficult at the Asharm for the others to do much, They have the will but no finished object lesson. We have two delightful kittens. They learn their lessons from the mute conduct of their mother who never has them out of her sight. Practice is the thing. And just now I fail so helplessly in so many things. But it is no use mourning over the inevitable."

"मैंने जो यह कहा है कि मैं रुकावट बन जाता हूँ बिलकुल सच है। अेकाध प्रवृत्ति शुरू करनेमें मैं मददगार हो सकता हूँ, मगर मैं खुद अुसी तरह न चल सकूँ, तो आगेकी प्रगति जरूर रुक ही जायगी। स्वेच्छापूर्वक दरिद्रताका आदर्श बहुत आकर्षक है। हमने अिसमें कुछ न कुछ प्रगति भी की है। मगर मेरे अपने मामलेमें अिस पर पूरी तरह अमल करनेकी मेरी भारी अशक्तिके

कारण आश्रममें दूसरोंके लिअे भी अिस दिशामें आगे बढ़ना मुश्किल हो जाता है। अुनकी अिच्छा है, मगर अुनके सामने कोअी सम्पूर्ण पदार्थपाठ नहीं है। यहाँ बिल्लीके दो सुन्दर बच्चे हैं। अुनकी माँ अुन्हें नजरसे ओझल नहीं होने देती और माँके मूक व्यवहारसे वे अपने पाठ पढ़ते हैं। अिसलिअे आचरण ही मुख्य चीज है। अभी अभी तो मैं कितने ही मामलोंमें लाचार बनकर हार जाता हूँ। परन्तु जो अनिवार्य है, अुसपर रंज करना फजूल है।"

सरोजिनी देवीने अपनी गिरफ्तारीका हाल देकर लिखा कि अिसका वर्णन — ताजमहलमें सोने दिया अिस बातका — अपनी लड़कीसे किया, तो लीलाने कहा कि हमें मध्यकालके क्षात्रधर्मकी याद आती है। बापूने कहा :

"I do not know that I would share Lilamani's enthusiasm. Chivalry is made of sterner stuff. Chivalrous knight is he who is exquisitely correct in his conduct towards perfect strangers who are in need of help, but who can make no return to him and who are unable even to mutter a few words of thanks. But of these things some other day and under other auspices."

"मैं नहीं जानता कि लीलामणिके अुत्साहमें मैं शामिल हो सकता हूँ। क्षात्रधर्म बहुत जबरदस्त चीज है। सच्चा क्षत्रिय तो वह माना जाता है, जिसका व्यवहार असे अनजान व्यक्तिके प्रति भी बिलकुल शुद्ध रहे, जिसे मददकी जरूरत हो और जो अुसका कुछ भी बदला न दे सकता हो — यहाँ तक कि धन्यवादका अेक शब्द भी न कह सके। लेकिन अिस विषयमें फिर कभी और दूसरे ही हालातमें बातें होंगी।"

डाक गलत जगहों पर चली जाती है, पत्र देरसे मिलते हैं। अिस बारेमें डोअीलको लम्बा पत्र लिखा। और काका, प्रभुदास और नरहरिको साथ रखनेके बारेमें भी पत्र लिखा।

७-५-'३२ आज कोअी खास बात लिखने जैसी नहीं है। डाह्याभाअी आये थे। बेचारे रोये। बापूने कहा — "मैं नहीं सोचता था कि रोयेंगे। बच्चा तो हँसता था। अभी बेचारा अुस अुम्रको नहीं पहुँचा, जब माँका दुःख महसूस कर सके। मेरी दशा मुझे अभी तक याद आती है।" मगर डाह्याभाअीका ही क्या? वल्लभभाअीका भी ३० वर्षकी अुम्रमें ही घर बिगड़ गया था। अुन्होंने तो अपने विधुरपनको चमका दिया। अिस तरह विधुरपनको चमकाना कोअी आसान बात नहीं है। डाह्याभाअीकी भगवान सहायता करे!

डाह्याभाओीको शनिवार आनेमें बड़ी अड़चन होती है। रविवारको सुपरिण्टेण्डेण्ट अेक घण्टा निकालना चाहे, तो खुशीसे निकाल सकता है। अुससे साफ पूछा गया — 'आप रविवारको क्या करते हैं?' तो कहने लगा — 'बैठा रहता हूँ। हफ्तेमें अेक ही रोज तो मिलता है न!' मगर डाह्याभाओीकी दिक्कत और मौजूदा स्थिति देखकर भी अुसके मुँहसे यह बात नहीं निकलती कि 'अच्छा, तो ये रविवारको आ जाया करें!' अजीब आदमी है। अिसमें भलमनसाहत तो है ही; मगर अुसकी मर्यादा है। और यह मर्यादा हुकूमतके झूठे खयालकी है।

अप्टन सिंकलेरका पत्र आया। अुसने अपनी सारी पुस्तकें भेजी हैं। अन्तमें अपनी आत्मकथा भेजी। साथ ही नोबल पुरस्कार सम्बन्धी पत्रिका भेजी है। अुसमें अपने बारेमें दूसरों की दी हुअी रायें दी हैं और खुद भी यह प्रतिपादन करनेकी कोशिश की है कि अुन्हें नोबल पुरस्कार मिलना चाहिये। कहाँ वह सिंक्लेर लूअी और कहाँ मैं अप्टन सिंक्लेर! अैसा भास होता है। यह सब अमरीकी ढंग है। अुसीको क्या दोष दिया जाय? अैसा लगता है कि अमरीकामें यह सब स्वाभाविक है। बापूने अुसे अेक लकीर लिखी — "आपने जो पत्रिका भेजी, वह मैं समझ नहीं सका?"

८-५-'३२

बापू वल्लभभाओीसे कअी मामलोंमें दिलचस्पी लिवानेकी कोशिश कर रहे हैं। कल हीरालालकी 'खगोल चित्रम्' नामकी पुस्तक आयी। अुसके पुट्ठे अुखड़ गये थे और अुसकी जिल्दके टाँके भी पुराने होकर कट गये थे। बापू वल्लभभाओीसे कहने लगे — "क्यों, यह आपको सौंप दूँ न? आपने जिल्दसाजका काम कभी किया है? न किया हो तो मैं सिखा दूँगा।" फिर आज सुबह घूमते हुअे कहने लगे — "वल्लभभाओी, आपको छोटे छोटे काम करनेका शौक छुटपनसे है या यहीं पैदा हुआ? यानी आप कारीगर थे या यहीं बने?" वल्लभभाओीने कहा — "नहीं, अैसी कोअी बात नहीं। मगर जरूरत हो तो सूझ जाता है।" बापू बोले — "यह चीज जन्मजात है। दास बाबू अैसे थे कि सुओीमें डोरा तक नहीं पिरो सकते थे। मोतीलालजी कअी तरहके काम कर लेते थे।" मैंने कहा — "मोतीलालजीने पानीको जंतु रहित करनेकी कल खुद घरमें ही बनायी थी। और सब बीमारोंको जंतु रहित पानी ही पिलाते थे।" आज वल्लभभाओीने हीरालालकी किताबको बहुत अच्छा सीया और अुसके पीछे पट्टी भी लगा दी। अिसके सिवा बादाम पीलनेकी कल आयी थी, अुस पर बादाम पीले।

बापूके स्वभावमें बसी हुअी जिस चीजको मैंने कअी बार याद किया है और दूसरोंसे कहा है, वह आज खुद बापूने प्रेमाबहनके पत्रमें लिखी है :

"ज्यों ज्यों हम कुशल होते जायँगे, त्यों त्यों हमारे कामकी मात्रा बढ़ेगी। फिर भी हमें अुसका भार कम लगेगा। ताजा अुदाहरण सुन लो। बायें हाथसे कातने पर पहले दिन सिर्फ १३ तार निकले; वक्त ज्यादा लगा; थकावट ज्यादा हुअी। पहलेसे अब कुशलता बढ़ी है, यानी थोड़े समयमें थोड़ी थकावटसे दो सौसे ज्यादा तार निकालने लगा हूं। अब मगन चरखा अपनाया है। कल २४ तार निकाले और वक्त बहुत दिया। आज कम समयमें ५६ तार निकाले। थकावट थोड़ी हुअी। जो बात अेक आदमीके बारेमें और छोटेसे कामके लिअे सच है, वही संस्था और अुसकी महान प्रवृत्तियोंके विषयमें भी सच है।

"योगः कर्मसु कौशलम्। कर्म यानी सेवाकार्य, यज्ञ। हमारी तमाम मुसीबतें हमारी अकुशलताके कारण हैं। कुशलता आ जाय तो अभी जो चीज हमें कष्टदायक-सी लगती है, वह आनन्ददायी मालूम होने लगेगी। मेरी पक्की राय है कि सुव्यवस्थित सात्विक तंत्रमें जोर पड़ता-सा नहीं लगना चाहिये।

"तू यह चीज साधनेके लिअे आश्रममें आयी है। यह तुझे कोअी नहीं सिखायेगा। सबको खुद ही अुस हवामेंसे खींच लेना है। तुझ-जैसी जो न खींच सके, वह आश्रममें आखिर तक नहीं टिक सकती। जिसे महत्वाकांक्षा न हो वह निभ जाय, यह दूसरी बात है। चूँकि आश्रम स्वतंत्र संस्था है, अिसलिअे अुसमें जो सोच ले अुसके लिअे जितना अूँचा जाना हो अुतना अूँचा जानेकी गुंजायश है। वह तुझे कोअी दे नहीं सकता। तुझे खुद ही अनुकूल वातावरण पैदा करना है। तू अपनी सखीको खींच सकती है। मगर सच पूछा जाय तो वह स्वार्थीपन ही कहा जायगा। तेरे लिअे तो वहाँ जो भी कोअी हैं, वे ही तेरे सखा और सखी हैं। तुझमें जो कुछ है वह अुनमें अुँड़ेल दे। अुनमें हो वह तू ले ले। तू यह मानती हो कि अेक-दोके सिवा और किसीके पास तेरे लेने-जैसी कोअी चीज नहीं है, तो तू मोहकूपमें पड़ी हुअी है। मुझे लगता है कि दुनियामें अैसा कोअी नहीं है, जिससे हमें कुछ भी लेनेको न मिले।"

अेक नये आश्रमवासीने सवाल पूछा कि यदि चोर आये तो अुसे मार कैसे सकते हैं? अुसे तो खिलाना और बसाना चाहिये। पशुको भी अनाज खानेको देते हैं, क्योंकि यह समत्व है। वगैरा। अुसे बापूने लिखा :

"तुमने जो सवाल अुठाये हैं, वे अैसे हैं जो अुठाये जा सकते हैं। मगर अिनका निर्णय बुद्धिवादसे करें, तो अिनमेंसे और कअी सवाल पैदा होते हैं। और वे हमें यहाँ तक ले जाते हैं कि मनुष्यको अनशन लेकर समाधिस्थ

होकर बैठ जाना चाहिये । अैसा लगता है कि अैसे विचारोंमेंसे ही संन्यासकी कल्पना पैदा हुअी होगी । मगर जिसे हम संन्यास समझते हैं, वह भी बुद्धिवादमें पड़ने पर अधूरा ही साबित होगा । अिसलिअे अन्तमें अनशनकी ही नौबत आयेगी । मनुष्य अैसा नहीं कर सकता और करने भी लगे तो सम्भव है अुसका मन अनेक सृष्टियाँ रचता रहे । मुझे अैसा लगता है कि अिस तरहकी विचारधारामें से ही गीताकी अुत्पत्ति हुअी है । और गीताने अेक तरफ तो हमें जीवनका आदर्श बताया है और दूसरी तरफ यह बताया है कि अुस आदर्शकी तरफ जाते हुअे जीवन किस प्रकार बिताया जाय । अेक वाक्यमें वह यों है — ' आदर्शको ध्यानमें रखते हुअे जो कर्तव्य सामने आये, अुसे पूरा करते चले जायँ और फलकी अिच्छा न रखें । ' अिस तरह अमल करनेसे आश्रममें जो पहेलियाँ सामने आती हैं, वे हल होती रहती हैं । चोर जब आश्रममें आये, तब यदि अुसे बसा सकते हों तो बसा लें । मगर हममें यह शक्ति नहीं आयी है, यह बात नम्रताके साथ कबूल करके हमें जो शोभा देता है वैसा अुपाय करते हैं । ढोर वगैरा पशु आ जाते हैं और जन्तु फसल खा जाते हैं, अुनके लिअे हमें शुद्ध अहिंसक अुपाय नहीं मिला । अिसलिअे कितनी ही हिंसा हम अपनी पामरता समझकर अनिवार्य रूपमें करते हैं । मैं जानता हूँ कि शोर मचाकर या लकड़ी मारकर मवेशियोंको निकालना, कंकर मारनेका ढोंग करके या कंकर फेंककर पक्षियोंके दिलमें डर पैदा करना, हल चलाकर या और तरहसे जन्तुओंका नाश करना, साँप वगैराको पकड़ कर भगाना या मारनेकी भी छूट रखना, ये सब बातें विपरीत हैं । मगर आश्रम या आश्रमवासी सम्पूर्णताको नहीं पहुँचे हैं, अिसलिअे अैसी बातें विपरीत होने पर भी करते हैं; क्योंकि अिसीमेंसे मोक्षका मार्ग मिल सकता है । मुझे कोअी शक नहीं कि सब काम बन्द करके बैठ जाना अिन विपरीत बातोंके करनेसे भी ज्यादा गलत है । और अिसीलिअे गीताकारने कहा है कि प्रवृत्ति मात्रके पीछे अुसी तरह कुछ न कुछ दोष लगा ही रहता है, जैसे आगके पीछे धुअेंका दोष लगा है । यह समझ कर मनुष्य नम्र बने, और अपने भाग्यसे मिले हुअे कर्तव्यका सेवाभावसे पालन करे और यह समझे कि जो फल होगा अुसमें खुद तो परमात्माके हाथमें निमित्त मात्र है ।"

पंडितजीने पूछा था — " ' सत्य ही अीश्वर है ', यह बात आप बार बार कहते हैं । तो क्या यह आपको ' हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ' पढ़कर सूझा या स्वतंत्र रूपमें ? " बापूने साफ दिलसे जवाब दिया — " सत्य ही परमेश्वर है, यह सूझा अुस वक्त ' हिरण्मयेन पात्रेण ' मंत्र मेरे सामने था या नहीं, अिसका कुछ भी खयाल नहीं । अैसी चीजें जब मुझे सूझती हैं तब

हृदयसे अिस तरह निकलती हैं मानो मौलिक ही न हों। मेरे लिअे वे अनुभवसिद्ध कही जा सकती हैं।"

अिसी तरहकी साफ दिलीसे अुन्होंने अेक दिन सुपरिण्टेण्डेण्टको जवाब देते समय काम लिया था। सुपरिण्टेण्डेण्टके साथ चमत्कारों और सिद्धियोंकी बातें हो रही थीं। सुपरिण्टेण्डेण्टने कहा कि नटराजनको पत्र लिखा सो ठीक है। और पूछा — "मगर अैसी सिद्धी हो भी सकती है या नहीं? और हो तो अुसका अुपयोग क्या?" "अुपयोग यही कि यह अंतिम दशाको पहुँचनेसे पहलेकी अेक अवस्था है। मनुष्यको अिसका पता तक न चलना चाहिये। यह सिद्धि अुपयोग करनेकी चीज ही नहीं है। अिसका अनायास अुपयोग होता हो तो दूसरी बात है।" "अैसा हो सकता है कि मनुष्य अिसके बारेमें अनजान रहे?" बापू बोले — "हाँ, मैं अनजान था।" "आपमें अैसी कोअी शक्ति है?" बापूने कहा — "हाँ, अैसी कोअी चमत्कार करनेकी तो नहीं, मगर दूसरी है। मुझे क्या पता था या है कि अमुक जगह मैं अमुक शब्द बोलूँगा, मगर अीश्वर मुझे वह दे देता है। यह अेक शक्ति है। मगर अुसका अुपयोग क्या? वह अपने आप भले ही प्रगट हो।"

९-५-'३२

बापूने यह कहा था कि आश्रमको भेजनेके लिअे कुछ लिखो। मैंने नासिकमें 'मन्दिरोंका दर्शन' नामका नाटक सोचा था। अुसके पाँच दृश्य लिख डाले। मगर बापू कहने लगे — "यह जेलसे नहीं भेजा जा सकता। अैसी चीजको ये लोग पास नहीं करेंगे और कर भी दें तो अिनकी बदनामी हो। लिखकर रख लो और बाहर निकलकर छाप देना।"

बापू बिल्लीका काफी निरीक्षण कर रहे हैं। आजके पत्रकी रचना बिल्ली पर ही की है। बिल्लीका रातको जो दर्शन होता है, वह देखने लायक होता है। छिपकली पर अिसका अेकध्यान और अेकाग्र आँख हमारे ज्ञानियोंने नहीं देखी होगी, नहीं तो कहते कि भगवान पर अैसा ध्यान लगाओ। मगर कल तो अेक और ही खूबी देखी। छिपकली बिल्लीके पास आती जा रही थी कि बिल्ली दुम हिलाने लगी। फिर छिपकली वापस लौट गयी और दीवार पर अुलटी दिशामें चल दी। बिल्ली आवाजें मारने लगी, जैसे छिपकलीसे कहती हो कि तू कहाँ भागी जा रही है? सयानी होकर मेरे मुँहमें आ जा! जो अंग्रेज अीमानदारीसे यह मानते हैं कि हिन्दुस्तान पर विलायतका कब्जा रहना ही चाहिये, वे अिस बिल्लीकी याद दिलाते हैं। साँपसे अिस बिल्लीकी अुपमा ज्यादा ठीक है।

कल मगनचरखा चलाते चलाते अुस पर दायाँ हाथ बैठ गया, तो बापू अुत्साहमें आ गये। लेकिन आज वह चरखा किसी भी तरह न चला। वल्लभभाअीसे सुबहसे ही बापूने कह रखा था कि "आपका शाप न लगा तो चलेगा।" ९-१० बजे तक

१०-५-'३२

चलाया, परन्तु पूनियाँ बिगड़नेके सिवा कोअी परिणाम न निकला। वल्लभभाअीने कहा — "अेक कुकड़ी अुतारकर दूसरी भरी क्या?" दोपहरको भी अिसी तरह हुआ। चरखेके जोत कसे, तेल दिया, सब अुपाय किये और मैंने भी थोड़ी देर सिरपच्ची की, लेकिन चला ही नहीं। वल्लभभाअी सोकर अुठे तो कहने लगे — "बहुत कात लिया; अब बन्द कीजिये।" बापू बोले — "हाँ, काता, काता। हमारा संघ रुक जानेवाला नहीं है। आखिर सेम्युअल होरके पास बैठनेवाला ठहरा न मैं!" वल्लभभाअी — "नीचे बहुत-सा काता हुआ पड़ा दिखता है।" शामको तो वल्लभभाअीकी वृत्ति भी हँसी करनेकी नहीं रही। बापूने बायें हाथसे शुरू किया। लगभग पाँच घण्टे मेहनत की होगी। बापू शामको बिलकुल थक गये थे; थक थकाकर आठ बजे पहले ही पैर दबवाते अूँघने लगे। और अुठकर तुरंत सो गये। जाते जाते वल्लभभाअीसे कहने लगे — "देखिये, कल चरखा जरूर चलेगा। श्रद्धा बड़ी चीज है।" वल्लभभाअी कहने लगे — "अिसमें भी श्रद्धा!" बापू बोले — "हाँ, हाँ, श्रद्धा तो होनी ही चाहिये।"

*　　　*　　　*

स्विटजर्लैण्डमें अॅफी अेरिस्टार्शी नामकी राजकुमारी मिली थी। अुसके पत्र तो आते ही रहते हैं। बापूके लेख पढ़ने और अुनसे मिलनेके कारण अिस महिला पर बड़ा असर हुआ है, और वह अुसी असरकी बातें करती है। आज फादर अेल्विनने रामकृष्ण परमहंसका वचन सुन्दर अलंकृत अक्षरोंमें अेक कागजपर अुतार कर भेजा है:

"When you are at work, use only one of your hands, and let the other touch the feet of the Lord. When your work is suspended, take his feet in both your hands and put them over your heart."

"जब तुम काम करते हो तो अपना अेक हाथ अिस्तेमाल करो और दूसरा भगवानके चरणोंमें रहने दो। जब काम बन्द रहे तब अुनके चरण दोनों हाथोंसे पकड़कर अपने हृदय पर रख लो।"

मैंने बापूसे कहा — "बापू, अैसा मालूम होता है कि आप दायाँ और बायाँ दोनों हाथ काममें लेनेको कहते हैं, अुसके जवाबमें यह वचन आपको भेजा गया है।" बापू कहने लगे — "अिसमें कहाँ कहा है कि दोनों हाथ काममें न लो? अिसमें तो दोनों हाथोंसे काम करनेका ही अुपदेश है।"

बहनोंके पत्र आते ही जाते हैं। अिस बार भक्तिबहनका पत्र बड़ा। बहनें तत्व चर्चा भी खासी कर लेती हैं। गीताकी विद्यार्थिनी अेक बहनने पूछा — "अैसा कहा जाता है कि गीतामें अपने परायेका भेद न करनेका अुपदेश है। मगर कर्तव्यपालन करनेमें हिंसा-अहिंसाका भेद तो करना ही चाहिये! पूर्णावतार मारनेकी सलाह दे ही कैसे सकता है! दुनियाका भला चाहनेवाला हिंसात्मक लड़ाअीको खूब धिक्कारता है और हिंसात्मक लड़ाअीसे अिन्सान अिन्सान न रहकर हैवान बनता है। फिर भी गीतामें लड़ाअीका अुपदेश कैसे है?"

बापूने लिखा — "कर्तव्यका निश्चय करते समय बहुतसे प्रश्न अुठ सकते हैं। परन्तु गीताका निरीक्षण करते वक्त तो अितना ही विचार करना है कि प्रश्न करनेवालेका प्रश्न क्या था? प्रश्नसे बाहर जाकर जो शिक्षक अुत्तर देने लगे, वह अनाड़ी कहा जायगा; क्योंकि पूछनेवालेका ध्यान तो अपने सवालमें ही रहेगा, और दूसरा कुछ सुननेकी अुसकी तैयारी नहीं होती। अुसमें योग्यता न हो तो अुसे अरुचि हो जायगी। और जिस तरह अनाजका पौदा आसपास अुगे हुअे घासमें दब जाता है, वैसे ही अुस सवालके जवाबकी अिधर अुधरके विवादमें दब जानेकी सम्भावना रहती है। अिस दृष्टिसे कृष्णका जवाब परिपूर्ण है। और जब पहला अध्याय छोड़ कर हम दूसरेमें प्रवेश करते हैं, तो अुसमेंसे खालिस अहिंसा ही टपकती है। कृष्णको पूर्ण अवतार मान कर या मनवा कर हमें यह आशा नहीं रखनी चाहिये कि जैसे किसी शब्दकोषमें शब्दोंका अर्थ मिल जाता है, वैसे ही हमारे मनमें जो जो प्रश्न अुठें अुनका अर्थ अुनके वचनोंमेंसे सीधा मिल जायगा। अिस तरह मिल भी जाता हो, तो अुससे नुकसान ही होगा। फिर तो मनुष्यके लिअे आगे बढ़नेकी बात ही नहीं रह जाती, खोज करनेकी गुंजायश ही बाकी नहीं रहती। अुसकी बुद्धि कुण्ठित हो जाती है। अिसलिअे मनुष्योंको अपने अपने समयकी समस्याअें खुद ही बड़े प्रयत्नसे और तपश्चर्या करके हल करनी पड़ेंगी। अिसलिअे अभी हमारे सामने लड़ाअी वगैरा के प्रश्नोंके बारेमें जो कठिनाअियाँ आती हैं, अुनका निराकरण हम गीता-जैसे संस्कारी ग्रन्थमें पाये जानेवाले सिद्धान्तोंकी मददसे करते हैं। सच पूछा जाय तो यह मदद भी बहुत थोड़ी ही मिल सकती है। असली सहायता तो तपश्चर्यासे होनेवाले अनुभवसे ही मिलती है। आयुर्वेदमें औषधियोंके अनेक गुण बताये गये हैं। रास्ता बतानेके लिअे हम अुन औषधियों और अुनके गुणोंको जानें यह ठीक है। मगर वह दवा अनुभवकी कसौटी पर खरी न अुतरे तो हमारा ज्ञान बेकार है। अितना ही नहीं, वह भार भी बन सकता है। ठीक अिसी तरह हमें जिन्दगीके बारीक सवाल भी हल करने हैं। अब अिस विषयमें और कोअी बात पूछनेको रही हो तो पूछ लेना।"

अेक और बहनने पूछा — "आत्मा अमर है, यह तो आप मानते हैं। तब अेक स्नेहलग्नके बाद विधवा होने पर बिन्दी क्यों नहीं लगायी जा सकती?"

बापूने अिसका जवाब दिया — "मेरे खयालसे तो जैसे विधुर अपनी पत्नीके मरनेके बाद विधुरपनकी कोअी निशानी शरीर पर नहीं रखता, वैसे ही विधवाको भी बाहरी चिह्न रखनेकी कोअी जरूरत नहीं है। जिस बहनने आत्माके अमर होनेकी दृष्टिसे विचार किया है, वह दृष्टि तो ठीक है, पर अूँची कहलायेगी। मैं तो सिर्फ न्यायकी दृष्टिसे विचार कर रहा हूँ। तब भी हृदयमेंसे जवाब निकलता है कि विधवाको अपने वैधव्यकी सतत रक्षा करनेकी अिच्छा हो, तो भी अुसे बाहरी निशान रखनेकी बिलकुल जरूरत नहीं है।"

अिसपर मैंने कहा — "अिस बेचारीको कहाँ मालूम है कि आप तो सधवासे भी यह माँग करते हैं कि वह बिन्दी न लगाये और चूड़ियाँ न पहने!"

बापू कहने लगे — "तुम कहो तो लिखूँ। मगर बात यह है कि हमें तो न्यायकी ही बात करनी है। जब तक सारा सधवा जगत बिन्दी लगाता और चूड़ियाँ पहनता है, तब तक विधवाके सामने यह आदर्श स्थिति कैसे रखूँ? बा को समझा समझा कर थक गया, मगर अुसने न माना। मैं भी कभी अिस विचारका पक्का था कि विधवाओंकी शादी न होनी चाहिये और अुस समय यही कहता था कि विधुरोंको भी विवाह न करना चाहिये। मगर बादमें मैंने देखा कि विधुरोंके शादी न करनेकी हालत तो कभी पैदा नहीं की जा सकेगी। अिसलिअे शुद्ध न्यायकी बात कहना ही अच्छा है कि विधवा पर शाश्वत वैधव्यका जुआ नहीं रह सकता।"

नटराजनका पत्र आया। अुन्होंने बापूके अिस सुझावका स्वागत किया कि चमत्कारोंका प्रदर्शन करना मूर्खता है:

"I agree with you that exhibition of the kind you refer to, are repulsive and as they serve no useful purpose they should be discouraged by public opinion. They recall a saying of Ramakrishna Paramhansa's which I read somewhere. Some one asked him if it was possible to walk on water. 'Yes' was his reply, 'but commonsense people pay a pice to the ferryman.'"

"आप लिखते हैं वैसे प्रयोग करना घिन अुपजाता है। अुनसे कोअी मतलब सिद्ध नहीं होता, अिसलिअे अुन्हें अुत्तेजन नहीं देनेके लिअे लोकमत तैयार करना चाहिये। मैं आपके अिन विचारोंसे सहमत हूँ। अिस सवालके सिलसिलेमें विचार करते हुअे मुझे रामकृष्ण परमहंसका अेक वचन कहीं पढ़ा हुआ याद आता है। अुनसे किसीने पूछा कि 'क्या पानी पर चला जा सकता

है ?' अुन्होंने जवाब दिया — 'हाँ, मगर साधारण बुद्धिवाले आदमी नाववालेको अेक पैसा दे देना ज्यादा पसन्द करते हैं।' "

अुनके लड़केने अेक अीसाअी लड़कीसे शादी की। अुसका जिक्र करते हुअे अुन्होंने लिखा :

" Apropos of my son's marriage our venerable friend C. Vijayraghav of Salem wrote to him cangratulating us and added that his only wish was that she might become Hindu, 'at least an Arya Samajist'. I replied that my Hinduism was wide enough to cover all great religions without any conversion. I rather feel you think the same way."

" मेरे लड़केकी शादीके मामलेमें सालेमके हमारे पूज्य मित्र सी० विजयराघवने हमें बधाअीका पत्र भेजा। अुसमें लिखा कि मेरी अितनी ही अिच्छा है कि लड़की हिन्दू हो जाय, 'कुछ नहीं तो आर्यसमाजी तो' बन ही जाय। मैंने जवाब दिया कि मेरा हिन्दूधर्म अितना विशाल है कि धर्म परिवर्तन कराये बिना भी सभी बड़े बड़े धर्मवाले अुसमें समा सकते हैं। मेरा खयाल है कि आप भी अैसा ही मानते हैं।"

अेक बात और लिखी :

" Have you read Countess Tolstoy's Diaries? I read them only recently and I feel that they are a revelation of the intelligent woman's soul such as I have longed to read and have not so far read. It is a book which all who are devoted to the woman's cause, should read, mark and inwardly digest."

" काअुण्टेस टॉल्स्टॉयकी डायरियाँ आपने पढ़ी हैं? मैंने अभी ही पढ़ी हैं। मुझे अैसा लगता है कि अुनमें अेक बुद्धिमान स्त्रीका हृदय प्रगट होता है। अैसी चीज पढ़नेकी मेरी बड़ी अिच्छा थी, मगर अभी तक पढ़ नहीं पाया था। जो स्त्रियोंके लिअे काम करना चाहते हैं, अुन सबको अुन्हें पढ़ना चाहिये, अुन पर विचारना चाहिये और अुन्हें पचाना चाहिये।"

११–५–'३२

सुपरिण्टेण्डेण्ट आज खबर लाये कि बापूने जिन अराजनीतिक साथियोंके नाम भेजे थे, अुनमेंसे पन्द्रह मंजूर हुअे हैं और चारके बारेमें बादमें हुक्म आयेगा। पिछले आदमी हैं करमचंद, नरगिसबहन, हीरालाल और दामोदरदास। वल्लभभाअीकी डाक्टरी परीक्षाके बारेमें वे मुग्धम कहने लगे कि हम मानते हैं कि यहाँ पूरी व्यवस्था हो सकती है, और निष्णातोंको बुलानेकी जरूरत नहीं है। बापूने कहा —

"आप शरीरके मालिक हैं, मगर मनुष्य अपने निष्णातको बुलानेके लिअे स्वतंत्र है। हरअेक कैदीको अपना शरीर अपने आदमीको सौंपनेका आग्रह करनेका हक है। और आप जो कुछ कह रहे हैं, वह तो मुझे केवल गुस्ताखी लगती है। अगर वल्लभभाअी मान लें तो अिस मामलेमें मैं अुन्हें भी सरकारसे पूरी तरह लड़वा दूँ। यह तो मुझे जुल्म मालूम पड़ता है। और मेरे लिअे ये जबानी जवाब काफी नहीं हैं। मुझे सरकारकी लिखित आज्ञा चाहिये।" सुपरिण्टेण्डेण्ट बोले: "यह पत्र तो मेरे नाम ही था न?" बापू कहने लगे — "मगर वह आपकी सूचनासे था। हमें सरकारी जवाब चाहिये।" अिसके बाद वे जरा नरम पड़े और आखिर यह वचन दे गये कि मेहतासे आपरेशनकी सिफारिश कराअूँगा और यह लिख दूँगा कि वल्लभभाअी अपने विशेषज्ञसे आपरेशन कराना चाहते हैं।

ये सुपरिण्टेण्डेण्ट अेक बार कहते थे कि साँपका जहर अुतारनेके लिअे पाँच रुपया देकर जो मोहरा लिया गया था, वह बेकार साबित हुआ। स्मरणशक्ति बढ़ानेके लिअे पेलमॅनका कोर्स १२०) रुपयेमें खरीदा और यह साबित हुआ कि रुपया यों ही बरबाद हुआ। ये पुस्तकें बापूके देखनेके लिअे लाये थे।

कैदियोंकी बात निकलने पर कहा कि कितने ही कैदी सुरंग खोदकर बाहर निकल गये थे। बापूने मार संघवाणाका जिक्र किया। अुसने कअी आदमियोंकी नाक काट ली थी और आतंक फैला दिया था। अुसे सरकारने पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट बना दिया। मेजरने डाह्यला डाकूकी बात कही। अिसे अुन्होंने फाँसी दी थी। कहते हैं वह बहादुरीके साथ फाँसी पर चढ़ गया। जिस दिन फाँसी दी जानेवाली थी, अुस दिन गो माताके दर्शन करनेकी माँग की थी। दूसरे अेक मुसलमान (वोहरे) ने भी गोमाताके दर्शनकी माँग की थी।

बापू आज चरखे पर ज्यादा सफल हुअे। तीन घण्टे कातकर १३१ तार निकाले। वल्लभभाअीसे कहा — "देखिये, आज कैसा परिणाम आया है!" वल्लभभाअीने कहा — "हाँ, नीचे काफी पड़ा है।" बापूने कहा — "मगर यह सूतकी फेनी बन्द हो जायगी, तब तो कहेंगे कि अब ठीक है?"

१२-५-'३२

आज सवेरे कातते कातते कहने लगे — "यह अेक बड़ी तालीम है।" मैंने कहा — "यह कहनेकी जरूरत नहीं है, देख ही रहे हैं न!" बापू कहने लगे — "नहीं, अिस अर्थमें नहीं कहता। ६३ वर्षकी अुम्रमें अितनी मेहनत अुठा रहा हूँ, यह तुम्हें तालीम मालूम हो सकती है। मगर मैं तो कहता हूँ कि अिस अुम्रमें भी मुझे अिसमें खूब रस आ रहा है। और मेरे लिअे यह बढ़िया तालीम है। परिश्रमकी

लज्जत ही और है । मेहनतका मजा तो वह स्त्री जानती है, जिसके बच्चा होनेवाला है ।"

तीन घण्टे चरखा चलाकर खूब थक गये थे। अिसलिअे आज रातको भी पैरोंकी मालिश कराते कराते बोले — "मैं अब सोता हूँ।" मगर मालिशके आधे घण्टे बाद तो ताजा हो गये और खासा लम्बा पत्र लिखवाया। और वह मामूली नहीं, गहरे चिन्तनसे भरपूर था। पुरुषोत्तमने लम्बा खत लिखकर पूछा था कि जैन दर्शनमें शुद्ध न्याय हो, तो ये लोग दयाको भी — सात्विक ही सही — अेक राग समझते हैं। अिसलिअे आपने जिस दयासे प्रेरित होकर बछड़ेकी हिंसा करवायी थी, वह वीतराग मनुष्य नहीं करेगा — या वह हिंसा वीतरागता नहीं बताती। पत्र लम्बा था और बढ़िया था। अुसका जवाब यह था :

"तेरा पत्र मिला। बहुत अुम्दा है। 'जैनदर्शनमें शुद्ध न्याय पर जोर है' अिस वाक्यके बारेमें जरा गलतफहमी हुअी है। 'शुद्ध न्याय'का अर्थ शुद्ध नीति और शुद्ध निर्णय हो सकता है। और आम तौर पर अिस शब्दको हम अिसी अर्थमें समझते हैं। मगर मैंने अिस मानीमें अिस्तेमाल नहीं किया है। मेरा मतलब यह कहनेका था कि जैनदर्शनमें 'तर्क' पर ज्यादा जोर दिया जाता है। लेकिन 'तर्क'से कभी कभी अुल्टे निर्णय हो जाते हैं और भयंकर परिणाम निकल आते हैं। अिसमें दोष तर्कका नहीं है, मगर शुद्ध निर्णय पर पहुँचनेके लिअे जो जो सामग्री होनी चाहिये, वह हमेशा होती नहीं। फिर, यह भी नहीं होता कि लिखने या बोलनेवाला खास शब्द खास अर्थमें अिस्तेमाल करे, तो पढ़ने या सुननेवाला भी वही अर्थ समझे। अिसलिअे हृदयको यानी भक्ति, श्रद्धा और अनुभवज्ञानको आगे रखा गया है। तर्क केवल बुद्धिका विषय है। हृदयको जो चिज सिद्ध हो गयी है, वहाँ तर्क यानी बुद्धि नहीं पहुँच सकती, अुसकी बिलकुल जरूरत नहीं है। लेकिन अिसके विपरीत किसी बातको बुद्धि मान ले, मगर वह हृदयमें न अुतरे, तो त्याज्य हो जाती है। मैंने यह जो कहा है अुसे स्पष्ट करनेके लिअे तू अपने आप अनेक अुदाहरण गढ़ सकेगा। मैंने अभी जिस अर्थमें 'न्याय' शब्द अिस्तेमाल किया है, अुस अर्थमें यह कभी साध्य वस्तु नहीं हो सकती। न्याय और निष्काम कर्मयोग दोनों साधन हैं। न्याय बुद्धिका विषय है, निष्काम कर्मयोग हृदयका है। बुद्धिसे हम निष्कामताको नहीं पहुँच सकते।

"अब तेरे प्रश्न पर आता हूँ। दया और अहिंसा अलग चीजें नहीं हैं। दया अहिंसाकी विरोधी नहीं है। और विरोधी हो तो वह दया नहीं है। दयाको अहिंसाका मूर्त स्वरूप मान सकते हैं। 'दयाहीन वीतराग पुरुष' यह

प्रयोग बिलकुल गलत है। वीतराग पुरुष दयाका सागर होना चाहिये। और जहाँ करोड़ोंके प्रति दयाकी बात है, वहाँ यह कहना कि यह दया सात्विक होने पर भी रागरहित नहीं है या तो दयाका अर्थ न समझना है या दयाका नया अर्थ करना है। आम तौर पर हम दयाका वही अर्थ करते हैं, जिसमें तुलसीदासजीने 'दया' शब्द अिस्तेमाल किया है। तुलसीदासजीका अर्थ नीचेके दोहेमें साफ जाहिर है:

दया धर्मको मूल है, पाप (देह) मूल अभिमान।

"यहाँ दया सिर्फ़ अहिंसाके मानीमें ही है। अहिंसा अशरीरी आत्मामें ही सम्भव है। मगर जब आत्मा शरीर धारण करती है, तब अुसमें अहिंसा दयाके रूपमें मूर्तिमान होती है। अिस दृष्टिसे देखने पर बछड़े पर की गयी क्रिया शुद्ध अहिंसाका मूर्तरूप थी। आत्मा खुद कष्ट सहन करे, यह अुसका स्वभाव ही है। लेकिन दूसरेसे कष्ट सहन कराना आत्माके स्वभावसे अुलटी बात हो गयी। अगर बछड़ेके दुःखसे मुझे होनेवाले दुःखको दूर करनेके लिअे मैंने अुसे मरवाया होता तो वह अहिंसा नहीं होती, मगर बछड़ेको होनेवाला दुःख दूर करना अहिंसा थी। अहिंसाके पेटमें ही दूसरोंको होनेवाला दुःख सहन न करनेकी बात है। अिसीसे दया पैदा होती है, वीरता प्रगट होती है और अहिंसाके साथ लगे हुअे जितने गुण हैं वे सभी देखनेमें आते हैं। दूसरोंको होनेवाला दुःख देखते रहना अुलटा तर्क है! और यह भी निरपवाद सत्य नहीं है कि जीवनदुःखसे मरणदुःख मनुष्यके स्वभावमें ही ज्यादा है। मेरे खयालसे हमने ही मौतको अितनी भयंकर चीज बना डाली है। जंगली माने जानेवाले लोगोंमें मौतका अितना डर नहीं होता। लड़ाकू जातियोंमें यह डर कम ही है। और पश्चिममें तो आज अैसा सम्प्रदाय बन रहा है, जो दुःख पाकर जीनेसे मरना ही पसन्द करेगा। मौतका जो बहुत ज्यादा भय मान लिया गया है, यह मुझे तो अज्ञानकी या शुष्क ज्ञानकी निशानी लगती है। और अिस मान्यतासे अहिंसाने हममें और हमसे भी ज्यादा जैनोंमें वक्ररूप धारण कर लिया है। और अिससे सच्ची अहिंसाका लगभग लोप हो गया है। क्रोधके आवेशमें आकर कुअेंमें गिरनेवाली स्त्री रस्सा मिलने पर भले ही अुसका सहारा ले लेगी। मगर जो किसी भी खयालसे सही, जानबूझकर कुअेंमें गिरती है अुसे रस्सेका सहारा मिले तो भी वह अुसका तिरस्कार ही करेगी। जापानियोंकी 'हाराकिरी' अिसका प्रसिद्ध अुदाहरण है। 'हाराकिरी' ज्ञानमूलक है या अज्ञानमूलक, यहाँ यह प्रश्न प्रस्तुत नहीं है। यहाँ तो मैं अितना ही बता रहा हूँ कि अैसी बेशुमार मिसालें हैं, जब अिन्सान जीनेसे मरना ज्यादा पसन्द करता है। और पश्चिममें अपंग होकर दुःख पानेवाले जानवरोंको देह मुक्त करनेका जो रिवाज है, अुसके पीछे यही खयाल

रहा हुआ है कि पशुओंको मौतका डर कम होता है। और अेक खास हदसे ज्यादा दुःख पड़े तो वे मरना पसन्द करेंगे। अैसा हो सकता है कि यह खयाल सच्चा न हो। अिसलिअे यह समझकर बरताव करना हमारा धर्म है कि पशुको भी मनुष्यकी तरह ही अपने प्राण प्यारे हैं।

"अगर यहाँ तक बात तेरे गले अुतरी हो, तो समाजकी दृष्टि या समाजके धर्मका बहुत विचार करनेकी बात रह नहीं जाती। जहाँ लोगोंकी वृत्ति अहिंसाकी तरफ हो, वहाँ बछड़ेके अुदाहरणका दुरुपयोग होना कम सम्भव है। जहाँ अहिंसावृत्ति नहीं है, वहाँ पशुहिंसा तो हुआ ही करती है। अिसलिअे मेरे-जैसोंकी मिसालसे अुसमें कुछ बढ़ती होना सम्भव नहीं है। बछड़ेके शरीरका नाश करनेमें परिणामके पूर्ण ज्ञानकी जरूरत नहीं थी। अगर बछड़ेकी मौत दूसरी किसी तरह किसी भी समय आनेवाली न होती, तो जरूर यह बात सोचने लायक थी। यानी यह स्थिति होती कि मेरे सिवा बछड़ेके शरीरका अन्त और कोअी कर ही नहीं सकता, तो बादके परिणामकी पहलेसे पूरी जानकारी होना बेशक जरूरी था। यहाँ तो बछड़ा और हम सब जीव रोज ही देहान्तको साथ लिये फिरते हैं। अिसलिअे अिसमें सबसे बड़ी बात तो अितनी ही रह जाती है कि यह देह थोड़े दिन या महीने या साल ज्यादा बना रहे। यह सब यहाँ अयुक्त नहीं है, क्योंकि हेतु बिलकुल निःस्वार्थ है और बछड़ेका ही सुख देखनेकी बात है। और अिसलिअे यह कहा जा सकता है कि शायद कहीं कोअी विचार दोष हुआ होगा, तो भी बछड़ेके लिअे अैसा कोअी खराब नतीजा नहीं निकला होगा, जो किसी न किसी दिन न निकलता। . . . अिसमें सन्देह नहीं कि अिस विचारधारामें कितनी ही प्रचलित मान्यताओंपर प्रहार है। मगर मैं मानता हूँ कि हममें यानी हिन्दूधर्ममें अितना ज्यादा कायरपन और अिसलिअे अितना ज्यादा आलस्य आ गया है कि अहिंसाका सूक्ष्म और मूलरूप भुला दिया गया और वह सिर्फ तुच्छ जीवदयामें समा गया है, जब कि मूलरूपमें अहिंसा अन्तरकी अत्यन्त प्रचंड भावना है और वह कअी तरहके परोपकारी कामोंकी शकलमें प्रगट होती है। अगर यह अेक मनुष्यमें भी पूरी तरह प्रगट हो, तो अुसका तेज सूर्यसे भी बड़ा होगा। लेकिन आज अैसा कहाँ है?"

यह पत्र लिखवाते लिखवाते तुलसीदासके दोहेके पाठके बारेमें काफी चर्चा हुअी: "'पापमूल' पाठ मैंने सुना है, मगर 'देहमूल' भी मैंने सुना है। और यह पाठ मुझे ज्यादा अच्छा लगता है।" बापूने अैसा कहा तो मैंने जवाब में कहा — "देहका मूल अभिमान है, अिस वेदान्ती विचारके बजाय यहाँ यह विचार होगा कि धर्मका मूल दया और पाप यानी अधर्मका मूल अभिमान है।" बापू बोले — "अिसमें देहमूल अभिमानका अर्थ यों होगा कि जैसे

दया धर्मका मूल है, अिसी तरह देह अभिमानका मूल होनेके कारण दयाका विरोधी है। मगर देह सारी खर्च डालना ही शुद्ध दया है। यह दया तब तक नहीं छोड़ना चाहिये, जब तक घटमें प्राण हैं। सेवा करते हुअे या करने जाते हुअे देहका विसर्जन होना शुद्धतम दया है। यह चीज अनुभवसिद्ध है।" मैंने कहा — "यह अनुभवसिद्ध तो है ही। मगर प्रस्तुत वाक्यमेंसे यह अर्थ नहीं निकलता। मामूली आदमीके लिअे यह विचार जरा बारीक कातने जैसा हो जाता है, जब कि यह बात तो साधारण मनुष्य भी समझ सकता है कि अधर्मकी जड़ अभिमान है।" बापू बोले — "नहीं, तुलसीमें अैसी रचना आती है।" आखिर यह ठहरा कि दोनों पाठ लिखे जायँ। और अन्तमें यह तय रहा कि पत्रके लिअे तो अितना अुद्धरण ही काफी था 'दया धर्मको मूल है'।

आज नारणदासभाअीको अुतना ही लम्बा पत्र लिखवाया, जितना कल पुरुषोत्तमको लिखवाया था। कल प्रसूतिकी अुपमा दी थी।

१३-५-'३२ आजकल वैसी ही किसी पीड़ासे बापू पीड़ित हो रहे हैं। और अुसका परिणाम यह है कि अैसे विचारोंसे भरे हुअे पत्र पैदा हो रहे हैं। हर तरहकी मेहनतका अेकसा मेहनताना मिलना चाहिये — यह खयाल बापूने रस्किनसे लिया है और अिसे आश्रममें अमलमें लानेकी अुत्कण्ठा है।

कल शारदा बहनने अेक पत्र लिख कर स्वदेशी प्रदर्शनमें हाथकी बुनाअीका सामान रखनेकी सम्मति माँगी थी। बापू कहने लगे — "यहाँसे राय नहीं दी जा सकती। मगर मेरे विचारोंसे चिपटे रहनेकी कोअी जरूरत नहीं। परिस्थितिके अनुसार जैसा सूझे वैसा करो।" अमरीकाके बारेमें लिखते हुअे अिसी पत्रमें लिखा था — "अमरीकामें महज अैश आराम ही नहीं है। शुद्ध संयम और सेवापरायणताके अुदाहरण भी बहुत मिलते हैं।" अैसा मालूम होता है मानो वल्लभभाअीने विदूषकका खेल पूरा ही खेलनेका निश्चय किया हो। बापू कहने लगे — "तो मैं सो जाता हूँ।" वे बोले — "जरूर, किसी दिन तो हमेशाके लिअे सोना पड़ेगा। अिसलिअे जरा तालीम लेनेकी जरूरत है।"
'यरवदा मन्दिर'का पता लिखे हुअे पत्र आते हैं। डाकखानेने भी यह परिभाषा मान ली है। वल्लभभाअी कहने लगे — "मन्दिर तो है ही, सिर्फ प्रसादीके बारेमें रोज झगड़ा होता है।"

छगनलाल जोशीका लम्बा पत्र आया। और कल देवदासको जो पत्र लिखवाया था, अुसमें बापूने अपने मनोरथोंका हूबहू वर्णन किया था। चरखा (दोतारा), अुर्दू, आकाशदर्शन, अर्थशास्त्र, आश्रमका अितिहास और रस्किनकी पुस्तकें! ये सब अेक साथ कैसे चल सकते हैं?

'हिन्दू'में होरका सारा भाषण आया। अुस पर पोलाककी आलोचना आयी। बापूको सारा भाषण सुनानेकी अिच्छा नहीं थी, मगर मॉ० प्रीवा पर अुसने जो हमला किया था, वह पढ़कर सुना दिया गया। बापू कहने लगे — "बस, अिसमें निरा टोरीपन है। अिसमें अपने जन्मकी प्रतिष्ठाका घमण्ड है। और अिस तरहकी प्रतिष्ठा न रखनेवाले मनुष्योंके लिअे अिन लोगोंके मनमें खालिस तिरस्कार है। अुसका जवाब देना तो दूर रहा, अुसे अिस तुच्छतासे अुड़ा दिया जिसका हम खयाल भी नहीं कर सकते।" बापूको बड़ा दुःख हुआ।

बापू कितनी ही मामूली बातोंके बारेमें यानी जिनमें विचारकी जरूरत है अुनके बारेमें बहुत बारीक जानकारी रखते हैं, अुनकी कार्यप्रणाली समझाते हैं और अुनमें सुधार वगैरा सुझा सकते हैं। मगर कितनी ही बातोंमें बापूका अज्ञान भी मनोरंजक है। अेक दिन कहने लगे — "जवाहरलाल अपने संक्षिप्त नाममें जे० अेम० नहीं लिखते?" मैंने कहा यह रिवाज तो सिर्फ सिन्धसे लेकर कर्णाटक तक बम्बअी अिलाकेमें ही है। अुत्तरवाले बापका नाम लिखते ही नहीं। दक्षिणवाले गाँवका नाम पहले लिखते हैं और फिर कुलका नाम। बापके नामकी जरूरत नहीं। बापू कहने लगे — "मुझे यह मालूम नहीं था।" आज पूछने लगे — "कोयलकी अंग्रेजी क्या है? काबर और कोयलमें क्या फर्क है? और sparrow (स्पैरो) और Swallow (स्वॅलो)के बीच? और Lark (लार्क) पक्षी वह तो नहीं है जिसे हम चील कहते हैं?"

१४-५-'३२

आज डाह्याभाअी मिलने आये थे। कहते थे कि बाहरके सब लोग तो यह सोचते हैं कि अब समझौता होनेकी तैयारी है। सरकार गांधीके साथ बातचीत कर रही है। बापू कहने लगे — "जब तक ये लोग अितना कहते हैं कि गांधीके साथ बातचीत हो रही है अिसलिअे समझौता हो जायगा, तब तक ठीक है। यह अुनकी भलमनसाहत है कि वे यह मानते हैं कि यहाँकी बातचीतके बिना कुछ नहीं होगा।"

शास्त्रीने मालवीय स्मारक ग्रंथकी 'हिन्दू' में आलोचना की है। बापूने वह पढ़कर सुनानेको कहा। पढ़कर सुनायी। शास्त्रीमें तीखे चुटकले याद रखने और समय असमय पर सुनानेकी कुटेव है। यह कह कर कि मालवीयजी जितने हिन्दुओंके मित्र हैं अुतने ही मुसलमानोंके हैं, यह भी जोड़ दिया — "हालाँ कि अेक मुसलमान कहता था कि मालवीयजीकी हत्या हो जाय, तो कुछ भी खलबली न मचे।" यह लिखनेका क्या मतलब होगा? अन्तमें यह लिखनेका क्या मतलब कि मालवीयजी और गांधीजी दोनोंके प्रतिभाशाली होने पर भी अुनमें भाअीचारा और मेल है? . . ."

आज ‘ हिन्दू ’ के शिमलेके सम्वाददाताने सत्यमूर्तिका गांधीजीके नाम लिखा हुआ पत्र छापा है। बापूको तो अभी तक वह मिला ही नहीं और अुसकी नकल शिमलेके सम्वाददाताको मिल भी गयी ! सत्यमूर्तिको लगता है कि होरके भाषणके जवाबमें गांधीजीको सुलहकी माँग करनी चाहिये। बापू कहने लगे — “ क्या अिसकी समझमें अितना नहीं आता कि वह यह कहता है कि दाँतोंमें तिनका लेकर हमारे पैरों पड़ो ? हमारे आदमी अूब गये होंगे। अिधर मेरे जीमें यह है कि मामला जितना लम्बा जाय अुतना अच्छा, ताकि जितनी सफाअी होनी हो हो जाय और अुसके बाद ही हम छूटें।”

१५–५–’३२

वल्लभभाअीने बापूको सत्यमूर्तिका लेख पढ़नेके लिअे ‘ हिन्दू ’ दिया। बापू कहने लगे — “ वल्लभभाअी, आप भूलते हैं। आप समझते हैं कि यही सबसे बड़ी खबर है। बड़ी खबर तो ‘ हिन्दू ’ में वह भाषण है, जो जोसेफने केरलके सनातनी अीसाअियोंकी परिषदके प्रमुखकी हैसियतसे दिया है।” यह कह कर अुसके दिलचस्प अंश पढ़ कर सुनाये, खास कर सरकारकी धर्मके मामलेमें तटस्थताकी नीतिकी आलोचना। सरकारके भड़के हुअे राजपुरुषोंने केनिंगके वक्तसे ही अीसाअी हुकूमतके रूपमें राज करनेका तरीका रखा होता, तो आज ब्रिटेनके भागनेकी नौबत न आती, वगैरा वगैरा। बापूने कहा — “ यह आदमी तो पागल ही हो गया है ! कट्टर अीसाअी तक अैसा नहीं लिखते।”

बम्बअीमें भयंकर दंगा होनेकी खबर आयी। पढ़कर सबको बड़ा दुःख हुआ। . . . आजकी डाकमें ४५ पत्र लिखवाये। लेखके लिअे अरबोंके अद्भुत त्यागकी सर फिलिप सिडनी जैसी अेक कहानी पसन्द की।

१६–५–’३२

डायरीके बारेमें लिखते हुअे कहते हैं — “ डायरीमें जितना लिखा जा सके लिखना चाहिये। गुप्त से गुप्त विचार भी लिखे जायँ। हमारे पास छिपानेको है ही क्या ? अिसलिअे अिसकी चिन्ता न करें कि कौन पढ़ेगा ? अिसी लिअे दूसरेके दोष या अुसकी खानगी रखनेको कही हुअी बातें अुसमें न लिखी जायँ। अुसे पढ़नेका अधिकार तो अुसके मंत्री या अुसके मुखतारका ही हो सकता है। मगर वह किसीसे छिपा कर रखनेकी चीज नहीं हो सकती।”

गीता रोज पढ़नेसे नीरस लगती है यह शिकायत करनेवालोंको लिखा — “ गीताको रोज पढ़ना नीरस अिसलिअे लगता है कि अुसका मनन नहीं होता। अुसे यह समझकर पढ़ें कि वह हमें रोज रास्ता बतानेवाली माता

है तो वह नीरस नहीं लगेगी। हर रोजके पाठके बाद अेक मिनट तक अुसपर विचार कर लिया करें, तो रोज कुछ न कुछ नअी बात मिलेगी। सिर्फ सम्पूर्ण मनुष्यको ही अुससे कुछ नहीं मिलेगा। मगर जो यह समझकर रोज पढ़ता है कि जिसके हाथों नित्य कोअी न कोअी दोष हो जाता है अुसका अुद्धार करनेवाली यह गीता माता है, वह रोजके वाचनसे नहीं थकेगा।"

अेक सवाल पूछनेवालेको छोटे छोटे जवाब दिये: "(१) आचार्य वह जो अपने आचारसे हमें सदाचारी बनावे। (२) सच्चा व्यक्तित्व अपनेको शून्यवत् बनानेमें है। (३) जीवनका रहस्य निष्काम सेवा है। (४) सबसे अूँचा आदर्श वह है कि हम वीतराग बनें। (५) अन्तर्बाह्य नियमोंका निश्चय ऋषि मुनियोंने प्राय: अपने अनुभवसे किया है। ऋषि वह जिसने आत्मानुभव किया है। (६) कर्तव्य कर्मोंके त्यागको गीता संन्यास कहती है। (७) पुरुष वह जो अपने देहका राजा बनता है। (८) सौन्दर्य आन्तरिक वस्तु होनेसे अुसका प्रत्यक्ष दर्शन नहीं हो सकता है।"

फूलचन्दका वीसापुरसे पत्र आया। अुसमेंसे जेलवालोंने १३ लकीरें टाअिपराअिटर पर मिटा डाली थीं, ताकि वे बिलकुल न पढ़ी जा सकें। अुसे बापूने लिखा — "हमें अिसका दु:ख नहीं करना चाहिये। कैदी हैं अिसलिअे जैसे वे रखें वैसे रहना चाहिये। अैसा भी समय था जब कैदियोंको न पत्र लिखने देते, न पढ़ने देते, न पूरा खानेको देते, चौबीसों घण्टे बेड़ियाँ पहनाते और घासपर सुलाते थे। अिसलिअे हमें तो जो मिल जाय, अुसे अीश्वरकी कृपा ही समझना चाहिये। लेकिन स्वाभिमान नष्ट हो वहाँ हम प्राण दे दें।" फिर लिखते हैं — "मैं आशा रखता हूँ कि वहाँ सब भाअी अपने अपने वक्तका अच्छेसे अच्छा अुपयोग करते होंगे। अैसा अेकान्त और अितनी फुरसत बार बार नहीं मिलता। पढ़नेको मिले तो पढ़ना चाहिये। सोचनेको तो मिलता ही है। जो अनेक प्रवृत्तियाँ हों, अुनमेंसे कोअी न कोअी हाथमें ले लेना चाहिये। अेक गंभीर भूल जो हम सब करते हैं, वह यह है कि हम न जाने क्यों यह मानकर कि सरकारी समय या चीज हमारी नहीं है अुसे बर्बाद करते हैं। जरा-सा विचार करने पर हमें तुरन्त मालूम हो जायगा कि सरकारी वक्त या वस्तु प्रजाकी ही है। अभी सरकारके कब्जेमें हैं, अिसलिअे अुसे बर्बाद कर देंगे, तो यही कहा जायगा कि प्रजाका धन और प्रजाका वक्त बर्बाद कर दिया। अिसलिअे हमारे हाथमें जो कुछ आये, अुसका हम सदुपयोग करें। जेलोंमें हम जो भी आमदनी करते हैं, वह भी प्रजाके धनमें वृद्धि करनेके बराबर ही है। सरकारके विदेशी होनेसे अिस विचारधारामें कोअी फर्क नहीं पड़ता। मगर मैं अिससे भी आगे बढ़ूँ

तो राजनीति आ जाती है, और राजनीतिमें हम कैदीकी हैसियतसे पड़ नहीं सकते। अिसलिअे यह बात यहीं खतम करता हूँ।"

बम्बअीका हत्याकाण्ड अभी जारी है! जानकर कँपकँपी हो आयी। सबने लाचारीसे भगवानका नाम लिया।

१७-५-'३२ आज बापूने बहुत पत्र लिखवाये। अिनमेंसे अेक दो ही महत्वके थे। बाकी तो बहती जानेवाली डाकके साक्षी मात्र थे। बहनोंके पत्रोंमें रंगबिरंगे पत्र तो होते ही हैं। प्यारेलालकी माताजी बापूसे आत्मामें परमात्माका दर्शन करनेकी कुंजी माँगती हैं और यह माँग करती हैं कि हजार सूर्योंसे भी ज्यादा प्रकाशवाले परमात्माके दर्शन कराअिये। अेक दूसरी बहन ताराबाअी बाजपेयी बापूको प्राणायाममें होनेवाली मुश्किलको हल करनेके लिअे पूछती हैं और खबर देती हैं कि कअी कैदी बहनें आपका नाम जपती जपती छूट गयी हैं। बापूने अिन्हें लिखा — "अीश्वरके दर्शन आँखसे नहीं होते। अीश्वरका शरीर नहीं है, अिसलिअे अुसके दर्शन श्रद्धासे ही होते हैं। हमारे दिलमें जब किसी भी तरहके विकारी विचार नहीं रहें, किसी भी प्रकारका भय न रहे और नित्य प्रसन्नता रहे, तब यह जाहिर होता है कि हृदयमें भगवान निवास करते हैं। वे तो सदा वहाँ है ही, मगर हम अुन्हें नहीं देखते, क्योंकि हममें श्रद्धा नहीं है। और अिसलिअे कअी तरहके संकट अुठाते हैं। सच्ची श्रद्धा हो जाने पर बाहरसे लगनेवाले संकट भी अैसी श्रद्धावालेको संकट नहीं लगते। अूपर जो लिखा वह तारादेवी बाजपेयीको लागू होता है। प्राणायाम अैसा और अितना करना चाहिये, जिससे शरीरको कहीं भी कष्ट न हो। हठयोगके प्राणायामका मुझे कुछ भी अनुभव नहीं है। अिसलिअे अिस मामलेमें मैं अुन्हें रास्ता नहीं दिखा सकता। अैसे प्राणायामकी जरूरत भी नहीं है। भगवान शारीरिक क्रियाओंसे नहीं मिलता। भगवानसे मिलनेके लिअे भावना चाहिये। और अिस भावनाके अनुसार आचरण चाहिये। प्राणायाम वगैरा क्रियाओंसे शरीरकी शुद्धि होती है और अुससे थोड़ी बहुत शान्ति मिलती है। अिनका अिससे ज्यादा अुपयोग नहीं है।"

अेक आदमी किसी गोतमीकी तरह पूछता है — 'आप किसी अैसे आदमीसे मिले हैं, जो कभी अशान्त ही न होता हो?' बापूने अिसे भी जवाब दिया:

"Life without a ruffle would be very dull business. It is not to be expected. Therefore it is wisdom to put up with all the roughness of life and that is one of the rich lessons we learn from Ramayana."

"खलबलीके बिना जीवन बहुत नीरस चीज बन जायगा। अैसी आशा ही न रखनी चाहिये। अिसलिअे जीवनकी विषमतायें सह लेनेमें ही समझदारी है। रामायणसे हमें जो कीमती पाठ मिलता है, वह यही है।"

आज कातने बैठे तो मुझसे कहने लगे — "अितना काव्य वल्लभभाअीको पढ़कर सुना दो। अिकबालका है?" मैंने कहा — "अिससे तो अिकबाल अब अिनकार करते होंगे।" बापू बोले — "नहीं, यह तो पुराना है और अिसे तो जरूर स्वीकार करते हैं। मगर वल्लभभाअीके लिअे यह अिसलिअे पढ़ने लायक है कि जो अुर्दू किताब सरकारने स्कूलमें रखी है, अुसमें यह काव्य पास हुआ है। और मुसलमान लड़कोंकी परवरिश अिस तालीम पर होती है। अिसमें अेक भी पाठ अभीतक अैसा नहीं आया है, जिससे मुसलमान लड़के यह समझें कि यह देश हमारा देश है और अुस पर अभिमान करें। अितना ही नहीं, यह तो अैसा है, जिससे मुसलमान औरोंसे दुश्मनी रखने लगें।"

पाठ १८

चीनो अरब हमारा, हिन्दोस्ताँ हमारा
मुस्लिम हैं हम, वतन है सारा जहाँ हमारा।
दुनियाके बुतकदोंमें, पहला वो घर खुदाका
हम अुसके पासबाँ हैं, वो पासबाँ हमारा।
तेगोंके सायेमें हम पलकर जवाँ हुअे हैं
खंजर हिलालका है कौमी निशाँ हमारा।
तौहीदकी[1] अमानत, सीनोंमें है हमारे
मुमकिन नहीं मिटाना, नामोनिशाँ हमारा।
बातिलसे[2] दबनेवाले, अै आसमाँ नहीं हम,
सौ बार कर चुका है तू अिम्तेहाँ हमारा।
अै अर्जे पाक तेरी हुर्मत पे कट मरे हम
है खूं तेरी रगोंमें, अब तक रवाँ हमारा।
मगरिबकी वादियोंमें गूंजी अज़ाँ हमारी,
थमता न था किसीसे, सैलेरवाँ[3] हमारा
अै मौजे दजला[4] तू भी, पहचानती है हमको,
अब तक है तेरा दरिया, अफसाना ख्वाँ हमारा।
अै गुलसिताने अंदलुस[5] वो दिन है याद तुझको,
था तेरी डालियोंमें[6] जब आशियाँ हमारा।

---

१ तौहीद = अेकेश्वरवाद; २ बातिल = झूठा; ३ सैलेरवाँ = बाढ़; ४ दजला = बगदादकी नदी; ५ अंदलुस = स्पेन; ६ आशियाँ = घोंसला।

सालारे कारवाँ है मीरे हिजाज अपना,
अिस नामसे है बाकी, आराममें जाँ हमारा ।
अिकबालका तराना, बांगे दिरा[1] है गोया
होता है जादा[2] पैमा, फिर कारवाँ हमारा ।

१८-५-'३२

पूरी हकीकतके बिना हम मनुष्यके साथ कैसा अन्याय कर बैठते हैं, अिसकी अच्छी मिसाल कल पैदा हो गयी । भाअी फूलचन्दका पत्र वीसापुरसे आया था । अुसमें १३ लकीरें अिस तरह काटी गयी थीं कि पढ़ ही न सकें । सुपरिण्टेण्डेण्टने कहा था — "अिस काटे हुअे भागमें कोअी महत्वकी बात नहीं थी ।" हमने अितनी सी हकीकत पर अन्दाजी घोड़े दौड़ाने शुरू कर दिये । अगर अुसने पढ़ा नहीं होता, तो अुसे किस तरह पता चलता कि काटा हुआ भाग महत्वका नहीं था? और अगर अिसने पढ़ा है तो फिर यह कैसा कहा जा सकता है कि यह वीसापुरमें ही काटा गया? वह जानता है कि हम अिस तरह काटे हुअे पत्र पढ़ लेते हैं। अिसलिअे अुसने हमें नसीहत देनेके लिअे टाअिपराअिटरसे कटवाया! अिसके सिवा, वह क्वीनके प्रति भरमाया हुआ आदमी है, वगैरा वगैरा । ये सारे अन्दाज लगानेमें बापू भी शरीक हो गये । सुबह सुपरिण्टेण्डेण्ट आये तब अुनके साथ अचानक ही बात निकलने पर अुन्होंने कहा — "यह काटा तो गया है वीसापुरमें ही, मगर वहाँसे अिस पत्रका अनुवाद साथमें भेजा गया है और अुन्होंने मुझे लिखा है कि अितना हिस्सा काटा गया है । अुसमें दूसरे कैदियोंके नाम थे, अिसलिअे वह हिस्सा काट दिया गया मालूम होता है । अिसमें कुछ था नहीं ।" यह साफदिली हमें बहुत पसन्द आयी, और अुसके साथ पहले दिन किये हुअे (भले ही हमारे मनमें ही किया हो) अन्यायके लिअे हम अफसोस करने लगे । जल्दबाजीमें अनुमान लगानेमें साफ दोष भरा है ।

आज मीराबहन और मणिबहन मिलने आयी थीं । मीराबहनको नहीं मिलने दिया । अुन्हें न मिलने देनेका हुक्म तो अिन लोगोंको कल ही मिल गया था, मगर कहनेमें अुन्हें संकोच हुआ । आज धीरेसे बापूको बुलाकर कहा । मीराबहनने पत्र लिखा, वह भी नहीं दिया गया । बापूको और मीराबहनको सख्त चोट लगी । बापूने डोअीलको पत्र लिखा — "मीरासे मुलाकात न हो, तो मुझे और कोअी मुलाकात नहीं चाहिये ।"

---

१ बांगे दिरा = ढोलकी आवाज; २ जादा = पगदण्डी ।

बम्बअीके दंगेसे कानपुरकी तुलना करके वल्लभभाअी कहने लगे — "यहाँ बिलकुल कानपुर जैसा तो नहीं हुआ कि पुलिस देखती रही हो और कहा हो कि 'जाओ गांधीके पास।'" बापूने कहा — "भगवान जाने, मुझे तो तो यहाँकी भी शंका होती है — भले ही अखबारोंमें न हो! अिन लोगोंके जीमें तो यह होगा कि बम्बअी बड़ा जोर दिखाता है तो वह भी मजा चख ले। बम्बअीका किया हुआ सब धूलमें मिला देंगे। मुझे तो गवर्नरका दंगेके क्षेत्रमें जाना भी अच्छा नहीं लगा। अिसमें भी अैसी बू आती है कि देखो राज हमारा है, हमारे बिना कोअी कुछ नहीं कर सकता।"

१९-५-'३२

मीराबहनका पत्र आया। दुःख तो बहुत हुआ, मगर धीरज रखकर चली गयी। अुसने पुरुषोत्तमदासको अपनी सेवायें सौंप दी थीं और कह दिया था कि अिस दंगेमें मुझसे जो चाहें काम ले सकते हैं। मैं जान जोखममें डालकर भी काम करनेको तैयार हूँ। और वह पुरुषोत्तमदासका सन्देश लेकर आयी थी। मगर सुपरिण्टेण्डेण्टने वह नहीं दिया। लेकिन सुपरिण्टेण्डेण्ट बेचारा क्या करे?

आज . . . ने न लिखने लायक पत्र लिखा था। अुसे कड़ी चेतावनी देनी पड़ेगी।

कल आश्रमकी डाक आयी। सदासे ज्यादा थी। तीन बहुत लम्बे पत्र थे। अुनमें तोतारामका पत्र अमूल्य था। यह कहना मुश्किल है कि रामचरित पढ़कर मन ज्यादा पवित्र हो सकता है या अिस पत्रको पढ़कर। अुसमें अुन्होंने अपनी पत्नीका संक्षिप्त वर्णन हृदयंगम भाषामें लिखा था। वह अपने पितासे दहेजमें ५०० पौण्ड लायी थी, अिसमेंसे अुसने अेक पैसा भी अपने लिअे खर्च न करके सब बच्चोंकी शिक्षा पर और पाठशालाके मकानों पर लगा दिया। ४० अेकड़ गन्नेकी और ३० अेकड़ दूसरी, अिस तरह ७० अेकड़की बड़ी खेती अेक दिनके तूफानमें बरबाद हो गयी। अुस वक्त पतिपत्नीने मक्की पीस कर खाअी। मगर गंगादेवीने पितासे अेक कौड़ी भी मदद न माँगने दी। यहाँ देशमें वह आश्रमके बच्चोंको अपना ही समझकर हमेशा रही। अुसकी माता मरते वक्त रामनाम लेनेका अुपदेश और अुत्तराधिकार देकर मरी थी। अिस अुपदेशका अिस बहनने अक्षरशः पालन किया। यह जोड़ी तो कोअी दैवी ही थी। टॉल्स्टॉयकी कहानीमें यह कहा गया है कि फरिश्ता आकर खानगी घरोंमें रहता है, सेवा करता है और अन्त तक किसीको पता नहीं चलने देता। यह जोड़ी भी अैसी ही कही जा सकती है।

दूसरा अेक लम्बा पत्र . . . का था । बड़ा निबन्ध था । 'आप खुद तो जेलमें विशेष अधिकार भोग रहे हैं और दूसरोंको छोड़नेका अुपदेश देते हैं. यह कैसे ? अिन्सान बीमार पड़ता है, तब अुसे मरते देख कर दुःख क्यों होता है ? जो जाय तो क्यों अीश्वरको धन्यवाद देते हैं ? मणिलाल बच गये तब आपने क्यों धन्यवाद दिया था ? आयुष्यकी मर्यादा क्या है ? बहुतसे दुराचारी लोग क्यों लम्बे जीते हैं ? और सदाचारी जल्दी ही क्यों चल बसते हैं ?' अित्यादि । अिसे बापूने लम्बा खत लिखा है :

". . . . जो दो विशेष सुविधायें भोग रही है, वे अुस पर दबाव डाल कर नहीं छुड़वाअी जा सकतीं । अुसे खुद ही अिस बारेमें दिली अुत्साह न हो, तब तक ये चीजें नहीं छुड़वाअी जा सकतीं । मेरा अुदाहरण लेते हो वह ठीक भी है और ठीक नहीं भी है । ठीक अिसलिअे कि जब तक मैं कार्यक्षेत्रमें मौजूद हूँ, तब तक मेरा अुदाहरण दिया हा जायगा ! और बुद्धिभेद पैदा होगा ही । क्योंकि कअी कारणोंसे जो बरताव मैं औरोंसे चाहता हूँ, वह आजकल अपने जीवनमें नहीं बना सकता । मैं जानता हूं कि मेरे नेतृत्वमें अितनी खामी है । मेरा अुदाहरण देना अिसलिअे ठीक नहीं है कि मेरी स्थिति दूसरे साथियोंसे भिन्न हो गयी है । अुसका अेक कारण मेरी शारीरिक कमजोरी, दूसरा कारण महात्माका पद और तीसरा कारण मेरी विशेष पोजिशन है । मैं 'क' वर्गमें होअूँ, तो भी मेरी खुराक दूसरी ही होगी । अुसका कारण मेरा शरीर और मेरा व्रत है । यह बात थोड़ी बहुत हर कैदी पर लागू होती है । यह अलग सवाल है कि जितनी जल्दी खुराककी सुविधायें मुझे मिल जाती हैं, अुतनी दूसरोंको नहीं मिल सकतीं । मैं हर तीसरे महीनेके बजाय हर हफ्ते मुलाकातें करता हूँ, और पत्र लिखनेकी तो लगभग कोअी भी मर्यादा नहीं है । अिस बारेमें मैंने अपने मनको यों समझा लिया है कि मेरा कोअी निजी मित्र नहीं और सगे सम्बन्धियोंको सगे मान कर मिलता नहीं । मैं मिलता हूँ तो अुससे नैतिक काम निकलता है । मैं लिखता हूं तो अुसका भी अुद्देश्य यही है । भीतर ही भीतर अिसमें कोअी भोग होगा तो वह मैं जानता नहीं । होनेकी संभावना कम ही है, क्योंकि पत्र लिखना या मिलना बन्द हो जाय तो मुझे आघात नहीं पहुँचेगा । सन् '३०में मेरी शर्त मंजूर नहीं हुअी, तो मैंने मिलना बन्द कर दिया था । सन् '२२में पत्र लिखना बन्द कर दिया था । अिसके सिवा मुझे जो अलग रखा जाता है वह भी अेक कारण है । अिन कारणोंसे मेरे साथ तुलना करना अुचित नहीं माना जा सकता । मगर जिसे यह बात स्वयंसिद्ध न लगती हो, अुसे दलील देकर समझाना मैं ठीक नहीं समझता । जिसे बाहरसे बन्दोबस्त होने के कारण 'अ' वर्ग मिला हो और जिसे

अपने आप 'अ' वर्ग मिला हो, अुन दोनोंके बीच थोड़ा फर्क तो जरूर है। लेकिन वह भेद करनेमें कोअी सार नहीं है। आदर्श तो बेशक यही है कि वर्ग होने ही न चाहियें; और जिनका वर्गीकरण किया गया हो, अुन्हें अूँचे कहलानेवाले वर्गको छोड़ देना चाहिये। अिस आदर्शकी रक्षा जब अभी बहुत ही कम लोग करते हैं, तब . . . . जैसी लड़की पर जरा भी जोर डालनेकी अिच्छा नहीं होती। वह बहुत विचारवान है। अपने आप जितना संयम रखनेकी अुसकी शक्ति होगी, वह जरूर रखती ही होगी।

"मणिलालके लिअे मैंने प्रार्थना की वह ज्ञानसूचक नहीं थी, मगर पिताके प्रेमकी सूचक थी। प्रार्थना तो अेक यही शोभा देती है — 'अीश्वरको जो ठीक लगे सो करे।' यह प्रश्न अुठ सकता है कि अैसी प्रार्थना करनेका अर्थ क्या? अिसका जवाब यह है कि प्रार्थनाका स्थूल अर्थ नहीं करना चाहिये। हमारे हृदयमें बसनेवाले अीश्वरकी हस्तीके बारेमें हम जाग्रत हैं और मोहसे छूटनेके लिअे घड़ीभर अीश्वरको अपनेसे अलग समझ कर अुससे प्रार्थना करते हैं, यानी मन हमें जहाँ खींच ले जाता है वहाँ हम जाना नहीं चाहते। मगर अीश्वर हमसे भिन्न हो, तो हमारा स्वामी होनेके कारण वह हमें जहाँ खींच कर ले जायगा वहीं हमें जाना है। हम नहीं जानते कि जीनेमें भला है या मरनेमें। अिसलिअे न तो जी कर खुश हों और न मरनेसे डरें। यह समझकर कि दोनों अेकसे हैं हम तटस्थ रहें। यह आदर्श है। वहाँ तक पहुँचनेमें देर लगती है या शायद ही कोअी पहुँच सकता है। अिसलिअे हम आदर्शको कभी न छोड़ें और ज्यों ज्यों अुसकी कठिनाअी हमें महसूस होती जाय, त्यों त्यों हम अपना प्रयत्न बढ़ाते जायँ।

"पूर्णायु १०० वर्षसे भी ज्यादा हो सकती है। मगर कितने ही वर्ष हों तो भी कालचक्र अनन्त है और अुसमें मनुष्यके अेक आयुष्यकी गिनती अेक बिन्दुका करोड़वाँ भाग भी नहीं है। अिसके लिअे मोह क्या या हिसाब क्या? और हम हिसाब लगायें भी तो वह किसी भी तरह निश्चयात्मक नहीं हो सकता। अनुमानसे अितना कहा जा सकता है कि ज्यादासे ज्यादा अुम्र कितनी हो। वैसे तो हम तन्दुरुस्त बच्चोंको भी मरते देखते हैं। यह भी नहीं कहा जा सकता कि विषयी दीर्घायु नहीं हो सकता। अधिकसे अधिक यह कह सकते हैं कि जिनका जीवन शुरूसे ही सादा होगा और विषय-रहित होगा वे ज्यादातर दीर्घजीवी होते हैं। मगर जो आदमी सिर्फ दीर्घजीवी बननेके लिअे ही विषयों पर काबू करता है, अुसके लिअे यही कहा जायगा कि अुसने चूहेके लिअे पहाड़ खोदनेका काम किया। विषयोंको हमें जीतना है आत्माको पहचाननेके लिअे। विषयोंको जीतनेकी कोशिशमें शरीर ज्यादा

दिन रहनेके बजाय थोड़े दिन रहे, तो वैसा होने देना चाहिये। शरीरका नीरोगी या दीर्घायु होना विषयरहित होनेका छोटेसे छोटा परिणाम है।

२०-५-'३२ आज बेलगामसे प्रभुदासका लम्बा पत्र आया। और बापूने भी ६०० शब्दोंका लम्बा खत लिखा। मगन चरखे पर १४ दिनकी मेहनतके बाद खुदको मिलनेवाले काबू पर संतोष प्रगट करते हैं। चरखेकी करामातकी तारीफ करते हैं। अिस चरखेको आजमानेका अपना संकल्प बूढ़े और कमजोर हाथके कारण सफल हुआ, अिसके लिअे अपनेको धन्य समझते हैं और प्रभुदासको लिखते हैं — "तेरे चरखेमें मैं जो रस ले रहा हूँ वह तू अपनी आँखों देख ले, तो तुझे अितना आनन्द हो कि तेरा खून अेक दो सेर तुरन्त बढ़ जाय। हाथको कुछ नहीं हुआ था, तभी तेरे चरखेका प्रयोग करनेका संकल्प कर चुका था। अब तो जबरदस्तीका पुण्य करना पड़ रहा है। या तो कातना छूटे या अिसी चरखे पर कते।" अितना लिखवाकर कहने लगे — "महादेव, 'Necessity is the mother of invention' का गुजराती क्या है?" मैंने कहा —'आवश्यकता आविष्कारनी जननी छे', अैसा मैंने दो तीन जगह लिखा हुआ देखा है। फिर सोचने लगे। वल्लभभाअीसे पूछा। वल्लभभाअी अेकके बाद अेक कहावतें जड़ने लगे। गरज पड़े तो गधेको काका बनाना पड़ता है अित्यादि। मैंने कहा — गरज गधेको घोड़ा बना देती है, यह बात शायद हो सकती है। फिर बापू बोले — बस, मुझे सूझ गया है, अब लिखो — "अिसलिअे जैसे आफतमें फँसने पर मनुष्यको नअी अकल सूझा करती है, वैसे ही अिस वक्त आफतमें फँसनेके कारण मैं चरखे पर पायी हुअी गति बढ़ानेकी युक्तियाँ खोजा करूँगा। अिस बीच तू छूट जाय और अुस वक्त मैं मुलाकातें करता होअूँ, तो मुझसे मिल जाना और कुछ नयी बात हो तो सिखा जाना।" प्रभुदासने पूछा था कि गीतामें 'मामेकं शरणं व्रज' आता है, 'मत्परः' आता है अुसमें 'मत्परः'का क्या अर्थ है? और आप अीश्वरका अर्थ सत्य बताते हैं, तो मनुष्य सत्यका प्रतीक क्या बनाये? रामनाम जपे, मगर राम कौन? अिस तरहकी अुलझनें पूछी थीं। अुसे लिखा — "मत्परः यानी सत्यपरायण। 'चरणपद्मे मम चित्त निष्पंदित करो हे', अिसमें चरणपद्मका अर्थ है सत्यनारायणका चरणकमल — यह शब्द अिस्तेमाल करके भक्तने सत्यको मूर्तिमान बना दिया है। सत्य तो अमूर्त है। अिसलिअे सब लोग अपनेको ठीक लगे, वैसी सत्यकी मूर्तिकी कल्पना कर लें। यह समझ लेनेके बाद असंख्य मनुष्य असंख्य मूर्तियोंकी कल्पना कर सकते हैं। जब तक ये सब कल्पनायें ही रहेंगी, तब तक सच्ची ही हैं; क्योंकि अिस मूर्तिसे मनुष्यको

अपने लिअे जो कुछ चाहिये सो मिल जाता है। असलमें तो विष्णु, महेश्वर, ब्रह्मा, भगवान, अीश्वर ये सब नाम बिना अर्थके या अधूरे अर्थवाले हैं। सत्य ही पूरे अर्थवाला नाम है। कोअी यह कहे कि मैं भगवानके लिअे मरूँगा, तो अिसका अर्थ वह खुद नहीं समझा सकता और सुननेवाला भी शायद ही समझेगा। मैं सत्यके लिअे मरूँगा, यह कहनेवाला खुद समझता है और बहुत कुछ सुननेवाला भी समझ सकेगा। तू यह पूछता है कि रामका अर्थ क्या? अिसका अर्थ मैं समझाअूँ और अुसका तू जाप करे, तो यह लगभग निरर्थक है। मगर तू जिसे भजना चाहता है वह राम है, यह समझकर रामनाम जपेगा तो ही वह तेरे लिअे कामधेनु हो सकता है। अैसे संकल्पके साथ तू जप, फिर भले ही तोतेकी तरह ही रटता हो। तेरे जपके पीछे संकल्प है, तोतेकी रटके पीछे संकल्प नहीं है। यह बड़ा फर्क है। यहाँ तक कि संकल्पके कारण तू तर जा सकता है। तोता संकल्परहित होनेके कारण थककर अपनी रटन छोड़ देगा, या मालिकके लिअे करता होगा तो अपना रोजका खाना पीना लेकर चुप हो जायगा। अिस दृष्टिसे तुझे किसी प्रतीककी जरूरत नहीं और अिसीलिअे तुलसीदासने रामसे रामके नामकी महिमा ज्यादा बतलाअी है। यानी यह बताया कि रामका अर्थके साथ कोअी सम्बन्ध नहीं। अर्थ तो भक्त अपनी भक्तिके अनुसार बादमें पैदा कर लेगा। यही तो अिस तरहके जपकी खूबी है। नहीं तो यह कहना साबित ही नहीं हो सकता कि जड़ से जड़ मनुष्यमें भी चेतनता आ सकती है। शर्त अेक ही है कि नामका जप किसीको दिखानेके लिअे न हो, किसीको धोखा देनेके लिअे न हो। मैंने बताया अुस ढंगसे संकल्प और श्रद्धाके साथ जपना चाहिये। अिसमें मुझे कोअी शंका नहीं कि अिस तरह जपते हुअे जो आदमी थकता नहीं, अुस आदमीके लिअे वह कल्पतरु हो जाता है। जिन्हें धीरज होगा वे सब अपने लिअे अिसे सिद्ध कर सकते हैं। प्रथम तो किसीका दिनों और किसीका वर्षों तक अिस जपके समय मन भटका करेगा, बेचैन रहेगा, और नींद आयेगी और अिससे भी ज्यादा दुःखद परिणाम आयेगा। तो भी जो आदमी जपता ही रहेगा, अुसे यह जप जरूर फल देगा। यह निःसंदेह बात है। चरखे-जैसी स्थूल वस्तु भी हमें तंग किये बिना हाथ नहीं आती, तब अिससे भी मुश्किल दूसरी चीजें अिससे भी ज्यादा कष्ट देकर सिद्ध होती हैं। तब फिर जो अुत्तम वस्तुको पाना चाहता है, वह लम्बे अर्से तक अपनेको दी हुअी दवाका धीरजके साथ सेवन न करे और निराश होकर बैठा रहे, अुसके लिअे क्या कहा जाय! मेरा खयाल है कि अितनेमें तेरे सब सवालोंका जवाब आ जाता है। क्योंकि अिस तरह लिखनेके बाद तेरे लिअे पूछनेको कुछ भी रह नहीं जाता। श्रद्धा जम जाय तो चलते फिरते, खाते पीते, सोते

उठते यही रटन लगा और हारनेका नाम न ले। भले ही सारा जन्म अिसीमें बीत जाय। यह करता रह और अिस बारेमें जरा भी शक न रख कि तुझे दिन दिन अधिक शान्ति मिलेगी।"

आज 'लीडर'में ७ मअीके 'न्यु स्टेट्समैन' के लेखका अुद्धरण था। वह पढ़कर सुनाया। बापू कहने लगे — "अुत्तम लेख है।"

बादाम सवा दो रुपये पौण्डके भावके हों, तो छोड़नेका निश्चय किया था। वे निकले बारह आने पौण्डके। वल्लभभाअी कहने लगे — "तो हमने भी विचार किया कि चलो, हम भी खायें।" बापू बोले — "आप क्या खानेवाले थे?" मैंने कहा — "दूध घी छोड़कर खाना शुरू करना चाहिये।" वल्लभभाअी — "नहीं, बकरीका दूध घी छोड़ देंगे, बापूने भी तो यही छोड़ा है!"

२१-५-'३२

बम्बअीमें दंगा लगभग शान्त हो जानेकी खबर है — शान्त हुआ यानी शनिवारको खून नहीं हुअे। मगर २०-२५ आदमी घायल तो हुअे ही हैं। . . . डाह्याभाअी और मणिबहन आ गये। अुनसे यह खबर मिली कि . . . सरकारने भी यह कहा कि कांग्रेसके पास जाओ। यानी बापूका डर सही था।

आज शामको अिस दंगेसे पैदा होनेवाले अपने अपने विचार अेक दूसरेके सामने रखे। वल्लभभाअी कहने लगे — "सीधे न लड़ें और पीछेसे छुरा मारकर चले जायँ, खादी पहनकर झूठा भेस बनाकर चालियोंमें घुसकर स्त्रियोंको मार जायँ, अुनका क्या करें? लोगोंको हम क्या सलाह दें?" बापूने कहा — "मैंने तो अपना रास्ता बता दिया है। या तो लड़ लो या मर जाओ।" वल्लभभाअी — "लड़ तो कैसे लें? अिनके जैसा तो कोअी भी नहीं करेगा?" बापू बोले — "यह सही नहीं है। सभी करते हैं। पिछली लड़ाअीमें क्या हुआ था? यह समझो कि यह भी लड़ाअी ही है। ये लोग तो लड़ाअी समझकर ही अिस तरहके अत्याचार करते हैं। कानपुरमें हिन्दुओंने भी तो मुसलमानोंकी तरह ही किया था न? और मुंजे तो साफ कहता है कि अिन लोगोंके साथ अिन्हीं की तरह पेश आना चाहिये। मैं उसे बहादुर मानता हूँ। वह तड़ाक पड़ाक साफ कह देता है। मैं कहता हूँ कि हम अुनके साथ अुन्हींकी तरह नहीं लड़ सकते। क्योंकि यह हमारे स्वभावमें नहीं है। अिसलिअे हमारा छुटकारा तो मरनेमें ही है। आज हम जो अहिंसा पाल रहे हैं, वह तो व्यावहारिक अहिंसा है। और अिस अहिंसाका मुसलमानों पर असर नहीं होगा।" मैंने कहा — "आमने सामने खड़े रहकर बड़े समूह लड़ते हों, तो यह कल्पना की जा सकती है कि अेक समूहको मर जानेको कहा जाय

और वह कदाचित जानबूझ कर मरनेको तैयार हो जाय। लेकिन छुटपुट खून हों, लूट हो तो अुसमें क्या हो सकता है?" बापू—"अुसमें भी यही हो। आज यह बात किसीके गले नहीं अुतरती कि अिस तरहके छुटपुट खून हों, तो हम जानबूझकर प्रतिकार न करें। अिसलिअे मेरी सलाह बेकार है। मुझसे कुछ न हो सके, तो अिससे अड़चन नहीं आती। लेकिन मेरी अहिंसाकी सलाह तुम्हारे गले न अुतरे, तो यह मेरी कमजोरी है। अिस अहिंसाका अपने आप असर होना चाहिये और यदि न होता हो तो अुतनी ही वह कच्ची है। अितने पर भी समाज सलाहके लिअे मेरी तरफ देखे, तो यह बड़ी करुण दशा है। यह तो समाजके लिअे साँप-छछूँदरकी-सी हालत हुअी। मैं न होअूँ तो समाजको कुछ न कुछ सूझ पड़े और मेरा रहना समाजके लिअे बाधक है, यह हालतमें अनशन ही मेरे लिअे अेकमात्र अुपाय हो सकता है। मगर मुझे यह नहीं लगा कि अैसा करना चाहिये। बाहर होता—और बम्बअीमें ही होता—तो शायद अनशन शुरू भी कर दिया होता।" मैंने कहा—"तो हम अन्दर हैं यह अेक तरहसे अीश्वरकी कृपा ही है?" बापू—"अेक तरहसे क्यों? कअी तरहसे। हम बाहर होते तो क्या कर लेते? कुछ नहीं कर सकते थे।" मैंने कहा—"अब तो भीतर भीतरकी लड़ाअी खुले तौर पर फूट निकले तो आश्चर्य नहीं।" बापू कहने लगे—"नहीं। कोहाटमें हुअी ही थी न? और विलायतमें क्या हुआ? मैंने मुसलमानोंकी तरफसे जो जो अपमान सहन किये हैं, जो कड़वी घूँटें पी हैं, वह किससे कहूँ?"

आज रैहाना बहनको पत्र लिखते हुअे लिखा—"तुम सबको आबूकी आबहवासे फायदा हुआ होगा? अब्बाजान पढ़ते हैं? वहाँ तो बिलकुल जवान हो गये होंगे? बम्बअीके पागलपनने हमारे नाचरंग सब भुला दिये हैं। मैं समझ ही नहीं सकता कि धर्मके नाम पर अिन्सान अिन्सानके साथ कैसे लड़ सकता है। मगर मैं मनको और कलमको रोकता हूँ। अभी तो यह जहरके प्याले पी रहा हूँ।"

२२-५-'३२

आज बापूने सारे दिन पत्र लिखे। कलम बनाकर अुर्दूकी कापी लिखना शुरू किया और कलमसे ही पत्र लिखे। मुझे पूछने लगे—"सन् १७-१८में हम कलम काममें लेते थे। कुछ मालूम है फिर हमने अुसे बन्द कैसे कर दिया?" मैंने थोड़ा अितिहास सुनाया। होल्डर गाड़ीमेंसे फेंक दिया था, चैम्सफोर्डको सारे पत्र कलमसे ही लिखे गये थे, वगैरा—और बादमें मुसाफिरी बढ़ गयी और हमेशा स्याहीसे ही लिखना जरूरी होनेके कारण पेन शुरू हुआ। सतीशबाबूने बापूको

पहला पेन दिया था। अिसी तरह बापू सिर्फ तिथि लिखते थे। तारीख लिखी जाती तो चिढ़ते थे। अब अुन्होंने तिथि लिखना छोड़ दिया है और कहते हैं — "तारीखको सारी दुनिया मानती है। अुसके साथ क्या द्वेष हो सकता है?"

हेमप्रभा बहनका लड़का अरुण बहुत बीमार है और आराम नहीं लेता, यह सुनकर अुसे पत्र लिखा:

"Mother tells me you are ailing and that you insist on reading and working. Will you not give yourself rest and the body a chance of recovery? Though death and life are the faces of the same coin and though we should die as cheerfully as we live, it is necessary until life is there to give the body its due. It is a charge given to us by God. And we have to take all reasonable care about it. Do write me if you can. God bless you."

"माँ कहती है कि तू बीमार है और फिर भी तू पढ़ने और काम करनेकी हठ करता है। क्या तू आराम नहीं लेगा? आराम लेगा तो जल्दी अच्छा हो जायगा। वैसे तो मरना और जीना अेक ही सिक्केके दो पहलू हैं, और हम जितने आनन्दसे जीते हैं अुतने ही आनन्दसे हमें मरना चाहिये। फिर भी जब तक जीवन है, तब तक शरीरको अुसका हक देना ही चाहिये। यह तो हमारे लिअे अीश्वरकी दी हुअी धरोहर है। और हमें अुसकी वाजिब सँभाल रखना ही चाहिये। तू लिख सके तो मुझे लिखना। भगवान तेरा भला करे!"

मिस फेरिंगको लिखे हुये पत्रमेंसे:

"I understand all you are doing. Only you must not work yourself into anxiety. If we simply make ourselves instruments of His will, we should never have an anxious moment.

"Yes, there is no calm without a storm. There is no peace without strife. Strife is inherent in peace. Life is a perpetual struggle against strife whether within or without. Hence the necessity of realizing peace in the midst of strife."

"तुम जो कर रही हो, वह मैं समझ सकता हूँ। मगर तुम्हें बहुत चिन्ता नहीं करनी चाहिये। हम अगर अपने आपको भगवानकी अिच्छाके सुपूर्द कर दें, तो हमें कभी चिन्ता करनी ही न पड़े।

“ हाँ, तूफानके बिना शान्ति नहीं होती। संग्रामके बिना सुलह नहीं होती। शान्तिमें संग्राम समाया हुआ है। अुसके बिना हम शान्तिको नहीं जान सकते। जीवन भीतर या बाहरके तूफानके विरुद्ध सतत संग्राम है। अिसीलिअे संग्रामके बीच हों, तब भी हमें शान्ति महसूस करनेकी जरूरत है।”

अिसकी दो छोटी छोटी लड़कियोंको पत्र लिखा :

“You have sent me a sweet letter. I see you are making friends with birds. We have made friends with a cat and her kittens. I call her sister. It is delightful to watch her love for her young ones. She teaches them all sorts of things by simply doing them. God bless you.

With blessing, Bapu.”

“ तुमने मुझे प्यारा पत्र लिखा है। मालूम होता है तुम पक्षियोंसे दोस्ती कर रही हो। हमने यहाँ अेक बिल्ली और अुसके बच्चोंसे दोस्ती की है। मैं बिल्लीको बहन कहता हूँ। बिल्लीको अपने बच्चोंसे प्रेम करते देखकर आनन्द होता है। वह अपने बच्चोंको दुनियाभरकी बातें खुद करके सिखाती है। भगवान तुम्हारा भला करे।

बापूके आशीर्वाद।”

डा० रायको लिखे गये पत्रमेंसे :

“The work you are doing is difficult, but it is the only way to help our people. There is no substitute for Charkha for universal relief.

“It is nonsense for you to talk of old age so long as you outrun young men in the race for service and in the midst of anxious times fill rooms with your laughter and inspire youth with hope when they are on the brink of despair.”

“ आप जो काम कर रहे हैं, वह कठिन है। मगर हमारे लोगोंकी मदद अिसी तरह की जा सकती है। बड़े पैमाने पर राहत पहुँचानेके लिअे चरखे-जैसी और कोअी चीज नहीं है।

“ जब तक सेवा करनेकी दौड़में आप जवानोंको भी हरा देते हैं, मुश्किलके समय भी अपने कमरेको हँसीसे गूँजा सकते हैं, और जब नवयुवक निराशाके किनारे पहुँच जाते हैं तब भी आप अुनमें आशाका संचार कर सकते हैं, तब तक आप बुढ़ापा आनेकी बात करें तो भी कौन मानेगा ?”

बापू अुर्दूकी किताबमें रोज नअी नअी खोज करते जा रहे हैं। अुसमें मोहम्मद बेगड़ाका पाठ है। अुसके नाश्तेका वर्णन अिस तरह किया गया है, जैसे किसी पराक्रमका वर्णन किया गया हो। अेकसौ पचास केले, अेक प्याला शहद और अेक प्याला घी, वगैरा। अिससे अुल्टे शिवाजीके पाठमें शिवाजीके बारेमें लिखते हुअे जरा भी विवेक और विनय नहीं है। वह बेपढ़ा, गँवार, असभ्य और लुटेरा, वगैरा था!

२३-५-'३२

आज आश्रमकी डाकके पत्रोंकी गिनती थोड़ी थी — ३९। हाँ, पत्र खासे लम्बे थे। बाहरके पत्र लम्बे थे। कितनी ही बार बापू अनजानमें अितना कड़ा लिख देते हैं कि सामनेवाला आदमी हक्का-बक्का रह जाय। अैसा पत्र हनुमानप्रसाद पोद्दारको लिखवाया। अुन्होंने पूछा था कि जिन्दगीमें अैसे कौनसे प्रसंग आये, जब आपकी अीश्वरके बारेमें श्रद्धा बहुत बढ़ गयी? बापूने अुन्हें लिखा — "अैसा कोअी प्रसंग मुझे याद नहीं, जब अीश्वरके लिअे श्रद्धा खास तौर पर बढ़ गयी हो। अेक समय श्रद्धा न थी, लेकिन धर्मविचार और चिन्तवनसे आने लगी और तबसे बढ़ती ही गयी है। ज्यों ज्यों यह ज्ञान बढ़ता गया कि अीश्वरका निवास हृदयमें है, त्यों त्यों श्रद्धा बढ़ती गयी। मगर ये सवाल तुम किस लिअे पूछ रहे हो? क्या आगे चलकर 'कल्याण'में छापनेके लिअे? तो यह बेकार है। और अगर खुद अपने लिअे पूछते हो, तो मुझे कहना चाहिये कि अिस मामलेमें पराया अनुभव काम नहीं देता। अीश्वरके लिअे श्रद्धाके साथ लगातार कोशिश करने पर ही श्रद्धा बढ़ती है।"

•

आज बहनोंका और कैम्पसे भाअियोंका, अिस तरह दो लम्बे पत्र आये। आश्रमकी डाक नहीं आयी। कअी अनजान बहनें बेचारी अुमंगके साथ लिखती हैं। अिन लोगोंके पत्रोंमें सरल, अकृत्रिम श्रद्धा छलकती है। कोअी बहन कहती है कि मेरे पति भी लड़ाअीमें हैं। कोअी कहती है कि मेरे दो भाअी भी जेलमें हैं। कोअी कहती है कि मैं और मेरे पति दोनों अिस काममें पड़ गये हैं, अिसलिअे हमें घरसे निकाल दिया गया है। अिन्हें लम्बा पत्र लिखा। अेक लड़कीने पूछा था — बापू आप दूसरे वर्णवालेके साथके विवाहको मानते हैं, तो दूसरे धर्मवालेके साथके विवाहके बारेमें आपका क्या मत है? बापूने लिखा — "बच्चे बड़े हो जायँ, तभी अुनके विवाह होने चाहियें। अेक दूसरेको पसन्द करें और माँबापकी भी सम्मति हो, अैसे विवाह होने चाहियें। अिसलिअे अुनमें कहीं भी कृत्रिम प्रतिबंध नहीं आता। मगर मेरी पसन्द कोअी पूछे तो विधर्मियोंके बीच विवाह होना मैं जोखमभरा प्रयोग मानता हूँ। क्योंकि दोनों ही अपने अपने

२४-५-'३२

धर्मको मानने और पालनेवाले हों, तो दोनोंके बीच दिक्कतें पैदा होनेकी सम्भावना रहती है। अिस दृष्टिसे मैं अुस भाटिया बहनकी शादी जोखमभरी समझूँगा। यह नहीं समझता कि वह धर्म विरुद्ध है। दोनोंके बीचका प्रेम निर्मल हो, भाटिया बहन अपने धर्मका पालन कर सके और वह मुसलमान भाअी अपने धर्मका, और फिर खानेपीनेके बारेमें दोनोंके विचार मिलते हों, तो मेरा दिल अैसे विवाहका विरोध नहीं कर सकता। मगर जैसे मैं अुपजातियोंका नाश चाहनेके कारण जातिसे बाहर शादी पसन्द करता हूँ, अुसी तरह धर्मके बाहर विवाह पसन्द नहीं करता। अुसके विरोधमें आन्दोलन भी नहीं करूँगा। यह सारी बात सब स्त्री-पुरुषोंको अपने अपने लिअे सोच लेने जैसी है। अिसमें अेक ही कानून नहीं चल सकता।"

. . . . को लिखते हुअे लिखा — "हरिजन समितिका प्रस्ताव मुझे भयानक लगा। यहाँ बैठे बैठे तो क्या बता सकता हूँ? मगर क्या समितिके सदस्योंके जीते जी अेक भी पाठशाला बन्द हो सकती है? खुद बिक जाय, खुदके घरबार बिक जाय और पाठशाला चलाये तब अुसका नाम समिति है। अिसलिअे हारनेके बजाय आशावादी बनो और जब अपनेको बेचनेके लिअे तैयार होगे, तब समितिको जरूरी खर्च देकर लोग तुम्हें खरीद लेंगे। अिस बारेमें भले ही तुम्हें शंका हो, मुझे हरगिज नहीं है। भोजा भगतकी कविता याद है न कि 'भक्ति शीश तणुं साटुं आगळ वसमी छे वाटुं'!"*

लन्दनके कितने ही पत्रों पर 'गांधी, लन्दन' अितना-सा पता होने पर भी वे चले आते थे। अेक पर बापूकी अखबारसे काटी हुअी तसवीर थी और लन्दन लिखा हुआ था और टिकट लगाये हुअे थे। वह भी मिल गया। डाकखानेके आदमी जितने कुशल और हमदर्द सेवक होते हैं, अुतने और कौन होंगे? बापूने यहाँसे अेक पत्र आस्ट्रिया लिखा था। वह जिसे लिखा था, अुसे न मिला। अिसलिअे वह वापस आया है। अिसमें हस्ताक्षर सिर्फ 'बापू' किये थे। यहाँके डेड लेटर आफिसवालोंने वापस भेजते हुअे लिफाफे पर पता अिस प्रकार कर दिया: श्री बापू यानी महात्मा गांधी, यरवदा सेंट्रल जेल। वहाँ भी बापूको जाननेवाला और बापूका भक्त पड़ा होगा!

हमारे पत्र ठीक तरहसे नहीं पहुँचते, अिस बारेमें शिकायती पत्र लिखा।

२५-५-'३२ — अुसका जवाब गवर्नर-अिन-कौंसिलकी तरफसे यह आया कि जाँच हो रही है और पुलिस कमिश्नरको कार्रवाअी करनेके लिअे कहा गया है। अिसीके साथ यह खबर आयी

* भक्ति सिरका सौदा है। आगेका रास्ता मुश्किल है।

(नारणदासकी तरफसे) कि हरिलालको बापूने जो पत्र लिखा था और जो अुन्हें तीन हफ्तेसे नहीं मिला था, वह मिल गया है !

छगनलाल जोशीको आज लम्बा खत लिखवाया। अुसके पत्रमें बापूके 'अद्भुत त्याग' वाले लेखका अनर्थ था। अुसमें कहना यही था कि पानी न पीनेवाले सिपाहियोंने अद्भुत त्याग दिखाया। मगर छगनलालने तो बुद्धिका प्रयोग किया और पूछा — "पानी पिलानेवाला अपना धर्म नहीं चूका? वह तो सबको पानी पिला सकता था।" बापूने लिखा — "यहाँ पानी ले जानेवालेकी न स्तुतिका सवाल है न निन्दाका। मगर विचार करके देखोगे तो मालूम हो जायगा कि पानी पिलानेकी बात पानी ले जानेवालेके हाथमें थी ही नहीं। यहाँ पर यह सवाल भी मुख्य नहीं है कि पानी तीनोंके लिअे काफी था या नहीं। मगर पहले दो सिपाहियोंका आर्तनाद सुनकर अुन दुखियोंको पानी मिले बिना अुन्होंने खुद पानी पीनेसे अिनकार कर दिया। अैसी हालतमें पानी ले जानेवालेके स्वधर्म छोड़नेकी बात ही नहीं थी। अैसा मालूम होता है कि अिस दृश्यका चित्र तुम्हारे सामने खड़ा नहीं हुआ। पानीकी प्यास अैसी चीज है कि मनुष्य दूसरेकी परवाह नहीं करता और पानी मिले तो खुद पी लेता है। ये लोग तो बेचारे मौतके किनारे पड़े थे। मगर अैसे समय भी अुन्होंने अपनी अुदारता नहीं छोड़ी और अिस तरह अन्तकाल तक ब्राह्मी स्थिति रखी। पानी ले जानेवाला केवल निरुपाय था, और जहाँ प्राण निकलनेमें कुछ पल बाकी हों, वहाँ कहीं यह हो सकता है कि घायलोंके साथ बहस की जाय? अिन सब बातों पर दुबारा विचार कर लेना, और विचार करोगे तो मालूम होगा कि यह अैतिहासिक घटना भव्य और सम्पूर्ण त्यागका दृष्टान्त है और अिसमें निमित्त बननेवाले पानी ले जानेवालेकी आलोचना करनेका कुछ भी कारण नहीं रह जाता। ज्यादातर अितिहासमें अैसे सम्पूर्ण दृष्टान्त नहीं मिलते। कुछ न कुछ खामी कहीं न कहीं रहती ही है। मगर मेरी दृष्टिसे अिसमें कहीं खामी नहीं पाअी जाती।"

दरबारी साधुको कस्ती और सदरेमें कोअी अर्थ न दीखनेसे अुसने अुन्हें छोड़ दिया है। अिससे अुसके सगे सम्बंधियोंको दुःख होता है। अुन्हें बापूने लिखा — "दरबारीसे कहना कि अुसे कस्ती और सदरा (पारसियोंकी अेक पोशाक) छोड़नेकी कुछ भी जरूरत नहीं थी। और यही अच्छा है कि वह वापस जाय तब पहन ले। अिसके पहननेमें पाप नहीं है और न अन्धविश्वास है। पहननेसे किसीका नुकसान नहीं और न पहननेसे पारसियोंको चोट पहुँचती है। अिस तरह बिना कारण चोट पहुँचाना सेवकका काम नहीं होता और अिसमें अहिंसाका भंग है। अितना काफी है कि अपने दिलमें अुसके बारेमें गलत आदर न हो। अुसमें समाअी हुअी बुतपरस्ती निकल जानी चाहिये। और

वह तो है ही नहीं । वह पारसी होनेका बाहरी निशान है। अुसे छोड़ देना मुझे किसी तरह भी अुचित नहीं लगता । अिसके लिअे जरथोस्तकी पुस्तकें ले आनेको डाह्याभाअीसे कहा है। मैंने जरथोस्तके वचन पढ़े हैं। बहुत वर्ष पहले वेंदीदादका अनुवाद पढ़ा था । वह नीतिसे भरा हुआ है । बहुत पुराना धर्म होनेके कारण संभव है कि सारे पारसी ग्रंथ आज मौजूद न हों और अिसलिअे संभव है कि जो ज्ञान अुपनिषदों वगैरा से मिलता है, वह जरथोस्तके बचे हुअे साहित्यसे न मिल सके । जो मिल सकता है अुसे देखकर दरबारीको विचार लेना चाहिये । मगर अितना तो आज भी माना हुआ है कि जरथोस्तका आधार वेद हैं । जहाँ तक मुझे याद है वेंदीदादके अनुवादकने झंद और संस्कृतके बीच बहुत साम्य बताया है । अिसलिअे आज जो चीज पारसी धर्मग्रंथोंमें न पाअी जाय, अुस कमीको वेदों और अुपनिषदोंसे पूरा कर लेनेमें पारसी धर्म या पारसीपनको कुछ भी बट्टा नहीं लगता । असलमें तो अपने धर्म पर कायम रहकर किसी भी दूसरे धर्ममें जो विशेषता दिखे, अुसे ले लेनेका हमारा अधिकार है । अितना ही नहीं, अैसा करना हमारा धर्म है । दूसरे धर्मोंसे कुछ भी न लिया जा सके, अिसीका नाम धर्मान्धता है; और अुसे दरबारी और हम सब पार कर चुके हैं । ”

मुस्कुटेने पूछा था — “ आप सत्यको अीश्वर मानते हैं, जगतका कोअी कर्ता नहीं मानते। फिर भी बहुत बार जिस अन्तर्नादको सुनकर काम करते हैं, वह क्या है ? ” अिसका जवाब हिन्दीमें लिखते हुअे छगनलाल जोशीके पत्रमें लिखा — “ जगतका कोअी कर्ता नहीं है, अिसका क्या अर्थ हो सकता है ? हम कैसे कह सकते हैं कि कोअी कर्ता नहीं है ? मेरे कथनका अिसमें कुछ अनर्थ-सा प्रतीत होता है । मैंने तो कहा है कि सत्य ही अीश्वर है । अिसलिअे अैसा मानो कि वही कर्ता है। परन्तु यहाँ कर्ताका जो अर्थ हम करते हैं अैसा नहीं है। अिसलिअे सत्य कर्ता अकर्ता दोनों है । परन्तु यह केवल बुद्धिवाद है । जैसा जिसके हृदयमें लगे, अैसा माननेमें अिस बारेमें कोअी हानि नहीं है । क्योंकि हरअेक पुरुष अीश्वरके बारेमें न संपूर्ण जानता है और न जितना जानता है वह बता सकता है । यह बात ठीक है कि कुछ भी कार्यके निर्णयके लिअे मैं अपनी बुद्धि पर विश्वास नहीं करता हूँ । जब तक हृदयमेंसे आवाज न निकले, वहाँ तक बुद्धिकी बातको रोक लेता हूँ । अिसे कोअी गूढ़ शक्ति कहे या क्या कहे वह मैं नहीं जानता । अुस बारेमें मैंने कभी सोचा नहीं है, न अुसका पृथक्करण किया, करनेकी आवश्यकता भी नहीं मालूम हुअी है । बुद्धिसे पर अैसी यह वस्तु है अितना मुझमें विश्वास है, और ज्ञान भी है । और मेरे लिअे काफी

है। अिससे अधिक स्पष्टीकरण मेरेसे हो ही नहीं सकता, क्योंकि अिससे अधिक मैं जानता नहीं हूँ।"

मीरा बहनका बढ़िया पत्र आया है। वल्लभभाअी तो कहने लगे कि वह तो हिन्दू ही बन गयी है। अिस पत्रके कितने ही भाग अुसके स्वभाव और कायापलटके अच्छे द्योतक हैं:

"I had about 40 minutes with the Ramayana last night. I had only got half way through Griffith's full translation when I left jail. I want to read it faithfully from cover to cover, so I am keeping it by me. It gives me extraordinary happiness and peace when I read it. It is something I cannot explain. And what joy it is to read the descriptions, — the forests, the hermits, the animals, the birds, the peasants, the fields, the villages, the towns. Though four or five thousand years have gone by, it is all there in the heart still of this blessed land. Ever since we came back from Europe, this time I have been feeling with double force (if it were possible) the deep, peaceful, eternal joy of Hindu culture. And all the while it stirs in me a feeling of long past associations — it seems all something I have known and loved since time immemorial. Past births seem almost to stare me in the face sometimes. And you can imagine what the reading of the Ramayana means to me?

"I can fairly say that I felt more pleasure in giving up the pen this time, than I have ever felt in possessing one. If I look with envy on anyone it is not the man who has possessions, but the man who lives voluntarily and happily without any."

"कल रातको लगभग ४० मिनट रामायण पढ़ी। जेलसे निकली तब ग्रिफिथके पूरे अनुवादका लगभग आधा पढ़ चुकी थी। मुझे यह पुस्तक पहले पन्नेसे आखिरी पन्ने तक पढ़ लेनी है। अिसलिअे यह पुस्तक अपने साथ ही रखती हूँ। अिसे पढ़ते हुअे मुझे जो असाधारण आनन्द और शान्ति मिलती है, वह लिखा नहीं जा सकता। अुसके वर्णन पढ़नेमें कितना आनन्द आता है! जंगल, आश्रम, पशुपक्षी, किसान, खेत, गाँव और शहर, ये सब चार पाँच हजार वर्ष बीत जाने पर भी अिस धन्यभूमि पर आज भी जैसेके तैसे हैं। हमारे युरोपसे अिस बार लौटनेके बाद मैं हिन्दू संस्कृतिमें समाये हुअे अिस गंभीर, शान्तिमय और शाश्वत आनन्दका दुगुना (यदि वह संभव हो तो)

अनुभव कर रही हूँ। मेरे दिलके अन्दर ये चीजें दीर्घकालके संस्कार अिस तरह जाग्रत करती हैं, मानो मैं प्राचीन कालसे अिन सबको जानती और चाहती हूँ! कभी कभी तो अैसा लगता है जैसे मेरे सारे पूर्वजन्म आकर मेरे सामने ताक रहे हों। और आप समझ सकते हैं कि रामायणका पढ़ना मेरे लिअे क्या चीज है!

"मैं कह सकती हूँ कि अिस बार पेन रखनेके बजाय अुसे छोड़नेमें मुझे ज्यादा आनन्द अनुभव हुआ है। मुझे किसीसे अीर्ष्या हो सकती है तो जिसके पास बहुत-सा परिग्रह हो अुससे नहीं, बल्कि अुससे जिसने राजीखुशीसे और आनन्दके साथ परिग्रह छोड़ दिया है।"

नटराजनका पत्र आया। अुन्हें लिखा था कि आपको अुस साँपका सिर खा जानेवाले और ज़हर पीनेवाले पर और अुसके जल्सेमें जानेवालों पर 'अिण्डियन सोशियल रिफॉर्मेर' में जितना सख्त लिखना चाहिये था, अुतना आपने नहीं लिखा। अुन्होंने लिखा :

"As for my paragraph about occult powers which you feel might have been stronger, it is curious but I seem to have utterly lost the taste for and the knack of strong writing particularly in criticizing persons. When I take my pen intending to hit hard, the picture of the other man stands before my eyes and seems to say: 'You do not know what I have to say for myself. I too have ideals however much they may be obscured by my conduct. Judge me as you would yourself.' I avoid all adjectives of judgement as poison and try in all that I say to be completely objective. This has become a habit, and I do not doubt that in all circumstances, it is a healthy one. As regards this particular matter, the thought that after all, the man takes his life in his hands, weighs my judgement. As for the curious crowd, they, I suppose, find relief from the tyranny of daily circumstances in witnessing facts which show or seem to show that one man at least is able to rise above them."

"यौगिक सिद्धियोंके प्रदर्शनके मामलेमें मैंने जो वाक्य लिखे हैं, अुनके बारेमें आप कहते हैं कि वे ज्यादा कड़े होने चाहिये थे। अिस बारेमें मेरा कहना यह है कि कड़ा लिखनेमें, खास तौर पर दूसरोंकी आलोचना करते समय, मेरी दिलचस्पी मिट गयी है। यह बात मेरे स्वभावमें ही नहीं रही है। किसी पर सख्त

प्रहार करनेके लिअे जब मैं अपनी कलम अुठाता हूँ, तब मेरे सामने अुस आदमीका चित्र खड़ा हो जाता है, मानो वह मुझसे कह रहा हो कि 'मुझे अपने बचावमें जो कहना है, वह तुम कहाँ जानते हो? मेरे भी तो अपने कुछ आदर्श हैं? मेरे बरतावसे शायद वे कुछ ढँक गये हों, तो भी क्या हुआ? तुम अपने लिअे जैसा न्याय करते हो, वैसा ही मेरे लिअे करो।' अिसलिअे मैं आलोचना करनेवाले विशेषणोंको ज़रूर समझकर अुन्हें काममें लेनेसे बचता रहता हूँ, और मुझे जो कुछ कहना होता है वह पूरी तरह परलक्षी बनकर कहनेकी कोशिश करता हूँ। यह मेरा स्वभाव बन गया है। और मुझे कोअी शक नहीं कि यह सदा ही अच्छा है। मौजूदा मामलेमें मुझे महसूस हुआ कि और कुछ नहीं तो यह आदमी अपनी जानकी जोखम अुठाता है। अिसी बातने मेरी आलोचनाको नरम बना दिया। कुतूहलसे जमा हुअे लोगोंके बारेमें मुझे अैसा लगा कि रोजमर्राकी घटनाओंके दुःखसे राहत पाने और अैसी घटनायें देखनेकी अुत्सुकतामें ये लोग वहाँ गये थे, जहाँ अुन्हें कमसे कम अेक आदमी तो औरोंसे अूँचा अुठनेवाला मिला।"

अिन्हें बापूने कड़ा जवाब दिया :

"When I said that writing about the abuse of occult powers you might have been stronger, I used the adjective precisely, in the same sense in which I use it regarding admitted evils. I feel that whilst we should spare evil doers, we dare not be sparing in our condemnation of evil. Perfect gentleness is not inconsistent with clearest possible denunciation of what one knows to be evil, so long as that knowledge persists; and there would need to be no cause for regret later if our knowledge of the past was found to be a great error of judgement. In our endeavour to approach absolute truth we shall always have to be content with relative truth from time to time, the relative at each stage, being for us as good as the absolute. It can be easily demonstrated that there would be no progress if there was no such confidence in oneself. Of course our language would be one of caution and hesitation if we had any doubt about the correctness of our position. In the case in point, the motive of the exhibitor, no matter how excellent it may be, in my opinion would be no excuse for his exhibition, and the laziness of the spectators in not having thought out the consequences of their presence

at such exhibitions, is again no excuse for their presence. But I must not labour the point any further. I thought that as I could not endorse the position taken up by you in your letter, I should just place before you my argument for your consideration."

"मैंने जब यह कहा था कि यौगिक सिद्धियोंके दुरुपयोगके विषयमें लिखते वक्त आपको ज्यादा कड़ा होना चाहिये था, तब मैंने यह विशेषण सावधानीके साथ ही अिस्तेमाल किया था। मेरा खयाल है कि हम मानी हुअी बुराअियोंके बारेमें जैसा लिखते हैं, वैसा ही अिस विषय पर भी लिखना चाहिये। हम दुष्ट मनुष्यको छोड़ दें, मगर दुष्टताको धिक्कारनेमें तो जरा भी रिआयत न करें। अेक चीजको हमने बुराअी मान लिया तो जब तक यह खयाल कायम रहे तब तक अिस बुराअीकी साफ साफ शब्दोंमें निन्दा करना सौम्य स्वभावसे असंगत नहीं है। और आगे चल कर हमें अैसा मालूम पड़े कि हमारा पिछला खयाल गलत था, तो अिस पर भी अफसोस करनेका कोअी कारण नहीं। क्योंकि पूर्ण सत्यके पास पहुँचनेकी कोशिशमें हमें समय समय पर सापेक्ष सत्यसे सन्तोष करके काम चलाना पड़ेगा। अिस सापेक्ष सत्यको हम हर हालतमें पूरी सचाअीकी तरह ही मानकर चलेंगे। हममें अिस तरहका विश्वास न हो, तो यह आसानीसे साबित किया जा सकता है कि हम प्रगति नहीं कर सकते। अलबत्ता, जहाँ हमें अपनी बातकी सचाअी पर अपने दिलमें जरा भी शक होगा, वहाँ हमारी भाषा सावधानीकी होगी और निश्चयात्मक नहीं होगी। मौजूदा मामलेमें प्रयोग करनेवालेका हेतु कितना ही अच्छा हो, तो भी मेरी रायमें अुसके प्रदर्शनोंका बचाव नहीं किया जा सकता। फिर अैसे प्रदर्शनोंमें हाजिर रहनेका क्या परिणाम होगा, अिस बारेमें सोचनेकी प्रेक्षक लोग जरा भी तकलीफ न अुठावें, तो अिसका भी बचाव नहीं किया जा सकता। मगर अिस बातको और नहीं बढ़ाअूँगा। चूँकि आपने अपने पत्रमें जो सफाअी दी है अुससे मैं सहमत नहीं हो सकता, अिसलिअे आपके विचारके लिअे मैंने अपनी दलील आपके सामने रख दी है।"

आज अुर्दू पुस्तक पढ़ते पढ़ते कहने लगे — "अिसमें जहर अुँडेलनेमें कसर नहीं रखी गयी। यह किताब सरकारने हिन्दू-मुसलमानोंकी अनबनके जमानेसे पहले मंजूर की थी और आजकलके मुसलमान युवक अिन्हीं किताबोंपर पले और बड़े हुअे हैं।"

अंग्रेजोंके विषयमें बोलते हुअे कहने लगे — "नहीं, ये लोग कमजोर पड़े बिना झुकनेवाले नहीं हैं। यह अिनकी खासियत है। आपसमें लड़ते हों या दूसरोंके साथ

लड़ते हों, तो भी जब तक ताकतवर होंगे तब तक जरा भी झुकते ही नहीं। सिर्फ जब अुन्हें महसूस होगा कि अब कमजोर होते जा रहे हैं तब ही वे झुकेंगे।"

वल्लभभाअीको लिफाफे बनाते, कअी चीजें अिकट्ठी करते और कअी तरहकी बातें करते देखकर बापू कहने लगे — "स्वराजमें आपको कौनसा महकमा दिया जाय?" वल्लभभाअी कहने लगे — "स्वराज्यमें मैं लूँगा चिमटा और तूंबी!" बापू कहने लगे — "दास और मोतीलालजी अपने अपने ओहदोंकी गिनती लगाते थे और मुहम्मदअली व शौकतअलीने अपनेको शिक्षा-मंत्री और प्रधान सेनापति माना था। आबरू बची आबरू, जो स्वराज न मिला और कोअी कुछ न बने।"

२६–५–'३२

आज सुबह मेजर मेहता वहाँ आये, जहाँ बापू नहाने जा रहे थे। बापूसे पूछने लगे — "आप नहानेमें साबुन अिस्तेमाल करते हैं?" बापू कहने लगे — "नहीं, गरम पानी काममें लेता हूँ, अिसलिअे साबुनकी क्या जरूरत?" अिस आदमी पर बड़ा असर पड़ा। "खूब! स्पेनका बीचका भाग अैसा है, जहाँ साबुनको कोअी जानता ही नहीं। और वहाँ सचमुच कोमल चमड़ीवाले स्त्री पुरुष पाये जाते हैं। साबुनसे चमड़ी तड़क जाती है। सिर्फ हाथ धोनेके लिअे साबुन जरूर चाहिये।" फिर अिटलीकी बात करने लगे — "नेपल्स बहुत मैला है, बम्बअी अुससे साफ है।" वगैरा। बापूसे पूछा — "आप मुसोलिनीसे मिले थे? बहुत ध्यान खींचनेवाला व्यक्तित्व तो है न?" बापू कहने लगे — "हाँ, मगर जल्लाद आदमी है। अैसे जल्लादपन पर कायम हुआ राज्य कब तक चलेगा?" मेजर बोले — "अुसने देशको बर्बाद होनेसे बचाया है।" बापूने कहा — "यह नहीं कहा जा सकता कि कहाँ तक बचाया? अुसका जुल्म भयंकर है। प्रो० साल्वेमीनीने ढेर प्रमाण अिस बातके छापे हैं कि मुसोलिनीने हत्यायें भी कराअी हैं।" मेजर कहने लगे — "तो भी सुन्दर व्यक्तित्व है।" मैंने कहा — "हाँ, जैसे सिंहका रूप सुन्दर कहा जाता है, अुस तरह भले ही अुसके व्यक्तित्वको सुन्दर कह लीजिये।" अिस पर मेजर कहने लगे — "सच है। जैसे प्राणी ज्यादा विकराल होता है, वैसे दीखनेमें ज्यादा सुन्दर होता है।"

आज बापूने खादीका अेक टुकड़ा फाड़कर अपने लिअे दो अँगोछे बनाये। डेढ़ फुट लम्बे और अेक फुट चौड़े। अिनके सिरों पर बखिया लगाते लगाते दो घंटे तक पत्र लिखवाये। 'टाअिटस'को अेक लम्बा पत्र यह समझानेको लिखा कि भिखारियोंके प्रति आश्रमकी क्या वृत्ति है और डेरी हम किस तरह

चलाना चाहते हैं। छक्कड़दासको — जिसने बड़ी मेहनत करके बहुत ही व्यवस्थित ढंगसे तैयार की हुअी, बराबर माप और वजनकी सुघड़ और गठीली पूनियोंके बहुतसे पूड़े और अपना सुन्दर सूत भेजा है — धन्यवादका और सूचनाओंका लम्बा पत्र लिखवाया। यह आदमी कपड़ेका व्यापारी है, मगर खुद पींजता है और लड़कियाँ पूनियाँ बनाती हैं। कपास भी घरमें ही लोढ़ता है, दो घंटे कातता है और सात घंटे दुकान पर बैठता है। अिस तरहके कुटुम्ब अिस आन्दोलनके अदृश्य फल हैं और अचल श्रद्धाके नमूने हैं।

प्रीवाने 'टाअिम्स'में होरको जवाब दिया है। बापू कहने लगे — "बड़ा गौरवपूर्ण पत्र कहा जायगा और 'टाअिम्स'का अिसे छापना यही ज़ाहिर करता है कि खुद 'टाअिम्स'को भी सेम्युअल होरका वर्णन पसन्द नहीं आया। यह आदमी बेहया हो गया दीखता है। सच्चा तो था ही — मगर अिसकी सचाअीमें भी बेहयाअी थी — जब अुसने कहा कि अुसे किसी भी हिन्दुस्तानीकी बुद्धि या शक्ति पर विश्वास नहीं है।"

अैसा मालूम होता है कि मेक्डोनल्डने तो जो शब्द कल बापूने कहे थे अुन्हें सच्चा कर दिया। अुसका कहना है कि कांग्रेसके सामने झुकना हिंसा और अव्यवस्थाके सामने झुकने-जैसा है और प्रजातंत्रके अैसे कमजोर अर्थको नहीं मानना चाहिये। बापू कहने लगे — "यह तो पक्का साम्राज्यवादी मनुष्य बन गया है।"

मोण्डरका Astronomy without a Telescope (दूरबीनके बिना खगोल) पढ़ रहे हैं। अुसमेंसे अेक सुन्दर वाक्य बापू अुद्धृत कर रहे थे। कहने लगे कि अिसमें विज्ञानकी सुन्दर व्याख्या दी गयी है: 'ठीक ठीक मापका ही नाम विज्ञान है' (Science is accurate measurement), और अिस सिद्धान्तको कातने और अुससे सम्बन्ध रखनेवाली सब क्रियाओं पर लागू करने लगे। सूत्र वाक्य बापूके स्वभावमें हैं, क्योंकि सारा जीवन सूत्रमय है। छगनलाल जोशीको कल जो पत्र लिखा था, अुसमेंसे अेक वाक्य लिखना रह गया था — 'जो आदमी व्रतबद्ध नहीं है, अुसका कौन विश्वास करे?'

आज हँसते हँसते कहने लगे — "मैं सरकारकी बात मान लूँ तो सरकार कहने लगे कि यही सच्चा महात्मा है, भूल करता है मगर कितनी अच्छी तरहसे मान लेता है! सारे गवर्नर मेरी तारीफ करने लगें। लेडी विलिंग्डन तो खूब खुश हो जाय। मगर हिन्दुस्तान क्या करेगा? रेनॉल्डस-जैसे तो पागल ही हो जायँ और बहुतेरे, जो आज यह मानते हैं कि अहिंसा शोभा पा रही है, मानने लगें कि अहिंसाकी शक्ति आज धूलमें मिल गयी है।"

बापू
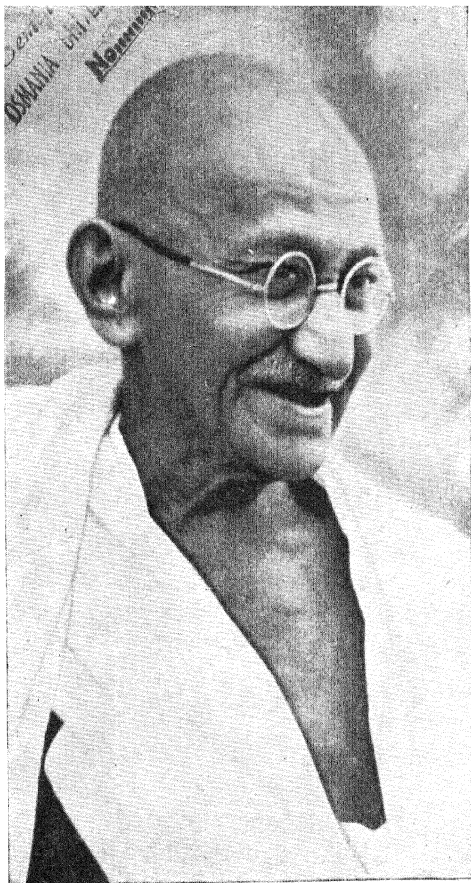
२७–५–'३२

आज मुसोलिनीके राज्यमें आठ दस सालके छोटे छोटे लड़कोंको दी जानेवाली फौजी तालीमका अेक चित्र बापूको बताकर सरदार कहने लगे — "देखे ये मुसोलिनीके सिपाही? ये लोग बड़े होकर दुनियामें कितना संहार करेंगे!" बापू कहने लगे — "हाँ, भाअी, मैं अिन सबको देख आया हूँ। फासिस्टवादका अिंग्लैण्डमें भी खासा प्रचार हो रहा है। वहाँ पार्लियामेन्टमें बहुतेरे फासिस्ट घुसे हुअे हैं और विन्स्टन चर्चिल तो मुसोलिनीका पुजारी ही है। अरे, मुझे बाल्डविन कहता था कि प्रजातंत्रसे क्या फायदा? रामसे मेक्डोनल्डका साम्राज्यवाद आज अुसीसे प्रजातंत्रकी हँसी करा रहा है। ये सब बातें बताती हैं कि हवाका रुख क्या है।"

अिनके विरुद्ध यह सत्याग्रहकी लड़ाअी है। कितने बलवान योद्धाओंसे लड़ना है? फिर भी यदि यह अनन्त कालका युद्ध हो, तो भी अुसमें जूझे बगैर नहीं चल सकता।

कल बापूको अुर्दू कापी लिखते देखकर सरदार कहने लगे — "अिसमें जी रह जायगा, तो अुर्दू मुनशीका अवतार लेना पड़ेगा!"

फिर कहने लगे — "आपका बस चले, तो पैरोंसे भी कलम चलायें।"

बापू बोले — "हाथ रुक जाय तो वैसा भी करना पड़े। आपको मालूम है कि घुमलीके पास मूळू माणेक और जोधा माणेक अंग्रेजोंसे लड़ते लड़ते गिर पड़े, तब अुन्होंने पैरोंसे बन्दूक चलायी थी? अगर पैरोंसे गोली चल गयी तो क्या कलम नहीं चलेगी और चरखा नहीं चल सकता? हाँ, पैरोंसे पूनी नहीं खींची जा सकती यह दुःखकी बात है।"

आज चरखा चलाते वक्त पहिया नहीं फिरता था। और हाथ न लगानेकी तो प्रतिज्ञा ली है, अिसलिअे पैरके अंगूठेसे ही अुसे हिलाना था। अेक हाथमें पूनीका लम्बा तार, अेक पैर पैडल पर और दूसरा पैर अूँचा करके पहियेको घुमाते वक्त बापू नटराज जैसे लगते थे। वल्लभभाअी कहने लगे — "मेरे पास कैमेरा हो तो तस्वीर अुतार लूँ।"

चरसाडामें हजारों दुकानें जल गयीं। कारण बतलाया जाता है कि अचानक आग लग गयी थी। बापूने कहा — "मुझे अिस सरकार पर अितना ज्यादा सन्देह हो गया है कि मेरे जीमें अैसा आता है कि कहीं अिसमें अिन लोगोंका हाथ तो न हो। जैसा बम्बअीमें हुआ वैसा ही चरसाडामें हुआ होगा।"

नारणदास पर बापू मुग्ध हैं। देवदासको लम्बा पत्र लिखा अुसमें अिनकी बड़ी तारीफ की थी। कल अुनको लिखे गये पत्रमें तो वह तारीफ थी ही। "और पास ही नारणदास जैसा साधु पुरुष है। नारणदासकी दृढ़ता, सहनशीलता, हिम्मत, त्यागशक्ति और विवेकबुद्धि वगैरा पर मुझ-जैसे को भी अीर्ष्या करनेकी

अिच्छा होती है। अिसने मुझे आश्रमकी तरफसे बिलकुल निश्चिन्त कर दिया है।" नारणदासको लिखते हुअे कहा था — "हम अन्दर रहकर ताप नहीं सह रहे हैं, तुम आन्तरिक और बाह्य दोनों तपश्चर्या कर रहे हो।"

अुर्दूकी पढ़ाअीके बारेमें देवदासको लिखते हैं — "हरअेक पाठमालाके अैतिहासिक भाग होते हैं। अिसमें कुछ भाग पैगम्बरका और अुनके जमानेका होता है और कुछ हिन्दुस्तानमें जो मुसलमान बादशाह हो चुके हैं अुनका रहता है। अिसमें जो दृष्टिकोण रखा गया है अुसे मेरे विचारसे सभीको समझना चाहिये। अुर्दूके परिचयका महत्व मैं अधिकाधिक देख रहा हूँ। लिखनेसे चिट्ठी पत्री तो लिखी ही जा सकती है, साथ ही अिससे भी ज्यादा और सच्चा लाभ यह है कि लिखनेसे भाषा पर ज्यादा काबू होता है। और पढ़नेमें मदद मिलती है। मुझे तो समझनेमें भी मदद मिलती है। मैं यह मानता हूँ कि हमें मुसलमान साथियोंको अुर्दूमें लिखते आना चाहिये। अुन्हें अंग्रेजीमें ही लिखना पड़े, तो हिन्दी किसी दिन भी राष्ट्रीय भाषा नहीं बन सकती। अिसलिअे मेरे खयालसे तो अुर्दूमें लिखनेकी शक्ति हमारे लिअे जरूरी है।" फिर रैहाना तैयबजीको पत्र लिखनेके लिअे किस तरह अुर्दू लिखना शुरू हुआ अिसका अितिहास बताकर लिखा — "मुसलमानोंके साथ शुद्ध सम्बन्ध स्थापित करनेके ये अहिंसक और नाजुक अुपाय हैं।" बिरलाको पत्र लिखते हुअे हिन्दीमें लिखा — "आशावाद और भोलेपनमें मैं भेद करता हूँ। पंडितजीमें दोनों हैं। दृष्टिमर्यादा पर निराशाके चिह्न होते हुअे भी और जानते हुअे भी जो आशा रखता है वह आशावादी है। यह गुण पंडितजीमें काफी मात्रामें है। आशाकी बातें कोअी कह देवे और अुसपर विश्वास लाना वह भोलापन है। यह भी पंडितजीमें है। अुसे मैं त्याज्य समझता हूँ। पंडितजी महान व्यक्ति हैं, अिसलिअे अुनको अैसे भोलेपनसे हानि नहीं हुअी है। देखें, हमें अैसे भोलेपनका अनुकरण कभी नहीं करना चाहिये। आशावाद अन्तर्नाद पर निर्भर है, भोलापन बाह्य बातों पर निर्भर है।" मालवीयजीको या अुन्हें विलायत जाना चाहिये या नहीं, अिस विषयमें बिरलाने राय पूछी थी। बापूने लिखा कि "राय देनेका मुझे अधिकार नहीं है। मेरे साधारण विचार अिस मामलेमें जाहिर हैं।"

२८–५–'३२

आज संकी पर ब्रेल्सफोर्डका लेख पढ़कर बापू कहने लगे — "यह दिन दिन ज्यादा ज्यादा साबित होता जा रहा है कि विलायत जाना बिलकुल आवश्यक था। वहाँ न गये होते तो हमें और हमारे मामलेको लोग अितना न समझ सकते। आज अितने ज्यादा आदमी निःस्वार्थ बुद्धिसे काम कर रहे हैं, यह कोअी अैसी वैसी बात नहीं है।"

अेन्ड्रिव्जके पत्रमें प्लॉटिनसके दो सुन्दर अुद्धरण थे :

"I have been meditating on the writings of Plotinus so like the Gita in his stress on the life of beauty which men live when they have climbed above the life of senses. He speaks of the eternal beauty which makes its lovers beautiful so that they too are worthy of love. 'It is for this that souls must run their ultimate and greater race; the prize of all their striving is this, that they be not without portion in the supreme spectacle. Blessed is he whose eyes have seen the blessed Vision, but he who fails in this has verily failed. For a man may fail to win fair body, may fail to win power or office, or a king's throne, and yet it is not failure. Failure it is, although he should gain all else if a man fail of this — for whose winning he ought to reject thrones and principalities of all the earth and sea and sky, if by leaving these behind him and looking beyond them his vision might be converted thither and he should see.'

"Plotinus gives this account of the ascetic process:

'Withdraw in thyself and see thyself. And if as yet thou see no beauty in thyself, then do as does the maker of an image which shall at last be fair; as he strikes off a part and a part planes away, as he makes this smooth and releases that, until he has revealed upon the image its face of beauty. So do thou strip away all excess and make straight all crookedness. Whatsoever is yet prisoned in darkness, labour to release it that it may be bright, and cease not from the fashioning of thine own image, until that day when the glory of virtue as of a god shall flame upon thee and thine eyes shall behold serenity established on her stainless pedestal.'"

"मैं प्लॉटिनसके लेखोंका चिन्तन कर रहा हूँ। मनुष्य जब विषयोंसे निवृत्त होते हैं तब जिस सौन्दर्यका अनुभव कर सकते हैं, अुस पर गीताके बराबर ही अिसने भी जोर दिया है। शाश्वत सौन्दर्यके बारेमें वह कहता है कि अपने अुपासकोंको वह सुन्दर बनाता है, जिससे वे भी प्रेमपात्र बनते हैं। 'आत्माका अंतिम और परम पुरुषार्थ अिसीके लिअे होना चाहिये। अिस सारे पुरुषार्थका फल यह है कि वे चरम दर्शनके हकदार बनते हैं। जिन्हें यह दर्शन हो गया है, वे

धन्य हैं। जिन्होंने यह दर्शन नहीं पाया, अुन्होंने क्या पाया है? मनुष्यको सुन्दर शरीर न मिले, सत्ता या पद न मिले, राजगद्दी न मिले, मगर अिससे अुसने कुछ नहीं खोया। खोया तो तब जब सब कुछ मिल जाने पर भी वह दर्शन न हुआ हो। अिसे प्राप्त करनेके लिअे मनुष्य राज सिंहासनको छोड़ दे, अिस पृथ्वी, समुद्र और आकाश परकी सत्ताका त्याग करे, अगर अिस सब कुछ पर लात मार देनेसे, अिन सबसे अूपर अुठनेसे अुसकी दृष्टि अुस तरफ जाय और अुसके दर्शन हों।'

"फिर प्लॉटिनस साधनाका वर्णन करता है:

'अन्तर्मुख हो जा और अपने अन्तरको देख। अैसा करने पर भी तुझे अपनेमें सौन्दर्य न दीखे, तो जैसे शिल्पकार मूर्तिके साथ करता है अुसी तरह तू कर। मूर्ति सुन्दर तो बननी ही चाहिये। अिसलिअे वह किसी हिस्सेको काट डालता है, और किसीको छील देता है। अिस तरह घड़ते घड़ते वह अपनी मूर्तिको सुन्दरता प्रदान करता है। अिसी तरह तू भी अपनेमें जो अतिशयता हो अुसे निकाल फेंक, जो वक्रता हो अुसे निकालकर सरलता धारण कर। जो अंधकारमें फँसा हुआ हो, अुसे अुसमेंसे निकालनेके लिअे जूझ, ताकि वह प्रकाशमें आये। अिस तरह अपनी खुदकी मूर्तिको घड़नेकी कोशिश तू तब तक जरा भी न रोकना, जब तक देवकी तरह सद्गुणोंकी प्रभा तुझ पर चमक न अुठे और तेरी आँखें अुसके निर्मल सिंहासन पर आरूढ़ हुअी शान्ति — समताके दर्शन न कर लें।'"

बापूने अुसे लिखा:

"The passages are very striking and very beautiful, but first is good for all times, while the second may not appeal to the modern mind. I do not find it difficult to understand it."

"तुम्हारे भेजे हुअे अंश बड़े चमत्कारी और बहुत सुन्दर हैं। अिनमेंसे पहला शाश्वत मूल्यवाला है, दूसरा आधुनिक मानसको अपील नहीं करेगा। यह समझना मुझे कठिन नहीं लगता।"

मैंने बापूसे पूछा — "आपको दूसरे अंशके बारेमें अैसा क्यों लगता है?" बापू कहने लगे — "अिससे दंभ पैदा होनेकी सम्भवना है। अपनी प्रगतिसे किसे सन्तोष होगा या होना चाहिये? किसे अैसा लगेगा कि अब तो मैं देवताओंकी प्रभासे चमकने लगा हूँ? फिर भी अिस तरहकी चीज पढ़कर कितनों ही को अैसा लग सकता है। नाथूराम शर्मा अिसी वृत्तिसे बिगड़े हैं। तुरन्त ही लोग अैसा मानने लगेंगे कि आज कामको वशमें कर लिया, कल क्रोधको

जीत लेंगे। 'असौ मया हत: शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि।'" मैं—"गीताकारने यह वाक्य अिस सम्बन्धमें तो काममें नहीं लिया होगा। आप अुसे अिस तरह काममें ले रहे हैं, जिससे अिसका मार्मिक असर हो।" बापू हँसे और कहने लगे—"नहीं, मगर बात सच्ची ही है, वर्ना मूर्ति घड़नेवालेकी अुपमा ठीक नहीं है। क्या आत्माको अिस तरह घड़ा जाता होगा? वैसे यह ठीक है कि हमें तो अुसका मर्म समझना चाहिये। रोज अपने आपकी जाँच करते रहें और यह सोचते रहें कि अभी तक कितनी दूरी तय करनी बाकी है।"

२९-५-'३२

कल यह खबर आयी कि वेड़छी आश्रमका जो सामान जब्त किया गया था और अुसमें चरखे और बुनाअी वगैराका जो सामान था, अुसे सरकारने जला दिया। कराड़ीकी झोंपड़ी तो अचानक जल गयी थी। मगर ये चरखे तो सरकारके कब्जेमें चले गये थे, अिसलिअे यह कहनेमें क्यों संकोच हो कि सरकारने जला दिये?

सरदारका कितने ही मामलोंका अज्ञान विस्मय पैदा करता है। मुझे पूछने लगे—विवेकानन्द कौन थे? और कहाँके थे? जब यह मालूम हुआ कि बंगाली थे, तो आज जरा विशेष स्पष्टीकरण किया कि रामकृष्ण और वे दोनों बंगालमें जनमे थे? 'लीडर'की अेक टिप्पणीमें सुभाषका पत्र आया था। अिसमें अुन्होंने विवेकानन्दको अपना आदर्श पुरुष बताया था। शायद अिसी लिअे सरदारको अितना कुतूहल हुआ होगा। और आज यह पूछा कि ये दोनों बंगालमें पैदा हुअे थे? अब तो वे रोमाँ रोलाँकी 'रामकृष्ण परमहंस' और 'विवेकानन्द' दोनों पुस्तकें पढ़ लेंगे।

'सग्रह किया हुआ साँप भी कामका', यह कहावत कैसे चली? बापूने अेक बात कही कि 'अेक बुढ़ियाके यहाँ साँप निकला। अुसे मार दिया गया। अुसे फिंकवा देनेके बजाय बुढ़ियाने अुसे छप्पर पर रख दिया। अेक अुड़ती हुअी चीलने, जो कहींसे मोतियोंका हार लायी थी, साँपको देखा तो अुसे हारसे ज्यादा कामका समझकर हार तो छप्पर पर डाल दिया और साँपको अुठाकर ले गयी! अिस तरह बुढ़ियाने साँपका संग्रह करके हार पाया।' सरदारने मूल अिस तरह बताया—"अेक बनियेके यहाँ साँप निकला। अुसे कोअी मारनेवाला न मिला। खुद मारनेकी हिम्मत न हुअी या मारना नहीं था, अिसलिअे तपेलेके नीचे ढँक दिया। रातको आये चोर और अुत्सुकतासे तपेला खोलने गये। वहाँ साँपने काट लिया और चोरी करनेके बजाय वे परमधामको पहुँच गये।' नरसिंहरावको पूछना चाहिये। खास तौर पर अिस बातसे प्रेरित होकर कि

अिस बारके 'वसन्त'के अंकमें 'Kill two birds with one stone' अेक ही पत्थरसे दो पक्षी मारने — पर अितने ज्यादा पन्ने भरे हैं।

आज बापूने फिर दाहिने हाथसे पत्र लिखने शुरू किये। बायें हाथका हदसे ज्यादा अुपयोग होनेके कारण अुसकी भी हालत दायें जैसी हो गयी है। अिसलिअे डॉक्टर कहते हैं कि अब थोड़े दिन दायाँ काममें लीजिये। अिसका वर्णन करते हुअे बापूने गोसीबहनके पत्रमें 'पुनश्च' करके लिखा है: "अब मेरे लिअे बायाँ हाथ काममें न लेनेकी बारी आयी है। बुढ़ापा जोरसे दरवाजा खटखटा रहा होगा?" दूसरी तरह भी पत्र मजेदार है:

"Your welcome letter. I don't expect Jalbhai to trouble to write to me. I expect you the nurses to do that work A patient has to eat, sleep, complain and bully. He is an angel when he omits to do the two last things. I hope the crutches will go.

"I am no good at choosing books for others, even for you, though so near to me. The book of life is really the book to read and that you are doing more or less. The other is amusement for those who have no service. One would think that here at least one would have plenty of time to read. Well, spinning and preparatory study leave little time for reading for amusement. But I must stop this lecturing.

"Are you keeping well? Has Nargisbahen lost her headache? The Govts'. reply regarding her is that I am not to see her. Evidently they think that she is taking an active part in politics or that she suffers from contamination."

"तुम्हारे खतसे खुशी हुअी। जालभाअीको मुझे लिखनेका कष्ट न करना चाहिये। ये तो तुम नर्सोंका काम है। बीमार तो खाता है, सोता है, शिकायतें करता है और धौंस बताता है। पिछली दो बातें न करे तो अुसे देवता कहना चाहिये। मैं आशा रखता हूँ कि अुन्हें बैसाखी नहीं रखनी पड़ेगी।

"दूसरोंके लिअे पुस्तकें पसन्द करनेमें मैं बिलकुल निकम्मा हूँ, तुम्हारे लिअे भी, हालाँ कि तुम मेरे अितने नजदीक हो। असलमें पढ़ने लायक पुस्तक तो जीवनकी पुस्तक है, और अुसे तो तुम थोड़ा बहुत पढ़ ही रही हो। और किताबें तो जिनके पास काम न हो अुनके मनोरंजनकी चीज हैं। किसीका खयाल होगा कि हमें यहाँ पढ़नेको बहुत समय मिलता होगा। मगर कातने और तैयारीकी पढ़ाअीके मारे विनोदके लिअे पढ़नेका समय ही नहीं मिलता। लेकिन मुझे अपना व्याख्यान बन्द करना चाहिये।

"तुम्हारी तबीयत तो अच्छी है? नरगिसबहनका सिरदर्द बन्द हुआ? अुनके बारेमें सरकारका जवाब आया है कि मैं अुनसे नहीं मिल सकता। सरकार जरूर यह सोचती होगी कि वे राजनीतिक मामलोंमें सक्रिय भाग लेती हैं या अुन्हें राजनीतिका चेप लगा है।"

मौनवारको लिखनेके ज्यादातर पत्र जरूरी या अैसे लोगोंके लिअे ही होते हैं, जिन्हें खुद बापूको ही लिखना चाहिये या जिन्हें बापूके अक्षरोंसे आश्वासन मिलता हो। डॉ० मेहताके साथ गहरे सम्बन्धके कारण अुनके पुत्रके अुत्कर्षमें पितासे भी ज्यादा दिलचस्पी लेकर बापू डॉक्टरके प्रति अपना ऋण चुका रहे हैं। अेक पिता अपने परदेश पहुँचे हुअे लड़केको अिससे ज्यादा क्या लिखेगा? "वेनिससे तेरा पत्र मिला है। जहाजमें समय कैसे बिताया, रास्तेमें क्या क्या देखा, क्या खर्च किया वगैरा बातें लिखे, तो तेरी वर्णन करनेकी शक्ति और सादगीके तेरे विचारोंका मुझे पता चले। . . . घूमने फिरनेकी कसरत करके शरीरको खूब मजबूत बना लेना। जो काम खुद कर सके, वह दूसरेसे न कराना। जहाँ पैदल जा सके वहाँ सवारी अिस्तेमाल न करना। अंगीठीके पास बैठ कर शरीरमें गरमी न लाना, कसरतसे लाना। . . .

"डॉक्टरको पत्र नियमित रूपसे लिखना। अुन्हें हिसाब भेजना। यह याद रखना कि माँबाप अपने लड़के लड़कियोंके पत्रोंसे कभी अघाते नहीं हैं। तेरी छोटीसे छोटी खबर भी आयेगी, तो अुन्हें अच्छी लगेगी। डॉक्टरकी नजर तुझ पर है, अुन्हें सन्तोष देना।"

दाअूदभाअी आश्रममें रह चुके हैं। अुनकी भलाअीमें भी बापूको अुतनी ही दिलचस्पी है। "तुम्हारा पत्र अच्छा आया। बुरे विचारों और वृत्तियोंके खिलाफ शेरकी तरह जूझना। जूझना हमारा धर्म है। जीत होना अीश्वरके हाथ है। हमारा सन्तोष जूझनेमें ही है। हमारा जूझना सच्चा होना चाहिये। सत्संगमें रहना। अुसके लिअे सद्वाचन चाहिये। बम्बअी जैसे शहरमें सद्वाचन ही सत्संग है। और मेरे खयालसे बहन नूरबानूका दर्शन भी सत्संग ही है। वह निहायत नेक और पवित्र औरत है।"

लक्ष्मी — भावी पुत्रवधु को गंगादेवीकी दैवी मृत्युके बारेमें लिखते हुअे बताया कि आश्रम अिस मौतसे पवित्र हुआ है।

अेस्थरके पत्रमें लिखा :

"Feeling is of the heart. It may easily lead us astray unless we would keep the heart pure. It is like keeping house and everything in it clean. The heart is the source from which knowledge of God springs. If the source is

contaminated, every other remedy is useless. And if its purity is assured, nothing else is needed."

"भावनाका स्थान हृदयमें है। अगर हम हृदय शुद्ध न रखेंगे, तो भावना हमें गलत रास्ते ले जायगी। यह तो घर और अुसके भीतरकी सब चीजोंको साफ रखने जैसी बात है। हृदय मूल स्रोत है जहाँसे अीश्वरके ज्ञानका अुद्‌भव होता है। अगर यह मूल ही बिगड़ जाय, तो सारे अुपाय बेकार हो जाते हैं। और अिसके शुद्ध रहनेका यकीन हो तो दूसरे कोअी अुपाय करनेकी जरूरत नहीं है।"

३०-५-'३२ दायें हाथसे आज भी बहुत पत्र लिखे। और आश्रमके लिअे 'मृत्युसे मिलनेवाला बोध' नामका साप्ताहिक लेख भेजा। पत्र भी काफी लिखाये।

. . . की आदत है कि तरह तरहकी खयाली समस्यायें खड़ी करके अुनके हल बापूसे निकलवाता है और अुसके प्रति स्नेह होनेके कारण बापू लम्बे लम्बे जवाब देते हैं। अिस बार अुसने अिसी तरहके सवाल बलात्कारसे होनेवाले गर्भपात या आत्महत्याके बारेमें पूछे और अुन्हें छपवानेकी अिजाजत माँगी। और हर हफ्ते अिसी तरहके सवालात भेजनेकी धमकी दी। अिसलिअे बापूने अुसे कड़ा जवाब दिया — "मेरी राय यह है और डॉक्टरोंका भी यही मानना है कि किसी भी स्त्री पर केवल बलात्कार होना संभव नहीं है। मरनेकी तैयारी न होनेके कारण स्त्री अन्तमें अत्याचारीके वशमें आ जाती है। मगर जिसने मौतका डर बिलकुल छोड़ दिया है, वह बलात्कार हो सकनेके पहले ही मर मिटेगी। यह लिखना आसान है, करना कठिन है; अिसलिअे हमें यह मानना शोभा ही देगा कि जो स्त्री खुशीसे अत्याचारीके वशमें नहीं हुअी, अुस पर बलात्कार ही हुआ है। अैसी स्त्रीके गर्भ रह जाय तो वह गर्भपात हरगिज न करे। जिस पर बलात्कार हुआ है, वह किसी भी तरह निन्दाके लायक है ही नहीं। वह तो दयाकी ही पात्र है। जो स्त्री अपने पर हुअे बलात्कारको भी छुपाना चाहती है, अुसे गर्भपातका या और किस बातका अधिकार है, यह कौन कह सकता है? अिस तरह भयभीत हुअी स्त्री अधिकार न होने पर भी अधिकार मान बैठेगी और जो जीमें आयेगा करेगी। बलात्कार हो जानेके बाद स्त्रीको आत्महत्या करनेका बिलकुल अधिकार नहीं है, आत्महत्या करनेकी कोअी जरूरत भी नहीं है।

"मेरे जो जवाब तुम्हें मिलें या मैं दूसरोंको लिखूँ, वे जेलसे लिखे होनेके कारण प्रकाशित न होने चाहियें। मैं यहाँसे जो अनेक पत्र लिखता हूँ, वे प्रकाशित होते रहें तो यह बिलकुल शोभाकी बात नहीं है। सरकार शायद अिस तरह पत्रोंका प्रकाशित होना बर्दाश्त कर भी ले, मगर सत्याग्रही अिस तरहकी छूट

नहीं ले सकता । सत्याग्रहीको कितनी ही मर्यादायें अपने आप पालन करनी होती हैं । यह वैसी ही मर्यादा है । मेरे विचारोंको सुनने या अपनानेके लिअे दुनिया अधीर नहीं है । हो तो भी अैसे समय धीरज रखनेकी जरूरत है । मैं खुद अपनी रायकी अितनी बड़ी कीमत लगाता भी नहीं हूँ । हरअेक रायके लिअे यह भी नहीं कहा जा सकता कि आज दी हुअी राय कल मैं नहीं बदलूँगा । तुमारे जैसोंको निजी राय दूँ, अिसमें मुझे हर्ज मालूम नहीं होता । मैं मान लेता हूँ कि मेरे स्वभाव और मेरी खामियों वगैराको ध्यानमें रखकर मैं जो राय दूँगा, अुसकी तुमारे जैसे तुलना कर लेंगे ।

"अब तुम्हारे सवालोंको लूँ । तुम्हारे कितने ही सवाल न पूछने लायक होते हैं । जिज्ञासुको जिस पर श्रद्धा हो, अुससे तात्विक निर्णय कमसे कम माँगने चाहियें । काल्पनिक शंकाओंका निवारण कभी न कराना चाहिये । अपनेको कोअी कदम अुठाना हो और अुसके बारेमें शक हो, तो अुस पर सवाल जरूर पूछा जा सकता है । किसी घटनाके बारेमें पूछना हो, तो अुस वक्त अुस घटनाका हाल बताना चाहिये । अुस घटना परसे कोअी सार्वजनिक प्रश्न कभी नहीं बनाना चाहिये, क्योंकि अिस तरह प्रश्न बनाते समय असली चीजमेंसे कुछ न कुछ रह जानेकी संभावना है । अिसलिअे सार्वजनिक प्रश्नका अुत्तर घटना विशेष पर लागू करनेमें जोखम है ।"

अेक आदमीने ओीसा और बुद्धके प्रतीकों वाला पत्र लिखकर बताया कि आप ओीसा, मुहम्मद और बुद्धके अेकेश्वरवाद रूपी साधारण धर्मका प्रचार करें और राजनीतिको छोड़कर धर्म-प्रवृत्तिमें पड़ जायँ तो शान्ति हो । अुसे लिखा :

"In my opinion unity will come not by mechanical means but by change of heart and attitude on the part of the leaders of public opinion. I do not conceive religion as one of the many activities of mankind. The same activity may be either governed by the spirit of religion or irreligion. There is no such thing for me therefore as leaving politics for religion. For me every, the tiniest, activity is governed by what I consider to be my religion."

"मेरी रायके अनुसार अेकता यांत्रिक अुपायोंसे नहीं होगी । अुसके लिअे तो लोकनेताओंका हृदय परिवर्तन होना चाहिये और अुनका रवैया बदलना चाहिये । मैं धर्मको अिन्सानकी अनेक प्रवृत्तियोंमेंसे अेक नहीं मानता । अेक ही प्रवृत्ति धर्म वृत्तिसे भी हो सकती है और अधर्मसे भी हो सकती है । अिसलिअे मेरे लिअे राजनीतिक काम छोड़ कर धर्मकी प्रवृत्ति ग्रहण करनेकी बात है

ही नहीं। मेरा तो हर काम, छोटीसे छोटी प्रवृत्ति भी, जिसे मैं अपना धर्म मानता हूँ अुसीसे नियंत्रित होती है।"

केनाडासे मिस गुलचेन लम्सडेन नामकी अेक महिला पत्र लिखती है कि सर हेनरी लॉरेन्स हमारे यहाँ रहे थे और अुन्होंने आपके लिअे कहा कि :

"A strange story how he met you in Poona and how you had rooms looking out on a lonely orchard and you were then reading Gibbon's 'Decline and Fall of the Roman Empire' and were working at your spinning wheel — in fact he made out that you were very happy and comfortable. I said it sounded like a fairy tale and was too good to be true. Sir Henry asked me to write and ask you to confirm the account of your first meeting 10 years ago unless, said Sir H. Lawrence, Mr. Gandhi's memory is failing, for you must remember that he is 62. I am sure your memory is not failing, that is why I am writing to ask you whether in this matter Sir H. L. is a comparatively truthful man."

"मैं गांधीसे पूनामें मिला था। अुन्हें अेकान्त कमरे रखा गया था, जिसके सामने बगीचा था। वे गिबनका 'रोमन साम्राज्यका अस्त और विनाश' पुस्तक पढ़ रहे थे और कात रहे थे।

"हमारे सामने अुन्होंने यह बतानेकी कोशिश की थी कि आप बहुत आनन्दमें थे। मैंने कहा कि यह तो परियोंकी कहानी-सी लगती है और गले नहीं अुतरती। तब सर हेनरीने मुझसे कहा कि तुम लिखकर पुछवा लो कि दस बरस पहलेकी मुलाकातका यह हाल सच है या नहीं। मगर गांधीकी स्मरणशक्ति मन्द हो गयी हो तो दूसरी बात है, क्योंकि अुनकी अुमर ६२ वर्षकी हो गयी है। मुझे तो भरोसा है कि आपकी याद कमजोर नहीं पड़ी है। अिसलिअे आपसे पूछती हूँ कि अिस मामलेमें सर हेनरी लॉरेन्सकी बात कहाँ तक सच है।"

अिस बारेमें बापूने अेक पत्र लिखवाया। अुसके बारेमें मैंने कहा — "अिसका असर यह पड़ता है कि अिस आदमीकी सचाअी पर आप शक करते हैं।" बापू कहने लगे — "तो बदल दो, क्योंकि हमें अैसी शंका नहीं है।" फिर वल्लभभाअी बोले — "यह आदमी वहाँ प्रचार कर रहा होगा। अिस औरतको लिखिये कि यहाँ तो बगीचा नहीं, कैदी हैं, वगैरा। अमुक सालमें मैं यहाँ था तब अमुक पुस्तक पढ़ता था और कात रहा था; और स्मरणशक्ति घटनेका डर तो सर हेनरीको हो सकता है, क्योंकि अुनकी अुम्र मुझसे बड़ी है।" मैंने कहा —

“अैसा जवाब तो बर्नार्ड शा दे सकते हैं। मेरा मतलब यह था कि अिस जवाबमें कुशलताकी छाप न पड़नी चाहिये।” वल्लभभाअी भड़क गये। मैंने कहा — “यही देखना है कि बापू क्या लिखते हैं।” बादमें बापूने दूसरा पत्र लिखवाया :

“I thank you for your letter. I well remember the visit of sir H. to this prison in 1922 or '23. He is right in his impression that I then passed my time principally in reading the D. & F. of R. E. and spinning at the wheel. It is also true that he found me quite happy. But there was no lovely orchard then, nor is there now. There were then, as there are now, some tall trees about. The rooms are bare and barred cells of an ordinary Indian prison. As cells they are well lighted and well ventilated. So long therefore as surroundings are concerned, there is no question of my memory betraying me, for at the time of writing I am exactly in the same surroundings as when Sir H. saw me. If therefore his description of them gave you the impression of a fairy tale, it was surely erroneous. Happiness after all is a mental state, and for myself being used now for more than a generation to a hard life I have learnt to detach my happiness from my surroundings.”

“आपके पत्रके लिअे धन्यवाद। सर हेनरी सन् १९२२ या '२३में अिस जेलमें आये थे। अुस समयकी मुलाकात मुझे अच्छी तरह याद है। अुनका यह खयाल सच्चा है कि अुस समय मेरा वक्त खास तौर पर गिबनके ‘रोमन साम्राज्यका अस्त और विनाश’ पुस्तकके पढ़नेमें और चरखा कातनेमें बीतता था। यह भी सच है कि अुन्होंने मुझे आनन्दमें देखा था। लेकिन अुस समय यहाँ सुन्दर बगीचा नहीं था। आज भी नहीं है। अुस समय यहाँ कुछ अूँचे अूँचे पेड़ जरूर थे और आज भी हैं। और कोठरियाँ तो जैसी बगैर किसी भी तरहकी सुविधाके हिन्दुस्तानकी साधारण जेलोंमें होती हैं, वैसी ही सलाखोंवाली हैं। कोठरियोंके तौर पर वे काफी हवा और रोशनीवाली हैं। आसपासके वर्णनके मामलेमें तो मेरी याद मुझे धोखा नहीं दे सकती, क्योंकि यह लिखते वक्त मैं अुसी जगह बैठा हूँ जहाँ मुझे सर हेनरी लॉरेन्सने दस बरस पहले देखा था। अिसलिअे अुनके किये हुअे वर्णन परसे आप पर परियोंकी कहानीका असर पड़ा हो, तो जरूर वह वर्णन गलत है। और आनन्द तो मनकी वस्तु है। मैं कितने ही वर्षोंसे कठिन जीवनका आदी हो गया

हूँ। अिसलिअे आसपासकी सुविधा-असुविधाओंका मेरे मनके साथ सम्बन्ध नहीं रहता।"

विनोबाके भाअी भाअूको पत्रमें लिखा — "जीवित लोगोंकी मूर्तिका ध्यान अच्छी बात नहीं है। जिसका ध्यान करें अुसमें पूर्णताका आरोपण होता है। होना चाहिये। जीवितोंमें किसीको पूर्ण न कहा जाय। रामायणादिमें जो चित्र आते हैं, वे अच्छे नहीं होते हैं। किन्तु मूर्तिकी आवश्यकता क्यों? अीश्वर निराकार निर्गुण है। अुसका ध्यान क्यों न करें? यदि यह अशक्य है, तो ओंकारका ध्यान किया जाय। अथवा अपनी कल्पनाकी मूर्तिका। गीता माताका ही ध्यान क्यों नहीं? अुसे कामधेनुकी अुपमा दी है। अिस धेनुका ध्यान किया जाय। और अिसमें बहुत अर्थ पाये जाते हैं। वैसे भी जीवितोंकी मूर्तियोंका ध्यान हानिकर हो सकता है। अिसलिअे त्याज्य समझो।"

आश्रमका अेक बालक लिखता है — "आप विलायतका वर्णन क्यों नहीं देते?" अुसे लिखा — "लन्दन बहुत बड़ा शहर है। अुसमें धुँआदान बहुत हैं। अिसलिअे सब कुछ काला हो जाता है, कुछ भी सफेद रह ही नहीं सकता। सूर्यके दर्शन दुर्लभ होते हैं। वहाँके लोग हमसे ज्यादा अुद्यमी हैं। वहाँके रास्ते बहुत साफ होते हैं।"

अब कोअी सन् '३२की मेयो पैदा हुअी है। अिसका नाम पेट्रीशिया केण्डेल है। यह लंदनके लोगोंको समझाती है कि,

"Gandhi is a waning star. Policy of Lord Willingdon is justified. Gandhi's followers disillusioned. Visited jails and found standard of living in prisons far higher than of natives outside; and Lady Willingdon is extremely popular and princes are popular too."

"गांधी अब डूबता हुआ तारा है। लॉर्ड विलिंग्डनकी नीति सच्ची साबित हुअी है। गांधीके अनुयायियोंका भ्रम दूर हो गया है। जेलोंको देखा। बाहरके देशी लोगोंके जीवनमापसे जेलोंमें जीवनमाप बहुत अूँचा है। लेडी विलिंग्डन लोकप्रिय है और राजा भी लोकप्रिय हैं।"

यह 'हिन्दू' में रायटरकी हवाअी डाकमें था। 'टाअिम्स' में नहीं आया। बापू बोले — "'टाअिम्स' को छापनेमें शर्म आयी होगी।" वल्लभभाअी — "शर्म तो क्या आयेगी? वह अिसमें शरीक होगा न?" बापू कहने लगे — "वह अिसमें शरीक हो तो भी यह चीज अितनी खुली है कि अिसे छापनेमें शर्म आ सकती है। यह तो कोअी विलिंग्डन साहबकी खड़ी की हुअी औरत है।"

बनारसमें स्त्रियों पर हुअे हमलेके बारेमें सरकारी बयान पढ़ कर खेद हुआ। अिसमें पण्डितजी पर आक्षेप हैं। "स्त्रियों पर हमला हुआ है, मगर जिन्हें

पण्डितजी अिज्जतदार कहते हैं, वे या तो रखेल हैं या साधनहीन विधवायें हैं या भाड़ेकी स्वयंसेविकायें हैं। यह कहा जायगा कि पण्डितजीने अिसमें जोरका थप्पड़ खाया। क्या पण्डितजी अिसका जवाब देकर भूल स्वीकार करेंगे?"

३१-५-'३२

बम्बअीके दंगे अभी जारी हैं। अिनमें घातक और कायर हमले होनेकी खबरें आती रहती हैं। बापू कहने लगे — "जिन बातोंसे मुझे खूब चोट लगती है, अुन्हींको सुनकर मानों मैं खुश होता हूँ; क्योंकि गंदगी सब अूपर आ रही है। अैसा हो रहा है मानो कोअी बड़ी छलनी लेकर बैठा हो और कचरा निकालता ही जा रहा हो।"

आज आयी हुअी डाकके कितने ही नादान और बच्चे-जैसे प्रश्नोंमेंसे अेक यह था कि हम तीन मनकी देह लेकर धरती पर चलते हैं और बहुतसी चींटियाँ कुचल जाती है। यह हिंसा कैसे रुक सकती है? वल्लभभाअीने तुरत कहा — "अिसे लिख दीजिये कि पैर सिर पर रख कर चले।"

कलेक्टर अपनी नियमित मुलाकातके लिअे आया था। (पेरीको छोड़कर) अैसा विवेकवाला अंग्रेज अफसर मैंने अभी तक नहीं देखा। बापू और वल्लभभाअीको कुरसी पर बिठाकर फिर खुद बैठा। दूसरी कुरसी पर बिल्ली अपने बच्चोंको दूध पिलाती हुअी आरामसे सो रही थी। अिसलिअे मुझे सामनेके स्टूल पर बिठाया। फिर भी जेलर तो खड़े ही थे, अिसलिअे दूसरी कुरसी मँगायी। अुसके आने पर जेलरको आग्रह करके बिठाया। आते ही हम तीनोंसे हाथ मिलाये। जाते वक्त भी मिलाये। बापूसे कहने लगा — "आपको समाचार तो क्या दूँ? क्या दंगेके समाचार आपसे कहनेकी जरूरत है? बहुत दुःखद बात है। पूनेमें भी शरारत हुअी है। अेक हिन्दूकी मूर्खता थी। अुसने अेक पीरको रंग कर हिन्दू समाधिका रूप देनेकी कोशिश की थी। मगर अुसे मैंने फौरन दबा दिया और अिस बातको फैलनेसे भी रोक दिया है। बम्बअीमें जो कुछ हो रहा है, अुससे कँपकँपी होती है। और अब तो सिर्फ खून पीनेकी बात ही हो रही है। यह खबर आपको देनेकी नहीं है, मगर क्या करूँ? अब आगे नहीं बढ़ सकती और हमें आशा रखनी चाहिये कि यहाँ कुछ न होगा। आपके लिअे मैं कुछ कर सकता हूँ?" बापूने कहा — "नहीं, मेहरबानी।" "सचमुच क्या मैं कोअी सेवा कर ही नहीं सकता? अच्छा तो सलाम।" अिस आदमीके चेहरे पर अजीब भलमनसाहत थी।

*　　　*　　　*

बापू अेक पट्टेका तकिया लगाकर बैठते हैं। अक्सर अिस पट्टेको दीवारसे सीधा लगाकर रखते हैं, कोण बनाकर नहीं। मैंने कहा — "बापू कोण बनाकर रखा हो, तो गिरा न करे और जरा आराम मिले।" बापू कहने लगे — "आराम तो मिले। मगर सच्ची खूबी सीधा रखनेमें ही है। अिससे कमर और रीढ़ सीधी रहती हैं, नहीं तो टेढ़ी हो जायँ। यह नियम है कि किसी चीजको सीधी रखें, तो अुसके सहारेकी सभी चीजोंको सीधा रहना पड़ेगा; और अेक मामलेमें टेढ़ा रखा, तो फिर कअी दोष घुस जायँगे।"

१–६–'३२

मैंने रोमाँ रोलाँका लिखा रामकृष्णका जीवन चरित्र पढ़ लिया। अिस आदमीकी अगाध कल्पनाशक्ति और अूँची भावनाको धन्य है। स्विटज़र्लैण्डके गाँवमें बैठे बैठे अंग्रेजी पुस्तकों और बंगालीके अंग्रेजी अनुवादोंका फ्रेंच अनुवाद कराकर और अुन्हें समझकर दो सालकी मेहनतके अन्तमें हिन्दुस्तानियोंको शरमानेवाली पुस्तक प्रकाशित की है। अिसने राममोहनरायसे लगाकर रामकृष्ण और विवेकानन्द तकका राष्ट्रीय धर्मोत्थानका अितिहास अपूर्व शक्तिसे दिया है। अिस मनुष्यकी भारतके प्रति हर पृष्ठ पर भक्ति दिखायी देती है। अिसके सिवा भारतके अध्यात्ममार्गके प्रति अुसका आकर्षण और अुसके गलीकूचे समझनेके लिअे अुसकी पहुँच भी जगह जगह दिखायी देती है। तोतापुरीके साथका परमहंसका सम्बन्ध और केशवचन्द्र सेनके साथका सम्बन्ध बहुत ही हृदयस्पर्शी ढंगसे बयान किया है।

वल्लभभाअीसे अिस किताबके पढ़नेकी सिफारिश करते हुअे मैंने कहा — "और कुछ नहीं तो आपको रामकृष्ण परमहंसके मीठे मजाकों और विनोदोंमें — जिसे रोलाँ कटाक्षमय विनोद कहता है — अपने साथ कुछ न कुछ साम्य जरूर दिखायी देगा। मिसालके लिअे, ब्रह्मसमाजियोंने दिनरात अीश्वरको याद करनेका भजन गाया तब रामकृष्णने कहा — "अिस तरह झूठ क्यों बोलते हो? यों कहो कि दिनमें दो बार भजते हैं! भगवानको क्यों धोखा देते हो?" और ब्रह्मसमाजी मूर्तिपूजासे अछूते रहनेका जो अभिमान करते हैं अुस पर रामकृष्णने व्यंगमें कहा — "तुम अुसके अनेक गुण गिनाते हो। मगर ये सब आँकड़े किस लिअे गिनाते हो? कोअी लड़का बापसे कहता है कि आपके पास अितने मकान हैं, बाग हैं, घोड़े हैं?" ये सब कटाक्ष मानो वल्लभभाअीके ढंगके हों।

रामकृष्णकी अत्यंत सूक्ष्म आध्यात्मिक और शारीरिक भावनाओंके दो अुदाहरण ये दिये हैं कि नींदमें भी रुपये और सोनेको छूना अुन्हें आगकी

तरह लगता था। अिसी तरह दुष्ट मनुष्यका स्पर्श अुन्हें साँपकी तरह लगता था और वे चिल्ला अुठते थे। मैंने बापूसे अिस बारेमें पूछा। बापूने कहा — "यह स्वाभाविक है, मगर यह चीज तुम कहते हो वैसे आत्मशुद्धिकी पराकाष्ठा बतानेवाली नहीं है। अेक चीजके लिअे अितना तिरस्कार पैदा किया जा सकता है कि नींदमें भी अुसका स्पर्श हो जाय तो मनुष्य चौंक पड़े। और खराब आदमीके छू जानेसे भी वे चौंकते थे, यह मुझे विरोधी बात लगती है। क्योंकि वे तो सभीमें भगवानको देखते थे। अुन्हें बुरे मनुष्यके प्रति तिरस्कार तो हो ही नहीं सकता था। बात यह है कि हमें तो अैसे महापुरुषोंकी महत्ताको स्वीकार करना चाहिये। अुनके बारेमें दूसरोंको जो अनुभव हुअे हों, वे सम्भव है हमें न भी हों। मगर हमारे लिअे तो यह बात याद रखने और समझने लायक है कि अुन्होंने कअियोंका अुद्धार किया।"

निवेदिताका जिक्र छिड़नेपर बापू कहने लगे — "मैं भूल ही नहीं सकता कि अिसने पहली ही मुलाकातमें अंग्रेजोंके लिअे अत्यन्त तिरस्कार और द्वेषके वचन कहे थे। मुझपर कुछ दिखावटकी छाप पड़ी थी, मगर दूसरे कअी लोग कहते हैं कि वह गरीबसे गरीब भंगियोंके मुहल्लेमें रहती थी। अिसलिअे यह सबूत मेरे लिअे काफी है। दूसरी बार पादशाहके यहाँ मिली थीं। वहाँ पादशाहकी बूढ़ी माँने अेक कटाक्ष किया था वह याद रह गया है — अिस बहनसे कहिये कि अिसने अपना धर्म तो छोड़ दिया है, अब मुझे क्या मेरा धर्म समझाती है?"

२-६-'३२

आज ७ वें अध्यायमेंसे 'अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं'वाले श्लोकमें और १२वें अध्यायके व्यक्तोपासना पर जोर देनेवाले श्लोकमें जो विरोध है, अुसकी तरफ बापूका ध्यान खींचा। बापू कहने लगे — "अैसे विरोध तो गीतामें बहुत जगह हैं। अिनका समन्वय अिस तरह समझकर करना है कि अेक बार अेक बात पर जोर दिया गया है और दूसरी बार दूसरी बात पर। १२वें अध्यायमें अव्यक्त अुपासनाका निषेध तो है ही नहीं, सिर्फ अुसकी कठिनता सुझायी है।" मैंने पूछा — "आपने भाअूको जो पत्र लिखा था, अुसमें तो अुससे कहा था कि तुझे व्यक्तकी अुपासनाके बजाय अव्यक्तकी अुपासना करनी चाहिये?" बापूने कहा — "कारण वह जीवितोंका ध्यान धरता है यह ठीक नहीं है। कोअी जीवित मनुष्य सम्पूर्ण होता ही नहीं। गीतामें मूर्तिपूजाका अुल्लेख हो, तो वह अवतारोंकी पूजाका है।" मैंने कहा — "तो भी अवतार आखिर कौन? सच्ची मूर्तियाँ हमारे पास हैं कहाँ?" बापू कहने लगे — "अिसी लिअे तो मैं कहता हूँ कि हम

अपनी कल्पनाके अवतारोंको पूज सकते हैं। मैं यह नहीं कहूँगा कि रविवर्माके चित्रोंका ध्यान धरनेका भी निषेध है। भावना मुख्य चीज है।"

कल शाक्त मार्ग पर बात निकली थी। तब बापू कहने लगे — "अिन्दुलाल जब यहाँ थे, तब वुडरोफकी पुस्तक लाये थे और अुसे पढ़नेको कहा था। अुसमें कितना ही भाग अितना भद्दा और विभत्स आया कि मैं अुसे पढ़ न सका। नाचकी बात जहाँ आयी वहीं तो मैं ठण्डा ही हो गया और पुस्तक छोड़ दी। यही स्थिति गीतगोविन्द पढ़ते वक्त हुअी थी। अुसका अनुवाद और अुसपर बादमें होनेवाली टिप्पणियाँ पढ़ते समय तो अैसा लगा कि अुसे पढ़नेकी कोशिश करना बेकार है।"

आज 'येल रिव्यू'में आया हुआ लास्कीका अेक लेख गोलमेजके समयके मुसलमानोंके दावपेचोंका अच्छा भण्डाफोड़ करता है। वह पढ़कर सुनाया तो बापू कहने लगे — "लास्की सेंकीका थोथापन समझ गया दीखता है। मुझे खुशी है कि अुसकी और दूसरोंकी आँखें खोलनेवाला मैं ही था; क्योंकि सेंकीके बारेमें मैंने अपनी राय कभी छिपायी ही नहीं।"

मैंने पूछा — "बापू, सेंकीके खतका जवाब अब आना चाहिये।"

बापू — "कौनसा खत?"

"अुसके लेखके बारेमें आपने लिखा था सो।"

"अुसे पत्र लिखा कब?"

वल्लभभाअी — "अरे बापू, अिस तरह भूलेंगे तो काम कैसे चलेगा? अभी तो हमें स्वराज लेना है न?"

फिर मैंने पत्रकी याद दिलाअी। कितनी ही तफसील बतायी तब बापू कहने लगे — "अब कुछ कुछ धुँधला स्मरण होता है।"

मेरी जानकारीमें बापूके अिस तरह भूलनेका यह पहला अुदाहरण आया है। दूसरी कितनी ही बातें भूल जानेकी मिसालें मैं जानता हूँ। मगर अिसे मैं महत्वपूर्ण मानता हूँ। मैंने रातको सोते समय पूछा — "बापू, आपको छोटी छोटी बातें अैसी याद रहती हैं कि मुझे अक्सर आश्चर्य होता है। तब अितनी बड़ी बात, जो पत्र आपने अितनी अधिक चर्चा और विचारके बाद लिखा था, आप कैसे भूल गये? आज ही आपने कहा था कि दाअूदको लिखा हुआ पत्र फलाँ आदमीके पत्रके साथ रखा था। वह आपको याद रहे, और अिसे आप भूल जायँ, अिससे विस्मय होता है।"

बापू — "मेरे बारेमें अैसा हुआ, अिसका कारण यह है कि अिन दोनों छोटे छोटे पत्रोंका मूल्य मेरे सामने अलग अलग था। जिस बातमें किसी मनुष्यका कल्याण समाया हुआ हो, अुसे मैं कभी नहीं भूलता।"
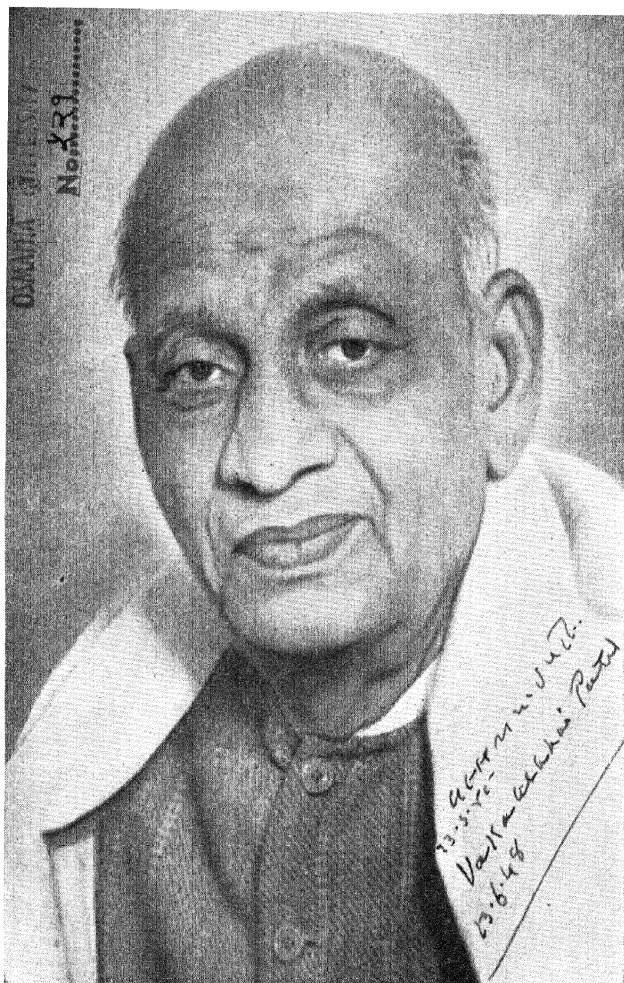
सरदार वल्लभभाओ पटेल

मैं — "हाँ, स्मृतिकी व्याख्या तो यही है न कि जिसे याद रखनेकी जरूरत हो अुसे याद रखने और बाकीको भूल जानेकी शक्ति ।"

बापू — "हाँ, सैंकीके खतको मैंने अितना महत्व दिया ही नहीं था। अुसे लिखवाया और भूल गया। दाअूदका पत्र अिसलिअे याद रहा कि अुसमें अेक अिन्सानकी गहरी भलाओकी बात थी। सैंकीको तो लिखवाकर मैं भूल गया। सच बात यह है कि बड़ी दिखायी देनेवाली चीजें मुझे बड़ी नहीं लगतीं और छोटी चीजें मेरे लिअे बड़ी बन जाती हैं। महाभारत-से दिखाओ देनेवाले काम मुझे कभी महाभारत लगे ही नहीं। चंपारनसे लगाकर आज तकके सब काम मैं ढूँढ़ने नहीं गया था, मगर अैसा लगता है मानो वे मेरी गोदमें आ पड़े हों। और अिसी तरह चला जा रहा है। भगवान निभा रहा है।"

*

३–६–'३२

यहाँके कोढ़ी वार्डमें श्री परचूरे शास्त्री भी हैं। बापूने अुनसे मिलनेका प्रयत्न किया था। लेकिन चूँकि रक्तपित्तके रोगियोंको दूसरोंसे नहीं मिलने देते, अिसलिअे मिलना न हो सका। लेकिन बापूको अुनका खयाल तो कओ बार आता ही रहता है। अेक दिन अुनकी तबीयतका हाल पूछनेके लिअे पत्र लिखा। अुसका हिन्दीमें सुन्दर अुत्तर आया। वह सारा ही मननीय और पावक है:

"पूज्यपाद श्री बापूजी चरणकमलाभ्यां नतिततयो विलसन्तु,

"आपका कृपाकटाक्ष परिपूरित पत्र देखकर अंतःप्रसाद मिला है। यही रामप्रभुका अनुग्रह है, अैसी मेरी श्रद्धा है। हरोलीकर और मैं निश्चिन्त हूँ। अभी तक अवयवभंगादि विकलता नहीं है। मेरा विश्वास आसन, प्राणायाम, धोती, नेती, बस्ति आदि क्रिया और हविष्यान्न सेवन द्वारा अिस रोगको हटानेपर और पूर्ण परिहारक साधनों पर अनुभवके अनुसार बढ़ रहा है। मेरी सजा अेक साल अधिक दो मासकी है। हरोलीकरकी सात मासकी — अब दो मासकी बाकी है। आपके चरण सेवामें हरोलीकरका प्रणिपात। सरदारजी और महादेवभाओको हमारा दोनोंका प्रणाम।

"गीतोपनिषद, भाष्यादि, वेदान्त परिशीलन, आसन, ध्यान, भजन, और प्रति दिन ५०० तार नियमित कातना — अिसी कर्ममें मेरा काल आनन्दसे व्यतीत होता है। अेक ही चिन्ता है कि मेरी पत्नी अुन्माद और मूर्छना रोगसे पीड़ित होकर रोगशैया पर पड़ी हुओ होनेके कारण पूनी और पुस्तक मिलनेकी अशक्यता है। पूनीसंग्रह मेरे पास बहुत थोड़ा है। कातनेका व्रतभंग प्रसंग श्री रामकृपासे किसी तरह परिहृत होगा। न मालूम कुष्ठव्याधिके कारण जेलका ग्रन्थसंग्रह हम लोगोंके वास्ते बन्द ही है। पुस्तक अगर पूनी

भेजनेवाला दूसरा कोअी सहायक नहीं है। मेरे खयालमें सत्याग्रही और मुमुक्षु अेक ही है। किन्तु "सहनं सर्व दुःखानां अप्रतिकारपूर्वकं, चिन्ताविलापरहितं, सा तितिक्षा निगद्यते।" अिस तरहकी सहनशक्ति बिना यज्ञकर्म असाध्य है। अद्यावधि मेरे लिअे अिस व्याधिजर्जर अवस्थामें रस्ता — नाला — मेला साफ सफाअी और कताअी ये यज्ञार्थ मार्गद्वय केवल परमेश्वर कृपासे खुले हैं। यह हीन जीवन मृतवत्, भारभूत और विश्वभयप्रद है। अैसा सब सज्जनोंका और श्रुतियोंका समन्वयपूर्वक अभिप्राय मैं समझता हूँ। आपका भी अैसा दृढ़ विश्वास सत्यपूत वाणीसे और लेखनीसे बहुत बार प्रगट हुआ है। संशय निरासार्थ मैं अेक प्रश्न पूछता हूँ कि यदि नाना व्याधिसे किसी व्यक्तिका शरीर यज्ञकर्मके लिअे सर्वथैव असमर्थ हो जाय, तो 'अप्रतिसमाधेय व्याधिनां जलादि प्रवेशेन प्राणत्यागः' अित्यादि श्रुतिशास्त्रानुसार प्रायोपवेशनादि द्वारा शरीरत्याग श्रेयस्कर किंवा प्राणधारण? टूटीफूटी हिंदी भाषा विषयक स्खलन माफ कीजिये। प्रिय सुहृद काका साहबकी कैसी हालत है? न जाने। वन्दे मातरम्।

तपोवनम्, ३१–५–'३२

भवदीय कृपाभिलाषी
दत्तात्रेय वासुदेव परचुरे"

बापूने अिस पत्रका सार लेकर अुस पर आश्रमके लिअे साप्ताहिक लेख लिखा और शास्त्रीजीको अिस तरह हिन्दीमें पत्र लिखा — "तुम्हारा पत्र पढ़कर हम तीनोंको बहुत आनन्द हुआ। मैं कैसा मूर्ख हूँ कि हरोलीकरको हुकेरिकर मान लिया! नाम और चेहरा याद रखनेमें मैं बहुत मन्द हूँ। आप लोग आनन्दसे व्याधि सहन कर लेते हैं, यह जानकर मुझे बड़ा हर्ष होता है। आप लोगोंसे मैं यही आशा करता था।

"तुम्हारी पत्नीकी व्याधिका हाल सुनकर दुःख होता है। अुनकी सेवामें कोअी रहते हैं? माता पिता हैं? पूनीकी अेक पूड़ी भेजता हूँ। महादेवने यहाँ बनाअी हैं। हमारे पास हमेशा काफीसे ज्यादा भण्डार रहता है, अिसलिअे मँगानेमें संकोच नहीं रखना। पुस्तक कौनसे चाहिये? यह भी बता दो। मैं मँगवानेकी कोशिश करूँगा।

"प्राणत्यागके बारेमें जो कथन लिखा है, वह किसी ग्रन्थमें है? अिस बारेमें मेरा अभिप्राय यह है: जिसको असाध्य रोग है, जो दूसरोंकी सेवा लेकर ही जीता रहता है और जो कुछ भी सेवा नहीं करता, अुसे प्राणत्यागका अधिकार है। डूबकर मरनेसे पूर्ण अनशन करके प्राणत्याग करना बहुत ज्यादा अच्छा प्रतीत होता है। अनशनमें मनुष्यकी दृढ़ताकी परीक्षा होती है और अपना विचार बदलनेको भी स्थान रहता है। रखना अुचित और आवश्यक

लगाता है। परन्तु जहाँ तक अैसा मनुष्य कुछ भी सेवा कर सकता है, वहाँ तक अुसे प्राणत्याग करना अनुचित है। यद्यपि यज्ञमें शारीरिक क्रिया अेक बड़ा और आवश्यक अंग है, तदपि अशक्तिके कारण शरीरसे कुछ भी न बन सके तो मानसिक यज्ञ सर्वथा निरर्थक नहीं है। मनुष्य अपने शुद्ध विचारसे भी सेवा कर सकता है। सलाह, अित्यादिसे भी कर सकता है। विशुद्ध चित्तके विचार ही कार्य हैं; और महत् परिणाम पैदा करते हैं।"

पत्र पढ़कर और अुस पर लेख लिखवाकर फिर दो-चार मिनिट बापू देखते रहे और गहरे विचारमें पड़ गये। और बादमें बोले — "परचूरे शास्त्री जैसे आदमीको यह रोग कहाँसे लगा?"

आज लोदियन कमेटीकी रिपोर्टका सार प्रकाशित हो गया। बापू अछूतों सम्बन्धी सिफारिशोंका सार सुनकर कहने लगे — "अिस कमेटीका अितना काम तो ठीक ही कहलाअेगा कि अुसने अछूतपनकी व्याख्या दे दी और अब तक जो ७ करोड़ कहलाते थे, अुनकी संख्या ३॥ करोड़ ठहरा दी। अिसके लिअे शायद लोदियन यश ले सकता है। यह व्याख्या हो जानेसे हिन्दू चाहें तो क्षणभरमें अछूतोंको अपना सकते हैं और अछूतोंके लिअे कही जानेवाली सारी माँगोंको शान्त कर सकते हैं।"

४-६-'३२

अछूतोंके बारेमें व्याख्या करनेका और अुनकी तादाद मुकर्रर करनेका यश लोदियनको नहीं, लेकिन ताँबे और चिन्तामणिको मिलना चाहिये, अैसा दीखता है। अिन लोगोंके विरोधी मतमेंसे अछूतों वाला भाग बापूको पढ़कर सुनाया। बापू कहने लगे — "बढ़िया है। अछूतोंको अलग मताधिकार दे दिया जाय, तो यह अेक बदमाशीका काम होगा। मनुष्य स्वार्थी बन जाय, तो समझमें आ सकता है। मगर यहाँ तो आज सारी प्रजाको स्वार्थान्ध बनानेकी कोशिश हो रही है। वीलीअर्सने अंग्रेजों और मुसलमानोंकी अेकताकी बातें कहीं थीं; अुसे हमने विलायतमें देखा था। वैसी ही बात बम्बअीमें हुअी सुनते हैं। चटगाँवमें भी यही बात थी।"

* * *

अिस बार स्त्रियोंके जो पत्र आये, अुनमें बहन अुमा कुंदापुरका पत्र बहुत सुन्दर था। "१९६ बहनोंका साथ छोड़ कर जाना पड़ता है, अिससे दुःख होता है। अितने प्रान्तोंकी अितनी बहनोंके ये दर्शन मानो हिन्दुस्तानके दर्शन कराते हैं। अिन बहनोंके साथ सुखसे बिताये हुअे दिन हमेशा याद आयेंगे। यहाँ थी तब आपके जो पत्र आते थे वे देखनेको मिलते थे। बाहर जाअूँगी तो ये पत्र भी देखनेको न मिलेंगे।"

* * *

जाल अ० दा० नवरोजीका पंचगनीसे धन्यवादका पत्र आया। वे तो बड़ी घातसे बचे, अैसा कहा जा सकता है। अब बिस्तर पर हैं और घाव भर रहा है। वहाँ अुनका पढ़ना और अध्ययन जारी है। जालने पत्रमें यह लिखा कि कूपर नामके आदमीने अेक नया हल बनाया है और अुसका दावा है कि वह हल १५से १५० फी सदी ज्यादा पैदावार देनेकी शक्ति रखता है। अुसके बारेमें बापूने लिखा :

'If Mr. Cooper's plough is what he claims it to be, I should have no objection to its use, merely because it is a steel plough and therefore the village carpenter will be deprived of a portion of his work. I do not mind the partial deprivation of the carpenter if the plough increases the earning capacity of the farmer. But I have very grave doubts about the claims made by Mr. Cooper for the invention. At Sabarmati we have tried almost all improved ploughs manufactured in India and I think even others, but the claims made for each variety have not proved true in the long run. An experienced man has said that the indigenous plough is specially designed for the Indian soil. It conserves the soil, because it ploughs deep enough for the farmer's crops but never deep enough to do damage. Of course I do not claim to understand agriculture. I am simply giving you the testimony of those who have had considerable experience in these matters. What we have to remember is that all improved implements have to meet the peculiar condition of India. There is nothing wrong in an engine plough in itself and it may be a great advantage to a man who owns thousands of acres of land, and has a cracked caky soil, which will not yield under the indigenous plough. What, however, we want is an implement that would suit owners of small holdings from one acre to three acres,"

"कूपर अपने हल्के बारेमें जो दावा करते हैं, वह सच्चा हो तो सिर्फ अिसी कारण मैं अुस पर आपत्ति नहीं करूँगा कि वह हल लोहेका है और अुससे गाँवके बढ़अीका अितना काम कम हो जायगा। अगर किसानकी कमाअी अुतनी बढ़ जाती है, तो भले ही बढ़अीका काम अितना कम हो जाय। मगर कूपरने अपने हल्के बारेमें जो दावे किये हैं, अुनके बारेमें मेरे मनमें बड़ी शकायें हैं।

साबरमतीमें हिन्दुस्तान और दूसरे देशोंमें बने हुअे करीब करीब सभी किस्मके सुधरे हुअे हल काममें लेकर देखे गये हैं और अुनके बारेमें किये गये दावे अन्तमें सच्चे नहीं निकले। अेक अनुभवी आदमीने कहा है कि देशी हलकी बनावट हिन्दुस्तानकी जमीनके बहुत अनुकूल है। वह जमीनकी रक्षा करता है, क्योंकि वह जमीन अुतनी ही गहरी जोतता है, जितनी किसानकी फसलके लिअे जरूरी है। मगर अितनी ज्यादा गहरी नहीं जोतता, जिससे जमीनको नुकसान पहुँचे। अलबत्ता मैं खेतीका जानकार होनेका दावा नहीं करता। मैं तो अुन्हींके सबूत दे रहा हूँ, जिन्हें अिस मामलेमें अनुभव है। हमें अितना याद रखना चाहिये कि सुधरे हुअे औजार हमारी परिस्थितिके अनुकूल होने चाहियें। खुद अेन्जिनवाले हलके विरुद्ध मुझे कोअी आपत्ति नहीं है। जिसके पास हजारों अेकड़ जमीन हो और फटनेवाली सख्त जमीन हो, अुसके लिअे यह बड़ा लाभदायक साबित होगा। अैसी जमीन देशी हलसे अच्छी नहीं जुत सकती। मगर हमें तो अैसे औजार चाहिये, जो दो-तीन अेकड़वाले किसानोंके अनुकूल हो सकें।"

जाल्ने greatest good of the greatest number (ज्यादासे ज्यादा संख्याका ज्यादासे ज्यादा भला) के अुसूलका भी कुछ जिक्र किया था। अुसके बारेमें बापूने लिखा:

"I do not believe in the doctrine of the greatest good of the greatest number. It means in its nakedness that in order to achieve the supposed good of 51 percent the interest of 49 percent may be, or rather, should be sacrificed. It is a heartless doctrine and has done harm to humanity. The only real, dignified, human doctrine is the greatest good of all, and this can only be achieved by uttermost self-sacrifice."

"मैं अिस सिद्धान्तको नहीं मानता। अुसे नंगे रूपमें देखें तो अुसका अर्थ यह होता है कि ५१ फीसदीके मान लिये गये हितोंकी खातिर ४९ फीसदीके हितोंको बलिदान कर दिया जाय। यह सिद्धान्त निर्दय है, और मानवसमाजको अिससे बहुत हानि हुअी है। सबका ज्यादासे ज्यादा भला करना ही अेक सच्चा, गौरवपूर्ण और मानवतापूर्ण सिद्धान्त है। और यह सिद्धान्त तभी अमलमें आ सकता है, जब मनुष्य अपना स्वार्थ पूरी तरह छोड़नेको तैयार हो।"

मिस पिटर्सनको लिखे गये पत्रसे:

"'Be careful for nothing' is one of the verses that has ever remained with me and taken possession of

me. If God is, why need I care? He is the infallible caretaker. He is a foolish man who fusses although he is well protected."

"'किसी बातकी चिन्ता न करो', यह पंक्ति मुझे हमेशा याद रही है। अिसे मैं कभी भूलता ही नहीं। अगर अीश्वर है तो मुझे क्यों चिन्ता हो? हमारी अचूक सँभाल करनेवाला वह बैठा है। अुसे हमारी अितनी फिक्र होते हुअे भी जो चिन्ता करता है वह मूर्ख है।"

* * *

बम्बअीकी खबरोंमें खास यह है कि लालजी नारणजीकी रक्षा करनेसे अिनकार कर दिया गया और अुन्हें बम्बअी छोड़नेका हुक्म मिल गया, जब कि अेक मुसलमान गुण्डेको या गुण्डोंको अुभाड़नेवालेको यह हुक्म नहीं मिला। हाजिरीकी शर्त तोड़नेवाले कांग्रेसियोंको दो वर्षकी सजा और १००)से १०००) रुपये तक जुर्माना होता है, जब कि छुरे छिपाकर रखनेवाले भावी हत्यारों पर ५) रुपये जुर्माना होता है।"

* * *

अुस दिन मैं बापूसे मूर्तिपूजाके बारेमें पूछ रहा था। तुकारामका अेक अभंग अुद्धृत करके कीर्तिकरने अपनी Studies in Vedanta (वेदान्तका अध्ययन) पुस्तकमें हिन्दू भावनाका अच्छे ढंगसे वर्णन किया है। वह कहता है कि हिन्दू प्रतीककी पूजा नहीं करता, बल्कि अीश्वरकी पूजा करता है। और यह विचार अीसाअी संसर्ग या पाश्चात्य संसर्गसे पैदा नहीं हुआ था, बल्कि अंग्रेजोंके आनेसे पहले तुकारामने सुन्दर ढंगसे अिसे अभंगमें गूँथा है:

केला मातीचा पशुपति, परी मातीसी काम म्हणती,
शिवपूजा शिवासि पावे, माती मातीमाजी समावे,
केला पाषाणाचा विष्णु, परि पाषाण नव्हे विष्णु,
विष्णुपूजा विष्णुसि अर्पे, पाषाण रहे पाषाणरूपे,
केली काशाची जगदंबा, परि कासें नव्हे अम्बा,
पूजा अम्बेची अम्बेला घेणे, कांसे रहे कांसेपणे,
तैसे पूजिती आम्हा संत, पूजा घेतो भगवंत आम्ही किंकर।

मिट्टीका शंकर तो बना दिया, मगर अिससे मिट्टीको क्या हुआ? शिवकी पूजा शिवको मिलती है और मिट्टी बेचारी मिट्टीमें मिल जाती है। पत्थरका विष्णु बनाया, मगर पत्थर विष्णु नहीं है। विष्णुकी पूजा विष्णुके अर्पण होती है और पत्थर बेचारा पत्थर ही रहता है; काँसेकी जगदम्बा बनायी, मगर काँसा कोअी माता नहीं है। माताकी पूजा माता ले लेती है और काँसा काँसा ही

रहता है। अिसी तरह हम संतकी पूजा करते हैं, मगर वह पूजा भगवानको पहुँचती है और हम अुसके सेवक ही रहते हैं।

* * *

आज डाह्याभाअी मिलने आये थे, मगर बापू मिलने नहीं गये। बापू कहने लगे — "मान लो सरकारका जवाब आनेमें महीनाभर लग जाय। तो क्या मुझे महीनेभर तक मुलाकातें करते रहना चाहिये? नहीं, आजसे ही बन्द करना चाहिये।" वल्लभभाअीने और मैंने आग्रह किया, मगर बापू अटल रहे। खूबी यह हुअी कि अिसी वक्त दफ्तरमें सरकारका पत्र आ गया कि मीराबहन राजनीतिक काममें — सविनय कानून भंगके आन्दोलनमें — भाग लेती हैं, अिसलिअे वे आश्रमके अराजनैतिक आदमियोंमें नहीं शुमार हो सकतीं। जेलर वल्लभभाअीको वापस छोड़ने आये, तब वह पत्र दिखानेको लाये। बापू कहने लगे — "मैं नहीं गया यह समझदारी ही हुअी न? भगवानने जिन्दगीमें बहुत बार अिसी तरह बचा लिया है।"

५-६-'३२

आज बापूके बायें हाथकी कोहनी पर लकड़ीके पटिये बाँधे गये। बेचारे डॉक्टरने दर्जन बार कहा होगा कि आपको तकलीफ हो तो कहिये। मगर बापू क्यों कहने लगे? बापू कहने लगे — "यह तो नहीं कह सकता कि अिससे आराम होगा, मगर डॉक्टर कहते हैं तो प्रयोग कर लिया जाय।" डॉक्टर बातूनी हैं। देशके भिखमंगोंकी बात चली। डॉक्टर कहने लगे — "सशक्त मनुष्योंका भीख माँगना बन्द कर देना चाहिये, यह तो आप भी मानते हैं न गांधीजी?" बापू बोले — "जरूर।" डॉक्टरने कहा — "कानून भी बना देंगे?" बापूने कहा — "कानून जरूर बना दूँगा। मगर भाअी, मुझ जैसोंके लिअे भीख माँगनेकी छूट रख ली जायगी हाँ!" डॉक्टरने कहा — "लॉर्ड रेडिंगका अन्दाज है कि हम १६ लाख रुपये रोज अिन भिखारियों पर खर्च करते हैं — यानी दानमें देते हैं। क्या अिसका दूसरा अुपयोग नहीं हो सकता?" वल्लभभाअी — "हाँ, पर अिससे भी ज्यादा तो डाकुओं पर खर्च करते हैं।" डॉक्टर कहने लगे — "मैं समझा नहीं।" वल्लभभाअी — "क्या कहा? अजी, ये विलायतसे अितने सब डाकू ही आये हुअे हैं न! ये क्या लुटेरोंसे अच्छे कहे जायँगे?"

* * *

मताधिकार कमेटीकी रिपोर्ट पर तीन चार अखबारोंमें आलोचना आयी सो पढ़ी। लेकिन अछूतोंके अलग मताधिकारके बारेमें जैसी जोरदार आलोचना नटराजनने की है, वैसी और किसीने नहीं की। निर्वाचक मंडलकी भयंकरता तो

साअिमन कमीशनने भी देखी थी, यह कह कर वे लम्बा अुद्धरण देते हैं और सख्त विरोध जाहिर करते हैं।

*　　　　*　　　　*

जयकरकी भेजी हुअी कीर्तिकरकी Studies in Vedanta (वेदान्तका अध्ययन) बापू पढ़ रहे हैं। तत्त्वमसि वाले प्रकरणके शुरूमें हेगलका जो वाक्य दिया है, वह बताया :

"It is man's highest dignity that he should know himself to be a nullity."

"मनुष्य यह जान ले कि वह खुद शून्य है, तो यही अुसका सबसे बड़ा गौरव है।"

मैंने कहा — "यह तो शून्य हो जानेकी जो बात आप कहते हैं, वही है।" बापूका मौन था, अिसलिअे हँसे। अिसी लिअे अुन्होंने यह वाक्य बताया था।

*　　　　*　　　　*

रोलाँका लिखा हुआ विवेकानन्दका जीवन चरित्र पढ़नेसे बहुत-सी बातें जाननेको मिलती हैं। अमरीका जानेसे पहलेका अुनका भारतभ्रमण तो सभी जानते हैं, मगर दौरेके अन्तमें अुन्होंने दुखी, पीड़ित और दरिद्र भारत अपनी आँखोंसे देखा। अुन्होंने 'दरिद्रनारायण' के दर्शन किये और अपनेको अुसकी सेवाके लिअे समर्पण कर दिया।

"It was the misery under his eyes, the misery of India that filled his mind to the exclusion of every other thought. consumed him during sleepless nights. At Cape Commorin it caught and held him in its jaws. He dedicated his life to the unhappy masses. . . . He told them with pathetic passion of the imperious call of suffering India that forced him to go. It is now my firm conviction that it is futile to preach religion amongst them, without first trying to remove their poverty and their sufferings. It is for these reasons—to find more means for the salvation of the poor India, that I am now going to America."

"अपनी आँखोंसे देखी हुअी भारतमाताकी कंगालीका खयाल अुनके दिमागमें अितना भर गया कि अुसने और सब विचारोंको निकाल फेंका। अिस विचारने अुन्हें जलाया और अुनकी नींद हराम कर दी। कन्याकुमारीके वहाँ तो अिस चीजने अुन्हें पूरी तरह घेर लिया। अुन्होंने अपना जीवन

दुखियोंके अर्पण कर दिया। अुन्होंने आर्द्र हृदयसे लोगोंसे कहा कि पीड़ित भारतकी न टाली जा सकनेवाली पुकारने अुन्हें बाहर जानेको मजबूर कर दिया। अुन्होंने कहा : मुझे पक्का भरोसा हो गया है कि अिन भूखे आदमियोंके सामने धर्मकी बात करना फजूल है। अिनके दुःख और अिनकी गरीबी मिटानेकी कोशिश पहले करनी चाहिये। मैं अिसीके लिअे, गरीब भारतके अुद्धारके लिअे, ज्यादा साधन जुटाने अमरीका जा रहा हूँ।"

अिस बातका पता मुझे पहली बार चल रहा है। मैं तो आज तक यह समझता था कि विवेकानन्द सिर्फ धर्म प्रचारके लिअे वेदान्तकी सिंहगर्जना करने वहाँ गये थे। यह तो बड़ी विचित्र बात कहलायेगी कि हिन्दुस्तानमें धर्मप्रचारकी गुंजायश नहीं, अिसलिअे अमरीका जाकर धर्मका प्रचार किया जाय और वहाँसे दौलत लाकर गरीबी मिटायी जाय! यह नादानी मालूम होती है। मगर पुस्तकमें दो तीन जगह अैसा लगता है कि अुनका कुछ अैसा ही खयाल था। और अिस पुस्तकके यहाँ वाले सम्पादकोंने अिस बात पर कोअी टिप्पणी नहीं की। अिंग्लैण्ड जाकर वापस आने पर भी वे कहते हैं कि ३० करोड़ रुपये लाने थे लेकिन नहीं मिले।

"In that respect his journey had failed. The work had to be taken up again on a new basis. India was to be regenerated by India. Health was to come from within."

"अिस मामलेमें अुनका सफर व्यर्थ रहा। वह काम नये ढंगसे फिर शुरू करना था। हिन्दुस्तानका अुद्धार हिन्दुस्तानको ही करना था। स्वास्थ्य लाभ भीतर से ही होना था।"

ये रोलाँके शब्द हैं। यह आश्चर्य है कि विवेकानन्द जैसा प्रौढ़ पुरुष अितनी-सी बात न देख सका। और रोलाँ जैसा जबरदस्त विचारक अिस बातका अैतिहासिक सचाअीके तौर पर लिखकर सन्तोष न मानते हुअे अुसकी सफाअी देता है :

"And so in Vivekanand's eyes the task was a double one: to take to India the money and the goods acquired by western civilization and to take to the west the spiritual treasures of India. A loyal exchange. A fraternal and mutual help."

"अिस तरह विवेकानन्दकी दृष्टिसे यह काम दोहरा था : पश्चिमकी संस्कृतिने जो रुपया और सम्पत्ति अिकट्ठे किये हैं अुस कुछ हिन्दुस्तान लाया जाय और हिन्दुस्तानके आध्यात्मिक भंडारमेंसे कुछ पश्चिमको पहुँचाया जाय। बड़ा अीमानदारीका सौदा था। भाअीचारेवाली और आपसकी मदद।"

अिस तरह क्या धर्मका व्यापार हो सकता होगा? मैंने बापूका ध्यान अिन अंशोंकी तरफ खींचा तो वे कहने लगे — "अिस मामलेमें विवेकानन्द विवेक भूल गये थे और रोलाँ भी विवेक भूल गये हैं।"

६-६-'३२ आखिर लॉर्ड अर्विनका टॉरण्टोका पूरा भाषण 'लीडर' में आया। सारा पढ़नेमें पौन घंटा लगा। बापू कहने लगे — "अुसने अैसा भाषण नहीं किया, जिससे किसीको दुःख पहुँचे। मगर अब क्या करें? अेक भी अच्छे अंग्रेजकी समझमें यह नहीं आता कि ब्रिटिश राजने अिस देशको दरिद्र बना दिया है। वे अशोकके शब्दोंको अुद्धृत करके आशा रखते हैं कि आनेवाली सन्तानें अंग्रेजोंको भी अशोककी तरह दुआ देंगी। कहाँ अशोक और कहाँ अंग्रेजी राज! कहाँ कृष्ण और कहाँ कंस!"

भाषण बहुत मेहनतसे तैयार किया हुआ और विद्वत्तापूर्ण लगा। मगर बहुत ही गहरा और खतरनाक मालूम हुआ। कांग्रेस बहुतसे पक्षोंमेंसे अेक पक्ष है, अिस बातको जन्म देनेवाला अर्विन है अैसा मैं मानता हूँ, और अुसने यही बात अिस लेखमें प्रगट की है। कांग्रेसने अल्पमतवालोंके अनिवार्य हक मंजूर नहीं किये! गांधी अेक महान नेता है, परन्तु हिन्दू नेता है! हिन्दुओंसे वह चाहे जैसा त्याग करा सकता है, मगर हिन्दुओंके सिवा दूसरे अुसकी नहीं मानते! मुसलमान अैसे विदेशी हैं जो देशके हिन्दूधर्ममें नहीं समाये। अिस धर्मकी अैसी जीवन शक्ति है। वगैरा वगैरा। और शान्ति तथा व्यवस्था कायम करनेका काम अंग्रेजोंके सिर आ पड़ा!

७-६-'३२ आजके 'टाअिम्स' में अैसी खबर है कि बम्बअीमें दंगे अभी तक हो रहे हैं। 'दीक्षित' को पकड़नेमें ये लोग बहादुरी समझते हैं। मगर यह खोजनेकी जरूरत मालूम नहीं होती कि ये दंगे कौन करा रहा है, क्योंकि ये लोग जानते हैं कि ये कौन करा रहा है।

सर हेनरी लॉरेन्स और हॉटसनके 'बम्बअी भोज' के अवसर पर दिये गये भाषण आये हैं। लॉरेन्सने केनाडामें कैसा जहर फैलाया होगा, अिसका सबूत अिस भाषणसे मिलता है।

"He was prepared to hand Mr. Gandhi the halo of a Saint for his conduct at that time; but he would ask them to judge whether if a man was saint at one time he was necessarily a saint for all time. That reputation of sanctity

had been of wonderful values to him in his subsequent manoeures."

"अुस समयके गांधीजीके बरताव परसे मैं अुन्हें संतका पद देनेको तैयार था; मगर यह निर्णय करना आप पर छोड़ता हूँ कि अेक समय जो संत रहा हो, वह हमेशा ही संत रहता है या नहीं। अुनके सन्तपनकी प्रतिष्ठा अुनके बादके दावपेचोंमें अजीब ढंगसे काम आयी है।"

यह आदमी बोलनेमें जितना मीठा है, अुतना ही बगलमें छुरी रखकर घूमनेवाला दीखता है। बापू कहने लगे — "मुझे जेलमें बन्द करके मेरे बारेमें बोलनेमें अिनको क्या मजा आता होगा? 'मरे हुओंके बारेमें बादमें अच्छा ही कहना चाहिये' यह कहावत होने पर भी अैसा क्यों?" अिसके लिअे हॉटसनका भाषण अच्छा कहलायेगा। कांग्रेसके प्रभावकी अुसने सही कीमत लगायी है — यह ध्यान देने लायक है कि व्यापारियोंमें वैरभाव न होते हुअे भी धर्मादेमें रुपया देनेवाले लोग राजनीतिमें रुपया अुंड़ेल रहे हैं। जो स्त्री बाहर नहीं निकलती थी, वह बड़ेसे बड़ा त्याग करनेको निकल पड़ी है। यह बताता है कि कोअी न कोअी रास्ता निकालना चाहिये और झूठी रक्षाकी बात छोड़ कर व्यापारियोंको आर्थिक स्वतंत्रताका आश्वासन देना चाहिये।

कितना जबरदस्त प्रचार हो रहा है यह देखना हो तो सत्यमूर्तिका जो पत्र अभी तक बापूको नहीं मिला अुसे देखिये। 'टाअिम्स'में छप गया है। यह बतानेके लिअे कि कांग्रेसको प्रान्तीय स्वराजसे सन्तोष हो जायगा!

बापूने नटराजनको जो पत्र लिखा था, अुसके जवाबमें नटराजन लिखते हैं:

"I fully realize the force of your reasoning on the need for clear cut condemnation of what we feel to be grave evils, even though one's judgement may not be perfect or final. In fact, I had said as much in my letter. But I sometimes feel that I, the reformer, was hasty in the judgement of good men and had hurt their feelings, and my present temper is perhaps due to the desire to avoid that mistake."

"हम जिसे गंभीर बुराअी मानें अुसकी साफ तौर पर निन्दा करनी चाहिये, आपकी अिस दलीलका जोर मैं पूरी तरह समझता हूं। यह दूसरी बात है कि हमारा फैसला सम्पूर्ण या आखिरी न हो। अितना तो मैंने अपने पत्रमें कहा ही था। मगर अेक सुधारकके नाते मैंने बहुतसे अच्छे मनुष्योंके बारेमें राय बनानेमें जल्दी की है और अुनका जी दुखाया है। अिसलिअे अब अिस भूलसे बचनेकी अिच्छासे मेरा आजका स्वभाव बन गया दीखता है।"

पोलाककका खत आया। अुसमें लिखा है कि लन्दनके अखबार कहते हैं :

८–६–'३२ "You have taken up the sewing machine having been disillusioned with the slowness of the Charkha. I don't believe it for a moment. But it needs a prompt denial."

"चरखेकी धीमी गतिके कारण आपका भ्रम मिट गया है और अब आप सिंगरकी सीनेकी मशीनकी हिमायत करने लगे हैं। मैं तो यह बात जरा भी नहीं मानता, लेकिन आपको अिसका तुरन्त खण्डन तो करना ही चाहिये।"

बापूने पोलाकको लम्बा मजेदार पत्र लिखा। अुसमें पत्र दुबारा न पढ़ लेनेके परिणाम बयान किये। बताया कि अेक बार अेक पत्रमें No (नहीं) लिखना रह गया था, अुसका कैसा नतीजा हुआ। बाके बारेमें लिखा :

"She has aged considerably — in some respects perhaps more than I have. Spiritually she has made wonderful progress."

"वह बूढ़ी हो गयी है — कअी बातोंमें तो मुझसे भी ज्यादा। आध्यात्मिक दृष्टिसे अुसने जबरदस्त प्रगति की है।"

और फिर चरखेके बारेमें लिखा :

"It will take me many incarnations to become disillusioned with the slowness of the Charkha. The slowness of the Charkha is perhaps its most appealing part for me. But it has so many attractions for me that I can never get tired of it. It has a perennial interest for me. Its implications are growing on me and I make discoveries of its beauties almost from day to day. I am not using a sewing machine in its place or at all. I know how the mistake crept into the papers. My right elbow, having been used for turning the wheel, almost without a break for over ten years, began to give pain and the doctors here came to the conclusion that the pain was of the same type that tennis players often have after continuous use of the racquet. They therefore advised complete rest for the elbow. That might have meant cessation of spinning for some time, but for Prabhudas's invention. You know Prabhudas — Chhaganlal's son. His invention consists in turning the wheel with a pedal and thus freeing the right hand also for drawing the thread and practically doubling the output

of yarn. I forestalled the doctors by having this wheel brought to me, and before the peremptory order to stop all work with the right elbow came, I was master of the pedal Charkha called 'Magan Charkha' after the late Maganlal. A stupid reporter who knew nothing about the invention, when he heard that I was moving the wheel with the pedal came to the conclusion that I was working at the sewing machine and since there are pressmen good enough to imagine many things of me and impute all sorts of things to me, they improved upon the false report by deducing dis-illusionment about the Charkha from it. Now you have the whole story."

"चरखेकी धीमी गतिके कारण मेरा भ्रम दूर होनेके लिअे तो मुझे कअी जन्म लेने पड़ेंगे। चरखेकी धीमी गति ही मुझे अुसकी तरफ खींचनेवाली चीज है। मगर अुसमें तो मेरे लिअे और भी कअी अकर्षण हैं, जिनके कारण मुझे अुससे कभी अरुचि नहीं हो सकती। अुसकी नअी नअी खूबियाँ दिन दिन मेरे सामने आती जा रही हैं और अुसके गहरे अर्थ अधिकाधिक मेरी समझमें आते जा रहे हैं। अुसके बजाय मैं सीनेकी मशीन बिलकुल अिस्तेमाल नहीं कर रहा हूँ। मगर मैं जानता हूँ कि यह गपोड़ा किस तरह अुडा है। पिछले दस सालसे लगातार चरखा चलानेके कारण मेरे दायें हाथकी कोहनी पर दर्द होने लगा और अुस परसे डाक्टर अिस नतीजे पर पहुँचे कि टेनिस खेलनेवालोंको लगातार रेकेट काममें लेनेसे जैसा दर्द हो जाता है, वैसा ही मुझे हुआ है। अिसलिअे अुन्होंने मुझसे थोड़े समय तक तो कातना बन्द करवा ही दिया होता। परन्तु प्रभुदासके आविष्कारने मेरी लाज रख ली। प्रभुदासको तो तुम जानते हो न? छगनलालका लड़का। अुसका आविष्कार अैसा है कि चरखेका पहिया पैरसे चलाया जा सकता है और सूतका तार खींचनेके लिअे दोनों हाथ स्वतंत्र रहते हैं, और अिस तरह सूत भी लगभग दुगुना निकलता है। अिस किस्मका चरखा मँगवा कर मैंने डाक्टरोंको मात कर दिया। दायें हाथसे बिलकुल काम बन्द करनेका ताकीदी हुक्म मिलनेसे पहले ही मैं पेडलवाला चरखा, जो मगनलालके नामपर 'मगन चरखा' कहलाता है, चलाना सीख गया। अेक मूर्ख अखबारवालेने, जो अिस आविष्कारके बारेमें कुछ भी नहीं जानता था, जब सुना कि मैं पेडलसे पहिया चलाता हूँ, तो वह मान बैठा कि मैं सीनेकी मशीन चला रहा हूँ। और, अखबारवालोंमें अैसे भलेमानुस तो मौजूद ही हैं जो मेरे बारेमें कअी तरहकी कल्पनायें कर लेते हैं और तरह तरहकी बातोंसे मेरा सम्बन्ध जोड़ देते हैं। बस अुन्होंने अुस गलत रिपोर्टमें सुधार कर लिया और घोषणा कर दी कि चरखेके बारेमें मेरा भ्रम दूर हो गया है। सारी बात यह है।"

मीराबहनने यह खबर दी थी कि भाअी . . . की हालत खराब है और वह बहुत ही चिन्तामें रहता है। यह खबर फिर आयी। अुसे बापूने जो कुछ लिखा, वह हरअेक पैसेवालेके ध्यानमें रखने लायक है।

"तुम्हारी हालत कैसी भी हो, अितना याद रखना:

१. तुम जो रुपया कमाते हो, अुसे खो देनेका तुम्हें अधिकार है।

२. रुपया गँवा देनेमें शर्मकी बात नहीं है, गँवा देनेके बाद छिपानेमें शर्म है, पाप भी है।

३. हैसियतसे ज्यादा रहन सहन कभी नहीं रखना चाहिये। आज बंगलेमें रहते हुअे भी कल झोंपड़ीमें रहनेकी तैयारी रखनी चाहिये।

४. लेनदारको देने जितना रुपया हमारे पास न हो, तो अिसमें शर्मकी बात नहीं है।

५. जो आदमी अेक दमड़ी भी अपने पास न रखकर सब कुछ लेनदारको दे देता है, अुसने सब चुका दिया।

६. कर्ज लेकर व्यापार न करना यह पहली समझदारी है। यदि कर्ज लिया हो, तो जो कुछ पास हो वह देकर अुसमेंसे निकल जाना दूसरी समझदारी है।

आश्रममें जब जाना हो जा सकते हो।"

* * *

अुर्दूकी किताबोंमेंसे अंजुमने हिमायते अिस्लाम, लाहौरकी चौथी किताब बापूने पढ़नी शुरू की है। आज सोनेसे पहले तेल मलवाते समय कहने लगे — "अिस पुस्तकको पढ़कर दिन दिन अुदास होता जा रहा हूँ। अैसा लगता है कि मुसलमान बच्चोंको जन्मसे ही मारकाट और रक्तपात सिखाया जाता है। मुहम्मद पैगम्बरके जीवनमें लड़ाअी ही लड़ाअी! जो लिखनेवाला है वह पैगम्बरके जीवनका रहस्य समझा ही नहीं और अुसने अिस तरह वर्णन किया है कि वे लड़ाअी पर लड़ाअी करते रहते थे।"

* * *

आज दुर्गा, बाबा, आनंदी और रमण मिलने आये। मालूम हुआ दुर्गा आम लायी थी। और कुछ आम तो थे ही, यह जानकर बापू घबराये। कहने लगे — "परचूरे शास्त्रीको आम भेज दो। हम क्या यहाँ आम खाने आये हैं?"

आनंदी बापूसे न मिल सकी। मैंने बापूसे बात की। बापू बोले — "वह रोअी वैसे ही दूसरे भी बहुत रोयेंगे, और मुझे अिन लोगोंको वापस भेजनेमें क्या कम दुःख होता है? मगर क्या किया जाय?"

रातको त्रिवेदीजीकी भेजी हुअी दूरबीनसे तारे देखनेकी कोशिश की। कुछ कुछ दिखायी भी दिये। मगर मुझे तो सन्तोष नहीं हुआ।

आज बापूने बहुत पत्र लिखवाये, अिसलिअे दूरबीनसे देखनेका समय नहीं मिला। बापू कहने लगे — "रोज पाव घण्टा अिसके लिअे रखना चाहिये।"

९-६-'३२

जब परचूरे शास्त्री और रक्तपित्त विभागके दूसरे कैदियोंके लिअे ५० आम भेजे, तब बापूको सन्तोष हुआ।

जमनालालजीकी चिट्ठीमें बहुतसी बातें हैं — अुनके स्वास्थ्यकी, खानेपीनेकी और 'बी' वर्ग छोड़नेके कारणों वगैरा की। अुनकी निश्चिन्तता आश्चर्यजनक है। अुनका शुरूसे ही जो संयमी जीवन था, वह अब तपःपूत हो गया है। फिर तो कहना ही क्या? वे लिखते हैं कि विनोबाके साथसे जीवनभरका लाभ हुआ है। कितने ही आदमियोंको यह अनुभव मिला होगा। रामकृष्ण परमहंस या स्वामी विवेकानन्द कहते हैं न कि हम अेक भी आदमीको अुन्नत बनानेके लिअे जिये हों, तो हमारा जीवन सफल है।

* * *

. . . को लिखा — "तुम्हारे लिखे अनुसार तुम्हें बुरे विचार आते ही रहते हैं और अुनसे तुम परेशान होते ही रहते हो। अिसीका नाम अपना बनाया हुआ नरक है। अिसमें तुम्हारे दोनों सवालोंका जवाब दे दिया है। यह भी कह दिया गया कि मैंने किस परसे लिखा है। यह भी कह दिया गया कि यह नरक कैसा जाना। यह आसानीसे समझमें आ जाना चाहिये कि अिसका ज्ञान हो जाय, तो अिस नरकसे किस तरह निकला जा सकता है। बुरे विचार आयें तो बादमें अुन्हींका सोच नहीं करते रहना चाहिये। मगर यही मानकर आगे बढ़ना चाहिये कि वे आये ही नहीं। अिन्सान चोट खा जाता है, तो यह देखने नहीं बैठता कि किससे चोट लगी। जो आदमी अिस विचारमें वहीं बैठा रहे कि अिसका परिणाम खराब तो नहीं होगा, वह आदमी आगे नहीं बढ़ सकता। मगर चोट खायी हो तो अुसकी परवाह न करके आगे ही बढ़ता चला जाय, तो वह खायी हुअी चोटको भूल जाता है। आगे बढ़ते रहनेसे शक्ति बढ़ती रहती है। और जैसे जैसे शक्ति बढ़ती जाती है, वैसे वैसे चोट भी कम लगती है।"

आज बापू केम्पके कैदी भाअियोंसे और सर्कलमेंसे आनेवालोंसे मिले। अध्यापक जेठालाल गांधी और बिन्दु माधव भी थे। डाकखानेके पत्र जला दिये जाते हैं, अिस कार्यक्रम पर बातें हुअीं। बापू कहने लगे — "यह फजूल और विनाशक कार्य है और अिसमें हिंसा है। यह सफ्रेजेटकी मूर्खता भरी नकल है।" और बहुतसी चर्चायें कीं।

१०-६-'३२

छगनलाल जोशीको लिखा गया पत्र महत्वका था। आश्रमके फेरबदलका खास जिक्र था: "आश्रममें मजदूरीका ज्यादातर काम हाथोंसे होता है। थोड़े नौकर भी हैं। मगर अैसे ही रहे हैं जो आश्रमके नियमोंका ठीक ठीक पालन करते हैं, और अुनके साथ आश्रमवासी काम करते हैं। धीरे धीरे सारी मजदूरी पर काबू पाया जा रहा है। बच्चे भी भरसक मदद देते हैं। नये आनेवालोंको पहले प्रार्थना और भजन वगैरा सिखानेका काम रहता है। अितना कर लेनेके बाद ही जिसे अंग्रेजी पढ़ना हो वह सीख सकता है। यज्ञकी कताअी घण्टा भर सभी साथ साथ करते हैं। २० नम्बरसे नीचेका सूत यज्ञके आँकड़ेमें नहीं गिना जाता। और जितना काता गया हो वह सारा अुसी दिन दरवाजे पर दे देना चाहिये। मैंने यह सुझाया है कि सब अनुकूल हो जायँ, तो यह सूत अपने अपने लिअे कोअी खरीद ही न सके। मेरा सदासे यह खयाल रहा है कि जब तक अिस तरह खरीदनेकी छूट है, तब तक यज्ञ अधूरा है। पिछले सप्ताहसे यह तय हुआ है कि मेहनत किसी भी तरहकी हो, अुसका अेक आना फी घण्टेके हिसाबसे जमाखर्च रखा जाय। मगर यह निश्चय नहीं हुआ कि अुसके अनुसार चुकाया भी जाय। फिलहालके लिअे नारणदासको मेरी सूचना यह थी कि अुसके गले अुतर जाय तो अिस प्रकार हिसाबबही रखना शुरू कर दे। यह हिसाबबही वही मामूली बहीखाता। अिसके अलावा, अभी तो यह सिर्फ परिणाम देखनेके लिअे ही है। अिससे बहुतसी बातोंका पता चल जायगा और परिणाम यह हो सकता है कि हम सबकी अेक-सी मजदूरी तक पहुँच जायँ। यानी कातने, बुनने, पाखाने साफ करने या और किसी भी सामाजिक सेवाके अेक घण्टेका अेक आना गिना जाय। तुम्हें याद होगा कि अिसकी चर्चा तो हमने खूब की है। आजकल नारणदासको मैं बहुत लिख रहा हूँ। अुसमें अिस विषयकी फिर चर्चा की है। मुझे अैसा लगता है कि नारणदासकी अिन विचारोंको अपनानेकी शक्ति अब बढ़ गयी है, अिसलिअे अिस सूचनाका अुसने स्वागत किया है। अिस बहीखातेको लिखनेमें बहुत समय लगता हो, अैसी कोअी बात नहीं। और आजकल जो प्रयोग है अुसे अन्तमें अमलमें लानेकी स्थितिमें सब पहुँच जायँ, तो हिसाब रखनेका काम अितना आसान हो जायगा कि मामूली गुजराती जाननेवाला भी रख सकता है। अिस तरहका हिसाब रखनेकी सफलताका आधार समाज पर है, क्योंकि जो आदमी अपने कामके घण्टे लिखे या लिखवाये, अुसने अगर काममें चोरी की होगी या चाहे जिस तरहका काम किया होगा, तो जाहिर है कि हिसाब गलत निकलेगा। यानी खोटे और खरे रुपये मिल जाने जैसी बात होगी। बच्चोंकी शिक्षाके बारेमें भी मैं यहांसे काफी लिख रहा हूँ। कहा नहीं जा सकता कि अुसमेंसे कितना आश्रमवासी अपना सकेंगे। मगर वह सब लिखने

बैठूँ, तो बहुत वक्त चाहिये। और अुतना वक्त दिया नहीं जा सकता। अिस मामलेमें तो धीरज ही रखना। हम सबको यह कीमती अवसर मिला है। अिसका हम जैसा सूझे वैसा सदुपयोग कर लें। और सबसे अच्छा अुपयोग भीतरी विचार करनेकी शक्ति पैदा करना है। बहुत बार हम विचार शून्य रहते हैं, और अिसलिअे सिर्फ पढ़ना या बातचीत करना ही अच्छा लगता है। हममेंसे कुछ लोग विचार भी करते हैं, मगर सिर्फ हवाअी किले बनानेके। दर असल जैसे पढ़ने वगैराकी कला है, वैसे ही विचारनेकी भी कला है। निश्चित समयमें ही निश्चित विचार आयें; और जैसे निकम्मी पुस्तकें न पढ़ें, वैसे ही निकम्मे विचार भी न आने दें। अैसा करनेसे जो शक्ति पैदा होती है और जो शक्ति अिकट्ठी होती है, अुसका अन्दाज नहीं लगाया जा सकता। मैंने हर कैदके समय यह अनुभव किया है कि अिस तरहसे विचार करना सीखनेका वह बढ़िया वक्त है। अिसलिअे तुम सबको मेरी सलाह है कि गहरे विचार करनेकी कला साध लो और अैसा करोगे तो मुझसे पूछनेको भी ज्यादा न रहेगा। लेकिन अिसका कोअी अुलटा अर्थ न करे। मुझसे पूछनेकी मैं मनाही नहीं कर रहा हूँ, मगर परावलम्बीपनसे बचाना चाहता हूँ। वैसे तो मैं बैठा ही हूँ। और जिस बात पर मैंने औरोंसे ज्यादा विचार किया है या अनुभव किया है, अुससे लाभ अुठा सकें तो अुठा लेनेका तुम्हें अधिकार है, और तुम्हारा धर्म भी है।"

'लीडर'में दो बढ़िया लेख थे। अेक नये 'पायोनियर'के स्वामित्व पर और दूसरा काश्मीरके अलग मताधिकार पर। 'पायोनियर'में तो मानो अंग्रेज-मुसलमान षड्यंत्रकी बू आ रही है। हाला कि श्रीवास्तव और कुछ दूसरे हिन्दू जमींदार भी अुसमें हैं, मगर अंग्रेज और मुसलमान अिन लोगोंकी हिमायत करनेका वचन दें और बदलेमें ये लोग अुन्हें खास प्रतिनिधित्व देनेका वचन दें, तो कोअी आश्चर्य नहीं। बापू कहने लगे — "अिस मताधिकार पर यह जो लिखेगा, अुस परसे पता लग जायगा।"

वल्लभभाअी — "यह अँगूठे परसे कोहनी तक पहुँचा और कोहनी परसे कंधे पर चढ़ेगा। अब रहने दीजिये न, बहुत कात लिया।"

११-६-'३२

बापू — "किसी न किसी दिन तो किसीके कंधे पर चढ़ना ही पड़ेगा न?"

वल्लभभाअी — "नहीं नहीं, अैसा नहीं हो सकता। देशको मझधारमें छोड़कर आप कैसे जा सकते हैं। अेक दफा जहाजको किनारे पहुँचा दीजिये; फिर जहाँ जाना हो चले जायँ। मैं साथ चलूँगा।"

* *

मेजरके साथ 'सी' वाले भाअियोंको लिखनेकी सामग्री देनेके लिअे बड़ी बहस हुअी। मेजर माना ही नहीं। वह अिस बात पर डटा ही रहा कि चूँकि अुसका दुरुपयोग होता है, अिसलिअे मैं किसीको भी नहीं दे सकता। बापूने कहा — "और सब जगह देते हैं।" मेजर कहने लगा — "तो वहाँ भी बन्द हो जाना चाहिये।" बापूको बड़ा बुरा लगा।

मेजरको कल जो बात कही थी, अुसके बारेमें डोअीलको पत्र लिखवाया।

१२-६-'३२

आजके अखबारमें सबसे बढ़िया खबर फादर अेल्विनका बयान है। कल 'टाअिम्स'में अुनके बारेमें गप्प आयी थी, तब भी अुसे किसीने माना तो था ही नहीं। और आज तो अेक तरहसे अच्छा लग रहा है कि यह गप्प आयी, जिससे अेल्विनको कांग्रेसके बारेमें अिस ढंगसे लिखनेका मौका मिला।

नटराजनने दस्तूर मैजिस्ट्रेटको नाअिटहुड देनेके विरुद्ध अच्छा लिखा है। और दोराब ताताकी अच्छी कदर की है। श्रीमती ताताके प्रति अुनका प्रेम, ठेठ आखिरी दिनोंमें अुनका जीवनचरित लिखवाना, और लेडी अेबरडीनका दोनोंके प्रेमकी शाहजहाँ और मुमताजके साथ तुलना करना — यह सब बहुत बढ़िया है। हमारी पाठ्य पुस्तकोंमें बहुतसे पाठ आते हैं, मगर सर दोराब ताता जैसे और जमशेदजी ताता जैसे लोगोंके पाठ क्यों नहीं आते?

भारतीको अुसके पत्रका अुत्तर दिया:

"कितने अच्छे अक्षरोंमें लिखा हुआ तेरा पत्र मिला है! अैसे पत्रोंसे मैं थकता ही नहीं।

१३-६-'३२

"तुम भाअीबहन वज्र जैसे मजबूत और कठोर बन जाओ, सरदी गरमी बर्दाश्त कर लो, यह तो मुझे पसन्द है। मगर अिस तरहका प्रयोग तुझ पर अेकदम शिमलाकी धूपमें मुझसे नहीं हो सकता। अिस तरहकी सहनशक्तिकी तालीम ढंगसे और धीरे धीरे ली जाय, तो ही सफल होती है। यह मानना बड़ी भूल है कि हमेशा नाज़ुक रहनेवाले समय पड़ने पर कठोर बन सकते हैं। यह कुदरतके खिलाफ जानेकी बात है। अिस तरहकी भूलके सैकड़ों अुदाहरण मेरी आँखोंके सामने हैं।

"साहित्य पढ़ना मुझे अच्छा जरूर लगता है। पाठशालाके जीवनमें पाठशालाकी पढ़ाअीसे ज्यादा कुछ नहीं कर सका। अुसके बाद अेकके पीछे अेक अैसे काम आते गये कि थोड़ा ही पढ़ना हो सका। जो कुछ हुआ वह जेलमें हुआ। लेकिन मैं यह नहीं समझता कि अिससे मैंने कुछ खोया है।

सोचनेको बहुत मिला। और अनुभवकी पाठशालाका अभ्यास किताबें पढ़नेसे ज्यादा अुपयोगी होता है, अिसमें शक नहीं।

"'कलाके लिअे कला' साधनेका दावा करनेवाले भी असलमें वैसा नहीं कर सकते। कलाका जीवनमें स्थान है। कला किसे कहा जाय, यह अलग सवाल है। मगर हम सबको जो रास्ता तय करना है, अुसमें कला, साहित्य वगैरा सिर्फ साधन हैं। वे ही जब साध्य बन जाते हैं, तब बन्धन बनकर मनुष्यको गिराते हैं।

"अीश्वरका अर्थ है 'सत्य'। कुछ ही वर्षोंसे मैं यह कहनेके बजाय कि अीश्वर सत्य है यह कहने लगा हूँ कि सत्य अीश्वर है। यही वाक्य मुझे ज्यादा न्यायसंगत लगता है। सत्यके सिवा अिस दुनियामें कुछ नहीं है।

"यहाँ सत्यकी व्यापक व्याख्या करनी है। यह सत्य चेतनमय है। यह सत्यरूपी अीश्वर और अुसका कानून अलग अलग नहीं है, बल्कि अेक ही है, और अिसलिअे वह भी चेतनमय है। अिसलिअे यह कहना कि यह जगत सत्यमय है या नियममय है अेक ही बात है। अिस सत्यमें अनन्त शक्ति भरी हुअी है। गीताके दसवें अध्यायके अनुसार कहें, तो अुसके अेक अंशसे संसार टिका हुआ है। अिसलिअे जहाँ जहाँ अीश्वर शब्द आता है, वहाँ वहाँ सत्य शब्द अिस्तेमाल करके अर्थ लगायें, तो अीश्वरके बारेमें मेरी राय समझमें आ सकती है।

"अगर अीश्वर है — भले हम अुसे सत्यके रूपमें ही जानें — तो अुसकी आराधना करना हमारा धर्म हो जाता है। हम जिसकी आराधना करते हैं वैसे ही बन जाते हैं। प्रार्थनाका अर्थ अिससे ज्यादा नहीं है। मगर अिस अर्थमें सब कुछ समझमें आ जाता है न ? सत्य हमारे हृदयमें बसता है। मगर हमें अुसका भान या पूरा भान नहीं है। वह हार्दिक प्रार्थनाके जरिये होता है। . . .

"क्या मेरे अक्षर पढ़नेमें मुश्किल होती है ? जिस लिफाफेमें यह पत्र रखा है, वह सरदारका बनाया हुआ है। जितने निकम्मे कोरे कागज हाथ लगते हैं, अुनका अिसी तरह अुपयोग करनेमें वे अपना बहुतसा वक्त बिताते हैं।

बापूके आशीर्वाद"

यह पत्र जिस खतका जवाब है अुसमें अुठाये हुअे दो मुख्य प्रश्न भारतीके पत्रसे ही लें :

"जिसे हम संकुचित अर्थमें साहित्य कहते हैं, क्या अुसे पढ़नेका शौक आपको है या था ? यह शंकास्पद माना जाता है कि जीवनमें साहित्य, कला और सौन्दर्य (जिसमें अिन्द्रियोंका आनन्द प्रधान हो) की कितनी गुंजायश है — हमारे देशके मौजूदा हालातको अलग रखकर सोचने पर भी। कितने ही लोग कहते हैं कि अूँचीसे अूँची कला जीवनके बड़े प्रश्नोंसे अलग नहीं रह सकती। यह होगा, मगर अैसे बहुत होते हैं जो कलाके पात्रोंसे रंग, सुगंध और

रूपका आनंद लेकर अुसीसे कृतकृत्य होते हैं। अुन्हें अिससे परे और किसी तत्वका भान नहीं होता। क्या आप मानते हैं कि कलाकी कलाके लिअे ही आराधना की जा सकती है? और की जा सकती हो, तो क्या वह वांछनीय है?

"आपकी रचनाओंमें अीश्वरका नाम बहुत बार आता है और मुझे अैसा लगा है कि प्रार्थनाका अिस जीवनमें बहुत बड़ा हाथ रहता है। अिस शब्दसे आपके मनमें क्या कल्पना होती है? अीश्वर शक्ति है या अिस दृश्य जगतसे परे कोअी तत्व है या क्या है! और आप अीश्वरको मानते हैं तो किस लिअे? श्रद्धा या ज्ञान या भक्ति या जीवनमें किसी अैसे ही ध्येयकी जरूरतके लिअे?"

बापूका जवाब बापूकी सारगर्भित मिताक्षरी शैलीका नमूना है। भारतीके अेक अेक सवालका अुसमें जवाब आ जाता है। मगर अुसमें बहुत कुछ अध्याहार भी रह गया है: यह प्रश्न तो खड़ा ही है कि कला किसे कहें। मगर यह भी तो सवाल है कि सौन्दर्य किसे कहा जाय? अनन्त आकाशके बेशुमार सूरज, चाँद और तारे हमारे हाथमें आ नहीं सकते; निरन्तर ज्ञान-गंभीरतामें अुमड़ता हुआ समुद्र हाथमें तो आता ही नहीं, मगर हमें यह भान कराता है कि अिस विश्वमें अुसकी अेक बूँदके भी करोड़वें भाग जैसे अेक परमाणुके बराबर हम हैं। बर्फ़से ढँके हुअे भव्य पहाड़ों और नदियों—सबमें अटूट सौन्दर्य भरा है। यह सौन्दर्य मूढ़ मनुष्यके सिवा औरों पर तो अेक खास तरहका अुन्नत बनानेवाला असर डाले बिना रहता नहीं। यह सौन्दर्य अैसा असर अिसलिअे डालता है कि वह परिग्रह और अुपभोगके क्षुद्र भावोंसे अबाधित है। कैण्ट कहता है न:

"Beauty gives us pleasure from the mere contemplation thereof, apart from the vulgar ideas of possession and use."

"परिग्रह और अुपभोगके स्थूल विचारोंको छोड़कर, सौन्दर्यके सिर्फ़ चिन्तनसे हमें आनन्द मिलता है।"

अिसी लिअे वह शान्तिप्रद है, अुन्नतिप्रद है। यही बात कला और कलाके पात्रोंकी है। कला सिर्फ़ आत्माकी कला है, आत्माकी परछाअीं है। अिसलिअे जैसी आत्मा वैसी कला। आत्माका जैसा रूप, रस और गंध, वैसा ही कलाका भी। रूप, रस और गंध भी सापेक्ष हैं, निरपेक्ष नहीं हैं। केवल रूप, रस और गंधसे कृतार्थ होनेवाले पीटर बेल तो बहुत होंगे, हैं, मगर अुसमें कृतार्थता नहीं है। कलाके लिअे कलाकी आराधना न कलाकार कर सकता है और न कलाको भोगनेवाला कर सकता है। कलाकारकी आत्माकी परछाअीं कला पर पड़ेगी; और कलाको भोगनेवाला तो जैसी कला होगी, अुसीके अनुसार चढ़ेगा या गिरेगा।

बापू सुबह ९ बजे और शामको ६ बजे रोज सोडा और नीबू पीते हैं। नीबू गरमीमें महँगे हो जाते हैं, अिसलिअे बापूने वल्लभभाअीको अिमली सुझायी। अिमलीके झाड़ तो जेलमें ही बहुत हैं। वल्लभभाअीने अिस बातको हँसीमें अुड़ा दिया : "अिमलीके पानीसे हड्डियाँ गल जाती हैं, बादी हो जाती है।" बापूने पूछा — "तो जमनालालजी पीते हैं सो?" वल्लभभाअी — "जमनालालजीकी हड्डियों तक पहुँचनेका अिमलीके लिअे रास्ता ही नहीं।" बापू — "मगर अेक समय मैंने खूब अिमली खायी है।" वल्लभभाअी — "अुस वक्त आप पत्थर भी हजम कर सकते थे। आज वह कैसे हो सकता है?"

१४-६-'३२

* * *

वल्लभभाअी अब लिफाफे बनानेमें होशियार होते जा रहे हैं। रोज कुछ न कुछ नयी युक्ति सूझती है और कागजके अेक अेक टुकड़े पर अुनकी नजर रहती है। बापू कहने लगे — "बेकार कागजों पर आपका ध्यान अितना लगा रहता है, जितना अुस बिल्लीका छिपकली पर रहता है।"

* * *

आज आय. जी. पी. डोअील आ गये। बापूने 'सी' वर्गवालोंको कागज और लिखनेका सामान देनेके लिअे जो पत्र लिखा था, अुसी सिलसिलेमें आये थे। अिस आदमीके विवेककी हद नहीं थी। हम सबसे हाथ मिलाया। बापूसे कहने लगा — "कामकी ज्यादतीके मारे ही न आ सका। आपकी की हुअी माँग बिलकुल वाजिब मालूम होती है और मैं मेजर भण्डारीसे कह दूँगा। मगर अिसके लिअे सब पर लागू होनेवाले हुक्म न माँगियेगा। यह समझमें आ सकता है कि योग्य मनुष्योंको यह सामान दिया जाना चाहिये।" वल्लभभाअीसे कहने लगा — "आपकी लड़कीने पत्र लिखा है, अुसके जवाबमें बेलगाँवसे अच्छी अच्छी बहनोंको यहाँ बुला लेनेका अिन्तजाम कर रहा हूँ। अुसे लिख दीजिये कि चिन्ता न करे।" आदमी बड़ा मीठा मालूम हुआ। जेलर पूछने लगा — "पहली ही बार मिले हैं क्या?" मैंने कहा — "हाँ, मजेका आदमी लगता है।" जेलर — "आपको अनुभव नहीं है। बोलनेमें ही मीठा है।" बापूका तो अेक भी काम अुसने नहीं टाला, बल्कि यह कह सकते हैं कि बहुत से तो बड़ी तेजीके साथ किये हैं। मगर कहाँ हमारा तजरबा और कहाँ अुसके मातहतोंका!

डोअीलने अेक बात कही : मेरा यह सिद्धान्त है कि अिसका विचार न किया जाय कि कैदी बाहर क्या करके आया है, नहीं तो हम सज्जनता रख ही नहीं सकते। मगर क्या यह बात ठीक है? कोअी आदमी झगड़ालू स्वभावका हो, हत्यायें करके ही आया हो, तो भी अुसे दूसरोंके साथ ही रख दिया

जाय ? शायद यह ठीक हो। अिन्सानको दरवाजेके भीतर ले आये कि फिर अुसके साथका बर्ताव अुसके अन्दरके व्यवहार और रहनसहन पर निर्भर करता है। अुसके किये हुअे अपराध पर क्यों आधार रखा जाय ? फिर भी काली टोपी और पीली टोपी वगैरा तो अिन लोगोंको अलग कर ही देती हैं।

*　　　　*　　　　*

बिड़लाकी सिक्के पर लिखी गयी पुस्तक पढ़ते पढ़ते बापू कहने लगे — "बड़ी चोरी चोरी नहीं, बड़ी लूट लूट नहीं, बड़े पैमाने पर हत्याकाण्ड धर्मयुद्ध। देशका सोना लूटा, सुख लूटा, धन खींचे लिये जा रहे हैं। अिससे सन्तोष न हुआ, तो सिक्कोंके विनिमयके बट्टेका जाल रचा। अुससे भी तसल्ली नहीं हुअी, तो रिज़र्व लूट लिया। दुनियामें अेक भी देश अिस तरह लूटा और मारा नहीं गया होगा। मुहम्मद गजनवी अेक बार लूट कर चला गया। मुगलोंने लूटा होगा, तो वह देशमें ही रहा। मगर यह लूट!!"

१५-६-'३२

डोअीलके आ जाने और अुसके तुरत माँग मंजूर कर लेनेसे मेजरको कुछ आश्चर्य हुआ। लेकिन डोअीलने जो मुद्दामाल बताया था और जिसके लिअे हमने अन्दाज लगाया था और मान लिया था कि मेजर अुसे दे आये होंगे, अुसके लिअे अुसकी बातचीतसे पता चला कि वह मेजर नहीं दे आये थे, बल्कि वह दूसरे ही किसी जेलका था। बापू कहने लगे — "देखो, हमने अिस आदमीके साथ फिर अन्याय किया है। किसी आदमीके बारेमें तुरत फैसला देने लग जाना खतरनाक बात है।"

. . . जो समय समय पर अुपयोगी होने पर भी व्यर्थसे और कुतूहलसे पैदा होनेवाले सवाल पूछता है, अुसे बापूने पत्रमें लिखा:

"तुम्हारी तरह दूसरोंने भी मान रखा है कि मैं संयमी और ब्रह्मचारी जीवन बिताता हूँ, अिसलिअे मुझे तो दीर्घायु होना ही चाहिये। सच पूछा जाय तो मेरे बारेमें यह खयाल ठीक नहीं है, या यों कहो कि दूसरोंके साथ तुलना करनेसे ही थोड़ा बहुत ठीक माना जा सकता है। लगभग ३० वर्षकी अुम्र तक तो मैंने विषयसेवन किया ही था। यह भी दावा नहीं किया जा सकता कि खानेपीनेकी चीजोंका संयम था। सिर्फ स्वादके लिअे मैं कअी चीजें खाता था। फिर धीरे धीरे जीवनप्रवाह संयमकी तरफ चला। अिसका भी यह अर्थ तो नहीं किया जा सकता कि मैं जितेन्द्रिय बन गया। अितना ही दावा कर सकता हूँ कि अिन्द्रियोंको बसमें रखना सीख गया। अिस तरह विषयों वगैराका जो असर शरीर पर होना था, वह तो हो ही चुका था। अुसमें जितना संयम मिल गया, अुतना वह असर कम हो गया। मगर दूसरे समकालीन, जो अितना भी संयम

न रखते हों वे मेरे थोड़े बहुत संयमसे मोहित हो सकते हैं, और सम्भव है, अुसके कारण मुझमें जो कमजोरियाँ हों, वे अुनकी नजरमें न आयें।"

जेलकी तरफसे मिलनेवाली विशेष सुविधायें — किसी भी हेतुसे — आपने न छोड़ी हों, तो अुसका असर दूसरों पर अच्छा नहीं पड़ता। पहलेके अेक पत्रके जवाबमें अैसा लिखा गया था। अुस सिलसिलेमें लिखा — "मैं कैदीके नाते जो सुविधायें भोग रहा हूँ, वे वर्गीकरणके कारण नहीं हैं। मैं अपराधी कैदियोंमें नहीं गिना जाता। अैसे कैदियोंको पहलेसे ही बहुत सी सहूलियतें होती हैं। मगर यह मेरे कामका कोअी बचाव नहीं है। मेरे-जैसे कैदियोंको तो सरकार कुछ खास सुविधायें देती है। हाँ, अिन सुविधाओंका अुपयोग करना न करना कैदी पर ही निर्भर रहता है। अिसलिअे तुम जो लिख रहे हो, अुस तरहकी गलतफहमी होना बिलकुल स्वाभाविक है। अिस गलतफहमीका जोखम अुठाकर भी मैं जिन सुविधाओंको काममें ले रहा हूँ, अुनका अुपयोग करते रहना ही मुझे सार्वजनिक दृष्टिसे अुचित लगता है। मगर अिस विचारश्रेणीकी सफाअी देनेकी बात ही न होनी चाहिये। अिसकी योग्यता स्वयंसिद्ध मालूम होनी चाहिये। अैसा न हो तो भी जब तक मैं ठीक समझता हूँ, तब तक मुझे अुसपर अटल रहना चाहिये। यह नीति नेता पर लागू होती है। नेता जिस रास्तेपर चलता हो, अुसका हमेशा कारण नहीं बता सकता। मगर जिस मार्गको वह ठीक समझता हो अुसे किसीकी सुनकर छोड़ दे, तो वह नेताकी पदवीके लायक नहीं है। अैसे नेताओंने अपने अधिकारमें रहनेवालेके जहाज चट्टानपर चढ़ा दिये हैं। अिसलिअे मुझ जैसोंको तुम्हारे जैसे, जहाँ जहाँ शंका हो, वहाँ वहाँ सावधान जरूर कर दें। मगर अिस चेतावनीके बाद भी नेता अपना रास्ता न छोड़े तो श्रद्धाके साथ यह मान लेना चाहिये कि वही रास्ता ठीक है। अैसा करने पर कितनी ही बार श्रद्धा गलत निकलती है। मगर जीवनमें समाजकी व्यवस्थाका संचालन और किसी तरहसे हो ही नहीं सकता। अभी तो मेरा अैसा खयाल है कि मुझे जब महसूस होगा कि अमुक या अेक भी सुविधा नहीं लेनी है, तब अुसे छोड़ देनेकी मुझमें शक्ति है। मैंने दक्षिण अफ्रीकामें सिर्फ मामूली कैदीकी तरह रहना काफी समय तक सीखा है।

"कृष्णदासके बारेमें तुमने जो कुछ सुना है वह कहाँसे सुना? यह बात तो बिलकुल गलत ही है। कृष्णदासको हरगिज नहीं निकाला गया। कितने ही कारणोंसे अुन्होंने छुट्टी माँगी थी। मगर छुट्टी ले लेनेपर भी अुनका सम्बन्ध तो बना ही हुआ है। किसीकी प्रेरणासे अैसा कदम अुठाना मेरे स्वभावके विरुद्ध है। कृष्णदासके बारेमें किसीने मुझे अिस प्रकार की प्रेरणा की ही नहीं थी। मगर मैं अिस बातकी जड़ जानना चाहता हूँ। अिसलिअे बताने-जैसी हो तो बताना।"

गोरखपुरसे देवदासकी बीमारीका तार आया। अब अच्छा है। बुखार मोतीझिराका नहीं है, अैसा हनुमानप्रसादने तारसे बताया है।

१६-६-'३२ बुखारका हमें तो पता नहीं था। बापूने बुखारके बारेमें ज्यादा समाचार मँगानेके लिअे तार भेजा। और देवदासको पत्र लिखा:

"चि० देवदास,

"मुझे डर तो था ही। परसों कुछ अैसा लगा भी था कि कहीं न कहींसे अैसे समाचार आने चाहियें। अितनेमें ही कल तार आ गया। वल्लभभाअीसे तुरत पूछा: 'यह तार किस बारेमें है?' तो वह तेरी बीमारीका निकला। गोरखपुरमें तू हो और बुखारसे बच जाय, यह असम्भव था। मगर मैं मान लेता हूँ कि यह पत्र तुझे मिलेगा, तब तक तेरा बुखार छूट जायगा। मैं मानता रहा हूँ कि तेरे स्वभावके अनुसार अैसे समय तेरे पास मित्रमंडली और सगेसम्बन्धी घेर कर बैठे हों तो तुझे अच्छा लगे। तू अिसका हकदार है, क्योंकि तूने बहुतोंकी सेवा की है। मगर मैं ठहरा पत्थरके दिलवाला। अिसलिअे मन नहीं मानता कि पश्चिमसे दौड़ कर वहाँ जानेके लिअे किसीको प्रेरणा करूँ। अैसा हो तो मनको दबाअूँगा। तत्वज्ञान तेरे पर न आजमाअूँ तो किस पर आजमाअूँ? मैं चाहता हूँ कि तू अिसे समझे, सहन करे और खुश रहे। तेरे सगे सम्बन्धी, मित्र, और माँबाप सब कुछ अीश्वर है, दूसरे तो नामके हैं। वे खुद अपंग हैं। अुनका सोचा हुआ थोड़े ही होता है। अिस फूटे बादामका आसरा लेनेके बजाय सर्वव्यापक शक्तिका आश्रय लेना। अुसकी मरजी होगी वैसी मदद वह तेरे लिअे भेज देगा। मेरा विश्वास तो यह है कि तू जहाँ होगा वहाँ अपने पड़ोसीको अपनी तरफ खींच लेगा। जेलमें दूसरा अनुभव होनेका कारण नहीं है।

"अितना लिखनेके बाद कहता हूँ कि आश्रममेंसे किसीकी हाजरी तू जरूरी समझता हो, तो तार दे देना। मगर मुझे यही आशा है कि अिस पत्रके मिलने तक तेरी बीमारी हवा हो गयी होगी। हम सबके आशीर्वाद तो तेरी जेबमें ही हैं।"

आज श्रीमती नायडूका अेक सुन्दर पत्र आया। अुसमें वे अपनी बढ़िया रसोअीकी बात कहती हैं:

"Samples of wonderful cookery: toffee made of tamarind pulp and jaggery, khichri cooked in a broth of drumsticks and other delicacies purely original and spontaneous in inspiration!"

"मेरी अजीब रसोअीके नमूने : अिमली और गुड़की टॉफी, सेंजनेकी फलियोंके सागके साथ बनायी हुअी खिचड़ी, और दूसरी कितनी ही स्वादिष्ट वानगियाँ बिलकुल मौलिक और स्वयं प्रेरित!"

अिस पर मैंने वल्लभभाअीसे कहा — "जेलसे ही सेंजनेकी फलियाँ मिल जायँ, तो मैं आपके लिअे बना दूँ।" वल्लभभाअी कहने लगे — "जा, जा, ये तेरेसे क्या बनेंगी?" बापू कहने लगे — "वल्लभभाअीको तो वे बेसनमें बढ़िया बनायी हुअी चाहियें और तुम अुबली हुअी फलियोंकी बात करते हो!" फिर बोले — "अगर दुनियामें कहीं भी सागको बिलकुल ही बिगाड़ कर बनाया जाता हो तो वह हिन्दुस्तानमें। गिबनकी पुस्तकके शुरूमें रोमके दरबारोंके खानपान और अैश-आरामकी जैसी बात लिखी है, वही हालत हमारी है। हमने खानेमें कअी तरहके कृत्रिम स्वाद बना लिये, कअी मसाले खोज लिये और अिन मसालोंके स्वादके लिअे ही साग खाते हैं।" मैंने कहा — "कितनी ही चीजें मसालेके बिना खाअी ही नहीं जा सकतीं। मीठा जमीकन्द अुबला हुआ खाया जा सकता है, मगर तीखा हो तो भट्टीमें भूनना चाहिये और बादमें अुसमें गुड़, अिमली और मसाला चाहिये।" बापू बोले — "तो अिस जमीकन्दको मैं न खाने लायक मानूँगा। अरवीके पत्ते कोअी अुबाल कर नहीं खाता, क्योंकि खाये नहीं जा सकते; और खाये नहीं जा सकते, अिसलिअे अुनमें बेसन और मिट्टी पत्थर वगैरा डालते हैं। यह क्यों न समझा जाय कि ये पत्ते खाने लायक नहीं हैं?"

* * *

होर बेलिशा कहता है — "१६० लाख पौण्डका विदेशी माल आना कम हो गया। अितनी देशमें बचत हुअी। मगर हमारा माल भी तो विदेश जाना बन्द हो गया, अुसका क्या किया जाय? यह विकट प्रश्न तो लोजान और ओटावामें ही हल हो सकता है, जहाँ साम्राज्यके भीतर खुले व्यापारकी नीति निश्चित होनी चाहिये। अगर कोअी हमारा माल नहीं खरीदे, तो जबरदस्ती कैसे खरीदवायँगे?"

विनाश काले विपरीत बुद्धि। अगर अिन्हें व्यापार भी कायम रखना हो तो हाजी हारून हारून और षण्मुखम् चेट्टी और अतुल चटर्जीके जरिये कायम रखेंगे या अिसके लिअे गांधीको और पुरुषोत्तमदास तथा बिरलाको पूछनेकी जरूरत होगी?

* * *

अिस बार आश्रमको लिखा गया पत्र सदाकी तरह महत्वका था। अिसमें नौकरोंको रखनेकी शर्तोंमें सिर्फ अितनी सूचना है कि वे खादी पहनें, बच्चोंको पढ़नेके

लिअे मेज और शराबका व्यसन न करें । यह ठीक बात है । "हमें विश्वास रखना चाहिये कि हम अुनके जीवनमें प्रवेश करेंगे, अुनके सुखदु:खके साथी बनेंगे और अुनके बालबच्चोंके साथ जान पहचान करेंगे, तो दूसरे नियम वे अपनी अिच्छासे और जानबूझ कर पालेंगे ।" वगैरा । हमें यह साबित कर देना है कि हमारा संग सत्संग है ! अिसके बाद छाराओंसे* मित्रता करनेका सुझाव है — अगर हिम्मत हो तो — मगर बूतेसे बाहर हो, तो नहीं । "अिन सबसे दोस्ती करनेके लिअे सरल शास्त्रीय नियम यह बताता है कि शून्यवत् बनकर रहना चाहिये ।" लेकिन शून्यवत् या तो जड़ या मूढ़ मनुष्य ही रह सकता है या पूर्ण ज्ञानी रह सकता है । दोनोंमेंसे अेक भी न हो अुसके लिअे यह दु:साध्य वस्तु है ।

परशरामका अेक बच्चा कानपुरमें बहुत बीमार था । काम छोड़कर जानेकी हिम्मत नहीं होती और फिर भी जीको चैन नहीं पड़ता । अुसे बापूने लिखा — "तुम्हारे पास अुसे अच्छा करनेकी जड़ीबूटी हो या तुम्हारी हाजरी ही जड़ीबूटीका काम दे, तो जानेका धर्म पैदा हो सकता है । यानी अपने हाथमें लिअे हुअे कामसे छुटकारा मिल सके तो अैसे समय जाना चाहिये, मगर वह विमलके भाअीके लिअे नहीं । बल्कि अैसी हालतमें कोअी भी बीमार हो और अुसके लिअे तुम्हारा जाना जड़ीबूटी साबित हो सके तो जाना चाहिये । अैसे अनुभव कर करके ही अिन्सान दिलकी कमजोरी निकाल सकता है । हम आशा रखते हैं कि अुस बच्चेकी तबीयत अच्छी हो गयी होगी ।"

कितने ही आदमी केवल स्पर्धाके खयालसे खींच तानकर खूब काम करते चले जाते हैं, अुनके लिअे ज्यादासे ज्यादा घण्टे मुकर्रर कर देने चाहियें । अिस सूचनाके विषयमें लिखा — "मैं मानता हूँ कि कामके बारेमें ज्यादासे ज्यादा घण्टोंकी हद बाँधी जा सके तो बाँध देना चाहिये । लेकिन मुझे अैसा लगता है कि वह हरअेकके लिअे अलग अलग हो सकती है । जहाँ भावना कौटुम्बिक है और जहाँ हरअेक आदमी अपनेको दूसरेके बराबर ही जिम्मेदार मानता है, वहाँ सबके लिअे ज्यादासे ज्यादा मर्यादा बाँध देना असम्भव तो है ही, शायद गैरवाजिब भी हो । जिसका शरीर काम देता है, जिसका मन तैयार है और जिसके पास दूसरा कोअी भी अधिक सेवाका काम नहीं है, वह अपना समय संस्थाकी सेवामें हरगिज न दे, यह नियम कैसे बनाया जा सकता है ? अिसलिअे मैं अितना ही सार निकाल सकता हूँ कि हमारे कामोंमें हर जगह विवेक हो, सात्त्विकता हो और धाँधली न हो, तो किसीको बोझा लगेगा ही नहीं । भार हमेशा तभी मालूम होता है जब हम बाहरके दबावसे कुछ करते हों । स्वेच्छा और आनन्दके साथ किये गये कामका दबाव नहीं मालूम होता । मगर

* अेक जरायमपेशा जाति

जिसकी प्रवृत्ति आसुरी है, वह स्वार्थवश अपने शरीरसे कअी तरहके काम लेता है और फिर लथड़ा जाता है। अैसे आदमी स्वस्थचित्त तो होते ही नहीं, अुन्हें हम किसी तरह आदर्श भी नहीं मान सकते।"

अिसी पत्रमेंसे अेक और अुद्गार — "यह कहनेमें बुराअी नहीं कि व्यभिचारीके लिअे स्त्री अवगुणोंकी खान ही है। जैसे पैसेके लालचीके लिअे सोनेकी खान नरककी खान है, मगर दुनियाके लिअे वह नरककी खान नहीं। सोनेके सदुपयोग बहुत हैं।"

नारायणाप्पाको लिखा :

"There is nothing like finding one's full satisfaction from one's daily task however humble it may be. To those that wait and watch and pray God always brings greater tasks and responsibilities."

"हमारे रोजमर्राके काम कितने ही छोटे हों मगर अुनसे हम पूरा सन्तोष मानें, तो अिसके बराबर और कोअी अच्छी बात नहीं है। जो राह देखते हैं, जाग्रत रहते हैं और प्रार्थना करते हैं, अुनके लिअे अीश्वर बड़े काम और बड़ी जिम्मेदारियाँ जुटा देता है।"

मीराके पत्रमें हाथके दर्द और अलोने भोजनका हाल बताकर लिखते हैं:

"There is a splendid sentence in Sir James Jeans' book: 'Life is a progress towards death.' Another reading may be life is a preparation for death. And somehow or other we quail to think of that inevitable and grand event. It is grand event as a preparation for a better life than the past, as it should be for everyone who tries to live in the fear of God."

"सर जेम्स जीन्सकी पुस्तकमें अेक भव्य वाक्य है: 'जीवन मौतकी तरफ प्रगति है।' दूसरा पाठ यह हो सकता है कि जीवन मृत्युकी तैयारी है। मगर कौन जाने क्यों हम अिस अनिवार्य और भव्य अवसरका विचार करते समय काँप अुठते हैं। हमारे पिछले जीवनसे ज्यादा अच्छे जीवनकी तैयारीके रूपमें भी यह अवसर शानदार है। और जो अीश्वरका डर रखकर चलनेकी कोशिश करता है, अुसके लिअे तो वह सदा अच्छे जीवनकी तैयारी ही होती है।"

. . . ने पूछा है कि क्या जहरीले साँपके शरीर परसे गुजर जाने देनेकी बात सच है? बापूने हिन्दीमें लिखा — "साँपकी बात ठीक है और ठीक नहीं भी। साँप मेरे शरीर परसे चला जा रहा था। अैसे मौके पर चुपचाप पड़े रहनेके सिवा मैं या दूसरा कोअी और क्या कर सकता था? अिसलिअे अिसमें मैं अुस स्तुतिका कारण नहीं देखता, जैसी स्तुति लेखकने की है। और वह जहरीला

था या नहीं, यह तो कैसे कहा जा सकता है? मृत्यु कोअी भयंकर घटना नहीं है, अैसे खयाल बहुत वर्षोंसे रहनेके कारण मुझ पर किसीकी मृत्यु ज्यादा समय असर नहीं कर सकती।"

१७–६–'३२ बापूने मीराके पत्रमें जीवनको मौतकी तैयारी कहा था। गेटेको अपना प्राणेश्वर माननेवाली बेटीने अपने अेक पत्रमें ये ही शब्द काममें लिये हैं:

"How could I be other than happy in the thought that at last he has attained that enternal bliss for which his whole earthly life had been a preparation?"

"अिस विचारसे कि अुन्हें अन्तमें शाश्वत शान्ति मिली है मुझे आनन्द कैसे न होगा? अुनकी सारी दुनियावी जिन्दगी अिसके लिअे अेक तैयारी ही थी।"

छगनलाल जोशीको पत्र लिखा। अुसमें अपरिग्रह व्रतकी व्याख्याके बारेमें जो कुछ पूछा था वह दुबारा समझाया — "मैं यह सत्य रोज अनुभव कर रहा हूँ कि कुदरत जीवमात्रकी हर क्षणकी जरूरतकी चीज हर क्षण पैदा करती है और जरा भी ज्यादा पैदा नहीं करती। और यह भी देख रहा हूँ कि अिस महान कानूनको हम अिच्छा या अनिच्छासे, जान या अनजानमें, हर घड़ी तोड़ते हैं। और यह तो हम सब देख सकते हैं कि अिस कानून-भंगसे अेक तरफ तो बहुतसे मनुष्य भोगका कष्ट अुठा रहे हैं और दूसरी तरफ बेशुमार मनुष्य भूखसे पीड़ित हैं। अिस प्रकार अेक तरफ लोग भूखों मर रहे हैं और दूसरी तरफ अमरीकाके धनिक अर्थशास्त्रका गलत अर्थ करके अनाजको नष्ट कर रहे हैं। अिस आपत्तिसे बचनेका हमारा प्रयत्न है। हाँ, कुदरतके अिस कानूनका पालन अिस वक्त तो हरगिज नहीं हो सकता। लेकिन अिससे हमारे लिअे घबरानेका कोअी कारण नहीं है।"

प्रार्थनाके बारेमें पूछते हुअे प्रेमाबहनने कटाक्ष किया कि आप साकार मूर्तिका विरोध कैसे करते हैं? अीश्वर सम्बन्धी भावना हमारी सामाजिक और राजनीतिक स्थितिके साथ साथ बदलती रही है। शंकरके जमानेमें स्वराज था, अिसलिअे अीश्वरके साथ बराबरीकी बात थी। रामानुजके समयमें गुलामी थी, अिसलिअे मनुष्यने दासानुदास होना चाहा। आप साकारका निषेध करते हैं, तो भी तुकाने तो '**सुन्दर तें ध्यान अुभा विटेवरी**'में ही साक्षात्कार किया है। अिस विषयमें बापूने लिखा — "प्रार्थनामें मैंने साकार मूर्तिका निषेध नहीं किया, निराकारको अुससे अूँची जगह दी है। शायद अिस तरहका भेद करना ठीक न हो। किसीको कुछ और किसीको कुछ माफिक आ सकता है।

अिसमें मुकाबलेकी गुंजायश नहीं हो सकती। मेरे खयालसे निराकार ज्यादा अच्छा रहेगा। शंकर, रामानुज सम्बन्धी पृथक्करण मुझे ठीक नहीं लगा। परिस्थितिसे अनुभवका असर ज्यादा होता है। सत्यके पुजारी पर परिस्थितिका प्रभाव नहीं पड़ना चाहिये। अुसे परिस्थितिको चीरकर निकल जाना चाहिये। हम देखते हैं कि परिस्थितिकी बुनियाद पर बनायी हुअी राय अक्सर गलत निकलती है। मशहूर मिसाल आत्मा और शरीरकी है। आत्माका अभी शरीरके साथ निकट सम्बन्ध है, अिसलिअे शरीरसे अलग आत्मा तुरन्त नहीं दिखायी देती। अिस परिस्थितिको चीरकर जिसने पहला वचन कहा — 'यह नहीं', अुसकी शक्तिको अभी तक कोअी पहुँच ही नहीं पाया। अैसे कअी अुदाहरण तुम्हें सहज ही मिल जायँगे। तुकाराम वगैरा सन्तोंके वचनोंका शब्दार्थ करना बिलकुल ठीक नहीं है। अुनका अेक वचन अभी पढ़नेमें आया है, वह तुम्हारे लिअे अुद्धृत करता हूँ : '**केला मातीचा पशुपति**' वाला अभंग है। अिससे मैं यह सार निकालता हूँ कि अैसे साधु-सन्तोंकी भाषाके पीछे जो कल्पना रही है वह हमें देखनी चाहिये। वे साकार भगवानका चित्र खींचते हों तो भी निराकारको भजते होंगे। हम मामूली आदमी अैसा नहीं कर सकते, अिसलिअे अुनका भेद समझ कर न चलेंगे तो मर जायँगे।"

अिसी पत्रमें दूसरे अुद्गार ये थे — "जिसे अपने काममें तन्मयता है, अुसे बोझा या थकावट महसूस नहीं होती। जिसे रस नहीं अुसे थोड़ा भी ज्यादा लगता है। जैसे कैदीको अेक दिन भी अेक साल लगता है, वैसे भोगीको अेक वर्ष अेक दिन लगता है। पहले जब युरोपका संगीत सुनता था तो अरुचि होती थी। अभी अभी अुसे कुछ समझने लगा हूँ और रस आने लगा है।"

परशरामने ज्यादासे ज्यादा कामकी हदका सवाल पूछा था। अुसे बापूका दिया हुआ जवाब और ये अूपरवाले अुद्गार नीचेके अुद्गारोंके साथ तुलना करने लायक हैं :

"The man who loves God does not measure his work by the eight hour system. He works at all hours and is never off duty. As he has opportunity he does good. Everywhere, at all times, and in all places, he finds opportunity to work for God. He carries fragrance with him wherever he goes."

"जो आदमी अीश्वरको चाहता है, वह रोज आठ घण्टेके हिसाबसे अपना काम नहीं मापता। वह हरदम काम करता ही रहता है। अुसे छुट्टी होती ही नहीं। जब मौका मिलता है वह भलाअी करता रहता है। अुसे सदा और

सर्वत्र प्रभुप्रीत्यर्थ काम करनेका अवसर मिलता ही है। वह जहाँ जाता है वहाँ अपनी सुगन्ध फैलाता है।"

. . .को लिखे हुअे पत्रमेंसे — "तुम आत्मविश्वास खो बैठो यह ठीक नहीं है। बुरे विचार मनुष्यको अक्सर आते हैं। मगर जैसे घरमें कूड़ाकरकट भर जाने पर जो अुसे समय समय पर निकालता रहता है अुसके लिअे कहा जाता है कि वह साफ है और अपना घर साफ रखता है। अुसी तरह कुविचारोंके आते ही जो निकलता रहे अुसकी सदा जय ही है। वह कभी दंभी नहीं कहलाता। अिस दंभसे बचनेका मैंने सुवर्ण अुपाय यह बताया है कि हमें अिन विचारोंको कभी नहीं छिपाना चाहिये, बल्कि जाहिर कर देना चाहिये। अुनकी डोंडी पीटनेकी भी जरूरत नहीं है। किसी न किसी मित्रको जरूर कह देना चाहिये। और मनकी यह स्थिति होनी चाहिये कि सारी दुनिया जान ले तो भी हर्ज नहीं। विनोबाके वचनों पर श्रद्धा रखना और निराश न होना।"

बाहर काम करने जाने वाले राजनीतिक कैदियोंको बेड़ियाँ पहनाते हैं। अुसके खिलाफ सत्याग्रह करना चाहिये, या नहीं अिस विषयमें — "कैदियोंके बर्तावके बारेमें यहाँसे प्रगट करने लायक कुछ लिखा ही नहीं जा सकता। तुम लिखते हो यह तो ठीक है कि अिसका ज्यादा स्पष्टीकरण होना चाहिये। वह तो मौका मिलने पर ही होगा। बेड़ीके बारेमें तुम्हारी दलील समझ ली है। मगर मेरी राय अभी वही है, क्योंकि मेरे खयालसे राजनीतिक और दूसरे कैदियोंमें फर्क नहीं है। अिसलिअे सारे जेलखानेके तरीकेमें सुधारकी जरूरत है। यह माना जाना चाहिये कि जेलखाना सजाकी जगह नहीं, परन्तु सुधारकी जगह है। और यह मान लिया जाय तो अुस आदमीके लिअे, जिसने झूठा दस्तावेज बनाया हो और अुसके लिअे वह कैदमें पड़ा हो, बेड़ीकी क्या जरूरत है? बेड़ीसे तो वह सुधरेगा नहीं। जिसके भाग जानेका डर नहीं हो, झगड़ा करनेकी जिसमें शक्ति नहीं हो, अिच्छा भी नहीं हो, अैसेको बेड़ी पहनाना मुझे असह्य लगता है। मगर राजनीतिक कैदी हो, वह शरीरसे तुम्हारे जैसा पहलवान हो, रोज जेल तोड़नेके मनसूबे गढ़ता हो, हाथका छूटा हुआ हो और मुँहका भी छूटा हुआ हो तो अुसे बेड़ी पहनाना मैं धर्म मानूँगा। अिससे सार अितना निकालना चाहता हूँ कि राजनीतिक और अराजनीतिकका भेद गलत है। और हम सुधारकोंका धर्म यह है कि जो भी सुविधा हम माँगें, वह सिर्फ नीतिके आधार पर होनी चाहिये और अिस प्रकारके सभी कैदियोंके लिअे लागू होनी चाहिये। राजनीतिकके लिअे गेहूँ और अराजनीतिकके लिअे मक्की, यह मेरे लिअे तो असह्य होना चाहिये। लेकिन मक्की हजम न हो सके अैसे खूनी कैदी हों, तो अुन्हें गेहूँ मिलना चाहिये; और मक्कीको आसानीसे हजम कर सके अैसी अच्छी पाचनशक्तिवाला राजनीतिक

कैदी तो खुद गेहूँ छोड़कर मक्की माँग ले और अैसा करके दूसरोंकी भी लाज रख ले। मगर ये तो मेरे विचार हुअे। अिन पर अिस जगहसे मैं हरगिज आग्रह नहीं कर सकता। सब अपने अपने अन्तर्नाद पर चलें।"

अिस सप्ताहके अभी बहुतसे पत्रोंका जिक्र करना बाकी हैं। प्रार्थना और ध्यानके विषयोंकी चर्चा तो समय समय पर होती ही रहती है। भाअूको ध्यानके बारेमें तफसीलवार हिदायतें दीं:

१८-६-'३२

"कल्पनाका चित्र कुछ भी खींचा हो और अुसका ध्यान किया हो, तो अिसमें मैं दोष नहीं देखता। लेकिन गीता माताके ध्यानसे सन्तोष होता हो तो और क्या चाहिये? गीताका ध्यान दो तरहसे हो सकता है: अेक तो अुसे माताके रूपमें माना है। अिसलिअे सामने माताकी तसवीरकी जरूरत रहती हो तो या तो अपनी माँमें ही (यदि वह मर गअी हो तो) कामधेनुका आरोपण करके गीताके रूपमें मानकर अुसका ध्यान करना चाहिये। या कोअी भी काल्पनिक चित्र मनमें खींच लिया जाय। अुसे गोमाताका रूप दिया हो तो भी काम चल सकता है। दूसरी तरह हो सके तो अिसे मैं ज्यादा अच्छा समझता हूँ। हम हमेशा जो अध्याय बोलते हों, अुसमेंसे या किसी भी अध्यायके किसी भी श्लोक या किसी भी शब्दका ध्यान धरना ही अुसका चिन्तवन करना है। गीतामें जितने शब्द हैं अुतने ही अुसके आभूषण हैं और प्रियजनोंके आभूषणोंका ध्यान करना भी अुन्हींका ध्यान धरनेके बराबर है। यही बात गीताकी है। लेकिन अिसके सिवा किसीको और कोअी ढंग मिल जाय, तो भले ही वह अुस ढंगसे ध्यान धरे। जितने दिमाग अुतनी ही विविधता होती है। कोअी दो व्यक्ति अेक ही तरीकेसे अेक ही चीजका ध्यान नहीं करते। दोनोंके वर्णन और कल्पनामें कुछ न कुछ फर्क तो रहेगा ही।

"छठे अध्यायके अनुसार जरा-सी भी की हुअी साधना बेकार नहीं जाती। और जहाँसे रह गयी हो वहाँसे दूसरे जन्ममें आगे चलती है। अिसी तरह जिसमें कल्याणमार्गकी तरफ मुड़नेकी अिच्छा तो जरूर हो मगर अमल करनेकी शक्ति न हो, अुसे अैसा मौका जरूर मिलेगा जिससे दूसरे जन्ममें अुसकी यह अिच्छा दृढ़ हो। अिस बारेमें भी मेरे मनमें कोअी शंका नहीं है। मगर अिसका यह अर्थ न किया जाय कि तब तो हम अिस जन्ममें शिथिल रहें, तो भी काम चलेगा। अैसी अिच्छा अिच्छा नहीं है, या वह बौद्धिक है, मगर हार्दिक नहीं है। बौद्धिक अिच्छाके लिअे कोअी स्थान ही नहीं है। वह मरनेके बाद नहीं रहती। पर जो अिच्छा दिलमें पैठ जाती है अुसके पीछे प्रयत्न तो होना ही चाहिये। मगर कअी कारणोंसे और शरीरकी कमजोरीसे संभव है कि यह

अिच्छा अिस जन्ममें पूरी न हो। और अिस तरहका अनुभव हमें रोज होता है। मगर अिस अिच्छाको लेकर जीव देहको छोड़ता है और दूसरे जन्ममें अिस जन्मकी अुपाधियाँ कम होकर यह अिच्छा फलती है या ज्यादा मजबूत तो होती ही है। अिस तरह कल्याणकृत लगातार आगे बढ़ता ही रहता है।

"ज्ञानेश्वर महाराजने निवृत्तिनाथके जीते हुअे अुनका ध्यान धरा हो तो भले ही धरा हो। लेकिन अितना होने पर भी मेरी पक्की राय है कि वह हमारे नकल करने लायक नहीं है। जिसका ध्यान करना है वह पूर्णताको पाया हुआ व्यक्ति होना चाहिये। जीवित व्यक्तिके लिअे अिस तरहका खयाल करना बिलकुल बेजा और गैरजरूरी है। लेकिन यह हो सकता है कि ज्ञानेश्वर महाराजने शरीरधारी निवृत्तिनाथका ध्यान न धरा हो और अपनी कल्पनाकी पूर्णताको पहुँचे हुअे निवृत्तिनाथका ध्यान किया हो। मगर हम अिस झगड़ेमें कहाँ पड़ें? और जब जीवित मूर्तिका ध्यान करनेका सवाल अुठता है, तब कल्पनाकी मूर्तिकी गुंजायश नहीं रहती। और अिसका अुल्लेख करके जवाब दिया हो तो अिस जवाबसे बुद्धिभ्रंश होना संभव है।

"पहले अध्यायमें जो नाम दिये हैं, वे सब नाम मेरी रायमें व्यक्तिवाचक होनेके बजाय गुणवाचक ज्यादा हैं। दैवी और आसुरी वृत्तियोंके बीचकी लड़ाअीका बयान करते हुअे कविने वृत्तियोंको मूर्तिमान बनाया है। अिस कल्पनामें अिस बातसे अिनकार नहीं किया गया है कि पाण्डवों और कौरवोंके बीच हस्तिनापुरके पास सचमुच युद्ध हुआ होगा। मेरी अैसी कल्पना है कि अुस जमानेका कोअी दृष्टान्त लेकर कविने अिस महान ग्रंथकी रचना की है। अिसमें भूल हो सकती है। या ये सब नाम अैतिहासिक हों तो अैतिहासिक आरम्भके लिअे ये नाम देना बेजा भी नहीं माना जा सकता। और विषय विचारके लिअे पहला अध्याय जरूरी है, अिसलिअे गीतापाठके वक्त अुसे पढ़ लेना भी जरूरी है।

"किसीकी बनायी हुअी पूनियोंसे कातना बेशक अधूरा यज्ञ है। यह हो सकता है कि अपंग होनेके कारण मेरे जैसा आदमी अपनी पूनियाँ न बना सके। मगर जिसमें ताकत है अुसे तो अपनी पूनियाँ आप ही बनानी चाहिये।"

मथुरादासका नासिकसे पत्र आया। वे लिखते हैं कि मैंने तलाकके समर्थनमें अेक नाटक लिखा है, जो किशोरलालभाअीको पसन्द आया है। संतति नियमनकी जरूरत बतानेके लिअे अुन्होंने यह दलील दी है कि ब्रह्मचर्य सबसे नहीं रखा जा सकता। पशुके साथ मनुष्यकी तुलना नहीं की जा सकती। पशु कहीं भी किसी भी समय विषय तृप्त कर लेता है। मनुष्य वैसा नहीं कर सकता, अित्यादि। अिसका अनर्थ हो अिसलिअे अुसे बुराअी नहीं कहा जा सकता;

जसे छापनेकी कलासे भयंकर परिणाम निकले, अिसलिअे वह कला अनिष्ट साबित नहीं होती। वगैरा वगैरा।

बापूने अुन्हें लिखा — "मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुम नाटक लिखोगे। तुम्हारे विचार आजकलके सुधारोंकी तरफ खूब झुक रहे हैं। मैं यह जरूर मानता हूँ कि खास मर्यादाके भीतर तलाक होनी चाहिये, मगर अिसका प्रचार करनेको जी कभी नहीं चाहता। आम तौर पर तो हम अपनी वृत्तियोंके अितने गुलाम होते हैं कि मनकी जो हालत आज है वह कल भी रहेगी, यह निश्चित नहीं कहा जा सकता। अिसलिअे यही ठीक मालूम होता है कि अपनी अिच्छासे किये हुअे विवाह बहुत प्रबल कारण न हों तब तक टूटने नहीं चाहियें। अछूतपनके सवाल पर मैंने बाको तलाक दे दी होती, तो आज जो सुन्दर स्थिति मौजूद है वह हरगिज न होती! बा न जाने कहाँ पड़ी होती! और यह कौन कह सकता है कि मैं कैसी शादी कर बैठता? मगर विरासतमें तो यह मिला था कि तलाक दी ही नहीं जा सकती; अिसलिअे वह विषम समय बीत गया और अब तो अुसकी याद ही बाकी रह गयी है। अिसलिअे मुझे आशा है कि तुम्हारी पुस्तकमें जब अिच्छा हो तभी अेक दूसरेसे पिण्ड छुड़ा लेनेकी बिना टिकटकी मंजूरी नहीं दी होगी।

"विषयभोगकी जब अिच्छा हो तभी अुसे पूरी करना मनुष्यका धर्म हो, तब तो संतति-नियमनके कृत्रिम अुपायोंकी जरूरत मैं समझ सकता हूँ। लेकिन सन्तानकी अिच्छाके बिना विषयभोग पापकी जड़ मानी जाय — और मेरे खयालसे मानना चाहिये, तो बनावटी तरीकोंसे औलादका होना रोकना पाप पर ब्याज चढ़ाने-जैसा है। कुदरतका कायदा तो है ही कि जैसा करोगे वैसा भरोगे। मनुष्य विषय करे तो भले ही सन्तानका बोझा अुठाये। यहाँ यह सवाल नहीं है कि स्त्री क्यों अुठाये, क्योंकि हम स्त्रीको पूरी तरह स्वतंत्र मानते हैं। अभी जो बनावटी अुपाय पश्चिममें अिस्तेमाल हो रहे हैं, अुनका यह नतीजा तो निकल ही रहा है कि विवाहकी पवित्रता मिट गयी है और जिसे जब पसन्द हो तब छूटके साथ भोग भोग लेता है। अिस चीजके प्रचारमें अभी कोअी वर्षों तो बीते नहीं हैं, फिर भी आज तक जो पवित्र बन्धन माने जाते रहे, वे अब टूट रहे हैं। आजकल पश्चिममें अच्छे गिने जानेवाले विचारक यह मानने लगे हैं कि विवाह अेक वहम है। और सगे भाअी-बहन भी अेकदूसरेके प्रति विकारवश हो जायँ और विकारको सन्तुष्ट कर लें तो अिसमें कोअी बुराअी नहीं, बल्कि अुचित ही है। अिन सब विचारोंको मैं अेक सिरेसे दूसरे सिरे जानेवाली ज्यादती नहीं समझता। मगर सन्तति-निग्रहकी जड़में जो विचारसरणी है, अुसका यह सीधा और सहज परिणाम है। और अैसा हो भी सकता है कि हमने

आज विवाह वगैराके जिन बन्धनोंको आत्मपोषक मान रखा है, वे आत्मनाशक हों। मगर मैं अैसी बातोंकी दलीलके लिअे सम्भावना मान लेनेसे आगे हरगिज नहीं जा सकता। नीति और शास्त्रके नाम पर होनेवाली ये सब बातें मुझे बड़ी खतरनाक दीखती हैं। मैं चाहता हूँ कि झूठी दयासे, अधीरतासे और अपने क्षणिक अनुभवोंसे अिन नये विचारोंके जो फुँआर अुड़ रहे हैं, अुनसे हमें भीग न जाना चाहिये। और हिन्दुस्तानकी हालतको देखते हुअे अभी तो अिन बनावटी अुपायोंके लिअे यहाँ कोअी गुंजायश है ही नहीं। जहाँ असंख्य मनुष्योंके शरीर नष्ट हो गये हैं और मन कमजोर हो गये हैं, वहाँ विषयकी अिच्छा होते ही अुसे पूरा करने लगें तो हमारी अुन्नति बिलकुल मारी ही जायगी। अिन अुपायोंका सहारा लेनेवाले लोग तो असलमें नामर्द-जैसे हैं। अखबारोंमें जो विज्ञापन आते हैं, अुन पर नजर डाल लेना। यह बात मैं विस्तृत अनुभव परसे कहता हूँ। 'नीतिनाशके मार्ग पर' के जो लेख लिखे थे वे हर हफ्ते आनेवाले शक्तिहीन विद्यार्थियों और अध्यापकोंके पत्रोंके जवाबमें लिखे गये थे। हिन्दुस्तानके नौजवानोंको तो अपने पर जब्र करके भी संयमका पाठ सीखना है। लड़कियोंकी भी बड़ी अजीब हालत है। आश्रममें पली हुअी . . . . जैसी पंद्रह सालकी छोकरी शरीरसे कमजोर होने पर भी शादीकी माँग करे, यह कैसी विचित्र बात है! पंद्रह वर्षकी लड़कीको विकार क्यों पैदा हों? मगर हमारा वातावरण ही मैला है। बचपनसे ही लड़कों और लड़कियोंको विकारके प्याले पिलाये जाते हैं। अैसे लोगोंको विकारोंके वश होनेका धर्म सिखानेके लिअे मैं तो जरा भी तैयार नहीं हूँ। मगर अब अिस बातको नहीं बढ़ाअूँगा। अितनेसे तुम मेरे विचार जान सकोगे।"

देवदासका कल तार आया। अिसमें बुखारकी तफसील थी। १२ दिनसे बुखार आता है। नरम मोतीझिरेकी शंका होती है। ज्यादासे ज्यादा १०२° और पिछले तीन दिनसे १००° से नीचे है। हवा बहुत ही खराब है। आपका पत्र नहीं आया। बापू कहने लगे — "हवाकी बात अिसलिअे लिखी है कि आप मेरा तबादला करा सकते हों तो करा दें।"

सुबह अिस पर विचार कर रहे थे। वल्लभभाअी कहने लगे — "अुसे बदलवा ही देना चाहिये।" बापू कहने लगे — "किसीके मारफत तो हरगिज नहीं। अर्जी देनी हो तो खुद हमीं दें। मगर जी नहीं करता। हरिलाल दक्षिण अफ्रीकाकी जेलमें बहुत ही खराब जगह पर था। मगर अपना तबादला अुसने खुद ही कराया था, मैंने माँग नहीं की थी।" वल्लभभाअी कहने लगे — "हम कहाँ कैदी हैं? यहाँ हालत दूसरी है, दरखास्त भेजनी चाहिये।" अिसलिअे अन्तमें बापूने मान लिया और हेलीको तार भेजा कि मेरा लड़का किसी भी

कारणके बिना बगैर साथीके और बहुत ही खराब जगह गोरखपुरमें है । वह बुखारमें पड़ा है । अुसे या तो देहरादून बदल दीजिये या मेरे पास यहाँ भेज दीजिये ।"

आज सबेरे प्रार्थनामें ११ वाँ अध्याय था । प्रार्थना पूरी होनेके बाद बापू कहने लगे — "मि० बेकर जब मुझे वेलिंग्टन कन्वेन्शनमें ईसाई बनानेको ले गये थे वह दिन याद आता है ।

१९–६–'३२

वे हमेशा मेरे साथ चर्चा करते थे । मैं अुन्हें कहता कि आप मुझमें श्रद्धा जाग्रत कीजिये । जो भी अच्छा असर आप मुझ पर डालना चाहते हों, वह डालने देनेके लिअे मैं तैयार हूँ । अिसलिअे अुन्होंने कहा कि वेलिंग्टन कन्वेन्शनमें चलो । वहाँ समर्थ लोग आयेंगे । आप अुनसे मिलेंगे तो आपको विश्वास हुअे बिना रहेगा ही नहीं । सारे डब्बेमें गोरे बैठे थे और मैं अकेला अूपरके बंक पर दबा हुआ बैठा था । वे लोग कहने लगे, देखिये हिक्स नदी आयी, भव्य प्रदेश है; देखिये, सूर्योदयके दर्शन तो कीजिये । मगर मैं अुतरता ही न था । मैं तो ११ वें अध्यायका पाठ कर रहा था । बेकरने मुझसे पूछा — क्या पढ़ रहे हैं ? मैंने कहा — 'भगवद्गीता' । अुन्हें लगा होगा कि कैसा मूर्ख है कि बाअिबल नहीं पढ़ता । मगर क्या करते ? अुन्हें मुझ पर जबरदस्ती तो करनी न थी । कन्वेन्शनमें मेरे लिअे विशेष प्रार्थना भी हुअी । मगर मैं कोराका कोरा ही लौटा ।"

कपड़ेके बेपारीकी दुकान पर नौकरी करनेवाले अेक बेचारेने पूछा — "हमारे धन्धेमें झूठके बिना काम नहीं चलता, क्या किया जाय ? दूसरा धन्धा सूझता नहीं ।" अुसे लिखा — "किसी भी हालतमें रहकर जो सत्यका आचरण कर सकता है, वही सत्यार्थी माना जायगा । व्यापारमें किसीको झूठ बोलनेकी मजबूरी नहीं है और न नौकरीमें । जहाँ मजबूरी दीखे वहाँ नहीं जाना चाहिये, फिर भले भूखों मर जायँ ।"

नानाभाअी मशरूवालाको लिखा — "सुशीला और सीताके वहाँ रह जानेके समाचारसे मैं खुश हो रहा था, यह मानकर कि वहाँ वे ज्यादा तन्दुरुस्त रहेंगी । कौन जानता है किस बातसे खुश होवें और किस पर रोयें ? दोनों ही छोड़ दें !"

विलायतमें हमें मदद देनेवाली अनेक स्त्रियोंमें लॉरी सोयर भी थी । अुसे अेक बार नासूर हुआ, फिर क्षय हो गया । मगर अुसके जैसी आनंदी और तेजस्वी लड़कियाँ मैंने थोड़ी ही देखी हैं । होरेसने लिखा कि डॉक्टरोंने राय दी है कि वह थोड़े दिनकी मेहमान है, अिसलिअे अुसे पत्र लिखें । बापूने अुसे तुरंत पत्र लिखा :

"My dear Lauri,

"Prof. Horace Alexander reminds me of your existence and tells me how weak you are. Of course I remember you perfectly. Weak in body you may be, but the very first time I met you I saw how strong you were in will. And if God wants more service from you in your present existence, He will give you sufficient strength of body. For those who have faith in God, life and death are alike. Ours is to serve till the last breath. Do write to me when you can. Love from Mahadeo.

Yours Bapu

"P. S. I write nothing about ourselves as you must know all there is to know."

"प्रिय लॉरी,

"प्रो० होरेस अलेग्ज़ेण्डर मुझे तुम्हारी याद दिलाते हैं और कहते हैं कि तुम बहुत बीमार हो। तुम्हें मैं जरा भी नहीं भूला हूँ। तुम शरीरसे कमजोर होगी, मगर मैंने जबसे तुम्हें देखा है तभी से जान लिया है कि मनसे तुम बड़ी जबरदस्त हो। और अगर अीश्वरको तुम्हारे अिस शरीरसे सेवा करानी होगी, तो तुम्हें शरीरसे भी मजबूत बनायेगा। जिन्हें अीश्वर पर श्रद्धा है, अुनके लिअे मौत और जिन्दगी बराबर है। हमारा फर्ज तो आखिरी दम तक सेवा करना है। तुम लिख सको तब जरूर लिखना। महादेवकी तरफ़से प्यार।

बापूके आशीर्वाद

"पुनः—हमारे बारेमें कुछ नहीं लिख रहा हूँ। जानने लायक सब तुम्हें मालूम ही होगा।"

बच्चे तरह तरहके सवाल पूछते हैं—"हाथसे बरतन मलने और पाखाने साफ करनेमें सेवा कैसे हुअी?" अुन्हें लिखा—"बरतन मलने और पाखाने साफ करनेका काम आम तौर पर अच्छा नहीं लगता। अिसलिअे खास जातियोंसे कराया जाता है। यह दोष है। अिसलिअे जो परोपकारकी भावनासे यह काम करता है वह सेवा करता है।"

अेक लड़की लिखती है—"आप बिल्लीके बच्चोंको अितना खेलाते हैं और गोदमें बिठाते हैं, मैं भी बिल्ली पैदा होती तो कैसा अच्छा होता?" बापूने अुसे लिखा—"बिल्लीके बच्चे मेरी गोदमें बैठते हैं, वैसे ही बच्चे भी बैठते हैं। बिल्लीके बुद्धि नहीं है, हमारे बुद्धि है। अिसलिअे बिल्लीका जन्म चाहने लायक तो नहीं कहा जा सकता।"

परोपकारी पूंजाभाअीको (जो बापूको प्रभु मानते हैं और हे प्रभु (२) सम्बोधन करते हैं) लिखा — "तुम्हें तो बहुत ही लिखना आता है। तुमने जन्म सफल कर लिया है। जिसका मन परोपकारमें रमा रहता है और जो अन्त तक अैसी हालतमें बना रहता है, अुसका जन्म सफल हुआ है। नारणदास कहता है कि तुम फिर सो गये थे। अैसा करते करते कभी पूरी नींद आ जायगी। आये, तब स्वागत कर लेना।"

अेक भाअीको, जिन्हें बहुत धार्मिक पुस्तकें पढ़नेकी और बहुत ज्यादा विचार करनेकी आदत है, बापूने लिखा — "तुम्हें आश्चर्य होगा कि अभी तो पढ़नेमें रायचन्दभाअी और गीताजीको भी छोड़नेकी मेरी सिफारिश है। प्रार्थनाके समय जितनी गीताजी और भजन आवें, अुन्हें ही समझ कर मनन करना चाहिये। यह संयम कठिन है, मगर तुम अुसका चमत्कारी असर देखोगे। अभी तो तुम्हारा पढ़ना ही तुम्हारा काम मालूम होता है। फुरसत हो तब जो अुपयोगी काम पसन्द हो ले लेना, तर्क सब छोड़ देना। 'मेरे लिअे अेक कदम काफी है' का यही अर्थ है। जो साधन बन्धन बन जाय, अुसे छोड़ देना। अखबार भले ही पढ़ना।"

अेक लड़की पूछती है — "क्या भूलकी माफी माँगनेमें अुत्साह मालूम होता होगा? शर्म नहीं आती? फिर भी आप कैसे कहते हैं कि शर्म न आनी चाहिये?" बापूने लिखा — "भूल बुरा काम है, अिसलिअे अुसकी शर्म होती है। भूलकी माफी माँगना अच्छा काम है, अिसलिअे अुसकी शर्म कैसी? माफी माँगनेका अर्थ है फिरसे भूल न करनेका निश्चय। यह निश्चय हो तो अुसमें शर्म किस बातकी? यह समझमें आया? सत्य और अहिंसाकी तुलना क्या की जाय? मगर करनी ही पड़े तो मैं कहूँगा कि सत्य अहिंसासे भी बढ़ कर है, क्योंकि असत्य भी हिंसा है। जिसे सत्य प्रिय है, वह तो अहिंसाको किसी दिन अपना ही लेगा।"

दो आदमियोंने दरिद्रनारायणके सच्चे मन्दिरमें जाकर अुसकी सेवा शुरू की है: जीवराम और जेठालाल। जीवराम अुड़ीसाके अज्ञान, आलसी और गरीबीमें फँसे हुअे अिलाकेमें जा पहुँचे हैं और जेठालाल मध्यप्रान्तके अनन्तपुर गाँवमें। लाखों आदमियोंकी आबादी अैसी है, जिन्हें अेक आना रोज दिया जा सके तो भी बड़ी राहत है। जिनके पास छह आनेकी कीमतका चरखा खरीदनेकी सहूलियत न हो, अुन आदमियोंमें काम करना कितना मुश्किल होगा! वहाँ लगनके साथ पैर जमा कर जेठालाल तीन सालसे पड़े हैं। जेठालालके कामकी रिपोर्ट आयी। अुन्हें बापूने प्रोत्साहन और सूचना देनेवाला लम्बा पत्र लिखा। बिहारमें, जहाँ

लोग भूखों मरते हैं और जहाँ पहननेको पूरे कपड़े नहीं हैं, वहाँ चरखा अपने आप सजीवन हो गया, अिसे बापू शास्त्रीय प्रयोग नहीं कहते। मगर "तुम्हारे प्रयोगको मैं शास्त्रीय कहता हूँ और अिसलिअे तुम पर सदा मेरी नजर रहती ही है। और तुम्हारे कामका शुरूसे लेकर आखिर तक हाल जाननेकी अिच्छा हमेशा ही रहती है। तुम अनुभवी हो अिसलिअे ज्यादा मुश्किलें तो तुम अब अनुभव करोगे। बड़े कामोंमें सदा अैसा ही होता रहा है। जब यह लगता है कि अब रास्ता साफ हो गया है अिसलिअे जल्दी प्रगति कर लेंगे यह मानकर जरा आराम लिया कि तुरन्त खाअी नजर आ जाती है। अिसलिअे तुम्हें वहाँ समाधि लगाकर बैठ जाना चाहिये। पहली चीज तो अटूट धीरज है। अैसे धीरजके लिअे आत्मविश्वास होना चाहिये। और आत्मविश्वासका अर्थ है अपने काममें अटूट श्रद्धा। अितना हो जाय तो फिर अनजानमें बेशुमार भूलें होती हों तो भी चिन्ताकी कोअी बात नहीं रहती। कहीं हम भूल तो नहीं करते, अिस डर ही डरमें सूखनेकी कोअी जरूरत नहीं। तुम्हारे प्रयोगको मैं शास्त्रीय मानता हूँ, अिसका अर्थ मेरे मनमें यह नहीं है कि वह आज ही पूरी तरह शास्त्रीय है। मगर तुम्हारे काममें शास्त्रीय प्रयोगके लक्षण हैं। और अिस तरहके प्रयोगोंमें जो धीरज चाहिये वह भी तुममें है। अेक बातकी कमी मैंने तुममें पहले ही देख ली थी। मगर मैंने अैसा माना कि वह कमी तुमने समझबूझकर दूर कर ली है, या तुम जानते भी न हो अिस ढंगसे तुम्हारी सत्यनिष्ठाके कारण वह दूर हो गयी है। वह कमी यह थी: अधूरे कामसे सन्तोष मानकर तुम झट अनुमान लगा लेते थे। यह मैं अब तुममें नहीं देखता। शास्त्रीय प्रयोग करनेवाला अपनेमें अटूट श्रद्धा रखनेके कारण कभी निराश नहीं होता। मगर अुसके साथ साथ अुसमें अितनी ज्यादा नम्रता होती है कि वह अपने कामसे सन्तोष नहीं कर लेता और जल्दी जल्दी अनुमान नहीं लगा लेता। मगर समय समय पर गहराअीसे हिसाब लगाने के बाद निश्चयपूर्वक कहता है कि अिसका परिणाम यही आयेगा। अैसी शास्त्रीय नम्रताकी कमी हम सबमें है। अिसलिअे तुममें जो बात मुझे नजर आयी थी, वह कोअी आश्चर्यकी बात नहीं थी। सिर्फ मैंने यह माना है कि तुममें अन्त तक जानेकी शक्ति है। अिसलिअे यह कमी भी तुममें न हो, अिस तीव्र अिच्छासे वर्षों पहले बहुत धीरेसे तुम्हारा ध्यान अुस बातकी तरफ खींचा था। कामकी सफलताके लिअे तुम्हें पहली जरूरत साथी जुटा लेनेकी है। तुम्हारी साधना अैसी है कि धीरे धीरे साथी मिल ही जायँगे। अुन्हें जुटानेके लिअे अेक गुणकी अुपासना हमें करनी ही पड़ती है — सहिष्णुता और अुसके पेटमें रहनेवाली अुदारता। हम जो कुछ करें या करना चाहें, वह सब साथी अुसी तरह नहीं कर सकते। लेकिन जब तक यह लगे कि वे अच्छी नीयतवाले और कोशिश

करनेवाले हैं, तब तक अुन्हें निभाना चाहिये। अैसा न करें तो साथी बढ़ते नहीं। कितनोंको तो मिलते ही नहीं।

"अब तुम्हारे कामके सिलसिलेमें अेक और बातकी जरूरत समझता हूँ। जो लोग दूसरे ढंगसे काम करते हों, अुनसे भी सीख लेनेकी अिच्छा होनी चाहिये। शास्त्रीय प्रयोग अेक ही ढंगसे सफल हो सकता है यह माननेमें बड़ी भूल होती है। बहुत लोग अैसा मानते जरूर हैं, मगर अैसा मानकर वे खुद बहुत खोते हैं। हमारी वृत्तियाँ अैसी होनी चाहियें कि हमारे लिअे तो वही तरीका ठीक है जिसे हम सच्चा या पूरा मानते हैं। मगर दूसरे लोग, जो अिसकी पूर्णताको न देख सकते या अिसकी अपूर्णताको जान सकते हों, वे जरूर दूसरी पद्धतिसे बाकी काम कर सकते हैं। अैसी भावनाका विकास करनेसे हमारी ग्रहणशक्ति बढ़ती है।

"तुम अिस वक्त जिस ढंगसे काम कर रहे हो, अुसके बारेमें मैं कुछ नहीं कह सकता। यानी तुम्हारे कामके प्रति पक्षपात होनेके कारण यहाँसे तो सब अच्छा ही अच्छा लगता है। वहाँ आँखोंसे देखूँ तो बिल्कुल मुमकिन है कि मुझे कअी विचार आयें और वे तुम्हारे सामने रख सकूँ। यहाँ बैठे हुअे तुम्हारे कामका चित्र अच्छी तरह नहीं खींच सकता। अिसलिअे कोअी भी सूचना देनेमें अविनय ही मालूम होगी।"

भाअी जीवरामकी हालत जेठालालसे भी ज्यादा गैरमामूली है। अुन्होंने लाख रुपया १९२२में दान किया था और अिस तरह सारी सम्पत्ति लुटाकर चाचाका बैर मोल ले लिया था। फिर व्यापार छोड़ा, फकीरी ली और आज ५० वर्षसे ज्यादा अुम्रमें पत्नीको साथ लेकर वहाँ डेरा डाले हुअे हैं। छगनलाल गांधी-जैसेको जहाँसे तंग आकर और बीमार होकर वापस चला आना पड़ा था, वहाँ यह आदमी श्रद्धासे काम कर रहा है और दूसरोंको खींच रहा है।

अिन दोनोंका विचार करते हुअे रोमाँ रोलाँकी पुस्तकका अेक अंश याद आता है:

"In speaking of classes among workers, it is small matter for wonder that Vivekananda places first, not the illustrious, those crowned with the halo of glory and veneration, not even the Christs and Buddhas; but rather the nameless, the silent ones — the unknown soldiers. The page is a striking one, not easily forgotten when read: 'The great men in the world have passed away unknown. The Buddhas and

Christs that we know are but second rate heroes in comparison with the greatest men of whom the world knows nothing. Silently they live and silently they pass away, and in time their thoughts find expression in Buddhas or Christs and it is these latter that become known to us. They leave their ideas to the world; they put forth no claim for themselves and establish no schools or systems in their name. Their whole nature shrinks from such a thing. They are the pure 'sattwikas', who can never make any stir but only melt down in love. . . . The highest men are calm, silent, unknown. They are the men who really know the power of thought; they are sure that even if they go into a cave and close the door and simply think five true thoughts and then pass away, these five thoughts of theirs will live throughout eternity.'"

"कार्यकर्ताओंका वर्गीकरण करनेमें विवेकानन्दने अैसे नामी आदमियोंको पहला दर्जा नहीं दिया, जो कीर्ति और पूजाकी तेजोराशिसे विभूषित हुअे हैं। अीसा और बुद्ध जैसोंको भी नहीं दिया। मगर जिनके नाम नहीं जाने गये अैसे मूक और अज्ञात सिपाहियोंको दिया है। अिसमें कोअी आश्चर्यकी बात नहीं है। अुनकी रचनाका यह पन्ना चमत्कारी है और अुसे पढ़नेके बाद भूलना आसान नहीं है। वे कहते हैं:

"'दुनियाके महान पुरुष तो अज्ञात ही रह गये हैं। जिनके बारेमें संसार कुछ नहीं जानता अैसे अिन सबसे अच्छे आदमियोंके मुकाबिलेमें अीसा और बुद्ध तो दूसरे दर्जेके बड़े आदमी माने जाने चाहियें। वे लोग मूक रहते हैं और मूक ही चले जाते हैं। समय पाकर अुनके विचार बुद्धों और अीसाओंके जरिये जाहिर होते हैं। ये पिछले लोग हमारी जानकारीमें आते हैं। वे लोग तो अपने विचार ही दुनियामें छोड़ जाते हैं। वे अपने लिअे कोअी दावा नहीं करते और अपने नामसे कोअी सम्प्रदाय या दर्शन कायम नहीं करते। अैसी चीजोंसे वे स्वभावसे ही दूर भागते हैं। शुद्ध सात्विक वे ही हैं। वे कोअी भी आन्दोलन नहीं करते। सिर्फ प्रेममें ही मग्न रहते हैं। सबसे अूँचे मनुष्य शान्त, मूक और अज्ञात होते हैं। विचारोंकी शक्ति कितनी होती है, यह वे ही लोग सचमुच जानते हैं। अुन्हें विश्वास होता है कि वे किसी गुफामें भी जा बैठेंगे और अुसका दरवाजा बन्द करके भी दो-चार अच्छे विचार करके चले जायँगे, तो अुनके ये दो-चार विचार अनन्त काल तक जीवित रहेंगे।'"

राजकुमारी अेरिस्टार्शी हमेशा पत्र लिखती ही रहती है। अिस बार अुसका पत्र अपनी मुश्किलें बयान करनेवाला आया:

२०-६-'३२ "I always look forward with joy for the mail day to come round again when I may write to you. It is such a great help and means to me more than I can express into words. The fact of knowing you lit up my whole Path, giving me strength to bear all the present difficulties. It is with financial worries I have now to cope with. Please to pray for me Mahatmaji, that God might give me the necessary courage and clear sight, especially for my mother's sake, who is over 80 years old. I feel it is an ordeal to pass, and that God will lead me through, and I offer it to Him as an act of self-purification that it may be counted for your sake. All my thoughts and prayers surround you, with incessant devotion and faith for brighter days. God ever keep you and bless you, dear Mahatmaji.

'O'er moor and fen, over crag and torrent
Till the night is gone.'

With deepest and faithful affection
Efy Aristarchi"

"डाकके दिन मिलनेवाले आनन्दकी मैं हमेशा राह देखा करती हूँ। अुस दिन आपको लिखनेका मौका मिलता है, अिससे मुझे जो अुत्साह और आश्वासन मिलता है वह अितना ज्यादा होता है कि मैं शब्दोंमें बयान नहीं कर सकती। यही बात कि मैं आपको जानती हूँ मेरे मार्गको प्रकाश देती है और अपनी मुश्किलोंको पार करनेकी मुझे ताकत देती है। अभी मैं पैसे सम्बन्धी परेशानीमें फँसी हूँ। महात्माजी, आप मेरे लिअे प्रार्थना कीजिये कि भगवान मुझे जरूरी हिम्मत और शुद्ध दृष्टि दे। खास तौर पर मेरी माँके लिअे। वे ८० बरसकी हैं। मेरी परीक्षा हो रही है और अीश्वर मुझे जरूर पार लगायेगा। अिस कसौटीको मैं आत्मशुद्धिकी क्रिया मानती हूँ और अुसे आपके नाम पर अर्पण करती हूँ। ज्यादा अच्छे दिनोंकी आशामें मेरे विचार और मेरी प्रार्थनायें आपको ध्यान में रखकर अविरत श्रद्धा और निष्ठाके साथ होती हैं। प्यारे महात्माजी, अीश्वर आपकी रक्षा करे और आपका भला करे।

'कठिन भूमि गिरिवरकी घाटी
शोर मचाती नदियाँ बहतीं

सबके पार लगा अपनाओ,
मैं हूँ नाथ तुम्हारी दासी।'

ऐरिस्टार्शीके प्रेमपूर्वक प्रणाम।"

अेक और कार्ड पर अेक सुन्दर चित्र था और पीछे "**अीशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यांजगत् —**" मंत्र दिया हुआ था।

बापूने लिखा :

"Dear Sister,

"I continue to receive your kind messages. The latest brings the news of your financial worries. My prayers are certainly with you. Those who walk in the fear of God do not fear financial or any other losses. They often come to the God-fearing as blessings in disguise. May this trouble be so with you. Your faith and fortitude should cheer your aged mother.

Yours sincerely
M. K. Gandhi

"You know the next part of the beautiful verse you have quoted from an Upanishad. It means 'Enjoy the world by renouncing all.' How apposite!"

"प्यारी बहन,

"तुम्हारे प्रमभरे पत्र मुझे मिलते रहते हैं। पिछले पत्रमें तुमने अपनी आर्थिक परेशानियोंका जिक्र किया है। मैं तुम्हारे लिअे जरूर प्रार्थना करता हूँ। जो अीश्वरका डर रखकर चलते हैं, अुन्हें रुपये पैसेका या और किसी नुकसानका डर रखनेका कारण नहीं है। भगवानके भक्तोंके लिअे अक्सर अैसी मुश्किलें छिपे हुअे आशीर्वादके समान साबित होती हैं। तुम्हारी श्रद्धा और तुम्हारे धैर्यसे तुम्हारी माताजीको अुत्साह मिलेगा।

तुम्हारा
मो० क० गांधी

"तुमने अुपनिषद्‌के सुन्दर श्लोकका जो चरण अुद्धृत किया है अुसका अुत्तरार्द्ध यह है : '**तेन त्यक्तेन भुंजीथाः**'। यह कितना यथायोग्य है"

अब्बास बाबा वापस जेलमें न पहुँच सके अिसका अुन्हें कितना दुःख है, यह जाननेके लिअे अेक वाक्य काफी है :

"Need I say there is hardly a minute of my conscious hours when I am not thinking of you and your companions and wondering how much I am disappointing you?"

"मेरे जागते समयका पल भर भी अैसा नहीं जाता जब मैं आपका और आपके साथियोंका खयाल न करता होअूँ और यह सवाल मेरे मनमें न अुठता हो कि मैं आपको कितना निराश कर रहा हूँ।"

अुन्हें बापूने जो पत्र लिखा अुसमें कहा :

"You can't disappoint me even if you try. You may not therefore, allow such a thought to depress you."

"आप कितनी ही कोशिश करें तो भी मुझे निराश नहीं कर सकेंगे। अिसलिअे अैसे विचार करके अुदास न होना चाहिये।"

रैहाना बेचारी बीमारीसे परेशान है। अुसे बापूने अुर्दूमें लिखा — "कौन जानता है तन्दुरस्त रहनेसे अच्छा है या न दुरस्त रहनेसे। नल दमयन्तीकी कथा सुनी है न? नल बहुत खूबसूरत था, अुसे बचानेके लिअे खुदाने करकोटक नागको हुक्म दिया। जाओ नलको काटो और अुसे बदसूरत बना दो। जब नागने काटा, तो नल घबड़ा गया। आखिरमें अुसे पता चला कि ये तो खुदाकी न्यामत है। ठीक अैसा ही मैं तुम्हारे बारेमें जानता हूँ। अिसलिअे दर्दका अिलाज करते रहें, लेकिन अच्छे बुरेकी हरगिज फिक्र न करें। तुम्हें हर हालतमें गाना नाचना ही है और अम्माजानकी खिदमतमें रहना है। (फिर गुजरातीमें) मेरा भाषण पूरा हुआ। तुम्हें तो कुछ भी हो हँसते ही रहना है। अगर तुमने अपना सब कुछ अीश्वरको सौंप दिया है तो शरीर अुसका है, तुम्हारा नहीं है। रोग भी अुसीको है, तुम्हें नहीं है। फिर दुःख कैसा? जो गजल तुमने गुजरातीमें दी है वह समझनी पड़ेगी। तुम मानती हो कि तुम्हें होशियार शागिर्द मिला है। पर थोड़े ही समयमें तुम्हारी आँखें खुल जायँगी। जो होशियार होगा, वह शिष्य ही क्यों बनेगा? और वह भी तुम्हारी जैसी अुस्तानीका? अिसलिअे कोअी हर्ज नहीं। जैसी तुम वैसा मैं। या जैसा मैं वैसी तुम। यह कौन कह सकता है कि तुमने मुझे शिष्यके रूपमें पसन्द किया या मैंने तुम्हें अुस्तानीकी गद्दी पर बिठा दिया!

* * *

'वसन्त'के फाल्गुनके अंककी आनंदशंकरकी प्रासंगिक टिप्पणीसे वल्लभभाअीको और मुझे चिढ़ हुअी। 'अुन्होंने हमारे युद्धका पिछले महायुद्धके साथ कैसे मुकाबिला किया? प्रजाकी निर्धनताकी और दूसरी बातें कहकर और लड़ाअीमें किसी भी पक्षकी भलाअी नहीं होती, अिस तरहकी बातें कहकर नाहक क्यों बिनमाँगी सलाह देते हैं?' वगैरा। बापूने कहा — "नहीं, अैसी बात नहीं है। अुन्होंने तो यह कहा है कि आप तो अहिंसा भूलने लगे हो। अिसलिअे यह लड़ाअी मामूली लड़ाअीकी तरह होती जा रही है। और यह तो

मैं भी मानता हूँ कि हमारी भूलें होती हैं। ये डाकके डब्बे जलानेकी बात किसने सुझायी होगी? अिसमें फजूल अपार हानि होती है। अिसलिअे आनन्दशंकर कहते हैं कि अिस तरहसे यह युद्ध मामूली लड़ाअियोंकी कक्षामें अुतरता जा रहा है।" मैंने कहा — "मगर बादके अुद्‌गारोंमें अैसी कोअी बात है ही नहीं। 'हमारी लड़ाअी भी लम्बी चली तो दोनों पक्षोंको बेशुमार नुकसान करके ही बन्द होगी। हम तो अिस युद्धमें अेक भी पक्षकी अिष्ट सिद्धिका मार्ग नहीं देखते।' अिन सब अुद्‌गारोंमें अिस युद्धको ही गिरा दिया है।" बापू — "नहीं, नहीं, अिस मतलब अितना ही है कि अहिंसाको हम भूल गये हैं।"

मैं — "तो अुन्हें कहना चाहिये था कि तुम अिन अिन मामलोंमें अहिंसाके मार्गसे गिर गये हो।"

बापू — "यह ठीक है, परन्तु यह आनन्दशंकरके बूतेसे बाहरकी बात है। अुन्हें हमेशा न्यायाधीशकी जगह लेनेकी आदत है — नटराजनकी तरह। ये दोनों बुद्धिवादी हैं। हृदय धीरे धीरे पीछे चलता है। मगर न्यायाधीशका पद लें, अिसमें मुझे हर्ज नहीं है। हरअेक अखबारवाला जजकी जगह लेता है। मगर अिससे अुन्हें यह मान लेनेकी जरूरत नहीं कि दोनों पक्षोंमें अमुक तो सच होना ही चाहिये। अुन्हें दोनों पक्षोंकी तटस्थ भावसे जाँच करनी चाहिये और फिर अेक बिलकुल झूठा हो तो वैसा कहना चाहिये, अेक की ही भूल हो तो अुसका पर्दा फाश करना चाहिये। यह आनन्दशंकरकी ताकत नहीं कि वह हमारी लड़ाअीकी जमा रकम बताये। अुधारको बताकर कहेगा कि देखो, अिससे तुम्हारी जमाका सफाया हो जाता है।"

* * *

आज वल्लभभाअीको मिले पत्रमें खबर है कि अुनकी ९० वर्षकी माँ अभी तक भोजन बनाती है। काशीभाअी अुन्हें चीजें जुटा देते हैं और बुढ़िया दाल, चावल और साग पका देती हैं। यह भी अुस जमानेका अेक चमत्कार है। दस साल पहले अुनसे खाना बनानेका काम छुड़वा दिया जाता, तो शायद वे अिनकार कर देतीं। आज तो ३० सालकी साधरण शिक्षा न पाअी हुअी स्त्री भी खाना पकानेसे घबराती है।

२१-६-'३२

सुपरिण्टेण्डेण्टने आज शिकायत की कि कल जो कमेटी आयी थी अुसके सामने कुछ कैदियोंने शिकायत की कि सुपरिण्टेण्डेण्ट अुनके चौकमें १३ तारीखके बाद नहीं आया, और अिस बीचमें पाखाने जानेका अुन्हें पूरा वक्त ही नहीं दिया जाता। सुपरिण्टेण्डेण्ट कहता है कि मैं हर तीसरे दिन वहाँ जाता हूँ, फिर भी ये बम्बअीसे आये हुअे कैदी

क्यों झूठ बोलते हैं? मैं अिन लोगोंको सज़ा दूँगा। साफ आदमी है अिसलिअे कह दिया कि सजा दूँगा। वल्लभभाअी कहने लगे — "यह कैसे मालूम हो कि वह सबसे बड़ी जेलका सुपरिण्टेण्डेण्ट है। और यह क्या पता कि वह सही बात कहता है? अुन लोगोंका क्या कहना है, यह हमें कहाँ मालूम है?" बापू — "आपको किसी जेलका सुपरिण्टेण्डेण्ट मुकर्रर किया जाय तो मालूम पड़े।" अिसी तरह प्रेमाबहनकी की हुअी सुपरिण्टेण्डेण्टकी अनुदार आलोचनाके जवाबमें बापूने सुपरिण्टेण्डेण्टका पक्ष पेश करके प्रेमाबहनको शरमाया अैसा वह अपने आजके पत्रमें लिखती हैं। कल आनन्दशंकरभाअीके बारेमें भी अुन्होंने अैसा ही किया था।

* * *

हनुमानप्रसाद पोद्दारने अेक महीने पहले पत्र लिखा था कि अीश्वरकी श्रद्धा आपमें किस तरह जाग्रत हुअी, अिसके लिअे अपनी जिन्दगीके कोअी खास अवसर बताअिये। बापूने पूछा था कि यह अपने लिअे पूछते हो या 'कल्याण'में किसी दिन छापने लिअे? अुसका जवाब अभी आया कि 'कल्याण' के अुपयोगके लिअे। अुन्हें वापस पत्र लिखा — "किसी व्यक्तिको सामने रखकर तो आध्यात्मिक प्रश्नोंका अुत्तर देनेमें मुझे सुविधा रहती है। अखबारोंके लिअे लिखनेमें कष्ट होता है। अब यह ज्ञात हुआ कि जो प्रश्न मुझे पूछे थे वह 'कल्याण'के ही लिअे थे, तो अैसा ही समझो कि मेरी बुद्धि जड़-सी बन गयी है। अिसका यह मतलब नहीं है कि अखबारोंमें कुछ लिखा जाय, तो अुससे जनताको लाभ नहीं होता। मैं तो अपनी प्रकृतिका खयाल दे रहा हूँ। अिसी कारण मैंने 'यंग अिंडिया' में बहुत दफे लिखा है। मेरी दृष्टिसे वह कोअी अखबार नहीं था। परन्तु मित्रोंको मेरा साप्ताहिक पत्र था। और जो कुछ आध्यात्मिक बातें अुसमें और 'नवजीवन'में पाअी जाती हैं, वे करीब करीब किसी न किसी व्यक्तिको सामने रखकर ही लिखी गयी हैं। अिसका कारण भी है। मैं शास्त्रज्ञ नहीं हूँ, जो भी मैं बुद्धिका काफी अुपयोग कर लेता हूँ। परन्तु जो कुछ बोलता और लिखता हूँ, वह बुद्धिसे नहीं पैदा होता। अुसका मूल हृदयमें रहता है और हृदयकी बात निबन्धके रूपमें नहीं आ सकती है।"

बापूने यह भी लिखा था कि "किसको किस प्रसंग पर अीश्वरज्ञान हुआ, यह जाननेसे अीश्वरज्ञान नहीं होता, मगर संयममयी श्रद्धासे होता है।" पोद्दारने संयममयी श्रद्धाका स्पष्टीकरण माँगा। "'संयममयी श्रद्धा' शब्दप्रयोग मैंने लाचारीसे किया था। वह मेरे सब भाव प्रकट नहीं करता है। और कोअी शब्दरचना अिस वक्त मेरे खयालमें नहीं आती है। तात्पर्य यह है कि वह श्रद्धा मूढ़, विवेक-हीन, अन्ध नहीं होनी चाहिये। अर्थात् जिस जगह बुद्धि भी चलती है वहाँ कोअी कहे कि 'बुद्धि कुछ भी कहे, मैं श्रद्धासे वही मानता हूँ और मानूँगा' — तो अिस

श्रद्धामें संयम नहीं है। पृथ्वी गोल है या नहीं यह कहना बुद्धिका विषय है। तदपि कोअी कहे कि मेरी श्रद्धा है कि पृथ्वी सपाट है! यह श्रद्धा संयममयी नहीं है।"

पत्रके अूपरके भागमें जो भेद बताया है, वह बापूके लेखों और काका-जैमोंके निबन्धोंके बीचका भेद बताता है। और रोमाँ रोलाँ जब यह कहते हैं कि बापू Intellectual (बुद्धि प्रधान) नहीं हैं, तब शायद वे अिसके पूरे खयालके बिना बापू जो कहते हैं वही कहना चाहते हैं।

* * *

म्युरियल लिस्टरके साथ काम करनेवाली अेक स्त्रीने प्रश्न पूछा था कि सौन्दर्य देखने और भोगनेकी लालसा कैसे होती है? अुसे बापूने लिखा:

"A craving for things of beauty is perfectly natural. Only there is no absolute standard of beauty. I have therefore come to think that the craving is not to be satisfied; but that from the craving for things outside of us, we must learn to see beauty from within. And when we do that, a whole vista of beauty is opened out to us and the love of appropriation vanishes. I have expressed myself clumsily but I hope you follow what I mean."

"सुन्दर चीजोंकी अिच्छा बिलकुल स्वाभाविक है। अितनी ही बात है कि अिसका कोअी खास पैमाना नहीं है कि सुन्दर किसे कहा जाय। अिसलिअे मेरा यह खयाल बना है कि यह अिच्छा पूरी करने लायक नहीं है। बाहरी चीजोंकी लोलुपता रखनेके बजाय हमें भीतरी सुन्दरताको देखना सीखना चाहिये। अगर हमें यह आ जाय, तो सौन्दर्यका विशाल क्षेत्र हमारे सामने खुल जाता है। फिर अिस पर अधिकार जमानेकी अिच्छा मिट जाती है। यह बात मैंने जरा बेढंगेपनसे रखी है, मगर मैं आशा रखता हूँ कि मेरा मतलब तुम समझ जाओगी।"

दूसरा सवाल अुसने purpose of life (जीवनका ध्येय) के बारेमें पूछा था। अुसके लिअे लिखा:

"The purpose of life is undoubtedly to know oneself. We cannot do it unless we learn to identify ourselves with all that lives. The sum total of that life is God. Hence the necessity of realizing God living within everyone of us. The instrument of this knowledge is boundless selfless service."

"जीवनका ध्येय बेशक खुद अपनेको — आत्माको — पहचानना है। जब तक हम प्राणी मात्रके साथ अेकता महसूस करना न सीख लें, तब तक आत्माको

पहचान नहीं सकते । अैसे जीवनका समग्र योग ही अीश्वर है । अिसीलिअे हम सबमें रहनेवाले अीश्वरको जानना जरूरी है। अैसा ज्ञान बेहद और बेगरज सेवासे ही मिल सकता है । ”

रोलाँ दो तीन जगह लिखता है कि अछूतोद्धारका झण्डा स्वामी विवेकानन्दने फहराया और गांधीजीने अुठा लिया। रोलाँकी पुस्तक अेक अितिहासकारकी है। बापूसे पहले विवेकानन्द और दयानन्दने अछूतोंके अुद्धारका सवाल अुठाया था। अिसलिअे यह कहना कि बापूको वह अुत्तराधिकारमें मिला अितिहासके खयालसे ठीक है । मगर मैंने बापूसे पूछा — “आपको यह सवाल सूझा तब अिन दोनोंकी बात मालूम थी ?” तब बापूने कहा — “मैंने विवेकानन्दकी राजयोगके सिवा और कोअी पुस्तक आज तक नहीं पढ़ी है । दयानन्दके आर्यसमाजका पता था, लेकिन यह पता नहीं था कि अछूतोद्धारके कामकी अुन्होंने क्या कल्पना की थी। अछूतोंकी सेवाका काम मेरी मौलिक सूझ है।” मैंने कहा — “शायद यह कहा जा सकता है कि दक्षिण अफ्रीकाके वातावरण और वहाँके आपके कामके कारण यह प्रश्न आपके सामने खड़ा हुआ और आपको यह काम हाथमें लेनेकी सूझी हो।” बापू कहने लगे — “यह ठीक है; यह वहीं सूझी।” मैंने कहा — “‘दरिद्रनारायण’ शब्द विवेकानन्दका है, यह आप जानते थे ?” बापू — “नहीं, मैंने तो अिसे पहले पहल दासबाबूसे सुना। और यह मानता था कि वह अुन्हींका होगा। मगर बादमें मालूम हुआ है कि यह शब्द स्वामी विवेकानन्दका है।”

२२-६-’३२

मीरा बहनका पत्र आया। बापूके वाक्योंका यह भाव अुसे बहुत पसन्द आया कि जिन्दगी मौतकी तैयारी है। मौतके झूठे डर सम्बन्धी शेक्सपीयरके जो वाक्य अुसे याद आये और अुसने पत्रमें दिये, अुनमें अेक यह था “Cowards die many times before their deaths, the valiants only taste of death, but once.” “कायर आदमी अपनी मौतसे पहले कअी बार मरते हैं। बहादुरोंको तो मौतका आनन्द अेक ही बार मिलता है।” लेकिन बापूने कहा था कि अुनका भाव अिनमें अेकमें भी नहीं है। बापूने अिनमें हिन्दू मोक्ष भावना और बहादुरोंको अिसी जन्ममें मोक्ष हो जाता है और अुन्हें वापस नहीं आना पड़ता — यह पढ़ा कि

“I do not suppose you have noticed that ‘the valiants only taste of death but once’ has a deeper meaning conveying the perfect truth according to the Hindu conception of salvation. It means freedom from the wheel of birth and

death. If the word 'valiant' may be taken to mean those who are strong in their search after God, they die but once, for they need not be reborn and put on the mortal coil."

"'बहादुरोंको मौतका आनंद अेक ही बार मिलता है,' अिस वाक्यमें जो गहरा अर्थ भरा है वह तुम्हारे ध्यानमें नहीं आया दीखता। अिसमें हिन्दुओंकी मोक्षभावनाके अनुसार पूरा सत्य समाया हुआ है। अिसका अर्थ है जन्ममरणके फेरसे छुटकारा पाना। बहादुरोंका अर्थ 'अीश्वरकी खोजमें बहादुर' करें, तो अैसे लोग अेक ही बार मरते हैं। अुन्हें दुबारा जन्म लेना या मरना नहीं पड़ता।"

मैंने निश्चय करनेके बाद जान देकर भी अुस पर डटे रहनेवालोंको बहादुर और निश्चयको बार बार तोड़नेवालोंको कायर माना है। और निश्चयको तोड़नेवाले जितनी बार निश्चय तोड़ते हैं, अुतनी ही बार मरते हैं और बहादुरको अेक बार मरना पड़ता है, यह भाव मैंने अेक बार लगाया था। 'जीवन मौतकी तैयारी है' का भाव 'कर ले सिंगार चतुर अलबेली' में भी है। सिर्फ वहाँ जीवको मरनेसे पहले मौतकी तैयारी कर लेनेका अुपदेश है। अलबत्ता, जिसका जीवन अेक लम्बी तैयारी नहीं हो अुसे अन्तमें तैयारी सूझती ही नहीं। अिसलिअे अन्तमें बात वहीकी वही है।'

•

२३-६-'३२

जैसा थोड़े दिन पहले कहा था, बापूकी कलम ही हृदयसे चलती है और अुसमेंसे हरअेकके लिअे (अपने लिअे भी) योग्य अुद्‌गार निकलते हैं। कल तिलकम्‌को जो पत्र लिखा, अुसमें मीराके बारेमें लिखते हैं:

"She is a pure soul with an infinite capacity for self-sacrifice."

"वह विशुद्ध आत्मा है। अुसमें आत्मत्यागकी अपार शक्ति है।"

आज देवदासको लम्बा पत्र लिखा, क्योंकि यू० पी०के गवर्नरको जो तार दिया था अुसकी सूचना देनी थी। अुसमें भी पलभरमें अनेक शब्द चित्र भर दिये। "हरिलालकी लाल प्याली रोज भरी रहती है। पीकर अिधर अुधर भटकता है और भीख माँगता है। बली और मनुको धमकाता है। अिसमें भी नीयत रुपया अैंठनेकी दीखती है। मुझे भी बड़ी अुद्धत धमकियोंके पत्र लिखे हैं। मनु पर अधिकार करनेके लिअे बली पर नालिश करनेकी धमकी दी है। मुझे दुःख नहीं होता, दया आती है। हँसी भी आती है। अैसे और बहुत लोग हैं, अुनका क्या होगा? अुनके लिअे भी मुझे अुतना ही खयाल होना चाहिये न? वे सब भी स्वभाव नियत कर्म करते हैं। क्या करें?

हमारा बरताव सीधा होगा, तो वह अन्तमें ठिकाने आ जायगा। हरिलाल जैसा है वैसा बननेमें मैं अपना हाथ कम नहीं मानता। अुसका बीज बोया, तब मैं मूढ़ दशामें था। जब अुसका पालन हुआ, वह समय शृंगारका कहा जा सकता है। मैं शराबका नशा नहीं करता था। यह कमी हरिलालने पूरी कर दी। मैं अेक ही स्त्रीके साथ खेल खेलता था, तो हरिलाल अनेकोंके साथ खेलता है। फर्क सिर्फ मात्राका है, प्रकारका नहीं। अिसलिअे मुझे प्रायश्चित्त करना चाहिये। प्रायश्चित्तका अर्थ है आत्मशुद्धि। वह बीरबहूटीकी गतिसे हो रही है।" और नारणदासका चित्र — "यहाँ बैठे बैठे आश्रममें फेरबदल कराया करता हूँ। नारणदासकी अनन्य श्रद्धा, अुसकी पवित्रता, दृढ़ता, अुसका अुद्यम और कार्यदक्षता सबका लाभ ले रहा हूँ।"

*　　　　*　　　　*

अेक प्रसिद्ध महिलाने विधवा होकर अेक प्रसिद्ध सज्जनसे शादी की थी। अुस सज्जनके मरने पर क्या वह फिर विवाह करेगी? यह मैंने सहज ही पूछा। वल्लभभाअी कहने लगे — "अब अिस घोड़ेको कौन घरमें बाँधेगा? अुसे तो सभी जानते हैं। और अुसकी अुमर भी तो हो गयी। अब वह शादी करनेकी अिच्छा भी नहीं करेगी।" बापू — "मुझे याद है अेक ६४ सालकी औरतने ब्याह किया था। मिसेज ओ० अुसका नाम था। मै अुसे जानता था। अुसने शादी करनेके बाद मुझे लिखा था कि 'अब मैं मिसेज ओ० नहीं हूँ, परन्तु मिसेज पी० हूँ। आप हमारे यहाँ आयेंगे, तब मेरे पतिसे पहचान होगी।' अिस औरतने सिर्फ अेक साथी बनानेके लिअे शादी की थी।" मैंने कहा — "गेटेने ७३ वर्षकी अुम्रमें अेक १८ सालकी लड़कीसे ब्याह करनेकी अिच्छा प्रगट की थी। अुसके माँ बापको चोट पहुँची और अुन्होंने अिनकार कर दिया।" वल्लभभाअी — "गेटे था अिसलिअे चोट ही पहुँची। मैं होअूँ तो अुसे गरम लोहेके दाग लगाअूँ। और अुसे कहूँ कि तुम्हारी अकल मारी गयी है और वह दाग लगानेसे ही ठिकाने आयेगी।"

*　　　　*　　　　*

प्रेमाबहनके पत्रमें अिस बार महत्वके सवालोंकी चर्चा थी। अुन्हें बापूने बहुत लम्बा खत लिखा :

"मछलीके मामलेमें तुम्हारे लिअे कोअी अपवाद नहीं किया है। कॉड-लिवर ऑअिलकी मनाही है, मगर आश्रममें अुसे चलने दिया है। मांस मच्छीकी मांस मच्छीके रूपमें आश्रमके लिअे मर्यादा रखी है। मगर व्यक्तिके लिअे नहीं रखी। रखी भी नहीं जा सकती। अिसी लिअे अिमाम साहब खा

सकते थे। मान लो तुम्हारी जगह नारणदास हो। अुसने तो जन्म भर मांस वगैरा खाया नहीं है। मगर अुसे भयंकर बीमारी हो जाय और अुसकी मांस खाकर जीनेकी अिच्छा हो जाय, तो अवश्य ही मैं अुसे नहीं रोकूँगा। मेरे विचार वह आज जानता है, मगर मरनेका समय कुछ दूसरी ही चीज है। मरते वक्त अिच्छा हो जाय, तो अुसमें रुकावट न डालना मेरा धर्म है। अिससे अुल्टे, कोअी बच्चा हो और अुसके लिअे मुझे निश्चय करना हो, तो अुसे मरने दूँगा मगर मांस नहीं दूँगा। तुम्हें मालूम है कि बाके साथ अैसी ही बीती थी? बहुत करके यह किस्सा 'आत्मकथा' में है। न जानती हो और वहाँ भी कोअी न जानता हो, तो पूछ लेना। मैं लिख भेजूँगा। बाके और मेरे लिअे वह पुण्य प्रसंग था। अब समझमें आया? मैं तुमसे मछली खानेका आग्रह नहीं करूँगा। अुसके बिना तुम्हारी मौत होती हो और तुम मरनेको तैयार हो, तो मैं मरने देनेको तैयार हूँ। मछली खाकर शायद जी जाअेगी, तो भी मरनेके ही लिअे न? मगर यह धर्म तो अुसका है, जो अुसे माने और पाले। यह धर्म दूधके बारेमें मैं अपने पर ही कहाँ लागू करता हूँ? हाँ, मुझे प्राणी-मात्रके दूधके त्यागका धर्म दीपककी तरह साफ दीखता है। मगर अिस तरहके धर्म दूसरोंसे पालन करानेके नहीं होते, खुद ही पालन करनेके होते हैं।

* * *

"स्त्री-पुरुषके बारेमें तुमने ठीक पूछा है।

"जिस जिस बारेमें बच्चोंको कुतूहल पैदा हो और अुसकी हमें जानकारी हो, तो वह अुन्हें बतानी चाहिये; जानकारी न हो, तो अज्ञान मंजूर करना चाहिये। न बताने लायक बात हो, तो रोक देना चाहिये। और दूसरोंसे पूछनेके लिअे भी मना कर देना चाहिये। अुनकी बात कभी अुड़ा नहीं देनी चाहिये। हम मानते हैं अुससे बच्चे ज्यादा जानते हैं। और वे न जानते हों अुस विषयका ज्ञान हम अुन्हें न देंगे, तो वे अनुचित रूपमें लेना सीख जायँगे। अितने पर भी जो ज्ञान देने लायक न हो, अुसे यह जोखम अुठाकर भी हमें नहीं देना चाहिये। न देने लायक थोड़ा ही होता है। बीभत्स क्रियाका ज्ञान वे चाहें तो हरगिज न दें, फिर भले हमारी मनाहीके बावजूद वे टेढ़े रास्तेसे प्राप्त कर लें।

"पक्षियोंमें होनेवाली क्रिया बच्चोंने देखी और अुसे जाननेकी अिच्छा हुअी हो, तो मैं जरूर अुनका सन्तोष करूँ और अुससे ब्रह्मचर्यका पाठ पढ़ाअूँ। पक्षी, पशु और मनुष्यके बीचका फर्क बताअूँ। जो स्त्री पुरुष अैसा ही आचरण करते हैं, वे अिन्सानकी शकल पाकर भी पशुपक्षी-जैसे ही हैं। अिसमें निन्दाकी बात नहीं, असली हालतकी बात है। हैवानियतसे निकलनेके लिअे ही तो हमें अिन्सानकी शकल और अकल मिली है।

" मासिक धर्मका पूरा ज्ञान अुम्रको पहुँची हुअी लड़कीको देना चाहिये। अुससे छोटी लड़की अगर जानती हो और पूछे, तो अुसे भी जितना वह समझ सके अुतना समझाना चाहिये।

" हम कितनी ही कोशिश करें, तो भी लड़के और लड़कियाँ अन्त तक निर्दोष नहीं रह सकते। यह जानकर अुन सबको अेक खास अुम्रमें यह ज्ञान देना ही अच्छा है। अिस ज्ञानको पानेवाले ब्रह्मचर्यका पालन न कर सकें, तो अिस तरहका कमजोर ब्रह्मचर्य हमारे किसी कामका नहीं है। अिस ज्ञानके पानेपर ब्रह्मचर्य ज्यादा सबल होना चाहिये। खुद मेरे साथ तो अैसा ही हुआ है।

" ज्ञान देने और लेनेमें बहुत फर्क है। अेक आदमी अपने विकारोंको बढ़ानेके लिअे ज्ञान प्राप्त करता है, दूसरेको वह अनायास ही मिल जाता है। तीसरा विकारोंको मिटानेके लिअे और दूसरोंकी मदद करनेके लिअे वह ज्ञान प्राप्त करता है।

" अिस ज्ञानके देनेकी योग्यता रखनेवाला ही अुसे दे सकता है। तुममें यह जानकारी होनी चाहिये। आत्मविश्वास होना चाहिये कि तुम्हारे ज्ञान देनेसे लड़कियोंमें विकार हरगिज पैदा नहीं होगा। तुम्हें यह भान होना चाहिये कि तुम विकारोंको मिटानेके लिअे यह ज्ञान दे रही हो। अगर तुममें विकार पैदा होनेकी सम्भावना हो, तो तुम्हें देख लेना चाहिये कि यह ज्ञान देते समय तुममें विकार पैदा न हों।

" स्त्री-पुरुषके पतिपत्नीके सांसारिक जीवनकी जड़में भोग है। हिन्दूधर्मने अुसमें त्याग पैदा करनेकी कोशिश की है। या यों कहें कि सब धर्मोंने की है। पति ब्रह्मा-विष्णु-महेश है तो पत्नी भी वही है। पत्नी दासी नहीं, बराबरके हकोंवाली मित्र है, सहचारिणी है। दोनों अेक दूसरेके गुरु हैं।

" लड़कीका हिस्सा लड़केके बराबर होना चाहिये।

" जो धन पति कमाता है अुसमें पतिपत्नी दोनों बराबरके हकदार हैं। पति पत्नीकी मददसे ही कमाता है। फिर भले पत्नी रसोअी ही क्यों न बनाती हो। वह गुलाम नहीं, साझीदारिन है।

" जिस पत्नीके साथ पति अन्यायका बरताव करता हो, अुसे अुससे अलग रहनेका अधिकार है।

" बच्चों पर दोनोंका बराबरका हक है। यदि पत्नी नालायक हो, तो बड़े होने पर अुसका अुन पर हक नहीं रह जायगा। यही बात पतिके बारेमें लागू होती है।

" थोड़ेमें स्त्री-पुरुषके बीचमें जो भेद कुदरतने बना दिये हैं और जो खाली आँखों दिखाअी दे सकते हैं, अुनके सिवा और कोअी भेद मुझे मंजूर नहीं हैं। अब मुझे अैसा नहीं लगता कि अिस विषयमें तुम्हारा अेक भी सवाल बाकी रहा हो।

"नारणदासके बारेमें मेरा पूरा विश्वास है। वह कहे कि मुझे शान्ति है, तो मैं अशान्ति माननेको तैयार नहीं हूँ। मैंने अुसे खूब चेता दिया है। दूर बैठा हुआ अब अुसे तंग नहीं करूँगा। नारणदासमें अनासक्तिके साथ काम करनेकी बड़ी शक्ति है। अनासक्त हमेशा आसक्तसे बहुत ज्यादा काम करता है, और फुरसतमें हो अैसा दीखता है। वह सबसे बादमें थकता है। सच पूछो तो अुसे थकावट मालूम ही नहीं होनी चाहिये। मगर यह तो हुआ आदर्श। तुम वहाँ मौजूद हो, अिसलिअे अगर तुम्हें अशान्ति दिखाअी दे और यह लगे कि नारणदास अपने आपको धोखा देता है, तो तुम्हारा धर्म मुझसे अलग होगा। तुम्हें तो नारणदासको सावधान करना ही चाहिये। मैं भी वहाँ होअूँ और वह प्रत्यक्ष जो कहे अुससे दूसरी ही बात देखूँ, तो जरूर अुसे चेतावनी दूँ। तुम्हारी चेतावनीके बावजूद वह तुम्हारा विरोध करे, तो तुम्हें अुसका कहना मानना चाहिये। जब तक तुम अुसे सत्याग्रही मानती हो तब तक। कअी बार हमें अपनी आँखें भी धोखा दे देती हैं। मुझे तुम्हारे चेहरे पर अुदासी दिखे परन्तु तुम अिनकार करो, तो मुझे तुम्हारी बात मान ही लेनी चाहिये। मुझे यह भय हो या शक हो कि मुझसे तुम छिपाती हो तो दूसरी बात है। फिर तो तुमसे पूछनेकी बात नहीं रह जाती। जाननेके लिअे मुझे दूसरे साधन पैदा करने चाहियें। मगर आश्रमजीवन तो अिसी तरह चलता है। अुसकी बुनियाद सचाअी पर ही है। वहाँ अच्छे हेतुसे भी धोखा नहीं दिया जा सकता।

"४ जुलाअीकी बाट जरूर देखना। यह सोचनेकी बात है कि किस सालकी ४ जुलाअी। साल कोअी भी हो। महीने और तारीखका निश्चय हो जाय तो भी गनीमत है। और किसी महीनेका या दूसरी तारीखका अिंतजार तो नहीं करना पड़ेगा? यह ४ जुलाअी बीत जाय, तो १९३३ की जुलाअी तक शान्त रहना चाहिये।"

मीरा बहनको पत्र लिखा था। अुसमें बापूने अपने स्वास्थ्यके विषयमें जरा विस्तारसे हाल बताया था। अलोना कैसे छोड़ना पड़ा, पतले दस्त हुअे वगैरा। मेजरने कहा कि पत्रमेंसे यह हाल निकाल देना चाहिये। बापूने अन्दर लिख दिया — "अिसमेंसे कोअी बात प्रकाशित न की जाय।" बेचारा कटेली पत्र वापस ले गया। मेजर कहने लगे — "नहीं, दूसरा ही पत्र लिखा जाय। अिससे काम नहीं चलेगा। कानून अैसा है कि स्वास्थ्यके समाचार अिस तरह न दिये जायँ। और मीरा बहन पर तो सरकारकी आँख है। अिसलिअे यह पत्र सरकारके पास गये बिना नहीं रहेगा।"

वल्लभभाअीने पूछा — "क्या कुछ दिन पहले अेक लड़का यहाँ मर गया था?" मेजरने ठण्डेपनसे कहा — "हाँ।" बापू बोले — "कितना बड़ा था?"

सुपरिण्टेण्डेण्ट — "मुझे पता नहीं।" वल्लभभाअी — "अुसे क्या हुआ था?" सुपरिण्टेण्डेण्ट — "पालिया। दो ही दिन अस्पतालमें रहा और मर गया।" अुसने अिस तरह कहा मानो कुछ हुआ ही न हो और हमने सुन लिया!!

२४-६-'३२

मेजरसे बापूने पूछा — "अैसा कानून है कि स्वास्थ्यके विषयमें समाचार नहीं लिखे जा सकते?" मेजरने कहा — "हाँ, आप जैसोंके बारेमें तो लोग कुछ भी मान कर चिन्ता करने लगते हैं। आपकी तबीयतका हाल सुनकर श्रीमती ठाकरसी पूछने आयी थीं। आपको दस्त लग गये, यह खबर जाहिर हो जाय तो ढेरों मनुष्य पूछताछ करने आवें!" वल्लभभाअी — "आर्डिनेन्स निकलवा दीजिये कि गांधीके बारेमें किसीने खबर नहीं पूछना!" बापू — "नहीं, मगर मैं जानना चाहता हूँ कि अैसा नियम है या हमारे ही लिअे बना रहे हैं? मेरे लिअे हो तो मैं समझ सकता हूँ। लेकिन नियम ही हो तो मुझे अुसके खिलाफ लड़ना पड़ेगा।" मेजर — "नियम तो है ही। मगर लड़नेकी बहुत बातें हैं। अिसके विरुद्ध क्या लड़ेंगे?' बापू — "अैसी छोटी छोटी चीजें तो बहुत हैं। और मेरे खबर देनेसे तो अुलटे झूठी खबरें फैलनी बन्द हो जायँगी।" मेजर — "हम सच्ची खबर देते हैं। कोअी आदमी ज्यादा बीमार हो जाय, तो तार दे देते हैं।" जेलर — "जो लड़का मर गया, अुसके बारेमें टेलिफोन किया था।" बापू — "यानी गम्भीर बीमारी हो जाय तब तक आप ठहरे रहते हैं।" वल्लभभाअी — "अैसा ही होगा कि जब मर जानेका डर पैदा हो जाय, तभी खबर दी जाय।" मेजर चिढ़ गया।

बापूसे मैंने कहा — "अुस लड़केकी मौतके बारेमें अिसने जो लापरवाही दिखाअी अुससे मुझे बड़ी चिढ़ हुअी है।" बापू — "नौकरीमें मनुष्य अैसे ही बन जाते हैं।" मैं — "हमारे यहाँ . . .नगा आदमी था, मगर किसीकी बीमारीकी बात हो तो अुसे चिन्ता रहती थी। दुःख भी होता था। रोज अुसका जिक्र करता और खबर भी पहुँचा देता था।" बापू — "वह आदमी तो शराब पीता था न? शराब पीनेवालेकी भावनायें अैसी ही नाजुक होती हैं।" मैं — "आश्चर्य है।" वल्लभभाअी — "देखना, कहीं भावनाको तेज बनानेके लिअे शराब पीना न सीख लेना।" बापू कहने लगे — "टॉल्स्टॉयने अुस आदमीको जब तक शराब पिलायी, तब तक तो हत्या करनेकी अुसकी हिम्मत नहीं होती थी। जब अुसने तम्बाकू पी, तब अुसकी भावना भोंटी होने लगी। बुद्धिको धुआँ लगा कि फिर मनुष्य जो चाहे वह कर बैठता है।"

यह हँसी दिल्लगी हो रही थी कि मेजर वापस आ गये। साथमें मेजर डोओील और टॉमस थे। डोओीलने टॉमसका परिचय कराया। बापूके सामने कुरसी डालकर बैठा। टॉमस (गृहमंत्री) से बापू पहले कभी मिले नहीं थे। अुसने सफाअी दी कि "मैं किसी सरकारी कामसे नहीं आया हूँ। सिर्फ आपसे परिचय करने आया हूँ।" बापूने कहा — "मैं बहुत खुश हुआ।" तबीयतके हाल पूछे। आबहवाकी बात चली। यह पूछा कि पुस्तकें-वुस्तकें काफी हैं या नहीं। अुर्दू पढ़नेका जिक्र निकला। बापूने कहा — "लाहोर अंजुमनकी किताबें मेरे खयालसे आँखें खोलनेवाली हैं।" टॉमसने बहुत दिलचस्पीके साथ सुना और पूछा कि "दूसरी देशी भाषाओंमें भी क्या अैसी पुस्तकें हैं?" बापू बोले — "मुझे मालूम नहीं। गुजरातीमें खास अिस तरहकी नहीं हैं।" फिर पूछा — "अिसमें पैगम्बरोंके बारेमें है?" बापूने कहा — "नहीं, मुसलमान धर्मके बारेमें सब कुछ है। और मैं तो मुसलमान मानस समझनेके लिअे अिन्हें पढ़ता हूँ।" फिर टॉमसने पूछा — "क्या आप कुछ लिख रहे हैं?" बापूने कहा — "हाँ, आज कल आश्रमका अितिहास लिख रहा हूँ।" टॉमस — "तब तो आपको बहुत कागजात देखने पड़ते होंगे।" बापू बोले — "नहीं, मैंने तो 'आत्मकथा' और 'सत्याग्रहका अितिहास' भी कागजातके बिना ही लिखा था।" टॉमस — "सब कुछ याददाश्त परसे?" बापू — "हाँ, और बादमें कागजातसे मिलान करके देखने पर अुनमें कोअी भूल नहीं जान पड़ी। यह अितिहास तो लिखना आसान है, क्योंकि अिसमें अैतिहासिकसे नैतिक दृष्टि ज्यादा है। मुझे अिसमें यह लिखना है कि सब व्रतों और नियमोंका विकास किस तरह होता रहा है।" यह सुनकर कि बापू सब कुछ स्मृतिसे ही लिखते हैं, टॉमस तो सुन्न ही रह गया। फिर मुलाकातोंकी बात निकली। "आप सगेजिनीसे तो नहीं मिलते होंगे।" बापू — "अुनसे मिलनेकी अिजाजत नहीं है।" मीराबहनकी मुलाकातकी बात निकली। टॉमस कहने लगे — "मगर आपने दूसरी मुलाकातें क्यों बन्द कर दीं? अिस तरह आपने अपनेको सज़ा क्यों दी?" बापू — "जो काम वे करती हैं अुसके कारण अुन्हें न मिलने दिया जाय, तो मुझे किसीसे भी नहीं मिलना है।" टॉमस — "मगर वे विलायत जो पत्र भेजती हैं। वे भेजना बन्द कर दें तो हमें आपत्ति नहीं।" बापूने कहा — "बन्द तो नहीं करेंगी। आपको देखने हों तो देखिये।" टॉमस — "मगर जो नुकसान होना है वह तो हो जाता है। हम तो बादमें ही देख सकते हैं न?" बापू — "आप अुसका खंडन कीजिये। वह भरोसेके लायक होगा तो वे सुधार भी कर लेंगी।" टॉमस — "मगर नुकसान होनेके बाद सुधार कैसा?" बापू — "यों तो क्या सरकार गलत खबर प्रकाशित नहीं करती? मानवीय

व्यवहारमें अैसा तो होता ही रहता है।" टॉमस — "हो सकता है, मगर हमें तो अैसी खबरें फैलनेसे रोकनी चाहियें।" बापू — "आप चाहें तो मैं अैसा कर दूँगा कि अुसकी नकल साथ साथ आपको भी मिल जाय। मगर काटछाँट नहीं होने दूँगा। आपको तो आपके विरोधियोंकी बात सच हो, तो अुनको धन्यवाद देना चाहिये।" टॉमस — "मगर सभी सच्चे नहीं होते।" बापू — "मगर मीरा तो हमारे सच्चे आदमियोंकी पहली पंक्तिमें है। वह जानबूझकर जरा भी झूठ नहीं बोलती।" टॉमस — "अैसा होगा। मगर स्त्री कैसी भी हो, अुसे जल्दीसे सब कुछ मान लेनेकी आदत होती है।" बापू — "मीरा अिस किस्मकी नहीं है। मगर यह तो मैं कर ही सकता हूँ कि वह जो कुछ लिखे, अुसकी नकल आपको भेज दे।" प्रान्तीय स्वराज्यकी बात निकली। अुमीने छेड़ी! बापूने कहा — "मेरे प्रान्तीय स्वराज्यमें और आम तौर पर समझा जाता है अुस प्रान्तीय स्वराज्यमें फर्क है। मेरे प्रान्तीय स्वराज्यमें प्रान्तकी सत्ता सभी बातोंमें सर्वोपरि होगी। सेना, आबकारी और सभी बातोंमें। बड़ी सरकारका नैतिक अंकुश रहेगा, मगर अिससे ज्यादा जरा भी नहीं। सेम्युअल होरसे मैंने यही बात कही थी। और वह समझ गया। अिसीलिअे अुसने कहीं भी मेरा अुपयोग नहीं किया और बोला नहीं कि गांधीको प्रान्तीय स्वराज्यसे सन्तोष है।" टॉमस — "मगर आप जैसा प्रान्तीय स्वराज्य चाहते हैं, वैसा तो आकाशमें अुड़ना ही कहलायेगा। अुस पर नैतिक सत्ता तो चाहिये न? काम किस तरह चलेगा?" बापू — "हाँ, वहाँ भी आदमी तो प्रान्तोंसे ही भेजे हुअे होंगे न! अुन्हें मानना चाहिये कि प्रान्त जो कुछ करता है ठीक करता है। क्या यह नहीं माना जाता कि राजाकी नैतिक सत्तासे सब काम होता है? और जैसे वह स्वाग चलता है, वैसे ही यह स्वाँग भी चलेगा। अैसा प्रान्तीय स्वराज्य दो, तो मैं आज ही ले लूँ। मैं जानता हूँ कि मेरा यह प्रान्तीय स्वराज्य सप्रू, शास्त्री वगैराको पसन्द नहीं है। कुछ कांग्रेसियोंको भी पसन्द न हो, मगर मुझे तो यही चाहिये।" टॉमस — "ये तो आकाशमें अुड़नेकी बातें हैं। और अिसके लिअे अनिश्चित समय तक ठहरना चाहिये।" बापू — "मैं किसी भी समय तक ठहरनेको तैयार हूँ।" टॉमस — "मगर आज आधी रोटी मिल रही हो, तो क्यों नहीं लेते?" बापू — "जरूर ले लूँ, अगर मुझे भरोसा हो कि वह रोटी है। मगर रोटी न हो और मिट्टी या पत्थर हो, तो कैसे लूँ? अुसके बजाय असली रोटीका अिन्तजार न करूँ?"

मेजर डोअील बापूसे दाँत लगाये रखनेकी सिफारिश कर गये। कहने लगे कि अेक बार मसूढ़ोंको खुराक चबानेकी आदत पड़ जाती है, तो फिर वे दाँतोंके चौखटेको पकड़ते नहीं। जाते जाते टॉमसने वल्लभभाअीसे हाथ मिलाया

और मेरे साथ भी मिलाया। मुझसे चरखेके बारेमें बातचीत की। अुसका अज्ञान यहाँ तक था कि पूछा — "४० वार सूतमें अेक कोट बन जाता है?" मैंने कहा — "१८००० वारसे अेक धोती बनती है।" तब कहने लगा — "ओहो, तब तो आप १८ दिन कातें, तब अेक धोतीके लायक कते। यही न! यह तो बड़ा घाटेका धन्धा है।" मैंने कहा — "यह फुर्सतका काम है। मुख्य धन्धेके रूपमें अिसकी बात ही नहीं है।" तब कहने लगा — "यह अरुचिकर तो लगता ही होगा।" मैंने कहा — "नहीं, यह तो आराम है। दिन भर पढ़ने-लिखनेसे अूब जानेके बाद अुससे मनको हटाकर अिसमें लगानेसे जो परिवर्तन होता है अुससे चित्तको आराम मिलता है।" वह कहने लगा — "आराम तो क्या मिलता है? यह तो यंत्रिक काम है। आराम तो ब्रिज-जैसा कोअी खेल खेलनेसे मिलता है।" मगर अिस बेचारेको क्या पता कि ब्रिजमें शायद वह हजार कमा ले या खो दे, मगर गरीबकी जेबमें अेक पैसा भी नहीं जाता!

बापू आज मोगर पटेल (स्यादलावाले) से मिले। अुन्होंने वल्लभभाअीको सन्देश भेजा कि बारडोली लाज नहीं गँवायेगी। अिसमें जो लोग पड़े हैं अुनमेंसे कितने तो बर्बाद होंगे ही। बेचारे डॉ० फाटक (सतारावाले) ने कहा — "मुझे कुछ कहना नहीं है। मगर हमको चक्कीका काम अितना ज्यादा देते हैं कि ७ से ३ बजे तक हमें फुर्सत ही नहीं मिलती।"

अभी मालूम हुआ कि ये लोग मिलने आते हैं, तब बापू जमीन पर बैठते हैं; क्योंकि अुन लोगोंके लिअे कुरसियाँ नहीं रखी जातीं। अिसलिअे बापू भी नीचे ही बैठे न?

* * *

यह बात निकलने पर कि तैयबजी बावाके दाँत असली हैं या बनावटी, बापू कहने लगे — "वे तो पंजाबमें भी मरने जैसे हो गये थे न? मुझे बुलाकर वसीयत भी कर दी थी। दो तीन दिनमें वापस अच्छे होकर काममें लग गये। मगर अितना होने पर भी वे अपने घर जानेकी बात तक नहीं करते थे। कहते कि घर नहीं जाना है। मिसेज तैयबजीको यहाँ बुलवा लो!"

* * *

प्रान्तीय स्वराज्यके बारेमें और बातें: बापूने कहा — "अिस स्वराज्यसे ही सारे देशका स्वराज्य हो सकता है। यही सच्चा स्वराज्य है। वर्ना वह तो कोअी स्वराज्य नहीं है। वे लोग जानते हैं कि फेडरेशन दे देनेसे कुछ भी राष्ट्रीय अेकता हो नहीं सकती। अिसलिअे वे अिस फेडरेशनकी बातें करते हैं। सप्रू, शास्त्री और जयकर मुसलमानोंसे डरते हैं। अिसलिअे मजबूत बड़ी सरकार

माँगते हैं। हमारा मजबूत केन्द्र प्रान्तोंमें ही है। अपनी जरूरतके अनुसार हमारी ही फौज हो, और हम अपने ढंगसे सारा काम काज चलायें। अिसका अेक ही नतीजा होगा। हर प्रान्त अपने अपने ढंगसे विकास करता हुआ सारे देशका विकास कर दे या लड़ मरे। आज तो केन्द्र अुन्हें छीलकर खा जाता है। मगर जिस किस्मका फेडरेशन नरम लोग माँगते हैं और ये लोग दे रहे हैं, वह प्रान्तोंको खा जायगा। अिसमें तो वल्लभभाअीके शब्दोंमें म्युनिसिपल स्वराज्य है। मैं जो कल्पना करता हूँ वह अैसी स्वतंत्रता है, जैसी अमरीकाके राज्योंकी या स्विट्ज़र्लैण्डके नगर राज्योंकी है। सम्भव है अिस मामलेमें बहुतसे हमारे कांग्रेसी भी मुझसे सहमत न हों। मगर अिससे क्या? वे भी समझ जायँगे। मजबूत केन्द्रका परिणाम देखना हो, तो सिक्केका सारा अितिहास देख लो न। ३५ करोड़ रुपया तो सिक्के ढलवानेमें ही फायदा होता है। वे रिज़र्वमें ले गये और गला दिये गये।"

अिस बार बापूने आश्रमकी डाक आज शनिवारको ही पूरी कर डाली। आश्रमके पत्र भी कुछ कम थे। और बाहरके पत्र तो कम हो ही गये हैं। सरकारकी कितनी अन्धेर गरदी है, अिसका नमूना आज सुपरिण्टेण्डेण्टसे मिल गया। पर्सी बार्टलेटको

२५–६–'३२

(टागोरकी अपीलके जवाबमें) बापूने मअीके महीनेमें पत्र लिखा था और अुसे महत्वका मानकर सुपरिण्टेण्डेण्टने सरकारके पास भेज दिया था। वहाँसे वह भारत सरकारके पास गया, वहाँसे अिंडिया आफिसमें गया और आखिर अिस महीनेमें पर्सी बार्टलेटको खूब देरसे अभी अभी मिला। यह पत्र यॉर्कके आर्चबिशप और लिण्डसे और यंग हस्बैण्ड और मरेके कव्हरिंग लेटरके साथ प्रकाशित हुआ है। अिसलिअे अुसके बारेमें चर्चा शुरू हुअी। बम्बअी सरकारकी आज नींद खुली, तो सुपरिण्टेण्डेण्टसे पूछती है कि गांधीने यह खत कब लिखा? तुमने पास कैसे किया? वगैरा वगैरा। सुपरिण्टेण्डेण्ट साहबने पानीसे पहले पाल बाँध रखी थी, अिसलिअे बड़े खुश थे। पालको पक्की और मजबूत करनेके लिअे मुझसे खतकी नकल ले ली और कहने लगे — "अब मैं लिखूँगा कि मैंने तो नकल तक रख ली थी!" फिर खबर दी कि "बिरलाके पत्रके बारेमें भी तहकीकात की गयी है। अुसमें तो कुछ था नहीं। अुन्होंने विलायत जानेके बारेमें राय माँगी थी और आपने कहा था कि मैं यहाँसे राय नहीं दे सकता। अिस मामलेमें मेरे विचार सबको मालूम हैं। अिसमें जाँच करनेकी क्या बात है?" अैसा लगता है कि यहाँसे जानेवाले पत्रोंसे सरकार अधीर बन गयी है। अिसलिअे भी अैसा हो सकता है कि अिस सप्ताह यहाँ थोड़े पत्र दिये गये हों! भगवान जाने।

आज वल्लभभाअीने पूछा — "मोज़िज़ कौन था? वह मुहम्मदके बाद हुआ या पहले?" आश्रमकी लड़कियोंमें शारदा बड़ी विचक्षण है। अुसका पूछा हुआ अेक सवाल यह था कि अगर बहन अेक ही धर्मका फलकी आशा रखे बिना पालन करती हो, तो वह भाअीकी सहधर्मचारणी क्यों नहीं कहलाती? आश्रममें अब पक्षी बहुत आने लगे हैं, अिस पर भी अिस लड़कीने आनन्द प्रगट किया था। और नये आये हुअे मोरोंमें से जो अेक खूबसूरत मोर मर गया, अुसका जिक्र करके लिखा कि जब वह जीता था, तब बहुत शोभायमान लगता था। मगर मर गया तब बहुत बुरा लगता था और शरीर बदबू देता था। बापूने अुसे लिखा — "जो बात मोरकी वही अपनी समझ। सुन्दर दीखनेवाले स्त्री-पुरुष भी मरनेके बाद दीखनेमें अच्छे नहीं लगते और हम अुन्हें जल्दीसे जला डालते हैं। अिसीलिअे शरीर पर मोह न रखना चाहिये। . . . सहधर्मचारिणीका अर्थ मूलमें जो तू करती है वही है। मगर व्यवहारमें यह पत्नीके लिअे ही अिस्तेमाल होता है। बहन शादी होने पर भाअीके साथ नहीं रहती। 'चारिणी' में जीवनभर साथ रहनेकी गन्ध है। और शब्दका अेक अर्थ चालू हो गया है अिसलिअे बदलना मुश्किल है। जरूरी भी नहीं है।"

अेक दूसरे पत्रमें लिखा — "मन्दिरों और चौराहोंका अुपयोग तो मशहूर है। अुनके जरिये लोग जमा होते हैं, भजनादि करते हैं और सभायें वगैरा करते हैं। और यही अुद्देश्य था।

"मूर्तिपूजाकी जरूरत है या नहीं, यह प्रश्न अुठता ही नहीं। क्योंकि यह अनादिकालसे है और रहेगा। देहधारी मात्र मूर्तिपूजक ही होता है।

"वैष्णवधर्मकी पूजा विधिमें फेरबदल अिष्ट हो सकता है। अीश्वर सब जगह है, अिसलिअे मूर्तिमें भी है। मूर्तिपूजाका नाश मैं असम्भव मानता हूं।"

लड़केकी पत्नीको: "बाबूके कानमें तेलकी बूँदें डालती हो, अुसमें लहसनकी कली कड़कड़ा लो तो शायद ज्यादा फायदा देगा।"

अेक और पत्रमें — "अनासक्तिका अर्थ बेशक यह है कि अपने और अपनोंके प्रति हम अनासक्त रहें। 'पर'के प्रति यानी सत्यके प्रति, अीश्वरके प्रति आसक्ति और वह यहाँ तक कि तन्मय हो जायँ, तद्रूप हो जायँ। यह अर्थ नहीं समझमें आता, अिसीलिअे निरुत्साह वगैरा दोष पैदा हो जाते हैं।"

२६-६-'३२

आज अचानक अॅल्फोन्सोको बुलाने गया तो वहाँ केसवेलसे मुलाकात हो गयी। अुसे अफसोस है कि वह हमसे नहीं मिल सकता। अुसे भ्रम है कि शायद अुसने राजनीतिक कैदियोंके बारेमें अखबारोंमें पत्र लिखा, अिस कारण मुलाकात

बन्द हो गयी हो। जयकरसे मिलता है। कहता था आज जयकर आ रहे हैं। वे बिलकुल निराश हो गये हैं और सम्भव है विधान-समितिसे अिस्तीफा दे दें। क्योंकि अुसमें कुछ भी काम नहीं हो सकता। अिसी विषयमें चर्चा करनेके लिअे वे यहाँ आ रहे हैं। बेचारेने कहा कि दो हफ्तेसे पत्र लिख रहा हूँ कि मेरे लायक कोअी कामकाज हो तो लिखिये। पुस्तकें, फल वगैरा जो कुछ चाहिये, मँगा लीजिये। मगर अुसके पत्र यहाँ पहुँचने दिये जायँ तब न!

साप्ताहिक 'टाअिम्स'में कितनी ही चीजें अच्छी आती हैं: अेक अंग्रेज हिन्दुस्तानकी स्त्रियों पर अच्छी लेखमाला लिख रहा है। 'दुर्गावती' — महोबाकी राजपुत्री — को कौन जानता था? बापूको लेख पढ़कर सुनाया गया। अुन्हें वह बहुत पसन्द आया। नटराजन मताधिकार पर बढ़िया लेखमाला लिख रहे हैं। और परोक्ष बालिग मताधिकारवाले लेखमें अुन्होंने बापूके गोलमेजी परिषद्के भाषणका खूब समर्थन किया है। 'टाअिम्स'में लॉर्ड ग्रेके सम्बन्धमें अेक मजेदार किस्सा है। अुनकी ७० वीं वर्षगाँठ सर जेम्स बेरीने अपने यहाँ मनायी। लार्ड ग्रे राजकाजसे निवृत्त होकर फेलोडनमें आराम ले रहे हैं और पक्षियोंके साथ कल्लोल करते हैं। सर जेम्सने भाषण देते हुअे कहा कि मैंने अपने केनरी पक्षीसे बात की कि आज ग्रेका जन्मदिन है। हम मनायें? तब अुसने तुरन्त ग्रेको पहचान लिया और बोला — मनाअिये। मगर हम सबको अुनसे मिलने बुलाना। ये सब पक्षी जमा किये गये थे। हमारे यहाँ न तो पक्षियोंका शौक है, न फूलोंका, न हरियालीका और न पशुओंका। कालिदासके जमानेमें आसपासकी सृष्टिके साथ मनुष्य जो अेकता अनुभव करता मालूम होता था, अुसके प्रति हम अहिंसाके पुजारी अुदासीन हैं, जब कि पश्चिमी देशोंके लोगोंकी — जिनका अहिंसासे कुछ काम नहीं — बाहरी सृष्टिके साथ अेकता पग पग पर नजर आती है। म्युरियल पत्र लिखती है तो वसन्तके आनेके साथ साथ जिन जिन फूलोंसे बाड़े-बाड़ियाँ और जंगल ढक जाते हैं अुनका वर्णन करती है। प्रीवाकी पत्नी लिखती है कि अुसके छोटेसे बाड़ेमें होनेवाली कअी तरकारियोंके जो पौदे खिल रहे हैं, अुनपर वह न्योछावर है। और हम!

'अन्न और फलके भेद' के बारेमें रामेश्वरदासको लिखा:

"यह समझ लेना कि अनाज और फल खानेमें जो भेद पैदा कर दिया गया है वह झूठा है। शारीरिक और आध्यात्मिक दृष्टिसे कितने ही पदार्थ जो अनाज कहलाते हैं कितनी ही परिस्थितियोंमें फल कहलानेवाली चीजोंसे ज्यादा सात्विक हो सकते हैं। मूँगफली फल मानी जाती है मगर लगभग सभी रोगोंमें मना है, जब कि चावल अनाज होने पर भी मर्यादाके साथ खाया जा सकता

है। जिसे सिर्फ अिन्द्रिय दमन करना है, वह चावल खाकर जैसे तैसे गुजर कर सकता है। मगर मूँगफली अुसके लिअे त्याज्य हो सकती है। तुम्हारी प्रकृतिके लिअे पेड़े जहरके समान समझना। दाल चावल, रोटी साग वगैरा भारी भोजन खानेके बजाय शामको थोड़ा फल यानी मुनक्का, संतरे, अनार या अैसी ही कोअी रसदार चीज खाओो तो वह जरूर हलका रहे। वैसे खानेकी चीजके रूपमें यही मानना कि दोनों अनाज हैं। अन्न और फलका भेद स्वाद छोड़नेमें असमर्थ होते हुअे भी भगवानको और अपनेको धोखा देनेवाले वैष्णवोंने पैदा किया मालूम होता है। वैष्णव घरानेमें पैदा होनेके कारण मैं अनुभवकी बात लिख रहा हूँ।"

२७-६-'३२ आज कातते समय मुझे खूब थकावट मालूम हुअी। या तो अिन पूनियोंसे ५० नम्बरका सूत निकालनेकी ताकत नहीं है या फिर अभी मेरा हाथ ही नहीं बैठा है। मगर धीरे कतता है और टूटता है, अिसलिअे लगभग पाँच घंटे ८४० वारमें ही चले जाते हैं। और थकावट मालूम होती है सो अलग। यह घाटेका सौदा है। बापूसे मैंने कहा कि मैं हार गया! बापू कहने लगे— "फौरन फेरबदल करना चाहिये। थक जाते हो और लथड़ जानेकी सम्भावना हो, तो अैसी खींचतानमें कोअी सार नहीं है। कातना आधा कर डालो।" अिसलिअे कलसे ही यह फेरबदल करना पड़ेगा। फिर भी मेरी गति तो कुछ है नहीं। नारणदासके पत्रसे पता चलता है कि केशू मिस्रकी रूअीसे ५० नम्बरका सूत ३५० फी घण्टेकी गतिसे निकालता है। कहाँ केशूकी गति और कहाँ मेरी! **योगः कर्मसु कौशलम्**के सूत्रको मैं अेक भी बातमें पहुँच सकूँगा, यह नहीं दीखता। काफी समयसे पींजता हूँ फिर भी अैसी पूनियाँ बनाना नहीं सीखा, जिनमें खामी न हो। और कातनेमें सूत अच्छा है तो गति कुछ नहीं!

२८-६-'३२ कलका सोचा हुआ फेरबदल आज किया, तो जरा भी थकान नहीं हुअी। और दो घंटेकी बचत होनेसे वह समय पढ़नेमें दिया जा सका। आज होरका बयान आया। अुसका कहना है कि जैसे जैसे प्रान्त और रजवाड़े तैयार होते जायँगे, वैसे वैसे फेडरेशन होता जायगा; अभी तो प्रान्तीय स्वराज्यका घूँगर ले लो। सुपरिण्टेण्डेण्टने बापूसे पूछा — "आपको कैसा लगता है।" बापू कहने लगे — "लगता क्या! नरम दलवाले जो सोचते थे, सो तो है नहीं। लन्दनमें मैं जो कुछ समझ सका था, वही हो रहा है।"

"यह प्रान्तीय स्वराज्य है ही नहीं। मंत्रियोंके पास कुछ भी सत्ता नहीं रहेगी और हरअेक महकमा बहुत खर्चीला बन जायगा। जिम्मेदार हुकूमतकी दिशामें कहे जानेवाले अिस कदमसे करोड़ों रुपयेका खर्च बढ़ जायगा। प्रान्तीय स्वराज्यका मेरा अर्थ अैसा है कि केन्द्रीय सरकारको प्रान्तोंकी सेवा करनी चाहिये, प्रान्तोंको केन्द्रकी नहीं। अिस मसविदेमें तो प्रान्तों पर केन्द्रकी हुकूमत चलेगी। ये सारे पूरी गारण्टीवाले सनदी कर्मचारी, जिन्हें हम अपनी अिच्छाके अनुसार अलग नहीं कर सकते, हमारे सिर पर बैठे रहेंगे। फिर प्रान्तीय स्वराज्य कहाँ रहा?" सुपरिण्टेण्डेण्ट कहने लगा — "तब तो लड़ाअी चालू रहेगी?" बापू — "क्या अिसमें शक है?"

आज बिरलासे हुंडावनके सवाल पर जितना महत्वपूर्ण साहित्य हो वह सब मँगवाया।

* * *

बापूके लोभका ठिकाना नहीं है। आश्रममें अेकके बाद दूसरा फेरबदल कराते ही जा रहे हैं। रोजनामचा बन गया है, हरअेकके कामके घण्टे लिखे जाते हैं, यज्ञका सारा सूत ले लिया जाता है, साढ़े तीन बजे सबको — बच्चों तकको — अुठाया जाता है, और चार बजे प्रार्थना होती है। अिस सारे दबावको सब कहाँ तक सह सकेंगे? हरअेक पत्रमें कुछ न कुछ नयी माँग होती ही है। जिनके घर बन्द हैं, वे साफ होने ही चाहियें। जरूर। मगर प्रेमाबहन पूछती हैं कि अिसके लिअे अिस चक्रमेंसे वक्त कहाँसे निकाला जाय। घर पर यह तारीख होनी चाहिये कि वह कब साफ हुआ और यह लिखा रहना चाहिये कि वह कब साफ होना चाहिये और अुसकी तारीख भी घर पर चाहिये। यह और काम बढ़ गया। बापूकी आशा अनन्त है। मगर क्या मनुष्यकी शक्ति भी अनन्त है? मैंने बापूका ध्यान अिस बातकी तरफ दिलाया कि कामके अिस चोखटेमें जकड़े हुअे बच्चोंको सोनेका काफी समय ही नहीं मिलता। अुन्होंने चर्चा करनेका वचन दिया है।

२९–६–'३२

मीराबहन और . . . के दो पत्र आये। . . . ने अपनी करुणाजनक हालत बयान करके जिन्दगीको खत्म कर देनेकी बातें भी कही हैं। तुरन्त बापूने . . . को पत्र लिखा। "आत्म-हत्याकी अिच्छा कैसे हो सकती है? मैं यह समझा हूँ कि तुमने कोअी चोरी तो की ही नहीं। तिसपर भी सट्टा फिर न करनेका निश्चय कर लिया, अिसलिअे यह किस्सा पूरा हुआ। चोरी की हो तो भी वह आत्म-हत्याका कारण नहीं हो सकती। जो अपनी चोरी मंजूर कर ले वह आदमी अुससे

अच्छा माना जायगा, जो चोरी करते पकड़ा न गया हो या चोरीका जिसे कभी लालच नहीं हुआ हो। अिसलिअे तुम्हारे लिअे आत्महत्याका कोअी कारण ही नहीं है। अब रही बात कर्जकी। सो तुम्हारे पास जो कुछ है वह लेनदारोंको सौंप दिया कि तुम्हारी जिम्मेदारी पूरी हुअी। लेनदार तुम्हें दिवालेमें धकेलें, तो धकेलने दो। अुसमें भी कोअी शर्मकी बात नहीं। जो हो अुसे बर्दाश्त कर लेनेमें पुरुषार्थ है। आगेके लिअे तो मैंने तुम्हें लिखा ही है। तुम दोनों आश्रममें जाकर रहो। वहाँ जानेमें जरा भी संकोच न करना। अैसा घमण्ड भरा खयाल न करना कि जहाँ धनवान होकर गये, वहाँ गरीब बनकर कैसे जायँ। आश्रम साधुवृत्तिके आदमियोंके लिअे है। मुझे लिखते रहना। मीराबहनसे अुत्साह मिले तो लेना। सत्संग अेक पारसमणि है, यह समझकर अुसकी सुगंधमें रहना।"

होरका भाषण आया। कांग्रेस जब तक सरकारका तिरस्कार करना नहीं छोड़ेगी, तब तक अुसके साथ सुलह नहीं हो सकती। लड़ाअी अधूरी बन्द नहीं हो सकती। ब्रिटिश राज्य जैसा साधनसम्पन्न राज्य अिस आन्दोलनको न दबा सके तो अुसकी अिज्जत जाती रहे। अिस लड़ाअीको खत्म ही करना पड़ेगा — यह अुसकी ध्वनि थी। बापूने देवदासको जो पत्र लिखा था, अुसमें अनायास ही अिस बातका अप्रगट अुल्लेख हो गया था: "हम सबको खूब धीरज है। अिसलिअे दो चार साल बीत जायँ तो कोअी हर्ज नहीं। ब्याज सहित वसूल कर लेंगे।" मैंने बापूसे अिसका अर्थ नहीं पूछा। अैसे मामलोंमें ध्वनि ही रहे, तो अच्छा है। अुसका पृथक्करण नहीं किया जाता। और मैंने अिस तरहकी अुत्सुकताको दबानेकी आदत डाल ली है।

देवदासने राजाजीको Wet Parade (वेट पेरेड) पुस्तक भेजी थी। अिसपर राजाजीने अिस बारेमें कुछ अुद्गार देवदासके नाम भेजे पत्रमें प्रगट किये। अमरीकी और अंग्रेज लेखकोंके विषयमें अुनकी राय ध्यान देने लायक है:

"The 'Wet Parade' is a fine novelization of all that has to be said on American Prohibition. Chapter after chapter moves up in deliberate order, just clothing up all the prohibition points. Too much of set purpose and 'according to programme'. But a good and exhaustive treatment of the subject, to satisfy those already convinced and make them feel armed and strengthened. You may remember Mathuradas gave me once a book of Zola's to read. It is incomparably superior, but that book deals with alcohol, rather than prohibition. Sinclair's book is a powerful indict-

ment of corruption in American politics, — might frighten one in regard to political prospects in India.

"A real high class English writer is so superior to mere propaganda writers like Upton Sinclair. Soon after finishing the 'Wet Parade' I got a book of short stories of Hardy. The contrast was so great. The delicate touch of real art is so different from the propagandist style. Hardy has a short story called 'Son's Veto' that reminded me of the episode in the 'Wet Parade', the incident of Roger Chilcote and Anita. All the difference between raw manure and fruit made out of it. The substance is the same, but the composition and flavour are so different."

"अमरीकाके शराबबन्दीके प्रश्न पर जो कुछ कहने लायक है, वह सब कहनेके लिअे 'वेट पेरेड' में अुपन्यासकी कला भर दी गयी है। अेकके बाद अेक प्रकरणमें कहानी व्यवस्थित ढंगसे खुलती जाती है। शराबबन्दीके सारे मुद्दे अुसमें गूँथ दिये गये हैं। यह कुछ ज्यादासा लगता है कि निश्चित अुद्देश और निश्चित कार्यक्रमके अनुसार सब होता है। अिस रायवालोंको सन्तोष हो, बल मिले और वे दलीलों और तफसीलोंके हथियारोंसे लैस हो जायँ, अिस ढंगसे विषयके हरेक मुद्देकी अच्छी तरह छानबीन की गयी है। तुम्हें याद होगा कि मथुरादासने झोलाकी अेक किताब मुझे पढ़नेको दी थी। वह अितनी बढ़िया है कि अिसकी तुलना अुसके साथ नहीं हो सकती। अुस पुस्तकमें शराबबन्दी की नहीं, परन्तु शराबके सवालकी चर्चा की गयी है। सिंकलेरकी पुस्तकमें अमरीकी राजनीतिमें घुसी हुअी रिश्वतखोरी की जोरदार निन्दा है। यह पुस्तक पढ़कर हिन्दुस्तानके राजनीतिक भविष्यके बारेमें दिलमें डर पैदा होता है।

"मगर अप्टन सिंकलेर जैसे निरे प्रचारक लेखकसे पहली पंक्तिका अंग्रेज लेखक बहुत बढ़ा चढ़ा है। 'वेट पेरेड' पूरी करनेके बाद मैंने फौरन हार्डीकी छोटी कहानियोंकी अेक पुस्तक हाथमें ली। . . . दोनोंके बीच बड़ा भारी फर्क दिखाअी दिया। प्रचार शैलीसे कलाका कोमल स्पर्श दूसरी ही चीज है। हार्डीमें Son's Veto (पुत्रकी नामंजूरी) नामकी अेक छोटी कहानी है। वह 'वेट पेरेड' के रोजर शिल्कोट और अेनिटाके प्रसंगकी याद दिलाती है। अिन दोनोंमें अितना ही फर्क है जितना कि कच्ची खाद और अुनमेंसे पैदा होनेवाले फलमें होता है। बात तत्वतः अेक ही है, मगर अुसकी रचना और सुगंध अलग अलग है।"

अिसमें कलाकार और प्रचारकके बीचके जिस भेदकी चर्चा है, अुसे देवदासको पत्र लिखते हुअे बापूने हाथमें ले लिया और अुस पर अपनी राय

जाहिर की : "अमरीकाके लेखकोंके बारेमें राजाजीको कुछ भ्रम हो गया है। हार्डीका साहित्य मैंने पढ़ा नहीं है। झोलाका भी नहीं पढ़ा। अिसका मुझे हमेशा दु:ख रहा है। मगर सिंकलेरका बिलकुल तिरस्कार नहीं किया जा सकता। प्रचारकी दृष्टिसे लिखे हुअे अुपन्यासोंमें प्रचारका ही दोष मानकर अुन्हें हरगिज हलका नहीं बनाया जा सकता। प्रचारकके लिअे तो अुसकी सारी कला अुसीमें भर दी जाती है। अपने खयालको वह छिपाता नहीं। और फिर भी कहानीमें रसको आँच नहीं आने देता। Uncle Tom's Cabin (टाम काकाकी कुटिया) साफ तौर पर प्रचारके लिअे लिखी गयी चीज है। मगर अुसकी कलाकी बराबरी कौन कर सकता है? सिंकलेर अेक जबरदस्त सुधारक है और सुधारके प्रचारके लिअे अुसने अलग अलग अुपन्यास लिखे हैं। और यह कहा जाता है कि सब रससे भरे हैं। समय मिला तो मैं अुन्हें पढ़ूँगा।"

२०-६-'३२

Natural Law in Spiritual World (आध्यात्मिक क्षेत्रमें कुदरतका कानून) पढ़ लिया। ड्रमण्डकी शैली आकर्षक है, मगर अुसके सारे अनुमान खींचे हुअे जैसे लगते हैं और अेक धर्मान्ध अीसाअीकी वृत्ति पन्ने पन्ने पर दिखायी देती है। अुसकी पुस्तकमें अीसाअी जीवनके बजाय आध्यात्मिक या अध्यात्मका जीवन लिख दें और अीसाके बजाय अीश्वर लिख दें या आध्यात्मिक सिद्धान्त लिख दें, तो अुसकी बहुतसी बातें कायम रहने लायक हैं। जैसे यह साबित हो चुका है कि जड़से चेतन पैदा नहीं हो सकता, वैसे ही हमारे मरे हुअे शरीर चेतन यानी ज्ञानके स्पर्शके बिना सचेतन नहीं बन सकते। 'चित्त विषय वासनासे भरा हो अिसीका नाम मौत है।' 'जो भोगविलासमें रहता है वह जिन्दा होते हुअे भी मरा ही है।' 'तुझे अुसने जन्म दिया है, मगर अतिरेक किया जाय और पापका आचरण हो तो यह मौत ही है।'—अिसका मर्म यही है कि 'जिसे पुत्र (अीसा मसीह) पर विश्वास नहीं वह मरा हुआ है।' अिसका अर्थ ड्रमण्डके मतसे यह है कि जो अीसाअी नहीं, वे सब मरे हुअे हैं। बौद्ध धर्मके बारेमें लिखते हुअे वह कहता है :

"जिसे बुद्धमें विश्वास है अुसके लिअे कोअी यह कहे कि अुसमें अध्यात्म है तो अुसका कोअी अर्थ नहीं। कारण बुद्धका अध्यात्मके साथ कुछ भी वास्ता ही नहीं। अुसने नीतिकी थोड़ी बहुत बातें कही हैं। वे अिन्सानको अुत्तेजना दे सकती हैं, अुस पर असर डालती है, अुसे अुपदेश देती हैं और अुसे रास्ता बताती हैं। मगर जो बौद्ध धर्म पालते हैं अुनकी आत्मामें कोअी खास वृद्धि नहीं होती। ये धर्म मनुष्यका भौतिक, बौद्धिक या नैतिक विकास

कर सकते हैं। मगर ओीसाओी धर्मका दावा अिससे ज्यादा है। मनुष्यकी बुद्धि और नीतिके अलावा अुसमें और भी कुछ है। ओीसापरायण मनुष्यमें वह नये जीवनका संचार करता है।"

अिसके खिलाफ कैसरलिंग पढ़िये :

"यह कहना ठीक नहीं कि ओीसाके धर्मको पालनेवाली आम जनता ओीसा मसीहका असली अुद्देश्य समझ सकती है। अुसका असर वृत्तकी अूपरी सतह परसे काम करता हो अैसा लगता है। और ज्यादातर मामलोंमें वह अन्त तक अेक बाहरी आविष्कार ही रहा है। मामूली ओीसाओीकी जबान और बरतावमें कितना चौंकानेवाला फर्क होता है? बौद्धोंमें यह फर्क आपको नहीं दिखायी देगा। बुद्धने अपना अुपदेश अितने समर्थ ढंगसे दिया है कि वह अुनके अनुयायियोंके दिलमें गहरा अुतर गया है। ओीसाअियोंके खयालसे मानवप्रेमका अर्थ सिर्फ भले बननेकी अिच्छा होता है, जब कि बौद्धोंके विचारसे यह अर्थ है कि हरअेक मनुष्य जितना अूँचा जा सके अुतना अूँचा जानेमें अुसे मदद दी जाय। . . . .अिसलिअे जो धर्मपरिवर्तन कराते हैं वे खास तौर पर अुतने गिरते ही हैं। जो यह काम रोजगारके लिअे और हमेशा करते हैं, वे तो दिन रात गिरते ही चले जाते हैं। अिसलिअे ओीसाअियोंमें और खास कर प्रोटेस्टेण्ट पादरियोंमें ओछापन, ज्यादती, जुल्म, दुश्मनी और समझकी कमी आदि खासियतें पायी जाती हैं। बौद्ध जैसे धर्ममें, जिसमें यह सिखाया जाता है कि अिस जीवनका हेतु ही निर्वाण प्राप्त करना है, अैसी खासियतें पैदा होना सम्भव ही नहीं है।"

अिन्सानमें रहनेवाले पाप और पुण्यकी दोहरी शक्तिका वर्णन ड्रमण्डने अपनी शैलीमें बढ़िया ढंगसे किया है :

"मनुष्यमें अेक कुदरती वृत्ति अैसी भी होती है जो अुसे गिराती है, जड़ बना देती है और धीरे धीरे अुसे पशुओंकी कोटिमें अुतार देती है, अुसकी बुद्धिको अन्धी बना देती है, अुसके हृदयको शुष्क कर डालती है और अुसकी संकल्प शक्तिको कुण्ठित कर देती है। अिसे मारक तत्व या पाप कहते हैं। अिसके अिलाजके लिअे ओीश्वरने अिन्सानको दूसरी वृत्ति भी दी है, जो आत्माको अिधर अुधर भटकनेसे रोकती है, अुसे ठिकाने लगाती है और सीधे रास्ते पर ले जाती है। अिसे तारक तत्व या मुक्ति कह सकते हैं। अिनमेंसे पहला तत्व मनुष्यमें जोरसे काम कर रहा हो और अुसके सारे जीवनको नीचे यानी विनाशके मार्ग पर खींचता रहे, तो अुससे छूटनेका अेक ही अुपाय है। और वह यह कि अूपर ले जानेवाली वृत्तिका निश्चयपूर्वक आश्रय लिया जाय और अुसके बल पर अूँचा चढ़नेकी कोशिश की जाय। यही शक्ति दुनियामें अेक अैसी शक्ति है,

जिसका कुछ भी असर अुस नीचे गिरानेवाली शक्ति पर हो सकता है। अिसलिअे आदमी यदि अिस शक्तिकी अुपेक्षा करे, तो कैसे बच सकता है?"

यह दैवी और आसुरी सम्पत्तिका वर्णन नहीं तो और क्या है?

"अूँचेसे अूँचे अर्थमें आत्मा अीश्वरमय होनेकी विशाल शक्तिका नाम है।

"कितने ही प्राणी बिलमें रहनेवाले होते हैं। वे अपनी जिन्दगी जमीनके भीतर ही बिताते हैं। कुदरतने अपने ढंगसे अिसका बदला अुन्हें अच्छी तरह दिया है। अुसने अिनकी आँखें बन्द कर दी हैं। कितनी ही मछलियाँ अन्धेरे खड्डोंमें, जहाँ आँखकी जरूरत ही नहीं पड़ती, अपने रहनेकी जगह बनाती हैं। अुन्हें भी अैसा करनेका भयंकर बदला कुदरतने दिया ही है। अिसी तरह आत्मा प्रकाशके बजाय अन्धेरेमें रहना पसन्द करे, तो सादे कुदरती कानूनसे ही आत्माकी आँखें बन्द हो जाती हैं और वह अपनी शक्ति गँवा बैठती है। अुस मशहूर विरोधोक्तिका अर्थ यही है कि: 'जिसके पास कुछ नहीं है अुससे जो कुछ होगा वह भी ले लिया जायगा।' अिसलिअे 'अिससे वह सिक्का ले लो।'"

अपने स्वरूपका भान न होना ही पापका मूल है। अीश्वर हृदयमें विराजमान है, अिस सत्यका अज्ञान है। यह भी अुसने अच्छे ढंगसे पेश किया है:

"जिसका चित्त विषयी है, अीश्वरसे विमुख हो गया है और अीश्वरकी तरफ मुड़ नहीं सकता, अुसकी सिर्फ नैतिक ही नहीं, परन्तु आध्यात्मिक मौत भी हो गयी है। अीश्वरसे अलग होना, अुसकी अिच्छाके अधीन न होना और अीश्वरका ध्यान न धरना ही पाप है, यही नरक है। आत्माके अीश्वरके साथ मेल न होनेको ही धर्मशास्त्र पापका मुख्य कारण मानते हैं। पापका अर्थ है अीश्वरको न मानना, अीश्वरमें श्रद्धा न होना।"

*　　　　*　　　　*

सेम्युअल होर कहते हैं कि जब तक भारतीय राष्ट्रसंघके सभी अंग संघमें मिलनेको तैयार नहीं हो जाते, तब तक संघके स्थापित होनेका अिन्तजार करना पड़ेगा। चिन्तामणि पूछते हैं कि अंगोंमें तो ब्रिटिश भारतके प्रान्त भी आ गये। क्या अिन प्रान्तोंकी भी मंजूरी चाहिये? अैसी कल्पना तो हमें सपनेमें भी न थी। बापू कहने लगे — "अिसमें मुसलमानोंके साथके षड्यंत्रका अेक और भी आगेका कदम है। मुसलमान प्रान्त कह सकते हैं कि जब तक अितनी शर्तें न मानोगे, हमें संघमें शरीक नहीं होना है।"

जयकर, सप्रू और चिन्तामणि सब कड़ा विरोध कर रहे हैं। अिससे ज्यादा ये लोग कर भी क्या सकते हैं?

मिसेज लिण्डसे, मास्टर आफ बेलियलकी स्त्री, की आँखोंमें बसा हुआ अमृत अभी तक भुलाया नहीं जा सकता। अुसने अहिंसाकी कअी पहेलियाँ

निकाली थीं और बापूसे प्रार्थना की थी कि कुछ भी समझना, मगर यह न मानना कि हमारे दिलमें पाप है। अुसका अेक सुन्दर पत्र आया। अुसने अपने अमरीकाके सफरका हाल लिखा था और कुटुम्बके सब समाचार दिये थे। बापूने अुसे लिखा:

"You have beaten me. For the past four weeks or more I have been thinking of writing to you and I could not. And now your most welcome letter giving me a budget of family news has come. Thank you for it. What I wanted to say to you was that in everything I have done, I have asked myself how you would take it. Such was the hold your appealing eyes had on me when you spoke to me at that meeting under Prof. Thompson's roof. And then came those never to be forgotten talks under your own roof when you had received me as one of the family. Mahadev is with me. We often talk of all the friends we met in Oxford. Our love to all of you."

"तुमने मुझे हरा दिया। पिछले चार हफ्तेसे मैं तुम्हें लिखनेका सोच रहा था, मगर लिख न सका। अन्तमें कुटुम्बके सारे समाचार लिये हुअे तुम्हारा अत्यन्त स्वागत योग्य पत्र आ पहुँचा। अुसके लिअे धन्यवाद। मैं तुम्हें यह कहना चाहता हूँ कि मैं जो कुछ करता हूँ वह तुम्हें पसन्द आयेगा या नहीं, यह प्रश्न मैं अपने आपसे पूछता ही हूँ; जब तुम प्रो० थाम्पसनके यहाँ बोली थीं, तब तुम्हारी अमृत बरसानेवाली आँखोंने मुझ पर अितना ज्यादा असर डाला था। और फिर जब मैं तुम्हारे घर आया और तुमने घरके आदमीकी तरह ही मेरा सत्कार किया था, अुस वक्तकी बातचीत तो भुलाअी ही नहीं जा सकती। महादेव यहाँ मेरे साथ है। आक्सफोर्डमें मिले मित्रोंके बारेमें हम अक्सर बातें करते हैं। तुम सबको मेरा प्यार।"

आज यह पढ़ा कि अलाहाबादकी हाअीकोर्टमें अेक रामचरण नामके ब्राह्मण जमींदारको अेक धोबनको मार डालने पर पाँच सालकी सजा हुअी। धोबनने सामने जवाब दिया था कि मैं आज शामको कपड़े लेने आअूँगी। अिसलिअे रामचरणने अुसे लात-मुक्के लगाये। दूसरी स्त्री मददको आयी तो अुसे तमाचे लगाये, और अुसका पति आया तो अुसके हाथसे लाठी छीनकर अुसे मारा। और अन्तमें ५० वर्षकी अेक और स्त्री आयी, तो अुसको लातें जमायीं, अुसकी तिल्ली फट गयी और वह अुसी वक्त मर गयी। तब जनाब भागे। आजकल कैदियोंको छोड़ा जा रहा है और हमारे आदमियोंको अच्छी तरह सजा दी जाती है, अुसे ध्यानमें रखकर बापू कहने लगे — "अुसे पाँच सालकी सजा है, मगर वह पाँच महीने भी नहीं रहेगा। कहेगा कि

मैं वफादार-सभा कायम करूँगा, किसानोंसे रुपया दिलाऊँगा, और सविनय भंगकी लड़ाओको दबा देनेमें मदद करूँगा। अिस पर अुसे आसानीसे छोड़ दिया जायगा।" किसी भी कैदीको छोड़नेकी अेक शर्त यह है कि अुसने कमसे कम तीन महीने पूरे कर लेना चाहिये। अिस पर वल्लभभाअी कहने लगे — "अुसने सफाअीमें यह नहीं कह दिया कि यह स्त्री स्वराजकी लड़ाअीमें शरीक थी और खादीके सिवा दूसरे कपड़े धोनेको ले जानेसे अिनकार करती थी; और मेरे विरुद्ध यह झूठा अिल्जाम लगाया गया है!"

१–७–'३२ सेम्युअल होरने घोषणा की कि गोलमेज परिषद खत्म हो गयी है और कुछ लोगोंको पार्लमेण्टरी कमेटीके सामने गवाही देनेके लिअे बुलाया जायगा। यह प्रधानमंत्रीके वचनका भंग हुआ और नरम दलवालोंके गाल पर तमाचा पड़ा। 'यह गैर-कांग्रेसी राष्ट्रवादियोंका अपमान है', शास्त्रीके ये शब्द होने पर भी जयकर और सप्रूके बयानोंमें अिस चीजके खिलाफ गुस्से जैसी कोअी बात नहीं है। अिन लोगोंको अभी तक आशा है कि कोअी न कोअी ज्यादा सन्तोषजनक बयान दिया जायगा। शामको घूमते हुअे बापू बोले — "आज हार्निमेनका लेख पढ़ो। 'अपमानजनक तो है, मगर हम अभी देख रहे हैं, राह देखेंगे!' आज तक हार्निमेनके लेख पढ़े बिना अुसकी बेकद्री करता रहा हूँ। आज पढ़कर सुनाओ।" पढ़ सुनाया। बापू कहने लगे — "सुन्दर लेख है। अिसमें सिर्फ सपाटा या आलोचना ही नहीं है, मगर अुसके दिलका दर्द भरा हुआ है।" मैंने कहा — "अुसने जयकर-सप्रूके बयानको मिथ्या बताया है, मगर विनयकी भाषा काममें ली है। वह कहना चाहता है 'नामर्द'।" बापू बोले — "सच बात है।" तब यह नहीं समझमें आता कि साअिमन कमीशनके समय अिन लोगोंने कैसे अेकाअेक जोश दिखाया था। वल्लभभाअी — "अिन लोगोंने यह सोचा था कि शायद हममेंसे कुछको कमीशनमें जगह मिल जायगी।"

आज बहुत दिन राह देखनेके बाद स्वामीका पत्र आया। सुन्दर रंगीला पत्र है। "आ बखते अमने रेढियाळ माणसोनो पनारो पड्यो छे। (अिस बार हमें रद्दी आदमियोंसे पाला पड़ा है।)" ये शब्द काटे नहीं गये थे। वल्लभभाअीको मैंने पूछा — "ये शब्द काटे क्यों नहीं गये?" वल्लभभाअी — "अिन्हें कोअी समझे तभी तो? 'रेढियाळ' (रद्दी) को कौन समझे और 'पनारो' (पाला) कौन जाने क्या बला है!" किशोरलालभाअीका भी पत्र आया। अुन्होंने अपने लिखने पढ़नेके कामका जिक्र करके ज्यादा पढ़नेकी सूचना माँगी। स्वामीने रामकृष्ण और विवेकानन्दके बारेमें बापूके विचार पूछे।

स्वामीने लिखा था — “बाहर हों तो अिस तरह आपका समय लेनेका पाप न हो। जेलमें आपके पास आनेकी तकदीर कहाँ! अिसलिअे आपके साथ रहकर बातें और चर्चायें करना अिस जन्ममें तो होनेका नहीं!” अुन्हें बापूने लिखा — “तुम्हें पास रहते हुअे भी वियोगका जो अनुभव हुआ है, वह मेरे सम्पर्कमें आनेवाले बहुतोंको हुआ है। अिससे जो सन्तोष मिल सके वही ले लेना चाहिये। कॅलनबेकने अेक सुन्दर प्रमाण कायम किया था। अुनका खुदका अनुभव यह था कि जब पहले पहल वे मेरे सम्पर्कमें आये तब रोज मिलते, जब मर्जीमें आता तब मिलते और जितना चाहते अुतना समय लेते थे। खूब नजदीक आये और जब हम अेक साथ रहने लगे तब साथ रहने, सोने और खाने पीने पर भी अुन्हें मेरे साथ बातचीत करनेका मौका मुश्किलसे ही मिलता था। दफ्तरसे घर जाते वक्त भी कोअी न कोअी बातें करनेवाला होता ही था। अिसलिअे यह हमारा रोजमर्राका झगड़ा बन गया। अिससे अुन्होंने त्रैराशिक लगाया थी कि कोअी आपके जितना नजदीक आता है अुतना ही वह दूर रहने लगता है, अैसा मुझे अनुभव होता रहा है। मैंने अुनका समर्थन किया और अितना जोड़ दिया — ‘मुझे समझे हो अिसीलिअे तो अितने नजदीक आये हो। अिसलिअे तुम्हें मेरा समय लेनेका अधिकार ही नहीं रहा। और जिन दूसरे लोगोंको अभी मुझे जानना बाकी है, अुन्हें छोड़कर तुम्हें वक्त देनेका मुझे अधिकार नहीं है।’ और अिस तरहके समझौतेसे हमारी गाड़ी आगे बढ़ी। अिस तरहके अनुभवोंकी जड़में अेक सत्य ही तो है न? अेक दूसरेमें घुलमिल जानेवाले साथियोंके लिअे आपसमें पूछनेकी बात ही क्या हो सकती है? यदि अैसा करने लगें तो अपने साधारण कर्तव्यमें हम अुस हद तक गलती कर रहे हैं यही कहा जायगा? और यह बात ठीक हो तो तुम्हारे जैसे साथियोंको, जो पास होने पर भी दूर जैसे रहे हैं, दुःख माननेका कोअी कारण नहीं है।”

रामकृष्ण और विवेकानन्दके बारेमें लिखा: “रामकृष्ण और विवेकानन्दके बारेमें रोलाँकी पुस्तकें ध्यान और दिलचस्पीके साथ पढ़ ली हैं। रामकृष्णके बारेमें हमेशा पूज्यभाव तो रहा ही था। अुनके बारेमें पढ़ा तो थोड़ा ही था, मगर कअी चीजें भक्तोंसे सुनी थीं। अुन परसे भाव पैदा हुआ था। यह नहीं कह सकता कि रोलाँकी पुस्तकें पढ़नेसे अुसमें वृद्धि हुअी है। असलमें रोलाँकी दोनों पुस्तकें पश्चिमके लिअे लिखी गयी हैं। यह तो नहीं कहूँगा कि हमें अुनसे कुछ नहीं मिल सकता। मगर मुझे बहुत कम मिला है। जिन बातोंका मुझ पर प्रभाव पड़ा था, वे भी रोलाँकी पुस्तकोंमें हैं। अुसके सिवा जो नअी बातें हैं अुनसे प्रभावमें कोअी वृद्धि नहीं हुअी। मुझे यह नहीं लगा कि जितने भक्त रामकृष्ण थे, अुतने विवेकानन्द भी थे। विवेकानन्दका प्रेम विस्तृत था, वे

भावनासे भरपूर थे और भावनामें बह भी जाते थे। यह भावना अुनके ज्ञानके लिअे हिरण्मय पात्र थी। धर्म और राजनीतिमें अुन्होंने जो भेद किया था, वह ठीक नहीं था। मगर अितने महान व्यक्तिकी आलोचना कैसी? और आलोचना करने बैठ जायँ तो कैसी भी आलोचना की जा सकती है। हमारा धर्म तो यह है कि अैसे व्यक्तियोंसे जो कुछ लिया जा सके वह ले लें। तुलसीदासका जड़-चेतनवाला दोहा मेरे जीवनमें अच्छी तरह रम गया है, अिसलिअे आलोचना करना मुझे पसन्द ही नहीं आता। मगर मैं जानता हूँ कि मेरे मनमें भी कोअी आलोचना रह गयी हो, तो अुसे जाननेकी तुम्हें अिच्छा हो सकती है। अिसीलिअे मैंने अितना लिख दिया है। मेरे मनमें शंका नहीं है कि विवेकानन्द महान सेवक थे। यह हमने प्रत्यक्ष देख लिया कि जिसे अुन्होंने सत्य मान लिया, अुसके लिअे अपना शरीर गला डाला। सन् १९०१ में जब मैं बेलूर मठ देखने गया था, तब विवेकानन्दके भी दर्शन करनेकी बड़ी अिच्छा थी। मगर मठमें रहनेवाले स्वामीने बताया कि वे तो बीमार हैं, शहरमें हैं और अुनसे कोअी मिल नहीं सकता। अिसलिअे निराशा हुअी थी। मुझमें जो पूज्यभाव रहा है, अुसके कारण मैं बहुत-सी आपत्तियोंसे बच गया हूँ। अुस समय कोअी अैसा प्रसिद्ध व्यक्ति नहीं था, जिससे मैं भावनाके साथ मिलने दौड़ न जाता था। और ज्यादातर जगहों पर मैं भी, कलकत्तेके लम्बे रास्तोंमें, पैदल ही जाता था। अिसमें भक्तिभाव था, रुपया बचानेकी वृत्ति न थी। वैसे मेरे स्वभावमें यह चीज भी हमेशा रही तो है ही।"

किशोरलालभाअीको पढ़नेके बारेमें लिखा: "तुम्हें कुछ भी खास तौर पर पढ़नेकी सिफारिश करनेकी अिच्छा नहीं होती। मैं यह नहीं मानता कि तुमने थोड़ा पढ़ा है। मेरा अपना पढ़ना बिलकुल विचित्र माना जायगा। आजकल मैं अुर्दू पढ़ रहा हूँ। चलनके सिक्केके बारेमें मेरी जानकारी अक्षम्य है, अिसलिअे अुसमें थोड़ा-सा प्रवेश कर रहा हूँ। दोनोंके पीछे सेवाभाव है। और अिसी भावके मारे मौतके किनारे बैठा हूँ, तो भी तामिलका जो ज्ञान अधूरा रह गया है, अुसे अच्छी तरह प्राप्त कर लेनेका लोभ रहता ही है। और अिसी तरह बंगाली और मराठीका भी, क्योंकि अिन्हें भी शुरू कर चुका था। और अगर यहाँ काफी समय रहना हुआ तो कोअी आश्चर्य नहीं कि अिस अध्ययनमें कूद पड़ूँ। तुम्हारा मन भी किसी अैसी दिशामें काम कर रहा हो और किसी नअी भाषामें प्रवेश करनेकी अिच्छा हो तो जरूर करो। आश्रम कायम किया तभीसे भाषाओंके बारेमें हम लोगोंकी अिस किस्मकी अभिलाषा तो थी ही। मेरे बारेमें तो वह कभी मन्द नहीं हुअी। मगर मैं तुम्हें अिस लालचमें फँसाना नहीं चाहता। हम सबके लिअे मैं अेक ही बातकी जरूरत देख रहा

हूँ और वह यह कि हमने जो कुछ पढ़ा है अुस पर विचार करें, अुसे हजम करें और अुसे अपने जीवनका अेक अंग बना लें। अिस दृष्टिसे तो मैंने . . . को यहाँ तक सलाह दी है कि अुन्हें गीताका अध्ययन और रायचंदभाअीके भाषण वगैरा सब कुछ छोड़ देना चाहिये, और सिर्फ अपने काममें डूबकर अुसीका विचार करना चाहिये। क्योंकि मैंने यह देख लिया कि अुन्होंने 'अनासक्ति योग' और रायचंदभाअीके लेखोंमेंसे बहुत कुछ रट लिया है। मगर अिन सबका सीधा अुपयोग अुनसे हो ही नहीं सकता। मेरा खयाल है कि अुनका दिल साफ है, मगर अुनकी बुद्धि अुन्हें पछाड़ती ही रहती है। तरह तरहके तर्क करती है और अन्तमें धूल ही धूल रह जाती है। मेरा लिखा अुनके गले अुतर गया दीखता है और अुनका जी हलका हो गया है। अिस सलाहका आखिरमें नतीजा कुछ भी निकले, मगर बड़े अनुभवके बाद यह स्पष्ट हो गया है कि अिसके पीछे जो विचारसरणी है वह बिलकुल ठीक है। अिसलिअे तुम-जैसोंको धार्मिक वाचनकी सिफारिश करनेके लिअे मुझे सहज ही प्रेरणा नहीं होती।"

आकाशदर्शनके बारेमें: "मेरे लिअे यह अीश्वरदर्शनका अेक द्वार बन गया है। यहाँ अिस बार अेकाअेक अैसा मालूम हुआ कि आकाशदर्शन तो अेक बड़ा सत्संग है। तारे भी हमारे साथ चुपचाप बातें करते रहते हैं।"

२-७-'३२

बम्बअीमें मूलजी जेठा मार्केटके तमाम विदेशी कपड़ेके व्यापारियोंने अपना सारा कपड़ा खुशीसे हटा लिया और अिस तरह कमिश्नरके विदेशी और स्वदेशीके बीचकी दीवारको तोड़ डालनेके हुक्मको बेकार बना दिया। अिस बारेमें बापू कहने लगे — "अभी तक यह बात मेरे दिलमें जमती नहीं है। 'टाअिम्स'में यह हकीकत जैसी की तैसी आयी है। अुस पर कोअी आलोचना नहीं है। अिसलिअे सच तो होगी ही, मगर कल्पनामें नहीं आ सकती। क्या विदेशी और स्वदेशीवालोंने सलाह की होगी? या विदेशीवालोंने स्वदेशीवालोंकी परेशानी समझी होगी और अपने आप अिस तरह किया होगा?"

होरके बयान पर गोलमेज परिषदके कअी सदस्योंकी रायें आ रही हैं। अुनमेंसे तांबेकी सबसे सीधी और सच्ची है। आर्डिनेंसोंके बारेमें तो किसीको कुछ भी कहनेकी जरूरत मालूम ही नहीं हुअी। सिर्फ अेक फिरोज सेठना बोले थे कि देशमें लड़ाअी जारी रहना भयानक बात है, वगैरा। नरम दलवालोंको अपना कर्तव्य क्यों नहीं सूझता? अब भी सरकारके साथ सहयोगकी अुन्हें क्या लालसा होगी? वे चाहें तो आर्डिनेंस रद करा सकते हैं, मगर चाहते ही न होंगे। यह अिस जमानेकी बड़ी पहेली है। दुष्ट हेतुओंका आरोपण करना

आसान बात है, मगर बापूकी नीतिमें विश्वास रखनेवाला मैं किस तरह अैसे हेतुओंका आरोपण कर सकता हूँ ?

अिस बार भी बापूने रविवारकी रातको ही आश्रमकी सारी डाक पूरी कर दी। सदाकी तरह . . . का लम्बा पत्र आया था।

३–७–'३२

अुसमें बलात्कारकी शिकार होनेवाली स्त्रीका आत्महत्या करनेका अधिकार अुसी तरह बताया था, जैसे कोअी किसीकी सम्पत्तिको अनधिकारपूर्वक ले ले, तो अुसको भी आत्महत्या करके अपने विरोधीका हृदय-परिवर्तन करनेका अधिकार है। अुन्हें बापूने कहा कि काल्पनिक सवाल न पूछा करो। अिस पर अुन्होंने अपना लम्बा बचाव किया है: अहिंसाका पुजारी होनेके कारण मुझे अहिंसाकी सब पहेलियाँ समझनी चाहियें। मेरे पास जो सलाह माँगने आते हैं, अुन्हें मैं क्या सलाह दूँ? अैसे प्रसंग जिन्दगीमें बहुत आयेंगे, अिसलिअे पहलेसे तैयारी रखनी चाहिये, वगैरा, वगैरा। अुन्हें बापूने लिखा — "बलात्कारके मामलेमें तुम्हारी दलील ठीक लगती है। जिस हालतमें आत्महत्या करनेका स्त्रीका धर्म माना है, अुस हालतमें अपनी रक्षामें रखी हुअी सम्पत्तिको कोअी लूटने आये तब आत्महत्या करनेका संरक्षकका धर्म हो सकता है। मगर यह धर्म अपने आप सूझना चाहिये। कोअी स्त्री बलात्कार न होने देनेके लिअे आत्महत्या करना पसन्द न करे, तो मुझे या तुम्हें यह कहनेका हक नहीं है कि अुसने अधर्म किया। अिसके विपरीत तुम्हें या मुझे यह मान लेनेका भी अधिकार नहीं कि कोअी संरक्षक अपनी देखरेखमें रहनेवाली सम्पत्तिका बचाव करनेमें प्राण दे दे तो अुसने धर्म ही किया। अुस समय व्यक्तिकी किस तरहकी भावना थी, यह जानकर ही राय बनायी जा सकती है। अिस तरह न्यायके तौर पर राय देने पर भी मेरा ख्याल यह है कि स्त्री अपने पर बलात्कार न होने देनेके लिअे — अुसमें हिम्मत हो तो — प्राणत्याग करनेको तैयार हो जायगी। अिसलिअे स्त्रियोंके साथ बात करने पर मैं प्राणत्यागको प्रोत्साहन जरूर दूँगा और समझाअूँगा कि अिच्छा हो तो जान दे देना आसान है। क्योंकि बहुत स्त्रियाँ यह मानती हैं कि अगर अुनकी रक्षा करनेवाला कोअी तीसरा आदमी न हो या वे खुद कटारी या बन्दूक वगैराका अिस्तेमाल करना न सीखी हों, तो अुनके लिअे जालिमके बसमें हो जानेके सिवा और कोअी अुपाय ही नहीं। अैसी स्त्रीसे मैं जरूर कहूँगा कि अुसे परायेके हथियार पर भरोसा रखनेकी कोअी जरूरत नहीं। अुसका शील ही अुसकी रक्षा कर लेगा। मगर वैसा न हो सके तो कटारी वगैरा काममें लेनेके बजाय वह आत्महत्या कर सकती है। अपनेको कमजोर या अबला मान लेनेकी कोअी आवश्यकता नहीं।

“ अब काल्पनिक प्रश्नोंके बारेमें। तुम जिस ढंगसे अपने प्रश्नके बारेमें लिखते हो अुसी तरह मैंने समझा था और अैसे सवालोंको मैं काल्पनिक कहता हूँ। अैसे कोअी कोअी प्रश्न पूछे भी जा सकते हैं। मगर काल्पनिक प्रश्न बिल्कुल न पूछे जायँ तो ज्यादा अच्छा है। अैसे सवालोंकी आदत कभी न डालनी चाहिये। जिन्हें अैसी आदत पड़ जाती है वे अैसा ही दोष करते हैं जैसा भूमिति जाननेवाला भूमितिके विशारदसे अुपसिद्धान्त हल करवाकर करता है। अिस तरह अुपसिद्धान्त हल करानेवाला कभी भूमिति अच्छी तरह नहीं जान सकता। यही हाल किसी खास सिद्धान्तके सिलसिलेमें पैदा होनेवाले अनेक प्रश्नोंका हल दूसरेसे करानेवालेका होता है। मगर नीतिके सिद्धान्तोंसे पैदा किये हुअे सवालोंके बारेमें जड़में ही अेक बड़ा दोष है। यानी हमने जो अुदाहरण लिया हो वही बिलकुल ठीक बैठ जाय, यह बात जीवनमें कभी नहीं हो सकती। सोचे हुअे अुदाहरणमें और सचमुच घटी हुअी घटनामें नाखुनके बराबर भी फर्क हो, तो अुसका हल बिल्कुल दूसरा ही हो सकता है। और अिसीलिअे मैंने तुम्हें चेतावनी दे दी है कि जहाँ तक अपने अनुभवमें आयी हुअी या आनेवाली घटनाके बारेमें प्रश्न न हो, वहाँ तक अैसा कुछ हो जाय तो अुसके लिअे तैयारी करनेके लिअे आजसे सोचे हुअे दृष्टान्तोंको हल करानेकी आदत डालनी ही न चाहिये। अैसा करनेसे अैन वक्त पर अैसे काल्पनिक अुदाहरणोंके जवाब मदद देनेके बजाय बुद्धिको कुण्ठित करते हैं। अैसी बुद्धि मौलिक काम करनेके अयोग्य हो जाती है। अिससे यह अच्छा है कि मूल सिद्धान्तको अच्छी तरह समझ लिया जाय, अुसे हजम कर लिया जाय और अुसे अपने या अपनोंके जीवनमें लागू करते हुअे यदि भूलें हों, तो होने दी जायँ। अुनसे सीखनेको मिलेगा। मगर अुस सिद्धान्तको अपनेसे ज्यादा जाननेवालोंसे भी मुश्किलोंके विरुद्ध पाल बाँधनेके लिअे काल्पनिक दृष्टान्त हल न कराने चाहियें। अैसा करनेसे आत्मविश्वासको हानि पहुँचती है। यह अनुभव होनेसे ही गीताकारने दसवें अध्यायका दसवाँ श्लोक रचा दीखता है। अुसमें भगवानने यह कहा है कि जो अुसे प्रेमके साथ सदा भजते हैं, अुन्हें वह अैन वक्त पर बुद्धि दे देता है। यहाँ भगवानकी जगह ‘सत्य’ शब्दका अुपयोग करके देखो, तो अर्थ बिलकुल स्पष्ट हो जायगा। अब मेरे कहनेका भाव तुम समझ गये होगे। तुम्हारे काल्पनिक प्रश्नोंसे मुझे अरुचि नहीं, मगर ये प्रश्न करनेमें तुम्हें प्रोत्साहन दूँ तो तुम्हारा अकल्याण होनेका अन्देशा है। मेरा खयाल है लाभ तो होगा ही नहीं। तुम्हारा बलात्कारका ही प्रश्न लो। अिस काल्पनिक प्रश्नका अेक अुत्तर देने पर भी अुसके जैसी ही घटना हो जाय तो अुसका अुत्तर बिलकुल दूसरा ही दे सकता हूँ। और अुसका अच्छी तरह समर्थन करके बता सकता हूँ। यह भी बिलकुल सम्भव है कि काल्पनिक प्रश्न और घटी हुअी घटनाके बीचका

फर्क भी बता सकूँ। यह सब मैं साथियोंके बारेमें हुअे अपने अनुभव परसे तुम्हें बता रहा हूँ। अब अिस विषयको ज्यादा नहीं लम्बाअूँगा।"

बालकोंके प्रश्नोंमें अिस बार भी अेकाध बढ़िया प्रश्न था ही। मंगलाने पूछा था — "शून्यवत् होकर रहनेके क्या मानी?" अुसे बापूने लिखा — "शून्यवत् होकर रहनेका मतलब है अच्छा लेनेमें सबसे पीछे रहना। सबकी सेवा करना, अुपकारकी आशा न रखना, और कष्ट सहन करनेमें दूसरोंकी पहल करना। जो अिस तरह शून्यवत् रहेगा, वह अपने कर्तव्यमें तो डूबा ही रहेगा।"

शारदाने पूछा — "मूलदासने विधवाको अपनी ब्याही हुअी स्त्री बताकर बचाया सो क्या ठीक था? विधवाको बचानेके लिअे भी झूठ बोला जा सकता है?" "बाबा मूलदासने जो कहा बताते हैं, वह सच हो तो बुरा किया कहा जायगा। अिससे विधवाका भी बुरा हुआ। किसीका दुःख दूर करनेके लिअे भी झूठ नहीं बोल सकते। अिस तरह दुःख हरगिज नहीं मिटता।"

. . . .को धार्मिक वाचन भी छोड़नेकी सलाह दी थी। वे अुस पर चल रहे हैं। अुन्हें फिर लिखा — "मैंने बताया है अुस अुपायका जैसे जैसे दिलसे अुपयोग करोगे, वैसे वैसे तुम्हारी शान्ति बढ़ेगी। पढ़े हुअेका अदृश्य प्रभाव आश्चर्यजनक होगा। तुम अिस तरह रहना जैसे पहले कुछ पढ़ा ही न था। जितना पचा या हजम हुआ होगा, अुतना अपने आप कार्यके रूपमें फूट निकलेगा।"

छगनलाल जोशीको लिखे गये पत्रमें 'पचना' और 'जीर्ण होना' अिन दो शब्दोंका भेद बताया था। "पचनेवाला सब कुछ खून वगैरामें नहीं बदलता, जब कि जीर्ण होनेवाला सब कुछ शरीरको बनानेवाले अनेक तत्त्वोंमें बदल जाता है। अिसी तरह पढ़ा हुआ जिर जाना चाहिये, जैसे खाद वृक्षमें जिर जाता है और नतीजा यह होता है कि अुससे फल पैदा होता है।"

दूधी बहनको — "तुमसे जितना हो सके अुतना ही करो। मुझसे दबकर या शरमाकर कुछ भी न करो। मुझे जो धर्म सूझा वह मैंने बताया है। मगर अुसका पालन तो शक्तिके मुताबिक ही हो सकता है। और जो मैं चाहता हूँ वह न हो तो अुससे दुःखी होनेकी बात नहीं है। तुम दुःखी होगी, तो धर्म बतानेमें मुझे संकोच होगा?"

. . . .के तो हर हफ्ते सवाल रहते ही हैं। सवाल: बँधा हुआ कौन? जवाब: जो 'मैं'को मानता है। (२) मुक्तिके क्या मानी? ज० — रागद्वेष वगैरासे छूटना। (३) नरक क्या है? ज० — असत्य। (४) मुक्ति दिलानेवाली कौनसी चीज है? ज० — अहिंसा। (५) मुक्तदशा कौनसी?

ज० — रागद्वेष वगैराका सदा अभाव । (६) नरकका मुख्य द्वार ? ज० — असत्य आचरण । (७) सवाल भूल गया — अुसका जवाब भी अहिंसा है ।

प्रेमाबहनके पत्रमें व्यक्ति या संस्था छोड़नेका अुसूल बताया । जिसके संगमें — व्यक्ति, समाज या संस्थामें — अपूर्णता मालूम हो अुसमें पूर्णता लानेकी कोशिश करना हमारा फर्ज है । अगर गुणोंसे दोष बढ़ जाते हों, तो अुसका त्याग — असहयोग — धर्म है । यह शाश्वत सिद्धान्त है ।

बापू कहते हैं कि सत्य ही अीश्वर है । आज टॉमस अे केम्पिसमें ये अुद्गार पढ़नेमें आये :

४–७–'३२

"O Truth! My God! Make me one with Thee in everlasting Charity. I am often times wearied with reading and hearing many things. In Thee is all I wish or long for. Let all teachers hold their peace, and all created things keep silence in Thy presence. Do Thou alone speak to me."

"हे सत्य! मेरे अीश्वर! शाश्वत दयामें मुझे अपने साथ मिला ले । मैं अक्सर बहुतसी चीजें पढ़कर और सुनकर अूब जाता हूँ । मैं जो चाहता हूँ या जिसकी मुझे अभिलाषा है, वह सब तुझमें भरा है । तेरी मौजूदगीमें सब अुपदेशक शान्त हो जायँ, सारी सृष्टि मौन रहे, और तू अकेला ही मेरे साथ बोल ।"

आगे अेक जगह और :

"Thou, oh Lord, My God, the eternal Truth speak to me."

"हे अीश्वर, मेरे प्रभु, सनातन सत्य, मेरे साथ बात कर ।"

बापू अीश्वर शब्दके बजाय सत्य रखकर बहुतसे श्लोक वगैरा पढ़नेको कहते हैं । अिस साधुने सत्यको अीश्वर कह कर ही सम्बोधन किया है ।

टॉमस अे केम्पिसके सुवचनोंमें यह लगता है मानो कितने ही तो भगवद्गीता-हीसे लिये हों । '**ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस्तेषूपजायते**' वाली अनिष्टमालाके साथ तुलना कीजिये :

"Whenever a man desireth anything inordinately, straightway he is disquieted within himself . . . He is easily moved to anger if any one thwarts him. And if he have pursued his inclination, forthwith he is burdened with remorse of conscience for having gone after his passion which helpeth him not at all to the peace he looked for.

It is resisting the passions, and not by serving them, that true peace of heart is to be found. Peace therefore is not in the heart of carnal man, not in the man who is devoted to outward things but in the fervent and spiritual man."

"मनुष्य जब कोअी अनुचित अिच्छा करता है, तब वह अस्वस्थ हो जाता है। . . .कोअी अुसके काममें रुकावट डाले, तो अुसे तुरन्त क्रोध पैदा होता है। और अगर वह अपनी वासनाओंके अनुसार चलता है, तो विषयोंके पीछे दौड़नेसे अुसे वांछित शान्ति कभी मिलती नहीं। अिसलिअे वह अन्तरात्माके पश्चात्तापके भारसे दब जाता है। अन्तरात्माकी सच्ची शान्ति विषयोंका सेवन करनेसे नहीं, परन्तु अुनका शमन करनेसे मिल सकती है। अिसलिअे विषयी मनुष्यके दिलमें कभी शान्ति होती ही नहीं। अिसी तरह जो बाहरी चीजोंमें लुभाता है, अुसके दिलमें भी शान्ति नहीं होती। भक्त और आध्यात्मिक मनुष्यको ही शान्ति मिलती है।"

'नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य, न चायुक्तस्य भावना, न चाभावयतः शान्तिः'

* * *

रैहाना बहनने 'ज़फर'की अेक गजल बापूको भेजी थी। अुसमें यह सुन्दर पंक्ति आती है:

'ज़फर आदमी अुसको न जानियेगा
हो वो कैसा ही साहेबे फ़हमोज़का
जिसे अैशमें यादे खुदा न रही
जिसे तैशमें खौफ़े खुदा न रहा।'

'ज़फ़र कहता है कि मनुष्य कितना ही बुद्धिमान हो, मगर अुसे अैश-आराममें खुदाकी याद न रहे और क्रोधमें खुदाका डर न रहे, तो अुसे आदमी नहीं मानना चाहिये।'

बापूसे मैंने कहा — "शौकतअलीके मुँहसे ये पंक्तियाँ बहुत बार सुनी हैं।" बापू बोले — "क्यों न सुनी होंगी! अुन्हें अुर्दू कवियोंके बढ़िया वचन जबानी याद हैं। जब वे ये वचन सुनाते थे और अुस जमानेमें जो बातें करते थे, अुस वक्त भी वे ओमानदार थे। आज भी ओमानदार हैं। मुझे कभी अैसा नहीं लगा कि वे झूठ बोलते या धोखा देते थे। आज वे मानते हैं कि हिन्दू विश्वासपात्र नहीं हैं और अुनके साथ लड़ लेनेमें ही कौमका भला है। यह मनोदशा बुरी है। मगर कौमकी सेवा अुनके दिलमें है, अुनका कोअी स्वार्थी हेतु नहीं है। अैसे ओमानदार आदमी बहुत मौजूद हैं — मिसालके तौर पर सेम्युअल होर। अुसने हम सबके मुँह पर कहा था कि मुझे आपमेंसे किसीकी

शक्ति पर विश्वास नहीं। सबसे ज्यादा साफ बात करनेवाला बाल्डविन है। अुसे मैंने कहा कि मेरी यह दलील है कि अंग्रेजी राजसे हमारा कुछ भी भला नहीं हुआ। तब वह कहने लगा — I must tell you that I am proud of my people's record in India. (मुझे कहना चाहिये कि हमारे लोगोंने हिन्दुस्तानमें जो कुछ किया है, अुसके लिअे मुझे गर्व है।) और अिसमें आश्चर्य ही क्या! रामकृष्ण भांडारकर अक्षरशः मानते थे कि अेक मामूली टॅामी (अंग्रेज सिपाही) भी हमसे बढ़कर है।"

आज बापूने चार खत लिखे। अुनमें मातमके तीन पत्र थे या फिर दो पत्र और दो तार थे! यों तो क्या अेक भी घड़ी अैसी होगी, जब मौत न होती हो। जिस समय ये पंक्तियाँ लिखी जा रही हैं, अुस समय कितनी ही मौतें हो रही होंगी।

५–७–'३२

In the midst of life we are in death — जीवनके बीच हम मृत्युमें ही हैं — जेम्स बेरीका यह वाक्य अिस अर्थमें सच है। मगर हमें तो मृत्युकी अटलताका ज्ञान तभी होता है, जब हमारे पास अुन लोगोंकी मौतकी खबर आती है, जो हमारे परिचित हैं या जिन्हें हम अपने मानते हैं। वेदोंमें आत्माको अेक साथ मृत्यु और अमृत दोनों कहा है। अुसमें भी अिसी बातकी प्रतीति होती है। भाअी परमानंदकी स्त्रीके मरने पर अुन्हें और सरलादेवीकी माताजीकी मृत्यु पर अुन्हें, पत्र लिखे और राजगोपालाचार्यके जँवाअीके मरने पर अुनकी लड़कीको और राजाजीको तार दिये। रातको सोनेसे पहले कहने लगे — "अिस लड़कीकी अुम्र कितनी है?" मैंने कहा — "पच्चीस होगी।" बापू कहने लगे — "अिसकी शादी फिर क्यों न करायी जाय?" जहाँ पुरुषके लिअे बापू यह कहते हैं कि दुबारा शादीका विचार न करे तो अच्छा; वहाँ स्त्रियोंके लिअे बापूको तुरन्त यह सूझता है, यह बापूकी स्त्रियोंके प्रति तीव्र भावनाका परिणाम है। वल्लभभाअी कहने लगे — "यह क्या थोड़ा है कि राजगोपालाचारीने देवदास और लक्ष्मीका विवाह करा दिया? यह दूसरा कदम अुठानेकी अुनकी हिम्मत नहीं होगी।" बापू — "यह बात तो है नहीं कि अुनका विधवा विवाहमें विश्वास न हो।" वल्लभभाअी — "अिस लड़कीकी भी अिच्छा नहीं होगी।" बापू — "अिस जमानेकी लड़कियोंके बारेमें अैसा तो कुछ नहीं कहा जा सकता।"

देवदासको अिस मृत्युके बारेमें लिखा — "राजाजीको चोट लगेगी। मगर अुनकी सहनशक्ति बहुत बड़ी है, अिसलिअे कोअी चिन्ता नहीं होती। मौतके रूपमें मौतका असर मुझ पर भी थोड़ा ही होता है। जो कुछ होता है वह

सम्बन्धियोंके दुःखका। मौतका दुःख माननेके बराबर और क्या अज्ञान हो सकता है!"

...ने पत्र लिखा — "दुनियामें अुत्पादन अपार है, लेकिन भुखमरी भी अुतनी ही है। यह देखकर खादीकी तरफ झुकता जा रहा हूँ और अिस बारेमें लिखनेकी भी जीमें आती है। सिर्फ मिलें चलाते हुअे और शक्करका कारखाना चलाते हुअे खादी और गुड़के बारेमें लिखना कितनोंको असंगत लगेगा।" बापूने हिन्दीमें लिखा — "खादीके साथ साथ आज तो मिल चलती ही है और कअी अरसे तक अवश्य चलेगी। अन्तमें तो दोनोंके बीचमें विरोध है ही। क्योंकि हमारा आदर्श तो यह है कि हरअेक देहातमें खद्दर पैदा हो। और अिस तरह जब वह हरअेक देहातमें होगा, तब हिन्दुस्तानके लिअे मिलकी आवश्यकता नहीं रहेगी। लेकिन आज आप दोनों बातें साथ साथ अवश्य कर सकते हैं। और सत्य प्रदर्शित करनेके लिअे आदर्शको भी लोगोंके सामने रखा जाय। टीका करनेवाले टीका करते ही रहेंगे। अुसके लिअे कोअी चारा नहीं है। गुड़के बारेमें मुझे पूरा ज्ञान नहीं है। परन्तु मेरा खयाल अैसा रहा है कि खाँड बनानेके लिअे मिलकी आवश्यकता हमेशा रहेगी। देहातोंमें खाँड आसानीके साथ नहीं बन सकती है, न अूख हर देहातमें पैदा होती है। अिस कारण गुड़ बनानेका धन्धा सर्वव्यापक नहीं हो सकता। सम्भव है कि अिसमें मेरी कुछ गलती हो। कैसे भी हो अगर मिल और खादीकी बात अेक ही मनुष्य कर सकता है, तो गुड़ और मिल-शक्करकी बात तो अवश्य कर सकता है। मुद्रा शास्त्रका जितना अभ्यास मैं करता हूँ, अुतना मेरा विश्वास दृढ़ होता चला है कि लोगोंकी कंगालियत दूर करनेके लिअे अिन किताबोंमें जो कुछ लिखा है वह अुपाय हरगिज नहीं है। वह अुपाय अुत्पन्न और व्यय अपने आप साथ साथ चलें अैसी योजना करनेमें है। और वह योजना देहाती धन्धोंका पुनरुद्धार ही है।"

कैसरलिंगकी पुस्तकमेंसे अिस्लामके बारेके विचार मैंने बापूसे पढ़नेके लिअे कहा। बापू कहने लगे — "अिस्लामकी ताकत न अुसके अेकेश्वरवादमें है और न अुसकी बंधुत्ववृत्तिमें — क्योंकि अुसका बन्धुत्व झूठा है — मगर अुसकी ताकत तो अुसकी धर्म सम्बन्धी श्रद्धामें है। मुसलमान मात्रको अपने धर्मके बारेमें अेक प्रकारकी अटल श्रद्धा है। अुसका बल अिसीमें है।"

६–७–'३२ माॡम होता है कि चिन्तामणिने होरके बयानके खिलाफ काफी विरोध संगठित किया है। अिसमें मुहम्मद जहीर अली (लखनअू)का बयान ध्यान खींचने लायक है। अुन्होंने मैक्डोनल्डकी अनुदारोंके आगे पूरी तरह झुक जानेकी नीतिके बारेमें 'सण्डे अेक्सप्रेस' से अुद्धरण दिया है:

"In the meantime Mr. Mc. D. has taken at one gulp the whole of the Tory Indian policy. It is not even Mr. Baldwin's Tory Indian policy, which Mc. D. has taken. Not at all; it is the Indian policy of the very heart of the Conservative Party."

"अिस बीच मि० मैक्डोनल्डने हिन्दुस्तान सम्बन्धी अनुदार नीति अेक ही घूँटमें गले अुतार लेना शुरू कर दिया है। मैक्डोनल्ड जो नीति अपनाने लगे हैं, वह बाल्डविनकी अनुदार नीति भी नहीं है। बिलकुल नहीं, वह तो अनुदार दल्के हृदयमें बसी हुअी नीति है।" यह अुद्धरण देकर कहने लगे कि आपने पूछा है कि सरकारके साथ असहयोग करनेके बाद क्या किया। मैं जवाब देता हूँ — "भले ही आसमान टूट पड़े, मगर हिन्दुस्तानकी अिज्जत मिट्टीमें न मिलनी चाहिये।"

'हिन्दू' में रंगाचारीका बयान आया है। वह भी काफी कड़ा है। नरम दल्वालोंके विरुद्ध : "यह बात निराशा पैदा करनेवाली है कि सप्रू और जयकरके मिलेजुले बयानमें या शास्त्रीके बयानमें कहीं भी अिस आर्डिनेन्स राज्यके बारेमें कुछ भी नहीं कहा गया। . . . यह समय शब्दोंको तोल्ते रहने या राजनीतिके खेल खेलनेका नहीं है।"

पैट्रो भी कहता है कि गांधीके साथ सहयोग किये बिना किसी भी तरह नया विधान नहीं बन सकता।

बापूसे पूछा कि ये रंगाचारी वगैरा आज अेकाअेक कैसे जाग अुठे? बापू कहने लगे — "रंगाचारी तो अिस किस्मका है ही। बहादुर आदमी जरूर है। वैसे रंगाचारी और पैट्रो दोनोंको कोअी निराशा हुअी होगी, अिसलिअे वे अितना बोल अुठे हैं।"

वल्लभभाअी — "कुछ भी हो, मैक्डोनल्ड सब निगल जायगा। और पंच फैसला भी हमारे खिलाफ ही होनेवाला है।"

बापू — "अभी मुझे मैक्डोनल्डसे आशा है कि वह विरोध करेगा।"

वल्लभभाअी — "नहीं जी, वह क्या विरोध करेगा! ये सब बिलकुल नंगे लोग हैं।"

बापू — "तो भी अिस आदमीके अपने अुसूल हैं।"

वल्लभभाअी — "अुसूल हों तो अिस तरह अनुदारोंके हाथोंमें बिक जाय? अुसे देश परसे हुकूमत छोड़नी ही नहीं है।"

बापू — "छोड़नी तो नहीं है, मगर अिसमें अुसका स्वार्थ नहीं है। सिर्फ लास्की, होरेबिन और ब्रॉकवे जैसे थोड़ेसे आदमियोंके सिवा छोड़ना तो कोअी नहीं चाहता। बेन, लीज और स्मिथ वगैरा सब मैक्डोनल्ड-जैसे ही हैं।

मैं तो अितना ही कहता हूँ कि यह आदमी देशका हित देखकर अनुदारोंमें मिला है। अब यह आदमी पंच फैसला देनेकी बात रोके हुअे है। वह सारी जिन्दगीके अुसूलोंको ताकमें नहीं रख सकता।"

मैं — "तो क्या मुसलमानोंको अलग मताधिकार नहीं देने देगा?"

बापू — "यह तो देने देगा, लेकिन अस्पृश्योंके लिअे अलग मताधिकार वह सहन नहीं कर सकेगा।"

मैं — "क्या वह सचमुच यह बात समझा भी है?"

बापू — "जरूर, वह सब समझता है। जिसे साअिमन कमीशनने समझ लिया, अुसे क्या वह नहीं समझेगा? वह कहेगा कि मैंने तुम्हें आर्डिनेन्स निकालने दिया, बयान देने दिया लेकिन अब मैं तुम्हारे साथ और नहीं चल सकता। अिसीलिअे अुसने अभी तक निर्णय रोक रखा है। होर तो कुछ भी करे तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा। अुसे तो किसी भी तरह देशको कुचलना है। अिसके लिअे मुसलमानोंको जो भी देना जरूरी होगा वह देनेको तैयार रहेगा।"

आज डोअील आया। मीरा बहनको स्वास्थ्य सम्बन्धी समाचार लिखनेके लिअे जो पत्रव्यवहार हो रहा था, अुसके बारेमें और बनावटी दाँतोंके बारेमें बातें करने आया था: 'मेजर भंडारीने तो पत्र रोकनेका कारण यह बताया था कि आपने पेचिशका नाम लिया था और अिससे बाहर घबराहट हो सकती है।' वह कह गया कि 'अितनीसी बात न होती तो अुसमें रोकनेकी कोअी बात ही नहीं थी; और यह आप मानते ही हैं कि ये पत्र प्रकाशित न हों। अिसलिअे अिसमें कोअी शक नहीं कि आपको कुछ भी लिखनेका हक है।' यह पेचिशकी बात भी मेजर भण्डारीको खुश करनेके अुद्देश्यसे ही कही होगी।

७-७-'३२

'लीडर' में आजकल तीखे तमतमाते लेख आ रहे हैं। आज द्वैधशासन पद्धति पर कड़ा लेख है। अिस लेखका मुद्दा यह है कि कांग्रेसके साथ समझौता करना ही चाहिये। और अन्तमें यह है:

"The longer a compromise is delayed with what 'Time and Tide' has described as 'the strongest, best organized and most ubiquitous party in India' the more complicated will become the Indian problem."

"जैसा 'टाअिम अेण्ड टाअिड' कहता है कि 'हिन्दुस्तानमें सबसे ज्यादा ताकतवर, सबसे ज्यादा संगठित और सारे देशमें सबसे ज्यादा फैले हुअे

दल ' के साथ समझौता करनेमें जितनी देर होगी, हिन्दुस्तानकी समस्या अुतनी ही पेचीदा बनती जायगी।"

आज वल्लभभाअीने संस्कृत सीखना शुरू किया। सातवळेकरकी पाठमालाके २४ भाग आये।

टॉमस अे केम्पिसकी पुस्तक बेहद शान्ति और आराम देनेवाली है। गीता और हमारे सन्तोंके वचनोंके साथ पग पग पर साम्य तो पाया ही जाता है :

" He who only shunneth temptations outwardly and doth not pluck out their root, will profit little, nay, temptations will soon return, and he will find himself in a worse condition."

" जो सिर्फ बाहरसे विषयोंको छोड़ता है, मगर जड़से नहीं अुखाड़ फेंकता, अुसे थोड़ा ही लाभ होता है। अुसे फिर मोह होगा और अुसकी हालत पहलेसे भी ज्यादा बिगड़ेगी।"

तुलना करो : ' काम क्रोध लोभ मोहनुं ज्यां लगी मूळ न जायजी, संग-प्रसंगे पांगरे '* वगैरा। और : ' अिन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोनुविधीयते, तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवांभसि' का मुकाबला करो :

" For as a ship without a helm is driven to and fro by the waves; so the man who is negligent, and giveth up his resolution, is tempted in many ways."

" जैसे पतवारके बिना जहाज लहरों द्वारा अिधर अुधर फेंका जाता है, अिसी तरह जो अिन्सान गाफिल रहता है और अपने निश्चयों पर कायम नहीं रहता, वह लालचोंमें अिधर अुधर भटकता है।"

८-७-'३२

मेजर भण्डारीने खबर दी कि बापूके सब पत्र — यहाँ आने और जानेवाले — सरकारको भेजनेका हुक्म मिला है। विलायत जानेके बारेमें राय माँगनेके लिअे बिड़लाका अेक पत्र आया था। अुसका बापूने जवाब दिया था कि : " मेरी राय सबको मालूम है और मैं यहाँसे जाने या न जानेके बारेमें राय नहीं दे सकता।" यह पत्र सरकारके हाथमें गया। अुसकी पूछताछ हुअी और अैसा लगता है कि अुसी परसे यह हुक्म हुआ है। सरकारका हुक्म यह था कि यहाँसे जानेवाले सब गांधीके पत्र सरकारको देखनेके लिअे भेजे जायँ। अिस आदमीको अैसा लगा कि यह तो हमपर अविश्वास किया जा रहा है। अिसलिअे अिसने लिख दिया कि तब तो यहाँ आनेवाले सारे पत्र भी भले सरकार ही देख ले! अिसलिअे अिस सप्ताहमें कोअी पत्र नहीं आया। अिस तरह मुलाकातें बन्द हो गयीं, और शायद कागज पत्र भी

* काम क्रोध लोभ मोहकी जब तक जड़ न जायगी, मौका पाकर वे फिर जाग्रत हो जायेंगे।

बन्द हो जायँगे। अिसलिअे, भला हुआ टूटा जंजाल, सुखसे भजिये श्रीगोपाल! अिस विषयमें डोअीलको आज पत्र लिखा कि: "अिस मामलेमें सरकारका क्या अिरादा है, यह जरा जान लेना चाहता हूँ और यह भी बता दीजिये कि मेरी स्थिति क्या है।" कहा जाता है कि यह कदम भारत सरकारके हुक्मसे अुठाया गया है। बापू कहने लगे — "अिन लोगोंको तो यह साबित करना है कि मैं बदमाश हूँ, दम्भी हूँ, राक्षस हूँ। यह अिन पत्रोंसे साबित करेंगे!"

९–७–'३२

आजकल शामको घूमते वक्त अखबार पढ़नेके लिअे न हो तब 'मॉडर्न रिव्यू' पढ़ा जाता है। बापू जिन लेखों पर निशान लगा देते हैं वे पढ़नेके होते हैं। आज रमेशचन्द्र बेनर्जीका Castes in Educational Reports (शिक्षाकी रिपोर्टोंमें जातियाँ) पढ़कर सुनाया। बापू कहने लगे — "यह अमूल्य लेख है। ये लोग कहाँ कहाँसे हकीकतें अिकट्ठी करते हैं? धीरे धीरे देशमें फूट डालकर, हिन्दुओंको मुसलमानोंसे लड़ाकर, हिन्दुओंको हिन्दुओंसे लड़ाकर किस तरह यह नीति विकास पाती गयी, अिसका पृथक्करण अिस लेखमें खूब अच्छी तरह किया गया है।"

वल्लभभाअी कहने लगे — "अिंग्लैण्डमें हिन्दुस्तानके खिलाफ सारी जनता जैसी आज अेक होकर खड़ी है, वैसी पहले कभी नहीं हुअी थी।" बापू कहने लगे — "हिन्दुस्तानके विरुद्ध तो हमेशा अेकता है, क्योंकि हिन्दुस्तान छोड़ा कि भिखारी हुअे। हिन्दुस्तानको पकड़े रहनेमें अधिकसे अधिक स्वार्थ है।" फिर बापू बोले — "मुझे लगता है कि अिस समय अिंग्लैण्डमें हमारे जितने मित्र हैं, अुतने पहले कभी नहीं थे। हिन्दुस्तानके बारेमें ज्ञान भी अुन्हें पहलेसे बहुत ज्यादा है। और जैसे चीन जानेको अेक टोली तैयार हुअी थी और कट मरनेको तैयार हुअी थी, अुसी तरह अिस देशके लिअे भी अेक टोली तैयार हो जाय तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा। किसी दिन ये लोग घोषणा कर सकते हैं कि अितनी झूठ और अितना अन्याय होता है कि हमसे बर्दाश्त नहीं हो सकता। अिसे बन्द करो, नहीं तो हम जान दे देंगे। मैंने अपने स्विट्ज़रलैण्डके भाषणमें तो यह बताया ही है। अैसा हो तो अुसके लिअे बहुत लोग तैयार हो जायँगे। लास्की जैसे तैयार न भी हों तो म्युरियल, अलेक्ज़ेण्डर, हॉअीलैण्ड, अेस्थर, मॉड और रॉयडन जैसे तो जरूर तैयार हो जायँगे।"

मैथ्यूने अीश्वरके बारेमें सवाल पूछे थे और अुनमें कहा था कि God is Truth और God is Love के मानी यही हैं न कि God is truthful and God is Loving — अीश्वर सत्य है और अीश्वर प्रेम है, अिसके मानी यही हैं न कि अीश्वर सत्यमय और प्रेमपूर्ण है? अुन्हें बापूने जवाब दिया:

"In God is Truth, '*is*' certainly does mean 'equal to', nor does it merely mean 'is truthful'. Truth is not a mere attribute of God, but He is That. He is nothing if He is not That. Truth in Sanskrit means *Sat*. *Sat* means Is. Therefore Truth is implied in *Is*. God is, nothing else is. Therefore the more truthful we are the nearer we are to God. We *are* only to the extent that we are truthful.

"The illustration of hen and her chickens is good. But better still is that of the Lord and his Serf. The latter is far from the former because both are mentally so far apart though physically so near. Hence Milton's 'Mind is its own place,' and the Gita's 'man is the author of his own freedom or bondage.' It is to realize this freedom that I would have us to labour as Pariahs and labourers."

"अीश्वर सत्य है, अिसमें 'है' का अर्थ 'बराबर' है। मगर अिसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि अीश्वर सत्यमय है। सत्य अीश्वरका केवल अेक गुण या अेक विभूति नहीं है, बल्कि सत्य ही अीश्वर है। अगर वह सत्य नहीं है तो कुछ भी नहीं है। सत्य शब्द सत्‌से बना है। सत्‌का अर्थ है होना। अिसलिअे सत्यका अर्थ भी होना हुआ। अीश्वर है, दूसरा कुछ भी नहीं है। अिसलिअे हम सत्यके जितने ज्यादा नजदीक हैं, अुतने ही अीश्वरके ज्यादा नजदीक हैं। जिस हद तक हम सत्यमय हैं, अुसी हद तक हम हैं।

"मुर्गी और अुसके बच्चोंका अुदाहरण अच्छा है। मगर मालिक और अुसके गुलामका ज्यादा अच्छा है। गुलाम मालिकसे दूर है क्योंकि शरीरसे नजदीक होने पर भी, मनसे अेक दूसरेसे बहुत दूर हैं। अिसीलिअे मिल्टनने कहा है — 'चित्त ही अपना स्थान है'; और गीतामें कहा है — 'मनुष्य ही अपने मोक्ष या बन्धनका कारण है।' यह मोक्ष प्राप्त करनेके लिअे ही मैं कहता हूँ कि हमें परिहा और मजदूरोंकी तरह मेहनत करनी चाहिये।"

१०–७–’३२

आज जयकर और सप्रूके Consultative Committee (सलाहकार समिति)से अिस्तीफे आ गये। वल्लभभाअी बोले — "दशहरेके टट्टू दौड़े तो सही!" यह कहावत मैंने पहले नहीं सुनी थी। कल भी अैसी ही कहावत अुनकी जबान पर आयी थी कि 'बूढ़ी होकर तो निम्बोली भी पक जाती है अिसमें क्या?' कल शामको सरकारकी तरफसे सेंसर होकर डाक आयी। अुसमें कृष्णदासका पत्र

था और अुसमें बंगालके कुछ मित्रोंका हाल था। सतीशबाबूने चरखा वर्ग चलाना शुरू किया है और ८५ वर्षके हरदयाल नाग मौज कर रहे हैं, वगैरा। हरदयाल बाबूके आगे सिर झुक जाता है। अिसमें मुझे शंका नहीं है कि यह आदमी सेवा करते करते ही मरेगा। वह आराम तो जानता ही नहीं। अुनके जैसे सरल स्वभावके सच्चे आदमी कांग्रेसी हल्कोंमें थोड़े ही होंगे। बापू कहने लगे — "अुन्होंने अनासक्तियोग साधा है।" मोतीलाल रायका भी अेक बढ़िया पत्र है। अुसमें यह बताया है कि अेक हिंसा और विप्लवमें विश्वास रखनेवाला व्यक्ति पूरी तरह बदल कर अुनके साथ मिल गया है, अुसे पकड़ लिया गया है और नजरबन्द कर दिया गया है। अुन्होंने जाकर पुलिससे चर्चा की, मगर अुसने न माना! यह लिखा है कि अुसकी बापूके प्रति श्रद्धा बढ़ती जा रही है।

आजकी डाकमें बहुत पत्र हो गये और काफी लम्बे हैं। वल्लभभाअी बोले — "अच्छा है, जितने ज्यादा हो जायँ, अुतना ही अच्छा। अनुवाद कर करके थक जायँगे तो कहेंगे कि जाने दो, अिन पत्रोंमें क्या रखा है?"

प्रार्थनामें लगनेवाले समयके बारेमें पंडितजीको लिखा — "अिससे द्वेष या अरुचि न होनी चाहिये। अिस्लाममें पाँच वक्तकी नमाज है। हर नमाज ज्यादा नहीं तो पन्द्रह मिनिट तो लेती ही है। पढ़नेको अेक ही चीज। अीसाअी प्रार्थनामें हमेशा ही अेक बात रहती है। अुसमें भी हर समय पन्द्रह मिनिट लगते ही हैं। रोमन केथोलिक सम्प्रदायमें और अंग्रेजी प्रचलित गिरजेमें आधे घण्टेसे कम नहीं लगता। और वह सुबह, शाम और दोपहरको होता है। भक्तको यह मुश्किल नहीं मालूम होता। अन्तमें अपना क्रम बदलनेका हमें किसीको हक नहीं रहा। क्योंकि हम सब अधूरे हैं और क्रम पर हमने बहुत चर्चा कर ली है। हमें अुसमें दिलचस्पी पैदा करनी ही चाहिये। अुससे अीश्वरके दर्शन करने हैं। अुसीमें हमें रोजमर्राका पाथेय जुटाना है। फेरबदलका विचार छोड़कर जो कुछ है अुसीको शोभायमान बनाकर हम अुसमें प्राण अुँडेल दें। जितना विचार करता हूँ मुझे तो यही लगा करता है।"

* * *

परशरामको लम्बे पत्रमें लिखा — "हिन्दी प्रचारके लिअे जीवन अर्पण करनेका विचार करो तो मुझे पसन्द होगा।" "रामायणमेंसे अलग अलग प्रकृतिके लोग, अलग अलग श्रेणीके बालक या मनुष्योंको ध्यानमें रखकर भी अलग अलग मनुष्य अलग अलग चुनाव कर सकते हैं।"

* * *

मथुरादासको लम्बा खत लिखा। अुसमें 'विलायतमें बादशाहके घर गया था तब जान बूझकर साथ ले जाये गये अूनी कम्बल'का किस्सा बताया। "हिन्दुस्तानमें खादी प्रेम व्यापक नहीं हुआ। दूसरे शब्दोंमें कहूँ तो दरिद्रनारायण की भक्ति व्यापक नहीं हुआी। या जहाँ यह भक्ति है वहाँ अज्ञानमें फँसे हुअे भक्तोंसे यह साबित न हो सका कि यह भक्ति खादीका सीधा और सरल मार्ग है। सूतकी किस्म सुधारनेके लिअे पुस्तक जरूर लिखो, मगर अुसमें अेक भी वाक्य अैसा न लिखना जो तुमने अनुभवसे सिद्ध न किया हो। और तुम अपने अकेलेके अनुभव परसे सिद्धान्त न बनाना। औरोंको भी यही अनुभव होना चाहिये। अैसा न कर सके हो तो पुस्तकको रोक रखना। मैं तो खूब देख रहा हूँ कि जो अनुभवके आधार पर नहीं लिखी गयीं, वे पुस्तकें लगभग निकम्मी हैं। यह अैसी ही बात है जैसे कोअी आज चरकका अनुवाद करके हमारे पास रख दे तो अुसका कोअी अर्थ ही नहीं हो सकता। क्योंकि अुसमें वर्णन की हुअी वनस्पतियोंमेंसे बहुतसी आज हमें नहीं मिलतीं; जो मिलती हैं अुनमें बताये हुअे गुण हम साबित नहीं कर सकते। अिसके लिअे सबसे ज्यादा जरूरी तो यह है कि तुम खुद कअी अंकोंका अच्छेसे अच्छा सूत निकालो और अुसे निकालनेमें अिन बातोंका पृथक्करण करो कि तकुअेका, चरखेका, कपासकी किस्मका, पींजनका और तुम्हारा अपना यानी कारीगरोंका कितना कितना हिस्सा था। अुसकी डायरी रखो और अपने अनुभवका दूसरोंके अनुभवसे मिलान करो। अिससे जो पुस्तक तैयार होगी, वह धर्मके काँटे पर तुले हुअे सोनेके पाटकी तरह चलेगी।"

आप सूतका अंक कहाँ तक बढ़ाना चाहते हैं, अिस प्रश्नके जवाबमें लिखा — "अेक समय २० तककी हद रखी थी, फिर ४० पर पहुँचा और अब कोअी हद ही नहीं रखता। हमें अैसा कपास मिले या हम अुपजा लें जिससे ४०० अंक तक पहुँच सकें, अितना बारीक अंक निकल सके अैसा हम पींज सकें, अैसा सूत कातनेका धीरज रखनेवाला या कातकर देनेवाला वाली हमें मिले और अितना बारीक सूत बुन कर देनेवाला कुशल बुनकर हमें मिले, तो मैं जरूर चाहूँ कि हमें अिस अंक तक पहुँचना चाहिये। मतलब यह है कि हमारा अनुभव और हमारी लगन हमें ले जाय वहाँ तक जानेमें मुझे बहुत अर्थ दिखायी देता है। कारण अिससे कातनेकी कलाका महत्व अेकदम बढ़ जानेकी पूरी सम्भावना है।"

हमारे लिफाफे पर अक्षर फूटे हुअे हों तो अुन्हें ढँकनेके लिअे अुस पर रंगीन पट्टियाँ लगा देते हैं। अिसकी नकल करके प्रेमाबहनने अच्छे लिफाफे पर किनारीदार पट्टियाँ लगा दीं। अुन्हें बापूने लिखा — "तुमने लिफाफेको सजानेकी कोशिश करके बिगाड़ दिया। व्यर्थके शृंगारके बारेमें अैसा यही समझो।

. . .तुम्हारी किनारीवाली कतरनें आधी अुखड़ गयी थीं, अिसलिअे बहुत खराब लगती थीं। अुपयोग तो कुछ भी नहीं था। अुस पर खर्च किया हुआ परिश्रम और समय बेकार गया। अिसी तरह अुतना कागज खराब हुआ और अुतना जनताका नुकसान हुआ। दो सार निकालो: समझे बिना किसीकी नकल न करो। शृंगारकी खातिर किया हुआ शृंगार शृंगार नहीं है। युरोपमें जो बड़े देवालय हैं अुनके लिअे कहा जाता है कि अुनकी सारी सजावटके पीछे अुपयोग जरूर होता है। यह सही हो या न हो, मैंने जो नियम बताये हैं अुनके बारेमें शंकाकी गुंजायश नहीं है।"

अिसी पत्रका दूसरा अुद्धरण: "सच झूठ तो भगवान जाने, मगर अैसा कहा जाता है कि मैं मनुष्योंसे बहुत ज्यादा काम ले सकता हूँ। यह सच हो तो अुसका कारण यह है कि मुझे अुनके प्रति चोरीका शक होता ही नहीं। जितना देते हैं अुससे सन्तोष कर लेता हूँ। कितने ही यह कहनेवाले भी हैं कि मुझे लोग जितना धोखा देते हैं अुतना शायद ही किसीको देते होंगे। यह परीक्षा सही निकले तो भी मुझे पछतावा नहीं होगा। मुझे अितना-सा प्रमाणपत्र मिले कि मैं दुनियामें किसीको धोखा नहीं देता, तो मेरे लिअे काफी है। वह दूसरा कोअी न दे तो मैं अपने आपको तो देता ही हूँ। मुझे झूठ सबसे बुरी लगती है।

"'ज्यादासे ज्यादा लोगोंका ज्यादासे ज्यादा भला' और 'जिसकी लाठी अुसकी भैंस'के नियमोंको मैं नहीं मानता। सबका भला — सर्वोदय — और कमजोरका पहले, यह अिन्सानके लिअे अच्छा कायदा है। हम दो पैरोंवाले मनुष्य कहलाते हैं, मगर चौपाये पशुओंका स्वभाव अभी तक नहीं छोड़ सके हैं। अिसे छोड़नेमें धर्म है।"

* * *

नारणदासके पत्रमेंसे: "अेक ही चीज सच्चे आदमीके लिअे काफी है। बूतेसे बाहरका काम अपने पर नहीं लेना चाहिये। और बूतेसे भीतर रहनेका लोभ कभी करना नहीं चाहिये। जो शक्तिसे अधिक करने लगता है वह अभिमानी है, आसक्त है। जो शक्तिसे कम करता है वह चोरी करता है। समय पत्रक रखकर हम अनजाने भी अिस दोषसे बच सकते हैं। बच जाते हैं, यह नहीं कहता, क्योंकि अगर समय पत्रक ज्ञान और अुल्लासपूर्वक न रख सकें तो अुससे पूरा फायदा नहीं अुठा सकते।"

अिस बार विद्याध्ययन पर लेख लिखा। अुसमें साहित्यका अध्ययन, सत्यदर्शनके लिअे अध्ययन और आत्मदर्शनके लिअे अध्ययन — ये भेद करके बताया कि हमें पिछले दो अध्ययनों पर ही ध्यान देना चाहिये और आश्रममें

अुन्हीं पर जोर देना चाहिये। नारणदासभाअी पर और बोझा बढ़ गया। जो आदमी अच्छा काम देता है अुससे ज्यादा चाहे बिना बापूका जी नहीं भरता। "आश्रम अेक महान पाठशाला है। अुसमें शिक्षाका कोअी खास समय ही नहीं है, बल्कि सारा समय शिक्षाका है। हरअेक व्यक्ति जो आत्मदर्शन — सत्यदर्शन — की भावनासे आश्रममें रहता है, वह शिक्षक भी है और विद्यार्थी भी है। जिस बातमें वह होशियार है अुसका वह शिक्षक है और जो अुसे सीखना है अुसमें विद्यार्थी है।" "बड़ीसे बड़ी शिक्षा चारित्र्य शिक्षा है। ज्यों ज्यों हम यम नियमोंके पालनमें आगे बढ़ते जायँगे, त्यों त्यों हमारी विद्या — सत्यदर्शनकी शक्ति — बढ़ती ही जायगी।"

* * *

भाअूने पूछा था — **प्रातःस्मरामि** वाला श्लोक हम बोलते हैं। यह क्या दम्भ नहीं है? हमारा दिनभरका कामकाज तो यह समझकर होता है कि शरीर हम हैं। अुन्हें लिखा — "हमारी प्रार्थनाका पहला श्लोक मुझे भी खटकता था। मगर गहरे जाने पर देखा कि समझके साथ अिस श्लोकका रटना ठीक है। हमारी बुद्धि जरूर कहती है कि हम यह मिट्टीका पुतला शरीर नहीं हैं, बल्कि अिसमें रहनेवाले साक्षी हैं। श्लोकोंमें अिसी साक्षीका वर्णन है। और फिर अुपासक प्रतिज्ञा करता है कि 'मैं वह साक्षी — ब्रह्म हूँ।' अैसी प्रतिज्ञा वे मनुष्य ही कर सकते हैं जो वैसा बननेकी रोज कोशिश करते हों और मिट्टीके पिण्डका सम्बन्ध कम करते जाते हों। मूर्छा, भय और रागद्वेष हो अुसके बजाय वे हर वक्त ब्रह्मके गुणोंको याद करके रागद्वेषसे छूटनेकी कोशिश करते हैं। अैसा करते करते मनुष्य जिसका ध्यान करता है अन्तमें वैसा ही बन जाता है। अिसलिअे नम्रता किन्तु दृढ़ताके साथ हम रोज भले ही अिस श्लोकको याद करें और हर काममें अुस प्रतिज्ञाको साक्षीके तौर पर समझें।"

अेक दूसरे पत्रमें: "अेक अैसा वर्ग है कि जिसमें हम बहुतसे आदमी आ जाते हैं। वे पढ़ पढ़कर विचार करनेकी शक्ति कुण्ठित कर लेते हैं। अुनका पढ़ना बन्द करके अुन्होंने जो कुछ पहले पढ़ लिया है अुसीमेंसे विचार करनेके लिअे अुन्हें सुझाना चाहिये।"

कन्हैयालालको लिखा — "परमात्माका अर्थ सत्य किया जाय तो प्रत्यक्ष दर्शन सम्भव है। ध्रुव वगैराके दर्शन करनेकी बात अक्षरशः मानना ठीक नहीं है। कवियोंने जो वर्णन किया है वह अेक तरहका रूपक है।" "मन, वचन और कायासे सत्य आचरण शाश्वत अुत्तम यज्ञ है। आज अुसका मूर्तरूप परमार्थकी वृत्तिसे चरखा चलाना है।" "धर्मका सच्चा अुपाय हर तरहसे यम-नियमोंका पालन है।"

छगनलाल जोशीको लिखा — "२१ तारीखको रामजीकी अिच्छा होगी तो मिलना हो जायगा। अिन्सानका सोचा हुआ हमेशा कहाँ होता है? देखो, पापा मौतके बिस्तर पर थी, मगर अुठ गयी। अुसका पति वरदाचारी भला-चंगा था। वह थोड़े ही दिनकी बीमारीमें चल बसा और राजाजीके लिअे विधवा लड़की छोड़ गया। पापा राजाजीकी प्यारी लड़की है। वह तो बहादुर है अिसलिअे सहन कर लेगी। ज्ञान हृदय तक पहुँच गया होगा तो सहन करना महसूस भी न होगा। क्योंकि समझनेवालेके लिअे जन्ममरण बराबर है। अिस अनिश्चितताका ताजा अुदाहरण आँखोंके सामने है। अिसलिअे रामजीको आगे रखा है। २१ तारीखको मिलनेकी हमारी अिच्छा अुसकी अिच्छाके मुताबिक होगी तो मिलेंगे, नहीं तो खैरसल्ला!"

गंगाबहनको — "पत्रोंका घोटाला है। अुसमें भी समय चला जाता है। अिस तरह कैदी होनेका अनुभव समय समय पर होता रहता है, होना चाहिये। गीताबोध पर अमल करनेको भी मिल जाता है। सोचा हुआ पार न पड़े तो मनको चोट पहुँचती है या नहीं, यह जाना जा सकता है। और चोट पहुँचती हो तो अुतनी कमी जरूर है, यह सोचकर आघातको आगे नहीं आने देता। मिलने लायक चीज माँगी जाय। माँगनेसे मिल जाय तो अच्छा, न मिले तो भी अच्छा। सरोजिनी वैद्यराज बन जायँगी अिसलिअे मेरी तरफसे बधाअी देना। अुन्हें यह भी कहना कि अुनकी मिठाअियोंका अुपयोग यहाँ बहुतोंने किया था। मगर अिसका अर्थ अैसा हरगिज न करें कि फिर भेजनी हैं। रसकी घूँटें नहीं, परन्तु बूँदें ही होती हैं। मैंने तो पहलेके पत्रमें भी मजाक ही किया था। अैसी चीजें यहाँ हमें शोभा देती ही नहीं। अुन्हें सब शोभा देती हैं। अुनकी चाल मेरे जैसे चलने जायँ, तो गिर जायँ। यहाँ तो अेक दास है, अेक किसान है और अेक हम्माल है। अैसी मूर्तियाँ सोनेका साज पहनने बैठें तो अुन्हें गाँवके छोकरे पत्थर मारें, और वह ठीक ही हो। यह सब सरोजिनी देवीसे हँसाते हँसाते कहा जा सके तो कहना। नहीं तो जो शिक्षा अिससे दूसरी बहनें ले सकती हों, ले लें। मैंने तो विनोदमें अितनी शिक्षा भी रख दी है।"

* * *

टामस अे केम्पिसके ये सूत्रवाक्य सुन्दर हैं:

"No man can safely appear in public, but he who loves seclusion.

"No man can safely be a superior but he who loves to live in subjection.

"No man can safely command but he who hath learned how to obey well,

"No man can rejoice securely but he who hath the testimony of a good conscience within."

"अैसा कोअी आदमी सुरक्षित रूपमें जनताके सामने नहीं आ सकता, जिसे अेकान्त प्रिय न हो।

"कोअी मनुष्य सुरक्षित रूपमें अफसर नहीं बन सकता, जिसे मातहतीमें रहना पसन्द न हो।

"कोअी मनुष्य सुरक्षित रूपमें हुक्म नहीं दे सकता, जिसे अच्छी तरह हुक्म बजाना न आता हो।

"कोअी मनुष्य सुरक्षित रूपमें आनन्द नहीं भोग सकता, जिसका हृदय भीतरसे शुद्धताकी गवाही न देता हो।"

तस्माद् अुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत निश्चय की झनकार अिसमें कितने चमत्कारिक ढंगसे आ रही है:

"Arise, and begin this very instant, and say, now is the time to do, now is the time to fight, now is the proper time to amend my life.

"Except thou do violence to thyself, thou wilt not overcome vice."

"अुठ और अिसी क्षण शुरू कर। कह दे कि करनेका समय अभी है, यही समय लड़नेका है और यही समय जीवनको सुधारनेका है।

"अपने आपको मारे बिना तू विषयोंको जीत नहीं सकेगा।"

जैसे बापू कहते हैं कि अिस शरीरके रहते मोक्ष नहीं मिल सकता, अुसी तरह:

"As long as we carry about this frail body we cannot be free from sin, nor live without weariness and sorrow . . . We must wait God's mercy till iniquity pass away and this mortality be swallowed up in life."

"जब तक हम अिस नश्वर शरीरको धारण किये हुअे हैं तब तक पापसे मुक्त हो नहीं सकते और थकावट और क्लेशके बिना भी नहीं रह सकते। . . . जब तक पाप निर्मूल न हो जाय और यह मृतत्व अमृतमें न मिल जाय, तब तक हमें अीश्वरकी दया याचते रहना चाहिये।"

कल प्रेमाबहनको व्यर्थ शृंगारके विषयमें लिखा और मथुरादासको ४०० नम्बरके सूतके बारेमें लिखा था। अिसलिअे बापूके कला सम्बन्धी विचारोंका थोड़ा पुनरावर्तन कर लेनेका विचार हुआ। काफी चर्चा हुअी। अुसका सार

११-७-'३२

यहाँ देता हूँ: "कलाको अुपयोगसे अलग नहीं किया जा सकता। हाँ, अुपयोग

का अर्थ अधिकसे अधिक विशाल करना चाहिये। ४०० नम्बरका सूत पहननेके कामका नहीं हो सकता, मगर चारसौ नम्बरके सूत तक पहुँचनेमें जो जो परिश्रम करना पड़ता है, कताअी शास्त्रकी जो जो गुत्थियाँ सुलझानी पड़ती हैं और जो जो रहस्य खुलते हैं, वे दरिद्रनारायणके लिअे फायदेमन्द जरूर हैं। पहननेके लिअे भी अुपयोग हो सकता है। २० नम्बरका खयाल रखा था तब मुश्किलसे १० नम्बरका सूत कतता था। ४०० नम्बरकी दृष्टि रखेंगे तब ५०-६० तकका सहज कतने लगेगा। अिसलिअे कातनेकी कलाके विकासकी दृष्टिसे भी ४०० नम्बरका लक्ष्य रखना बहुत अुपयोगी चीज है। भले ही हम ५०-६० या १०० नम्बरका सूत काममें न लें। सेवक तो अपने शरीरको ६ नम्बरके सूतसे ढँक लेगा। लेकिन जब हम यह सिद्ध कर देंगे कि हम नाजुकसे नाजुक शरीरकी जरूरत पूरी कर सकते हैं, तभी कहा जायगा कि हमने दरिद्रनारायणकी सेवा की है। ४०० नम्बरके सूतके पीछे दरिद्रनारायणकी सेवाकी भूमिका (background) होनी ही चाहिये। और दरिद्रनारायणकी सेवामें ४०० नम्बर अिस्तेमाल करनेवालोंकी अुपेक्षा नहीं की जा सकती। वेटिकनमें जिन बढ़िया तसवीरों और मूर्तियोंको देखकर मैं दंग रह गया था, वे क्या बताती हैं? भले ही अुन चित्रों और मूर्तियोंको देखनेके लिअे सबके पास आँखें न हों, और विरलोंकी ही आत्मा अुन्हें देखकर अुछल सकती हो, मगर अिससे क्या? और जिसने ये मूर्तियाँ बनायी होंगी और चित्र तैयार किये होंगे, अुसने तो दरिद्रनारायणकी यानी मानवसमाजकी सेवाकी कल्पना रखी ही होगी। हाँ, किसी चित्रको देखकर मनमें बीभत्स विचार ही आते हों, तो मैं अुसे कला नहीं कहूँगा। जो अिन्सानको सदाचारमें अेक कदम आगे बढ़ाये और अुसके आदर्श अूँचे बनाये, वह कला है; अुसके सदाचारको गिराये, वह कला नहीं, बल्कि बीभत्सता है। आजकल आकाश-दर्शनकी किताबें पढ़ता हूँ। कअी खोजोंसे यह साबित हो चुका है कि सूर्यकी अूपरकी अेक वर्ग गज जितनी जगहकी गरमी हमारी पृथ्वीको कायम रखनेके लिअे काफी है। अिस खोजका कोअी महत्व या अुपयोग दिखायी न देता हो, मगर अिसका बेहद अुपयोग है। यह सूर्य पृथ्वीसे हजारों और लाखों कोस दूर है। वह अपने स्थान पर है और हम अपनी जगह हैं। अिसी तरह कपासके अेक बीजकोषसे मीलों लम्बा तार निकाल कर बता दिया जाय, तो यह कताअी शास्त्रके लिअे अधिकसे अधिक अुपयोगी वस्तु होगी।

"आश्रममें मैं जिस शिक्षाकी कल्पना कर रहा हूँ, वह बच्चोंकी स्वतंत्रताकी शिक्षा है। छोटेसे छोटे बच्चेको यह लगना चाहिये कि मैं भी कुछ हूँ। हमें देखना पड़ेगा कि अुसकी खास शक्ति किस बातमें है और अेक बार जान लिया कि अिसमें सफल होगा, तो फिर अुसके लिअे तमाम साधन जुटा देंगे। . . .

हाँ, शर्त यह है कि अिस सारे ज्ञानका अुपयोग वह समाजके लिअे करे। . . . के लिअे चाहे जितना ही खर्च करनेका जो विचार किया था, वह अिसी दृष्टिसे किया था। कारण मैंने देखा कि अुसमें यंत्रशास्त्रकी प्रतिभा है। वैसे, पुस्तकें पढ़ा पढ़ाकर बुद्धिको भर देनेका हमारा ध्येय नहीं है। हमारे यहाँ तो माँबाप बच्चोंके लिअे जियेंगे, बच्चोंसे सीखेंगे और बच्चोंको सिखायेंगे। सारा जीवन पाठशाला और शिक्षण रूप बन जाना चाहिये।

"अभी तक हम बहुत कुछ नहीं साध सके हैं, क्योंकि हमारी अुम्र ही कितनी है? सोलह वर्ष। अुसमेंसे भी बारह वर्ष तो लड़नेमें ही चले गये। अिस तरह लड़ते लड़ते हम अनुभवी बन जायँ तो कुछ बुरा नहीं। सन् ३०में आश्रमको होम कर शुरूआत की, यह हमारे विकासका अेक क्रम कहा जायगा।"

१२-७-'३२

मेजरसे आज घी मँगाया तो मालूम हुआ कि पिछली बार अुन्होंने अच्छा घी हमारे लिअे खरीदकर नहीं मँगवाया था, बल्कि अपने घरसे भेजा था। पत्रोंके बारेमें पूछा तो बोले — "कैम्प जेल और स्त्रियोंकी जेलमें भेजनेके पत्र भी सरकारको देखनेके लिअे भेजने पड़ेंगे।" बापू बोले — "तो मुझे नहीं भेजना है और अिस मामलेमें लड़ लेना पड़ेगा।" बेचारे मेजर अिसके बाद राजनीतिक हालतके बारेमें पूछने लगे। बापू कहने लगे — "सेम्युअल होरने यह मान लिया हो कि नरम दलवालोंमें जरा भी स्वाभिमानकी भावना नहीं रही है, तभी वह अैसे प्रस्ताव करेगा। असलमें तो गोलमेज परिषदमें भी सलाह मशविरे जैसी कोअी बात नहीं थी। मैंने यह देखा कि सरकारी सदस्य ही मन चाहा करते थे। फिर भी वह योजना अैसी थी; जिससे अुनके मनको कुछ सन्तोष हो सकता था। अिस योजनामें तो अिस तरह मनको समझानेकी भी कोअी बात नहीं। अिसलिअे ये लोग अिसे न मानें तो क्या करें?"

वल्लभभाअीने पूछा — "अब नरम दलवाले क्या करेंगे?"

बापू कहने लगे — "अुनकी स्थिति कठिन है। कांग्रेसके साथ मिल नहीं सकते, और यह रवैया कब तक जारी रख सकेंगे?"

वल्लभभाअी — "आप अिन्हें जानते हैं, अिसलिअे पूछता हूँ।"

बापू — "जानता हूँ, अिसीलिअे अुनकी मुश्किल बताता हूँ।"

जूनके 'मॉडर्न रिव्यू'में प्रकाशित 'बंगालके हिन्दुओंका अेलान' नामक लेख पर 'मुसलमान'की आलोचनाका रामानन्द चटर्जीने जो बढ़िया जवाब

दिया, वह पढ़ा। बापू कहने लगे — "बेचारा 'मुसलमान' पत्रका मालिक यह जवाब समझ भी न सकेगा।"

१३–७–'३२

आज डाकमें खास तौर पर चुनकर दो तीन पत्र सरकारके भेजे हुअे आये। मानो तंग करनेको ही न अैसे पत्र भेजे गये हों! अेकमें किसी मुसलमानकी गालियाँ हैं। दूसरेमें अेक साहब कहते हैं कि 'भगवान कुछ नहीं कर सकता और कर्मका ही फल मिलता है, तो फिर भगवानकी पूजा करनेके बजाय अुस पर दया क्यों न की जाय?' अैसे पत्र बेचारे मेजर जान बूझकर देते ही न थे और कामके पत्र दे देते थे। अब सरकारके यहाँ कामके पत्र तो रह जाते हैं और निकम्मे यहाँ भेज दिये जाते हैं। मैंने कहा — "चिढ़ानेके लिअे ही तो?" बापू कहने लगे — "वल्लभभाअीका अुदार अर्थ करना अच्छा होगा।" वल्लभभाअीने यह अर्थ किया था कि किसी कारकूनको काम सौंपा होगा। वह जो पत्र बिलकुल निर्दोष लगते होंगे अुन्हें पहले भेज देता है और बाकीके बड़े अफसरको दिखानेके लिअे रख लेता होगा।

मैंने कहा — "वल्लभभाअी शायद ही कभी सरकारके कामोंका अितना अुदार अर्थ करते हैं।"

बापू — "आजकल संस्कृतकी पढ़ाअी करने लगे हैं न?"

* * *

"There is nothing that so defileth and entangleth the heart of man as an impure attachment to created things. If thou wilt refuse *exterior consolations*, then shalt thou be able to apply thy mind to heavenly things and experience frequent interior joy."

"दुनयावी चीजोंके प्रति अपवित्र आसक्ति[१] जैसी कलुषित करनेवाली और मोहजालमें फँसानेवाली दूसरी कोअी चीज नहीं है। तू बाहरकी तृप्तिसे[२] अिनकार करना सीख लेगा, तभी अपने चित्तको दिव्य वस्तुओंकी तरफ मोड़ सकेगा और भीतरी आनन्दका अनुभव कर सकेगा।"

---

१. ये तु संस्पर्शजा दोषा दुःखयोनय अेव ते।

२. यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः।

आज बापू कहने लगे — "अैसा हो सकता है कि अब ये लोग किसी न किसी बहाने बिल तक पहुँचें ही नहीं और यह कहकर बैठ जायँ कि जाओ, तुम्हें कुछ नहीं चाहिये, तो हमें कुछ देना भी नहीं है।"

१४-७-'३२

*　　　　*　　　　*

अुस निकम्मी डाकमें पंजाबके अेक. . . .खानका पत्र था कि आप राजनीतिको नहीं समझते, अुसे आगाखाँ और शास्त्री-सप्रू जैसोंको सौंप दीजिये और आप हिमालय चले जाअिये और अपनी भूल मान लीजिये। अुसे बापूने अपने हाथसे लिखा :

" Dear friend,

" I thank you for your admonition. You do not expect me to argue with you. I fear that as prisoner, I would not be permitted to enter into argument over political affairs. But I may tell you that deep thinking in the solitude of a jail has not induced a change in my outlook."

"प्रिय मित्र,

"आपकी चेतावनीके लिअे धन्यवाद। आप यह अुम्मीद तो नहीं रखते होंगे कि मैं आपसे बहस करूँ। कैदी होनेके नाते राजनीतिक मामलोंकी चर्चा करनेकी मुझे अिजाजत भी नहीं मिलेगी। आपसे अितना कह दूँ कि जेलके कोनेमें बैठकर गहरा सोचने पर भी मेरे खयालोंमें कोअी तब्दीली नहीं हुअी है।"

वल्लभभाअी — "अिन गालियाँ देनेवालोंको आपने अपने हाथसे पत्र क्यों लिखा?"

बापू — "अिन्हें हाथसे ही लिखना चाहिये।"

वल्लभभाअी — "गालियाँ देनेवाले हैं अिसीलिअे! अिसी तरह तो बहुतसे लोग अुद्धत हो जाते हैं।"

बापू — "मुझे नहीं लगता कि अिससे हमारा कोअी नुकसान हुआ है।"

अेक और आदमीने कर्मके कानूनको अीश्वरकी हस्तीका विरोधी बताया था और यह कहकर अीश्वरकी प्रार्थनाका खण्डन किया था कि असत् और अनिष्टको दूर करनेकी अीश्वरकी शक्ति नहीं है। अुसे भी बापूने अपने हाथसे पत्र लिखा। बापू बोले — "अैसे आदमी अीमानदार हों तो अुन पर अेक पत्रका भी बहुत असर हो जाता है।"

" There can be no manner of doubt that this universe of sentient beings is governed by a Law. If you can think

of Law without its Giver, I would say that the Law is the Law Giver, that is, God. When we pray to the Law we simply yearn after knowing the Law and obeying it. We become what we yearn after. Hence the necessity for prayer. Though our present life is governed by our past, our future must by that very Law of cause and effect, be effected by what we do now. To the extent therefore that we feel the choice between two or more courses we must make that choice.

"Why evil exists and what it is, are questions which appear to be beyond our limited reason. It should be enough to know that both good and evil exist. And as often as we can distinguish between good and evil, we must choose the one and shun the other."

"अिसमें शक नहीं कि यह सचराचर जगत अेक कानूनसे चलता है। अगर कानून बनानेवालेके बिना कानूनकी आप कल्पना कर सकते हों, तो मैं कहता हूँ कि यह कानून ही कानून बनानेवाला यानी अीश्वर है। हम जब अुस कानूनकी प्रार्थना करते हैं, तब हम अुस कानूनको जानने और अुसका पालन करनेके लिअे अुत्कण्ठा दिखाते हैं। हम जिसकी लालसा रखते हैं, वही बन जाते हैं। अिसलिअे प्रार्थनाकी जरूरत है। हमारा मौजूदा जीवन पिछले जीवनसे नियत होता है। अिसी कार्य-कारणके नियमसे हमारा भविष्यका जीवन हमारे मौजूदा कामोंसे बनेगा। हमारे सामने दो या अुससे ज्यादा कामोंके बीच चुनाव करनेका सवाल हो तो हमें यह चुनाव करना ही पड़ेगा।

"बुराअी अिस दुनियामें क्यों है और क्या चीज है, ये प्रश्न हमारी मर्यादित बुद्धिसे परे हैं। हमारे लिअे अितना जानना काफी है कि बुराअी और भलाअी दोनों हैं; और जब जब हम अिन दोनोंको अलग अलग जान सकें, तब तब हमें भलाअीको पसन्द करना चाहिये और बुराअीको छोड़ना चाहिये।"

अेक बंगाली बालकने पत्र लिखा था — 'आपने दूध छोड़नेका व्रत लिया था। फिर बकरीका दूध लिया अिसमें क्या कोअी खास फायदा नजर आया? मैं तो चावल खानेवाला हूँ, मुझे दूधके बिना पोषण किस चीजसे मिले?' अुसे लिखा:

"I took goat's milk because I had vowed not to take buffalo's or cow's milk. Physiologically there is little difference between the three. It would have been better

from the ethical standpoint if I could have resisted the temptation to take goat's milk. But the will to live was greater than the will to obey the ethical code. My views on the ethics of milk food remain unchanged. But I see that there is no effective vegetable substitute for milk. You should not give it up."

"मैंने बकरीका दूध लेना अिसलिअे शुरू कर दिया कि मैंने गाय-भैंसका दूध न लेनेका व्रत लिया था। शरीरके खयालसे तीनोंमें बहुत थोड़ा फर्क है। बकरीका दूध लेनेके लालचमें मैं न फँसा होता, तो नैतिक दृष्टिसे ज्यादा अच्छा था। लेकिन अेक नीतिनियम पालन करनेसे मेरी जीनेकी अिच्छा ज्यादा प्रबल थी। दूधके बारेमें नैतिक दृष्टिसे मेरे विचारोंमें कोअी फर्क नहीं पड़ा है। मगर अभी तक दूधके बदलेमें काम देनेवाली वनस्पति खुराक कोअी मिल नहीं सकी है। तुम्हें दूध नहीं छोड़ना चाहिये।"

Thomas A Kempis:

"This is the highest and most profitable lesson, truly to know and despise ourselves.

"To think nothing of ourselves, and always to judge well and highly of others, is great wisdom and perfection.

"We are all frail; but none is more frail than thyself."

"Never think that thou hast made any progress until thou feel that thou art inferior to all."

टॉमस अे केम्पिस :

"यह सबसे अूँचा और लाभदायक पाठ है कि अपने आपको सचमुच पहचानो और अुसके प्रति विरक्त रहो।

"अपनेको शून्य मानना और दूसरोंको हमेशा अूँचा और अच्छा समझना सबसे बड़ी समझदारी है और अुसीमें सम्पूर्णता है।

"हम सब पामर हैं, मगर तुझ-जैसा पामर कोअी नहीं है।

"जब तक तू यह न समझे कि तू सबसे नीचा है, तब तक यह कभी न समझना कि तूने कोअी प्रगति की है।"

ये सिर्फ अुपदेश या नीतिके वाक्य नहीं हैं, अिनमें मनोविज्ञानकी दृष्टिसे अेक बड़ा सत्य भरा है। असलमें मनुष्य जितना अपनेको जानता है, अुतना दूसरे किसीको नहीं जानता। अिसलिअे अपने दोष अुसे ज्यों ज्यों स्पष्ट दीखते जाते हैं, त्यों त्यों अुसे लगता जाता है कि वे दोष दूसरेमें न भी हों; और वह अीमानदार हो तो अपनेको दूसरेसे नीचा मानता जाता है। और देखिये यह सुवर्ण वाक्य :

If only thy heart were right, then every created thing would be to thee a mirror of life and a book of holy teaching. There is no creature so little and so vile as not to manifest the goodness of God. A pure heart penetrates heaven and hell.

"अगर तेरा दिल अच्छा है, तो प्राणीमात्र तेरे लिअे जीवनका आअीना और धर्मकी पुस्तक बन जायगा। अेक भी प्राणी अितना छोटा या अितना बुरा नहीं है कि अुसमें भगवानकी भलाअीके दर्शन न हों। शुद्ध हृदय तो स्वर्ग और नरक दोनोंका पार पा सकता है।"

१५-७-'३२

आज अखबारोंमें पहलेकी पूर्तिमें और नरम दलके लोगोंके जवाबमें हुआ होरका भाषण आया। वल्लभभाअीने पूछा — "कैसा लगता है? नरम दलके लोगोंकी खुशामद तो की है।" बापू — "नहीं, अिसमें कुछ नहीं। अिस भाषणमें चालाकीके सिवा और कुछ नहीं है और मुझे बड़ी निराशा होती है। मैं अुसे अीमानदार समझता था। अिस भाषणमें वह अीमानदार न रहकर चालाक बन गया है।" वल्लभभाअी — "पत्र लिखिये न।" बापू — "पत्र लिखनेकी कअी बार जीमें आती है।" शामको अिसी भाषण पर हार्निमैनका लेख पढ़ा। बापूको यह लेख बहुत पसन्द आया। अिसमें हार्निमैनने होरको राजनीतिक नीतिसे शून्य और बेशर्म कहा है। बापूने कहा — "यह ठीक है।" सारा लेख पढ़कर कहने लगे — "यह आदमी आजकल जोरदार लेख लिख रहा है।" हार्निमैनके वाक्य ये हैं:

"He does not know when he is politically dishonest. He is not only unable to appreciate political values, he is quite innocent of any ethics in political conduct. . . . This speech is a shameless admission that the reservations in the Prime Minister's speech were deliberately intended to leave the way open for the scrapping of the R. T. Conference."

"अुसे यह पता नहीं रहता कि वह कब राजनीतिक मामलोंमें बेअीमान बन जाता है। अितना ही नहीं कि वह राजनीतिक मूल्योंकी कद्र नहीं कर सकता, बल्कि वह जानता ही नहीं कि राजनीतिक आचरणमें नीति जैसी भी कोअी चीज होती है। . . . अिस भाषणमें बेशर्मीके साथ यह कबूल कर लिया गया है कि प्रधानमंत्रीने अपने भाषणमें जो अध्याहार रख लिये थे, वे गोलमेज

परिषदको खत्म कर देनेका रास्ता खुला रखनेके लिअे जानबूझ कर रखे गये थे।"

बापू कहने लगे — "मैंने अिस आदमीसे जब पूछा कि क्या आप मानते हैं कि हम लोगोंमें अपना काम चलानेकी शक्ति या योग्यता नहीं है? तब अुसने कहा था: 'If you want me to be frank, I say yes.' 'आप चाहते हों कि मैं साफ बात कहूँ तो मैं कहता हूँ कि 'हाँ'। अिस आदमीके बोलनेमें विश्वास अितना ज्यादा था और शर्मका नाम भी नहीं था।"

वल्लभभाअी कहने लगे — "मगर अिन व्यापारी लोगोंकी क्या बात है, जिन पर ये अितना भरोसा बाँध रहे हैं?" बापू कहने लगे — "ये . . . और . . .जैसे आदमी।" वल्लभभाअी — "मगर पुरुषोत्तमदास और बिड़लाका क्या हाल है?" बापू — "ये लोग होरको कोअी वचन दे चुके हों अैसी बात नहीं है। मगर कमजोरी आ गयी होगी। बिड़ला होरके हाथ बिक जाय, तो अुसे आत्महत्या करनी चाहिये। और अभी तो मालवीयजी बाहर बैठे हैं। बिड़ला मालवीयजीसे पूछे बिना अेक कदम भी रखे अैसा आदमी नहीं है। नहीं, मुझे भरोसा है कि व्यापारियोंमें ये लोग नहीं हैं।"

बापूने विलायतमें जितनी बातें कही और की थीं, वे सच निकलती जा रही हैं। बापू पुकार पुकार कर कहते थे कि यह परिषद प्रतिनिधित्व वाली नहीं है। होर आज नरम दलवालोंको कह रहा है कि गोलमेज परिषद कहाँ प्रतिनिधित्व वाली थी, जो संयुक्त समितिके सामने जानेवाले हिन्दुस्तानी तुम्हें प्रतिनिधित्व वाले चाहियें? होरको कुछ देना नहीं है। यह भी पुकार पुकार कर कह दिया था कि प्रान्तीय स्वराज्य भी नहीं देना है। मगर शास्त्रीको तो अुस दिन भी विश्वास था और वे महात्मा गांधीको अुलाहना देने चले थे।

* * *

मैंने बापूसे पूछा — "क्या आज शास्त्रीको लगता होगा कि अुन्होंने आखिरी दिन जो भाषण दिया था वह देनेमें भूल की थी?"

बापू — "नहीं, वे तो आज भी यह मानते होंगे कि गांधी हमारे साथ रहे होते, तो जो हालत आज हुअी है वह न होती। अिसका कारण है। यह सीधा आदमी है और सीधे आदमीकी आत्मवंचनाकी हद नहीं होती। मेरे लिअे भी कहा जाता है कि मैं अक्सर अपनेको धोखा देता हूँ। अुस बछड़ेको मारा, तब भी मैंने माना था कि मैं शुद्ध अहिंसा कर रहा हूँ। मगर मुझे क्या मालूम था कि अिस कामका नतीजा क्या होगा? मेरी भूल हुअी हो तो मैं अहिंसाके आचरणमें गिरता चला जाअूँगा। अगर मैंने जो कुछ किया सो ठीक

है, तो मेरा आचरण अधिकाधिक प्रगति करता चला जायगा। मगर अुस दिन तो मेरी पूरी पूरी आत्मवंचना संभव थी न?"

मैं — "मेरा कहना यह है कि क्या अिस आदमीको आज अैसा नहीं लगता होगा कि मेरा विश्वास गलत था और ये आदमी (गांधी) जो कहते थे वह सच कहते थे?"

बापू — "हाँ, अगर अुन्हें अैसा लगता तो अुनकी भाषा दूसरी ही होती और ब्रिटिश नीति परसे अुनका विश्वास बिलकुल अुठ जाता। मैं नहीं कहता कि वे सविनय भंग करें। मगर वे और दूसरे सब लोग आज यह माँग तो करें कि गांधी जो कहता था वही सच था और तुम्हें अुसे छोड़ना चाहिये। गोखले बार बार मेरे लिअे यह कहते थे कि अिस आदमीमें समझौता करनेकी शक्ति भी अजीब है। अपने साथियोंसे भी यही बात कहते थे। यही बात ये लोग सरकारसे कह सकते हैं। मगर ये लोग अैसा कुछ नहीं मानते। ये लोग अिस अछूतपनके मामलेमें भी कहाँ समझते हैं? मैक्डोनल्डकी अिस साम्प्रदायिक निर्णयके मामलेमें अच्छी तरह कीमत हो जायगी।"

वल्लभभाअी — "क्यों, कीमत अभी मालूम नहीं हुअी क्या? आज ही होरने अुसके कथनको अुद्धृत करके अुसका जो अर्थ किया है, वह क्या अुससे पूछे बिना ही किया होगा? और मैक्डोनल्डने अुस समय जो भाषण दिया होगा, वह क्या होरसे पूछे बिना दिया होगा?"

बापू — "नहीं, अिसमें मैक्डोनल्डका कसूर नहीं है। अिस आदमीने मामला अुसके हाथसे ले लिया है और अपनी मरजीसे कर रहा है। और अुससे कहता है कि नहीं तो तुम हिन्दुस्तान खो बैठोगे। मगर साम्प्रदायिक निर्णयका मामला खुद मैक्डोनल्डका है। अिसीने अपनी पंचायत सम्बन्धी बात सुझायी थी। और अब सरकारकी तरफसे फैसला देनेवाला है। होरके पास अपना निराकरण तो रखा ही होगा। मगर अिस मामलेमें मैक्डोनल्डको ही ज्यादा करना है, अिसलिअे अुसका अिन्तजार हो रहा है। आज तककी सारी बात अुसके महकमेकी है, अिसलिअे होरकी स्वतंत्रता समझमें आ सकती है। मगर अब तो अुसे न्यायाधीश बनकर बैठना है। देखते हैं वह क्या करता है?"

* * *

आज बापूने सारा अीशोपनिषद् लिख डाला। मैंने पूछा — "यह किस लिअे?" तो कहने लगे — "मुझे अिसे रट लेना है। और पुस्तकको लिये लिये कहाँ फिरा करूँ? यह कागज तो कहीं भी रखा जा सकता है।"

वेदान्त और अुपनिषदों वगैराका आजकल अध्ययन हो रहा है। आज दोपहरको श्वेताश्वतरका श्लोक निकाल कर मुझे बताया और कहा:

यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति मानवाः ।
तदा देवमविज्ञाय दुःखस्यान्तो भविष्यति ॥

"जिस अुपनिषद्के जमानेमें यह श्लोक लिखा गया, अुस समयकी गहन बुद्धिमत्ताकी यह पराकाष्ठा बताता है । आत्मज्ञानके बिना दुःखका अन्त नहीं, यह बात तो है ही । मगर अिस बातका असर अच्छी तरह तब पड़ता है जब आत्मज्ञानके बिना दुःखनाशकी अशक्यता अैसी ही किसी दूसरी अशक्यतासे बतायी जाय । यह अिस तरह कहकर बतायी है कि जैसे हम चमड़ा शरीर पर पहने हुअे हैं वैसे ही आकाशको पहन सकते हों या जैसे शरीर पर चमड़ा हाड़, माँस, वगैराको ढँके हुअे है अुसी तरह आकाशसे हम ढँके जा सकते हों, तो आत्मज्ञानके बिना दुःख मिट सकता है । अिस श्लोकके और भी बहुतसे अर्थ निकल सकते हैं, मगर क्या यह शब्दार्थ भी अद्भुत नहीं है ?"

सच बात यही है कि अीशोपनिषद् और श्वेताश्वतरमें आत्मतत्त्वकी जैसी व्याख्या हुअी है, वैसी व्याख्या दुनियाके किसी भी साहित्यमें हुअी मालूम नहीं होती ।

१६–७–'३२

आज किसी विषय परसे बात निकली कि वकील और दूसरे वर्ग क्यों नहीं समझते होंगे कि अेक वर्ग भी अिकट्ठा होकर असहयोग करे, तो हुकूमत सारी बन्द हो जाय ? होर तो जब तक अुसकी पुलिस और फौज काम करती रहे, तब तक बेफिक्र है । ये काम न करें तो ज़रूर अुसे धक्का लगे । सन् '२१ में कुछ अैसी ही हालत थी । बापू कहने लगे — "नहीं, अुस वक्त अूपरी चीज़ बहुत थी । मगर सही बात तो यह है कि आज हमें स्वराज्य मिल भी जाय तो हम क्या करेंगे ? अुसे हम हज़म ही नहीं कर सकेंगे । भयंकर अन्दरूनी झगड़े होंगे । अभी जो कुछ हो रहा है अुसमेंसे लोग अहिंसा सीखकर निकलेंगे या मारकाटमें विश्वास लेकर निकलेंगे ? मेरे दिलमें अन्दर ही यह विश्वास है कि अहिंसाके बारेमें ज्यादा मजबूत श्रद्धा लेकर निकलेंगे । अभी तो स्वराज्यकी अिमारत बन ही रही है । आजकी हालतका सामना करना, और कैसे काम लिया जाय वगैरा बातोंका निर्णय और अमल करना स्वराज्यका अमल नहीं तो और क्या है ? मगर अिमारत पर गुमटी नहीं चढ़ी है, अिसलिअे हमें स्वराज्य नज़र नहीं आता ।"

आज आश्रमकी डाक चार दिन अिन्तजार करानेके बाद अभी आयी । अिस तरह भी नियमित आ जाया करे तो ठीक है ।

आजके ‘अनुकरण’के वचन सोनेके अक्षरोंमें लिखकर सोते और अुठते वक्त रोज पढ़ने और मनन करने लायक हैं :

१७–७–’३२

"The devil sleepeth not, neither is the flesh yet dead; therefore thou must not cease to prepare thyself for the battle; for on the right hand and on the left are enemies that never rest."

"शैतान सोता नहीं है। अिसी तरह शरीरके भीतरका पशुत्व मर नहीं गया है। अिसलिअे लड़ाअीकी तैयारीमें जरा भी दम न लेना। तेरे दायें बायें दुश्मन अविश्रान्त बैठे हैं।"

आज बापूने आश्रमकी डाक अकेले हाथ पूरी कर डाली। मुझसे छह पत्र लिखवाये और बारह खुदने लिखे। देवदासके पत्रमें लिखा — "आजकल मेरी डाकमें खूब गड़बड़ हो गयी है। बड़ा चक्कर काट कर आती है। फिर भी गनीमत है कि मिल जाती है। कैदीका हक ही क्या? कैदका अर्थ ही हकका न होना है। कैदके बारेमें यह समझ होनेसे मनको शान्त रखा जा सकता है। मिलनेके बारेमें भी यही बात है। बहुत करके महादेवसे मिल सकोगे। मगर तुम सोचते हो वैसा समय विभाग नहीं बनाया जा सकता। या तो न मिलनेकी जोखम अुठायी जाय या मिलनेका मोह ही छोड़ दिया जाय। तुमसे और लक्ष्मीसे मिलना हो जाता तो खुशी तो होती, मगर मेरा अुठाया हुआ कदम ठीक ही लगता है। ज्यादासे ज्यादा चोट बाको लगेगी। मगर अुसने तो चोटें सहनेको ही जन्म लिया है। मेरे साथ सम्बन्ध करने या रखनेवालोंको करारी कीमत चुकानी ही पड़ती है। यह कह सकते हैं कि बाको सबसे ज्यादा चुकानी पड़ी है। पर मुझे अितना तो सन्तोष है कि अिससे बाने कुछ खोया नहीं।"

आश्रमको व्यक्तिगत प्रार्थना पर प्रवचन भेजा और दो पत्रोंमें प्रार्थनाके बारेमें जवाब दिये। नारणदासभाअीको लिखा — "आजकल प्रार्थनाके बारेमें विचार आते रहते हैं।" व्यक्तिगत प्रार्थनाकी जरूरत बताते हुअे कहा — "प्रार्थनाके समय अुन्हें मलिनता छोड़नी ही चाहिये। जैसे कोअी आदमी अुसे कोअी देखता हो तब बुरा काम करनेमें शरमायेगा, वैसे ही अुसे अीश्वरके सामने मलिन काम करनेमें शरम आनी चाहिये। मगर अीश्वर तो हमेशा हमारे हर कामको देखता है, विचारोंको जानता है। अिसलिअे अैसा अेक भी क्षण नहीं, जब अुससे छिपाकर कोअी काम या विचार किया जा सके। अिस तरह जो दिलसे प्रार्थना करेगा, वह अन्तमें अीश्वरमय ही हो जायगा यानी निष्पाप बन जायगा।"

दूसरे खतमें : "किसी मनुष्य या वस्तुको लक्ष्यमें रखकर प्रार्थना हो सकती है। अुसका फल भी मिलता है। मगर अैसे अुद्देश्यसे रहित प्रार्थना आत्मा और जगत्‌के लिअे ज्यादा कल्याणकारी हो सकती है। प्रार्थनाका असर अपने पर होता है यानी अुससे अन्तरात्मा ज्यादा जाग्रत होती है; और ज्यों ज्यों जाग्रति ज्यादा होती है, त्यों त्यों अुसका असर ज्यादा फैलता है। अूपर हृदयके बारेमें जो कुछ लिखा है वह यहाँ भी लागू होता है। प्रार्थना हृदयका विषय है। मुँहसे बोलने वग़ैराकी क्रियायें हृदयको जाग्रत करनेके लिअे हैं। व्यापक शक्ति जो बाहर है वही अन्दर है और अुतनी ही व्यापक है। अुसके लिअे शरीर बाधक नहीं है। बाधा हम पैदा करते हैं। प्रार्थनासे बाधा मिटती है। प्रार्थनासे अिच्छित फल मिला या नहीं, अिसका हमें पता नहीं चलता। मैं नर्मदाकी मुक्तिके लिअे प्रार्थना करूँ और अुसे दुःखसे छुटकारा मिल जाय, तो मुझे यह न मान लेना चाहिये कि वह मेरी प्रार्थनाका फल है। प्रार्थना निष्फल तो हरगिज नहीं जाती, लेकिन हमें यह पता नहीं लगता कि कौनसा फल देती है। और हमारा सोचा हुआ फल निकल आये तो वह अच्छा ही है, अैसा भी नहीं मानना चाहिये। यहाँ भी गीताबोध पर अमल करना है। प्रार्थना की हो तो भी अनासक्त रहा जा सकता है। किसीकी मुक्ति हमें अिष्ट लगे तो अुसके लिअे हमें प्रार्थना करनी चाहिये, लेकिन वह मिले या न मिले अिस बारेमें हमें निश्चिन्त रहना चाहिये। अुलटा नतीजा निकले तो यह माननेका कारण नहीं कि वह प्रार्थना निष्फल ही गयी। क्या अिससे ज्यादा स्पष्टीकरण चाहिये ?"

अेस्थरका लम्बा पत्र आया। अुसमेंसे अेक वाक्य बहुत पसन्द आया। मेरी दो छोटी लड़कियाँ जितना मुझ पर विश्वास रखती हैं, अुतना मैं अीश्वर पर रख सकूँ तो कितना अच्छा? हमारी बिल्लीके छोटे बच्चे रोज सवेरे हमारे आसपास चक्कर काटते हुअे दूधके लिअे तिलमिलाते हैं और नहीं मिलता तो बड़ी ही म्याँम्याँ मचा देते हैं, यह देखकर मुझे भी यही विचार आता है।

१८-७-'३२

अेस्थरको पत्र लिखा। अुसके अेक हिस्सेमें जिन्दगीकी छोटी छोटी बातोंमें बापूका पश्चिमी दृष्टिकोण दिखायी देता है :

" You tell me how desolate Bajaj's house looked for want of woman's touch. I have always considered this as a result of our false notions of division of work between men and women. Division there must be. But this utter helplessness on the man's part when it comes to keeping a household in good order and woman's helplessness when it comes to

be a matter of looking after herself (more here than in the West) are due to erroneous upbringings. Why should man be lazy as not to keep his house neat, if there is no woman looking after it or why should a woman feel that she always needs a man protector ? This anomaly seems to me to be due to the habit of regarding woman as fit primarily for house keeping and of thinking that she must live so soft as to feel weak and be always in need of protection. We are trying to create a different atmosphere at the Ashram. It is difficult work. But it seems to be worth doing."

"तुम लिखती हो कि स्त्रीकी सँभालके न होनेसे जमनालालजीका घर कैसा वीरान लगता है। मुझे सदा अैसा लगा है कि यह स्त्री और पुरुषके बीच कामके बँटवारेके बारेमें बहुत गलत विचारोंका फल है। कार्यविभाग जरूर होना चाहिये। मगर पुरुष पर घरकी सभालका भार आ पड़े तब वह लाचारी महसूस करे और अैसी ही हालत स्त्रीकी भी हो जाय जब अुसे स्वतन्त्र रहना पड़े (पश्चिमसे यहाँ यह ज्यादा होता है), तो यह गलत परवरिशका नतीजा है। जब घरमें स्त्री न हो तब पुरुषको अितना आलसी क्यों बनना चाहिये कि घरको सुघड़ और साफ सुथरा न रख सके ! अिसी तरह पुरुष-रक्षकके अभावमें स्त्रीको किस लिअे असहाय बन जाना चाहिये ? अिस अजीब बातका कारण मुझे तो यही लगता है कि हमें यह माननेकी आदत पड़ गयी है कि स्त्री खास तौर पर घरके कामके ही योग्य है, और अुसे अितना नाजुक रहना चाहिये कि अुसे हमेशा रक्षाकी जरूरत पड़े। हम आश्रममें दूसरा ही वातावरण पैदा करनेकी कोशिश कर रहे हैं। काम खूब कठिन है, मगर है करने लायक ही।"

अेक बंगालीने लम्बा पत्र लिखकर भाषण दिया था कि ये लोग जो असह्य दुःख अुठा रहे हैं, अुनकी जिम्मेदारी आप जैसे नेताओंके सिर है। अुसे बापूने लिखा :

"I thank you for your letter. You know it is not open to me to argue about matters political. But I can heartily endorse your remark that all the leaders must bear the consequences of their actions."

"आपके पत्रके लिअे शुक्रिया। आप जानते हैं कि राजनीतिक मामलोंकी चर्चा मैं कर नहीं सकता। मगर आपका यह कहना मुझे मंजूर है कि अपने कामोंके परिणामकी जिम्मेदारी हर नेताके सिर जरूर है।"

आज क्लेटन आया था। बोलनेमें बड़ा मीठा है। महात्मा! और सरदार साहब! के बिना अेक वाक्य नहीं बोलता। श्रीमती नायडूके लिअे अपनी स्त्रीकी तरफसे फूल लाया था। बापूको भी अपने बटनके घरमें लगे हुअे फूलोंमेंसे अेक दे गया! कहने लगा कि मैं सेम्युअल होअूँ तो नरम दलवालोंसे कह दूँ: अच्छा तुम्हें कुछ न चाहिये तो मुझे कुछ देना भी नहीं है। कअी बातोंमें गप्पें लगायीं। यह हाल सुनाता था कि हवानासे तम्बाखूका बीज यहाँ आता है और यहाँ बढ़िया तम्बाखूकी सिगरेटें बनती हैं। बापूसे पूछने लगा — "Is smoking a vice?" (क्या बीड़ी पीना दुर्व्यसन है!) बापू हँसे और बोले — "It is a bad habit?" (यह अेक कुटेव है।) अिस पर वह कहने लगा — "No, no, it keeps you away from mischief as the Charkha keeps you away. When I come to Jail and don't smoke — as I don't — I have a bad day, losing my temper and feeling out of sorts. (नहीं, नहीं, आपके चरखेकी तरह ही बेकारीकी हालतमें यह बुराअीसे बचाता है। मैं जब जेलमें आता हूँ और बीड़ी नहीं पीता, तब मेरा सारा दिन खराब हो जाता है। मिजाज ठिकाने नहीं रहता और कुछ भी अच्छा नहीं लगता।)

१९-७-'३२

आज डाक ज्यादातर सीधी ही आयी। मीराबहनका छपरासे १४ तारीखका लिखा हुआ पत्र आया, यानी सरकारके पास गये बिना ही आया। अिसमें अुन्होंने यह सब लिखा है कि अुन्हें छपरामें भी १२ घण्टेमें छपरा छोड़नेकी सूचना क्यों मिली, आधी रातको सूचना की मीयाद पूरी होने पर और काशीकी गाड़ी सुबह पकड़ने पर भी अुन्हें क्यों नहीं पकड़ा गया, और काशीमें अुन्हें तीसरी सूचना फिर क्यों मिलेगी। काशीमें गंगाजी पर वे अेक दिन सुबह घूमने गयीं, अुसका वर्णन किसी बड़े भक्तको शरमाने वाला है:

"Yesterday morning I had a heavenly early morning walk by the bank of the Ganga. People may laugh at the idea of there being anything special about holy places — but they should just take that walk with their eyes open. The Ganga blue and sparkling with the golden tints of the rising sun as he catches her little wavelets breaking themselves with the voice of happy bells against the velvety grey sand bank; the azure sky over head, intensified with the lightly gathering rain clouds; the exquisitely soft air pressing in caressing wafts across the fields; and the mighty trees — finer

than one sees anywhere else — stretching their venerable arms to heaven, and joining in the morning hymn of praise with the rustling of their myriad leaves. All thoughts of self was swept away and one rejoiced and felt one's being throb in oneness with the whole of nature."

"कल सवेरे गंगाजीके किनारे घूमते वक्त दिव्य आनन्द अनुभव किया। तीर्थोंकी पवित्रता और दिव्यताके खिलाफ लोग कितना ही बोलते हों, मगर आँखें खोलकर वहाँ घूमनेवालोंको तो यह खयाल जरूर आता है। गंगाजीका नीला, चमकता पानी; सफेद रेतवाले मखमल-जैसे किनारेको छूनेवाली, मीठी घण्टियों जैसी आवाजें करनेवाली और अुगते हुअे सूर्यकी किरणोंकी सुनहरी छायासे चमकने वाली अुसकी छोटी छोटी लहरें; अूपर दौड़ती हुअी छोटी छोटी बदलियोंसे शोभित नीलरंगका आकाश: खेतों परसे बहकर आनेवाली और शरीरका सुखद स्पर्श करनेवाली हवाके झोंके; आकाशकी तरफ अपने हाथ फैलाकर खड़े हुअे और अपने असंख्य पत्तोंकी सरसराहटसे सुबहकी प्रार्थनामें शरीक होनेवाले शानदार पेड़; — यह सब देखकर मनुष्य अपने आपको भूल जाता है और सारी कुदरतके साथ अेकताकी तानमें अुसका हृदय अुछलने लगता है।"

ये तो फिर कवि और चित्रकार भी तो हैं न!

* * *

काअुण्ट कैसरलिंगके सफरकी डायरी पूरी कर दी। बहुत ही अजीब आदमी है। मुझे लगता है कि वह अैसा होगा, जैसा कोअी आदमी बेफिक्र होकर बैठा बैठा निश्चिन्त विचार किया करता है। अुसने हर चीजमेंसे अच्छी ही बात निकालनेका व्रत लिया हो तो दूसरी बात है। मगर हर चीजको अुसकी परिस्थितिके योग्य बनानेके लिअे अुसका बचाव करनेका जो भार लिया है, वह बेहूदा लगता है। जैसे, हिन्दूधर्मके अछूतपनका बचाव; चीनियोंके सबकुछ खाने और जुअेका बचाव ही नहीं, बल्कि अुसमें सुन्दरताका आरोपण भी करना; और अिसी तरह जापानकी वेश्या-सहिष्णुताका बयान! कहता है कि पवित्रताकी बुतपरस्ती क्यों करनी चाहिये? अपने भाअीको देशके लिअे लड़नेको भेजनेकी खातिर बहन अपनी पवित्रताको बेच दे तो अिसमें क्या बुराअी है? अितना होने पर भी अिस आदमीके कितने ही समझदारी भरे विचार हैं, कितना ही दीर्घ अवलोकन है और कितना ही सूक्ष्म निरीक्षण भी है।

अुसकी योगीकी व्याख्या बढ़िया है:

"A mystic is a contemplative man, whose life emanates from within, who lives in the essence of things and for that essence alone, whose consciousness has taken root in

Atman, and who accordingly is completely truthful and pours out his inmost being without any inhibition. Such a man cannot deny any expression of life."

"योगी ध्यानमग्न होता है। अुसके जीवनका प्रवाह अन्तरमें बहता है। वह सिर्फ तत्वको पानेके लिअे जीता है। और अिसके लिअे वह सदा आत्मामें ही रमा रहता है। अिसलिअे वह पूरी तरह सत्यपरायण होता है। किसी भी तरहकी पाबन्दीके बिना वह वही कहता है, जो अुसकी अन्तरात्माको सच मालूम होता है। अैसा मनुष्य जीवन विकासके किसी भी अंगका निषेध नहीं करता।"

"Not a single sage of India, not even Buddha, has opposed popular belief in gods. Most of them, above all Shankara, the founder of radical monism, subscribed to this belief themselves. They were so conscious, on the one hand, of the inexpressibility of divinity, and on the other, of the infinite number of possible manifestations, that generally they preferred the manifold expression to the simple one."

"हिन्दुस्तानके किसी भी संतने, खुद बुद्धने भी, अनेक देवताओंके बारेकी लौकिक मान्यताका विरोध नहीं किया। बहुतोंने, खासकर शुद्ध अद्वैतके प्रतिपादक शंकरने भी, अिस विश्वासका समर्थन किया है। अेक तरफ अीश्वरका वर्णन करनेकी वाणीकी अशक्ति और दूसरी ओर अुसकी प्रगट विभूतियोंकी अनन्तता — अिसका भान अुन्हें अच्छी तरह था। अिसलिअे अेकके बजाय अनेक देवताओंको (अलग अलग विभूतियोंके रूपमें) मानना पसन्द किया गया।"

'चंडी माहात्म्य'मेंसे महादेवीका वर्णन देकर वह हिन्दुओंकी अीश्वर-भावनाको समझाता है:

"I am reminded of the famous hymn to Mahadevi in which she, the goddess is revered as Ishwara, the highest being, then as Ganga, then as Saraswati, and again as Lakshmi, where in one verse, after declaring that she dwells in all the beings of the world, in the form of peace, power, reason, memory, professional competence, abundance, mercy, humility, hunger, sleep, faith, beauty, and consciousness, it is added that she also dwells in every creature in the form of *error*. It seems to me that this multiplicity in its connected form is a better expression of what the pious Indian means, than any single formula could be, however profound."

"महादेवीका यह मशहूर स्तोत्र मुझे याद आता है। अिसमें अिस देवीका पहले अीश्वर — परमात्माके रूपमें वर्णन किया गया है। फिर अिसे गंगा के रूपमें, सरस्वतीके रूपमें और बादमें लक्ष्मीके रूपमें बताया है। अेक ही श्लोकमें जगत्के प्राणीमात्रमें, शान्ति, शक्ति, बुद्धि, स्मृति, कौशल, समृद्धि, नम्रता, क्षुधा, निद्रा, श्रद्धा, सौन्दर्य और जाग्रतिके रूपमें बताकर अितना और कहा गया है कि वह जीवमात्रमें 'भूल'के रूपमें भी मौजूद है। मुझे लगता है कि चाहे जितने भव्य परन्तु अेक ही रूपमें वर्णन करनेके बजाय संयुक्त रूपमें रहनेवाली यह विविधता हिन्दुस्तानी भक्तके विश्वासका ज्यादा अच्छा वर्णन है।"

श्रीमती बेसण्टके लिअे कहता है:

"This woman controls her being from a centre which, to my knowledge, only very few men have ever attained to. Her importance is due to the depth of her being, from which she rules her talents. She controls herself, her powers, her thoughts, her feelings, her volition, so perfectly that she seems to be capable of greater achievements than men of greater gifts. She owes this to Yoga. If Yoga is capable of so much, it may be capable of even more and thus appears entitled to one of the highest places among the paths to self-perfection. . . . The inner truth of this significance (of yogic practice) is so obvious that I am surprised that Yoga practice has not long ago been introduced into the curriculum of every educational institution. There is no doubt that the strengthening of all the forces of life is the function of their heightened concentration, and concentration signifies undoubtedly the technical basis of all progress. . . . Concentration undoubtedly is the way of perfection. . . . The value of the second aim of yogic training that of silencing the involuntary psychic activity, is equally convincing. Every superfluous activity wastes strength. . . . All strong minds are marked by the fact that they are not fidgety, that they can relax and contract at will, and that they can give their attention to one problem more continuously than weak minds. . . . It is unbelievable how important for our inner growth the shortest periods of meditation are, provided they are practised regularly. A few minutes of concious abstraction every morning effect more than the severest training of the attention through work.

This explains, amongst other things the strengthening effect of prayer."

"जिस भूमिका पर बहुत थोड़े पुरुष कभी भी पहुँचे होंगे, अुस भूमिका परसे यह स्त्री अपने आपका नियंत्रण करती है। वह अपनी आत्माकी गहराअीसे अपनी शक्तियोंका नियंत्रण करती है और यही अिस स्त्रीका महत्व है। वह अपनेसे ज्यादा बुद्धिशक्तिवाले मनुष्योंसे भी ज्यादा सिद्धि प्राप्त कर सकती है। कारण वह अपने आपका, अपनी शक्तियोंका, अपने विचारोंका, अपनी भावनाओंका और अपने संकल्पोंका पूरी तरह निरीक्षण कर सकती है। यह योगका प्रभाव है। योगसे अगर अितना हो सकता है, तो और ज्यादा भी हो सकता है। पूर्णताको पहुँचनेके लिअे यह अुत्तम साधन है। योगाभ्याससे अितना लाभ हो सकता है कि मुझे आश्चर्य है कि शिक्षा संस्थाओंमें अभी तक यह विषय पढ़ाअीमें क्यों नहीं रखा गया। जीवनमें सारे बलोंकी शक्ति बढ़ानेके लिअे बेशक अुनकी अेकाग्रता बढ़ानी चाहिये। अेकाग्रता सारी प्रगतिका शास्त्रीय आधार है। . . . योगाभ्यासका दूसरा महत्व यह है कि वह चित्तको हर कहीं भटकनेसे रोकता है। किसी भी फजूल कामसे शक्ति बर्बाद होती है। . . . सभी शक्तिशाली मनुष्योंका मुख्य लक्षण यह देखा जाता है कि वे चचल नहीं होते। वे अपनी अिच्छासे मनको किसी भी काममेंसे खींच सकते हैं और किसी भी काममें लगा सकते हैं। कमजोर मनवालोंसे मजबूत दिलवाले आदमी अेक ही सवाल पर ज्यादा सतत ध्यान दे सकते हैं . . .। थोड़ा भी समय नियमित रूपसे ध्यानमें लगाया जाना हमारे आन्तरिक विकासके लिअे अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सुबह ही कुछ मिनट अेकाग्रतासे ध्यान करना किसी काममें चित्त लगानेकी सख्त तालीमसे भी ज्यादा फलदायक है। अिस पर यह भी समझमें आता है कि प्रार्थनासे मनोबल बढ़ता है।

मगर सिद्धियोंका अुसने सख्त निषेध किया है और कहा है:

"Every diseased condition is an absolute evil. . . . The teachers of antiquity put down as an essential condition prior to accepting a pupil, that he should have perfect health, an irreproachable nervous system and a robust moral nature. . . . The Yogi is essentially healthy, he is the unquestioned master of his nerves, he is always in equilibrium, and normal in every way. . . . The Indian Yogi is an enemy of castigation, he never mortifies the flesh."

"रोगी दशा तो बिलकुल बुरी ही चीज है। ... प्राचीन कालके गुरु शिष्योंको अपनानेसे पहले अेक खास शर्त रखते थे कि अुनका शरीर बिलकुल निरोगी हो, अुनके ज्ञानतंतु निर्दोष हों और अुनमें दृढ़ नीतिभावना हो। ... योगीको पूरा निरोगी होना चाहिये, अपनी अिंद्रियों और ज्ञान-तंतुओं पर अुसका पूरा काबू होना चाहिये, अुसमें सदा समत्व होना चाहिये, और सब मामलोंमें विवेक होना चाहिये। हिन्दुस्तानी योगी देहदण्डका दुश्मन है। वह कभी देहदमन नहीं करता।"

मगर गुरुशिष्यकी बात करते हुअे वह विचित्र बात कहता है कि महापुरुष शिष्य नहीं बन सकते। जब कि हमारे यहाँ कोअी भी बड़े साधुसन्त गुरुके बिना नहीं रहे थे।

"Eminent individuals can never be disciples; it is physiologically impossible for them. No matter how capable they may be of submitting to an ideal, an institution or an objective spirit, their pride, and not only their pride, but above all, their inner truthfulness, would prevent them from following a living man, not as a duly accredited representative, but a man as such. While they behold only a man subject to human failings, and weakness, they cannot believe in divinity. Even in India par-excellence the land of faith, no founder of religion of whom I have heard has mentally important disciples during his life time. The first who swarm around a new centre of belief are, without exception poor in spirit and superstitious for they want above all to be led." . . .

"महापुरुष कभी शिष्य नहीं बन सकते। यह बात स्वभावसे ही अुनके लिअे असम्भव है। किसी आदर्शके, किसी संस्थाके या किसी बाहरी तत्वके आधीन रहनेकी शक्ति अुनमें कितनी ही क्यों न हो, तो भी अुनका अभिमान और सिर्फ अभिमान ही नहीं, परन्तु अुनकी आन्तरिक सत्यपरायणता किसी भी जीवित मनुष्यका अनुसरण करनेसे अुन्हें रोकती है। वे जानते हैं कि जब तक मनुष्य जीता है तब तक मनुष्यके नाते अुसमें कमियाँ और कमजोरियाँ होती ही हैं। अिसलिअे वे अुसका देवतापन स्वीकार नहीं कर सकते। हिन्दुस्तान तो धर्मपरायण लोगोंका मुल्क माना जाता है। वहाँ मैंने अेक भी धर्मसंस्थापक अैसा नहीं सुना जिसकी अपनी जिन्दगीमें अुसे खास तौर पर बुद्धिमान शिष्य मिले हों। नये सम्प्रदायके आसपास शुरूमें जो टोलियाँ जमा हो जाती हैं, वे

निरपवाद रूपमें मंद शक्तिवाले और अन्धश्रद्धालु लोगोंकी होती हैं। अुन्हें तो और किसीसे ज्यादा जरूरत किसी रास्ता बतानेवालेकी होती है।" . . .

रामकृष्ण-विवेकानन्द, तोतापुरी-रामकृष्ण, शंकर-गौड़पादाचार्यके होते हुअे भी!!

यह तारनहार कौन है?

"No teacher can give what is not existent in a latent state, he can only waken that which is asleep, he can liberate what is imprisoned and bring to light what has been concealed. They never give anything, they merely set free that which is in us. . . . It is a superstition to believe that the Saviours as such, as definite human beings, are saviours. . . . They were only releasers of certain qualities, they were effective as the pure embodiment of their ideal. . . . Weak men feel happy in seeing in the great soul of another their own natures adequately expressed at last, as it were in a mirror. . . . A great man shows men what everyone could be, what all men are at bottom, in spirit and in truth."

"कोअी भी गुरु अैसी कोअी चीज नहीं दे सकता, जो सुषुप्त अवस्थामें भी हस्ती न रखती हो। जो सो रहा है अुसे वह सिर्फ जगा सकता है, बन्धनमें पड़े हुअेको मुक्त कर सकता है, जो छिपा हुआ है अुसे वह प्रकाशमें ला सकता है। वे कभी नयी चीज नहीं देते। हममें जो कुछ मौजूद है, अुसे वे बन्धनमुक्त करते हैं। . . . यह मानना वहम है कि तारनहार माने जाने वाले आदमी मनुष्यकी हैसियतसे सचमुच तारनहार थे। . . . वे तो कुछ खास गुणोंका अुत्कर्ष दिखानेवाले थे। अपने आदर्शोंकी शुद्ध मूर्तिके रूपमें वे असर डालनेवाले माने जाते हैं। . . . कमजोर मनुष्योंको, जैसे अपना प्रतिबिम्ब दर्पणमें पड़ता है वैसे ही दूसरी महान आत्माओंमें अपने स्वभावका प्रतिबिम्ब पड़ता दिखायी देता है, तो बहुत अच्छा लगता है। . . . महापुरुष तो दूसरे आदमियोंको दिखा देते हैं कि हरअेक आदमी अुनके जैसा हो सकता है। वे बता देते हैं कि मनुष्य मात्र आत्माके रूपमें, सत्यके रूपमें कैसा है।"

बापूके बारेमें यह कितना सच है!

बौद्ध धर्मके बारेमें वह कहता है कि वह राष्ट्रीय प्रकृतिके माफिक नहीं था, अिसलिअे नहीं टिक सका। मगर यह नहीं कह सकता कि अीसाअी और अिस्लाम धर्म हिन्दुस्तानमें कैसे टिके हैं!

* * *

अीसाअी तर्कके पुजारी होनेके कारण सब कुछ अपना ही सच माननेवाले हैं। अपना सच और दूसरोंका झूठ, यह कहकर विरोध बढ़ाते हैं। जब कि हिन्दू धर्ममें हर प्रकारके अधिकारीके लिअे भावनाकी अलग अलग श्रेणियाँ हैं।

"The Bhagavad Gita perhaps the most beautiful work of the literature of the world, appears to many as a philosophically worthless compilation, because a great many different directions of thought affirm themselves within it simultaneously. To the Indian, the Bhagavad Gita seems to be absolutely unified in spirit. Shankaracharya, the founder of Advaita philosophy, the most radical form of monism, which has ever existed, was in practice a dualist, that is to say, a supporter of Shankhya Yoga during the whole of his life, and a polytheist in his religious practice. How was this possible? Shankara's logical competence is beyond all question. But he was more than a mere logician. Thus it seemed a matter of course to him, that different means should be used for different ends. In practice no one gets beyond dualism; it is impossible to think, wish, strive for, act at all without implicitly postulating duality. Why then deny it? It alters nothing. . . .

"Are the Indians then eclectics? Indeed they are not. They are only the opposite of rationalists. They do not suffer from the superstition that metaphysical truths are capable of an exhaustive embodiment in any logical system; they know that spiritual reality can never be determined by one, but if at all, by several intellectual co-ordinates. The fact that monism and dualism contradict each other means just as little in this connection as the contradiction between the English and the metric system."

"भगवद्गीता शायद दुनियाके सारे साहित्यमें सर्वोत्तम ग्रंथ है। तत्वज्ञानकी दृष्टिसे कितनोंको यह निर्माल्य ग्रंथ लगता है। क्योंकि अुसमें अेक ही साथ अलग अलग दिशाके विचारोंका प्रतिपादन किया हुआ है। हिन्दुस्तानियोंको तो भगवद्गीतामें पूरी तरह अेकवाक्यता लगती है। अद्वैतमतके संस्थापक शंकराचार्य, जो पुकार पुकार कर यह कहते थे कि ब्रह्मके सिवा कुछ भी सत्य नहीं है, व्यवहारमें द्वैती थे। अुन्होंने सारी जिन्दगी सांख्ययोगका समर्थन किया है। और अपने धार्मिक आचरणमें अुन्होंने अनेक देवताओंको माना है। यह क्यों कर हो सका? न्याय या तर्कमें शंकरकी जबरदस्त शक्तिके बारेमें तो कोअी सवाल ही

नहीं अुठाया जा सकता। मगर वे केवल नैयायिक ही नहीं थे, अुससे ज्यादा थे। अुन्हें यह प्रवाहप्राप्त जैसा लगा कि अलग अलग साध्यके लिअे अलग अलग साधन जुटाने चाहियें। व्यवहारमें तो कोअी भी आदमी द्वैतसे अूपर रह ही नहीं सकता। द्वैतको पूरी तरह स्वीकार किये बिना विचार करना, अिच्छा करना, प्रयत्न करना या कुछ भी करना मनुष्यके लिअे अशक्य है। तो फिर किस लिअे अुससे अिनकार किया जाय? वैसा करनेसे कुछ भी फर्क नहीं पड़ता। . . .

"तो क्या हिन्दुस्तानी सब मतोंका सार ग्रहण करनेवाले लोग हैं? नहीं, नहीं, सो तो वे हरगिज नहीं हैं। बुद्धिवादियोंसे वे अुल्टे ही हैं। अुनकी खूबी यह है कि वे यह मान लेनेके वहममें फँसे हुअे नहीं हैं कि आध्यात्मिक सत्य किसी भी अेक ही दर्शनमें पूरी तरह मूर्तिमन्त हो सकते हैं। वे जानते हैं कि परम सत्यका निर्णय किसी अेक दृष्टिसे हो ही नहीं सकता। जो होना सम्भव हो तो भी वह अनेक दृष्टियोंसे ही होगा। अद्वैत और द्वैत अेक दूसरेके विरोधी हैं, यह कहनेका अर्थ सिर्फ अितना ही है कि अंग्रेजी मापपद्धति और दशक मापपद्धति अेक दूसरेकी विरोधी हैं।"

अीसा और बुद्धके बारेमें कितना ही भाग बहुत सुन्दर लिखा गया है:

"The reason for their significance is that the word in them did not remain the word, but became flesh; and that is the utmost which can be attained. To appear wise nothing is needed but the actor's talent; to be wise in the ordinary sense, it only requires a prominent mind. Before a man turns into a Buddha, the highest which he has recognized must have become the central propelling force of his whole life, must have gained the power of direct control over matter."

"अुनके महत्वका अेक ही कारण है कि अुपदेशको वे सिर्फ जबान तक ही नहीं रखते, बल्कि आचरणमें लाते हैं। अिससे ज्यादा सिद्धि क्या हो सकती है? ज्ञानी दीखनेके लिअे सिर्फ बुद्धिकी जरूरत है। मनुष्यमें बढ़ी चढ़ी बुद्धि हो, तो वह मामूली अर्थमें ज्ञानी माना जाता है। मगर बुद्ध बननेके लिअे तो जिस अूँचीसे अूँची चीजके दर्शन किये हों अुसको सारे जीवनका मुख्य और प्रेरक बल बन जाना चाहिये। अुसमें स्थूल या जड़ वस्तुओं पर सीधा काबू रखनेकी शक्ति आ जानी चाहिये।"

अिस देशकी ब्रह्मविद्या सीखनेके तरीकेके बारेमें:

"The disciple is to sink himself, as it were, into the phrase (गुरुमंत्र) until it has taken possession of his soul. He has to reach a new level of consciousness."

“ गुरुमंत्र जब तक अपनी आत्मा पर अधिकार नहीं कर लेता, तब तक शिष्यको अुस गुरुमंत्रमें लीन हो जाना चाहिये । अुसे ज्ञानकी नयी ही भूमिका पर पहुँचना है । ”

चीनका चित्र बढ़िया दिया है और चीनियोंकी खासियतें भी । चीनकी संस्कृति पर दो ग्रंथोंका बड़ा असर पड़ा है :

“ The Book of Reverence and the Book of Rites. Reverence यानी reverence before that which is above us, that which is below us, and that which is like us; indeed, reverence before everything which exists, appears to this outlook as the very basis of all virtue and all wisdom. And that is really what it is. One only does justice to that which one takes absolutely seriously. For this reason politeness is not something essentially external, but the most elemental expression of morality. Whereas virtue and kindness may not be fairly demanded of every body, the formal acceptance of another personality can be demanded. This gives its profound acceptance to courtesy.”

“ धर्म या सदाचारका ग्रन्थ और विनय या शिष्टाचारका ग्रन्थ । धर्म या सदाचार : जो हमसे अूपर हैं, हमसे नीचे हैं और हमारे जैसे हैं, अुन सबके लिअे पूज्यभाव । जो है अुस सबके लिअे पूज्यभाव । अिस खयालसे पूज्यभाव तमाम सद्‌गुणों और तमाम ज्ञानका मूल आधार है । यही बात ठीक है । जिस चीजको हम आदरके साथ देखते हैं, अुसीके साथ न्याय कर सकते हैं । अिसलिअे सभ्यता या विनय मुख्यतः बाहरी चीज नहीं है, बल्कि नीतिकी जड़में रहनेवाली चीज है । हम हर आदमीसे सद्‌गुण और दयाकी आशा नहीं रख सकते, मगर सामनेवाले आदमीके प्रति आदर या अुसके व्यक्तित्वकी स्वीकृतिकी आशा तो सभीसे रखी जा सकती है । हर आदमीको सभ्य होना ही चाहिये, अिसका यह सबल कारण है । ”

अिसीका नाम आदर है, यही सहिष्णुताकी जड़ है — यही चीज मैं बापूमें पग पग पर देखता हूँ और शायद ही दूसरे किसीमें देखता हूँ ।

“ The Book of Rites, asserts that man can only become inwardly perfect if he expresses himself perfectly outwardly. This is the reason why the Chinaman has a fundamental sense of etiquette. The marvellous courtesy to be seen in China is the flower of confucianism.”

“ शिष्टाचारका यह ग्रन्थ कहता है कि मनुष्यका बाहरी बर्ताव बिलकुल शुद्ध हो, तभी वह भीतरी पूर्णता प्राप्त कर सकता है । अिसीलिअे चीनियोंमें

शिष्टाचारकी खास खूबी पायी जाती है। चीनमें जो अद्‌भुत विनय देखा जाता है, वह कन्फ्यूशियसके सम्प्रदायका परिणाम है।"

चीनके किसान-जीवनका चित्र बड़ा सजीव है:

"Every inch of soil is in cultivation, carefully tilled, right up to the highest tops of the hills. Wherever I cast my eyes, I see the peasants at work, methodically, thoughtfully, contentedly. It is they who everywhere give life to the wide plain. The blue of their jerkins is as much part of the picture as the green of the tilled fields and the bright yellow of the dried up river beds. There is hardly a plot of ground which does not carry numerous grave mounds; again and again the plough must piously mend its way between the tombstones. There is no other peasantry in the world which gives an impression of absolute genuineness and of belonging so much to the soil. Here the whole of life and the whole of death takes place on the inherited ground. Man belongs to the soil, not the soil to the man; it will never let its children go. However much they may increase in number, they remain upon it, wringing from Nature her scanty gifts by even more assiduous labour; and when they are dead they return in childlike confidence to what is to them the real womb of their mother. And there they continue to live for evermore. The Chinese peasant, like the prehistoric Greek, believes in the life of what seems dead to us. The soil exhales the spirit of his ancestors, it is they who repay his labour and who punish him for his omissions. Thus, the inherited fields are at the same time his history, his memory, his reminiscences; he can deny it as little as he can deny himself, for he is only a part of it. . . ."

"चप्पा चप्पा जमीन सावधानीसे जोती जाती है। पहाड़ोंकी चोटी पर की सारी जमीन भी खेतीके काममें ली जाती है। जहाँ जहाँ मेरी नजर जाती है, वहाँ वहाँ मैं किसानोंको ढंगसे, विचारपूर्वक और सन्तोषके साथ काम करते देखता हूँ। वहाँके विशाल मैदानोंको ये लोग सजीव बनाते हैं। जोते हुअे खेतोंकी हरियाली और नदियोंके सूखे हुअे पाटोंके चमकते हुअे पीलेपनके साथ किसानोंके नीले कपड़े भी चित्रका अेक भाग ही बन जाते हैं। शायद ही जमीनका कोअी

टुकड़ा अैसा होगा, जिसमें कितनी ही कबरें न होंगी । मगर अिन कब्रोंके पत्थरोंको अिज्जतके साथ बचाकर किसान अपना हल चलाता है। जमीनके साथ अितना बँधा हुआ और मानों जमीनका ही हो गया हो, अैसा किसान मैंने दुनियामें और कहीं नहीं देखा। बापदादोंसे चली आ रही जमीन पर अुसका सारा जीवन गुजरता है और वहीं अुसकी मौत होती है। मनुष्य जमीनका है, जमीन मनुष्यकी नहीं। जमीन अपनी सन्तानोंको छोड़ती ही नहीं। आदमियोंकी तादाद कितनी ही बढ़े, मगर वे सब अुसी जमीन पर रहते हैं। ज्यादा मेहनत करके, अधिक कष्ट अुठाकर वे कुदरतसे अपनी खुराक ले लेते हैं। और मरते हैं तब बालोचित श्रद्धाके साथ अुसी जमीनमें, जिसे वे अपनी माँका पेट समझते हैं, प्रवेश कर जाते हैं और सदाके लिअे वहीं रहते हैं। जिन्हें हम मरे हुअे मानते हैं अुन्हें चीनी किसान प्राचीन कालके यूनानियोंकी तरह जीवित मानते हैं। वे मानते हैं कि हमारी जमीनमें ही हमारे पूर्वजोंकी आत्मा रहती है। और वह आत्मा अुन्हें अपनी मेहनतका फल देती है, और वे कोअी दोष करते हैं तो अुसकी सजा भी देती है। अिस प्रकार विरासतमें मिले हुअे खेत ही अुनका अितिहास, अुनकी स्मृति और अुनके संस्मरण हैं। वे अिसी जमीनके अेक अंग हैं. . ."

जापानकी कलाके बारेमें बात करते हुअे सुरुचिकी व्याख्या अच्छी दी गयी है:

"An all-embracing religion and philosophy which denies nothing can only originate from the Asiatic attitude to the world; it alone makes a perfect social organization possible in principle; only the man endowed with the Asiatic's feeling for the world will possess taste in the highest sense. For what else is taste but clear consciousness of proportion? The man whose eyes have been trained in Japan will only rarely want to open them in Europe. How barbaric is our habit of overloading? How seldom does an object stand in the place which correlation appoints to it. How obtrusive our pictures are? And how rarely is a European aware that a room exists for the man, and not vice versa, that he, and not the curtain of the picture is to be given his best possible setting? . . . A Japanese temple is designed in its setting, it cannot in fact be dissociated from it. . . . It is characteristic that the Japanese loses his taste as soon as he assumes European manners and European dress."

"अेशियावासियोंके अिस दुनियाको देखनेके तरीकेसे ही किसी भी चीजसे अिनकार न करनेवाले व्यापक धर्मका और व्यापक तत्वज्ञानका अुदय हो सकता है। अिसीसे सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था अेक सिद्धान्तके रूपमें सम्भव है। जगत्‌के प्रति अेशियावालों जैसी भावनावाला आदमी ही अूँचेसे अूँचे अर्थमें सुरुचिवाला बन सकता है। मात्राके स्पष्ट ज्ञानके सिवा सुरुचि और है ही क्या? जिसकी आँखोंने जापानमें तालीम पायी है, वह युरोपमें शायद ही अपनी आँखें खोलना चाहेगा। सब कुछ ठूँस ठूँस कर भरनेकी हमारी आदत कितनी जंगली है! हम चीजोंको अुनकी असल जगह पर रखी हुअी शायद ही देखते हैं। हमारे चित्र किस तरह जहाँ तहाँ घुसाये हुअे रहते हैं! और युरोपवालोंको शायद ही यह खयाल होता है कि कमरा अिन्सानके लिअे है, अिन्सान कमरेके लिअे नहीं। परदे या तस्वीरको अच्छी तरह लगाना जितना महत्त्वपूर्ण है अुससे ज्यादा महत्त्वपूर्ण अपने आपको ठीक तरह रखना है। जापानी मन्दिरकी खूबी अुसके आसपासके वातावरणमें है। अुससे अुसको अलग नहीं किया जा सकता। . . . यह बात ध्यान खींचने लायक है कि जापानी युरोपियन पहनावा और रहन सहन धारण करने लगा कि तुरन्त अपनी सुरुचि खो बैठता है।"

*　　　　*　　　　*

अिस आदमीका पूर्वके धर्मग्रन्थोंका अध्ययन अच्छा मालूम होता है। गीता और अुपनिषदोंके जितने अुद्धरण हैं वे बिलकुल ठीक हैं, और अैसा लगता है कि याददाश्तसे लिखे हों। लाओत्सका अेक विचार बहुत सुन्दर है:

"Heaven is eternal and the earth enduring.
The Cause of the eternal duration of heaven and earth is
That they do not live unto themselves.
Therefore they can give life continuously."

"स्वर्ग शाश्वत है और पृथ्वी भी सनातन है। स्वर्ग और पृथ्वीकी शाश्वत हस्तीका कारण यह है कि अिन दोनोंकी हस्ती खुदके लिअे नहीं है। अिसीलिअे वे हमेशा जीवन देते रहते हैं।"

अीसा और बुद्ध क्यों अमर हैं, यह अच्छे ढंगसे बताया है:

"Most people are really dead before their death, that is to say, they cease to be the bearers of conciousness no matter whether they continue to exist objectively; there are only a few who continue beyond a limited period. If, however, a man arises who knows how to incarnate a fundamental world idea in his person, as Buddha and Christ succeeded in doing, then he goes on living through all eternity."

"बहुत लोग तो मौत आनेसे पहले ही सचमुच मर जाते हैं। यानी वे स्थूलरूपमें जीते रहने पर भी जाग्रतिका दीपक धारण करना बन्द कर चुके होते हैं। अेक निश्चित कालसे ज्यादा बहुत ही कम लोग जीते हैं। मगर अैसा मनुष्य क्वचित् ही पैदा होता है जो किसी मूलभूत विश्वविचारको अपने आपमें मूर्तिमान करता है, जैसा कि बुद्ध और ओसा कर सके। वह शाश्वत काल तक जीता रहता है।"

अनिष्टकी हस्तीके बारेमें कितने ही विचार बहुत गंभीर चिन्तन बतानेवाले हैं :

"Now it is certain that evil has its definite and necessary function in the economy of the world. Destruction alone prepares the way for a radical innovation. If there is to be serious progress, then the natural processes of growth and decay must occasionally be accelerated. Only revolution explodes old rigid forms, only the premature end of generations, such as war brings about, rends the thread of fettering tradition. World-embracing cultures would never have come to exist if one species of men had not subjugated others and thus raised certain forms, out of the jungle of wild luxuriance to predominance. Last and not least death and killing are normal processes of nature. . . . The Indian myth according to which creation and destruction are correlative attributes of the deity is apparently very near to the truth; at times evil is divinely ordained. Only man should not usurp the position of Shiva; what is befitting to Him, man may not desire deliberately; the inevitability of death does not justify the murderer. Just as birth and natural death are beyond the sphere of personal volition so does the general scheme according to which the whole life evolves stand above individual judgement. . . . But men only do rarely what they ought to do, all the more rarely the more consciously they act. And where they undertake to determine events, believing themselves to know the plan of the whole, they work mischief. It leads to insensate wars, to all exterminating revolutions; the self-regulation of nature is destroyed and folly gains the victory. In this way white men have made havoc upon earth in many many in all too many directions. . . . Violence

practised on living beings is always evil, every act of violence as such is a blow in the face of justice, and the most just execution or penalty offends the moral sense in some way or the other. And yet, somehow sometimes it is possible to realize the beneficial quality of what is evil in itself, not only in small matters, but even on a great scale. History teaches that the most violent tribes have often developed into cultured nations with the highest moral outlook. Physical superiority is only durable upon a moral basis. Without courage strength achieves nothing, without readiness for sacrifice discipline, organization, even courage is of no avail."

"यह पक्की बात है कि अिस दुनियाके व्यवहारमें बुराअीका भी निश्चित और जरूरी स्थान है। जइसे नयी रचना करनेका रास्ता विनाशसे ही तैयार होता है। हमें कुछ बड़ी प्रगति करनी हो तो अुत्पत्ति और विनाशके कुदरती क्रमको कभी कभी वेग देना ही चाहिये। पुरानी कठोर बनी हुअी चीजोंको विप्लव ही अुड़ा दे सकता है। युद्ध कितने ही युगोंका असमयमें अन्त करता है; अिसी तरह बन्धनकारक रूढ़ियोंका फन्दा कट सकता है। अगर अेक जातिके लोगोंने दूसरी जातिको पराधीन बनाकर कितनी ही चीजें घने जंगलसे बाहर न निकाली होतीं, तो जगद्‌व्यापी संस्कृतियाँ पैदा ही न होतीं। मौत और बरबादी कुदरतका स्वाभाविक सिलसिला है। . . . हिन्दुस्तानके पुराणोंके अनुसार सृष्टि और प्रलय अेक ही देवताके अेक दूसरेके पूरक स्वरूप माने गये हैं, अिसमें बहुत सत्य है। कभी कभी विनाशको साफ तौर पर जरूरी माना गया है। हाँ, अिस महादेवकी जगह मनुष्यको नहीं ले लेनी चाहिये। महादेव जो कर सकते हैं, अुसे करनेकी अिच्छा मनुष्यको न रखनी चाहिये। मृत्यु अनिवार्य है अिसलिअे हत्याका समर्थन नहीं किया जा सकता। जैसे जन्म और मरण अिन्सानकी अपनी अिच्छाके क्षेत्रसे बाहरकी चीजें हैं, वैसे ही जीव-मात्रके विकासकी तमाम योजना व्यक्तिगत निर्णयसे परे है। . . . परन्तु अिन्सानको जो करना चाहिये वह शायद ही करता है। और जब जान बूझकर कुछ भी करने लगता है, तब तो जो करना चाहिये वह शायद ही कर सकता है। यह मान कर कि वह सारी योजना जानता है जब वह अेक खास परिणाम पैदा करना चाहता है तब अुसे बिगाड़ता ही है। अिसीसे मूर्खताभरी लड़ाअियाँ और प्रलयकारी विप्लव पैदा होते हैं। कुदरतका अपना चलाया हुआ क्रम बदल जाता है और मूर्खताकी जीत होती है। गोरे लोगोंने अिसी तरह बहुत बहुत दिशाओंमें भयानक बरबादी मचायी है। किसी भी प्राणीकी हिंसा करना बुराअी ही

है। हिंसाका हर अेक काम न्यायको चोट पहुँचाता है। किसीको कितनी ही नियमानुसार सजा दी जाय, तो भी वह नीतिकी भावनाको तो किसी न किसी प्रकार आघात पहुँचाती ही है। यह सब कुछ होने पर भी यह माना जा सकता है कि बुराअीमेंसे भलाअी निकल सकती है। छोटी छोटी बातोंमें ही नहीं, मगर बड़े पैमाने पर भी यह सम्भव है। अितिहासमें हम देखते हैं कि बहुत ही हिंसक जातियाँ भी बहुत अूँचे सदाचारकी दृष्टिसे संस्कारी बन कर निकली हैं। शारीरिक बल नैतिक बुनियाद पर ही टिक सकता है। हिम्मतके बिना अकेली ताकत कुछ नहीं कर सकती। और त्याग करनेकी तैयारीके बिना अनुशासन, संगठन और हिम्मतसे भी कुछ नहीं होता।"

अमरीकी लोकतंत्रका अेक वाक्यमें अच्छा चित्र दिया है:

"The universal franchise has recalled to life the right of physical might in a refined form; through playing upon moods and instincts, through suggestion and the mechanical result of clever intrigues, it is now being decided who is to govern, and this method of arriving at a decision differs from the method of the days of robber knights, precisely as seduction differs from violation."

"सार्वलौकिक मताधिकारसे 'जिसकी लाठी अुसकी भैंस' वाला नियम संस्कृत रूपमें सजीवन हुआ दीखता है। लोगोंके आवेग और रुखका फायदा अुठाकर और सुझाव तथा चालाकी भरे दावपेंचसे यह तय किया जाता है कि किसके हाथमें सत्ता आयेगी। बलात्कार और फुसलाहटमें जितना फर्क है अुतना ही फर्क लुटेरे सरदारोंकी सत्तामें और अिस ढंगसे हथियाअी हुअी सत्तामें है।"

सारी पुस्तक विचारोंको अुत्तेजन देनेवाली (thought compelling) है, और जितनी निश्चिन्ततासे लिखी गयी है अुतनी ही निश्चिन्ततासे अुसे पढ़ना और अुसका विवेचन करना चाहिये।

* * *

आज अर्विन पर हॉर्निमैनका लेख है। अिसने अुसे चालाक मौका-परस्त बताया है।

"Agile opportunist who endeavours to cover his inconsistencies and change of principle and policy with a thick veneer of unctuous rectitude and hypocritical professions of sincerity."

"यह चालाक अवसरवादी है। अपनी असंगतताओं तथा सिद्धान्तों और नीतिके परिवर्तनोंको सच्चेपनके आग्रह और सचाअीके दम्भी स्वाँगके मोटे पर्देके नीचे ढँकना चाहता है।"

“वह अेक बार साअिमन कमीशनके हिमायतीके रूपमें खड़ा हुआ, फिर नरम दलवालोंका विरोध देखकर झुक गया। अेक बार अुसने सविनयभंगकी लड़ाअीको लाठी और आर्डिनेन्ससे कुचलनेकी कोशिश की। बादमें कांग्रेसका जोर देखा तो झुक गया। अुसकी सचाअीकी बातोंसे अरुचि होती है। अब ये बन्द हो जायँ तो ही अच्छा। अगर वह गोलमेज परिषदको फिर जिन्दा करा दे, तो जरूर अुसकी सचाअीके बारेमें विचार किया जायगा।”

बापू: “मैं अिस विचारका नहीं। अिस आदमीमें सचाअी है, अिस अर्थमें कि अुसमें अुखाड़-पछाड़ नहीं, दावपेंच नहीं। वह सीधी सादी बात करनेवाला है। साअिमनके समय अुसे वह बात अच्छी नहीं लगती थी, मगर अुसने विचार कर लिया कि अनुदार दलके नाते जो नीति अपना ली गयी है अुसके खिलाफ न जाया जाय। अुसके खरेपनकी भी हद है और वह हद यह है कि ब्रिटिश साम्राज्य अखण्ड रहे। अुसे खतरा हो तो वह वचन भंगका भी विरोध नहीं करेगा। वह ब्रिटिश साम्राज्यको अीश्वरकी अेक अद्भुत कृति माननेवाला है — जैसा कि हरअेक अनुदार दलवाला मानता है — और अुसी दृष्टिसे वह सब चीजोंको देखता है। मगर वह खरा हो या न हो अिससे क्या सरोकार? हमारा तो वास्ता अिस बातसे है कि हमें जो चाहिये वह मिलता है या नहीं।”

आज सातवळेकरका लम्बा पत्र आया। विश्वरूप दर्शनवाले ११वें अध्यायको बापूने अेक महाकाव्य कहा है। अुसके बारेमें अुन्होंने लिखा है: “यह सिर्फ काव्य नहीं है, यह सत्य है। **वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः** — यह गीताका सिद्धान्त वेदों और अुपनिषदोंमें बार बार आता है और अिस अध्यायमें भी **वासुदेवः सर्वम्** बतानेका तात्पर्य यही है कि विश्व-मात्रमें वासुदेव है, विश्वका हर व्यक्ति वासुदेवका अलग अलग अंग बन जाता है।” अुन्हें बापूने हिन्दीमें लम्बा पत्र लिखाया:

“विश्वरूप-दर्शनयोगके बारेमें जो आपने लिखा है वह सब यथार्थ है। तदपि मैंने जो अुस अध्यायकी भूमिकामें लिखा है, अुसमें कोअी फर्क नहीं होता है। सारे जगतको जो मनुष्य वासुदेव स्वरूप मानेगा, वह विश्वरूपका दर्शन अवश्य करेगा। परन्तु रूप अपनी कल्पनाकी ही मूर्ति होगा। खिस्ती जगत्‌को अीश्वर रूप मानता हुआ अपनी कल्पनाके अनुकूल मूर्ति देखेगा। जो जैसे भजता है वैसे अीश्वरको देखता है। हिन्दू सभ्यतामें जो पैदा हुआ है और अुसीकी शिक्षा जिसने पायी है, वह ग्यारहवाँ अध्याय पढ़ते हुअे थकेगा नहीं; और अुसमें अगर भक्तिकी मात्रा होगी तो अुस अध्यायमें जैसा वर्णन है वैसा ही विराट रूप दर्शन करेगा। परन्तु अैसी कोअी मूर्ति जगत्‌में अुसकी कल्पनाके बाहर नहीं है। ब्रह्म, आत्मा, वासुदेव, जो कुछ भी विशेषण अुस शक्तिके लिअे हम

अिस्तेमाल करें, निराकार ही है । भक्तके लिअे वह आकाररूप बनती है । यह अुस शक्तिकी माया है, यही काव्य है । हम अुसका निचोड़ अेक ही खींच सकते हैं जो आपने खींचा है । डाकूमें भी हमको वासुदेवका रूप देखना होगा। और हमारेमें वह शक्ति आ जायगी तो डाकू डाकूपन छोड़ देगा । और जब तक हमारेमें यह शक्ति नहीं आती, तब तक हमारा सब अभ्यास और सब ज्ञान निरर्थक ही है । आपने विश्वरूप-दर्शन पर जो लिखा है, अुसके बारेमें अुत्तर नहीं माँगा है । मैंने दिया है क्योंकि मैं भी वैसे विचारोंमें ग्रस्त रहता हूँ। और आपके साथ पत्र द्वारा अैसे वार्तालाप करनेसे मुझको आनन्द होता है ।"

आजकलकी मनोदशा बतानेके लिअे भी यह पत्र बहुत अुपयोगी है । नारणदासभाअीने लिखा था कि "प्रार्थनाके बारेमें मुझे आजकल बहुत विचार आते हैं ।" यह भी अुसीके साथ पढ़ना चाहिये । अिस पत्रके पिछले हिस्सेमें वैदिक मन्त्रोंको समझनेकी किसी कुंजीके लिअे अुन्होंने सातवळेकरको लिखा है — "अनेकोंके अनेक अर्थ, सनातनियोंमें भी मतभेद, समाजियोंमें भी मतभेद, युरोपियन विद्वानोंमें भी मतभेद, अिसलिअे घबराहट होती है । अुपनिषदोंके बारेमें भी यही बात है ।" फिर लिखते हैं — "अीशोपनिषद् कण्ठस्थ करना शुरू किया है । अुसके अनेक अर्थ देखनेके बाद मैंने अपने लिअे अेक खास अर्थ बना लिया है । मगर संस्कृत भाषाका थोड़ा ज्ञान होनेके कारण अिस तरहका अर्थ बनाना धृष्टता ही लगती है। मेरे जैसा आदमी वैदिक मन्त्रोंका अर्थ निर्णय कैसे कर सकता है? और सौभाग्य या दुर्भाग्यसे संस्कृतका अितना ज्ञान जरूर है कि कअी अर्थोंमेंसे अेक अर्थ पसन्द करनेकी शक्ति है। आत्मसन्तोषके लिअे तो गीताजी काफी हैं । मगर वेदोंमें चंचुपात करना मुझे प्रिय है । अिसलिअे कोअी सूचना कर सकते हों तो कीजिये।"

२०-७-'३२ नारणदासभाअीका पत्र आया । आश्रममें दो सप्ताहसे डाक ही नहीं मिली । बच्चे बेचारे लिखना छोड़ बैठे हैं । बापू कहने लगे — "अितने कागजके टुकड़ोंसे अुन्हें शिक्षा मिल रही थी, वह भी बन्द हुअी ।"

मेरा ११ तारीखका लिखा हुआ पत्र कहा जाता है १४ तारीखको डाकमें पड़ा, मगर आश्रममें १८ तारीख तक नहीं मिला । मगर कैद किसे कहें? और अपटन सिंकलेरने रूसी जेलोंके अनुभवियोंके जो वर्णन अिकट्ठे किये हैं अुन्हें पढ़कर तो अैसा लगता है कि यह कैसी जेल! हमारे यहाँ तो कुछ भी दुःख नहीं ।

वल्लभभाअीकी संस्कृत अच्छी हो रही है। अुनकी सरलताकी कोअी हद नहीं है। मुझसे पूछने लगे — "महादेव, यह विभक्ति क्या होती है? और नृपः कह सकते हैं तो राजः क्यों नहीं और विद्वानः क्यों नहीं?" मगर आज जब ब्रह्मचर्य पर महाभारतके श्लोक आये, तब पलभर तक वे भी स्तब्ध रह गये। मैंने बापूसे कहा — "संस्कृत भाषाका-सा संगीत और किसी भाषामें नहीं होगा, और अुसमें ब्रह्मचर्यके बारेमें जो लिखा है वह भी दूसरे किसी साहित्यमें नहीं होगा।" बापू कहने लगे — "संगीतके बारेमें तो कुछ नहीं कहा जा सकता, ग्रीक-लेटिनमें होगा भी; मगर ब्रह्मचर्य और सत्यके बारेमें तो शायद ही और किसी साहित्यमें संस्कृतकी बराबरी करनेवाली चीज होगी।" ये हैं वे श्लोक (अनुशासन पर्वमेंसे)

न तपस्तप अित्याहुर्ब्रह्मचर्यं तपोत्तमम्
अूर्ध्वरेता भवेद्यस्तु स देवो न तु मानुषः ॥
आजन्ममरणाद्यस्तु ब्रह्मचारी भवेदिह
न तस्य किंचिदप्राप्यमिति विद्धि नराधिप ॥
पंचविंशतिपर्यन्तं ब्रह्मचर्यं समाचरेत्
गुणवान् शक्तिसम्पन्नः शतायुस्तु भविष्यति ॥
कायेन मनसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा
सर्वत्र मैथुनत्यागो ब्रह्मचर्यं विधीयते ॥
यदीच्छसि वशीकर्तुं जगदेकेन कर्मणा
सुदुर्वृत्तेन्द्रिय ग्रामं बलाच्छीघ्रं निवारय ॥

२१-७-'३२

आज बापू छगनलाल जोशी, शंकर और डॉ॰ मुकुन्दसे मिले। बापूने कहा कि — "छगनलालने अेक खबर बहुत अच्छी दी कि अब दो पठान युवक कांग्रेसकी तरफसे आये हैं और वह भी अुस वक्त जब वे झगड़े हो रहे थे। वे लोग बड़े अच्छे आदमी हैं और अुन्होंने बहुत अच्छी छाप डाली है। अुन्होंने दूसरी खबर यह दी कि रामदास बहुत अुदास रहते हैं, क्योंकि अुनके पास जो दन्तमंजन आया अुसके साथ अिलायची आ गयी। अुसे तो अुन्होंने तुरन्त नष्ट कर दिया, मगर अुनकी अुदासी नहीं जा रही है।" बापूने पूछा — "नष्ट तो कर दिया, मगर अिन कर्मचारियोंको खबर दे दी?" छगनलाल कहने लगे — "नहीं, खबर तो नहीं दी।" बापूने खुद ही सारी बात सुपरिण्टेण्डेण्टसे कह दी। अुसी दिन किसीने हिंगाष्टक चूरनमें मिर्चें मँगवायी थीं। अिसलिअे बापू कहने लगे — "किसीका क्या कसूर? देखो तो मेरा घर ही फूटा हुआ है! अिसमें

रामदासका दोष तो है ही नहीं, मगर अुसे भेजनेवालेका जरूर है।" सुपरिण्टेण्डेण्ट कहने लगे — "अिसमें कुछ नहीं, रामदासके अफसोस करनेका कोअी कारण नहीं है।"

मीराबहनका अैसा पोस्टकार्ड आया कि वे काशीमें बीमार पड़ी हैं। अुनके पत्रमें अुन्हें मिलनेवाली बेहद सेवाका जिक्र था। अुन्हें पत्र लिखा :

"We never know when we commit a breach of the laws that govern the body. And in nature as in human law ignorance is no excuse. Your fever therefore does not surprise me. I expect that the energetic remedy adopted by you checked the progress of malaria. Yes, at such times the services of friends become a boon and induce an early recovery. I know what lavish care is bestowed upon guests in Shiva Prasad Babu's home. I am glad you are having these sweet experiences. It makes attacks such as you had not only bearable but even a prize visitation in that they enable one to understand human nature at its best. And when it acts equally towards all and in all circumstances, it approaches the divine."

"शरीर सम्बन्धी नियमोंको हम कब तोड़ते हैं, अिसका हमें पता नहीं चलता। और जो सिद्धान्त अिन्सानके बनाये कानूनके बारेमें है, वही कुदरतके कानूनके बारेमें भी है कि अज्ञान यह कोअी बचाव नहीं है। यानी तुम्हें बुखार आया है, अिस पर मुझे आश्चर्य नहीं है। तुमने जोरदार अुपाय किये और अुनसे मलेरियाका जोर रुक गया। अैसे समय मित्रोंकी सेवा वरदान बन जाती है और अुसके कारण जल्दी हम अच्छे भी हो जाते हैं। मैं जानता हूँ कि शिवप्रसाद बाबूके घरमें कैसी बढ़िया आवभगत होती है। तुम्हें ये मीठे अनुभव हो रहे हैं अिससे मुझे खुशी है। अिनके कारण अैसी बीमारी सह्य ही नहीं होती, बल्कि अुसमें मानव स्वभावके अच्छेसे अच्छे पहलूका अनुभव होनेके कारण वह अेक आशीर्वाद भी बन जाती है। सभी हालतमें सभीको यह अनुभव समान भावसे हो, तब तो वह दिव्यताके नजदीक पहुँच जाता है।"

२२–७–'३२

कल रातको बापूसे पूछा था कि बिड़लाने जो बयान प्रकाशित किया है, क्या वह काफी है? बापू कहने लगे — "नहीं, काफी नहीं है। क्योंकि अुनसे जो सवाल पूछा गया था अुसका जवाब नहीं है। अुन्होंने यह कहा कि हमने Consultative Committee (सलाहकार समिति) से असहयोग किया है; मगर अिससे

यह स्पष्ट नहीं होता कि नरम दलवालोंके प्रस्ताव पर दस्तखत क्यों नहीं किये। सम्भव है अुन्होंने सहयोगकी शर्तें नरम दलवालोंसे सख्त रखी हों और अुन्हें नरम दलवालोंने न माना हो। दूसरे, अिस बातका भी जवाब नहीं है कि वे होरसे पत्र-व्यवहार कर रहे हैं।" आज सर पुरुषोत्तमदासका बयान वही बात ज़ाहिर करता है, जो अुनकी तरफसे बापूने पहले ही कह दी थी। अिनकी शर्तें नरम दलवालोंसे ज्यादा थीं। यह बात नहीं थी कि गोलमेजका तरीका फिरसे अपनाया जाय तो अितनेसे हमें सन्तोष हो जायगा। और विलायतसे आनेके बाद अिन्होंने होरको अेक भी पत्र नहीं लिखा।

२३-७-'३२

मेजर भण्डारीने यह कहा था कि छगनलाल जोशी और गंगा बहनको मुझसे मुलाकात करने देंगे। फिर भी कल शामको ये लोग आये तब अुन्हें अिनकार कर दिया! कारण यह है कि ये दोनों जन कार्यकर्ता हैं और अुन्हें मुझसे मिलने देनेमें डर लगा। और कानून तो मौजूद ही था कि सम्बन्धियोंके सिवा और किसीको नहीं मिलने दिया जा सकता! छगनलाल जोशी पहले ही दिन बापूसे मिल चुके थे। अुसमें किसी तरहकी जोखम नहीं थी, लेकिन मुझसे मिलने देनेमें जोखम लगी। बिशप फिशरकी The Thin Little Man Gandhi (छोटासा दुबला पतला आदमी गांधी) पुस्तक आयी थी। वह भी डरके मारे नहीं दी और सरकारके पास भेज दी। मुझे लगता है कि यह तो ठीक ही किया, क्योंकि ये पढ़ लेते तो भी डरकर न देते और सरकारमें कोअी समझदार आदमी होगा, तो वह पढ़कर अिस पुस्तकको निर्दोष ठहरा कर दे सकता है।

रातको सोते वक्त बापू कहने लगे — "वल्लभभाअी, यह मालूम है न कि अिन गुजराती पत्रोंके बारेमें हम कड़वी घूँट पी रहे हैं?" वल्लभभाअी — "कैसे?" बापू — "अंग्रेजीके पत्र तो तुरन्त भेजे जा सकते हैं, मगर गुजरातीकी कठिनाअी रहेगी। अिस तरह यह मुझे बहुत अपमानजनक लगता है कि ये लोग हमारे आदमियोंका अविश्वास करते हैं। अिन पत्रोंका अनुवाद हो और ये लोग पास करें, तब कहीं ये जा सकते हैं, यानी अिन लोगोंमें कोअी गुजराती जाननेवाला अैसा नहीं मिलता जिसका अिन्हें विश्वास हो! यह भयंकर बात है। अिसलिअे अिस मामलेमें लड़ाअी करनी चाहिये। लड़ाअी यह कि हम अिन्हें कहें कि अिस शर्त पर हम पत्र नहीं लिखेंगे।" वल्लभभाअी — "ये लोग तो बेहया हैं। कह देंगे कि भले ही मत लिखो, हमारा क्या बिगड़ेगा!" बापू — "अिसकी कोअी परवाह नहीं।" मैंने कहा — "यह तो ठीक है। ये लोग क्या कहते हैं, अुनपर कोअी असर हो या न हो, अिसका विचार करनेकी

जरूरत नहीं, मगर यह मामला और मीराबहनका मामला अेक-सा नहीं है। वहाँ तो अेक जिवीत सिद्धान्त था, यहाँ मुझे अैसी बात नहीं लगती। यहाँ तो ये लोग कहते हैं कि अंग्रेजीमें लिखे होंगे तो तुरन्त जायँगे। मगर आप अंग्रेजीमें न लिखें तो भले ही न लिखें, हमें अुनकी जाँच पड़ताल तो करनी ही होगी। अगर ये लोग यह आग्रह करें कि आपको ये पत्र अंग्रेजीमें लिखने चाहियें तब तो अैसा नहीं किया जा सकता।" बापू कहने लगे — "आडे टेढ़े ढंगसे वे कह ही रहे हैं कि अंग्रेजीमें लिखो।" मैंने कहा — "मुझे लगता है कि आप जिस दोषकी शिकायत कर रहे हैं, वह अिस प्रथाकी जड़में है।" बापू कहने लगे — "हाँ, यह तो है, मगर अिसलिअे अुसे कायम क्यों रखा जाय? अपने स्वार्थके लिअे?"

२४-७-'३२

कल रातकी चर्चावाला मामला सबेरे घूमते घूमते फिर हाथमें लिया। वल्लभभाअीकी राय पूछी। वल्लभभाअी कहने लगे — "अिस तरह पत्र लिखते रहना पड़े अुससे तो बन्द कर देना अच्छा है। अिन लोगोंमेंसे तो किसी पर अिसका असर पड़ेगा नहीं।" बापू — "असर न हो अिसकी परवाह नहीं। वैसे अन्तमें असर पड़े बिना नहीं रहता।" फिर मेरी राय पूछी। मैंने कहा — "अगर हम यह मान लेते हैं कि ये लोग अंग्रेजीके पत्रोंकी जाँच करें (यानी यह मान लें कि वे हम पर विश्वास न करके हमारे पत्र देखना चाहें), तो हम यह भी क्यों न मान लें कि वे गुजरातीका अनुवाद करें? ओरियंटल ट्रांस्लेटरके दफ्तरका काम पत्रोंका अनुवाद करना है, राय देना नहीं।" बापू कहने लगे — "यह बात ठीक है। मगर मैं कहाँ कहता हूँ कि दफ्तरकी राय लें? मगर अुन्हें अपना अेक भरोसेका कर्मचारी बुलवाकर अुसे ये पत्र दिखला लेने चाहियें। और जिस तरह अंग्रेजी पत्र पास करते हैं, वैसे ही अिन्हें भी पास करके भेज देना चाहिये। अुन्हें तो अिन कर्मचारियोंका भी विश्वास नहीं है, अिसलिअे सबका अनुवाद कराकर देखना है। यह बड़ा अपमान जनक लगता है। जनरल बोथा तो अंग्रेजी जानता था, अुसका स्वार्थ भी था। फिर भी वह कहता था — 'नहीं, मैं तो डच भाषामें ही बात करूँगा।' डचमें बात करनेकी किसीने अुसे दक्षिण अफ्रीकासे सलाह नहीं दी थी, मगर अुसे खुद ही सूझ गया। अिसी तरह हमें यह सूझ जाना चाहिये। यह तो है नहीं कि ये पत्र लिखे बिना काम नहीं चल सकता। यह धर्म नहीं कि ये पत्र लिखे ही जायँ। अिसमें आत्मसन्तोष है, दूसरोंके लिअे आश्वासन है। मगर अिसमें हमारी भाषाकी बेअिज्जती होती हो और हमारे आदमियोंका अविश्वास

मालूम होता हो, तो अिसे बन्द कर देना ही ठीक है। और क्या यह भयंकर नहीं लगता कि कोअी आदमी मर रहा हो, अुसे मैंने पत्र लिखा हो, वह पत्रके लिअे तरस रहा हो और पत्र यहाँसे पास होकर जाय अुससे पहले वह मर जाय? ये लोग यदि यह कहेंगे कि हमारे दफ्तरमें आदमी कम हैं, हमसे काम नहीं सँभलता, तो यह बात समझमें आ सकती है। मगर अिन्हें तो किसी विश्वास-पात्र आदमी पर छोड़नेके बाद खुद देखना है। मुझे तो अिस बात पर भी चिढ़ होती है कि सुपरिण्टेण्डेण्ट और जेलरके प्रति अविश्वास है। मगर अिन्हीं लोगोंमें जब आश नहीं तो हम क्या करें?" वल्लभभाअीसे कहा — "आप संस्कृतमें श्रेय और प्रेयके बारेमें पढ़ेंगे। अिस मामलेमें प्रेय कहता है कि हम पत्र लिखते रहें और श्रेय कहता है कि छोड़ दें।"

आज आश्रमकी डाकमें १९ पत्र भेजे, मगर सबको सूचना दे दी कि पत्र किसी भी वक्त बन्द हो जायँ तो चिन्ता न करें। अनासक्तिकी यही निशानी है। प्रभुदासको सत्य और अीश्वरके बारेमें लिखा — "सत्यके बारेमें मुझे कुछ कहना नहीं है। अीश्वरकी व्याख्या मुश्किल है। सत्यकी व्याख्या तो सबके दिलोंमें मौजूद है। तुम जिसे अिस समय सच मानते हो, वही सत्य और वही तुम्हारा परमेश्वर। अपनी कल्पनाके अिस सत्यकी आराधना करते हुअे मनुष्य अन्तिम शुद्ध सत्य तक पहुँच ही जाता है। और वही परमात्मा है। आजकल मैं वेदोंका सार पढ़ रहा हूँ। अुसमें भी यही बात है। मेरे खयालसे तो जब तक हमें सच्चा जीवन जीना नहीं आता, तब तक सारी पढ़ाअी बेकार है। सच्चे जीवनमें बनावटकी गुंजायश ही नहीं है। सत्यका पुजारी जैसा है, वैसा ही दिखायी देगा। अुसके विचार, जबान और काममें अेकता होगी। अीश्वरको सत्यके रूपमें जाननेसे यह शिक्षा जल्दी मिलती है। अैसा सत्यमय जीवन बनानेके लिअे बहुतसी पोथियाँ अुलटनी नहीं पड़तीं, मगर सारी बाजी ही हमारे हाथमें आ जाती है। **हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितंमुखं, तत्त्वं पूषन्नपावृणु, सत्यधर्माय दृष्टये।** अिस मंत्रका विचार करना।" पुरातनको लिखा — "मेरी चेतावनी तुम्हें सवाल करनेसे रोकनेको नहीं थी, मगर अन्तर्मुख होनेके लिअे थी। मुख्य चीज जान लेनेके बाद अुपवस्तुओंका हल करना हमें आना चाहिये। न आवे तब तक यह नहीं कहा जा सकता कि मुख्य वस्तु समझमें आ गयी है। यह तो भूमितिके साध्य जैसी है। यदि अेक आ जाय तो अुससे पैदा होनेवाले दूसरे अभ्यास आने चाहियें।

कपिलको — "तकली चलाना अेक सेवा है। तुम्हारे आसपास बच्चे हों अुन्हें शिक्षा दो या बड़े हों अुनके लिअे रातकी पाठशाला चलाओ, तो यह भी

सेवा ही है। हम खुद दिनदिन शुद्ध होते जायँ, अेक भी गन्दा विचार मनमें न आने दें, तो यह भी मेरे खयालसे सेवा ही है। और अितना तो बिस्तरमें पड़ा हुआ आदमी भी कर सकता है।"

. . . ने पूछा — "जो सांसारिक चीजोंके पानेके लिअे झूठका सहारा लेता है, अुसे भगवान मिल सकते हैं? या सत्यके पालनेके लिअे प्रवृत्ति छोड़ दे अुसे अीश्वर मिलते हैं?" अुन्हें हिन्दीमें लिखा: "जो मनुष्य सांसारिक वस्तुकी प्राप्तिके लिअे या और किसी कारण असत्यका सहारा लेता है, राग-द्वेषसे भरा है, अुसको भगवत्प्राप्ति हो ही नहीं सकती है। और दूसरा दृष्टान्त जो आपने दिया है अुसे मैं असम्भव मानता हूँ। सत्यके मार्ग पर चलना और प्रपंच अर्थात् प्रवृत्तिसे अलग रहना आकाशपुष्प जैसी बात हुअी। जो प्रवृत्तिसे अलग रहता है वह किस मार्ग पर चलता है वह कैसे कहा जाय? सत्यके मार्ग पर चलनेमें ही प्रवृत्तिप्रवेश आ जाता है। बगैर प्रवृत्तिप्रवेशके सत्यके मार्ग पर चलने न चलनेका कोअी मौका ही नहीं रहता। गीतामाताने कअी श्लोकोंसे स्पष्ट किया है कि मनुष्य बगैर प्रवृत्ति अेक क्षणके लिअे भी रह नहीं सकता है। भक्त और अभक्तमें भेद यह है कि अेक पारमार्थिक दृष्टिसे प्रवृत्तिमें रहता है और प्रवृत्तिमें रहते हुअे सत्यको कभी छोड़ता नहीं है। और रागद्वेषादिको क्षीण करता है। दूसरा अपने भोगोंके ही लिअे प्रवृत्तिमें मस्त रहता है, और अपना कार्य सिद्ध करनेके लिअे असत्यादि आसुरी चेष्टासे अलग रहनेकी कोशिश तक भी नहीं करता है। यह प्रपंच कोअी निन्द्य वस्तु नहीं है। प्रपंचके ही मारफत भगवद् दर्शन शक्य है। मोहजनक प्रपंच निंद्य और सर्वथा त्याज्य है। यह मेरा दृढ़ अभिप्राय है। और अनुभव है।"

सोनी रामजीको — "जनेअूके गूढ़ अर्थ मैंने बहुत सुने हैं मगर ये सब अर्थ काल्पनिक हैं। जनेअूकी अुत्पत्तिके समय ये सब भाव भरे थे, यह मैं नहीं मानता। मगर आर्य और अनार्यमें भेद है, यह बतानेके लिअे जो अपनेको आर्य मानते थे अुन्होंने जनेअूकी निशानी अख्तियार की। वह समय अैसा होना चाहिये, जब रूअीसे कपड़ा बनानेकी क्रियाकी खोज हुअी होगी। अुस प्राचीन-कालमें क्या और आज क्या, करोड़ों लोग सिर्फ धोती पहनते थे और नंगे बदन रहते थे। जो अनार्य माने जाते हैं वे तो अैसे थे ही। अिसलिअे आर्योंने सूत कातनेकी क्रियाको गति देनेके लिअे, कताअीको बढ़िया बनानेके लिअे, और यह साबित करनेके लिअे कि यह पवित्र अुद्योग है जनेअू रूपी चिन्ह आर्योंके लिअे ग्रहण किया। अिस कथनके लिअे मेरे पास कोअी अैतिहासिक प्रमाण नहीं है। सिर्फ मेरा अनुमान है। आज तो आर्य-अनार्यमें कोअी फर्क न है और न रहना चाहिये। दोनों जातियोंका संकर हजारों वर्ष

पहले हुआ था और आजकलके लोग अिसी संकरसे पैदा हुअे हैं। अगर कोअी जनेअू पहने तो सबको पहननेका अधिकार होना चाहिये, अैसे प्रयत्नमें मैं कोअी सार नहीं देखता। अिस कारण मैंने जनेअू छोड़नेके बाद फिर पहननेकी कोशिश नहीं की, अिच्छा भी नहीं की। और जहाँ तक जनेअूसे अूँच-नीचका भेद पैदा होनेकी सम्भावना है, वहाँ तक वह छोड़ने लायक ही ठहरती है। गौरी-प्रसादको तो मैं कहूँगा कि वह जनेअूका मोह छोड़ दे। जनेअू ब्रह्मचारीकी निशानी है। अगर ब्रह्मचर्यका पालन किया जाय तो वह अुत्तम जनेअू है। सूतके धागेका क्या प्रयोजन ?

काकाको आकाशदर्शनके विषयमें लिखते हुअे — "मेरी दिलचस्पी दूसरी ही तरहकी है। आकाशको देखने पर जिस अनन्तताका, स्वच्छताका, नियमनका और भव्यताका खयाल आता है वह हमें शुद्ध करता है। ग्रहों और तारों तक पहुँच सकते हैं और वहाँ भी शायद वही अनुभव हो जैसा पृथ्वीके सारासारका होता है। मगर दूरसे अुनमें जो सौन्दर्य भरा दीखता है और वहाँसे टपकनेवाली शीतलताका जो शान्त प्रभाव पड़ता है, वह मुझे अलौकिक मालूम होता है। और हम आकाशके साथ मेल साधें तो फिर कहीं भी बैठे हों तो कोअी हर्ज नहीं। यह तो घर बैठे गंगा आयी वाली बात है। अिन सब विचारोंने मुझे आकाशदर्शनके लिअे पागल बना डाला है; और अिसलिअे अपने सन्तोषके लायक ज्ञान प्राप्त कर रहा हूँ।"

२५-७-'३२

वल्लभभाअीके तीखे विनोद कभी कभी तीरकी तरह चलते हैं। बेचारे मेजर मेहता पूछने लगे — 'ओटावामें क्या होगा ?' अिस पर वल्लभभाअी कहने लगे — "नाहक ओटावा तक गये हैं! जो चाहें सो यहीं आर्डिनेन्ससे कर लें। फिर वहाँ तक जाना ही क्यों पड़े ?" वे बेचारे दिग्मूढ़ हो गये। आज पत्रव्यवहारके बारेमें डोअीलको पत्र लिखकर भेजा। मगर सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब ही डर गये और कहने लगे — 'नहीं बाबा, अैसा पत्र न भेजिये। अिसका अर्थ शायद यह लगाया जायगा कि यहाँके हिन्दुस्तानी कर्मचारियोंने आपके पास शिकायत की है।' अिसलिअे कल तक पत्र मुलतवी रहा। डरका मानस अजीब होता है। अिन्सानको सीधा खड़ा करना चाहें, तो वह खड़ा होनेसे अिनकार कर देता है।

. . .ने फिर संतानिग्रहके बारेमें बहस की — "अिससे बुरे परिणाम निकल सकते हैं, अिसमें शक्तिका भी ह्रास होता है। मगर अेक खास तरहकी औलादको — कमजोर और रोगीको — रोकनेकी जरूरत हो तो क्या किया जाय ?" बापूने अिन्हें लिखा : "संतति नियमनके बारेमें तो मेरा दिल विरोध ही करता

रहता है । यह जरूर सम्भव है कि मुझ पर पुराने विचार अनजाने असर डालते हों। मगर जिन कारणोंसे मै विरोध करता हूँ वे कारण आज भी मौजूद हैं; यानी संतति नियमनसे होनेवाली भारी हानि हम प्रत्यक्ष देख सकते हैं । नअी सन्तान पैदा होनेसे रोकनेके लिअे बनावटी अुपाय करनेसे आज जो स्त्रियाँ सबला जैसी हैं, अुनकी भी अबला बन जानेकी संभावना है । संतान निग्रहके पीछे जो सारी विचारश्रेणी है, वही भयंकर और भूल भरी है । संतति नियमनका समर्थन करनेवाले यह मानते हैं कि जननेन्द्रियको सन्तुष्ट करनेका मनुष्यको अधिकार है । अितना ही नहीं, यह धर्म है और अुसका पालन न किया जाय तो जीवन विकास कम होता है । मुझे अिस विचारमें बहुत दोष दीखता है । अनुभवमें भी मैं यह दोष देखता ही रहता हूँ । कृत्रिम अुपाय करनेवालोंसे संयमकी आशा रखना फजूल है । यह मानकर तो संतति नियमनका प्रचार ही होता है कि अिस मामलेमें संयम नामुमकिन है । और जननेन्द्रियका संयम असंभव या गैरजरूरी या हानिकारक मानना मेरे खयालसे धर्मको न मानने जैसा है, क्योंकि धर्मकी सारी रचना संयम पर कायम हुअी है । जब कमजोर सन्तान रोकनेके सीधे, आसान और निर्दोष अुपाय बहुत हैं, तो फिर अुन्हें छोड़कर संततिनिग्रह जैसी जोखमभरी चीजको कैसे काममें लिया जा सकता है ? यह तो लगभग सभी मानते हैं कि अिसमें जोखम हैं । अिसलिअे जिस ढंगसे मैं अिस चीज पर विचार करता हूँ, अुससे तो मुझे यह चीज त्याज्य ही लगती है । अितना फिर लिखनेका दिल हो गया है, क्योंकि तुम्हारे पास विचार करनेका अवकाश है। और चूँकि यह विषय बहुत गम्भीर है, अिसलिअे यह आवश्यक है कि तुम अिस पर खूब बारीकीसे विचार कर लो। फिर तुम किसी भी नतीजे पर पहुँचो अुसका मुझे डर नहीं है, क्योंकि मैं मानता हूँ कि अन्तमें तुम्हारी सचाअी तुम्हें बचा लेगी; या मैं भूल करता होअूँगा, तो तुम अुस भूलको सुधार सकोगे । अगर संतति नियमनका धर्म तुम्हारे सामने प्रत्यक्ष हो जायगा तो अुसे मेरे पाससे स्वीकार कराये बिना तुम्हें चैन नहीं पड़ेगा । और मेरा काम सीधा है । मैंने किसी विचारको कितने ही आग्रहके साथ पकड़ रखा हो मगर अुसमें मुझे दोष दिखाअी दे जाय या दूसरा बता दे, तो मुझे अुसे छोड़ देनेमें देर नहीं लगती ।"

आज पत्रव्यवहारके बारेमें डोअीलको पत्र गया । बापूने अुस अफसरको यकीन दिलाया कि अिसका दूसरा अर्थ न लगाया जाय ।

२६–७–'३२ वे बोले — "अन्दर लिख दीजिये कि मैं जेलके कर्मचारियोंका जिक्र नहीं करता ।" बापू बोले — "तब तो वे जरूर मानेंगे कि आपके कहनेसे यह लिखा गया है। अिसके बजाय तो जो मैंने स्वाभाविक

रूपमें लिखा है, अुसीको जाने दीजिये। सच तो यह है कि यह मामला अैसा है, जिस पर आपको अिस्तीफा दे देना चाहिये — अगर आपमें स्वाभिमान हो। मगर हममें वह तेज रहा ही नहीं। अिसलिअे आप कुछ न करें, तो मुझे अितना तो करने दीजिये।"

जो ढेर सारी डाक आठ तारीखको सरकारके यहाँ गयी थी, वह शामको आयी। अुसमें सभी पत्र जरूरी थे, जिनके जवाब तुरन्त देने चाहिये थे। अुस गुम हुअे हवाबाजकी बहन शीरीनबाअीका हृदयद्रावक पत्र था। घरमें ७२ सालकी माँ, दूसरा अेक बड़ा भाअी लन्दनमें किसी नर्सिंग होममें आठ सालसे पड़ा है, और यह भाअी अुड़ते अुड़ते चल बसा! बेचारी ३० बरस पहले दो किताब गुजराती पढ़ी थी। अुसने भी मेहनत करके गुजरातीमें अच्छा पत्र लिखा। मगर अन्तमें लिखा — 'मुझे अंग्रेजीमें लिखनेकी अिजाजत दीजिये।' बापूने लिखा :

"My Dear Sister,

"I received your disconsolate letter only today. It had to pass through so many hands before coming to me. My whole heart goes out to you and your aged mother. God suffers us to blame Him, to swear at Him and deny Him. We do it all in our ignorance. A very beautiful Sanskrit verse which we recite daily at the morning prayer means: 'Miseries are not miseries, nor is happiness truely happiness. True misery consists in forgetting God, true happiness consists in thinking of Him as ever enthroned in our hearts.' And has not an English Poet said: 'Things are not what they seem.' The fact is if we knew all the laws of God we should be able to account for the unaccountable. Why should we think that the withdrawal of your brother from our midst is an affliction? We simply do not know. But we do, or ought to know that God is wholly good and wholly just. Even, our illnessses such as your other brother's may be no misfortune. Life is a state of discipline. We are required to go through the fire of suffering. I do so wish that you and your mother could really rejoice in your suffering. May you have peace.

"Please forget all about the honey and write to me in English by all means."

"प्यारी बहन,

"तुम्हारा दुखभरा पत्र आज ही मिला। मुझ तक पहुँचनेसे पहले कितने ही हाथोंसे गुजरा है। तुम्हारे और तुम्हारी बूढ़ी माताजीके प्रति मेरा दिल हमदर्दीसे पिघल रहा है। हम अीश्वरको अुलाहना देते हैं, अुसके दोष निकालते हैं और अुसका अस्तित्व माननेसे अिनकार करते हैं, और वह हमें यह सब कुछ करने देता है। मगर अैसा करना हमारा अज्ञान है। हम रोज सुबहकी प्रार्थनामें अेक सुन्दर संस्कृत श्लोक बोलते हैं:

विपदो नैव विपदः सम्पदो नैव सम्पदः।
विपद् विस्मरणं विष्णोस्संपन्नारायणस्मृतिः॥

"और क्या अुस अंग्रेज कविने भी नहीं कहा है कि 'चीजें जैसी दिखती हैं वैसी नहीं होतीं!' बात यह है कि अीश्वरके सारे कानून हम जानते हों, तो ही हमें अुन बातोंका अर्थ मिल सकता है जो साधारण हालतमें हमारी समझमें नहीं आतीं। यह क्यों मानती हो कि तुम्हारे भाअीको अपने बीचसे अुठा लिया गया तो यह दुःखकी बात हुअी। हम सही बात नहीं जानते। मगर हम अितना तो जानते ही हैं या हमें जानना चाहिये कि अीश्वर पूरी तरह भला है और न्यायी है। हो सकता है कि हमारी बीमारी भी, जैसी तुम्हारे दूसरे भाअीकी है, आपत्ति न हो। जीवनका अर्थ है यम-नियम। अुसके लिअे हमें कष्टकी आगमेंसे गुजरना ही पड़ता है। मैं चाहता हूँ कि तुम और तुम्हारी माताजी अपने अिस दुःखमें सचमुच आनंद ले सको। परमात्मा तुम्हें शान्ति दे!

"शहदकी बात बिलकुल भूल जाना और मुझे अंग्रेजीमें शौकसे लिखना।" (शहदका छत्ता अिन्होंने भेजा था। कहाँका था वगैरा विगत भेजनेको लिखा था। अुस बारेमें बापूने लिख दिया: "लिखनेकी कुछ जरूरत नहीं है।")

राजाजीका जेलसे निकलनेके बाद पहला पत्र आया। अुसमें बापूके अुनकी लड़कीके नाम लिखे पत्रोंका और तारका अुल्लेख था और जँवाअीकी थोड़े दिनकी बीमारीका जिक्र था। अपने जँवाअी और अुसकी मौतके बारेमें लिखा:

"They had gone to Dr. Rajan's place on his repeated invitations that they should stay with him for sometime to enable him to X-Ray Papa and help a proper diagnosis of her case. The man went there in perfect health, and morbidest imagination could not have forcasted the event. He had left Rangoon in the midst of last year to join Papa and take my place as nurse. He was wonderfully attached to her and served most diligently until a few days before

his death. Death is a dear friend, quite true, and not a frightful enemy as men suppose. But then, we all fight so vigourously against him on his approach, and employ all the knowledge of the ancient and the modern science to drive the friend away, that the truth is quite forgotten just when we ought to remember it most. . . . It is not grief, but darkness that is arround me. I am still praying for light. I do not complain for my share of humanity's lot. Do pray for me."

"ये लोग डॉ० राजनके यहाँ गये थे। वे कहते ही रहते थे कि पापाका अेक्स-रे कराने और अुसके रोगका निश्चित निदान करानेके लिअे मेरे यहाँ आकर रहें। जँवाअी जब वहाँ गये थे, तब बिलकुल तंदुरुस्त थे। कल्पनामें भी खयाल नहीं हो सकता था कि अैसा होगा। पापासे मिलने और अुसकी सेवासे मुझे मुक्त करनेके लिअे वे कुछ ही महीने पहले रंगूनसे आये थे। पापा पर अुनका बड़ा प्रेम था और लगभग मरते दम तक अुन्होंने अुसकी खूब ही सेवा की। यह बात बिलकुल सच है कि मौत अेक प्रिय मित्र है, लोग समझते हैं वैसा कोअी भयंकर दुश्मन नहीं है। पर जब वह आती है तब हम सभी अुससे अैसी लड़ाअी करते हैं और अिस दोस्तको निकाल बाहर करनेके लिअे नये-पुराने विज्ञानके सारे अुपाय अिस तरह आजमाते हैं कि जिस समय हमें अिस सत्यका अधिकसे अधिक स्मरण रखना जरूरी होता है, अुसी समय अिस सत्यको हम बिलकुल भूल जाते हैं। मैं रंजसे नहीं, परन्तु अंधकारसे घिरा हुआ हूँ। प्रकाशके लिअे प्रार्थना कर रहा हूँ। सभीके भाग्यमें जो बदा है वही मेरे भी हिस्सेमें आया है। अुसकी शिकायत क्या करूँ? मेरे लिअे जरूर प्रार्थना कीजिये।"

अिन्हें लिखा:

"Your touching letter of 23rd inst. came into my hand today. Papa's letter I have not received yet. My correspondence is being overhandled by the authorities. There is therefore much delay and uncertainty about it. The incoming letters are delivered in good time.

"I loathe to argue about death in the face of the tragedy that has overtaken you. You will say with Job, 'miserable comforter'. But I do feel that if we would know God, we have got to learn to rejoice in death. When Narsinha Mehta the first poet-devotee of Gujarat lost his son he is said to have joyed over it and exclaimed: 'It is well that this burden is lifted. Now I shall meet God soon.' This is

an unhappy rendering of a beautiful musical verse. May you see greater light out of this darkness. I know that you stand in no need of any comfort from any of us and that it has to come from within. This is merely an evidence of what all of us three are feeling about you."

"आपका २३ तारीखका हृदयद्रावक पत्र मुझे आज मिला। अभी तक पापाका खत नहीं पहुँचा है। अधिकारी लोग मेरे पत्रव्यवहारकी जरूरतसे ज्यादा देखभाल करते हैं। अिसलिअे पत्र मिलनेमें बड़ी देर होती है और अनिश्चितता भी बहुत रहती है। आनेवाले पत्र जरूर वक्त पर मिल जाते हैं।

"आप पर जो विपत्ति आ पड़ी है, अुस समय मृत्युके बारेमें चर्चा करना मुझे पसन्द नहीं है। जॉबकी तरह आप कह सकते हैं कि 'यह कंगाल आश्वासक है।' मगर मुझे अितना तो लगता ही है कि हम अीश्वरको पहचानते हैं, तो मृत्युमें भी आनन्द मानना सीखना ही चाहिये। गुजरातके पहले भक्त-कवि नरसिंह मेहताका लड़का गुजर गया तब कहते हैं कि अुसने अुत्सव मनाया और कहा — 'भलुं थयुं भांगी जंजाल, सुखे भजीशुं श्रीगोपाल'। परमात्मा करे आपको अिस अंधकारमेंसे ज्यादा प्रकाश मिले। मैं जानता हूँ कि हमारे किसीके आश्वासनकी आपको जरूरत नहीं। वह तो भीतरसे ही मिल सकता है। यह तो सिर्फ यही बतानेको लिखा है कि हम तीनोंको आपके लिअे कितनी भावना है।"

बेचारे सुरैयाकी लड़की जिस दिन वह जेलसे आया अुसी दिन मर गयी। अुसे लिखा:

"I can understand your grief and her's over the loss of your child of whom Lalita used to write to me in such loving terms. But you have lived long enough in the Ashram to realize, especially on such occasions, that God has the right to take away from us what He gives us. You know what we believe. Our belief is that everyone of us comes to this world as a debtor and we leave when the debt is for the time being discharged. The child has paid the debt and is free. You and Lalita and all the rest of us have still to discharge our obligations."

"तुम्हारा और ललिताका दुःख मैं समझ सकता हूँ। अिस बच्चीके बारेमें ललिता मुझे प्रेमपूर्ण शब्दोंमें अक्सर लिखती रहती थी। तुम तो आश्रममें काफी समय तक रहे हो। अिसलिअे अितना तो समझ ही सकते हो, खास तौर पर अैसे मौके पर, कि अीश्वरने हमें जो दिया है अुसे ले लेनेका अुसे अधिकार है।

तुम यह भी जानते हो कि हम क्या मानते हैं। हम सब अिस दुनियामें देनदार बन कर आये हैं; और जब वह कर्ज पूरा हो जाता है, तब चले जाते हैं। बच्चीका कर्ज पूरा हुआ और वह मुक्त हुअी। तुम्हें, ललिताको और हम सबको अभी अपना कर्ज चुकाना है।"

२७-७-'३२

अिस बार मुझे मुलाकात नहीं दी अुसके बदलेमें जब यह प्रार्थना की कि मुझे रामदास या मोहनलालसे मिलने दिया जाय, तो कहने लगे — "जब अिस यार्डसे दूसरे यार्डमें ही नहीं जाने देता, तो दूसरे वर्गके कैदीसे तो मुलाकात हो ही कैसे!" मैंने कहा कि साबरमतीमें तो हम मिल सकते थे। अुन्हें आश्चर्य हुआ। वल्लभभाअीने तुरन्त चोट की — "वहाँ होता होगा, मगर यह जेल तो सरकारकी बड़ी छावनीके पास जो है।"

आश्रमकी डाक कल नहीं आयी। अैसा दीखता है कि फिर किसी चक्करमें पड़ गयी है।

बायरनका 'प्रिज़नर ऑफ शिलोन' पढ़ लेनेकी अिच्छा होती है। मगर मिले कहाँसे? अिसका शुरूका गंभीर संबोधन बार बार पढ़कर याद कर डाला।

वल्लभभाअीको संस्कृत सीखनेमें बड़ा मजा आ रहा है। '**वासांसि**' क्यों अिस्तेमाल किया और '**वस्त्राणि**' क्यों नहीं? अेक वचन, द्विवचन और बहुवचन क्या होता है और स्वर किसे कहते हैं और व्यंजन किसे कहते हैं, कृदन्त किसे कहते हैं, वगैरा प्रारंभिक सवाल बालोचित निर्दोषितासे पूछते हैं और नये शब्द सीखते हैं। और जो सीखते हैं अुनका प्रयोग करते हैं। यह तुम्हें शोभा नहीं देता, अिसके लिअे कहेंगे — "**अिदं न शोभनं अस्ति।**" और कट्टर टोरियोंके लिअे कहते हैं — "ये सब तो '**आततायी**' लोग हैं।" आज पूछने लगे — "**शनैः शनैः** के माने शनिवार है?" "'**वासांसि**' क्यों अिस्तेमाल किया और '**वस्त्राणि**' क्यों नहीं? अिस सवालका जवाब तो रस्किन जैसा ही दे सकता है।" अिस तरह बापूने कहा।

. . . .को दूसरे विवाहकी सिफारिश की। "अैसा करनेसे तुम किसी दिन निर्विकार बनोगे। आज तुम्हारे लिअे यह असंभव-सा लगता है। तुम्हारे क्रोधका कारण भी वही है। तुम्हारी स्वादेन्द्रिय बलवान दीखती है। अिसमें आश्चर्य नहीं। क्योंकि काम, क्रोध, रस वगैरा सब साथ साथ चलते हैं। तुम मानते हो कि तुम अपने काममें ओतप्रोत हो। मुझे अिसमें शक है। अिसका अर्थ यह नहीं कि तुम लापरवाह हो। मगर जो आदमी अपने कर्तव्यमें डूबा रहता है, वह विकारवश हो ही नहीं सकता। अितनी फुरसत कहाँसे पायेगा? तुम्हारी यह

हालत है ही नहीं। तुम कर्तव्यपरायण बननेके लिअे खूब कोशिश कर रहे हो, यह स्पष्ट है। यों तो तुम निर्विकार बननेके लिअे भी कोशिश कर रहे हो; मगर जैसे निर्विकार नहीं बने वैसे ही कर्तव्यमें भी तन्मय नहीं हुअे। मालूम होता है काम करते समय भी तुम्हें विकार आते ही हैं। मेरी खुदकी स्थिति कहाँ अैसी ही नहीं थी? दूसरोंको लगता था कि मेरे काममें खामी नहीं आती। मगर मैं अपनी खामी देख सकता था। अिसीसे तो ब्रह्मचर्य पर आया।"

. . . को — "यदि तुम सचमुच निर्विकार हो, तो . . . के वशमें होने पर भी तुम अुन्हें सन्तोष दे ही नहीं सकतीं। यह तमाम विषयी लोगोंका अनुभव है। नतीजा यह होता है कि तुम्हारे साथ भोग कर लेने पर भी . . . अतृप्त ही रहते हैं और अिससे अुनकी विषयवासना बढ़ती है। अिसलिअे अगर तुम्हें दोनोंको साथ ही रहना हो, तो तुम्हें भोगमें रस लेना पड़ेगा। अगर तुम्हें रस न आये, तो तुम्हें अलग रहना चाहिये। अभी तो तुम दोनोंके साथ रहनेका मैं बुरा ही परिणाम देख रहा हूँ। तुम अेक दूसरेको धोखा दे रहे हो, खुद अपनेको धोखा दे रहे हो और दुनियाको भी धोखा दे रहे हो। तुम दोनोंके जीवनके बारेमें मेरे सिवा दूसरे लोग तो यही मानते मालूम होते हैं कि आश्रममें रहे हुअे होनेके कारण साधु-साध्वीकी तरह साथ रहते हो। अिस झूठसे तुम दोनों बच जाओ और दोनों अपनी अपनी पसन्दके विवाह कर लो तो सबसे अच्छा। मेरे खयालसे तुम दोनोंका मौजूदा जीवन दूषित है। . . . दूसरी स्त्रीसे शादी कर लें, तो अुस जीवनको निर्दोष समझूँगा, क्योंकि वह स्वाभाविक होगा और अन्तमें . . . शान्त हो जायँगे। अिस सुधारके लिअे दोनोंको दिल खोलकर बातें कर लेनी चाहियें। और फिर जो कदम अुठाना ठीक दिखाअी दे, अुसे अुठा लेना चाहिये। अैसा होनेपर . . . किसी दिन निर्विकारी बन सकेंगे। मौजूदा ढंगसे तो वे जलते ही रहेंगे और अुनके विकार बढ़ते ही रहेंगे। तुममें जो शक्ति है, अुसे तुम खो न बैठना। निराश न होना। अीश्वर तुम्हारी मदद करे।"

विषयवासना छोड़नेके बारेमें टॉमस अे केम्पिसके श्लोक ये हैं:

"Longstanding custom will make resistance, but by a better habit shall it be subdued.

"The flesh will complain, but by fervour of spirit shall it be kept under.

"The old serpent will instigate thee, and trouble thee anew but by prayer he shall be put to flight; moreover, by useful employment his greater access to thee shall be prevented."

"लम्बे समयसे चली आ रही रूढ़ि विरोध तो करेगी, मगर अच्छे संस्कारोंसे अुसे दबा दिया जा सकेगा।"

"शरीरमें रहनेवाला पशुत्व सिर अुठायेगा, मगर आत्माके प्रभावसे अुसे मार गिराया जा सकेगा।

"पुराना साँप अुसे अुकसायेगा और तुझे बार बार सतायेगा, मगर प्रार्थनाके जोरसे अुसे भगाया जा सकेगा। फिर अुपयोगी कामसे अुसे पास आनेसे रोका जा सकेगा।

२८-७-'३२

बापूने कल मेजरसे पूछा था कि "यहाँ कोअी अुर्दू पढ़ानेवाला मिल सकता है या नहीं?" अुन्होंने कहा — "हाँ, छावनीमें जरूर होंगे, अंग्रेजोंको हिन्दुस्तानी पढ़ानेवाले।" बापू बोले — "मैं जेलके भीतरवालोंकी बात करता हूँ।" मेजर — "यह समझ लीजिये कि यहाँ मुझसे ज्यादा अच्छी अुर्दू जाननेवाला कोअी नहीं है।" अुन्हें पता लग गया कि ये कैदियोंमेंसे किसी अुर्दू जाननेवालेको माँगेंगे। अिसलिअे पहलेसे ही यह जवाब दे दिया। बापू बोले — "मगर आपको क्या रोका जा सकता है?" वे कहने लगे — "जरूर। सब कठिनाअियाँ लिखकर रख लिया करें और मुझसे पूछ लिया करें।" आज निरीक्षणका दिन था, अिसलिअे वे चले जानेकी जल्दीमें थे। बापूने कहा — "क्या आज आपको थोड़ा रोका जा सकता है?" अुन्होंने कहा — "हाँ, नौ बजे बाद मुझे कुछ भी काम नहीं है। मैं नौ बजे तक अिस तरफकी कोठरियाँ पूरी करके आ जाअूँगा।" आये। बापू अल्फ़ारूकमेंसे शब्द निकालकर पूछने लगे और वे घबराने लगे। जैसे तैसे कुछ शब्द समझाये, कुछ नहीं समझाये और अन्तमें कहने लगे — "यह तो मेरे बूतेसे बाहरकी बात है। आप कहें तो रोज ये शब्द ब्रेलवीसे पूछ लाया करूँ।" बापू — "मगर मैं अिस किताबको छोड़ नहीं सकता, क्योंकि जब समय मिलता है तभी पढ़ लेता हूँ।" बादमें अपने घरसे अेक अुर्दू लुगत भेजनेको कह गये।

२९-७-'३२

आज आश्रमकी ढेरों डाक आयी। दो घण्टे पढ़नेमें लगे। 'मॉडर्न रिव्यू'के पिछले अंक रोज घूमनेके वक्त पढ़े जाते हैं। मअी मासके अंकमें Our misunderstanding (हमारी गलतफहमी) नामका अेक बहुत जानकारीसे भरा हुआ लेख पढ़ा, जिसमें यह विषय था कि पश्चिमी सभ्यता पूर्व यानी हिन्दुस्तान, चीन और अिस्लामकी कितनी ऋणी है। India in England (अिंग्लैण्डमें हिन्दुस्तान) नामक जॉन अर्नशॉका लेख निहायत सच्चा, बढ़िया पृथक्करणसे भरा हुआ और सच्ची

हालतका हूबहू और बारीक निरीक्षणवाला मालूम हुआ। अिस आदमीसे विलायतमें मिले होते तो कैसा अच्छा होता!

बाहरसे ढोलकी आवाज सुनाअी दी। बापू कहने लगे — "ये ढोल किस बातके बजते होंगे?" वल्लभभाअी कहने लगे — "जेलमें ही बज रहे हैं!" बापू बोले — "किसीकी शादी होगी?" मैंने पेट्रिक पिअर्सकी बात कही, जिसकी फाँसी चढ़नेसे पहले शादी हुअी थी। बापूने कहा — "वह स्त्री धन्य है। पर यह जरूर जानना चाहूँगा कि अब वह क्या कर रही है। तुम्हें विलायतमें किसीसे पूछना था कि वह क्या कर रही है?"

आज नाडकर्णीका अुद्धृत किया हुआ श्लोक बापूने अुद्धृत किया:

वृक्षान् छित्वा पशून् हत्वा कृत्वा रुधिरकर्दमम्।

३०-७-'३२ यद्येवं गम्यते स्वर्गे नरकं केन गम्यते ॥

अिस पर वल्लभभाअी कहने लगे — "मुसलमान तो यह मानते ही हैं।" अिस परसे श्रद्धानन्द और राजपाल वगैरा की बात निकली, और अन्तमें भोलानाथ और अुसके कारकुनोंकी। ये बेचारे तो बिलकुल अकारण अत्यंत निर्दोष मारे गये, क्योंकि अिनका विचार तो अपनी पुस्तकमें मुहम्मदका जीवन देकर सेवा करनेका था। अुन्होंने गेब्रिअलकी तस्वीर भी किसी पुराने चित्र परसे ली थी। अिस पर बापूने दक्षिण अफ्रीकाका अपने पर बीता हुआ किस्सा सुनाया। बापूने वाशिंगटन अर्विंगका लिखा मुहम्मदका जीवनचरित्र पढ़ा और अुन्होंने मुसलमानोंकी सेवा करनेके लिअे 'अिंडियन ओपीनियन'में अुनकी समझमें आनेवाली सरल भाषामें अुसका अनुवाद देना शुरू किया। अेक दो प्रकरण आये होंगे कि मुसलमानोंका सख्त विरोध शुरू हो गया। अभी पैगम्बरके बारेमें तो कुछ आया ही न था। पैगम्बरके जन्मके समयकी अरबस्तानकी मूर्तिपूजा और वहमों और दुराचारोंका वर्णन था। यह भी अिन लोगोंको बर्दाश्त न हुआ। बापूने कहा — "यह तो ग्रंथकारने प्रस्तावनाके तौर पर कहा है। अिन सबका सुधार करनेको पैगम्बरका अवतार हुआ।" मगर कोअी सुने ही नहीं। हमें अैसा जीवन चरित्र नहीं चाहिये, नहीं चाहिये! बस अगले प्रकरण लिखे हुअे थे अुनका कम्पोज किया हुआ था, सब रद्द किया। बादमें बापूने यह और कहा कि — "बेचारे भोलानाथने तो चित्र निकाल डाला और चाहे हुअे सुधार कर दिये तब भी अुसकी जान न बच सकी! अिसके बाद अमीर-अलीका Spirit of Islam (अिस्लामका हार्द) गुजरातीमें देनेकी अिच्छा थी और अेक मुसलमान दोस्तने छपाअीके लिअे रुपया दे दिया था, फिर भी यह विचार ही छोड़ दिया था!"

नाडकर्णीने रामराज्य पर अेक टीकात्मक निबन्ध लिखकर अुसे बापूके नाम लिखे पत्रका रूप दिया है। अिसमें रामचन्द्रके किये

३१-७-'३२

अधर्मों — बालीका वध, शंबूकका संहार, सीताका निर्वासन और अिसी तरहकी कथाओं पर जिन्हें सनातनी हिन्दू अक्षरशः मानते हैं और जिनके कारण शूद्रों और स्त्रियोंको सताते हैं, अछूतों पर जुल्म करते हैं और अंत्यजों या शूद्रेतरोंको अुनके अधिकारोंसे वंचित रखते हैं, अिन सब पर कड़वे प्रहार किये हैं। कहीं कहीं अुनका तीखापन मर्यादाको लाँघ जाता है। वह यहाँ तक कि किसी मिशनरी या मिस मेयोके हाथमें यह किताब पड़ जाय, तो हिन्दूधर्म पर प्रहार करनेके लिअे अुसे अेक मजबूत लाठी मिल जाय।

मैंने बापूसे पूछा — "अिसका जवाब देंगे?" बापूने कहा — "थोड़ा लिखनेका विचार तो है।" मैंने कहा — "लिखवाकर रखिये और बाहर निकल कर छपवा देंगे।" बापू कहने लगे — "नहीं रे, अिस तरह लिखवाना मेरी शक्तिके बाहर है। मैं कहता हूँ कि मैं जो लिखता हूँ वह मैं नहीं लिखता, बल्कि अीश्वर लिखवाता है, सो अक्षरशः सच है। अपने 'यंग अिन्डिया'के लेख पढ़ता हूँ तो अैसा लगता है कि फिर लिखने बैठूँ तो वैसा नहीं लिख सकता। बारडोलीके समयके गुजराती लेख आज मैं नहीं लिख सकता। हर चीजके लिअे वातावरण चाहिये। अिसलिअे अुसे छोटा-सा जवाब लिख भेजूँगा।" मैंने कहा — "यह तो कम ज्यादा मात्रामें बहुतोंके लिअे सही है। जिस आदमीको तन्मय होकर लिखनेकी आदत है, वह अेक मौके पर और खास हालतमें जो लिखेगा वह दूसरे अवसर और परिस्थितिमें नहीं लिख सकेगा। लोजानमें आपने 'सत्य ही अीश्वर है' पर आधे घंटे तक जो व्याख्यान दिया था वह आज आपसे कहा जाय तो नहीं दे सकते, और फिर भी आज अिस विषय पर आप नया ही निरूपण कर सकते हैं।"

जैसे मेरे सवालके जवाबमें ही हो, अुन्होंने आज अेक छोटी-सी लड़कीको लिखे पत्रमें ही नाडकर्णीको अुत्तर दे दिया। लड़कीने पूछा था कि "मीराबाअीके चमत्कार पुस्तकोंमें दिये हुअे न मानें, तो फिर अुसके बारेमें और कोअी कहे तो क्या अुसे मान लें? यदि पुस्तकोंकी बात न मानें, तो हमारे वीरों और वीरांगनाओंके बारेमें जाननेका साधन क्या है?" अुसे जवाब देते हुअे लिखा — "पुस्तकोंमें लिखा हुआ सब कुछ वेदवाक्य नहीं माना जा सकता। जो सदाचारके खिलाफ है और जो अमानुषी है, वह कहीं भी लिखा हो तो भी न माना जाय। सच झूठको तोलनेकी शक्ति जब तक हममें नहीं आती, तब तक पढ़ी हुअी चीजके बारेमें जिन बुजुर्गों पर विश्वास हो अुनका कहना मानना चाहिये।"

भगवानजीको लिखा — "अीशोपनिषद्में अेक मंत्र है। अुसका अर्थ यह भी होता है कि तू अपने सामने रखे हुअे काम पर ध्यान दे। अैसा करते करते जरूर अीश्वरके दर्शन होंगे। अीश्वर तो सभी जगह है। 'मेरे' काममें भी है। जिसे मैं 'अपना' काम मानता हूँ वह अुसीका है। अुस कामका ध्यान करूँ तो अुसीको मानूँगा। जो मालिकका काम करता है, वह मालिकको पाता है।"

लड़कियाँ शीलकी रक्षाका विचार करने लगी हैं। क्या अुसकी रक्षा हथियारोंसे नहीं हो सकती? अुन्हें दो जवाब दिये — "जिसका मन पवित्र है, अुसे विश्वास रखना चाहिये कि पवित्रताकी रक्षा अीश्वर जरूर करेगा। हथियारोंका आधार झूठा है। हथियार छीन लिये जायँ तो? अहिंसाधर्मका पालन करनेवाला हथियारों पर भरोसा न रखे; अुसका हथियार अुसकी अहिंसा, अुसका प्रेम है।" अेक लड़कीने यह पूछा था कि — "सच होते हुअे भी अप्रिय बोलें, तो क्या हिंसा नहीं होगी?" अुसे जवाब दिया — "सच बातसे किसीका जी दुखे तो अुसमें हिंसा नहीं है। हमारी अिच्छा न होने पर भी किसीका जी दुखे तो अुसमें हिंसा नहीं है। मैं तुमसे गायका दूध माँगू मगर मुझे अुसका व्रत होनेके कारण तुम न दो और मेरा जी दुखे तो तुम हिंसा नहीं करती, धर्मका पालन करती हो।" दूसरे पत्रमें — "स्त्रीको या और किसीको रक्षाके लिअे बाहरी हथियारोंकी जरूरत नहीं है। कभी कभी ये हथियार रक्षा करनेवालेके खिलाफ ही अिस्तेमाल होते हैं। और जो अहिंसाधर्मका पालन करता है, वह मर कर ही अपनी रक्षा करेगा, मार कर नहीं। स्त्रियोंको द्रौपदीकी तरह विश्वास रखना चाहिये कि अुनकी पवित्रता (यानी अीश्वर) ही अुनकी रक्षा करेगी। अीश्वर हममें अुसके गुणोंके रूपमें रहता है और रक्षा करता है।"

. . . को लिखा: (अुन्होंने लिखा था कि मुझे बहुत अकेलापन महसूस होता है, मेरा कोअी अुपयोग नहीं है, वगैरा। अिसके जवाबमें):

"You are suffering from a subtle pride and diffidence at the same time. How can you feel lonely in the midst of so many human beings everyone of whom demands your service and in whose midst you have thrown in your lot? You are in the midst of books and you will not touch them. You are in the midst of Hindi speaking men and women and you will not speak to them. You are in the midst of workers and you will not throw yourself into the work and make two blades of grass grow where only one was growing yesterday, make two yards of cloth where

only one was woven yesterday. All our philosophy is dry as dust if it is not immediately translated into some act of loving service. Forget the little self in the midst of the greater you have put yourself in. You must shake yourself free from this lethargy."

"तुम्हें सूक्ष्म अभिमान सता रहा है। साथ ही तुममें आत्मविश्वास भी नहीं है। नहीं तो तुम्हारी सेवाके मुहताज अितने सारे साथियोंके बीचमें रहकर भी क्या तुम्हें अकेलापन लगना चाहिये? तुम पुस्तकोंके बीचमें रहते हो, मगर तुम अुन्हें छूते नहीं। तुम अितने हिन्दी बोलनेवाले स्त्री-पुरुषोंके बीचमें हो, मगर तुम्हें अुनसे बोलना अच्छा नहीं लगता। तुम अितने कार्यकर्ताओंके बीचमें हो, परन्तु तुम काम नहीं करते। जहाँ कल घासकी अेक पत्ती अुगती थी, वहाँ आज दो अुगानेकी तुम्हें अिच्छा नहीं होती। जहाँ अेक गज कपड़ा बुना जाता है, वहाँ दो गज बुननेको तुम्हारा जी नहीं करता। हमारे तत्वज्ञानकी खाकके बराबर कीमत नहीं, अगर वह तत्काल प्रेममय सेवामें नहीं बदल जाता। तुम जिस विशाल समूहके बीचमें हो, अुसमें तुम अपनी तुच्छ हस्तीको भूल जाओ। तुम पर जो यह शिथिलता सवार हो गयी है, अुसे अुतार फेंको।"

. . . ने लिखा था: "क्या मैं आश्रममें जाअूँ? जिस चुम्बककी तरफ खिंच कर जाता वह तो वहाँ है नहीं।" अुन्हें लिखा: "आश्रममें न जानेका कारण तुमने खूब बताया। सभी अैसा करें तो? काजी और अुसके कुत्तेकी कहानी सुनी है? काजी बहुत मशहूर था। अुसका कुत्ता मर गया तो अुसकी लाशका जुलूस निकाला गया। अुसमें सारा गाँव गया। काजी मरा तो काँधिये मुश्किलसे मिल सके! तुमने भी अैसा ही किया कहा जायगा न? या 'देहीनां स्नेही सकळ स्वारथिया अन्ते अळगा रहेशे रे' भजनका तो हम सभी अनुसरण करते हैं न? शरीरमेंसे जीव निकल गया कि उसे जला देते हैं। मगर तुमने —? यह वाक्य तुमने पूरा करना। मतलब यह है कि हम व्यक्तिका मोह न रखें। व्यक्तिके गुणोंका मोह हो सकता है, परन्तु वह मोह शुद्ध प्रेमका होगा। सबके गुण कुछ न कुछ कार्यरूपमें परिणत होते हैं। अगर हम अुन गुणोंको अच्छा समझते हों, तो अुनसे जो कार्य मूर्तिमन्त हो अुसे अुत्तेजन देना चाहिये। अिसलिअे तुम आश्रममें चली जाओ, अितनी लड़कियोंमेंसे कुछसे तो जानपहचान कर ही ली होगी। किसी किसी समय प्रार्थनामें भी भाग लेना।"

अिसी बारेमें . . . के पत्रमें:

१. व्यक्ति-पूजाके बजाय गुणपूजा करनी चाहिये। व्यक्ति तो गलत साबित हो सकता है और अुसका नाश तो होगा ही, गुणोंका नाश नहीं होता।

२. आश्रमके संचालक मण्डलके ज्यादातर लोग पसन्द न हों, तो अुन्हें सहन करना सीखनेका यह सुनहरी मौका है। दोषोंसे खाली कोअी नहीं है। और अपने जैसा ही दूसरोंको मानना चाहें, तब तो पसन्द-नापसन्दका भेद ही मिट जाता है।

३. आश्रमके अुसूल मंजूर हैं तो अुनके बाहरी रूपके बारेमें मतभेदकी चिन्ता नहीं होनी चाहिये। हमें 'मम मम' यानी तत्वके साथ काम होना चाहिये, 'टप टप' यानी बाहरी रूपके साथ नहीं।

४. तुम्हारे स्वभावके दोष मिटानेके लिअे तो आश्रममें रहना ही धर्म है।

५. तुम आश्रममें अपने ध्येयों तक नहीं पहुँच सको, तो दोष तुम्हारा है। आश्रममें पूरी आज़ादी है।

६. तुम्हारे प्रेमीजनोंका आकर्षण तुम्हें आश्रमके बाहर क्यों ले जाय? अुनका प्रेम अुन्हें आवश्यकतानुसार रास्ता दिखायेगा। प्रेमके लिअे शरीरके पास रहनेकी जरूरत होती ही नहीं, और हो तो वह प्रेम क्षणिक ही माना जायगा। अेकके शुद्ध प्रेमकी परीक्षा दूसरेके वियोगमें — अुसके मरनेके बाद — होती है। मगर यह सब तो बुद्धिवाद हुआ। तुम्हारा दिल जहाँ होगा वहीं तुम रहोगी। हृदय आश्रममें न समा सके तो मैं क्या कर सकता हूँ और तुम क्या कर सकती हो!"

अिस बहनको बापूने लिखा था — "'किसीके काज़ी न बनो, भले ही दूसरे तुम्हारे काज़ी बनें' अिस सूत्रके आधार पर भी मंत्रियोंकी आलोचना करना योग्य नहीं।" अिसका जवाब बहनने चिढ़ कर दिया — "भले ही हमारी आलोचना हो, लेकिन क्या अिससे दूसरोंकी आलोचना न करें? सार्वजनिक व्यक्तियोंकी आलोचना करनेका हक सबको है।" अिन्हें लिखा — "'किसीका न्याय न करो, भले ही दूसरे तुम्हारा करें' की तुम्हारी आलोचना तुम्हें शोभा नहीं देती। अुसका अर्थ ही तुम नहीं समझीं। तुम्हारी आलोचनामें बहुत अहंकार भरा है। 'भले ही तुम्हारा न्याय दूसरे करें' का अर्थ तो यह है कि हमें अैसे दोषमें न आना चाहिये। हम दुनियाके सामने अुद्धत न बनें। 'भले ही दुनियाको जो कहना हो या करना हो वह कहे या करे' अैसा विचार या वचन हम कैसे कहें? दुनियाके सामने हम तुच्छ हैं। यानी हम सत्य मार्ग पर होते हैं, तब भी दुनियाको सजा नहीं देते। अुसका न्याय नहीं करते। मगर हम दुनियाकी सजा और न्यायको सहन करते हैं। अिसका नाम नम्रता या अहिंसा है। तुम्हारा लेख व्यंगमें या क्रोधमें लिखा गया हो, तो मैं चाहता हूँ अैसा न लिखा करो। मुझ पर जो गुस्सा निकाला है अुसकी चिन्ता नहीं। अिसको मैं हँसीमें अुड़ा सकूँगा। मगर ये वचन मुझे चुभते

हैं। तुम्हारी कलमसे अैसी बात निकलनी ही न चाहिये। यानी अिस तरहका विचार तक न आना चाहिये। विचार आ गया तो अच्छा किया कि मेरे सामने रख दिया। रखा तो मैं सुधार सकता हूँ। ये वाक्य मैंने अिसलिअे नहीं लिखे हैं कि तुम मुझसे अपने विचार छिपाओ। तुम जैसी भी — पागल, अुद्धत, नम्र — हो, मैं वैसी ही देखना चाहता हूँ। मगर मेरी माँग यह है कि अुपरोक्त विचार तक तुम अपने मनमें न आने दो।"

माल्थसका 'जीवो जीवस्य जीवनम्' के नियमके बारेमें अिसी पत्रमें लिखा: "अुसका लिखना कुछ तो लोग नहीं समझे और कुछ भूल भरा है। जो कानून मनुष्येतर प्राणियों पर लागू होता है, वह मनुष्य पर लागू नहीं होता। मनुष्येतर प्राणी दूसरे जीवोंको मार कर और खाकर गुजर करता है। मनुष्य अिससे बचनेकी कोशिश करता है। अिसीमें अुसकी अहिंसा है। जब तक शरीर है, तब तक वह पूर्ण अहिंसाको नहीं पहुँच सकता। मगर भावनाके रूपमें पहुँच जाय तो कमसे कम अहिंसासे काम चला लेता है। खुद मर कर दूसरोंको जीने देनेकी तैयारीमें मनुष्यकी विशेषता है। जैसे मनुष्य बढ़ता है, वैसे ही खुराक भी बढ़ती है। अभी अुसमें बढ़नेकी शक्ति है। डार्विनकी खोजके बाद तो बहुत नअी खोज हो चुकी है। 'अधिकसे अधिक संख्याका भला' या 'जिसकी लाठी अुसकी भैंस' वाला कानून गलत है। अहिंसा सबका भला सोचती है। अीश्वरके यहाँ सबके भलेका ही न्याय होगा। यह तलाश करना हमारा काम है कि वह न्याय किस तरह किया जाय और अुस न्यायमें मनुष्यका क्या कर्तव्य है। अिस नीतिके विरुद्ध नीति पेश करना मनुष्यका काम हरगिज नहीं है।"

१–८–'३२

आज 'टाअिम्स आफ अिंडिया'में बड़े बड़े अक्षरोंमें मेरी जमीनका लगान चुकाये जानेका समाचार पढ़ा: महादेवके चचाके लड़के मगन बापूने असिस्टेण्ट कलक्टरको अुद्धत जवाब दिया और लगान जमा करानेसे अिनकार कर दिया। फिर थानेदार गया। अुसने अुनके घरमेंसे कांग्रेस पत्रिकायें पकड़ीं और लड़ाअीमें भाग लेनेके कारण मुकदमा चलाया। वहाँ अुसने माफी माँगी और रुपया जमा करा दिया। 'टाअिम्स'की खबर है, अिसलिअे राम जाने कहाँ तक सच है। मगर यह तो सच ही है कि लगान चुका दिया। मुझे खूब रंज हुआ। मगर क्या किया जाय? मुझसे हो सका अुतना आज तक किया। मगर जेलमें बैठे बैठे क्या दुश्मनके दाव काटे जा सकते हैं?

२-८-'३२

आज सुबह जरा सूरज निकला कि सब चादरों वगैराको हवा लगानेकी बापूने हिदायत की। फिर अेक किस्सा सुनाया। यह हिदायत देते समय अुन्हें डरबनके डॉ० नानजीकी स्कॉच स्त्रीकी याद आयी जो बहुत बढ़िया धोबन थी। रोज कपड़े नहीं धोती या साबुन न लगाती, तो भी अुन्हें हवा अच्छी तरह लगाती थी। बापूने कहा कि अुसने हवा लगानेका गुण समझाया। यह कह कर यह किस्सा सुनाया कि डॉ० नानजीके यहाँ बाको रखा था और आपरेशन कराया था — "अिसे बा की सहनशक्तिका अद्भुत नमूना कहा जा सकता है। गर्भाशयका स्क्रेपिंग करवाना — अुसे छिलवाना था। बाका दिल कमजोर था, अिसलिअे बेहोशीकी दवा शायद सहन न कर सके, अिस कारण बिना दवा सुँघाये ही आपरेशन किया।" बापू दूर खड़े थे। वे खुद धूज 'रहे थे। अुस भागमें औजार डालकर चौड़ा करके चीरा लगानेकी तड़तड़ सुनाअी देती थी। बाके मुँह पर तो दुःख दिखाअी देता था, मगर मुँहसे अुफ नहीं की। बापू कहने लगे — "मैं कहता जाता था कि देखना, हिम्मत न हारना। मगर मैं खुद काँप रहा था, मुझसे वह देखा नहीं जाता था।" मैंने बापूसे कहा — "अिसे तो सहनशक्तिका चमत्कार कहना चाहिये।" बापू कहने लगे — "हाँ, अिसमें समय भी काफी लगा था और चीख मारने जैसी बात थी। मगर बाने अद्भुत सहनशीलता दिखाअी! अैसी ही हिम्मत अुसने बीफ-टी न लेकर दिखाअी। वह कहती थी कि 'मरना हो तो भले ही मर जाअूँ, मगर अैसी चीज लेकर मुझे जीना नहीं है।'"

शामको बापूने पूछा — ". . . की ६१वीं जन्मगाँठ किस दिन है, भला?"

वल्लभभाअी — "क्यों, क्या काम है? आपको कुछ लिखना है?"

बापू — "हाँ, लिखना तो है ही। औरोंको लिखते हैं तो अुसीने क्या कसूर किया है।"

वल्लभभाअी — "कोअी आपसे पूछे, आपसे कुछ माँगे तब आप लिख भेजें तो दूसरी बात है। नहीं तो आप यहाँ जेलमें बैठे हैं, आपको लिखनेकी क्या जरूरत?"

बापू — "यह कैसे? . . . की रचनाओंका . . . में बहुत अूँचा दर्जा है। लेखकोंमें ये पहले दूसरे माने जाते हैं।"

वल्लभभाअी थोड़ी देर चुप रहे। बादमें कहने लगे — "माने जाते होंगे।"

बापू — "होंगे कैसे? हैं।"

वल्लभभाअी — "मालूम हो गया, मालूम हो गया, अब। अैसे नामर्द आदमीको लिखकर अुसे प्रोत्साहन क्यों दिया जाय? देशमें जब दावानल जल रहा है, तब वहाँ बैठे बैठे लेख लिखे जाते होंगे?"

बापू — “ क्या आप यह कहते हैं कि अिनके लेखोंसे सेवा नहीं होती ? ”

वल्लभभाअी — “ विद्वानोंके लेखोंसे जरा भी सेवा नहीं होती । विद्वान पढ़ने लिखनेका शौक लगाते हैं और अैसा करके अुलटा नुकसान पहुँचाते हैं । लोगोंको पढ़ने लिखनेके मोहमें डालकर निकम्मे बनाते हैं । जो निकम्मे बनावें वह विद्या और लेख किस कामके ? ”

बापू — “ क्या सचमुच . . . के लेखोंके बारेमें अैसा कहा जाता है ? मैंने अुनका लिखा . . . का जीवनचरित्र नहीं पढ़ा, मगर क्या यह जीवनचरित्र मनुष्यको निकम्मा बनायेगा ? ”

वल्लभभाअी — “ लोग अिनका लिखा हुआ दूसरोंका चरित्र पढ़ेंगे या अिनका चरित्र देखेंगे ? ”

बापू — “ अिनका चरित्र क्या बुरा है ? आपको मालूम होगा कि १९१६-१७में विल्गिडनने लड़ाअीके सिलसिलेमें टाअुन हॉलमें सभा की थी, अुसमें सबसे लड़ाअीमें मदद देनेकी अपील की गयी थी। तिलक दलने अिस तरहका संशोधन पेश करनेका निश्चय किया कि कुछ खास शर्तों पर मदद दी जा सकती है । नहीं तो सभा छोड़कर चले जानेका फैसला किया था । अिस दलकी तरफसे . . . खड़े हुअे । सबने खूब छीछी करनेकी कोशिश की, मगर वे अटल खड़े रहे और जो कहना था वह सब कहनेके बाद सब सभासे गये । ”

वल्लभभाअी — “ ओहो ! यह नाटक तो अुन्हें करना आता है ! ”

बापू — “ तो आप अुनसे क्या चाहते हैं ? ”

वल्लभभाअी — “ कुछ त्याग तो करें या नहीं ? ”

बापू — “ क्या जेलमें आयें तभी त्याग माना जाय ? ”

वल्लभभाअी — “ मैं यह नहीं कहता । मगर मैं अुन्हें जानता हूँ, आप नहीं जानते । अिसलिअे क्या कहूँ ? वे तो कमसे कम त्याग और ज्यादासे ज्यादा लाभको मानते हैं । ”

बापू — “ हाँ, यह तो अुनका तत्वज्ञान है । ”

वल्लभभाअी — “ यही तो है । आग लगे अिस तत्वज्ञानको ! अपनी तरफसे कमसे कम त्याग, लोग तो कितने ही बर्बाद हो जायँ और अपने लिअे ज्यादासे ज्यादा लाभ । ”

बापू — “ देखना, मैं यह सब अुनसे कहूँगा हाँ ! ”

वल्लभभाअी — “ अुनके मुँह पर सब बातें कह सकता हूँ और कही भी हैं । . . . में सब अिकट्ठे हुअे थे । वहाँ सब कहने लगे कि . . . तो हट जानेवाले हैं । मैंने कहा : काहेके हटनेवाले हैं ? हटनेका हक ही क्या है ? सार्वजनिक

जीवनमें क्या झख मारनेको पड़े थे ! सार्वजनिक जीवनमें पड़नेवाला हट ही कैसे सकता है ?"

बापू — "अिसमें अुनका क्या दोष ? वे बेचारे काम कर रहे थे, मगर अुनके दुर्भाग्यसे मैं आ पहुँचा और अुनकी बाजी हाथसे जाती रही । अुन्हें मेरे काममें श्रद्धा नहीं हो और वे हट जायँ तो अिसमें क्या आश्चर्य है ?"

वल्लभभाअी — "अच्छा तो लिखिये। आप तो 'सत्यमपि प्रियं वदेत्' वाले हैं न ?"

बापू — "महादेव, यह वाक्य अिनकी पढ़ाअीमें आ गया है क्या ?"

मैं — "हाँ बापू, अब कलसे तो गीताप्रवेश होगा और ये गीता पढ़ लेंगे तब तो आपके सामने अैसे अजीब अजीब अर्थ रखेंगे कि आपको अैसा लगेगा कि यह तो आफत हो गयी !" सोते समय ही मैंने पूछा — "तो कल गीता शुरू करेंगे न ?" अिस पर खूब कहा : 'आदौ वा यदि वा पश्चात् वा वेदं कर्म मारिष' । अुस दिन मैं सुपरिण्टेण्डेण्टकी कुछ आलोचना कर रहा था । अिस पर मुझसे कहने लगे : नैतत्त्वय्युपपद्यते ! और थैंक्सके लिअे बार बार कृतार्थोऽहं कहते हैं !

३-८-'३२

पत्रोंके बारेमें सरकारका जवाब आ गया है, यह खबर अनायास ही लग गयी । बापूने यहाँसे डाकमें गये हुअे पत्रोंके बारेमें पूछा । सुपरिण्टेण्डेण्टने कहा "पत्रोंकी चिन्ता न कीजिये।" बापू कहने लगे : "क्या भेज दिये हैं ?" वे बोले — "हाँ" । बापू — "आपको भेजनेकी छूट मिली है ?" वे — "हाँ" । बापू — "कबसे ?" "शनिवारको हुक्म मिला था, अिसलिअे आश्रमकी डाक भी गयी ।" अितना बतानेके बाद खुद ही बोले — "अिस बारेमें मैंने लिखा था। अुसका परिणाम मालूम होता है !" बापूने कहा — "अरे भाअी, दस दिन हुअे मैंने जो पत्र लिखा था अुसे आप भूल गये ?" अिस पर वे बोले — "यह पत्र तो आपने दो तीन दिन पहले लिखा था न ?" बापू कहने लगे — "अरे, अिस बारेमें हमने चर्चा की थी; आपने अुसमें संशोधन कराया था । सरकारने अुसका जवाब देनेके बजाय यह हुक्म जारी किया दीखता है ।" वे कुछ बोले नहीं । लेकिन यह देखकर हम सबको बड़ा आश्चर्य हुआ कि जिस आदमीमें यह पत्र लिखने देनेका स्वाभिमान भी नहीं था, वह आदमी आज सरकारकी हार हुअी अुसका श्रेय खुद लेना चाहता है । बापूका अहसान मान सकता था, सो तो माने ही काहे को ?

* * *

डॉ० मेहताके पैरका घाव जहरीला हो गया और अुनका पाँव कटवा देना पड़ा। तार आया है कि अिससे अुनकी स्थिति गंभीर हो गयी है। सुबह आपरेशन अच्छा हो गया। यह तार आया था कि हालत संतोषजनक है। अिस पर बापूने वापस तार दिया था — "बड़ी खुशी हुअी। रोज तार देते रहिये।" यह बात हो ही रही थी कि डॉक्टरमें बर्दाश्त करनेकी ताकत है कि अितनेमें दूसरा तार आया — डॉक्टरको खूब बुखार है। फिर तार आया — डॉक्टरको निमोनिया है और हालत नाजुक है। अिसके बाद भी बापूने कहा — "रतिलाल और मगनकी तकदीरसे अब भी जी जायँ तो कह नहीं सकते।" अिस तरह बापूके मुँहसे भी मानवोचित अुद्‌गार निकल जाते थे।

आज डबल रोटी खराब हो गयी थी। अिसलिअे आजके लिअे और कलके लिअे भाखरी बना डाली। खा चुकनेके बाद बची हुअी भाखरियाँ वहाँसे लानेके बजाय वहीं रह गयीं। रसोअी बनानेवाले सब खा गये। मैंने वहाँ रख दी और लाया नहीं, अिसे बापूने मेरी लापरवाही मानी। "तुम तो कवि जो हो! अिसलिअे ध्यान और कहीं होगा।" मैंने कहा — "वे खा गये तो खैर अुनके भाग्यमें होंगी, मगर मुझे यह खटकता है कि मुझ पर लापरवाहीका दोष लगा। अिन लोगोंका फर्ज था कि जब दो दिनकी भाखरियाँ बची थीं, तो आकर मुझसे पूछते कि अिन भाखरियोंका क्या किया जाय?"

४-८-'३२ — आज डॉक्टर मेहताके देहावसानका तार आया। कल रातको ९-४५ पर शरीर छोड़ा। बापूको कितनी चोट लगी, अिसका अन्दाज अिस तारसे हो सकता है:

"God's will be done. Consolation to you and mother. Hope you will fully carry on all noblest traditions left by father for commercial integrity, lavish hospitality and great generosity. Sardar, Mahadev join me in condolences. For me? I feel forlorn without lifelong faithful friend. Continue keep me informed of everything. May God bless you all."

"अीश्वरकी अिच्छा! तुम्हें और माताजीको आश्वासन। पिताजीकी अुदात्त परंपराओंकी यानी व्यापारमें अीमानदारी, मेहमानदारीमें अुदारता और दानशील स्वभाव, अिन सबकी रक्षा करना। सरदार और महादेव शोकमें मेरे साथ शरीक हैं। मेरी तो कहूँ ही क्या? अुम्र भरके वफादार दोस्तकी जुदाअी दिलमें चुभ रही है। मुझे सब हाल बताते रहना। अीश्वर तुम सबका भला करे।"

बेचारेने दो महीने पहले तो सत्याग्रहमें शामिल होनेकी अिजाजत माँगी थी और अुसे नवम्बरमें बापूसे मिलनेकी आशा थी। मणिलाल रेवाशंकर जगजीवनको पत्रमें लिखा — "सुन्दर भवनके अब बर्बाद होनेका खतरा पैदा हो गया है। तुम सबको डॉक्टरका वियोग खटेगा ही। मगर मेरी हालत अजीब है। डॉक्टरसे ज्यादा मित्र अिस संसारमें मेरा कोअी नहीं था। मेरे लिअे तो वे जिन्दा ही हैं। मगर यहाँ बैठा हुआ मैं अुनके भवनको अविच्छिन्न रखनेमें लगभग कुछ भी भाग नहीं ले सकता, यह मुझे खटकता है। तुम जो कुछ कर सकते हो कर लेना। डॉक्टरका नाम अमर रखनेके काममें तुम कहाँ तक भाग ले सकते हो, यह लिखना।"

नानालाल मेहताको — "डॉक्टरके चले जानसे मेरी हालत तुम सबसे ज्यादा खराब हो गयी है। मुझे यह खटकता है कि जिसे मैं अपना सबसे पुराना साथी या मित्र कहता हूँ, वह जाता रहे और मैं पिंजड़ेमें बन्द होनेसे अुसके पीछे कुछ भी न कर सकूँ। मगर अिसमें भी अीश्वरका भेद है, कृपा भी हो। मैं नहीं जानता कि डॉक्टरका भवन आबाद (जैसाका तैसा) रखनेकी तुम्हारी कहाँ तक शक्ति है। जितनी हो अुसे काममें लेना। डॉक्टरका नाम निष्कलंक रहे और अुनके गुण अुनके लड़के कायम रखें, यह देखनेकी बात है।"

बड़े लड़के छगनलालको — "डॉक्टरके स्वर्गवासका सच्चा खयाल अबसे तुम्हारे बरतावमें जाहिर होना चाहिये। डॉक्टरके कअी सद्गुण ही अुनका असली वसीयतनामा हैं। वह तुम्हारा अुत्तराधिकार है। तुमसे छोटे भाअियोंको जरा भी क्लेश न होना चाहिये। . . . मेरा अुम्र भरका साथी जा रहा है तब मैं अपंग जैसी हालतमें (जेलमें) हूँ, यह मुझे खटकता है। नहीं तो मैं अिस वक्त तुम्हारे पास खड़ा होता। शायद डॉक्टरकी आखिरी साँस मेरी गोदमें निकली होती। मगर अीश्वर हमारा सोचा हुआ सब होने नहीं देता। अिसलिअे मैं अुतना ही करूँगा, जितना डाकके जरिये हो सकता है।"

पोलाकको :

"Dr. Mehta is no more. I have lost a lifelong faithful friend. But for me he lives more intensely by his death than before, for I treasure his many virtues now more than ever. That treasure becomes a sacred trust. Here is a letter for Maganlal. I expect you to do all you can to make him a worthy son of his father. I have advised him not to worry but continue his studies. Broken down though Dr. M. had become of late, I expect he had preserved his original circumspection to make suitable financial arrangements for

Maganlal's studies. Maganlal will know. I feel that I am not by his people's side at the present moment. But not my will, let His be done, now and for ever."

"डॉ० मेहता चल बसे। मैंने अपना अुम्रभरका वफ़ादार मित्र खो दिया। वैसे मेरे लिअे वे जीते-जीसे भी मरनेके बाद ज्यादा जीवित हैं, क्योंकि अब मैं अुनके तमाम अच्छे गुणोंको ज्यादा याद करूँगा। यह स्मरण अेक पवित्र थाती है। मगनलालके नामका पत्र अिसके साथ भेजता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम अुसे पिताके योग्य बननेमें पूरी मदद दो। मैंने अुसे सलाह तो दी ही है कि चिन्ता न करे और पढ़ाअीमें लगा रहे। कितने ही समयसे डॉ० मेहता शरीरसे जर्जर हो गये थे, फिर भी अुनकी शुरूकी व्यवहारदक्षता ज्यों की त्यों बाकी थी। अिसलिअे अुन्होंने मगनलालकी पढ़ाअीके लिअे रुपयेका अिंतजाम किया ही होगा। मगनलाल जानता होगा। मुझे दुःख है कि अिस समय मैं अुन लोगोंके बीच नहीं हूँ। मगर मेरा सोचा हुआ नहीं, सदा अुसीका सोचा हुआ होवे।"

आज घरसे पत्र आया। अुसमें लगान चुका देनेके हालात बताये हैं। जानकर निश्चिन्त हुआ। अलबत्ता चिढ़ पैदा हुअी और दुःख भी हुआ। मगनभाअीके यहाँसे गाय, भैंस, कुदाली, फावड़े वगैरा सब कुछ जब्त कर लिया। घरसे किताबें, आलमारी वगैरा ले गये, और अिच्छा तथा मगनभाअीको सारे दिन डेरे पर बिठा रखा और गालियाँ दीं! यह नहीं देखा गया, अिस-लिअे गाँवमेंसे किसीने रुपया जमा करा दिया। कहते हैं कि अिच्छा बहुत घबरा गयी है। जरूर घबरायेगी, क्योंकि अैसी बातोंका अुसे अनुभव नहीं है। मुझे तो यह जानकर अच्छा ही लगा कि लोगों पर पड़नेवाले दुःखमें अिस तरह सक्रिय भाग लिया जा सका।"

बापू कहने लगे — "कोठावाला जहाँगीरसे क्या कम है!" मैंने कहा — "बढ़कर है। वह तो जाहिल और मूर्ख था और यह तो पढ़ा लिखा कहलाता है।"

रातको सोते समय बापू कहने लगे — "ज्ञान भी अितना ज्यादा पक्का होनेकी जरूरत है कि बुद्धिसे मनको मनानेका थोड़ा ही असर हो। जानते हैं कि डॉक्टरको जीना नहीं था, वह शरीर नाश होने लायक था और अुसका नाश हो गया। फिर भी अितनी बेचैनी किस लिअे?" मैंने कहा — "अपने प्रिय-जनोंकी या जिनके साथ वर्षों निकट सम्बन्धमें बीते हों अुनकी मौतका समाचार सुनकर यदि अुनका स्मरण बार बार होने लगे तो अिसमें अस्वाभाविक क्या है?" बापू बोले — "स्मरण तो हो परन्तु दुःख किस लिअे हो? मौत और शादीमें किस लिअे फर्क होना चाहिये? विवाहका प्रसंग याद करके आनन्द ही आनन्द होता है, वैसे

ही मृत्युसे होनेवाले स्मरणोंसे आनन्द क्यों नहीं होना चाहिये? मेरी बेचैनी मगनलालकी मौतसे भी कुछ ज्यादा है। कारण अितना ही है कि मैं बाहर होता, तो अिस परिवारको अच्छी तरह सँभाल लेता। मगर यह भी गलत ही है। यह अपंग हालत ठीक क्यों न हो?" डॉक्टरके अुदात्त गुणोंको याद करके अुनका तर्पण किया।

अैस्थर मेननने, जो हिन्दुस्तानके बारेमें कअी भाषण दे रही है और अच्छा असर डाल रही है, अेक लम्बे खतमें बापू, कागावा और अेल्बर्ट श्वाअीत्सरके बारेमें लिखकर बापूसे पूछा था कि दुनियामे भाअीचारेकी भावनाके प्रचारके लिअे जब अैसे समर्थ पुरुष मौजूद हैं, तो भी प्रचार क्यों नहीं होता? अुसे बापूने लिखा:

"Brotherhood is just now only a distant aspiration. To me it is a test of true spirituality. All our prayers, fasting and observances are empty nothings so long as we do not feel a live kinship with all life. But we have not even arrived at that intellectual belief, let alone a heart realization. We are still selective. A selective brotherhood is a selfish partnership. Brotherhood requires no consideration or response. If it did, we could not love those whom we consider as vile men and women. In the midst of strife and jealousy, it is a most difficult performance. And yet true religion demands nothing less from us. Therefore each one of us has to endeavour to realize this truth for ourselves irrespective of what others do."

"बंधुभाव अभी तो दूरका सपना है। सच्ची आध्यात्मिकताकी मुझे यह कसौटी मालूम होती है। जब तक जीव मात्रके साथ अेकता महसूस न हो, तब तक प्रार्थना, अुपवास, जपतप सब थोथी बातें हैं। मगर अभी तक तो हमने यह चीज बुद्धिसे भी नहीं मानी। फिर हृदयके साक्षात्कारकी तो बात ही क्या? अभी तो हम अच्छे बुरे देखने लगते हैं। अच्छे लोग आपसमें भाअीचारा कर लें तो यह स्वार्थी मण्डल हुआ। बंधुभावमें किसी तरहका हिसाब नहीं लगाया जाता, वापस जवाब मिलनेकी जरूरत नहीं होती। अगर हम अैसे भेदभाव करने लगेंगे तो जिन्हें हम दुष्ट आदमी मानते हैं, अुन स्त्री-पुरुषोंके साथ प्रेमभाव नहीं रख सकते। आजकलके कलह और रागद्वेषके बीच अैसा करना बहुत कठिन है। फिर भी सच्चा धर्म तो हमसे यही माँग रहा है। अिसलिअे हममेंसे हरअेकको, दूसरे क्या करते हैं अिसका विचार किये बिना, अिस सचाअीका साक्षात्कार करनेकी कोशिश करनी चाहिये।"

बापू आज जमनादास और ब्रेलवीसे (सरकारसे ली हुअी मंजूरीसे) और रामदास और हरगोविन्दसे मिले। तीन ही आदमी मिल सकते थे, अिसलिअे रामदासने अपने स्वभावके अनुसार कहा — 'हरगोविन्द तुम आओ, मैं अगली बार सही,'

५-८-'३२

और बापूके नाम स्लेट पर पत्र लिखा। बापूने सुपरिण्टेण्डेण्टसे कहा — "यह रामदास निराश होकर जायगा। आप अुसे मुझसे मिलने न दें, मगर क्या अुसे मुझे देखने भी नहीं देंगे? अुसे नीचे खड़ा रहने दें और मैं जाअूँ तब मुझे वह देख ले, तो अितना करनेमें आप कानून नहीं तोड़ते।" रामदासको बुलवाया। अुन्होंने प्रणाम किया और जाने लगे। सुपरिण्टेण्डेण्ट पर असर पड़ा और बोला: "नहीं, नहीं, रामदासके जानेकी जरूरत नहीं। बैठो।" मैं यही कहूँगा कि यह रामदासके त्यागका नतीजा निकला। यह नहीं कहा जा सकता कि यह सुपरिण्टेण्डेण्टकी भलाओका था या बापूने रामदासके करुण सन्देशके कारण जो आग्रहभरी विनती की थी अुसका प्रभाव पड़ा। मगर रामदासके शुद्ध त्यागका फल जरूर कहा जायगा।

हरगोविन्द पंड्याने पूछा कि मुझे बाहर जाकर क्या करना चाहिये, जामसाहबके विरुद्ध झगड़ा करना या रियासतमें रहनेका सरकारका हुक्म तोड़कर वापस जेलमें पहुँच जाना? बापूने कहा — "मुझसे यह राय न दी जा सकेगी। मुझे बाहरकी हालतका खयाल नहीं हो सकता। और हो सके तो भी मैं राय नहीं दे सकता।" अिसके बाद हरगोविन्द पंड्याने सिद्धान्तका प्रश्न अुठाया — "आपने तो कहा है न कि देशी राज्योंके विरुद्ध सत्याग्रह हो ही नहीं सकता।" बापू कहने लगे — "यह कोअी त्रिकालाबाधित सिद्धान्त है क्या? सत्य और अहिंसाके सिवा मैंने त्रिकालाबाधित सिद्धान्तके रूपमें अेक भी चीज नहीं रखी। अरे, मैं तो आगे बढ़कर यह कहता हूँ कि त्रिकालाबाधित वस्तु अेक सत्य ही है, क्योंकि किसी हालतमें अहिंसा और सत्यके अेक ही होने पर भी यदि अिन दोनोंके बीच चुनाव करना पड़े तो मैं अहिंसाको तिलांजलि देकर सत्यको कायम रखनेमें आगापीछा नहीं देखूँगा। मेरे खयालसे सत्य ही सबसे बड़ी चीज है।"

जमनादास और ब्रेलवीके साथ काफी विनोदभरी बातें हुअीं। अिन लोगोंको कर्मचारियोंने अैसी पट्टी पढ़ा रखी थी कि कुछ पूछनेकी अुनकी हिम्मत ही नहीं होती थी। बापूने अुन पर दबाव डाल कर पूछा — "क्या तुम्हें कोअी शिकायत नहीं करनी है? नासिकमें यहाँसे अच्छा हाल था या बुरा?" वगैरा वगैरा। आखिर सुपरिण्टेण्डेण्टने ही कहा — "अिनको अेक शिकायत है और वह यह कि रविवारको अिन लोगोंको दो बजे बन्द कर दिया जाता है, वह अनुकूल नहीं पड़ता।

मेरी मुश्किल यह है कि कर्मचारियोंको अुस दिन देर तक ठहरना पड़ता है।" अिस पर बापूने कहा — "यह कोअी बचाव नहीं। कर्मचारी कैदियोंके लिअे हैं या कैदी कर्मचारियोंके लिअे हैं?" सुपरिण्टेण्डण्टको चोट पहुँची। वे बोले— "यह कैसे? कर्मचारी कैदियोंके लिअे कैसे? कर्मचारी तो कैदियोंको जेलमें रखते हैं न?" बापूने कहा — "तो क्या कर्मचारियोंको कैदियोंको सजा देनेके लिअे ही रखा है? सच पूछा जाय तो कर्मचारी कैदियोंकी सेवाके लिअे ही हैं। अुनकी तन्दुरुस्ती कायम रखने और कानूनके भीतर रहकर जितनी सुविधायें दी जा सकती हों अुन्हें देनेके लिअे ही वे हैं।" सुपरिण्टेण्डेण्ट सुनता रहा।

आज डाकमें कितने ही अच्छे पत्र थे। अुनमें दो खास थे। अिटलीके सीनाना आश्रमकी मिस टर्टनका पत्र वेरियरके लेखके साथ और वहाँके आश्रमके तीन फूलोंके साथ आया। और शुक्रवारको लिखा गया था — यह विश्वास दिलानेके लिअे कि आज ७॥ बजे हम आपके साथ होंगे। पत्र भी हमें शुक्रवारको ही मिला। दूसरा पत्र ८५ वर्षके बूढ़े बाबू हरदयाल नागका था:

"I am very glad to learn from your letter to Krishnadas that you, Sardarji and Desaiji are all in good health. I was quite well in jail and am all right now. In the jail I spent the days in spinning and reading. I learnt Takli spinning there. God's favours were profusely showered on me. I gained there both spiritually and physically. My spiritual gain could not be measured but my physical gain was found to be 16 lbs, in weight. Please convey my compliments and my best regards to Sardarji and Desaiji."

"कृष्णदासके नामके पत्रसे यह जानकर बड़ी खुशी हुअी कि आप, सरदारजी और देसाअीजी आनन्दमें हैं। जेलमें मैं बहुत अच्छा था और अब भी हूँ। जेलमें मेरा समय कातने और पढ़नेमें बीतता था। वहीं मैंने तकली सीखी। मुझ पर अीश्वरकी बड़ी कृपा रही, क्योंकि वहाँ मुझे आध्यात्मिक और शारीरिक दोनों लाभ हुअे। आध्यात्मिक लाभका तो हिसाब नहीं लगाया जा सकता। मगर शारीरिक लाभ यह हुआ कि मेरा वजन १६ पौण्ड बढ़ा। सरदारजी और देसाअीजीको मेरा यथायोग्य कहियेगा।"

अुन्हें बापूने लिखा:

"Dear H. D. Babu,

"It was a perfect delight to all of us to hear from you. You make me jealous when you say that at your ripe age you learnt Takli spinning. It was a great joy to learn that you had gained 16 lbs, in weight. May you have many

more years of service. We often talk about you and your wonderful vitality. With regards from us all."

"प्रिय हरदयाल बाबू,

"आपका पत्र पाकर हम सबको बहुत आनन्द हुआ। अितनी पकी अुमरमें आपने तकली सीखी, यह जानकर मुझे आपसे अीर्षा होती है। और यह भी बड़ी खुशीकी बात है कि आपका वजन १६ पौण्ड बढ़ गया। सेवा करनेके लिअे आप बहुत वर्ष जियें! आपके और आपकी तन्दुरुस्तीके बारेमें हम बहुत बार बातें करते हैं। हम सबका नमस्कार।"

६-८-'३२

दो कर्नाटकी नौजवानोंने २०-२५ दिनसे अुपवास कर रखा था। १५ दिनके अुपवासके बादसे अुन्हें जबरन् दूध पिलाया जाता था। अैसी खबर मिली थी कि ये लोग चौमासेमें ब्राह्मणका ही बनाया खानेके लिअे अुपवास कर रहे हैं। अिसलिअे हम यह कह कर बोले नहीं थे कि अिनकी माँग मूर्खताभरी है। आज बापूने अिस बातकी चर्चा सुपरिण्टेण्डेण्टसे छेड़ी। सुपरिण्टेण्डेटसे पूछा गया कि "आप किसीको अिन लोगोंसे मिलने देंगे या नहीं? अिन लोगोंको अुनकी भूल समझाअी जायगी और अुपवास छुड़वाया जायगा।" वे कहने लगे — "अिस तरह तो अनुशासन भंग हो जायगा। अगर यों अुपवास करें और अुन्हें तुरन्त समझानेको आदमी भेजें तो कैसा चले! और अिस प्रकार अन्त कहाँ हो?" बापूने कहा — "मगर मैं नहीं कहता कि आप अुन्हें ब्राह्मणके हाथकी रसोअी दीजिये। मैं तो यह कहता हूँ कि अुन्हें समझानेके लिअे किसीको जाने दीजिये।" फिर बापू जरा सख्त होकर बोले — "आपको कर्मचारीके बजाय अेक अिन्सानकी हैसियतसे अिस चीज पर विचार करना चाहिये। कर्मचारीके रूपमें आपको अैसा खयाल हो सकता है कि अिन आदमियोंको मेरे वशमें रहना ही चाहिये। मगर अिन्सानके नाते अैसा खयाल होना चाहिये कि अिन आदमियोंमेंसे अिन्सानियत न जाने देना चाहिये।" अुन्होंने कहा — "नहीं, अिस तरह मैं अुन्हें दूसरोंसे मिलने दूँ, तो फिर लोग अपने मित्रोंसे मिलनेके लिअे अुपवास करने लगेंगे। और अिन लोगोंका क्या अुपवास है? मैं मानता हूँ कि ये तो छिपे छिपे खाते होंगे। अैसा लगता ही नहीं कि ये अुपवास कर रहे हैं।" बापूने कहा — "तब यों कहूँगा कि आपने अुन्हें अधिक मनुष्यताहीन बना दिया है। क्या आप यह चाहेंगे कि ये लोग अैसा करते रहें?" बेचारेने थक कर कहा — "मैं हारा। आपके साथ बहसमें कौन जीत सकता है? अच्छा आपको मिलाना हो तो मिलिये।" दोपहरको मिले, मालूम हुआ कि ये लोग तो जेलकी नियमा-

वलिके अनुसार मिले हुअे कैदीके अधिकारके अनुसार ब्राह्मणका भोजन माँगते हैं। नियमावलिमें यह लिखा है कि किसीको अपनी जातपाँत छोड़नेकी जरूरत नहीं है। ब्राह्मणको या तो ब्राह्मणकी बनाअी हुअी रसोअी मिलेगी या अुसे बनाने दिया जायगा। बीजापुरमें मुनशीने अुन्हें कहा था कि अिस नियमके अनुसार कैदीको यह हक है। दोनों सत्याग्रहियोंमेंसे अेक तो चौथी बार जेलमें आया है। पहले अुसने अब्राह्मणका बनाया हुआ खाया है। मगर कहता है कि मेरा भाअी मर गया। अुसे मैंने वचन दिया था कि मैं सब आचार पालन करूँगा और ब्राह्मणोंका बनाया खाअूँगा। दूसरे सत्याग्रही लड़केने तो यहाँ जेलमें आकर भी ब्राह्मणेतरका बनाया हुआ खाया है। मगर अब अुसके साथ हो गया है। अिस सत्याग्रहीका कहना यह था कि सत्याग्रहमें शरीक हुअे अिससे कैदीका हक भी खो दें? बापूने अिन लोगोंको समझाया कि अैसी हठ नहीं की जा सकती। जेलमें आकर अैसा झगड़ा किस लिअे? वगैरा। मगर जब अुन्होंने सरकारी नियमके अनुसार अधिकारकी बात कही, तब बापू कहने लगे — "अच्छा तो मैं तुम्हें मजबूर नहीं करूँगा, मगर अिस शर्त पर कि मुझे यह विश्वास हो जाय कि अैसा नियम है। अगर अैसा नियम न होगा, तो तुम्हें मेरा कहना मानना पड़ेगा। या तो तुम्हें जेलके नियम मानने होंगे या सत्याग्रहकी नियमावलिको मानना होगा।" अुन्होंने आखिरमें वचन दिया कि आपको विश्वास हो जाय कि अैसा नियम नहीं है और सुपरिण्टेण्डेण्टको ब्राह्मणका भोजन देनेका पूरा अधिकार नहीं है, तो हम अुपवास छोड़ देंगे।" अिसके बाद बापूने जेलके नियम देखनेको माँगे। डॉ० मेहता कहने लगे — "अैसा सर्क्यूलर है कि किसी कैदीको नियम दिये ही नहीं जा सकते।" तब बापूने कहा — "अिसके लिअे मुझे लड़ना पड़ेगा।" शामको भंडारी बापूसे मिलने आये। यह मुलाकात बड़ी अुल्लेखनीय थी। भंडारीके चेहरे पर विषाद था। भीतर ही भीतर चिढ़ भी थी कि यह सब क्या हो रहा है और मुझे कहाँ तक झुकना पड़ रहा है? "अिन लोगोंने पहले अब्राह्मणोंका भोजन खाया है तो अब क्यों न खायें? मेरा यही कहना है। अिसलिअे अिसमें शुद्ध भावसे लड़नेकी बात ही नहीं रह जाती।" बापूने कहा — "कुछ भी हो, अुन्हें आज ब्राह्मणकी तरह रहनेकी अिच्छा हो और नियमके तौर पर आप अुन्हें दे सकते हैं, तो देना आपका धर्म है।" वे बोले — "नहीं, मुझे देनेका अधिकार नहीं। मुझे आअी. जी. पी. से पुछवाना होगा। अुसकी मंजूरीके बिना हरगिज नहीं दिया जा सकता।" बापूने कहा — "मगर अिन युवकोंका कहना है कि नियमके अनुसार आपको ही अधिकार है।" वल्लभभाअीने भी कहा — "अधिकार है क्योंकि मैंने अिस तरह ब्राह्मणका भोजन देते देखा है।" अब नियमावलि देखनेके कैदियोंके अधिकारकी चर्चा

चली। वे कहने लगे — "यह अधिकार तो है ही नहीं।" बापू बोले — "तो पूछ लीजिये डोअीलको कि हमें बताअी जाय या नहीं?" वे बोले — "आपको बता दूँ और फिर आप कहें कि मेरी समझसे आपको अधिकार है और मैं कहूँ कि मुझे अधिकार नहीं है तब क्या हो?" "तो डोअीलसे पूछना।" "तो फिर वहाँ मालूम हो जाय न कि मैंने आपको जेल मैन्युअल बताया?" बापूने कहा — "यह न बताते हुअे वैसे ही पुछवाना। मैं अिस मौकेको लेकर मैन्युअल प्राप्त करनेके लिअे नहीं लडूँगा।" सुपरिण्टेण्डेण्टने कहा — "अच्छा, तो मैं कल नियम देखूँगा और फिर आपको बताअूँगा।" मैंने कहा — "पर किस लिअे? अभी ही मँगवा लीजिये जिससे फौरन फैसला हो जाय?" बापूने कहा — "जाअिये, आपको वचन दिया कि मुझे जरा भी लगेगा कि आपका अर्थ लग सकता है तो मैं अुसे मान लूँगा। अगर यह लगा कि दो अर्थोंकी गुंजायश ही नहीं, और मेरा ही अर्थ सही है, तो फिर आप आअी. जी. पी.को लिखियेगा।" वे राजी हो गये। पुस्तक मँगवाअी गयी। काली किताबमेंसे कलमें पढ़ी गयीं। कलममें था कि "किसीकी धार्मिक भावना दुखानेकी मनाही है। ब्राह्मण अगर ब्राह्मणकी बनाअी हुअी रसोअीका आग्रह करे, तो अुसे दी जा सकती है। हाँ, वह सिर्फ तंग करनेके लिअे ही यह माँग न करता हो। ब्राह्मण रसोअिया कैदी न हो, तो अुसे खुद रसोअी बना लेनेकी छूट होनी चाहिये। मगर जातपाँतकी रूसे पेश किये जानेवाले अधिकारोंके मामलेमें सुपरिण्टेण्डेण्टको कोअी शंका हो, तो अुसे आअी. जी. पी. से जरूर पुछवाना चाहिये और अुनका हुक्म आखिरी माना जायगा।" बापूने पढ़ कर तुरन्त कह दिया — "आपका अर्थ सही है।" सुपरिण्टेण्डेण्टकी खुशीकी कोअी हद नहीं थी। अुसने देख लिया कि गांधीजीसे शुद्ध सौ टंच न्याय मिल सकता है। लड़कोंको बुलवाया गया। अुन्हें बापूने कहा और वे फौरन मान गये। यह प्रकरण सुपरिण्टेण्डेण्ट और बापूके सम्बन्धको ज्यादा मीठा और समझवाला बनानेमें बहुत अुपयोगी साबित हुआ।

७-८-'३२

आज आश्रमकी डाक खतम की। प्रभुदासके नामके पत्रमेंसे — "नाम-जपनके पीछे तू भूतकी तरह पड़े रहना। कहींसे सहायता नहीं मिले तब भी अिससे जरूर मिलेगी।" प्रेमाबहनको — "अन्दरकी आवाज अैसी चीज है, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। मगर कअी बार हमें अैसा खयाल हो जाता है कि भीतरसे अमुक प्रेरणा हुअी है। मैंने जब अुसे पहचानना सीखा, वह समय मेरा प्रार्थनाकाल कहा जा सकता है, यानी १९०६के आसपास। तू पूछती है अिसलिअे याद करके यह लिख

रहा हूँ। बाकी वैसे मुझे कुछ अैसा भान हुआ हो कि ‘ अरे आज तो कोअी नया अनुभव हुआ, ’ सो बात तो मेरे जीवनमें ही नहीं है । जैसे हमारे बाल बिना जाने बढ़ते हैं, वैसे ही मैं मानता हूँ कि मेरा आध्यात्मिक जीवन बढ़ा है ।”

“ नामके जपसे पापहरण अच्छी तरह होता है । शुद्ध भावसे नाम जपनेवालेको श्रद्धा होती ही है । वह अिस निश्चयके साथ शुरू करता है कि नामजपसे पाप दूर होते ही हैं । पाप दूर होना यानी आत्मशुद्धि होना । श्रद्धाके साथ नाम लेनेवाला कभी थकता तो है ही नहीं । अिसलिअे जो बात जीभसे होती है, वह अन्तमें हृदयमें अुतरती है और अुससे शुद्धि होती है । यह अनुभव निरपवाद है । मानसशास्त्री भी मानते हैं कि मनुष्य जैसा विचारता है, वैसा बन जाता है । रामनामकी बात भी अिसीके अनुसार है । नामके जप पर मेरी श्रद्धा अटूट है । नामजपको खोजनेवाला अनुभवी था । और मेरी पक्की राय है कि यह खोज बहुत ही महत्वपूर्ण है । बेपढ़ोंके लिअे भी शुद्धिका द्वार खुला होना चाहिये । यह काम नामजपसे होता है, (गीता, ९/२२; १०/१०) । माला वगैरा अेकाग्र होनेके और गिनती करनेके साधन हैं ।”

“ विद्याभ्यास सेवाके लिअे ही हो । मगर सेवामें अटूट आनन्द है, अिसलिअे यह कहा जा सकता है कि विद्या आनन्दके लिअे है । अैसा नहीं जाना गया कि आज तक कोअी सेवाके बिना सिर्फ साहित्यविलाससे अखण्ड आनन्द भोग सका हो ।”

“ दुनिया अनादि कालसे अैसी की अैसी ही चली आ रही है, तो सुधरेगी कब ! ” अिस प्रश्नके पूछनेवालेको लिखा — “ आपका पत्र मिला । मेरा अनुभव यह बताता है कि यह विचार करनेके बजाय कि सारी दुनिया अेक ही तरहसे कैसे चले, यही विचार करना चाहिये कि हम कैसे अेकसे चलें । हमें तो यह भी पता नहीं कि संसार अुलटा चलता है या सीधा । परन्तु हम सीधे चलेंगे, तो दूसरे भी हमें सीधे ही मालूम होंगे या सीधा करनेका ढंग मालूम हो जायगा । आत्माको जाननेका अर्थ है शरीरको भूल जाना यानी शून्य बन जाना । जो शून्य बन गया है, अुसने आत्माको पहचान लिया है ।”

. . . को लिखा — “ . . . की लाश देखने गयी यह अच्छा किया । अिस हालतमें हम सबको किसी दिन पहुँचना है और यह अिच्छा होनी चाहिये कि वहाँ पहुँचनेका समय आये तब हम खुश होकर यह घर छोड़ें । जहाँतक हो सके अुसे साफ, पवित्र और तन्दुरस्त रखें । मगर जाय तब जाने दें । यह हमें बरतनेके लिअे मिला है । देनेवालेको जब ले जाना हो तब खुशीसे ले जाय । हमें अुसका अुपयोग भी सेवाके लिअे ही करना है, अपने भोगोंके लिअे नहीं ।”

. . . को लिखा — "तुम्हारे दुःखमें मैं नहीं मिलूँगा। तुम्हारी पत्नी तो दुःखसे छूटी है। अुसकी मृत्यु अैसे वक्तमें और अैसे ढंगसे हुअी है कि अीर्ष्या करने लायक है। तुम अपनेको अनाथ हुआ क्यों मानते हो? अनाथ तो अपनेको वही समझ सकता है, जिसके सिर पर अीश्वर न हो। मगर अीश्वर तो सभीके सिर पर है। यानी हम घोर अज्ञानके कारण अपनेको अनाथ मानते हैं। तुम्हारा कवच न मणि थी और न तुम्हारी पत्नी। ये सब झूठे कवच हैं, सच्चा कवच हमारी श्रद्धा है। मनुष्यशरीरकी हस्ती काँचके कंगनसे भी बहुत कम है! काँचका कंगन जतनके साथ रखनेसे सैकड़ों बरस तक चल सकता है। मनुष्यका शरीर कितना भी जतन किया जाय, तो भी अेक खास हदसे आगे जा ही नहीं सकता; और अुस मर्यादाके भीतर भी चाहे जब नष्ट हो सकता है। अैसी चीज पर भरोसा क्या किया जाय? तुम आश्रमके काममें डूब जाओ। अिधर अुधरका विचार ही न करो। छह बरसकी मंगलाकी चिन्ताकी बात ही नहीं। तुम खुद अुसे अच्छी तरह सँभालो। शान्ति और जयकुंवरको सँभाल रखना सिखाओ। तुम शायद नहीं जानते होगे कि रूखीबहन बिलकुल बच्ची थी, तबसे संतोकके जीते जी भी मगनलालके हाथों पली थी। अिसके जीनेकी शायद ही आशा थी। मुश्किलसे साँस ले सकती थी। अिस लड़कीको मगनलाल नहलाते, बाल सँवारते और पास बैठकर खिलाते थे और अपने दूसरे बच्चोंकी भी देखभाल करते थे। फिर भी नौकरीमें सबसे ज्यादा काम करते थे। सुन्दरसे सुन्दर बाड़ी अुन्होंने बनाअी थी। फिनिक्समें पहला गुलाबका फूल अुन्होंने अुगाया था। फिनिक्सकी कितनी ही सख्त जमीनमें जब अुनकी कुदालीकी चोट पड़ती थी, तब धरती काँपती मालूम होती थी। जो मगनलाल कर सके वह सब तुम कर सकते हो। अिसमें मैंने कहीं भी मगनलालकी बड़ी कलाशक्ति या अुनके पढ़े लिखेपनकी बात नहीं कही है। मगनलालमें आत्मविश्वास था। अपने कामके बारेमें श्रद्धा थी। और भगवानने अुन्हें बलवान शरीर दिया था। यह शरीर अन्तमें आश्रमके बोझसे और अुनकी तपश्चर्यासे कमजोर हो गया था। लेकिन मैं यह मानता हूँ कि मगनलालने अपने छोटेसे जीवनमें सौ वर्षके बराबर या सैकड़ों बरस जितना काम किया। मगनलालकी मिसाल तुम्हारे सामने अिसलिअे रखी है कि तुम मगनलालको जानते थे और अुनके प्रेमभावके कारण तुम्हारा आश्रमसे सम्बन्ध हुआ था। मगनलालको याद करके भी भूल जाओ कि तुम अपंग हो या अन्धेरेमें हो। मैं मानता हूँ कि जो सुविधायें तुम्हें सहज ही मिली हुअी हैं, वे अिस देशमें लाखोंमें अेकको भी प्राप्त न होंगी।"

. . . को लिखा — "हमारे खयालसे अुपयोगी अुद्योग सब अच्छे हैं और करने लायक हैं। अिस प्रकार चमारका काम, बढ़ओीका काम, पाखानोंका

काम, खेतीका काम, बुनाअीका काम, रसोअीका काम, ढोर चरानेका काम या अैसे ही दूसरे काम सब बराबर हैं; और अगर मैं समाजको समझा सकूँ तो सब धन्धोंकी भले ही वे पढ़े-लिखोंके हों या बेपढ़ोंके, मुंशीजीका हो या मेहतरका हो, अेक ही कीमत लगाअी जाय। यह तो तुम्हें मालूम ही होगा कि अिसी दृष्टिसे जाँच करनेके लिअे आश्रममें आजकल घंटोंका ही हिसाब लिखा जाता है। अिसलिअे अगर फिलहाल बुनाअीके लिअे पूरा सूत न मिले, तो यह हरगिज न मानो कि खेती वगैरा दूसरे काम करनेसे तुम किसी भी तरह गिर गये हो।"

. . . को लिखा — " . . . के बारेमें तुम्हें पहले तो अपना मन टटोल लेना चाहिये। क्या तुम्हें अभी विषय भोगने हैं? अगर यह निश्चय पक्का हो कि नहीं भोगने, तो वह . . . को और मित्रोंको बता देना चाहिये। अैसा होनेसे . . . को आघात तो जरूर पहुँचेगा, मगर तुम्हारी मजबूतीका असर अुन पर बिजलीकी तरह पड़ेगा। मजबूतीका अर्थ यह है कि . . . पागल हो जाय या मर भी जाय, तो तुम्हें सहन करना है। यह भी तुम्हें साफ बता देना चाहिये कि अिसीमें तुम दोनोंका भला है। मगर तुम वहाँ तक न जाओ, तो . . . के साथ बोलना छोड़ दो। और लोग जिस तरह खुदकी पत्नियोंके साथ रहते हैं वैसे तुम मूक बन कर रहो और अिस तरह रहते हुअे जितना संयम पाला जा सके अुतना पालो। तुम अैसा करो तो अिसमें तुम्हारी निन्दा करनेका किसीको अधिकार नहीं है। सब अपनी अपनी शक्तिके अनुसार ही आगे बढ़ सकते हैं। बीचकी हालतमें लटके रहना और अपनेको, अपनोंको और दुनियाको धोखा देना जरूर निन्दाके लायक बात है। अिस स्थितिसे बचो। फिर कुशल ही है। ज्यादा विचारके चक्करमें गोते न लगाओ। तुमने विचारोंमें बहुत वर्ष लगा दिये हैं। जल्दीसे अेक निश्चय कर लो, तो तुम्हें खूब शान्ति मिल जायगी। **व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन** का अर्थ यही है। अिस श्लोक पर और अुसके बाद वालों पर विचार करोगे, तो अिस पत्र पर ज्यादा प्रकाश पड़ेगा।"

गांधी परिवारसे आप क्या आशा रखते हैं? अिस सवालके जवाबमें: "गांधी कुटुम्बसे मेरी आशा यह है कि सब सेवाकार्यमें ही लगें, भरसक संयम रखें, और धनका लोभ छोड़ दें, विवाहका विचार छोड़ें, विवाहित हों तो भी ब्रह्मचर्य रखें, और सेवासे ही अपना गुजारा करें। सेवाका क्षेत्र अितना लम्बा चौड़ा है कि अुसमें असंख्य स्त्रीपुरुष समा सकते हैं। अितनेमें सब कुछ आ गया न?"

हॉर्निमैन अब गप्पें हाँकने लगे हैं। बापू कहने लगे : "यह हार्निमैनका दूसरा पहलू है।" 'फ्री प्रेस' कहता है कि गांधी और वायसरायके बीच पत्र-व्यवहार हो रहा है। अिसे अे. पी. आअी. झूठ बताता है। और 'क्रॉनिकल' अुसे बड़े अक्षरमें छापता है, मानो वह खुद अिस पापसे मुक्त हो! 'क्रॉनिकल'में तीन कालम भरकर अेक लेख लिखा है। अुसमें जबरदस्त भाषाडंबरके साथ खबर दी है कि हम जिसे विश्वासपात्र स्थान समझते हैं, वहाँसे पक्के समाचार मिले हैं कि महात्मा गांधीको छोड़ दिया जाय तो आश्चर्य न होगा! फिर सेम्युअल होरके साथ पत्रव्यवहारके बारेमें अुन्हें पत्र मिले हैं अुनका जिक्र है — बल्कि अुन पत्रोंके अुद्धारण भी — और अुन पर आलोचना है। गप्पीके घर गप्पी आये, आओ गप्पीजी; बारह हाथकी ककड़ी और तेरह हाथका बीज!

८–८–'३२

बापू मेरी फ्रेंचकी पढ़ाअीका अुल्लेख करके लिखते हैं — "अिसके लोभका कोअी ठिकाना नहीं।" मगर खुद अुर्दू पढ़ रहे हैं, सिक्केका अध्ययन कर रहे हैं और खगोलके अध्ययनके लिअे पुस्तकालय अिकट्ठा कर रहे हैं। आज अकबर हैदरीको पत्र लिखा कि अुसमानिया विश्वविद्यालयके चुने हुअे प्रकाशन मुझे भेजिये। बिड़लासे करंसी कमीशनकी कअी रिपोर्टें मँगवाअीं और अुपनिषदोंमें अीशोपनिषद्का गहरा अध्ययन करने लगे हैं। यानी कअी आदमियोंका भाष्य पढ़ना शुरू कर दिया है।

९–८–'३२

मानसशास्त्रके गहरे अध्ययनके आधार पर स्थापित नीतिशास्त्र जैसा महाभारतमें मिलता है वैसा और कहीं नहीं मिलता। सत्यकी अनेक व्याख्यायें हैं और वर्णन हैं; मगर अिस अेक श्लोकमें सत्यकी व्याख्या और असत्यकी बुराअी जैसी बताअी गयी है, वैसी शायद ही और कहीं बताअी गयी होगी। और वह भी आदि-पर्वमें ही :

१०–८–'३२

> योऽन्यथासन्तमात्मानमन्यथाप्रतिपद्यते ।
> किं तेन न कृतं पापं चौरेणात्मापहारिणा ॥

असत्याचरणी, दंभी और मिथ्याचारी जैसा भयंकर चोर कोअी नहीं है, क्योंकि अुसके पापकी बराबरी करनेवाला अेक भी पाप नहीं है।

आज सब जेलियोंके ही पत्र आये। रामदास, मोहनलाल भट्ट, सैयद अब्दुल्ला ब्रेलवी, खुरशेद और मुहम्मद आलमका। सभी पत्र

११-८-'३२ महत्वके थे।

रामदासने नीतिके प्रश्न अुठाये थे। और बापूसे पूछा था कि आप अेक समय बहुत सख्त थे और भारी प्रायश्चित्त करते और कराते थे। अब जरूरतसे ज्यादा अुदार कैसे बन गये हैं? अिस अुदारताका लोग बेजा फायदा भी अुठाते हैं। खुद अुन्होंने दालचीनी, लौंग और अिलायचीके किस्सोंके बाद दालचीनी और लौंग न खानेका व्रत लिया दिखता है। अिसलिअे निमू बहनने दूध घी खाना छोड़ दिया।

बापूने आज ही रामदासको लम्बा पत्र लिखा :

"मेरी समझ तो यह है कि तुमने अभी तक दालचीनी, लौंग छोड़नेका निश्चय नहीं किया है। मैं निमूको लिखनेकी सोच रहा हूँ। अगर वह व्रत ले ही बैठी होगी, तब तो अुससे छुड़वानेका आग्रह नहीं करूँगा। सिर्फ धर्म समझा दूँगा। मैं मानता हूँ कि अैसे धर्म छुड़वानेका आग्रह नहीं करना चाहिये। अैसा आग्रह करके अिन्सान अपनी मजबूती छोड़ देता है और दिलमें कमजोरी आ जाती है। जैसा तुम लिखते हो, पहले मैंने जो सख्ती की थी, अुसका मुझे पछतावा नहीं है। अुस वक्तके लिअे वह ठीक थी। आज मेरी जरा सी सख्ती हिमालय जैसी भारी मालूम होती है। जो काम आज मैं सिर्फ अुलाहनेसे ले सकता हूँ, अुसके लिअे मुझे पहले खुद अुपवास करना पड़ते और दूसरोंको भी हैसियतके अनुसार वैसा ही करना पड़ता था। जैसा पहले करता था वैसा ही अब भी करूँ, तो मैं निर्दय साबित होअूँगा। तो क्या मैं बढ़ा अुसी तरह दूसरे भी बढ़े हैं? अैसा होनेका कोअी कारण नहीं है। मगर जिनका मुझसे सम्बन्ध है, अुन पर मेरा असर रहता ही है। अिसलिअे ज्यादा करनेकी जरूरत नहीं रहती। यानी तेरे लिअे निमूसे अलग कष्ट सहन कराने या करनेकी जरूरत नहीं है। क्योंकि मैं बड़ा चौकीदार बैठा हूँ। मेरा शरीर न रहे तब तुम सबको खूब सावधान रहना पड़ेगा। सच्ची हालत यह है। अिसीलिअे अक्सर मेरी गैरमौजूदगीमें ढिलाअी आ जाती है। दुनियाका कानून ही अैसा है। अिसलिअे हमें शिक्षा यह लेनी है कि हमें अपनी जाग्रति पूरी साध लेनी चाहिये। आज भले ही बेलकी तरह पेड़के सहारे चढ़े हों, मगर यह परतन्त्रता है। अुससे छूटकर अपने आप सीधे खड़े रहना सीख लेना चाहिये। निमू पर बिजलीके वेगसे जो असर हुआ, अुसका कारण जो मैंने अूपर बताया है वही है। तुझे जो याद है वह काल मेरा अैसा नहीं था। क्योंकि आसपासका वातावरण अैसा अुत्तरदायी नहीं था। अितना अूँचा नहीं हुआ था। मैं निमूको कुछ

भी सख्त लिखूँ, तो वह सूख ही जाय। अब मेरी अुदारता समझमें आयी! पहलेकी सख्ती और आजकी अुदारताके पीछे यही शुद्ध प्रेम काम करता रहा है। वैसे तुम्हारा लिखना ठीक ही है कि मेरी अुदारताका अनर्थ करके कोअी लापरवाह बन जाय तो बुरा ही है। अैसा डर रहता है अिसका कारण दूसरा है। मैं खुद अपने प्रति नरम हो गया हूँ। मेरी पहलेवाली अकड़ जाती रही है। मनचाहा काम शरीर देता नहीं। और जो मैं नहीं कर सकता, वह दूसरोंसे लेनेमें संकोच होता ही है। अिसलिअे मैंने आश्रममें अक्सर कहा है कि मैं अब आश्रम चलानेके लायक नहीं रहा। आश्रमका चौकीदार जाग्रत और बलवान होना चाहिये। पहले तो मैं काममें सबके साथ खड़ा होता था, अिसलिअे दूसरोंको मेरे साथ खड़ा होना ही पड़ता था। अब मेरे काम देखनेकी बात नहीं रही। मेरे कहे अनुसार चलनेकी बात है। अिसलिअे आसपासके वातावरणमें तुम्हें ढिलाअी जरूर दीखती होगी। यह सब कुछ तुमने अच्छी तरह समझ लिया है न?

"तुम्हारी सावधानी मुझे पसन्द है। अिस मामलेमें निमूके प्रति कठोर न बनना। पति पत्नीके सम्बन्धोंके बारेमें मेरे विचारोंमें फर्क जरूर पड़ा है। जिस ढंगसे मैंने बाके साथ बर्ताव रखा, बेशक मैं चाहता हूँ कि अुस ढंगसे तुम कोअी भी अपनी पत्नियोंके साथ न रखो। मेरी सख्तीसे बाने कुछ खोया नहीं, क्योंकि बाको मैंने कभी अपनी सम्पत्ति नहीं समझा। अुनके प्रति प्रेम और सम्मान तो था ही। अुन्हें मैं अूँची चढ़ी हुअी देखना चाहता था। फिर भी बा मुझे नहीं डाँट सकती थी। मैं डाँट सकता था। बाको व्यवहारमें मैंने अपने बराबर अधिकार नहीं दिये थे। और बेचारी बामें वे अधिकार मुझसे लेनेकी शक्ति नहीं थी। हिन्दू स्त्रियोंमें वह शक्ति होती ही नहीं। यह हिन्दू समाजकी खामी है। अिसलिअे मैं चाहता जरूर हूँ कि तुम निमूको अपने बराबर ही स्वतंत्र समझो। मैंने अुसे हँसीमें अेक पत्रमें लिखा था कि अुसे अपनेको पराधीन मानकर तुम्हें हर बातमें तंग न करना चाहिये। तो अुसने लिखा — 'रामदास जानते हैं कि मैं पराधीन तो हूँ ही'। भाषा मेरी है, भावार्थ ठीक है। यह पराधीनता मिट जानी चाहिये। निमूको नौकर चाहिये तो तुम्हें क्या पूछे? नारणदाससे माँगे, झगड़ा करना हो तो वह भी करे। यह मैंने तुच्छ अुदाहरण दिया है। मगर अिन मामलोंमें अुसे आजादी होनी चाहिये। तुम्हें व्यभिचार करना हो, तो तुम्हें निमूका डर नहीं होगा। अुसका प्रेम तुम्हें रोके, यह दूसरी बात है। अिसी तरह निमूको व्यभिचार करना हो तो वह निडर होकर कर सकती है। अेक दूसरेका प्रेम दम्पत्तिको पापसे भले ही बचा ले, डर कभी नहीं बचा सकता। यह शिक्षा देना मैं आश्रममें ही सीखा। बाके प्रति मेरा

साबरमतीका बरताव दिन दिन अिस तरहका होता रहा है। अिससे बा अूँची अुठी है। पहलेका डर अभी तक पूरी तरह नहीं मिटा होगा। मगर बहुत कुछ मिट गया है। मनमें भी बा पर गुस्सा आता है, तो अपने पर निकाल लेता हूँ। गुस्सेकी जड़ मोह है। मुझमें जो यह तब्दीली हुअी है वह महत्वपूर्ण है और अुसका नतीजा बहुत अच्छा निकला है। मेरा प्रेम और भी निर्मल होता जायगा, तो ही परिणाम और भी सुन्दर होगा। असंख्य स्त्रियाँ सहज ही मेरा विश्वास करती हैं। मुझे विश्वास है कि अुसका कारण मेरा प्रेम और आदर है। ये गुण अदृश्य रूपमें काम करते ही रहते हैं।"

ब्रेलवीका पत्र अुनकी साफदिलीकी, अुज्ज्वल देशभक्तिकी और लल्लूभाअीके परिवारके प्रति अुनकी निष्ठाकी निशानी है। बैकुण्ठके साथ अपनी दोस्तीको वे जिन्दगीमें हुआ अेक अनुपम सौभाग्य बताते हैं। अेक हिन्दू कुटुम्ब सच्ची अुदारतासे रहकर क्या कुछ कर सकता है, यह ब्रेलवीके पत्रसे देखा जा सकता है। सारा पत्र संग्रह करके रखने लायक है।

१२-८-'३२

सुपरिण्टेण्डण्टकी आते ही What's the news? (क्या खबर है?) पूछनेकी आदत है। आज बापूने अुसका अैसा जवाब दिया कि वह सुट हो गया :

"खबर आपके पास हो या हमारे पास? आपने तो मेरे लिअे जाल बिछाया था और मैं भूलचूकमें फँस गया होता, तो मारा ही गया था न? आपको २० तारीखको अन्सारीने पत्र लिखा था और अुसका जिक्र न करके आपने मुझसे पूछा कि वे आवें तो क्या आप अुनसे मिलेंगे? अिसका जवाब अगर मैं यह दे दूँ कि मैं नहीं मिलूँगा, तो आप सरकारको लिख दें कि यह नहीं मिलेंगे। अिस पर सरकार अन्सारीको जवाब दे दे कि गांधी किसीसे मिलते नहीं। यह तो ठीक हुआ कि मैंने असावधान जवाब नहीं दिया, नहीं तो आपने तो मुझे फंदेमें फँसाया ही था न?" वह बोला : "नहीं, मैंने अैसा चाहा ही नहीं था। अन्सारी तो मेरे मित्र हैं। मैं अुन्हें लिखता कि गांधीजी नहीं मिलते, तो सरकारको आपके लिखनेकी कोअी जरूरत नहीं होती। नाहक अिनकार क्यों कराया जाय?" बापू — "अिनकार करनेमें कुछ अर्थ है। और आप पत्र आया तब मुझसे चर्चा करके निर्णय कर सकते थे। मगर आपने तो पत्र आया कि सरकारको भेज दिया और फिर मुझसे पूछने आये। अुस वक्त भी आपने यह नहीं कहा कि पत्र आया है अिससे पूछता हूँ।" "नहीं, नहीं, मैं सरकारको न लिखता मगर अन्सारीको लिखता।" "अन्सारीको तो आपको पहले ही लिखना था।

आप अेक ही साथ ठंढी और गरम दोनों फूँक नहीं मार सकते । आपके वे मित्र हों, तो आपको अुन्हें पहले ही लिखना था । या मुझसे पूछ कर लिख सकते थे । मित्र न हों तो आप सीधा सरकारको लिख देते और वह बात छोड़ देते । मगर आपने तो जाल रचा । जानबूझ कर नहीं । मगर अिसका नतीजा वही होता । मैं आपसे कहे देता हूँ कि यह ढंग खतरनाक है ।"
"मुझे अफसोस है, मेरा अैसा कोअी अिरादा नहीं था ।" कह कर चले गये । मगर बहुत झेंपे हुअे दिखाअी दिये ।

आश्रमकी डाकमें लड़कियोंके मासिक रोग और अुस बारेके अज्ञान और छिपानेकी आदतसे पैदा होनेवाली बीमारियोंका हाल पढ़कर बापूको बहुत विचार आये और लम्बे पत्र लिखे । आनन्दीको लम्बा पत्र लिखा और अुसे सब लड़कियोंसे पढ़वानेके लिअे और प्रेमाबहनसे अुस सम्बन्धमें चर्चा कर लेनेके लिअे लिखा । अमतुलको अैसा ही लिखा ।

प्रेमाबहनके नाम लम्बा पत्र लिखा ।

व्यक्तिपूजा और गुणपूजाके बारेमें — "तुम नारदमुनिका अुदाहरण तो देती हो, परन्तु अुनके वचनोंका रहस्य कहाँ जानती हो! अुनके जैसी व्यक्ति पूजा जरूर करो । वह करने लायक है । जैसे अैतिहासिक वैकुण्ठके भगवान वैसे ही अुनके कृष्ण! नारदमुनिके भगवान अुनके कल्पना मन्दिरमें विराजमान थे । वे नारदमुनि तो आज भी हैं और अुनके कृष्ण भी हैं, क्योंकि वे दोनों हमारी कल्पनामें ही रहे हैं । मेरे खयालसे अितिहासकी अपेक्षा कल्पना बढ़कर है । रामसे नामका दर्जा अूँचा है, तुलसीदासने जो यह कहा है अुसका अर्थ यही हो सकता है । तुम व्यक्तिपूजाके चक्करमें पड़ी हो अिसीसे मुझे चिन्तामें डालती हो न! आश्रमके बारेमें तुम मुझे बेफिक्र नहीं कर सकतीं । नारणदास कर सके हैं । अैसे और भी नमूने बता सकता हूँ । वे भी व्यक्तिपूजक तो हैं ही । कौन नहीं है! मगर अन्तमें वे व्यक्तिको पार करके अुसके गुणों या अुसके कार्यके पुजारी बन जाते हैं । यह अमूल्य वस्तु भूलकर हमने अपनी मूढ़तामें स्त्रियोंको सती होना सिखाया । यह व्यक्तिपूजाकी पराकाष्ठा है ! वैसे पत्नीका धर्म तो यह है कि खुद पतिका काम अपनेमें अमर करे । पतिपत्नीमेंसे विकार और नर–मादाका विचार निकल जाय, तो यह आदर्श सारे संसारके लिअे हर हालतमें लागू पड़ता है । यानी यह प्रेम जाकर भगवानमें मिलता है । परन्तु अब अिस विषयको छोड़ देता हूँ ।

"मेरे विरोधी पहले भी थे और अब भी हैं । फिर भी मुझे अुन पर गुस्सा नहीं आया । सपनेमें भी मैंने अुनका बुरा नहीं चाहा । फल यह हुआ कि बहुतसे विरोधी मित्र बन गये हैं । मेरे खिलाफ किसीका विरोध आज तक

काम नहीं कर सका। तीन बार तो मुझ पर निजी हमले हुअे, मगर अभी तक मौजूद हूँ। अिसका मतलब यह नहीं कि विरोधियोंको अुनकी सोची हुअी सफलता किसी दिन मिलेगी ही नहीं। मिले या न मिले, अुससे मेरा कुछ भी लेना देना नहीं है। मेरा धर्म तो अुनका भला चाहना और मौका पड़ने पर अुनकी सेवा करना है। मैंने अिस सिद्धान्त पर भरसक अमल किया है। मेरा खयाल है कि यह चीज मेरे स्वभावमें है। लाखों लोग मेरी पूजा करते हैं, तब मुझे थकावट होती है। मुझे कभी अैसा नहीं लगा कि अिस पूजामें मुझे रस आया या यह कि मैं अिसके योग्य हूँ। मगर अपनी अयोग्यताका भान मुझे रहा है। मुझे याद नहीं कि मुझे कभी मानकी भूख रही हो। मगर कामकी भूख रही है। मान देनेवालेसे काम लेनेकी खूब कोशिश की है। काम नहीं मिला तो मानसे दूर भागा हूँ। मैं कृतार्थ तो तब होअूँ, जब मुझे जहाँ पहुँचना है वहाँ पहुँच जाअूँ। लेकिन अैसा दिन कहाँ भाग्यमें है, वगैरा वगैरा।

"दुनियाके सामने खड़े रहनेके लिअे घमण्ड या गुस्ताखी पैदा करनेकी जरूरत नहीं है। अीसामसीह दुनियाके खिलाफ हुअे; बुद्ध भी अपने युगके विरुद्ध हुअे। प्रह्लादने भी अैसा ही किया। ये सब नम्रताकी मूर्ति थे। अिसके लिअे आत्मविश्वास और भगवान पर श्रद्धा चाहिये। 'घमण्डमें आकर विरोध करनेवाले अन्तमें गिरते ही हैं। तुम्हारा घमण्ड और तुम्हारा क्रोध कअी बार केवल ढोंग होता है। परन्तु यह ढोंग भी भद्दा है। अिससे अक्सर व्यर्थ गलतफहमीके कारण पैदा होते हैं। अैसा न होनेके लिअे अिन्सानको बहुत सावधान होकर चलनेकी जरूरत रहती है।

"अन्त समय तक अकेले टिके रहनेकी शक्ति मैं अत्यंत नम्रताके बिना असंभव मानता हूँ। और शक्ति आयी हो तभी वह भी असली चीज मानी जाती है। अिसकी परीक्षा अिसीमें है। बहुत लोग जो बहादुर माने जाते हैं वे सचमुच बहादुर थे या नहीं, यह परखनेका समाजको मौका ही नहीं मिला।"

१३-८-'३२

आज सवेरे घूमते वक्त बापूने कहा — "निर्णय आनेवाला हो या कुछ भी होनेवाला हो, क्या कभी अैसा हुआ है कि मुझे नींद न आये? परन्तु आज रातको यही हुआ। अिस निर्णयके मुझे सपने आये या अुसीके विचार आते रहे। जाग अुठा और विचार आते रहे। अन्तमें तारे देखनेमें जी लगाकर सो रहा और विचार किस समय बन्द हो गये, अिसका पता नहीं चला। अिसका कारण यह है कि अिस निर्णय पर मेरे आगेके कदमका आधार जो है?"

आज सुबह बापू पूछ रहे थे — "क्या वल्लभभाअीके अुच्चारण सुधर रहे हैं ?" मैंने कहा — "जरूर । अब अुन्हें पता चल जाता है कि यह अुच्चारण गलत है । सच तो यह है कि अुन्हें अिस पढ़ाअीमें खूब रस आने लगा है । आज तक यह चीज जानी नहीं थी । अब यह नअी ही हाथ लगी है । स्वर्गद्वारमपावृतम् — जैसी भावना हो गयी है । अिसलिअे बिजलीकी तेजीसे प्रगति कर रहे हैं ।"

१४-८-'३२

बापूने कहा — "यही पढ़ाअीकी कुंजी है । संस्कृतके तो हमारे पुराने संस्कार हैं । सारा वातावरण अिससे भरा हुआ होनेके कारण अुसके अभ्यासके बारेमें तो अैसा लगता ही है । मगर किसी भी भाषाका सूक्ष्म अध्ययन करने लगें तो यही भावना होती है ।" अिसमें बापूका व्युत्पत्ति शास्त्रका शौक बोल रहा था । मगर बापूके शौककी कहाँ हद है ? लड़कियोंकी बीमारियाँ दूर करनेके लिअे शरीरविज्ञानका अध्ययन करनेकी अिच्छा हुअी और अुस दिन मेजर मेहतासे अैसी किताबकी माँग कर रहे थे, जो अनिष्णात यानी मामूली आदमियोंके काम आये और जिसमें रोगोंके अिलाजका भी निरूपण हो ।

आश्रमकी डाकमें ढेरों पत्र लिखे ।

छगनलाल जोशीको — "आश्रमकी मजदूरीके पीछे स्वतन्त्रताकी मान्यता है, दूसरी मजदूरीके पीछे पराधीनताकी भावना है । असलमें तो हमारे लिअे दोनोंमें स्वतन्त्रता है । जो खुद हो कर दुःख अपने सिर लें, अुनके मनमें भी दुःखकी शिकायत नहीं होती । अुल्टे वह दुःख सुख-जैसा लगना चाहिये । अुबलते तेलके कड़ाहमें सुधन्वा कैसे नहाये होंगे ! प्रह्लादने जलते हुअे लाल लोहेके खंभेका आलिंगन कैसे किया होगा ? अिन्हें बनावटी किस्से न मानना, क्योंकि अैसा आज भी हो सकता है । रिडली, लेटिमर, और मंसूरके अुदाहरण तो अैतिहासिक हैं । दूसरे तुम खुद याद कर सकते हो । सारी बात मन पर दार मदार रखती है ।"

. . . को :

"It won't do for any one to say I am only what I am. That is a cry of despair. A seeker of truth will say, 'I will be what I ought to be.' My appeal is for you to come out of your shell and see yourself in every face about you. How can you be lonely in the midst of so much life? All our philosophy is vain, if it does not enable us to rejoice in the company of fellow beings and their service."

"कोअी यह कहे कि मैं जैसा हूँ वैसा ही हूँ, तो अिससे काम नहीं चलेगा । यह तो निराशाकी बात हुअी । सत्यका पुजारी यह कहेगा कि मुझे

जैसा होना चाहिये वैसा ही बनूँगा। मेरी तुमसे यह अपील है कि तुम अिस चोलेसे बाहर निकलो और अपने आसपासके हर चेहरेमें अपने आपको देखो। अितने आदमियोंके बीच तुम्हें अकेलापन क्यों महसूस होना चाहिये? अगर हम अपने पड़ोसियोंकी संगतिमें और अुनकी सेवामें आनन्द न ले सकें, तो हमारा सारा तत्वज्ञान फजूल है।"

. . . को — ". . . की आत्माका अब हनन न करो। अुसके हठके लिअे मेरे दिलमें आदर है। जिसे वह धर्म मान बैठी है, अुसमें हम कैसे बाधा दे सकते हैं? अुसे प्रोत्साहन भी दें। अुसका भरणपोषण करना तुम्हारा धर्म है। अुस पर रोष नहीं होना चाहिये। कोअी पराअी स्त्री हो तो अुसके आचरण पर हम रोष नहीं करते, वैसा ही यहाँ होना चाहिये। अिस तरहके अभेदमें भीतरी सुखकी कुंजी है।"

अेक लड़कीको — "क्रोध आये तब क्या करें? यह प्रश्न न करके यह पूछना चाहिये कि क्रोध न आये अिसके लिअे क्या करें। क्रोध न आये, अिसके लिअे सबके प्रति अुदारता सीखनी चाहिये और यह भावना बनानी चाहिये कि सबमें हम हैं और हममें सब हैं। जैसे समुद्रकी सब बूँदें अलग होनेपर भी अेक ही हैं, वैसे ही हम अिस संसारसागरमें हैं। अिसमें कौन किस पर क्रोध करे?"

दूसरी अेक लड़कीको — "जहाँ तक तेरा हृदय दोष न माने वहाँ तक दोष नहीं समझना। अन्तमें हमारे पास दूसरा कोअी नाप नहीं है। अिसीलिअे हम हृदयको स्वच्छ रखनेकी कोशिश करते हैं। पापी मनुष्य पापको ही पुण्य मान लेता है, क्योंकि अुसका हृदय मलिन है। कुछ भी हो, जब तक अुसे ज्ञान नहीं हुआ तब तक पापको ही पुण्य समझकर चलता रहेगा। अिसलिअे तेरे लिअे अच्छा क्या है, वह और कोअी नहीं बता सकता है। मैं तो अितना ही बता सकता हूँ कि हमारे सत्य और अहिंसाके पथ पर चलना है। और अैसा करनेके लिअे यमनियमादिका पालन आवश्यक है।"

"आश्रममें जातपाँत नहीं मानी जाती, क्योंकि जातपाँतमें धर्म नहीं है। अिसका हिन्दूधर्मके साथ कोअी वास्ता नहीं है। किसीको भी अपनेसे नीचा या अूँचा माननेमें पाप है। हम सब समान हैं। छुआछूत पापकी होती है, मनुष्यकी कभी नहीं होती। जो सेवा करना चाहते हैं अुनके लिअे अूँचनीच होता ही नहीं। अूँचनीचकी मान्यता हिन्दूधर्म पर कलंक है। अुसे हमें मिटा देना चाहिये।"

"आत्मा, कुटुम्ब, देश और जगतके प्रति चार पृथक पृथक धर्म नहीं है। अपना अथवा कुटुम्बका अकल्याण करके देशका कल्याण नहीं हो सकता।

अिसमेंसे फलितार्थ यह होता है कि हम मरकर कुटुम्बको जिलावें, कुटुम्ब मरकर देशको जिलावे, देश जगतको जिलावे। परन्तु बलिदान शुद्ध ही हो सकता है। अिसलिअे सब प्रारंभ आत्मशुद्धिसे होता है। आत्मशुद्धि होनेसे प्रतिक्षणके कर्तव्यका पता अपने आप मिल जाता है।"

रक्षाबन्धन — जेलमें पवित्र बहनोंकी राखी मिले तो सौभाग्य ही कहना चाहिये न! मणिबहन पटेलको सवा बरसकी सजा हुअी सो तो ठीक ही है। मगर अुन्हें दिये गये हुक्ममें अहमदाबाद छोड़ने और अपने वतन करमसदमें जाकर रहनेके लिअे भी लिखा था!

१५-८-'३२

डॉक्टर साहबकी मृत्यु कैसे हालातमें हुअी, अिसका हृदयद्रावक वर्णन करनेवाला छगनलाल मेहताका पत्र आया। अुसे पढ़कर फिर जी भर आया। अितनी अुम्रमें लकवे और प्रमेहकी बीमारीवाले डॉक्टर साहब रातको पढ़ते पढ़ते मेजका लैम्प अुठा कर पुस्तक ढूँढ़ने जाते हैं, लैम्प हाथसे गिर पड़ता है, अुनके पैरमें काँच चुभता है, वे चोटकी परवाह नहीं करते, लाखोंका दान करनेवाले अपने पैर पर आठ आनेका खर्च करनेमें भी संकोच करके तीन दिन तक चलते फिरते रहते हैं, अपने खेत वगैरा देखने जाते हैं, घाव जहरीला हो जाता है और अन्तमें पैर काटना पड़ता है और मृत्यु हो जाती है। ये सब बातें आठ दिनके भीतर हो जाती हैं, यह कैसा! छगनलाल बयान करते हैं कि आपरेशनके बाद और मरनेसे पहले अुनकी अँगुलियाँ माला जपा करती थीं। बापूने फिर डॉक्टरके गुणगान करनेमें कितना ही समय लगाया। डॉक्टरके बाद अुनके जैसा हिन्दुस्तानका प्रतिनिधि बर्मामें कोअी नहीं रहा। जब तक वे थे तब तक हिन्दुस्तानसे किसी भी कौमका आदमी अुनके यहाँ जाकर खड़ा रहता और किसी भी संस्थाके लिअे रुपया मिल जाता था!

आज बापूकी तबीयत कुछ बिगड़ गयी। लगातार तीन दिन तक आलू खानेका नतीजा यह हुआ कि कब्ज हो गया। आज खानेके बाद काफी कै हुअी। कैम्पके भाअियोंको पत्र लिखा रहे थे कि कै हो गयी। कै होनेके बाद मुँह धोकर फिर पत्र लिखवाने लगे। वल्लभभाअी कहने लगे — "अभी रहने भी दीजिये।" बापू बोले — "नहीं जी, अब तो पेट हलका हो गया, अब कुछ है ही नहीं।" राजाने आज ही लिखा था — "आपका पत्रव्यवहार बाहर जितना ही है। सिर्फ अितनी बात सच है कि अलग ढंगका है।" जेलियोंकि पूछे कअी प्रश्नोंके जवाबमें लिखवाया हुआ लम्बा पत्र अिसका प्रमाण है।

“पढ़ाअीमें जो वहाँ दत्तचित्त न हो सकें, अुनके लिअे यह दवा है: बाहरकी दुनियाको बिलकुल भूल जायें। जैसे चोला छोड़कर जानेवाला जीव अगर मनुष्य जगत्‌में जी रखता है तो अुसे बुरी गति मिलती है और वह खुद दुःख पाता और दूसरोंको दुःख देता है, वैसे ही कैदीको समझना चाहिये। वह बाहरकी दुनियाका विचार ही न करे, क्योंकि अुसकी तो सांसारिक मौत (Civil death) हो गयी है। और सांसारिक मृत्यु पाया हुआ मनुष्य संसारमें जी रखता है तो पागल जैसा लगता है। और अपने आसपास वालोंको भी पागल बना देता है। यह जो मैं लिख रहा हूँ सो नयी बात नहीं है। बनियन अगर बाहरका विचार करता, तो वह अपना अमरग्रंथ नहीं लिख सकता था। लोकमान्य ‘गीता रहस्य’ नहीं लिख सकते थे।”

भाअी भुस्कुटेने (मुलाकातमें) पहले तो धार्मिक चर्चा कर ही ली थी; टॉल्स्टॉय पढ़ कर अुन्होंने ज्यादा प्रश्न पूछे। टॉल्स्टॉय अपनी आत्मकथामें लिखते हैं:

“ ‘I speak of a personal God, whom I do not acknowledge for the sake of convenience of expression. There are two Gods. There is the God people generally believe in, a God who has to serve them sometimes in a very refined way; perhaps merely by giving them peace of mind. This God does not exist. But the God whom we all have to serve, does exist and is the prime cause of our existence and of all we perceive.’

“ ‘मैं सगुण अीश्वरकी बात कर रहा हूँ। अपने विचारोंको प्रगट करनेकी सुविधाके लिअे मैं कहता हूँ कि मैं अुसे नहीं मानता। दो अीश्वर माने जाते हैं। अेक वह जिसे आम तौर पर लोग मानते हैं, जो लोगोंकी सेवा करता है — कभी कभी तो बहुत ही अच्छी तरह और शायद अुन्हें मनकी शांति देकर करता है। अैसे अीश्वरकी हस्ती नहीं है। मगर वह अीश्वर जिसकी सेवा हम सभीको करनी है हस्ती रखता है। हमारी हस्तीका और हमें जो कुछ दिखाअी देता है अुस सबका वही मूल कारण है।’

“अिनमेंसे आप कौनसे अीश्वरको मानते हैं? मैं तो दूसरेको मानता हूँ और अुसके मिल जानेके बाद प्रार्थना वगैरा बाहरी आचार सब फजूल हो जाता है।”

अिस सवालके जवाबमें बापूने हिन्दीमें लिखवाया: “मैं दोनों अीश्वरोंको मानता हूँ, जिसके पाससे हम सेवा लेते हैं और जिसकी हम सेवा करते हैं। अैसा तो हो नहीं सकता कि हम सेवा करें और किसी प्रकारकी सेवा न लेवें।

लेकिन दोनों अीश्वर काल्पनिक हैं। अुसके नजदीक तो वही चीज सच्ची है। जो• अीश्वर सचमुच है वह कल्पनातीत है। वह न सेवा करता है, न सेवा लेता है। अुसके लिअे कोअी विशेषण भी नहीं है, क्योंकि अीश्वर कोअी बाह्य शक्ति नहीं है, लेकिन वह हमारे भीतर ही है। और क्योंकि हम जानते नहीं हैं कि अीश्वर किस तरहसे काम करता है, अिसलिअे कल्पनातीत शक्तिका स्मरण करना ही चाहिये। और जब हमने स्मरण किया वैसे ही हमारा कल्पनामय अीश्वर पैदा हुआ। अन्तमें बात यह है कि आस्तिकता बुद्धिका प्रयोग नहीं है, वह श्रद्धाकी बात है। बुद्धिका सहारा बहुत कम अिस बातमें मिल सकता है। और जब हमने अीश्वरको माना तब विश्वके व्यवहारकी बातका झगड़ा छूट जाता है, क्योंकि पीछे हमको मानना होगा कि अीश्वरकी कोअी कृति बगैर हेतु नहीं हो सकती है। अिससे आगे नहीं जा सकता हूँ।"

आचारः प्रथमो धर्मः — सूत्र अुद्धृत करके अेक भाअीने अिसका रहस्य पूछा। अुसको जवाबमें लिखा: "आचारका अर्थ केवल बाह्याचार है और बाहरी आचार समय समय पर बदला जा सकता है। भीतरी आचरण हमेशा अेक ही हो सकता है यानी सत्य, अहिंसा वगैरा पर कायम रहना; और अिस पर कायम रहते हुअे बाह्याचारको जहाँ जहाँ बदलना पड़े वहाँ बदला जा सकता है। शास्त्रमें कहा है कि आचार प्रथम धर्म है, यह कह कर या मान कर किसी चीज पर डटे रहनेकी जरूरत नहीं हो सकती। संस्कृतमें दिये हुअे सभी विचार कोअी शास्त्र नहीं हैं। मानव धर्मशास्त्रके नामसे पहचाना जानेवाला ग्रन्थ भी सचमुच शास्त्र नहीं है। शास्त्र पुस्तकोंमें लिखी हुअी चीज नहीं है। वह जीवित वस्तु होनी चाहिये। अिसलिअे चारित्रवान ज्ञानी या जिसके कहने और करनेमें मेल है अुसका कथन हमारा शास्त्र है; और अैसी कोअी मशाल हमारे हाथमें न हो तब अगर हमें संस्कार मिले हों, तो हमें जो सत्य मालूम हो वही हमारा शास्त्र है।"

प्रार्थना और ब्रह्मचर्यका सम्बन्ध: अेक भाअीने कहा कि प्रार्थनाके साथ आप ब्रह्मचर्य पर जोर क्यों नहीं देते रहते? अुन्हें जवाबमें लिखा: "प्रार्थना और ब्रह्मचर्य अेक ही तरहकी चीजें नहीं हैं। ब्रह्मचर्य पाँच महाव्रतोंमेंसे अेक है। प्रार्थना अुसे पानेका अेक साधन है। ब्रह्मचर्यकी जरूरतके बारेमें मैंने बहुत कहा है, बहुत समझाया है। मगर यह विचार करने पर कि अुसे किस तरह साधा जाय जवाबमें अेक प्रार्थना ही बड़ा साधन मिला है। जो प्रार्थनाका मूल्य जान सकता है और मूल्य जाननेके बाद प्रार्थनामें तल्लीन हो सकता है, अुसके लिअे ब्रह्मचर्य आसान हो जाता है।"

आदर्श डॉक्टरके बारेमें — "मेरा आदर्श डॉक्टर वह है, जो अपने पेशेका अच्छा ज्ञान प्राप्त कर ले और अुस ज्ञानका अुपयोग जनताको मुफ्तमें दे। अपने गुजरके लिअे या तो वह कोअी मामूली धन्धा कर ले, या जनता जो कुछ थोड़ा बहुत दे दे अुससे अपना निर्वाह कर ले; मगर अुसे अपने कामकी फीस कभी न माने। आदर्श स्थितिमें मैं अैसे सेवकोंका सालाना वेतन मुकर्रर कर दूँ और अुसके सिवा वे अमीर गरीब किसीसे कुछ भी नहीं ले सकते।"

अिन्हींके दूसरे प्रश्नोंके अुत्तरमें — "जहाँ तक मैं समझा हूँ जपयज्ञका अर्थ नामस्मरण है।

"मिताहारकी मात्रा मुकर्रर करना मुश्किल है। अल्पाहारकी मात्रा आसानीसे नियत की जा सकती है। क्योंकि अल्पाहारका मतलब है जरूरतसे निश्चयपूर्वक कम खाना; और यही पसन्द करने लायक है।

"जो सत्यका पालन करना चाहता है, अुसके पास गुप्त रखने जैसा अेक भी विचार न होना चाहिये। बुरेसुरे विचार भी दुनिया जान ले तो चिन्ता न होनी चाहिये। फिक्र तो बुरेसुरे विचारोंकी होनी चाहिये, पापकी होनी चाहिये। मेरी डायरी कोअी देख लेगा अिस डरकी जड़में तो यह बात है कि हम जैसे हैं अुससे अच्छे दिखाअी दें। और जो आदमी सारी दुनिया अुसकी डायरी देख ले तो भी परवाह न करे, वह अपनी स्त्रीसे तो छिपाये ही कैसे?

"व्रतकी मर्यादा हमारी अशक्ति हो सकती है।

"जब तक मित्र मित्रके बीच भी मैं और तूका भेद है, और यह भेद पति पत्नीके सम्बन्धमें भी होता ही है और शरीरधारीके लिअे अनिवार्य है, तब तक अेक दूसरेकी चीज अिजाजतके बिना हरगिज न ली जाय। अुसी जगह पर रख देनेका निश्चय अिसमें मददगार नहीं है। अिसका अेक बड़ा कारण यह है कि खुद निश्चय करनेवालेको कहाँ पता है कि दूसरे ही क्षण वह जियेगा या नहीं, या अुसके कब्जेमें आ जानेके बाद अुस चीजको कोअी अुठा ले जायगा या नहीं। अिस नियमका पालन करनेमें कोअी भेड़चालका या अिससे भी बुरा आरोप लगाये, तो वह सहन करने योग्य है।"

१६-८-'३२

आज बापूने मित्र तर्पणमें ही ज्यादातर समय लगाया, यह कहा जा सकता है। डॉ० मेहताके अन्तकालके बाद पैदा होनेवाली हालतकी समस्या हल करनेके लिअे कअी पत्र लिखे। अिन पत्रोंका विवेचन बेकार है। मगर अिन सब पत्रोंमें प्रतिपादित

अेक सिद्धान्त यहाँ बता देना चाहिये — "तुम्हारा यह लिखना ठीक है कि जो विश्वासपात्र नहीं है, अुस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। मेरे लिखनेका हेतु यह था कि हम किसीको शककी नजरसे न देखें। जैसे हम यह चाहते हैं कि दुनिया हमारी बात पर विश्वास रखे, वैसे ही हम भी दूसरेकी बात पर विश्वास रखें। वह विश्वासपात्र साबित न हो तो पछतायें नहीं। विश्वास रखनेवालोंने दुनियामें आज तक कुछ भी नहीं खोया और विश्वासघात करनेवाले करोड़ों रुपया पानेकी कोशिश करनेमें खोते ही हैं। हमारी आत्मा मैली हो जाय तो हमने खोया ही। धन दौलत तो आती जाती ही रहती है। चली जाय तो रंज हरगिज न करें।"

मेरी जमीनका लगान चुकानेके हालातका चित्र मगनभाअीके पत्रमें आया। कहाँ मेरा कमजोर गाँव और कहाँ बोरसदका रास! पेन्शनियोंको सरकारने कैसा गुलाम बना दिया है, यह अिस मौके पर देखा गया। अिस सारे तंत्रकी अेक अेक चीज बारीकीके साथ देखें, तो वह तंत्रको यावच्चन्द्रदिवाकरौ कायम रखनेके लिअे और लोगों पर गुलामी खूबसूरत रूपमें कायम रखनेके लिअे रची गयी है। बापूको, वल्लभभाअीको और मुझे गालियाँ देनेवाला कलेक्टर हमारी जातिका ही . . . है।

१७-८-'३२

आज साम्प्रदायिक निर्णय आ गया। बापू शाम तक अिस तरह रहे जैसे कुछ हुआ ही न हो। मुझसे बाजरेकी रोटी बनवाअी और अुसे बहुत चावसे खाया। दोपहरको मशीनसे बादामका मक्खन भी बनवाया। शामको घूमते समय हार्निमैनका लेख पढ़ा। वह पसन्द आया। सुबह बातों ही बातोंमें कहीं कहीं ये वाक्य निकलते थे — "अल्पमतवालोंके समझौतेमें जो कुछ था वही किया है। बेन्थलके पत्रमें जो था वही हो रहा है।" मैंने कहा — "यह नया विधान मॉण्टफोर्डके सुधारोंसे भी ज्यादा भद्दा है।" बापू — "अिसमें कोअी शक ही नहीं। पिछले सुधारोंमें हमारे लखनअूके समझौतेको आधार बनाया गया था। लेकिन अिस बार तो अैसी फूट डाली है और अिस तरह छिन्नभिन्न करनेका जाल रचा गया है कि फिर देश अुठ ही न सके।" शामको प्रार्थनासे पहले कहा — "अच्छा, अब तुम और वल्लभभाअी सोच लो। मुझे जो कहना है कह दो। सेम्युअल होरको लिखा गया पत्र अिस पर लागू होता है, अिसलिअे अब हमें चेतावनी देनी पड़ेगी!" मैं चौंका। चुप रहा। हमें भी अैसा तो लगता ही था। 'अबकी टेक हमारी' भजन गाया, और आश्रमकी आयी हुअी डाक पढ़ना शुरू कर दिया।

पत्र तो जितने लिखने चाहिये थे, अुनके लिखनेमें जल्दी की ही गयी। रातको मैक्डोनल्डको पत्र लिखना शुरू किया।

सवेरे पत्र पूरा किया और हमसे कहा — "कातना छोड़कर अिस पत्रको पढ़ लो तो अिसे तुरन्त भेज दिया जाय।" हमने पढ़ लिया। वल्लभभाअीने कहा — "अिसमें निर्णयके दूसरे भागोंके बारेमें कुछ नहीं कहा। अिसलिअे यह अर्थ तो नहीं होगा कि यह सब आपको पसन्द है?" बापूने कहा — "नहीं। मेरे विचार कहाँ छिपे हैं? फिर भी आप चाहते हों तो अेक पैरा और जोड़ दूँ। अलबत्ता अिसमें दलील लानी पड़ेगी और दलील मुझे अिस पत्रमें लानी नहीं है। दलील जो भी करनी थी, वह सेम्युअल होरके नामके पत्रमें हो चुकी है।" मैंने कहा — "सिर्फ अितना ही लिखिये कि सारे निर्णयके खिलाफ मेरी आत्मा विद्रोह करती है। मगर अिसका अमुक भाग अैसा है, जिसे रद्द करानेके लिअे मैं प्राणोंकी बाजी लगा देना अपना फर्ज समझता हूँ। बापू कहने लगे — "नहीं, मुझसे अैसी तुलना नहीं हो सकती। और तब तो जरूर यह माना जायगा कि अिसे सारा निर्णय रद्द कराना है, मगर अिसका बहाना ढूँढ़ा है। यह सच है कि सारा ही रद्द कराना है, मगर सब बातें शामिल की जा सकती हैं या नहीं, अिस पर रातको थोड़ी देर विचार करके यह अिरादा छोड़ दिया।" शामको यही बात निकली — "मुझसे दूसरी बातें मिलाअी ही नहीं जातीं। वह तो धर्मके साथ राजनीतिको मिला देने जैसा होगा। और यहाँ दोनों मुद्दे अलग हैं।" फिर कहने लगे — "सब बातें मैंने अपने मनमें बार बार विचार ली हैं। अभी जो बातें सूझ रही हैं अुनमेंसे अेक भी मेरे दिमागमें न आयी हों सो बात नहीं है। ये सब विचार करके ही मैं अिस फैसले पर पहुँचा हूँ। मुसलमानों और दूसरे लोगोंको अलग मताधिकार दिया गया है, अुससे भयंकर परिणाम होनेवाले हैं। यह सब सच है कि अंग्रेजोंसे मिलकर सब जगह ये लोग हिन्दुओंको दबायेंगे। परन्तु मैं अिन सबसे निपट लेनेकी अुम्मीद रखता हूँ। लड़ानेवाला दल अेक बार चला जाय, तो फिर अिन सबसे निपटा जा सकता है। मगर अछूतोंके साथ तो मैं और किसी तरह निपट ही नहीं सकता। मैं बेचारे अछूतोंको किस तरह समझाअूँ? बड़ा भारी दुःख आ पड़े तब अपने पर सारा संकट ले लेना क्या आजकी नअी बात है? सुधन्वा तेलकी कढ़ाअीमें पड़ा था, और प्रह्लाद धधकते खम्भेसे लिपटा था, वह किस तरह? स्वराज मिल जानेके बाद भी कअी सत्याग्रह करने तो होंगे ही। कअी बार अैसा जीमें आता है कि स्वराजके बाद कालीघाट पर जाकर सत्याग्रह शुरू किया जाय और धर्मके नाम पर होनेवाली हिंसाको

रोका जाय। अिन बकरोंकी हालत तो अछूतोंसे भी दयाजनक है। वे सींग भी नहीं मार सकते। अुनमें कोअी आम्बेडकर भी पैदा नहीं हो सकता। अिस हिंसाके खिलाफ आत्मा कम नहीं जल अुठती है। बकरोंका भोग चढ़ानेके बजाय शेरका भोग क्यों नहीं चढ़ाते?"

अिस कदमका क्या असर होगा, अिसके बारेमें सुबह बातें हुअीं। मैंने कहा — "अिसके अनर्थ तो भयंकर होंगे। हमारे यहाँ अिसकी अन्धी और बेसमझ नकलें होंगी। अमरीकामें लोग कहेंगे कि अिसने अुपवास करके छुटकारा पाया।" बापू कहने लगे — "यह मैं जानता हूँ। अमरीकामें तो सब कुछ माना ही जायगा और चाहे जो मनवानेवाले अंग्रेज वहाँ मौजूद ही हैं! जेलसे छूटनेके लिअे अुपवास किया, अितना ही नहीं, बहुतेरे कहेंगे कि अिस आदमीने अब दिवाला निकाल दिया है। अिसका अध्यात्म चलता नहीं, अिसलिअे अिसने अब आत्महत्या की है। धूर्त दिवालिये अिसी तरह तो जहर खाते हैं। और हमारे यहाँ अन्ध अनुकरण होगा और भयंकर अनर्थ होगा। सरकार या तो मुझे छोड़ देगी और बाहर मरने देगी या भीतर भी मरने दे सकती है। मेक्स्विनीको मरने ही जो दिया था! हमारे अपने आदमी भी आलोचना करेंगे। जवाहरलालको यह कदम हरगिज अच्छा नहीं लगेगा। वे कहेंगे हमें अैसा धर्म नहीं चाहिये। मगर अिससे क्या? महान शस्त्र काममें लेनेवाले अनर्थोंसे या दूसरे विचारोंसे डरते नहीं हैं।"

१९–८–'३२

आज सप्रूकी राय आयी। अुन्हें वैधानिक प्रश्नके सामने अिस सवालका महत्व तुच्छ लगता है। अिस निर्णयके देनेमें अुन्हें साफ नीयत और अीमानदारीकी कोशिश दिखाअी देती है। बापूने जरा सी आलोचना की — "सप्रूका काम मुंजेसे अुलटा है। जातीय माँग पूरी हो जाय तो मुंजेको विधानकी परवाह नहीं, सप्रूको विधान मिल जाय तो कुछ भी हो जाय अुसकी परवाह नहीं।" हाँ, वल्लभभाअीके दुःखकी हद नहीं है। वे कहने लगे कि — "मुझे नरम दलवालोंके बारेमें सदासे अैसा ही महसूस होता रहा है। ये लोग किस वक्त क्या करेंगे, कह ही नहीं सकते। समझदारीका ठेका अिन्हीं लोगोंका है। आज जब देशमें और किसीको अंग्रेजोंकी नेकनीयत दीखती नहीं है, तब अिन लोगोंको नेक नीयत दीखती है। अिसका कारण है। अभी अिन्हें अपना खोया हुआ स्वाभिमान वापस प्राप्त करना है, नहीं तो फिर अुनके खड़े रहनेको जगह ही कहाँ रही!" मैंने कहा — "ये लोग तो बापूके कदमकी निन्दा करनेमें सरकारका साथ देंगे।" वल्लभभाअी — "मगर करें क्या! बापूकी रीत बेढंगी है। बापूने अिस कदमके बारेमें

शास्त्री जैसोंसे भी बातचीत की होती तो अच्छा था। कौन सोचता होगा कि बापू अिस तरहका कदम अुठायेंगे? मैं नहीं मानता कि कोअी भी आदमी अिस कार्रवाअीकी कल्पना करता होगा।''

आजकी रायें पढ़कर बापू कहने लगे — "देशमें तो शान्ति ही हो जायगी। थोड़े दिन बोलेंगे और फिर चुप। हाँ, मेरे अुपवाससे खलबली हो तो कौन जाने! और शान्ति हो जाय तो भी क्या आश्चर्य! लोग बेचारे थके हुअे हैं। हमें अलबत्ता थकावट नहीं आयी है। अिसलिअे यहाँ बैठे बैठे बारीक कातते रहते हैं।"

बाजरेकी रोटी शुरू की अुसके असरका जिक्र करते हुअे कहने लगे — "मैंने अिसके साथ दूध कभी लिया नहीं, अिसलिअे कह नहीं सकता। मगर देखूँगा, अिसका प्रयोग करूँगा।" मैंने कहा — "अब प्रयोग कब तक करते रहेंगे? २० सितम्बर तककी मियाद है।" बापू कहने लगे — "मुझे तो अिसका खयाल नहीं आता। वह दिन आयेगा तभी अिसका विचार करूँगा। तब तक प्रयोग करते ही रहना है।" मैंने कहा — "हम शान्त नहीं रह सकते।" बापू बोले — "यह मैं जानता हूँ। परन्तु मैं शान्त न रह सकूँ, तो मर ही जाअूँ!"

*   *   *

सुपरिण्टेण्डेण्ट आकर कहने लगे — "अितना ज्यादा तेज कदम?" बापू बोले — "दूसरा चारा नहीं था।" अुन्होंने शंका की कि शायद होरने ब्रिटिश मंत्रि-मण्डलको खबर ही न दी हो। बापूने कहा — "मैं मानता हूँ कि दी होगी। मगर आपका शक सही है, क्योंकि यह आदमी जरूर अैसा है कि न दे। और खबर लग जाय तो वह कह दे कि अैसी जरा सी बात पर जो आदमी मरने को तैयार हो गया है, अुसके बारेमें मंत्रि-मण्डलको क्या तकलीफ दी जाय? मगर मुझे लगता है कि अुसने खबर न दी हो, तो अुसे अपनी सारी कारगुजारी और अिज्जत गँवा देनी पड़ सकती है।" सुपरिण्टेण्डेण्ट — "अिसका असर अिन लोगों पर क्या होगा? यहाँ क्या होगा?" बापू — "कुछ भी न हो! सारे अछूत सम्मिलित मताधिकार माँगे तो भी ये लोग कह सकते हैं कि सदियोंसे कुचला हुआ अल्पमत है, अुसके लिअे अिस मामलेमें न्याय क्या है सो निर्णय हम ही कर सकते हैं। अिसमें अुन्हें कुचलनेवालोंको क्या मालूम हो?" फिर बापूने कहा — "मेरी जिन्दगी ही अिस तरह बीती है। २५ वर्षसे जिस ढंग से यह जीवन बीता है, अुस जीवनका कलश यह आखिरी कदम है। मुझे पता नहीं था कि अिस कामके लिअे प्राणत्याग करना पड़ेगा। मगर यह अेक बड़ा अुद्देश्य है।" फिर बोले — "असलमें आरंभ तो ५० साल पहले हुआ था,

जब मैंने बीड़ी पीना शुरू किया था और यह महसूस हुआ था कि यह बुरा हो रहा है और स्वीकार कर लेना चाहिये। अुसके बाद दिन दिन सत्यकी समझ और अमलमें विकास होता ही रहा है।"

दोपहरको कलेक्टर आया। वह कहने लगा — "अैसा निर्णय न दें तो क्या हो? कुछ न कुछ निराकरण तो होना ही चाहिये। अैसे मामलोंमें बिल्कुल न्याय और हक पर आग्रह रखा जा सकता है?" बापू कहने लगे — "यह फैसला गैरवाजिब भले ही हो, मगर सर्वसम्मत होना चाहिये। अिसके पीछे तो कोअी सम्मति नहीं है। विलायतमें माँगा, मगर अिन लोगोंने यह नहीं देखा कि वहाँ तो जिस सम्मेलनकी राय बन चुकी थी अुससे निराकरण चाहा गया था। वह मिल नहीं सकता था।" फिर दलित जातियोंकी बात निकली। वह पूनाके अछूतों परसे ही अनुमान लगाता था। अन्तमें कहने लगा — "यह खूब मूर्खताभरी और प्रजातन्त्रविरोधी व्यवस्था है। मगर और हो ही क्या सकता है?"

सवेरे बापू कहने लगे — "सत्याग्रहका नियम है कि जब मनुष्यके पास और कोअी साधन न रहे और बुद्धि थक कर बैठ जाय, तब अपने शरीरको त्याग देनेका अन्तिम कदम अुठाया जाय। राजपूत स्त्रियाँ क्या करती थीं? कमलावतीने, जिसके बारेमें हम अुस दिन पढ़ रहे थे, क्या किया? अुसका निश्चय यह था कि जीते-जी दुश्मनके हाथमें नहीं पड़ना है और अिसलिअे वह मौतके मुँहमें चली गयी।"

२०-८-'३२

आज मुझे और वल्लभभाअीको बार बार विचार आये कि किसी भी तरहसे यह खबर बाहर पहुँच जानी चाहिये। मगर बापूका वचन कैसे भंग हो? बापू तो वचन दे चुके हैं कि हमारी तरफसे यह बात कहीं भी बाहर नहीं जायगी। अिसलिअे बापूके बेवफा कैसे हो सकते हैं? वल्लभभाअीको बड़ी परेशानी थी। आज बापूने बहुत पत्र लिखे। आश्रमकी डाक बहुत सारी लिखी। अिसमें छगनलाल जोशीके नामका पत्र, हालाँकि वह सत्याग्रहके शाश्वत सूत्र अुपस्थित करता है, परन्तु अुनकी मौजूदा मनोदशाका भी सूचक है। (जोशीके पत्रमें आसपासके वातावरणसे पैदा होनेवाली निराशा और बहुत कामोंको पूरा करनेकी अधीरता थी।) वह पत्र यह है:

"शरीर बिगाड़नेके कअी कारणोंमें अेक कारण अधीरता है। पहले मन अधीर होता है, फिर शरीर होता है। मगर 'अधीरा सो बावरा धीरा सो गंभीर' यह अनुभव वाक्य है। दुनिया जल अुठे तो क्या हम अुसे अधीरतासे ठंढी कर सकते हैं? हमें ठंढी ही कहाँ करनी है? जब बड़ी आग लगती है,

तो बंबेवाले आग पर पानी छिड़कते ही नहीं, क्या यह जानते हो? वे आसपासके हिस्सेको ही सँभालते हैं। और अितना करें, तो वे कर्मकुशल यानी योगी माने जाते हैं। हमने अपना कर्तव्य पालन कर दिया, तो सारी आग बुझा देनेके बराबर ही है। दीखनेमें भले ही बुझी हुअी न लगे, मगर अुसे बुझी हुअी ही समझना चाहिये। सत्यकी खोज करते करते मुझे तो और कुछ मिला नहीं, और आगे भी मिलता दीखता नहीं। अगर यह ठीक न हो तो सत्यका आचरण और सत्यका आग्रह असंभव हो जायगा। आग्रह अुसीका हो सकता है, जो शक्य है। चंद्रमा परके पहाड़ों पर हवाका आग्रह रखें, तो शेखचिल्लियोंमें शुमार हों, क्योंकि वह असंभव है। यही बात हमारे कर्तव्यके बारेमें है। और सच पूछा जाय तो सबको अपना अपना कर्तव्य मालूम होता है। क्यों कि अुसके लिअे दूर नजर डालनेकी जरूरत नहीं होती। नाककी नोक तक ही नजर डालना होता है। पैरोंके सामने पड़ा हुआ कचरा दूर करना है। यह दूर होता जायगा वैसे वैसे दूसरा नजर आता जायगा और निकलता रहेगा। भले ही जीवनके अन्तमें वह खत्म हुआ न लगे। जीवनका अन्त कहाँ है? शरीरका अन्त है, अुसकी क्या चिन्ता? और जीवनका अन्त नहीं है तो फिर कचरेका खात्मा न दिखाअी देने पर थकावट मालूम न होनी चाहिये। दर्जीका लड़का जब तक जीता है सीता रहता है। हाथमें सुअी हो और आखिरी जँभाअी आ जाय, तो अुसे कर्तव्यपरायण समझना चाहिये।"

अिसी तरहके विषयोंकी चर्चा करनेवाला दूसरा पत्र बालकृष्णके नाम था — "मायाको शंकराचार्य किस रूपमें मानते थे, यह मैं निश्चयपूर्वक नहीं जानता। मैं यह मानता हूँ कि जिस रूपमें हम जगत्को मानते हैं और देखते हैं, वह आभास है, हमारी कल्पना है। मगर जगत् अपने रूपमें तो है ही। वह कैसा है यह हम नहीं जानते। ब्रह्म है, यह कहनेके साथ ही साथ अुसका नेति रूपमें वर्णन करते हैं। जगत् भी ब्रह्म है। वह ब्रह्मसे अलग नहीं है। हम जो जुदापन देखते हैं, वह आभास मात्र है।

"मेरी राय यह है कि हमारी अुम्रका पैमाना छोटा बड़ा हो सकता है। असलमें हर देह अपने सारे धर्मोंके साथ अुत्पन्न होती है। हम नहीं जानते वे क्या हैं। अुन्हें जाननेकी जरूरत भी नहीं है।

"कालके विभाग मनुष्यके किये हुअे हैं और वे कालचक्रमें रजकणसे भी छोटे हैं। हमारी गिनतीके करोड़ों हिमालय जमा करें, तो भी वे कालचक्रसे छोटे हैं। अिसलिअे मनुष्यके हाथमें जो कुछ है, वह नहीं के बराबर है। भले ही वह अिसीमें मस्त रहे।

“स्वप्नके भौतिक कारण तो असंख्य हैं। मुझे अैसा लगा है कि सपनेमें सपनेका मिथ्यात्व देखा जा सकता है। शायद यह जाग्रति और स्वप्नके बीचकी हालत होगी। स्वप्नदोष कितनी ही बार केवल यांत्रिक कारणोंसे विना विकारके हो जाता है। अुसे खानेमें फेरबदल करके रोका जा सकता है। ज्यादातर अुसका कारण कब्ज होता है। दूधसे स्वप्नदोष होता है अिसका कारण ज्यादातर विकार होता है, क्योंकि दूध विकारोत्तेजक है। मगर तुम पर यह बात लागू नहीं होती। यानी जिनके शरीर बहुत कमजोर हो गये हैं, अुनमें दूध विकार पैदा कर नहीं सकता। भले ही फिर विकारी पुरुषने ही लिया हो। जिनके शरीर बहुत कम-जोर हो गये हैं, अुनमें दूधकी सारी शक्ति अुन्हें पोषण देनेमें ही लग जाती है। डॉ० रजबअली कहते हैं कि अेक हद तक यह सही है। जो शरीर और मनसे बिलकुल तन्दुरस्त हो, वह डॉ० रजबअलीके कथनसे बाहर है।

“ज्ञानी पुरुषके स्वभावमें लोकसंग्रह जरूरी है। अिसमें अपवाद हो ही नहीं सकता।

“मैं नहीं कह सकता कि मनको कितनी देर तक निर्विचार रख सकता हूँ, क्योंकि यह हिसाब कभी लगाकर देखा नहीं। लेकिन अितना जानता हूँ कि मेरे मनमें निकम्मे विचारोंको स्थान नहीं मिल सकता। आ जाय तो अुसे चोरकी तरह भागना पड़ता है।”

“दंभ तो सिर्फ झूठकी पोशाक है।”

अनेकको लिखा — “सम्बन्धियोंके पत्रोंकी हमेशा आशा रखता हूँ। तुम मुझे अेक भी पत्रसे वंचित न रखना। जैसे चातक मेहकी बाट देखता है, वैसे मैं तुम्हारे पत्रकी देख रहा था।”

मथुरादासको सिलाअी यज्ञ पर लम्बा पत्र लिखा — “सिलाअी यज्ञकी कल्पना गरीबोंको सिलाअीका धन्धा दिलानेके लिअे नहीं है। मगर गरीबोंकी बुनी हुअी खादीको नुकसानके बिना जल्दीसे खपानेके लिअे है। महँगी लगनेवाली खादीको सस्ती करनेके लिअे है।”

भोजनके बारेमें भी विस्तारसे लिखा और अन्तमें व्रतोंके बारेमें लिखा: “विकारोंका भी चिन्तन न करो। अेक बातका निश्चय करनेके बाद अुसे गड्ढेमें पड़ी समझना चाहिये। व्रतका अर्थ ही यह है कि जिस चीजका व्रत लिया है, अुसके विषयमें हमें मन रोकनेका प्रयत्न नहीं करना पड़ता। जैसे व्यापारी किसी चीजका सौदा कर लेता है तो फिर अुसका विचार नहीं करता और दूसरी चीज पर ध्यान देता है, वैसी ही बात व्रतोंकी है।”

. . .को लिखा — “लोकमतका अर्थ है जिस समाजकी राय हमें चाहिये अुसका मत। यह मत नीति विरुद्ध न हो तब तक अुसका आदर करना हमारा

धर्म है। धोबीके किस्से परसे शुद्ध निर्णय करना मुश्किल है। आजकल तो वह हमें हरगिज पसन्द नहीं होगा। अैसी आलोचना सुनकर अपनी पत्नीको छोड़ देनेवाला निर्दय और अन्यायी ही माना जायगा। लेकिन रामायणमें कविने यह किस्सा किस खयालसे दिया है, यह मैं नहीं कह सकता। हमें अुस झगड़ेमें पड़नेसे क्या काम? मैं तो नहीं पड़ूँगा। रामायण जैसी पुस्तकोंको भी मैं अिस तरहकी दृष्टिसे नहीं पढ़ता। अगर लड़कियोंके साथकी मेरी छूटसे आश्रमवासियोंको चोट पहुँचती है, तो मेरा यही खयाल है कि मुझे वह छूट लेना बन्द कर देना चाहिये। यह छूट लेना कोअी स्वतंत्र धर्म नहीं है, और न लेनेमें नीतिका भंग नहीं है। लेकिन अिस तरहकी छूट न लेनेसे लड़कियों पर बुरा असर हो, तो मैं आश्रमवासियोंको समझाअूँ और छूट लूँ। लड़कियाँ ही मुझे न छोड़ेंगी तब मैं देख लूँगा। मैं जो छूट जिस तरह लेता हूँ अुसकी नकल तो किसीको नहीं करनी चाहिये। यह चीज स्वाभाविक हो जानी चाहिये। आजसे मुझे छूट लेनी है, यह विचार करके बनावटी तौर पर कोअी छूट नहीं ले सकता। और ले तो वह बुरा ही समझा जायगा। असल बात यह है कि जो विकारवश होकर निर्दोषसे निर्दोष लगनेवाली छूट भी लेता है, वह खुद गड्ढेमें गिरता है और दूसरेको भी गिराता है। हमारे समाजमें जब तक स्त्री-पुरुषका सम्बन्ध स्वाभाविक नहीं बन जाता, तब तक जरूर सावधान होकर चलनेकी जरूरत है। अिस मामलेमें सबके लिअे लागू होनेवाला कोअी राजमार्ग नहीं है। तुम्हारे अपने रंगढंगमें बहुत अनघड़पन भरा है। तुम्हारी स्वाभाविक निर्दोषता तुम्हें बचाती है। मगर तुम अुसका घमण्ड करते हो और अुसे हठके साथ पकड़े रहते हो, यह ठीक नहीं। अिसमें अविचार है। आज तुम्हें अिसका नुकसान मालूम नहीं होता, लेकिन किसी दिन जरूर पछताना पड़ेगा। घमण्ड किसीका नहीं रहा। सभी लोकमर्यादा बुरी है, यह समझ कर समाजको आघात नहीं पहुँचाना चाहिये।"

बाको लिखा — "अब तो तुम छूटोगी। मगर मुझसे मिलना न होगा, अिसका दुःख तुम्हें होगा। मुझे तो है ही। तुम्हारे लिअे भी छूट लेनेकी जीमें आती है। फिर भी यह शोभा नहीं देगा, यह तुम भी मानोगी। हमारा जीवन त्यागसे ही बना है, अिसलिअे शान्ति रखना। मुझे बराबर लिखती रहो।"

२१-८-'३२

आज सुबह फिर निर्णय पर बातें हुअीं। जयकर, सप्रू और चिन्तामणिकी रायों पर चर्चा हुअी। बापू कहने लगे — "यह आशा रख सकते हैं कि जयकर सप्रूसे यहाँ अलग हो जायँगे।" वल्लभभाअी — "बहुत आशा रखने जैसी बात नहीं है।"

बापू — "आशा अिसलिअे रख सकते हैं कि विलायतमें भी अिस मामलेमें अिनके विचार अलग हो रहे थे। वैसे तो क्या पता?" वल्लभभाअी — "चिन्तामणिने अिस बार अच्छी तरह शोभा बढ़ाअी।" बापू — "क्योंकि चिन्तामणि हिन्दुस्तानी हैं, जब कि सप्रूका मानस युरोपियन है। चिन्तामणि समझते हैं कि अिस निर्णयमें ही बहुत कुछ विधान आ जाता है। सप्रू यह मानते हैं कि विधान मिल गया, तो फिर अिन बातोंकी चिन्ता ही नहीं। किसी भी हिन्दुस्तानीको समझानेकी जरूरत नहीं होगी कि कितना ही अच्छा विधान गुण्डोंके हाथमें दे दिया जाय, तो अुसकी दुर्गति ही होगी। और अिस निर्णयसे विधान गुण्डोंके ही हाथमें दिया जा रहा है। अभी तो केन्द्रीय सरकारका बाकी है। ये केन्द्रीय सरकारको अेक धधकता हुआ कुंड बना डालेंगे और कहेंगे कि अब अिसमें पड़ो और जल मरो।"

मैंने कहा — "मालवीयजी कैसे चुप हैं?"

बापू — "मालवीयजीको कुछ कहना ही नहीं होगा। वे शायद सोचते होंगे कि अब अिसमें क्या हो सकता है! अुन्हें मेरे विचारोंका तो पता न होगा, अिसलिअे परेशान हो रहे होंगे।"

वल्लभभाअी — "आपके साथ यही तो मुसीबत है कि आप अन्त तक कुछ भी मालूम नहीं होने देते और अपने साथ वाले आदमियोंकी स्थिति भी बिलकुल विषम बना देते हैं! आपके खिलाफ आपके साथियोंकी यही शिकायत है। सबका यही अनुभव है कि जिसकी बिलकुल कल्पना नहीं होती अैसी परिस्थितिमें आप हम सबको डाल देते हैं।"

बापू — "मगर अिसमें क्या हो सकता है!"

वल्लभभाअी — "हमें भी तो कोअी कहेगा न कि तुम साथ थे, तुम किसी भी तरह अिस चीजकी खबर तो बाहर भेज ही सकते थे। डाह्याभाअी हर सप्ताह आते हैं, अुनके साथ समाचार भेजे जा सकते थे।"

बापू — "यह तो कैसे हो सकता है! क्या हम अिनसे (जेल अधिकारियोंसे) यह कहें कि जाओ, हम तो अब अिस चीजको किसी भी तरह जाहिर कर रहे हैं! हम अुन्हें वचन दे चुके हैं कि हमारी तरफसे यह चीज बाहर न जायगी। यानी काम खतम हुआ। यह आपने पत्रमें नहीं देखा कि मैंने बिलकुल लापरवाहीसे लिखा है कि अिसे प्रकाशित करके लोकमत जाग्रत होने देना हो तो होने दो और प्रकाशित न करो तो भी ठीक है? मालवीयजी और राजगोपालाचार्यको आज अगर अिस चीजका पता चले, तो वे क्या कर सकते हैं? थोड़े ही दिनकी तो बात है न! मेरे खयालसे मालवीयजी और राजाजीको भी अिस बातसे थोड़ा धक्का लगानेकी जरूरत है। राजाजी तो अितनी तेज बुद्धिके हैं कि अुन्हें फौरन मालूम हो

जायगा कि अिस आदमीने यह कदम कैसे अुठाया ? यह बात अैसे आघातसे ही समझमें आ जायगी। देखो न मैंने अिस पत्रमें कुछ भी बहस नहीं की है। नहीं तो क्या मैं अेक बड़ा तोहमतनामा नहीं बना सकता था ? मगर मैंने यह अेक चीज ले ली, और अुसके लिअे मुझे अपनी जान लड़ा देनी है। यह जीवन अधिक अुदात्त अुद्देश्यके लिअे सुरक्षित रख छोड़ा था, लेकिन यह प्रसंग आ गया। अब क्या हो ? और यह सत्याग्रह कांग्रेसियोंके खिलाफ थोड़े ही है ? वे तो बेचारे जेलोंमें पड़े हैं। यह सत्याग्रह तो गैरकांग्रेसियोंके खिलाफ है, ताकि अुनकी समझमें आ जाय कि वे क्या कर रहे हैं। देखो तो अछूतोंके साथ आज जो कुछ किया जा रहा है, अुसे कहीं कोअी देखनेवाला है ? यह जड़ता भी मुझे परेशान कर रही है। यह जड़ता अैसे अुपायोंके सिवा किस तरह मिटाअी जा सकती है ? अछूतोंको अलग मताधिकार देनेसे क्या होगा, अिसका विचार ही मुझे कँपा रहा है। दूसरी कितनी ही जातियोंको अलग मताधिकार दिया जाय तो अुससे मैं निपट लूँगा, मगर अिनसे निपटनेका मेरे पास अिसके सिवा दूसरा अुपाय नहीं है। अछूत भी बेचारे कहेंगे कि यह आदमी तो हमें चाहनेवाला है। तब हमें थोड़ेसे ज्यादा हक मिलते हैं, तो यह किस लिअे सत्याग्रह करता है ? हम अलग मत देंगे तो भी अिसके साथ रहकर ही देंगे न ? अुन्हें क्या पता हो सकता है कि अिससे तो हिन्दुओंके दो भाग हो जायँगे और छुरियाँ चलेंगी, मारकाट मचेगी, अछूत गुण्डोंके साथ मुसलमान गुण्डे मिल जायँगे और हिन्दुओंके टुकड़े कर डालेंगे ? क्या यह सब सरकारने नहीं सोचा होगा ? मैं मानता ही नहीं कि यह चीज अुसकी कल्पनाके बाहर थी। और जैसे कुछ बाकी रह गया हो, अिसलिअे अिसमें अर्विनको भी मिला लिया। केण्टर्बरी कहता है कि जहाँ अर्विन न हो वहाँ हमें सन्तोष नहीं होगा; अिस अीसाअी अर्विनने आकर अिसके करनेमें भाग लिया !"

"नहीं, वल्लभभाअी अिस चीजके पहलेसे मालूम होनेमें कोअी फायदा नहीं, सब छीछालेदर हो जायगी। अचानक भड़ाका होना ही ठीक है। हाँ, आपको अैसा लगता हो कि यह भयंकर भूल हुअी है तो दूसरी बात है। वैसे आप दोनों तो अिसमें शरीक हैं, अिसलिअे आपकी जिम्मेदारी जरूर है। मगर अंतिम जिम्मेदारी तो मेरी ही है, क्योंकि मुझे जो सूझ गया वह कर डाला। यह चीज ही अैसी है कि अिसमें किसीकी सम्मतिकी जरूरत नहीं होती। बम्बअीके दंगोंके बारेमें मैंने जब अुपवास किये, तब दास और नेहरूने मुझे कहा ही था कि हमसे पूछे बिना आप यह कैसे कर सकते हैं ? मैंने अुन्हें समझाया था कि भाअी, मैं यह कांग्रेसीकी हैसियतसे नहीं, अिन्सानकी हैसियतसे कर रहा हूँ। मैं अेक खास धर्म पाल रहा हूँ और अुसके अनुसार

यह सब करना पड़ता है । हिन्दू-मुसलमान अुपवासके वक्त हकीमजीको भी मैंने यही बात कही थी । अिस समय भी मेरे सामने यह प्रश्न धार्मिक है, अिसमें राजनीतिकी जरा भी बू नहीं है ।

"परेशानी तो होगी । बेचारे कैम्पवालोंका क्या होगा? मगर अिन सबसे हम निबट लेंगे । अिन लोगोंसे कहेंगे कि 'खबरदार, अुपवास किया है तो । सरकारको भी हमारे खिलाफ कहनेको मिल जायगा और अुपवास बिलकुल बनावटी हो जायगा । तुम्हारा समय आये तब अुपवास करना न! सामूहिक अुपवास नहीं हो सकता सो बात तो है नहीं । हिन्दू-मुसलमानोंमें आग लगी हो, अुस वक्त हिन्दुओंको रोको और जब तुमसे कुछ न हो सके तो तुम सामूहिक अुपवास कर सकते हो । खुद मैंने भी हिन्दू-मुसलमानोंके सवालसे हाथ नहीं धो लिये हैं । परन्तु मैं देखता हूँ कि हिन्दू जाति अभी मेरे साथ नहीं है, और अुसे जबतक मारनेका शौक है तब तक मुझसे कुछ नहीं हो सकता । अगर ये लोग मेरे साथ अहिंसक बन जायँ, तो अिसी तरहके अुपायोंसे ये झगड़े खत्म कर दूँ ।' नहीं, तुम न घबराओ और समझके साथ मान लो कि यह चीज अपने समय पर मालूम हो जायगी । यही ठीक है ।"

गृहस्थकी हैसियतसे बापूको अपने अुत्तम रूपमें देखना हो, तो देखो अपनी पुत्रवधू सुशीलाको लिखा हुआ यह पत्र:

२२-८-'३२

"तुम आलसीको तुम्हारा दो पन्नेका पत्र लम्बा लगा, मुझे तो जरासा मालूम हुआ होता है । तुम्हें मालूम है कि जब मैं अपने भाअीको विलायतसे पत्र लिखता था तब बीस पच्चीस पन्ने भरता था और फिर भी वह पत्र मुझे छोटा जान पड़ता था! अैसा नहीं लगता था कि भाअीको भी बड़ा लगेगा और पढ़नेमें तकलीफ होगी, बल्कि यह विश्वास था कि अुन्हें अच्छा लगेगा । हफ्तेभरमें जो कुछ किया हो, जिनसे मिले हों, जो कुछ पढ़ा हो और जो दोष किये हों, सब लिखनेमें पन्ने भर जायँ तो अिसमें आश्चर्य क्या? और फिर वह भी भाअीको ही लिखना था, अिसलिअे जितना होता सब अुसमें भर देता था ।

"मगर तुम तो अेक लकीरमें निपटा देनेवाली ठहरीं । चौड़े चौड़े अक्षरोंमें पचास लकीरें लिख दीं, तो यही लगेगा कि बहुत हो गया । अैसी शाहजादी हो । खैर तुम मणिलाल पर अंकुश रखो तो काफी है । मणिलाल भोला है, तुम गहरी हो । यही जान कर तो तुम्हारी शादी की है । मैं मानता हूँ कि लोगोंकी तुम्हारी परीक्षा सच्ची ही होगी । अभी जरा और अंकुश रखो । यह न

मान लेना कि वे पति हो गये अिसलिअे अुन्होंने जो कह दिया वह अन्तिम हो गया। सच्ची पत्नी पतिका कान पकड़ कर अुसे गड्ढेमें पड़नेसे रोकेगी। मैं यह मानता हूँ कि यह सब तुम्हारे हाथमें है। मणिलालके साथ मेरा करार है कि वह तुम्हें दासी न मानकर साथिन, सहधर्मिणी और अर्धांगिनी समझेगा। अिस तरह तुम दोनोंका अेक दूसरे पर बराबरका हक है। तुम्हें भीतरी ज्ञान जिस हद तक ज्यादा है, अुस हद तक अिस क्षेत्रमें तुम्हारा हक ज्यादा है। मणिलालको मशीन चलाना ज्यादा आता होगा, अिसलिअे अुसमें अुसका हक ज्यादा है। पानीके अिलाज वह ज्यादा जानता है, अिसलिअे अुसमें अुसका हक भले ही ज्यादा होगा।"

आज २० सितम्बरकी कार्रवाअीके बारेमें कितने ही तैयार किये हुअे प्रश्न बापूको बताये और अुनसे कुछ लिखा हुआ माँगा। बापू कहने लगे — "मैं जबानी जवाब देता हूँ और फिर तुम्हें जितना हजम हो लिख डालना। अिनमेंसे कितने ही सवाल अैसे हैं, जिनका विस्तारसे जवाब दिया जाय तो भी अन्त नहीं आयेगा।" अुनका कहा हुआ कितना ही आज लिख लेता हूँ :

होरके पत्रमें लिखे हुअे दो विषय — दमन और अलग मताधिकारके — अलग अलग तरहके हैं। अिसलिअे अिनमें तुलना हो ही नहीं सकती। बापूकी अपनी रायके मुताबिक तो दमनके मामलेमें सत्याग्रह करना पड़े तो विचार पैदा हो जाय, मगर अिस मामलेमें तो विचार ही नहीं करना पड़ता। यह बिलकुल स्वाभाविक है, अिसके बिना काम ही नहीं चल सकता। "बाहर होता तो अुपवास करनेकी नौबत कभी आती ही नहीं, सो बात तो नहीं है। मगर बाहर रह कर मैं अितने जोरका आन्दोलन मचाता कि अिस चीजको असंभव बना देता। यह अुपवास सरकारके खिलाफ नहीं, मुसलमानोंके खिलाफ है, हिन्दुओंके खिलाफ है और अंग्रेज जनता और दूसरे बहुतोंको जाग्रत करनेके लिअे है। जिसके विरुद्ध अुपवास करना पड़े, वह अिस कदमको समझ सकनेवाला हो यह जरूरी नहीं। मान लो मुझे आज खबर मिले कि मुसलमान आकर आश्रमसे किसी लड़कीको अुठा ले गये, तो यहाँ बैठे बैठे मैं जरूर अनशन शुरू कर दूँ और सरकारसे कहूँ कि मेरे अिस कदमकी मुसलमानोंको खबर दे और कहे कि जिस कौमका मैंने कभी बुरा नहीं चाहा और जिसके लिअे प्राण देनेका मौका आ जाय तो देनेको तैयार हो जाअूँ, वह कौम अैसी बात बर्दाश्त कर सकती है तो मेरे लिअे दूसरा अुपाय रह ही नहीं जाता। आज अछूत बड़ी आफतमें फँसे हैं। यह बात कोअी समझता नहीं। अिससे स्थिति ज्यादा दुःखद बन जाती है। मुझे जिस दिन छोड़ा जाय अुस दिन या तो हालत अैसी हो गयी होगी कि बिलकुल सुधर ही न सके, या ढेरों अछूत मुसलमान बन गये होंगे, या सनातनी

अुन्हें खूब तिरस्कारके साथ सताते होंगे और अुन्हें ज्यादा कुचल डाला होगा। और हम छूटें तब तक जो होना था, सो पूरी तरह हो चुका होगा। मुझे तो यह चीज सारे निर्णयमें अितनी भयानक लगती है कि निर्णयके और तमाम हिस्से बहुत अच्छे या मंजूर कर लेने लायक होते, तो भी मैं अिसके खिलाफ अैसा ही कदम अुठानेको तैयार होता।"

२३-८-'३२

कलकी बातचीतके बापूके कुछ कुछ अुद्गार हमेशा याद रहेंगे — "मुझे अैसा महसूस ही नहीं होता कि यहाँ मेरा जीवन बेकार जा रहा है। यहाँ बैठा बैठा मैं बहुत कुछ काम कर सकता हूँ और बहुतोंको रास्ता बता सकता हूँ। अेक पल भी व्यर्थ नहीं जाता। 'सांसारिक मृत्यु' शब्द अुस कारण तक ही ठीक है जिस कारणसे सरकारने हमें जेलमें बन्द किया है। अुसके अलावा और मामलोंमें हमें जितना काम करना हो कर सकते हैं। डॉक्टर मेहताके मामलेमें अगर मैं सबसे मिल सकूँ, तो पूरी तरह निबटारा करा दूँ। आश्रमका पथप्रदर्शन कर रहा हूँ, सो तो तुम देख ही रहे हो।"

अिसी दृष्टिसे बहुतसे पत्र लिखे जाते हैं। कैम्प जेलके बहुतसे पत्र धार्मिक शंकाओं और प्रश्नोंवाले होते हैं। दरबारीने पूछा था — "फजूल विचार भारस्वरूप होते हैं, परन्तु कुछ क्रम ही अैसा मालूम होता है कि अेक खास समय तक सभी मनुष्य विचारमें — कल्पनामें रमे रहते हैं; मगर सत्यशोधक अनुभव होने पर अुससे भी छूट जाता है। यह सच है कि निष्काम कर्मसे चित्तकी शुद्धि होती है। मगर अेक हद तक दिलकी सफाअी हो जानेके बाद साधकको भीतरी क्रियाका अवलोकन तो करना ही पड़ता है न? साधकको कुछ समय शान्त होकर बैठनेमें बितानेकी जरूरत रहती है या नहीं? या सिर्फ कर्मसे ही मामला हल हो जाता है? बुद्ध भगवानने प्रवृत्ति-निवृत्तिकी मिलावट अिसी कारण खोज निकाली। आपने कर्मयोगको ही राजमार्ग बताया है। मगर क्या सिर्फ अिसीसे मनुष्य आत्माकी क्रियाको समझ जाता है?"

बापूने लिखा — "यह कहना मुझे ठीक नहीं मालूम होता कि अैसा क्रम है कि मनुष्य कुछ समय निकम्मे विचार करनेमें बिताता है। अगर अिसमें अेक भी अपवाद हो, तो यह नहीं कह सकते कि यह नियम है। और अपवाद तो हमें बहुतसे नजर आते हैं। अितना सही है कि अनगिनत लोग तरह तरहके मन्सूबे करते हैं, यानी बेकार विचार किया करते हैं। अैसा न हो तो अेकाग्रता वगैरा पर जो जोर दिया जाता है, अुसकी जरूरत ही न हो। हमारे लिअे अभी जो चीज कामकी है, वह यह है : हम खुद तरह तरहके घोड़े दौड़ाते

हैं, अनेक प्रकारके विचार करते हैं। अुनमेंसे बहुत तो याद भी नहीं रहते। वह सब विचारोंका व्यभिचार कहलाता है। जैसे मामूली व्यभिचारसे अिन्सान अपने शरीरकी ताकतको बर्बाद करता है, वैसे ही विचारोंके व्यभिचारसे मानसिक शक्तिका नाश करता है। और जैसे शारीरिक कमजोरीका मन पर असर पड़ता है, वैसे ही मनकी अशक्तिका असर शरीर पर होता है। अिसीलिअे मैंने ब्रह्मचर्यकी व्यापक व्याख्या करके निरर्थक विचारोंको भी ब्रह्मचर्यका भंग ही माना है। ब्रह्मचर्यकी संकुचित व्याख्या करके हमने अुसे ज्यादा मुश्किल चीज बना दिया है। व्यापक व्याख्याको मानकर हम अिन्द्रिय मात्रका, ग्यारहों अिन्द्रियोंका संयम करें, तो अेक अिन्द्रियको काबूमें रखना मुकाबलेमें बहुत ही आसान हो जाता है। तुम भीतर भीतर अैसा मानते दीखते हो: बाह्य कर्म करनेमें आन्तरिक शुद्धिका अवलोकन रह जाता है या कम होता है। मेरा अनुभव अिससे बिलकुल अुलटा है। बाहरी काम भीतरी शुद्धिके बिना निष्काम भावसे हो ही नहीं सकता। अिसलिअे ज्यादातर आन्तरिक शुद्धिका हिसाब बाह्य कर्मकी शुद्धिसे ही लगाया जाता है। जो बाह्य कर्मके बिना भीतरी शुद्धि करने लगेगा, अुसे भुलावेमें पड़ जानेका पूरा डर रहता है। अिस तरहके अुदाहरण मैंने बहुत देखे हैं। अेक मामूली मिसाल ही देता हूँ। मैंने देखा है कि जेलमें बहुत साथियोंने तरह तरहके अच्छे निश्चय किये। मैंने यह भी देखा है कि बाहर निकलने पर वे निश्चय पहले ही सपाटेमें खतम हो गये। जेलमें तो अुन्होंने यही मान लिया था कि अुनका निश्चय कभी नहीं बदलेगा, भीतरी शुद्धि पूरी हो गयी है, अवलोकन शान्तिसे हुआ है और प्रार्थनामें अेकाग्रता आ गयी है। मगर चारदीवारीसे निकलते ही यह सब काफूर होते मैंने देखा है। गीताजीके तीसरे अध्यायका पाँचवा श्लोक बहुत ही चमत्कारिक है। भौतिकशास्त्री बता चुके हैं कि अिसमें बताया हुआ सिद्धान्त सर्वव्यापक है। अिसका अर्थ यह है कि कोअी भी आदमी अेक क्षण भी कर्म किये बिना नहीं रह सकता। कर्मका अर्थ है गति, और यह नियम जड़-चेतन सबके लिअे लागू है। मनुष्य अिस नियम पर निष्काम भावसे चलता है, तो यही अुसका ज्ञान और यही अुसकी विशेषता है। अिसीकी पूर्तिमें अीशोपनिषद्के दो मन्त्र हैं, वे भी अितने ही चमत्कारी हैं। बुद्ध भगवानकी आलोचना मेरे जैसा क्या करेगा? और मैं तो अुनका पुजारी हूँ। मगर रचना बुद्ध भगवानने की थी या अुनके पीछेवालोंने? कुछ भी हुआ हो, मगर जो संघ बने वे अिस सर्वव्यापक नियमके अनुसार जड़वत् हो गये और अन्तमें आलसीके नामसे मशहूर हुअे। आज भी सीलोनमें, ब्रह्मदेशमें और तिब्बतमें बौद्ध साधु ज्ञानहीन और आलस्यके ही पुतले पाये जाते हैं। हिन्दुस्तानमें भी संन्यासी नामसे पुकारे जानेवाले साधु

चमकते हुअे नजर नहीं आते । अिससे मुझे अैसा ही लगता है कि सच्ची और शाश्वत चित्त शुद्धि मनुष्य कर्म करते करते ही कर सकता है । फिर गीताका वचन अुद्धृत करनेकी जीमें आती है । चौथे अध्यायके अठारहवें श्लोकका अर्थ यह है कि जो कर्ममें अकर्म और अकर्ममें कर्म देखता है वही बुद्धिमान है, वही योगी है, वही पूरा कर्मी है । मगर यह तो मैंने अपने अनुभवकी बात लिखी । गीताके श्लोक अिसलिअे अुद्धृत किये हैं कि अिनमें जो शिक्षा भरी है वही मेरे अनुभवमें आयी है । जिन शास्त्रवचनोंको मैंने अनुभवसे नहीं परखा है, अुन्हें मैं अुद्धृत नहीं करता । मेरे अनुभवके विरुद्ध दूसरोंका अनुभव हो सकता है, और वे शायद गीतामेंसे विरोधी वचन भी अुद्धृत कर सकते हैं । और मैं जो श्लोक अुद्धृत करता हूँ, संभव है अुन्हीं श्लोकोंको दूसरे लोग दूसरा अर्थ करके अपने अनुभवके समर्थनमें अुद्धृत कर सकें । अिसलिअे मेरा अनुभव मान लेनेके बारेमें मुझे किसी तरहका आग्रह हो ही नहीं सकता ।"

*　　　　*　　　　*

बापूने कहा कि अुपवासके बारेमें कोअी शंका हो तो पूछ लेना । वल्लभभाअी कहने लगे — "यह घटना घट जानेके बाद सब कुछ समझमें आ जायगा । आज भले ही समझमें न आता हो । और आज आपसे बहस करके क्या लेना है ? जो होना था सो हो चुका । मेरा कहना माना होता, तो यह निर्णय न आता । आपने वह पत्र लिखा, अिसलिअे अैसा फैसला दिया ! यहाँ तो सब अैसे ही हैं कि आप किसी तरह चल बसें तो पिण्ड छूटे ।"

*　　　　*　　　　*

रातको कभी कभी बरसात आ जाती है तब खाट अुठाकर बरामदेमें लाना भारी पड़ता है । अिसलिअे बापूने मेजरसे हलकी खाट माँगी । वह कहने लगा कि "नारियलकी रस्सीकी चारपाअी है, क्या अुससे काम चलेगा ?" बापूने कहा — "हाँ ।" मेजर बोला — "आप कहें तो नारियलकी रस्सी निकलवाकर अुस पर निवाड़ बुनवा दी जाय ।" शामको खाट आयी । बापू कहने लगे — "यह मुझे पसन्द है, अिसपर निवाड़ चढ़ानेकी कोअी जरूरत ही नहीं । मेरा बिस्तर आज अिसी पर करना ।" वल्लभभाअी कहने लगे — "क्या कहा ? अिस पर भी सोते होंगे ? गद्देमें नारियलके बाल क्या कम हैं, जो नारियलकी रस्सी पर सोना है ?"

बापू — "लेकिन देखिये तो, यह खाट कितनी साफ रह सकती है ?"

वल्लभभाअी — "आप भी खूब हैं ! अिस पर तो चारों कोनों पर नारियल बाँधना बाकी है । अैसी बदशगुन खाटसे काम नहीं चलेगा । अिस पर कल निवाड़ भरवा दूँगा ।"

बापू — “ नहीं, वल्लभभाअी, निवाड़में धूल भर जाती है, निवाड़ धुलती नहीं; अिस पर पानी अुँड़ेला कि साफ ।”

वल्लभभाअी — “ निवाड़ धोबीको दी कि दूसरे दिन धुलकर आअी ।”

बापू — “ मगर यह रस्सी निकालनी नहीं पड़ती, यों ही धुल सकती है।”

मैं — “ हाँ बापू, यह तो गरम पानीसे धोअी जा सकती है और अिसमें खटमल भी नहीं रह सकते ।”

वल्लभभाअी — “ चलो, अब तुमने भी राय दे दी । अिस खाटमें तो पिस्सू खटमल अितने होते हैं कि पूछिये नहीं ।”

बापू — “ मैं तो अिसी पर सोअूँगा । भले ही आप अैसी न मँगावें । मेरे यहाँ तो मुझे याद है बचपनमें अैसी ही खाटें काममें लेते थे । मेरी माँ अिन पर अदरक छीलती थी ।”

मैं — “ यह क्या ? यह तो मैं नहीं समझा ।”

बापू — “ अदरकका अचार डालना होता, तो अदरक को चाकूसे साफ न करके खाट पर घिसते, जिससे छिल्के सब साफ हो जाते।”

वल्लभभाअी — “ अिसी तरह अिन मुट्ठी भर हड्डियों परसे चमड़ी अुघड़ जायगी । अिसीलिअे कहता हूँ कि निवाड़ लगवा लीजिये ।”

बापू — “ और निवाड़ तो बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम जैसी हो जायगी । अिस खाट पर निवाड़ शोभा नहीं देगी; अिस पर तो नारियलकी रस्सी ही अच्छी लगेगी । और पानी डालते ही बिलकुल धुल जाय, जैसे कपड़े धुल जाते हैं । यह कितना आराम है ! और रस्सी कभी सड़ेगी नहीं !”

वल्लभभाअी कहने लगे — “ खैर, मेरा कहना न मानें तो आपकी मरज़ी ।” खाट बरामदेसे नीचे लाअी गयी । नीचे लानेके बाद वल्लभभाअीने कहा — “ परन्तु बरसात आ गयी तो ?”

बापू — “ तो अूपर ले लेंगे ।” वल्लभभाअी — “ ततो दुःखतरं नु किम् ?” बापू — “यह तो मैं जानता ही था कि आप अिस श्लोकका अुपयोग करनेके लिअे ही यह सवाल पूछ रहे हैं ।”

आज जन्माष्टमी है, अिसलिअे जुलूस नहीं आया । जेलकी छुट्टी है ।

२४-८-’३२

आज बापू कहने लगे — “ अब तुम तैयार रहना, भला । निकालना होगा तो यों समझो कि समय आ ही गया है।”

मैने कहा — “यह साँप छछूँदर वाली बात हो गयी । आपको भीतर रखकर अुपवास कराना तो मुश्किल है ही । बाहर रखकर अुपवास कराना भी कठिन है ।” वल्लभभाअी — “ मगर अिन लोगोंके लिअे तो

अुपवासका होना ही मुश्किल बात है! अुन्हें अन्त तक लड़ लेना है, अिसलिअे अिस बार कुछ भी करनेमें पीछे मुड़कर नहीं देखेंगे। मरना हो तो भले ही मर जाय, देख लेंगे।"

बापूका काम तो वैसे ही धूम धड़ाकेसे चल रहा है जैसे कुछ हुआ ही न हो। आज छोटे बड़े पन्नोंके २२ पत्र हाथों ही लिखे। डाक चढ़ी हुअी तो कैसे बर्दाश्त हो? अिनमेंसे बहुत पत्र तो डॉ० मेहताके मरनेसे पैदा होने वाली परिस्थितिको हल करनेके सिलसिलेमें थे। मगर कोअी कोअी बच्चोंके नाम भी थे। विलायतमें अेस्थर मेनन रहती हैं। अुनकी सात आठ वर्षकी लड़कीने पत्र लिखा था। अुसके साथ अुसकी अंग्रेज़ सहेलियोंने पत्र लिखे। अेक चार बरसकी सहेलीने लिखा कि "मेरी माँ कहती है कि आप बहुत अच्छे आदमी हैं, अिसलिअे हम पत्र लिखते हैं। आप हमें लिखिये।" दूसरीने लिखा — "हम लड़ाअी रोकनेके लिअे काम करती हैं, और दीवार-चित्र बनाती हैं। अिश्वर आपका भला करे।" अिन्हें बापूने लिखा (अिसमें भी बापूका रातदिन चलनेवाला अहिंसाका प्रचार तो था ही):

"My Dear Little Friends,

"I was delighted to have your sweet notes with funny drawings made by you. You *do not mind* my sending one note for all of you. After all you are all one in mind, though not in body. Yes, it is little children like you who will stop all war. This means that you never quarrel with other boys and girls or among yourselves. You cannot stop big wars, if you carry on little wars yourselves. How I wish I was there to celebrate Nani's and Amma's birthday. May God bless you all. My kisses to you all, if you will let me kiss you and Nani will pass on my love to Esther. Won't she?"

"प्रिय बालमित्रो,

"तुम्हारे मीठे पत्र और मज़ेदार चित्र देखकर मुझे बड़ा आनंद हुआ। मैं तुम सबको अेक ही पत्र लिखूँ तो कोअी हर्ज तो नहीं? तुम्हारे शरीर अलग अलग हैं, पर मनसे तो तुम सब अेक ही हो। यह बात सच है कि तुम्हारे जैसे छोटे बच्चे ही युद्धको बिलकुल बन्द कर सकेंगे। अिसका अर्थ यह है कि तुम्हें आपसमें या दूसरे बच्चोंसे तो हरगिज़ न लड़ना चाहिये। तुम आपसकी छोटी छोटी लड़ाअियाँ बन्द न कर सको, तो बड़ी लड़ाअियाँ कैसे बन्द कर सकोगी? मेरे जीमें आती है कि नेनी और अम्माके जन्मदिनके अुत्सवमें मैं वहाँ

होता, तो कितना अच्छा होता। अीश्वर तुम सबका भला करे। तुम सबको मेरा चुम्बन, अगर करने दो तो। और नेनी अेस्थरको मेरा प्यार पहुँचा दे। क्यों, पहुँचायेगी न!"

२५–८–'३२ आज बापू कहने लगे: "सरकार मुझे विषम स्थितिमें डाल जरूर सकती है। ये लोग मुझे कोअी भी कारण बताये बिना २० तारीखसे पहले ही छोड़ दें और फिर मुझे जो कुछ करना हो करने दें! मुझे लगता है कि यदि २० तारीखसे कुछ दिन पहले छोड़ दें, तो २० तारीखको अुपवास करनेके बजाय मैं आन्दोलन चलाअूँ और बंगालमें भी जाअूँ। पर संभव है कि २० तारीखसे पहले छोड़ें तो भी अुपवास करना ज्योंका त्यों रहे। कुछ भी हो, हमें अिसी सप्ताह कुछ न कुछ खबर मिल जानी चाहिये।"

जरा ठहर कर कहने लगे — "कुछ भी हो। ये मुझे भले ही विषम स्थितिमें डालना चाहते हों, मगर अुनके पासे अुल्टे ही पड़ेंगे और हमारे सीधे पड़ेंगे।"

२६–८–'३२ कल ही बापूने कहा था अुसके अनुसार आज सवेरे डोअीलने बापूको बुलवाया, दाँतोंकी बात की और कहा कि अच्छे दाँत लगवाने चाहियें। यह आदमी धीरजवाला और अच्छा है। कहने लगा — "मैं चाहता हूँ कि आप ये दाँत बहुत वर्षों तक काममें लें।" काकाके समाचार सुनाये। अुन्हें कपड़े वगैरा सब मिलते हैं, खानेको भी मिलता है। और यह खबर भी दी कि कल यहाँसे गुजरे और आज अहमदाबादमें होंगे। बापूसे आग्रह किया कि अुनकी पीठके दर्दके लिअे आप अुनसे चरखा छुड़वाअिये। बादमें अुपवासकी बात निकली या निकाली। यह भी कहा कि मैं डोअीलकी हैसियतसे कह रहा हूँ, सरकारकी तरफसे नहीं। क्या अिसपर फिरसे विचार नहीं किया जा सकता? सरकारके साथ पत्रव्यवहार करके शंकास्पद मुद्दे समझ लीजिये। बापूने कहा — "सरकारने रास्ता ही नहीं छोड़ा। मैंने अुसे छह महीने पहले सूचना दी थी।" वह बोला — "कानूनसे अिसमें कुछ फेरबदल कराया जा सकता है, मगर अैसा तेज कदम अुठाकर हमें भी मुश्किलमें क्यों डाल रहे हैं? मैंने आपका तार अुसी दिन शामको पहुँचा दिया था और आपको यह खबर देता हूँ कि सारा पत्र दूसरे दिन तारसे विलायत भेज दिया गया था।" बापूने कहा — "आज सदा से ज्यादा मिठासके साथ बातें करता था: 'आपको जिस मामलेमें भी मुझे लिखना हो लिखियेगा'। वगैरा वगैरा। शायद अुसका खयाल होगा कि अब कितने दिन रह गये हैं, अिसलिअे अितनी मिठास दिखाअी होगी!" यह कह कर बापू हँसे।

सिविल सर्जनके बारेमें कहने लगे — "अिस आदमीको हमने घुन्ना समझ लिया था, मगर अैसा नहीं है। आदमी अच्छा मालूम हुआ। अुसकी आखें मैं बहुत देर तक देखता रहा, अुनमें मुझे भलमनसाहत दिखाअी दी। डोअील भी भला तो अितना ही है, मगर बातूनी है। यह आदमी बातूनी नहीं लगा। अुसकी बातें — बीमारोंके बारेमें, यहाँके लोगोंके दाँतोंमें ८०फी सदी पायरिया होने और अुत्तरमें वह न होनेका कारण .खुराक है, वगैरा; यहाँके लड़कोंका पुस्तक ज्ञान बहुत होता है, मगर प्रत्यक्ष कार्यमें शून्य होते हैं; यदि प्रसूतिका केस हो गया तो बच्चा हो जानेके बाद फिर जच्चाको वापस देखने ही नहीं जाते। फिर कहने लगा, मगर अिन लड़कोंकी कैसी मुश्किल है? हम छुटपनसे ग्रीक लेटिन जानते हैं, सारे शब्द परिचित-से होते हैं। अिन लड़कोंको पग पग पर कोश देखना पड़ता है और याद रखना कितना मुश्किल है।"

२७–८–'३२ आज बापूने बा और काकाके नामके पत्र मेजरको अडवानीके पास भेजनेको दिये। बा की बात निकलने पर बापूने कहा — "सुना है कि अुसका वजन १६ पौण्ड घट गया है। मगर अिसमें अतिशयोक्ति है, क्योंकि अैसा हो तो वह हाड़पिंजर बन जाय।" मेजरने कहा — "यह बात सच होगी, क्योंकि अडवानीने मेजर डोअीलको लिखा था कि अुनका वजन घटता जा रहा है और मैं मक्खन ज्यादा देनेका आग्रह कर रहा हूँ, मगर वे लेनेसे बिलकुल अिनकार करती हैं। अिस पर डोअीलने लिखा कि न लें तो जबरदस्ती थोड़े ही दे सकोगे? तुम्हें डॉक्टरकी हैसियतसे जो कुछ करना अुचित है, वही करो।"

सुपरिण्टेण्डेण्टने कहा कि हमें दूसरे नम्बरका अनाज लेनेका हुक्म है मगर मैं पहले नम्बरका ही लेता हूँ, क्योंकि आखिर तो दूसरे नम्बरका अनाज महँगा पड़ता है, कैदियोंका स्वास्थ्य बिगड़ता है और दवामें खर्च होता है।

घुड़दौड़के बारेमें बापूने अेक बार कुछ दिन पहले सुपरिण्टेण्डेण्टको भाषण दिया था। अुसने बचावमें मिताचारकी दलील दी थी। बापूने कहा था कि हमने पश्चिमके दुर्गुणोंकी ही नकल करना सीखा है। अिसने कितने कुटुम्ब बर्बाद कर दिये हैं, यह हम सोचते ही नहीं। अितने पर भी कल फिर सुपरिण्टेण्डेण्ट मजेसे अिसीकी बात कर रहा था। फलाँने अितना खोया, फलाँने अपनी साख गँवा दी, फलाँने सारी जायदाद खो दी, वगैरा वगैरा। तो भी खुद तो 'मर्यादामें ही खेलता है! और अिसमें बड़ा मजा आता है।'

कल . . . . बहनने . . . . के साथ शादी करनेका पत्र भेजा था और हम तीनोंके आशीर्वाद माँगे थे। बापूने तीनोंकी

२८-८-'३२

तरफसे आशीर्वाद भेजते हुअे लिखा — "तुमको और . . . को हम तीनोंके आशीर्वाद हैं। हमें आशा है कि तुम्हारा युक्त जीवन सुखी होगा; तुम दोनोंको पूरी आयु प्राप्त होगी और हमेशा सेवा-परायण रहोगे। तभी तुम्हारा सम्बन्ध अुचित और सफल माना जायगा।" पतिके जीतेजी हिन्दू स्त्रीको विवाह करनेकी अिजाजत बापूकी तरफसे दी जानेका और हिन्दू समाजमें अैसी घटना होनेका यह पहला ही मौका है।

मिस अेलिजाबेथ हावर्डने अेक फेलोशिप (भाअीचारा) सभाका वर्णन भेजा था। अुसे लिखा :

"This fellowship is a difficult thing. It can come only through constant practice in all walks of life and among all the different races and nationalities."

"भाअीचारा कठिन वस्तु है। जीवनके तमाम क्षेत्रोंमें और अलग अलग जातियों और राष्ट्रोंके बीच भाअीचारा रखनेकी हमेशा कोशिश हो तभी यह कायम हो सकता है।"

आश्रमकी सारी डाक आज बापूने दोपहर होते होते पूरी कर ली थी। (फिर भी ५४ पत्र थे!)

लड़के लड़कियोंके पत्रमेंसे — "आश्रममें जो कुछ सीखनेको मिल रहा रहा है, अुसे अच्छी तरह सीख लो। बड़ीसे बड़ा शिक्षा सत्यकी है यह याद रखना।"

विद्रोहके बीज तो जहाँ तहाँ बोये ही जाते हैं। देखिये यह पत्र :

"जिसके साथ सगाअी हुअी है, अुसका अितिहास जान लेना चाहिये। पसन्द न हो तो सगाअी छोड़नेके लिअे कह दो। शादी करनेसे साफ अिनकार करनेमें संकोच नहीं करना चाहिये। मगर तुम्हें यह सब करना हो तो झूठी शर्म छोड़ देनी चाहिये। विनय न छोड़ना चाहिये, और दुःख पड़े तो अुसे सहनेके लिअे तैयार रहना चाहिये। अैसा करनेवालेकी पवित्रता अैसी होनी चाहिये कि अुसका असर पड़े बिना रह ही नहीं सकता।"

"गुस्सा आये तब चुप हो जाना और रामनाम लेकर अुसे निकाल देना चाहिये।"

वल्लभभाअीके लिफाफोंकी और संस्कृतकी पढ़ाअीकी तारीफ हर पत्रमें करते हैं। कल काकाके खतमें लिखा था कि "अुच्चैःश्रवाकी गतिसे

वल्लभभाओकी पढ़ाअी चल रही है।" आज प्यारेलालको लिखा — "वल्लभभाअी अरबी घोड़ेकी तेजीसे दौड़ रहे हैं। संस्कृतकी किताब हाथसे छूटती ही नहीं। अिसकी मुझे आशा नहीं थी! लिफाफोंमें तो कोअी अुनकी बराबरी नहीं कर सकता। लिफाफे वे नापे बिना बनाते हैं और अन्दाजसे काटते हैं, मगर बराबरके निकलते हैं और फिर भी अैसा नहीं लगता कि अिसमें बहुत समय लगता हो। अुनकी व्यवस्था आश्चर्यजनक है। जो कुछ करना हो अुसे याद रखनेके लिअे छोड़ते ही नहीं। जैसे आया वैसे ही कर डाला। कातना जबसे शुरू किया है, तबसे बराबर समय पर कातते हैं। अिस तरह सूतमें और गतिमें रोज सुधार होता जा रहा है। हाथमें लिया हुआ भूल जानेकी बात तो शायद ही होती है। और जहाँ अितनी व्यवस्था हो, वहाँ धाँधली तो हो ही कैसे?"

लड़कियोंका शिक्षण आजकल बापूने अपने हाथमें लिया है। . . . ने लिखा — "आपका पत्र पढ़नेके बाद मैंने अखण्ड ब्रह्मचर्यका व्रत लेनेका निश्चय किया है।" अुसे लिखा — "तू अखण्ड कुमारी रह सके तो मुझे जरूर अच्छा लगे। मगर मैंने बहुतसे लड़कों और लड़कियोंको अपने आपको धोखा देते देखा है। जिसे पूर्ण ब्रह्मचर्य पालना है, अुसमें पूर्ण सत्य चाहिये और वह कोअी चीज छिपावे नहीं। और ब्रह्मचर्य क्या है, अिसका पूरा ज्ञान होना चाहिये। विकारोंको काबूमें रखना बड़ी बात है। जो अैसा करना चाहता है, अुसे सभी भोगोंका त्याग करना चाहिये। यानी वह जो कुछ करता है वह भोगके लिअे नहीं करता, बल्कि जरूरी समझकर करता है। और अिसलिअे जो जरूरी नहीं है वह नहीं करता। अुसकी खाने-पीने, अुठने-बैठने और पहनने-ओढ़नेकी सारी क्रियायें अिसी तरह होती हैं। यह सब करनेकी तुझमें शक्ति हो, तो बहुत अच्छा। न हो तो नम्रताके साथ मान लेना चाहिये, और जैसा असंख्य लड़कियाँ करती हैं वैसा ही तुझे भी करना चाहिये। अुसमें कोअी दोष नहीं माना जायगा। शक्तिके बाहर कुछ नहीं हो सकता।"

. . . को प्रार्थनाके मौनके बारेमें लिखा — "प्रार्थनामें शामके लिअे पाँच मिनिटकी सूचना मेरी थी। दोनों ही वक्त अितना मौन रखा जाय तो जरूर बेहतर है। सब अिसमें दिल लगाकर शामिल हों, तो शोर जरूर बन्द हो जाय। बच्चोंमें भी अितना समय बचानेकी आदत पड़े। मैं तो अैसी सभामें भी गया हूँ, जहाँ आधे घण्टे तक मौन रखा जाता है। यह विलायतकी बात है। हमारे यहाँ मौनकी बड़ी महिमा है। समाधि मौन ही है। मुनि शब्द भी अिसीसे निकलता है। मौनके समय पहले पहल नींद आती है और तरह तरहके विचार आते हैं, यह सब सच है। अिसे दूर करनेके लिअे ही मौनकी जरूरत है। हमें बहुत बोलने और आवाजें सुननेकी आदत पड़

गयी है। अिसलिअे मौन कठिन लगता है। थोड़े अभ्याससे वह अच्छा लगने लगेगा, और अच्छा लगनेके बाद अुससे जो शान्ति मिलेगी वह अलौकिक होगी। हम सत्यके पुजारी हैं, अिसलिअे हमें मौनका अर्थ जानकर अुस अर्थके अनुसार ही मौन पालनेकी कोशिश करनी चाहिये। मौनमें भी राम नाम तो रटते ही रहें। असल बात यह है कि हमारा मन मौनके लिअे तैयार होना चाहिये। जरा विचार करनेसे अुसका महत्व समझमें आ सकता है। क्या समूहमें पाँच मिनिट तक स्थिर बैठना हमें नहीं आ सकता? तुम कभी नाटकमें गये हो? बहुतसी नाटकशालाओंमें बातें करनेकी मनाही होती है। मेरे जैसे रसिया घण्टे भर पहले ही जा बैठते हैं। नाटकका शौक अेक घण्टेका मौन रखवाता है। मगर अितना ही काफी नहीं होता। नाटक तो चार पाँच घण्टे तक होता है। अिस सारे समयमें देखनेवालोंको मौन ही रखना पड़ता है। मगर वह अच्छा लगता है। वह मनके अनुकूल है, अिसलिअे मौन कठिन नहीं लगता। तो फिर क्या अीश्वरकी खातिर पाँच मिनिटका मौन भारी लगना चाहिये? अिस विचारश्रेणीमें भूल हो तो बताओ, और भूल न हो तो रसके साथ मौन धारण करो और अुसका विरोध करनेवालोंके सामने मेरी ओरसे वकालत करो।

"यह भी न मानो कि हममें हों सिर्फ वे दोष ही सहन किये जाने योग्य हैं। मेरी राय तो अैसी है कि जो सुधरनेकी कोशिश करनेवाले हों, अुन सबका संग्रह किया जाय। जो अपने दोषोंका पुजारी है यानी दोषोंको गुण समझता है, अुससे तो अीश्वर भी दूर भागता है। तुलसीदासजी हमें यही सिखाते हैं।"

परशरामका पत्र पढ़ते पढ़ते अितने हँसे कि पत्र आगे पढ़ ही न सके। बाकीका मुझे पढ़कर सुनाना पड़ा। अुन्हें लिखा —"तुम्हारी ९ पन्नेकी छोटी सी पुस्तक पढ़कर मैं तो हँसीके मारे लोटपोट हो गया। अैसा याद है कि अितना तो अेक दिन जवानीमें भाँग पी ली थी तब हँसा था।"

अिसी पत्रमें लिखा —"महाभारतमें अर्जुन मात हो जाता है और अन्तमें कोअी बचता नहीं, यह वर्णन देकर महाभारतकारने शस्त्रयुद्धकी मूर्खता साबित की है। गीतामें भगवानने अपना वर्णन किया है, यानी गीताकारने भगवानके मुँहमें अैसा वर्णन रख दिया है। वैसे, भगवान तो अरूप हैं, बोलते चालते नहीं। तब यह प्रश्न रह जाता है कि भगवानके मुँहमें अैसे वचन रखे जा सकते हैं या नहीं? मेरा खयाल है जरूर रखे जा सकते हैं। भगवानका मतलब है सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ। सर्वज्ञके मुँहसे जो बात निकलती है वह केवल सत्य ही होती है, अिसलिअे वह बड़ाअीमें नहीं शुमार होती। मनुष्य अपनी शक्तिका हिसाब नहीं लगा सकता, अिसलिअे अुसके मुँहसे वह बात शोभा नहीं देती। मगर सवाल पैदा होने पर कोअी आदमी अपनी अूँचाअी

सच सच बता दे तो अिसमें बड़प्पन नहीं, सचाअी है। पाँच गज अूँचा अपनेको चार गज बताये तो अिसमें नम्रता नहीं, घोर अज्ञान है या फिर दंभ है।"

. . . के पत्रमें लिखा — "हमारी स्त्रियाँ निर्विकार होनेका गुण नहीं सीखतीं। अुन्हें पत्नी बनना आता है, बहन बनना नहीं आता। बहन बननेमें बड़ी त्यागवृत्तिकी जरूरत है। जो पत्नी बनती है वह पूरी तरह बहन बन ही नहीं सकती। यह मेरे खयालसे तो स्वयंसिद्ध है। सच्ची बहन सारी दुनियाकी बहन हो सकती है। पत्नी अपनेको अेक पुरुषके हवाले कर देती है। पत्नीके गुणोंकी जरूरत है, मगर वे सीखने नहीं पड़ते; क्योंकि अुनमें विकारोंको शान्ति मिलनेकी गुँजायश है। जगत्‌की बहन बननेका गुण मुश्किलसे आता है। जगत्‌की बहन तो वही बन सकती है, जिसमें ब्रह्मचर्य स्वाभाविक बन गया हो और सेवाभाव बहुत अूँचे दर्जे तक पहुँच गया हो।"

कभी कभी अच्छे माँबापके बच्चे खराब और खराबके अच्छे होते हैं, अिसका कारण क्या है? अिस सवालका जवाब . . . के पत्रमें दिया — "अच्छे संस्कारोंवाले माँ-बापकी जाँच कौन कर सकता है? जब गर्भ रहा तब माँबापकी क्या हालत थी यह कौन कह सकता है? अिससे मेरा खयाल है कि अच्छोंका फल अच्छा ही होता है, अिस नियमको निरपवाद रूपमें मानते रहनेमें ही सार है। हर वक्त अिस नियमको किसी खास व्यक्तिके बारेमें साबित न कर सकें तो अिसमें हमारा अज्ञान हो सकता है, नियमकी अपूर्णता नहीं हो सकती।"

दो और प्रश्नोंका अुत्तर — "दैवको मैं मानूँ तो भी वह गलत नहीं साबित किया जा सकता। दैवका अर्थ है पूर्व कर्मका असर।"

"वेश्याओंका अुद्धार करनेके लिअे पुरुषोंको पशु बननेसे परहेज करना होगा। जब तक पुरुषके रूपमें हैवान दुनियामें विचरेंगे, तब तक वेश्यायें भी रहेंगी ही। वेश्या अपना पेशा छोड़ दे और सुधर जाय, तो कुलीन कहलानेवाले लोग अुससे जरूर ब्याह कर लें। अेक बार वेश्या हुअी तो सदा ही वेश्या रहेगी, अैसा नियम नहीं है।"

अिस बारका लेख था 'विचारपूर्ण कार्य और विचार रहित कार्य'। अिसमें पाखानोंकी सफाअीका रहस्य विलक्षण ढंगसे समझाया और समझाया कि यह सबसे अच्छा सेवाका काम कैसे हो सकता है।

२९-८-'३२

हीरालालको अेक पत्रमें बापूने खगोलके अध्ययनके बारेमें लिखा। अुसमें कुछ अैसा ही भाव था — "मैं अपनेको मन्दबुद्धि मानता हूँ। बहुतसी बातें समझनेमे मुझे औरोंसे ज्यादा देर लगती है। परन्तु अिसकी मुझे चिन्ता नहीं। बुद्धिके विकासकी सीमा होती है। हृदयके विकासका अन्त ही नहीं।" अिस पत्रकी नकल करना रह गया।

कान्ति अेक पत्र बापूके लिअे मेजरको दे गया था। बापुको न देकर अुन्होंने अुसे आअी० जी० के पास भेज दिया। हम

३०-८-'३२ सबको यह बुरा लगा। अगर नहीं देना था तो न देते, मगर वहाँ किस लिअे भेजा? अिसमें किसीकी सरकारके यहाँ भला बननेकी कोशिश हो सकती है या वीसापुरमें मिलनेवाली सुविधाओंके बारेमें खबर देकर किसी कर्मचारीसे वैर निकालनेकी वृत्ति हो सकती है। सुबह मेजरने आकर खुद कहा कि अिस पत्रमें कुछ भी आपत्तिजनक बात नहीं थी, मगर मुझे आअी० जी० कहता है कि मैंने कहीं भी कातनेका काम देनेकी मंजूरी नहीं दी है और कान्ति लिखता है कि वीसापुरमें ११०० आदमी कातते हैं। अिसलिअे मैंने अुससे पूछा है कि वीसापुरके लिअे मंजूरी हो, तो यहाँके लिअे अिजाजत क्यों नहीं देते? मेजरके जाते ही बापू कहने लगे — "मेजरके साथ अन्याय ही हुआ था न?" वल्लभभाअीने कहा — "मैं जो सोचता था वह सच निकला। अिसने यह कहा अिसलिअे वहाँ कातना बन्द करा देंगे।" बापूने कहा — "अिसने अिसलिअे नहीं लिखा। मैंने यह मानकर कि अिसने वहाँके किसी कर्मचारीके खिलाफ कोअी शिकायत भेजी होगी, अिसके प्रति अन्याय किया। अिसके लिअे मेरा दिल तो अिससे माफी माँग रहा है।" वल्लभभाअी — "खैर, मुझे तो अपना खयाल सही लगता है। अैसा जाना गया है कि जब जब दूसरी जेलमें यह मालूम हुआ है कि अेक जेलमें कोअी सुविधा मिल रही है और अुसकी जाँच हुअी, तभी वह सुविधा छीन ली गयी है।" बापू — "मगर यह माँग क्यों न की जाय कि सरकारी तौर पर यह सुविधा अेक जगह मिलती हो, तो दूसरी जगहों पर दी जानी चाहिये!" यह चर्चा काफी लम्बी चली। मगर सार यही है कि बापू जान या अनजानमें किसीके साथ अन्याय करते हैं, तो अुसकी माफी खुले या दिल ही दिलमें माँग ही लेते हैं।

अभी अुपवासके बारेमें कोअी खबर नहीं आयी। बापू कहने लगे — "अिन लोगोंके मदकी कोअी हद नहीं है। अिसलिअे अगर

३१-८-'३२ वे अिस पर कुछ भी ध्यान न दें तो मुझे आश्चर्य न होगा।" सी० पी० कहते हैं कि 'जब तक कांग्रेस कानून-भंग नहीं छोड़ती, तब तक अुसके साथ सुलह किस तरह हो सकती है?' और नरम दलवालोंका अिससे वास्ता क्या? नरम दलवाले तो कानून-भंगके विरुद्ध हैं।

जेराजाणीकी भतीजीका जेलमें पहुँचनेसे पहले अेस्प्लेनेड कोर्टसे लिखा हुआ पत्र आया — "बापू, आखिर मैं भी मन्दिरमें पहुँची। आज ही आपका

पत्र मिला था।" अदालतमें किसीसे कागजका टुकड़ा लेकर अुस पर लिखा था। बापू कहने लगे — "देखो, अब अिस पत्रको देखकर कौन कहेगा कि कांग्रेस मर गयी है?"

मिस विलकिन्सन, मिस व्हेटली, मेनन और मेटर्सका अभिनन्दन और प्रेमका अेक छोटासा सन्देश आया, जिसमें बताया है कि "आप विलायतमें अिण्डिया लीगके जिस छोटेसे शिष्ट मण्डलसे मिले थे, वह अभी अपना काम कर रहा है। हमें आपसे मिलनेकी अिजाजत नहीं मिल सकी, अिसलिअे यह पत्र लिख रहे हैं।"

मीराबहनके मौनवारके पत्र आर्थर रोडसे फिर नियमित आने लगे हैं। अिनमें अुन्होंने अपने खानेपीने, पहनने ओढ़ने और सोने बैठनेकी रत्ती रत्ती खबर दी है। अितना विश्वास, अितनी निष्ठा और अितनी वफादारी सबमें हो तो!

१-९-'३२ शिक्षाके बारेमें बापू अपने विचारोंका प्रचार अपने मण्डलमें करने लिअे कितने आतुर हैं अिसका अेक अुदाहरण लीजिये। मथुरादासके चि० दिलीपके शिक्षकको अिस प्रकार पत्र लिखा — "दिलीपसे मैंने आपका नाम माँगा था। हालाँ कि हम कभी मिले हों, अैसा मुझे याद नहीं है, फिर भी यह लिखनेकी हिम्मत कर रहा हूँ। बच्चोंकी शिक्षाके बारेमें मेरा हमेशा खयाल रहा है कि अुन्हें शुरूसे वर्णमाला सिखाकर हम अुनकी बुद्धिको रूँध देते हैं और अुनके अक्षर बिगाड़ देते हैं। मेरी राय है कि बच्चोंको वर्णमालाका ज्ञान करानेसे पहले जबानी बहुतसी जानकारी दे देनी चाहिये — अपने शहर या गाँवके अितिहास भूगोलसे लगाकर प्रान्तका, देशका और संसारका थोड़ा ज्ञान, सृष्टिसौन्दर्यका, आकाशका, पेड़पत्तोंका, जबानी हिसाबका, भूमितिका, साहित्यका यानी शुद्ध अुच्चारण, व्याकरण, काव्य और श्लोकों वगैराका ज्ञान करा देना चाहिये। अिनमेंसे अेकके लिअे भी पहले लिखना पढ़ना सीखनेकी बिलकुल जरूरत नहीं है। बच्चा लिखना सीखे अिससे पहले अुसे पढ़ना सिखाना चाहिये। लिखना आखिरमें सिखाया जाय। वर्णमाला लिखे अुससे पहले अुसे चित्र खींचना सिखाना चाहिये। सीधी लकीर, टेढ़ी लकीर, त्रिकोण वगैरा अच्छी तरह बनाने लगे, अुसके बाद अक्षरोंके भी चित्र ही बनाये। अिस ढंगसे काम लिया जाय तो बच्चोंको कष्ट न होगा और बहुत कुछ ज्ञान जबानी ही मिल जाय, और फिर वे अक्षर बनायें तो मोतीके दाने जैसे होंगे। 'दासबोध'में अक्षरों पर अेक प्रकरण है और वह पढ़ने और विचार करने लायक है। दिलीपके अक्षर देखकर यह लिखनेकी जीमें आअी है। अिसमेंसे जितना आपको लेने लायक लगे अुतना लेकर बाकीको

भूल जाअिये । मेरे बहुत खराब अक्षर मेरी रायका समर्थन करते हैं। मेरे अक्षर गलत शिक्षाका परिणाम हैं।"

डॉ० मेहताने लड़कियोंको आजकलके ढंगकी अूँची शिक्षा देनेका प्रयत्न किया था; पियानो बजाना सिखानेके लिअे शिक्षक रखे थे, वगैरा बातें कहीं। मैंने कहा — "यह आशा रखी जाती है न कि पियानो बजाना सीखनेवाला पियानो भी रखेगा?" बापू कहने लगे — "जरूर, और अुनकी कीमत चार पाँच हजार रुपये तो होती ही है।" दक्षिण अफ्रीकामें मणिलालके लिअे आये हुअे पियानोंकी अपनी बात कही — "अगर मणिलालने बेचा न हो तो वह पियानो अभी तक फिनिक्समें होना चाहिये। मैंने तो नहीं बेचा था। अुसने काम ठीक दिया था। प्रार्थनाके कअी भजन अिसमें निकाले जाते थे। केरान अुसे बजाता था और वेस्ट और रोयपन वगैरा सबने अुसका अुपयोग किया था। हुसैन 'है बहारे बाग दुनिया चंद रोज' अुस पर बजाता और गाता था और अुसका सुर अितना मीठा था कि यह कहना मुश्किल हो जाता था कि पियानो बज रहा है या हुसैन गा रहा है।"

२–९–'३२

आज डाह्याभाअी वल्लभभाअीसे मिल कर गये। अब नारणदासभाअीके पत्रके सिवा ज्यादातर पत्र बापू खुद ही लिख डालते हैं। दो तीन दिन पहले हीरालालको लिखा था — "मैं अपनेको मन्द बुद्धिवाला मानता हूँ।" अिस बातका आज . . . के पत्रमें ज्यादा विस्तार किया:

"यह माना जायगा कि मेरे जीवनमें बुद्धिका हाथ थोड़ा ही रहा है। मैं खुद अपनेको मन्दबुद्धि मानता हूँ। यह बात कि श्रद्धावानको बुद्धि भगवान दे देता है, मेरे बारेमें तो अक्षरशः सच निकली है। मुझमें बड़ों और ज्ञानियोंके लिअे हमेशा श्रद्धा और आदरका भाव रहा है। और मेरी सबसे अधिक श्रद्धा सत्यके प्रति रही है, अिसलिअे मेरा रास्ता हमेशा मुश्किल होने पर भी आसान लगा है।"

. . . को लिखा — "यह विश्वास रख कि कैसा भी राक्षसी आदमी चढ़ कर आ जाय तो भी अुसका मुकाबला करनेकी ताकत अीश्वर तुझे दे ही देगा। जरा भी डरना नहीं। अैसी नौबत आ जाय तब जितना जोर हो सब निकाल लेना। अिसका नाम हिंसा नहीं है। चूहा बिल्लीकी हिंसा कर ही नहीं सकता, मगर चूहा सोच ले तो बिल्ली अुसे जीते जी नहीं खा सकती। अिस तरहसे बिल्लीके मुँहसे निकल जानेवाला चूहा बिल्लीकी हिंसा नहीं करता। क्या यह समझमें आता है? यह याद रख कि व्यभिचारी पुरुष हमेशा कायर होता

है। वह पवित्र स्त्रीका तेज सह नहीं सकता। अुसकी चिल्लाहटसे वह काँप जाता है।"

. . . को लिखा — "अपने प्रियजनों पर अैसा प्रेम नहीं रखना चाहिये कि जिससे अुनके अेक अेक शब्दमें अुनके नाराज होनेकी ही गन्ध आती हो। हममें अितना आत्मविश्वास होना चाहिये कि प्रियजन हमसे नाराज होंगे ही नहीं। यह न होगा तो हम प्रियजनोंके साथ अन्याय करने लगेंगे।"

रैहानाने सुन्दर गजल भेजी है। अुसके अन्तमें यह है:

"जफ़र अुससे छूटके जो जस्त की,
तो ये देखा हमने कि वाकअी अेक कैद खुदीकी थी।
न क़फ़स था, न कोअी ज़ाल था।"

जफ़र कहता है कि अिससे छूटकर जो छलाँग मारी तो देखा कि सचमुच यह अहंकारकी कैद थी। यह कोअी पिंजरा या जाल नहीं था।

यह कितना ज्यादा सही है!

३-९-'३२

आज सेठ . . . का पत्र आया। अुसमें अपनी सम्पत्ति छोड़ देनेके बारेमें पिताको लिखे पत्रकी और पिताको सम्पत्ति बाँट देनेकी सूचना करनेवाले पत्रकी नक़लें साथ थीं। और जैसे कुछ भी न हुआ वैसे सिर्फ़ अेक लकीर लिखी थी कि "आशा रखता हूँ आपको यह पसन्द आयेगा। सन् २१ में जब आप हमारे यहाँ आये थे, तब मेरी आपसे अिस विषयमें बातचीत हुअी थी और आपकी अैसी ही सलाह थी।" पितापुत्रके पत्र हृदयद्रावक हैं और सारी चीज़ अेक बड़ा वीरकाव्य है। हिन्दुस्तानकी आज़ादीके अितिहासमें यह चीज़ अमर हो जायगी। प्रतिज्ञा पालनका यह अेक अनुपम दृष्टान्त है। . . . कहते हैं कि "मैं तुच्छ व्यक्ति हूँ, मगर प्रतिज्ञाका भंग जिन्दगीमें कभी नहीं किया। अभी तक प्रह्लाद जैसा सम्बंध रहा है। अब रामचंद्रकी तरह पिताकी आज्ञासे सर्वस्वका त्याग करता हूँ।" जेलसे निकलनेके बाद किसानोंको बुलाना, अुन सबसे हालचाल पूछना और पिताने लगान लिया है अिस कारण घरमें पैर न रखना यह बड़ी वीरोचित धर्मभावना सूचित करता है। अुन्हें बापूने हिन्दीमें पत्र लिखा — "आपका त्यागपत्र हृदयद्रावक है। पिताजीका भी अैसा है। मेरी राय है कि वे दूसरा कुछ नहीं कर सकते थे। मोह छूटना सामान्य वस्तु नहीं है। अिस युगमें नवयुवकोंमें जो त्यागशक्ति पैदा हुअी है अुसकी आशा वृद्धोंसे नहीं रख सकते हैं। आपने सर्वस्वका त्याग किया है वह अुचित ही किया है, अिसमें मुझे सन्देह नहीं है। '२१ सालकी बात मैं तो भूल गया था।

तो अिसमें पूरी तरह दया है और अुसके दिल पर भी अिसका असर पड़े बिना नहीं रह सकता।" अितना छोटासा किस्सा बापू और वल्लभभाअीकी मनोवृत्तियोंका भेद बतानेके लिअे काफी है।

आज 'संकट आने पर लड़कियाँ क्या करें' लेख लिखा और मुझे और वल्लभभाअीको ध्यानसे पढ़कर अुसमें कोअी बात चर्चा करने लायक हो तो चर्चा करनेको कहा। अिसमें ये सूचनायें थीं कि पवित्रताका भान रखनेवाली और अहिंसाको चाहनेवाली लड़कीको पुण्य प्रकोप प्रगट करके बदमाशके तमाचा जमा देना चाहिये और अिस तरह खुद जाग्रत होना और अुसके होश ठिकाने लाना चाहिये, अुसे शरमाना चाहिये और अगर वह न शरमाये तो मौतसे मिलनेको तैयार रहना चाहिये। तमाचा हिंसा नहीं है, बल्कि अुसे सावधान करनेवाला होनेके कारण अहिंसामय है। मेरी मुश्किल यह नहीं थी कि अिस तमाचेमें हिंसा है — मैं तो अिन हालातमें तमाचेसे भी सख्त अुपायोंको हिंसा नहीं मानता — मगर मेरी कठिनाअी यह है कि यह तमाचा किसी परिचित आदमी पर तो असर करेगा, वह शरमाकर पैरों पड़ जायगा। मगर क्या जालिम बसमें आयेगा? जालिम हाथ पैर बाँध दे और मुँहमें कपड़ा ठूँस कर अत्याचार करे तो? बापूने लिखा — "तब तुमने मेरा लेख नहीं समझा। मैंने तो यह सुझाया है कि तमाचा जाग्रत करता है, निर्भयता देता है और सबसे ज्यादा वह मरनेकी शक्ति देता है। जालिम अपने खयालसे अिस किस्मके व्यर्थके विरोधके लिअे तैयार ही नहीं होता। अिसलिअे अुसके हट जानेकी संभावना रहती है। मगर अिसे मैं गौण समझता हूँ। अुस स्त्रीमें जो जोश आ जाता है, वह मरनेके लिअे काफी है। वह जालिम अुसके साथ लड़े अुससे पहले तो वह कभीकी मौतके शरण पहुँच चुकी होगी। कारण वह तो मृतप्राय होकर ही जूझती है, वह प्रहार करनेका खयाल नहीं करती। अुसे तो सिर्फ रटन करना है। यह अुपाय सभी वातावरणोंके लिअे सुझाता हूँ, और जो पवित्र हैं और अहिंसाके जरिये ही अपनी रक्षा करना चाहती हैं, अुन बहनोंके लिअे है। यह लेख आपबीतीके आधार पर लिखा गया है। मैं जब अुस सलाखको पकड़े ही रहा तब मैंने मरनेकी तैयार कर ली थी। मारनेवालेको मैं चोट नहीं पहुँचा सकता था। मगर मेरा हाथ वहाँसे छूट जाता तो मैं तड़पड़ाता, शायद तमाचा मारता, शायद दाँतोंसे काटता, मगर मरते दम तक जूझता। अिस तरहसे जूझते रहने पर भी अुसमें हिंसा न होती क्योंकि मैं अुसे चोट पहुँचानेमें असमर्थ था और चोट पहुँचानेका अिरादा भी नहीं था। मेरा हेतु सिर्फ मरनेका और अुसकी गहराअीमें अुतरें तो मुक्ति पानेका था। अहिंसाकी यही परीक्षा है, अुसका हेतु दुःख पहुँचानेका नहीं होता और परिणाममें भी दुःख नहीं होता।"

मैंने कहा — "यह मैं समझता हूँ। परन्तु पवित्रसे पवित्र लड़की भी अेक तमाचेसे जालिमको काबूमें नहीं कर सकती, और कअी आदमी हों तो मजबूर हो जाती है।"

बापू — "मैं तो अिसे असंभव मानता ही हूँ। मगर मेडिकल ज्यूरिस्प्रुडेन्स (चिकित्सा-कानून) भी नामुमकिन समझता है। जब तक स्त्री 'रिलेक्स' नहीं करती (ढीली नहीं पड़ती), तब तक कामी पुरुष अपना काम पूरा नहीं कर सकता। मरनेके लिअे तैयार नहीं होती अिसलिअे स्त्री अिच्छा न होने पर भी 'रिलेक्स' करती है, अुदासीन हो जाती है और अिस तरह कामीके वशमें हो जाती है। जो जानको हथेली पर ले लेती है, वह या तो बन्धन तोड़ डालती है या अपनेको खतम कर डालती है। अितना जोर हर प्राणीमें है। बात यह है कि जीनेका लोभ अितना ज्यादा रहता है कि मनुष्य अितना जोर लगाता ही नहीं, जिससे मरनेकी नौबत आ जाय। जो स्त्री अितना जोर लगायेगी, वह अेक आदमीके विरुद्ध जूझनेमें पवित्रताकी भावनाओंसे भर जायगी और जूझनेमें अपनी पसलियाँ तोड़ डालेगी।"

मैंने कहा — "मगर अितने आत्मबलवाली स्त्रीको तमाचा मारनेकी बात सुझानेकी जरूरत नहीं है। अुसे तो कोअी न कोअी अुपाय सूझ ही जायगा।"

बापू — "यह सब तो मैं जब बोलूँ तभी समझाअूँ।"

अेक बहन श्रीमती सत्यवती चिदंबर अपनेको हिन्दुस्तानी अीसाअी बताकर लिखती हैं:

"You will be far greater if you accepted Him and tried to be a true Christian. It is for the sake of India you love that I plead with you to give Jesus a chance in your heart and in your life. Christ is waiting with outstretched arms to accept India. You cannot be an orthodox Hindu and follow the principles of Jesus as given in the Sermon on the Mount. Jesus is the only Savior of the world."

"आप अगर अीसाको स्वीकार करें और सच्चे अीसाअी बननेकी कोशिश करें तो जितने बड़े आप हैं अुससे ज्यादा बड़े बन जायँ। जिस हिन्दुस्तानको आप चाहते हैं, अुसीकी खातिर मैं आपसे अपने हृदय और जीवनमें अीसाको स्थान देनेकी अपील करती हूँ। अीसा तो हाथ फैलाकर हिन्दुस्तानको अपनानेके लिअे खड़े हैं। यह नहीं हो सकता कि आप सनातनी हिन्दू बने रहें और अीसाके गिरि-प्रवचनके सिद्धान्तों पर चल सकें। अेक अीसा ही दुनियाके तारनहार हैं।

अिन्हें बापूने सख्त पत्र लिखा :

Dear Sister,

"I have your letter. Why do you think that the truth lies only in believing in Jesus as you do? Again why do you think that an orthodox Hindu cannot follow out the precepts of the Sermon on the Mount? Are you sure of your knowledge of an orthodox Hindu? And then are you sure again that you know Jesus and His teachings? I admire your zeal but I cannot congratulate you upon your wisdom. My fortyfive years of prayer and meditation have not only left me without the assurance of the type you credit your self with, but have left me humbler than ever. The answer to my prayer is clear and emphatic that God is not encased in a safe to be approached only through a little hole bored in it, but that He is open to be approached through billions of openings by those who are humble and pure of heart. I invite you to step down from your pinnacle where you have left room for none but yousrelf. With love and prayer.

Yours,
M. K. G."

"प्यारी बहन,

आपका पत्र मिला। आप यह क्यों मानती हैं कि जिस ढंगसे आप अीसाको मानती हैं अुसी तरह माननेमें ही सत्य भरा है? और किस लिअे यह मानती हैं कि गिरिप्रवचनके सिद्धन्तोंको सनातनी हिन्दू पालन नहीं कर सकता? आपको यह विश्वास है कि आप सनातनी हिन्दूका अर्थ अच्छी तरह जानती हैं? अिससे भी आगे बढ़कर पूछता हूँ कि अीसा और अुनके अुपदेशोंके अर्थके बारेमें क्या आपको पूरा यक़ीन है? आपके अुत्साहकी मैं जरूर कदर करता हूँ। मगर आपके ज्ञानके बारेमें आपको बधाअी नहीं दे सकता। पैंतालीस सालकी प्रार्थना और चिन्तनसे मुझमें तो वह भरोसा पैदा नहीं हुआ है जैसा आपमें है। मैं तो पहलेसे ज्यादा नम्र बना हूँ। मेरी प्रार्थनाका मुझे तो साफ और जोरदार जवाब यह मिला है कि अीश्वर अैसी तिजोरीमें बन्द किया हुआ नहीं है, जिसमें किये हुअे अेक ही छोटेसे छेदमें से ही वह दिखाअी दे सकता हो। वह तो अैसा है जो नम्र और शुद्ध हृदयवालोंको करोड़ों द्वारोंसे दिखाअी दे सकता है। आप जिस शिखर पर बैठी हैं और जहाँ आपके सिवा

और किसीके खड़े रहनेकी गुंजायश नहीं है, वहाँसे अुतरनेकी मैं आपको सलाह देता हूँ । आपके लिअे प्यार और प्रार्थना करता हुआ, आपका

मो० क० गांधी ।"

. . . को लिखाये "मैं तुम्हारी तरह हारकर नहीं बैठता । परन्तु कड़ेसे कड़े दिलको भी अीश्वर कृपासे पिघलानेकी आशा रखता हूँ और अिसलिअे प्रयत्नशील रहता हूँ ।"

अिति शम्

सूची

[गांधीजी, सरदार वल्लभभाअी पटेल, और महादेवभाअी अिन तीनोंका अुल्लेख पुस्तकमें जगह जगह, लगभग हर पृष्ठ पर आता है। अिसलिअे अुनके नाम सूचीमें शामिल नहीं किये गये हैं।]